एक अदना मल्लाह की पुकार

("टू ईयर्स बिफोर द मास्ट" का हिन्दी रूपान्तर)

लेखक---रिचार्ड हेनरी डाना

रूपातरकार-कातिमोहन

प्रकाशक

प्रेमी जासूस कार्यालय

१२४, चक, इलाहाबाद—३

Published by
Dina Nath Bhargava,
Premi Jasoos Karyalaya,
124 Chak, Allahabad—3

एक प्रति : सात रु० पचास पैसा

Printed at
TIRTHRAJ PRESS,
124, Chak, Allahabad—3

प्राक्कथन

इस कथा को प्रकाशित कराने के औचित्य के बारे में दो शब्द कहे बिना पाठकों के समक्ष इसे प्रस्तुत करने में मुझे उलझन हो रही है। मिस्टर कूपर की "पाइ-लट" और "रेड रोवर" नामक पुस्तको के बाद समुद्री जीवन पर लिखी कहानियों की कुछ ऐसी बाढ-सी आ गयी है कि बिना पर्याप्त कारणो के उनकी संख्या में एक और वृद्धि कर देना मेरी नजर में अनुचित है।

मुझे पक्का पता है कि मिस्टर एम्स की मनोरजक, किन्तु जल्दबाजी मे लिखी गयी किताब "मैरिनर्स स्कैचेज़" को छोडकर अन्य ऐसी सभी पुस्तको के लेखक या तो नोसैनिक अधिकारी रहे हैं या यात्री, और उनके प्रकथन को तथ्यपरक नही माना जा सकता।

इस सिलसिले में पहली बात तो यह है कि युद्धपोत का जीवनक्रम, दैनिक कर्त्तव्य–कर्म, आदतें और रीति-रिवाज—यह सभी कुछ व्यापारी पोत से बहुत भिन्न होता है। दूसरी बात यह है कि, ये किताबें चाहे कितनी ही मनोरंजक और कलात्मक क्यो न हो, और उनके लेखक समुद्री जीवन का यथातथ्य चित्रण करने में कितने ही सफल क्यो न हुए हो, फिर भी यह बात सर्वथा स्पष्ट है कि कोई नौसै-निक अधिकारी, जो अफसरो के अलावा किसी से सपर्क नही रखता और साधारण नाविको को मु ह नही लगाता, समुद्री जीवन की सारी बातो को उस नजर से देख ही नही सकता जिस नजर से कोई सामान्य मल्लाह देखता है।

पाटक के मन मे जीवन के उन रूपो के बारे मे जानने की तीव्र इच्छा तो रहती ही है जिनमे वह खुद कभी नही जी सकता, इसके साथ ही पिछले कुछ वर्षों में लोगों का ध्यान साधारण नाविको की दशा पर विशेष रूप से गया है, और लोगो के मन मे उनके प्रति सहानुभूति पैदा की गयी है। फिर भी, मुझे यकीन है, कि जिस पुस्तक का जिक्र में पहले कर चुका हूँ उसके अलावा, शायद एक भी किताब ऐसी नही है जिसमें साधारण नाविको के जीवन और अनुभवों का चित्रण किसी ऐसे लेखक ने किया हो जो खुद एक साधारण नाविक रहा हो, और जिसे उनकी

जिन्दगी की असलियत का पता हो। अभी जनता ने "अगवाड की आवाज' नही सुनी है।

इस पुस्तक के पृष्ठो में मैंने एक अमरीकी व्यापारी पोत में दो वर्षों से अधिक समय तक एक अदना मल्लाह के रूप में हुए अपने अनुभवों का यथातथ्य और प्रामाणिक चित्रण करने का प्रयत्न किया है। मैंने इस पुस्तक को उन दिनों लिखी गयी अपनी डायरी, और अधिकांश घटनाओं के बारे में तभी लिखे गये अपने नोट्स की सहायता से, लिखा है। इस पुस्तक में मैंने हर बात को यथातथ्य चित्रित करने और हर चीज को उसके असली रग-रूप मे वर्णित करने का प्रयत्न किया है। अपने इस प्रयत्न मे कही-कही मुझे सख्त और अनगढ भाव-व्यजनाओ का आश्रय लेना पड़ा है, और एकाध ऐसे दृश्य-खन्ड का चित्रण भी करना पडा है जिससे शायद पाठक की उदात्त भावनाओं को आघात लगे। लेकिन जहाँ भी मैंने महसूस किया है कि इस तरह के दृश्य-खन्डो के बिना भी किसी दृश्य-विशेष को उसके सच्चे रूप–रग मे चित्रित किया जा सकता है वहा मैंने उनके बिना ही काम चलाया है। मेरा उद्देश्य समुद्र पर रहने वाले नाविकों के जीवन का वास्तविक चित्र—जिसमें शुक्ल और कृष्ण दोनो पक्ष शामिल हैं—प्रस्तुत करना रहा है, और इसी उद्देश्य ने मुझे इस पुस्तक को प्रकाशित कराने के लिए प्रेरित किया है। हो सकता है पुस्तक के कुछ अन्श सामान्य पाठक की समझ मे न आयें, लेकिन मैंने अपने और दूसरो के अनुभवो से यह सीखा है कि अपरिचित जीवन के रिवाजो और आदतो के यथातथ्य चित्रण और जीवन के नये पहलुओ के विवरण का रसास्वाद हम अपनी कल्पना से कर लेते हैं, और अक्सर हमें अपने तकनीकी ज्ञान के अभाव और अनुभवहीनता का अहसास तक नही होता। हजारों लोग "रेड रोवर" नामक पुस्तक में ब्रिटिश चैनल से अमरीकी युद्धपोत के बच निकलने और ब्रिस्टल व्यापार पोत के पीछा करने और नष्ट होने की बाबत पढते हैं, और स्वयं जहाज की किसी रस्सी का नाम तक न जानने वाला पाठक व्यावसायिक बारीकियों को न समझते हुए भी नौसैनिक दाँव-पेंचो को रुचि लेकर पढता और सराहता है।

इस पुस्तक को लिखते समय मैंने केवल घटनाओ और स्वय पर पड़े उनके प्रभाव का ही चित्रण करने का प्रयत्न किया है। समय-समय पर मैंने जो चितन किया है और उनसे मैं जिन निष्कर्षों पर पहुँचा हूँ, उन्हे मैंने अतिम अध्याय "उप-

संहार'' में प्रस्तुत किया है, और मैं पाठक से उस पर ध्यान देने की प्रार्थना करूंगा।

इन कारणों से, और अपने कुछ मित्रों की सम्मति से, मैं इस कहानी को छपवाने के निश्चय पर पहुँचा हूँ। अगर इससे सामान्य पाठक का मनोरंजन होगा, नाविकों के कल्याण पर लोगों का ध्यान कुछ अधिक जायगा, या लोगों को नाविकों की सही स्थिति के बारे में कुछ ऐसी सूचनाएं प्राप्त होंगी जिनसे प्राणि-जगत में उनका दरजा कुछ ऊंचा उठ सके, और उनका धार्मिक और नैतिक उत्थान हो सके तथा उनके दैनिक जीवन का दुख-दर्द कम हो सके तो मैं समझूंगा कि मैं अपना लक्ष्य प्राप्त करने में सफल हुआ हूँ।

बोस्टन, जुलाई, १८४० —रिचार्ड हेनरी डाना, जूनियर

* * *

अनुवादक की ओर से

रिचार्ड हेनरी डाना की विख्यात कृति "टू ईयर्स बिफोर द मास्ट" अमरीकी साहित्य का प्रतिष्ठित गौरव-ग्रथ हे । इस ग्रंथ की विशेषताएं इतनी स्पष्ट और मुखर हैं कि उनके बारे मे यहा कुछ कहना अनावश्यक-सा है । यहाँ मैं इसके अनुवाद के बारे मे दो शब्द कहना चाहूँगा ।

डाना की यह कृति उसके प्रत्यक्ष अनुभव पर आधारित है । वह खुद जहाज पर दो वर्षों से अधिक समय के लिए एक अदना मल्लाह रहा था, और इसकी मशीनरी के छोटे मे छोटे पुरजे से परिचित था । उसका प्रकथन इतना यथातथ्य और दृष्टि-कोण इतना वैज्ञानिक है कि यह कृति उपन्यास की तरह कथात्मक होते हुए भी किसी तकनीकी ग्रथ की भाति ज्ञान प्रदान करने वाली है । नौविज्ञान की शब्दावली में उपन्यास का प्रवाह और रोचकता भर देना डाना की एक अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं विरल उपलब्धि थी, लेकिन अनुवादक के मार्ग में यही सब से बडी बाधा भी थी ।

जैसा कि इस हिन्दी रूपातर के पाठक देखेंगे, पुस्तक मे तकनीकी शब्दों का प्रयोग प्राय सर्वत्र किया गया हैं । दुर्भाग्य से हिन्दी में नौविज्ञान-विषयक शब्दावली का प्राय अभाव ही है । इसलिए, जब मैंने इसके अनुवाद मे हाथ लगाया, और यह समस्या सामने आयी तो एक बार तो मेरा साहस जवाब दे गया । लगा कि इस किताब का अनुवाद सम्भव ही नही है । लेकिन, फिर हिम्मत बाध कर मैं काम पर जुट गया, और आज इसे समाप्त हुआ देखकर मुझे जैसी प्रसन्नता हो रही है, वैसी आज के पहले कभी नही हुई थी ।

जहा तक तकनीकी शब्दावली का सम्बन्ध है, मैने केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय द्वारा प्रकाशित "पारिभाषिक शब्द-सग्रह" से काफी सहायता ली है । कुछ शब्दो के हिन्दी समानार्थक गढे भी हैं, और कुछ को ज्यों का त्यों रहने दिया है । अनुवा-दक का प्रयत्न यह रहा है कि डाना के प्रत्येक शब्द का अनुवाद प्रस्तुत किया जाय, लेकिन हुआ यह है कि डाना के हर उस शब्द का अनुवाद किया जा सका हैं, जिसका अनुवाद सम्भव था । असम्भव मेरे लिए भी "असम्भव" ही रहा है,

लेकिन सम्भव को असम्भव नहीं बनने दिया गया है, इसका मुझे पूर्ण संतोष है। दो-चार स्थलो पर अत्यधिक तकनीकी बारीकियो वाले विवरणो को थोडा-बहुत छांट दिया गया है। लेकिन ऐसा करते वक्त अनुवादक ने अपनी सुविधा का ध्यान न रख कर, पाठक की सुविधा, रुचि और सीमाओ को ही अपने ध्यान में रखा है। लेकिन ऐसे स्थल अत्यन्त विरल हैं, और इस रूपांतर को उस कृति का "सम्पूर्ण अनुवाद" बेखटके कहा जा सकता है।

अनुवाद कैसा बन पडा है, यह बताना सुधी पाठको का काम है। यह सम्भव हुआ है, मैं इसी की प्रसन्नता से तुष्ट हूँ।

... कातिमोहन

एक अदना मल्लाह की पुकार

अध्याय—१

उस दिन अगस्त की चौदह तारीख थी। "पिलग्रिम" अपनी यात्रा दोपहर के बाद शुरू करने वाला था। दो मस्तूलो वाले इस जहाज को बोस्टन से केप हार्न होते हुए उत्तरी अमरीका के पच्छिमी तट तक जाना था। चूकि उसे तीसरा पहर होते ह चल देना था इसलिए मैं सिर से पैर तक मल्लाह की पोशाक पहने लगभग बारह बजे जहाज पर पहुँच गया। मेरे पास एक सन्दूक था जिसमें दो-तीन वर्षों की समुद्री यात्रा के लिए जरूरी सामान था। इस यात्रा पर मैं एक विशेष प्रयोजन से जा रहा था। आँखो की खराबी के कारण मुझे पढाई छोडने पर मजबूर होना पडा था। दवाओं से कोई फायदा न होते देख मैंने सोचा कि शायद काफी दिनो तक पढाई-लिखाई से दूर रहने और जिन्दगी के ढर्रे को एकदम बदल देने से मेरी आँखें अच्छी हो जायें।

मल्लाह की पोशाक ने मेरा तो काया पलट ही कर दिया था। कहाँ कैम्ब्रिज अडरग्रेजुएट का तग ड्र स कोट, सिल्की टोपी और मेमने की खाल के दस्ताने और कहा मल्लाह की मोटी सूती पतलून, चैक की कमीज और तिरपाल का टोप—फिर भी मुझे गुमान था कि मैं एक कुशल मल्लाह जंच रहा हूँ। लेकिन, इन मामलो में अनुभवी आँख को धोखा नही दिया जा सकता और यद्यपि मैं स्वयं को वरुण से कम नही समझ रहा था लेकिन जहाज के अनुभवी मल्लाह मुझे देखते ही समझ गये कि यह जमीन का जीव पानी मे आ फंसा है।

मल्लाह के कपडो की काट और कपडे पहनने का उसका ढग कुछ अजीब ही होता है। नौसिखुए में वह बात आ ही नही सकती। जाँघो पर तग ढीली मोह-रियो वाली लम्बी पतलून, चेक की निहायत ढीली-ढाली कमीज, सिर के पिछले हिस्से पर पहना वार्निश से चमचम नीचा टोप, बाई आख के पास लटका तीन फुट लम्बा काला रिबन, सिल्क के काले रुमाल की बन्धी हुई एक खास किस्म की टाई और इसी तरह की कई और छोटी-मोटी बातें—ये कुछ ऐसे लक्षण हैं जिनके बिना नया आदमी फौरन पहचाना जाता है। पोशाक की इन कमियो के अलावा मेरा

रंग और मेरे हाथ देख कर भी सोचा जा सकता था कि यह पक्का मल्लाह नही है। पक्के मल्लाह के गाल धूप से काले हो जाते हैं। लम्बे-लम्बे डग रखता हुआ वह जहाज के एक बाजू से दूसरे बाजू तक झूमता हुआ—सा चलता है। चलते समय उसके कासे के रग वाले अधनगे हाथ झूलते हुए चलते है मानो वे रस्से को थामने के लिए मचल रहे हो। मुझमे ये बाते नही थी।

"अपनी इन सब कमियो के साथ" मै मल्लाहो की टोली मे शामिल हो गया। हम लोग जहाज को धारा मे ले गये और रात भर के लिए वही लंगर डाल दिया गया। अगले दिन हम सब यात्रा की तैयारियो मे लगे रहे। हमने दुपेंचा पाल टांके, रायल यार्ड ठीक किये, चैंफिग गियर लगाया और बारूद जहाज मे रखा। उस रात जिन्दगी मे पहली बार मैंने पहरा दिया। कही ऐसा न हो कि मुझे पुकारा जाय और मै सुन न पाऊँ इस डर से मै आधी रात तक जागता ही रहा। जब मै पहरा देने देक पर पहुँचा तो अपनी जिम्मेदारी को इतनी भारी समझ रहा था कि मैं जहाज के एक से दूसरे सिरे तक...यानी मोरो से तफरैल तक. बाकायदा पहरा देता रहा। अपनी जगह लेने के लिए मैंने जिस बूढे मल्लाह को बुलाया था वह वहां से खिसक गया था और दीर्घ नौका मे जाकर झपकी ले रहा था। उसकी इस बेरुखी पर मुझे अचरज नही हुआ। मैंने सोचा, उसने इस मेघहीन रात में, बन्दरगाह मे लगर डाले जहाज के लिए, इतनी देख भाल ही काफी समझी होगी।

अगले दिन शनिवार था। दक्षिण की ओर से समीर वह निकला था। हमने कनहार (पाइलट) को जहाज पर चढा कर लंगर उठा दिया। जहाज खाडी की ओर बढा। मैंने अपने उन दोस्तो से विदा ली जो मुझे पहुँचाने आये थे। अपने नगर को और चिरपरिचित चीजो को आखिरी बार आख भर कर देखना भी मुझे नसीब न हो सका क्योकि जहाज पर भावनाओ मे बहने का मौका नही दिया जाता।

जब हम बन्दरगाह के निचले भाग में पहुचे तो पता चला कि खाडी मे सामने से तेज हवा चल रही है। मजबूरन हमें लगरगाह मे शरण लेनी पडी। दिन भर हम वही रहे। रात के ग्यारह बजे मेरी ड्यूटी शुरु हुई। मुझे पच्छिमी पवन के चलते ही कप्तान को बुला लेने का हुक्म दिया गया था। आधी रात के करीब पवन पच्छिम से बहने लगा। जब मैंने यह सूचना कप्तान को दी तो उसने मुझे सब मल्लाहो को बुलाने का हुक्म दिया। मुझे यह तो याद नही कि मैंने उसका यह हुक्म कैसे बजाया लेकिन इतना तय है कि मेरी आवाज एक कुशल अनुभवी मल्लाह

की तीखी आवाज, "आओ रे ! लगर उठाना है !" जैसी नही थी। बात की बात में सब लोग काम पर जुट गये। पाल तान दिये गये, यार्ड बाँध दिये गये और हमने अपना लगर उठाना शुरू किया।

इन सारी तयारियो मे मै कोई खास हिस्सा न ले पाया। जहाज के बारे मे मेरी जो थोडी-बहुत जानकारी थी उसकी बिनाह पर मै कुछ समझ ही न सका। अजीब-अजीब आदेश इतनी तेजी से दिये जा रहे थे और उनका पालन इतनी तत्परता से हो रहा था, ऐसी अजीब हडबडी मची हुई थी और चिल्लपो व हलचल का कुछ ऐसा समा बधा था कि मै तो देखता-सा रह गया। दुनिया मे खुश्की पर रहने वाले उस जीव से अधिक असहाय और दयनीय जीव नही मिल सकता जिसने मल्लाह का जीवन शुरू ही किया हो।

आखिरकार वे खास तरह की, देर तक चलने वाली, आवाजे आनी शुरू हुई जिनसे पता चलता था कि मल्लाहो ने लगर उठाने वाली चरखी घुमानी शुरू कर दी है। कुछ ही क्षणो मे जहाज चल पडा। मोरो से टकरा कर गिरते हुए पानी की पछाडें सुनायी पडने लगी। रात की नम समीर से झुकता-सा जहाज समुद्र के थपेड़े खा कर झूमता हुआ सा चला जा रहा था। हम वास्तव मे अपनी लम्बी यात्रा पर निकल पडे। मैं सचमुच ही अपनी मातृ भूमि से "गुड नाइट" कह रहा था।

*　　*　　*

अध्याय २

उस दिन रविवार था। समुद्र पर हमारा वह पहला दिन था। यूं तो उस दिन सैबाथ की छुट्टी थी लेकिन चूंकि हम अभी बन्दरगाह से चले ही थे और जहाज पर बहुत-सा काम बाकी था इसलिए हमे दिन भर काम मे जुटे रहना पडा। रात के वक्त पहरे बिठा दिये गये और हर चीज को सफर की जरूरतो के मुताबिक तैयार कर लिया गया। जब पहरो की सूचना देने के लिए सब लोगो को जहाज के पिछले भाग मे बुलाया गया तब पहली बार मुझे पता चला कि जहाजो के कप्तान कैसे होते हैं। हर आदमी को उसके पहरे का समय और स्थान बताने के बाद कप्तान ने छतरी मे चहल-कदमी करते हुए और मुह मे लगे सिगार मे धुंआ उडाते हुए कप्तानो के खास लहजे मे एक छोटा-सा भाषण दिया :

"तो, नाविको ! हमारा लम्बा सफर शुरू हो गया है। मेल-जोल से रहने पर

हमारा वक्त मजे मे बीत सकता है, वर्ना समझ लो नरक का मुंह हमारे सामने खुला हुआ है। तुम लोगों को सिर्फ इतना करना है कि तुम्हे जो हुक्म दिये जायें उन्हे बजा लाओ, और अपना फर्ज अदा करने में पीछे न हटो। तभी तुम लोग मजे में रहोगे, वर्ना तकलीफ उठाओगे—मैं जताये देता हूँ। अगर हम मेल से रहे तो तुम्हें पता चलेगा कि मै कितना चतुर हूँ, अगर मेल से न रहे तो समझ लो कि मैं अव्वल दर्जे का खूंख्वार और बदमाश आदमी हूँ। बस मुझे इतना ही कहना है। अब डाबा (बाए) बाजू पर पहरा देने वाले नीचे जायें।"

मैं दूसरे मालिम की टुकडी मे या जमना (दाए) बाजू पर पहरा देने वालो में था, इसलिए पहले हमारा पहरा ही शुरू हुआ। एस—नामक एक नौजवान भी मेरी ही टोली मे था और मेरी ही तरह पहली बार समुद्री यात्रा पर जा रहा था। वह एक व्यापारी का बेटा था और बोस्टन की एक फर्म के दफ्तर में काम कर चुका था। बात-चीत होने पर पता चला कि हम एक-दूसरे के कई मित्रो से परिचित हैं। कई विषय ऐसे निकल आये जिन पर हम लोग बातचीत कर सकते थे। कुछ देर तक हम बोस्टन, अपने मित्रो और अपनी समुद्री यात्रा के बारे में बातें करते रहे। अंत में वह पहरा देने के लिए चला गया और मैं अकेला रह गया।

अब मुझे चितन के लिए सुन्दर अवसर मिला। जीवन मे पहरी बार मैंने समुद्र की पूर्ण निस्तब्धता का अनुभव किया। अफसर छतरी मे टहल रहा था जहा जाना मेरे लिए मना था, अगवाड मे एकाध मल्लाह बातचीत कर रहे थे लेकिन उसमें शामिल होने की मेरी कोई इच्छा न थी, इसलिए मैंने अपने आप को ढीला छोड दिया और चारो ओर की चीजो की पूरी-पूरी छाप मेरे मन पर अंकित होती रही। यद्यपि सागर, चमकीले तारो और उन पर तेजी से तैरती हुई बदलियो के सौन्दर्य मे मैं डूब-सा गया था किन्तु जीवन सामाजिक और बौद्धिक आनन्द को मैं पीछे छोड आया था उसकी चेतना मेरे मन में बराबर बनी हुई थी। फिर भी, यद्यपि यह बात शायद कुछ अजीब—सी लगे, उस अवसर पर; और बाद में भी, मुझे इस प्रकार के चिन्तन मे बडा आनन्द आया, क्योकि यही एक ऐसा उपाय था जिससे मै उस विगत आनन्द के महत्व के प्रति सजग रह सकता था।

लेकिन, अब हवा सामने को हो गयी थी। अफसर से यार्डो को झुकाने का आदेश सुनते ही मेरे स्वप्न-विहग फुर्र से उड गये। मल्लाह प्रतिवात दिशा में एक

खाज अन्दाज से ताक रहे थे और काले बादल बडी तेजी से उमड रहे थे। इस सब से मैं जल्दी ही समझ गया कि हम लोगो को खराब मौसम का सामना करने के लिए तैयार हो जाना चाहिए। मैंने सुना, कप्तान कह रहा था कि जहाज बारह बजे तक गल्फस्ट्रीम मे पहुच जायेगा। कुछ क्षणों बाद आठ घन्टिया बजी, दूसरी पहरा-टुकडी को ऊपर बुलाया गया और हम नीचे चले आये।

अब पहली बार मुझे मल्लाह की जिन्दगी की तकलीफो का पता चला। मुझे रहने के लिए स्टीअरेज में जगह मिली थी। वहाँ रस्सियो के गट्ठे, फालतू पाल, पुराना काठ कबाड और भन्डार की रसद आदि दूसरी चीजें भी थी। इसके अलावा, हमारे सोने के लिए वहा बेंचें वगैरह नही बनवायी गयी थी, और न हमे अपने कपडे टागने के लिए खू टिया गाडने की इजाजत थी। समुद्र अब उद्वेलित हो चला था और जहाज झटके खाता हुआ आगे बढ रहा था। सारी चीजें बेतरतीबी से बिखर गयी थी। मल्लाहो की भाषा मे स्टीअरेज ऐसा "गड्डमड्ड भन्डार" हो गया था "जिसकी हर चीज बिखरी पडी हो और जरूरत पडने पर हाथ न आये", एक मोटा पाल-रस्सा मेरे सन्दूक पर कुन्डली मार कर बैठ गया था। मेरे टोप, बूट, गद्दा और कबल आदि खिसकते-खिसकते अनुवात पार्श्व मे जा पहुचे थे और वहां संदूको व रस्सो के भारी गट्ठो के नीचे फस जाने के कारण उनमें से कुछ चीजें टूट-टूट भी गयी थी। सब से बडी कठिनाई तो यह थी कि अपनी चीजें ढूंढ़ने के लिए हम लोग रोशनी भी नही कर सकते थे। मुझे समुद्री मतली के आसार नजर आने लगे थे और मैं शिथिलता व निष्क्रियता का अनुभव कर रहा था।

अन्त मे हार कर मैंने अपनी चीजें बटोरने का इरादा ही छोड दिया। अब मैं पालों पर पडा हुआ "आओ रे ! सब पाल सभालो !" की पुकार का इन्तजार करने लगा जो कि आने वाले तूफान के कारण अवश्यभावी ही थी। कुछ ही देर में मुझे देक पर गिरती बूंदों की आवाज सुनायी दी। बारिश तेज होती गयी और स्पष्ट था कि ऊपर की पहरा–टुकडी का काम बहुत अधिक बढ गया है क्योंकि मैं वही पडा-पडा मालिम के ऊचे स्वर में दिये गये आदेश, दौडते हुए पैरों के धमाके, ब्लाकों की चरमराहट और आसन्न तूफान से बचाव की तैयारी की दूसरी आवाजें सुन रहा था। कुछ ही देर बाद डेक का फलका खुला और डेक का शोर-गुल नीचे भर गया। "आओ रे ! ऊपर आकर पाल संभालो !" की आवाज ने हमारे कानों का स्वागत किया और फलका फौरन बन्द हो गया।

डेक पर पहुँच कर मैंने एक नया ही दृश्य देखा। वह अनुभव मेरे लिए सर्वथा नवीन था। वह छोटा-सा तने पालो वाला जहाज प्रतिवात दिशा में बढ रहा था। और "अब डूबा, तब डूबा" की स्थिति मे था। विक्षुब्ध सागर भीमकाय हथौडे की भाति जहाज के मोरो पर भीषण हुकारो के साथ सवेग प्रहार कर रहा था। उसकी उत्ताल तरगे डेक पार करके हमे पूरी तरह भिगोये दे रही थी। तेज पवन रस्सियो के झुरमुटो मे सीटिया बजा रहा था। जोर-जोर से आदेश दिये जा रहे थे जो मेरे लिए अगम्य थे लेकिन जिनका पालन बिजली की तेजी से किया जा रहा था। रस्सिया थामे मल्लाह अपनी तीखी आवाज और खास लहजे मे गा रहे थे। अभी मुझे चलते जहाज मे डेक पर काम करने का अभ्यास नही हुआ था। मैं बहुत बीमार था और मुझ मे कुछ भी कर सकने की ताकत नही रह गयी थी। चारों ओर सूचीभेद्य अधकार छाया था। इसी समय मुझे शिखरपाल को छोटा करने का आदेश दिया गया।

मुझे याद नही कि मैंने यह काम कैसे पूरा किया। शिखरपाल को छोटा करने के इरादे से मैं यार्डो पर चढ गया और पाल की रस्सी को पूरी ताकत से अपनी तरफ खीचने लगा। इससे ज्यादा कर पाने की स्थिति मे मैं था भी नही क्योकि मुझे याद पडता है कि शिखरपाल के यार्ड से हटने के पहले मेरी तबीयत कई बार खराब हुई। कुछ ही देर बाद डेक पर शाति छा गयी और हमे नीचे आने का आदेश मिल गया। लेकिन मै इससे खुश हुआ होऊ—ऐसी बात न थी। नीचे की हालत और भी बदतर थी। सारी चीजे उलट-पलट हो गयी थी और पेंदी के सडे पानी की दुर्गंध से मेरा सिर फटा जा रहा था। मैंने सोचा ऐसे स्टीअरेज से सर्द और गीला डेक ही क्या बुरा था ?

मैंने अक्सर दूसरो की समुद्र-यात्रा के अनुभव सुने थे, लेकिन मुझे ऐसा लगा कि मेरा अनुभव उन सब से अधिक कटु है। सबसे दुखद बात तो यह थी कि दो साल तक चलने वाली यात्रा की यह पहली ही रात थी। जब हम डेक पर थे तब भी हमारी हालत अच्छी नही थी। हमे कुछ न कुछ करने के आदेश बराबर मिल रहे थे। अफसर का कहना था कि बराबर कुछ न कुछ करते रहना हमारे ही हित में है। लेकिन, नीचे की नारकीय स्थिति से तो हम ऊपर फिर भी अच्छे थे। मुझे अच्छी तरह याद है कि डेक पर काम करते समय मुझे जब कभी मतली आती थी

तब मैं फलका उठा कर नीचे झाकता था और मुझे कै हो जाती थी। नीचे की दुर्गंध उलटी कराने की दवा-जैसा काम कर रही थी।

दो दिनो तक यही हालत रही।

बुधवार, बीस अगस्त। आज सुबह चार से आठ तक हमने पहरा दिया। जब चार बजे हम डेक पर पहुँचे तो हालात काफी सुधर चले थे। समुद्र शान्त हो चला था और हवा मद्धम पड गयी थी। तारे जगमग कर रहे थे। वातावरण के साथ ही मेरी भावनाओ मे भी तदनुकूल परिवर्तन आया लेकिन बीमारी की वजह से मै बडी कमजोरी महसूस कर रहा था। मैं जहाज की कटि मे खडा था। धीरे-धीरे पो फट रही थी और सुबह की रोशनी की पहली किरणें फूट चली थी। समुद्र पर होने वाले सूर्योदय की प्रशसा मे बहुत--कुछ कहा गया है लेकिन मेरे विचार से किनारे पर होने वाले सूर्योदय की तुलना मे यह कुछ नही हैं। सूर्योदय को जीवत और सप्राण बनाने के लिए चिडियो का कलरव, जागते मनुष्यो की चहल-पहल, पेडो, पहाडियो, शिखरो और छतो पर चमचमाती प्रकाश की पहली किरणें आवश्यक हैं। लेकिन यद्यपि समुद्र पर "वास्तविक सूर्योदय" इतना सुन्दर नही होता फिर भी विस्तीर्ण समुद्र पर "भोर के फूटने" के दृश्य की सुषमा अतुलनीय होती है।

पूर्वी क्षितिज से फूट कर गहन समुद्र के तल पर धुधला-सा प्रकाश फैलाने वाली पहली धूसर किरणो में कुछ ऐसा है जो आपके चारों ओर फैले समुद्र की नि सीमता और अज्ञात गहराइयो से मिल कर मनुष्य मे एकाकीपन व त्रास की भावना जगाता है। उसे अपना भविष्य विषादपूर्ण दिखायी देता है। प्रकृति का दूसरा कोई भी दृश्य मनुष्य पर यह प्रभाव नही डाल सकता। धीरे-धीरे यह दृश्य विलीन हो जाता है, प्रकाश तेज होता जाता है सूरज ऊचा उटता जाता है और समुद्र के सामान्य व एकरस दिवस का प्रारभ होता है।

मैं इस प्रकार के विचारो मे खोया हुआ था कि "जाओ! जाकर हैंड पप लगाओ।"—अफसर का यह आदेश सुनायी पडा और मैं चौंक उठा। मुझे याद आया जहाज पर दिवास्वप्नो मे खोने का समय नही दिया जाता, बल्कि भोर की पहली किरण के साथ मल्लाहो को काम मे जोत दिया जाता है। "आलसियो" यानी बढई, रसोइए, स्टीवार्ड आदि को बुलवा कर पंप लगाया गया और तब हमने डेक धोने शुरू किये। जिन दिनों जहाज समुद्र मे रहता है उन दिनो डेकों की

धुलाई रोज की जाती हैं और इसमे लगभग दो घन्टे लगते हैं। आज मुझमें इतनी ताकत भी न रह गयी थी कि मै इसमें भाग ले सकूँ।

जब धुलाई का काम खत्म हो गया, सफाई हो गयी और डोरिया आदि समेट ली गयी तो मैं डडो पर बैठ गया और नाश्ते के समय बजने वाली सात घन्टियो का इन्तजार करने लगा। मुझे इस तरह निकम्मे बैठे देख अफसर ने प्रमुख मस्तूल पर रायल शिखर से लेकर नीचे तक ग्रीज़ लगाने का हुक्म दे दिया। उस समय जहाज काफी हिल-डुल रहा था और मैने तीन दिन से कुछ नही खाया था, इस-लिए एक बार तो मेरे मन मे आया कि उससे कहूँ कि नाश्ते के पहले मै कुछ कर सकने की स्थिति में नही हूँ, लेकिन मुझे मालूम था कि "मुसीबत का सामना कर के ही उसे जीता जा सकता है", और अगर मैने जरा भी ढिलाई या सुस्ती दिखायी तो मै पानी नहो मागूँगा। इसलिए मैंने चुपचाप ग्रीज़ का डब्बा उठाया और रायल मस्तूल शिखर पर चढ गया। जब आप डेक से मस्तूल पर ऊपर की ओर चढते हैं तो, लीवर का आलब होने के कारण, ऊचाई के अनुपात में जहाज का हिलना भी अधिक होता जाता है। इन जोरदार झटको और मेरी बदमिजाज़ी को शह देती हुई ग्रीज की बदबू ने मेरा पेट फिर से खराब कर दिया, और जब मै डेक के अपेक्षाकृत समतल भाग पर आ गया तब मेरी जान मे जान आयी। कुछ ही देर बाद सात घन्टियाँ बजी, लाग लगा दिया गया, पहरा नियुक्त कर दिया गया और हम नाश्ता करने गये।

यहा मुझे अपने सीधे-सादे अफ्रीकी रसोइए की सलाह याद आती है।

"अब", उसने कहा, "छोकरे तुम्हारे पेट की अच्छी तरह सफाई हो गयी है, किनारे की गन्दगी का एक कण भी तुम्हारे अन्दर नही रह गया है। अब तुम्हे नया रास्ता पकडना चाहिए—अपनी सारी मिठाई समुद्र मे फेंक दो और समुद्री रोटी व उम्दा नमकीन बीफ के अलावा कोई चीज मत खाओ, और मै कसम से कहता हूँ हार्न पहुँचने के पहले ही तुम्हारी ये पसलियाँ दीखनी बन्द हो जायेंगी और तुम भी दूसरे मल्लाहों की तरह हट्टे-कट्टे हो जाओगे। जब यात्रियो को समुद्री बामारी हो जाय ओर वे बढिया-बढिया पकवानो आदि की बात करे तो उन्हे भी यही राय देनी चाहिए।"

आधा पाउन्ड नमकीन बीफ और एकाध बिस्कुट पर निर्भर रहने से मेरे अन्दर जो परिवर्तन आया उसका वर्णन करना मेरे लिए कठिन है। मेरी तो काया

ही पलट गयी। दोपहर से पहले हमे नीचे पहरा देना पडता था इसलिए मेरे पास कुछ समय था। लिहाजा मैंने रसोइए से मजबूत, ठन्डे, नमकीन बीफ का एक टुकडा लिया और बारह बजे तक उसे चबाता रहा। जब हम डेक पर पहुँचे तो मुझे अपने अन्दर कुछ जान महसूस हुई और मैं अपना काम जोश के साथ सीखने लगा।

दो बजे के लगभग हमने ऊपर से "जहाज हो!" की जोरदार आवाज सुनी। शीघ्र ही हमने दो जहाजो को प्रतिवात दिशा में जाते देखा। मैने पहली बार समुद्र मे चलता जहाज देखा था। उस समय, और बाद में भी, मैने सोचा कि इसकी गणना दुनिया के सबसे मनोरंजक और सुन्दर दृश्यो में होनी चाहिए। वे दोनों हमारे जहाज की अनुवात दिशा से होते हुए जल्दी ही आवाज की पहुँच के परे चले गये लेकिन कप्तान ने दूरबीन की मदद से उनके नाम पढ लिये थे। उनमें से एक न्यूयार्क का जहाज "हैलेन मार" था और दूसरा बोस्टन का दो मस्तूलों वाला जहाज "मरमैड" था। वे दोनो पच्छिम की दिशा मे जा रहे थे और उनकी मंजिल थी—"हमारी प्यारी मातृभूमि"।

बृहस्पतिवार, इक्कीस अगस्त। आज आकाश स्वच्छ था। सूर्य निकल आया था। चारो ओर रोशनी और ताजगी का आलम था। अब मैं समुद्री जीवन का अभ्यस्त हो चला था और मैने अपना नियमित काम शुरू कर दिया था। छः घन्टियाँ बजने पर, यानी दोपहर के लगभग तीन बजे, हमने अपने डाबा बाजू पर एक जहाज देखा। हर नये नाविक की तरह मैं भी उससे बोलने के लिए बेहद उतावला हो रहा था। वह हमारे पास चला आया। उसने अपना प्रमुख शिखर-पाल बाध दिया और दोनो जहाज "आमने-सामने" ठहर गये। वे इस तरह हिल डुल रहे थे मानो दो लडाकू घोडे आमने-सामने खडे हो और दोनों की लगामें उनके सवारो के हाथो में हों। इससे पहले मैंने किसी जहाज को इतने नजदीक से नहीं देखा था, और मुझे यह देखकर ताज्जुब हुआ कि इतने शांत समुद्र में भी वह जहाज इतना अधिक हिल-डोल रहा था। पहले वह अपना सिर पानी में डुबोता तब धीरे-धीरे उसका पिच्छल सिरा पानी में डूबता जाता था और विशाल मोरे ऊपर उठते आते थे जिन पर लगा ताबा चमचमाता था। अन्त में उसका पिच्छल सिरा पानी मे डूब जाता था और समुद्र के खारे पानी में डूबते हुए उसके कूरचे वृद्ध वरुण के केशगुच्छ सरीखे लगते थे। उसके डेक माझिया से भरे थे जो "जहाज

हो ।" की पुकार सुन कर ऊपर आ गये थे और अपनी पोशाकों व मुखाकृतियों से स्विस और फ्रांसीसी उत्प्रवासी लगते थे । उन्होंने पहले फ्रेंच भाषा में हमारा अभिवादन किया लेकिन उत्तर न पाकर उन्होंने हमारा अभिवादन अंग्रेजी में किया । उस जहाज का नाम "ला कैरोलिना" था । वह हेवर से आया था और न्यूयार्क जा रहा था । हमने उससे यह सूचित कर देने के लिए कहा कि बोस्टन से अमरीका के उत्तरी-पश्चिमी तट के लिए निकले "पिलग्रिम" जहाज को समुद्र में चलते हुए पांच दिन हो गये हैं । इसके बाद उसने पाल तान लिये और हवा भर कर चल दिया । हम भी उथल-पुथल हो गये पानी में से आगे बढे । आज का दिन मजे में बीता, अब आगे मौसम एक-सा और आरामदेह रहने की आशा थी । हम समुद्री जीवन के उस एकरस दैनिक क्रम के अभ्यस्त हो चले थे जो किसी तूफान के आने या किसी जहाज अथवा भूखंड के दर्शन में ही टूटता है ।

* * *

अध्याय—३

बहुत दिनों तक मौसम बडा सुन्दर रहा । हमारे जीवन की एकरसता को तोडने वाली कोई घटना नहीं घटी । मैं समझता हूँ कि एक व्यापारी पोत, जिसका सुन्दर उदाहरण हमारा जहाज था, के कामों, नियमों, और रिवाजों के बारे में बताने का इससे अच्छा मौका नहीं मिल सकता ।

सब से पहले कप्तान की बात करें । वह सर्वशक्तिमान प्रभु है । वह पहरा नहीं देता, कहीं आना-जाना उसकी अपनी मर्जी पर निर्भर है, वह किसी के प्रति उत्तरदायी नहीं हैं, हर आदमी के लिए—चाहे वह उसका प्रमुख अधिकारी ही क्यों न हो—यह जरूरी है कि बिना किसी हील-हुज्जत के कप्तान का हुक्म बजाये । वह चाहे तो अफसरों को नौकरी से निकाल सकता है या उन्हें साधारण नाविक की भाँति अगवाड में काम करने पर मजबूर कर सकता है । हमारे जहाज की तरह जिस जहाज में यात्री या नौभार-विक्रय-अधिकारी नहीं होते उसके कप्तान को अपने ही गौरव के अलावा कोई संगी-साथी नहीं मिलता । सर्वोच्च शक्ति सपन्न होने की चेतना, और कभी-कभी उस शक्ति के प्रयोग, के अलावा उसे कोई सुख भी उपलब्ध नहीं होता । हाँ, अगर वह अधिकांश कप्तानों से भिन्न स्वभाव का आदमी हो तब तो बात ही और है ।

बडा या मुख्य मालिम जहाज का प्रधानमन्त्री और कार्याधिकारी है। वास्तव में पूरे जहाज की देख-भाल की जिम्मेदारी उसी पर रहती है। वह कप्तान का प्रमुख सहायक, बोसुन, पाल कप्तान और कर्णपाल होता है। कप्तान जो-कुछ करना चाहता है वह बडे मालिम को बता देता है। उस काम का पर्यवेक्षण करने, अलग अलग लोगो को उनके काम सौंपने और काम को सफलतापूर्वक सपन्न कराने की जिम्मेदारी बडे मालिम की ही होती है। लाग बुक भी बडे मालिम के पास ही रहती है जिसके लिए वह जहाज के मालिको और बीमा कराने वालों के प्रति उत्तरदायी होता है। इसके अलावा नौभरण और नौभार की देख-भाल और सुपुर्दगी की जिम्मेदारी भी उसी पर होती हैं। एक तरह से मल्लाहो आदि मे हंसी-मजाक करने की जिम्मेदारी भी उसी पर है क्योकि कप्तान अपने अधीन काम करने वालो से मजाक करने की उदारता नही दिखाता और दूसरे मालिम की कोई परवाह नही करता। इसीलिए जब कभी बडा मालिम मल्लाहो के मनोरजन के लिए एकाध भौडा मजाक या हसी-ठिठोली करता है तो सभी मल्लाहो को हसना पडता है।

दूसरा मालिम अक्सर साधारण मल्लाह से अफसर बनाया जाता है। वह न अफसर है न मल्लाह। नाविक अफसरो की तरह उसका लिहाज नही करते और उसे अन्य मल्लाहो की भाति ही ऊपर जाकर शिखरपालो को छोटा करने या लपेटने का काम करना पडता है और कोलतार व ग्रीज मे हाथ देना पड़ता है। नाविक उसे "नाविको का खानसामा" कहते हैं क्योकि उन्हे बटा सन, मार्लिन तथा जरूरत की अन्य वस्तुएं दूसरा मालिम ही देता है। इसके अलावा बोसुन का लाकर भी उसी के पास रहता है, यानी उसमे से नाविको को डोरी आदि भी वही देता है। उससे आशा की जाती है कि वह अपनी शान के खिलाफ कोई काम न करे और मल्लाहो से अपने आदेशो का पालन कराये फिर भी उसे मालिम जैसे अधिकार नही दिये जाते और उसे अन्य नाविको के साथ काम करना पडता है। दूसरा मालिम एक ऐसा जीव है जिसे दिया तो बहुत-कम जाता है लेकिन उससे उम्मीद बहुत कुछ की जाती है। प्राय उसका वेतन आम मल्लाह से दुगुना होता है और वह केबिन में खाता और सोता है; लेकिन उसे लगभग सारे समय डेक पर रहना पडता है और वह दूसरी पगत में खाता है, यानी कप्तान और बडा मालिम जो चीजें छोड़ देते हैं वे उसके हिस्से में आती हैं।

स्टीवार्ड कप्तान का नौकर और पैंट्री का स्वामी है जिससे और किसी को—यहाँ तक कि बडे मालिम को भी—कोई मतलब नही रहता। इन विशेषताओ के कारण स्टीवार्ड अक्सर बड़े मालिम की आँख का कांटा बन जाता है क्योकि बडा मालिम अक्सर जहाज पर किसी ऐसे आदमी का होना पसन्द नही करता जो सीधे उसके अधीन न हो। मल्लाह लोग भी उसे अपने वर्ग का नही समझते और स्टीवार्ड कप्तान की महरबानी पर ही जीता है।

रसोइया नाविको का सरक्षक है। जो लोग उसे खुश रखते हैं उन्हे उसकी कृपा से अपने दस्ताने और मोजे सूखे मिल सकते हैं, तथा वे रात के पहरे के समय रसोई से अपना पाइप भी जला सकते हैं। स्टीवार्ड, रसोइयाँ, वढई और, अगर हो तो, सिलमाकुर (पाल निर्माता)—ये चारो लोग पहरा नही देते, बल्कि दिन भर काम मे लगे रहने के कारण इन्हे रात मे सोने की इजाजत होती है। जब कभी जहाज के सभी मल्लाहो को काम पर बुलाया जाता है तो इन्हे रात के समय भी काम करना पडता है।

नाविको को यथा सम्भव दो बराबर भागो में बाँटा जाता है, जिन्हे पहरा या पहरा-टोली कहा जाता है। बडा मालिम डाबा (बाँई) टोली का पहरा सम्भालता है और दूसरा मालिम जमना (दाँई) टोली का। ये दोनों पहरे का समय आपस में बांट लेते हैं। हर चार घन्टे बाद डेक पर पहरा देते हुए नाविक आराम के लिए नीचे चले जाते हैं और नीचे आराम करते हुए नाविक डेक पर आ कर पहरे पर तैनात हो जाते हैं। मिसाल के तौर पर अगर आठ से बारह बजे तक पहला पहरा बडे मालिम और उसकी डाबा टोली को देना है तो चार घन्टे बीतने पर वह दूसरे मालिम और उसकी जमना टोली को पुकार लेगा। जब दूसरा मालिम अपनी टोली के साथ डेक पर पहरा सम्भाल लेगा तो बडा मालिम अपनी टोली के साथ सुबह के चार बजे तक के लिए नीचे चला जायेगा। चार बजे बडे मालिम के साथ यह टोली फिर डेक पर आ जायेगी और सुबह आठ बजे तक पहरा देगी। चू कि इस टोली को बारह में से आठ घन्टे पहरा देना पडा जब कि दूसरे मालिम की टोली को केवल चार घन्टे ही पहरे पर रहना पडा, इसलिए उस टोली को सुबह आठ से दोपहर बारह बजे तक नीचे पहरा देना पडेगा। युद्धपोत मे, और कुछ व्यापारी जहाजो मे भी, पहरों की यह अदला-बदली चौबीसो घन्टो चलती रहती है लेकिन अधिकाश व्यापारी जहाजो की भाँति हमारे जहाज में भी सब लोगो को

बारह बजे से सूर्यास्त तक ही काम करना पडता था। हाँ खराब मौसम की बात और है, उसमें तो हर समय पहरा देने के अलावा काम ही क्या था ?

जो लोग कभी समुद्र-यात्रा पर नही गये हैं, उनके लिए "अधपहरो" के बारे मे जान लेना शायद उपयोगी हो। अधपहरो का काम पहरो का वक्त इस तरह बाँटना हैं कि एक टुकडी को रोज एक ही समय पर पहरा न देना पडे। ऐसा करने के लिए सुबह चार से आठ तक पहरा देने वाली टोली को दो भागो या अध पहरो में बाँट दिया जाता है । इनमें मे एक टोली चार से छ तक पहरा देती है और दूसरी छ से आठ तक। दूसरे शब्दो मे चौबीस घन्टो को छ पहरों मे न बांट कर सात पहरो मे बाँटा जाता है और इस प्रकार हर रात टोलियों का पहरा देने का समय बदलता रहता है। चूकि अधपहरे वाली टोली गौधूलि के समय आती हैं जब कि दिन का काम खत्म हो चुका होता है और रात के काम का बटवारा होना बाकी रहता है इसलिए यह वक्त ऐसा होता है जब जहाज का हर आदमी डेक पर मौजूद होता है। कप्तान छतरी के बाजू पर टहलता रहता है, बडा मालिम अनुवात दिशा मे रहता है और दूसरा मालिम खुले गलियारे के आस-पास रहता है। स्टीवार्ड केबिन मे अपना काम खत्म कर चुकता है और रसोइए के साथ पाइप पीने रसोई में चला आता है। नाविक बेलन चर्खी पर बैठे रहते हैं या अगवाड मे लेटे धुआ उडाते, गाते या गप्पे लडाते हैं। आठ बजे आठ घन्टियां बजती हैं, लाग लगा दिया जाता है, पहरा बिठा दिया जाता है, पहिए पर से पटा उतार दिया जाता है, रसोई बन्द कर दी जाती है और दूसरी टोली नीचे चली जाती है।

सुबह होते ही डेक वाली पहरा-टोली डेको की घुलाई-सफाई कर देती है। सफाई, मोरवे की टकी में ताजा पानी भरने मे और डोरियाँ आदि लपेटने मे सात घन्टिया (साढे सात बजे) बज जाती हैं और सब लोगो को नाश्ता दिया जाता है। आठ बजे दिन का काम शुरू हो जाता है और एक घन्टे के भोजन-काल को छोड कर दिन भर सब लोग काम मे लगे रहते हैं।

इस व्योरे को खत्म करने से पहले एक दिन के काम के बारे में बता देना अच्छा होगा। इससे जमीन पर रहने वाले लोगो मे नाविक के जीवन के बारे में आम तौर पर फैली गलतफहमी दूर हो सकेगी। आम तौर पर लोगो को यह कहते सुना जाता है—"क्या समुद्र पर नाविक लोग हाथ पर हाथ धरे बैठे नही रहते ?

आखिर उन्हें काम ही क्या हो सकता है ?" यह गलती स्वाभाविक है और इतनी अधिक बार की जाती है कि हर नाविक इसे दूर करना चाहता है। पहली बात तो यह है कि जहाज का अनुशासन ही कुछ ऐसा है कि रात और रविवार के अलावा जब भी कोई मल्लाह डेक पर होता है तो उसे बराबर कुछ न कुछ करते रहना पडता है। रात या रविवार के अलावा आप किसी अनुशासित जहाज में किसी भी नाविक को डेक पर खाली खडा, बैठा या डेक के किसी पहलू पर झुका हुआ नही देख सकते। अफसर का फर्ज है कि वह हर आदमी को बराबर काम मे लगाये रखे, अगर और कोई काम न हो तो वह उससे तारो मे लगी जग छुडाने का काम ही ले। किसी सरकारी जेल मे भी कैदियो से इतने नियमित रूप से काम नही लिया जाता, और न उन पर इतनी कडी निगरानी ही रखी जाती है। जब नाविक अपनी ड्यूटी पर होते हैं तो उन्हे बातचीत की मनाही होती है, और यद्यपि जब वे ऊपर होते हैं या एक-दूसरे के पास ही होते हैं तो खूब बातें करते हैं, लेकिन अफसर की खुशबू पाते ही वे भीगी बिल्ली बन जाते हैं।

नाविको से क्या-क्या काम लिया जाता है—जहा तक इस सवाल का संबन्ध है, यह एक ऐसी बात है जिसे वही आदमी समझ सकता है जो जहाज पर नौकरी कर चुका हो। जब हमारा जहाज बन्दरगाह से चला ही था तो पहले एकाध सप्ताह हमें प्राय हर समय काम मे लगे रहना पडा। तब मैंने सोचा था कि चू कि अभी यात्रा शुरू ही हुई है इसलिए हमे कुछ अधिक काम करना पड रहा है। जल्दी ही हमारा जहाज यात्रा का अभ्यस्त हो जायेगा और तब हमे जहाज चलाने के अलावा कोई काम ही न रह जायगा। लेकिन, मैंने देखा कि दो साल तक लगातार यही सिलसिला चलता रहा और दो सालो के बाद भी उतना ही काम बाकी था जितना शुरू मे था। जैसा कि अक्सर कहा जाता है, जहाज औरत की घडी की तरह है जिसे हर वक्त मरम्मत की जरूरत रहती है। बन्दरगाह छोडते समय दुपेंचा पालो को पिरोना पडता है, सभी सचल रस्सियो की जाच करनी पडती है, जो बेकार होती हैं उन्हे उतार कर उनकी जगह नयी रस्सियो को पिरोना पडता है, तब अचल रस्सियो को खीच कर देखा जाता है कि उनमे से कोई कमजोर तो नही है, कमजोर की जगह मजबूत रस्सियाँ लगायी जाती हैं, हजारो तरीको से जरूरी मरम्मत करनी पडती है, और जहाँ उन असख्य रस्सियो या यार्डो में घर्षण की सभावना होती है वहा रगडपट्टी या चैफिंग गियर का

प्रयोग किया जाता है। जहाज पर चैफिंग गियर लगाने, उतारने और उसकी मरम्मत करने का काम ही इतना ज्यादा होता है कि किसी यात्रा पर दो-तीन आदमी अपनी ड्यूटी के घन्टो मे लगातार इसी काम मे लगे रह सकते हैं।

इस बारे मे दूसरी विचारणीय बात यह है कि जहाज के लिए जरूरी बटा सन, मारलीन, बाधने-जूटने का सामान वगैरह छोटी-मोटी चीजें जहाज पर ही तैयार की जाती हैं। जहाज के मालिकान बडी तायदाद में "पुराना कबाड" खरीद लेते हैं। नाविक लोग उसे सुलझा कर उसमे से सूत निकालते हैं, और सूत मे गाठ बाध-बाध कर उसकी पिंडियाँ बना लेते हैं। इन सुतलियो का प्रयोग अनेक कामो मे होता है, लेकिन इनका बडा हिस्सा बटा सन तैयार करने में काम आता है। इस काम के लिए हर जहाज मे एक चरखा रहता है। यह बहुत सादा होता है। इसमे एक पहिया होता है और एक तकुआ। अच्छे मौसम में डेक पर इसकी आवाज हर समय सुनी जा सकती है, और बहुत दिनो तक हममें से तीन आदमी सूत निकालने, गाठें बाधने और बटा सन तैयार करने मे ही लगे रहे।

नाविको से काम लेने का एक और ढग यह है कि उन्हें रस्सियाँ ठीक करने के काम में लगा दिया जाये। जो रस्सियाँ ढीली होती हैं (और रस्सिया अक्सर ढीली होती ही रहती हैं) उन्हें नये सिरे से कसना होता है, और यह एक खासा लम्बा और मुश्किल काम है।

जहाज के विभिन्न हिस्सो मे कुछ ऐसा सम्बन्ध होता है कि अगर एक रस्सी को ठीक करना हो तो कई रस्सियो को खुद-ब-खुद ठीक करना ही होगा। अगर आप पिछले मस्तूल मे तान-रस्सी बाधना चाहते हैं तो आपको शीर्ष तानें ढीली करनी ही होगी। अगर हम इसमे कोलतार करना, ग्रीज़ लगाना, तेल देना, वार्निश और रोगन करना, खुरचना और सफाई करना भी शामिल कर लें जो कि एक लम्बी यात्रा के दौरान बहुत जरूरी है, और यह भी ध्यान रखें कि इस काम के अलावा नाविको को रात मे पहरा देना, कर्ण सभालना, पाल छोटे करना और लपेटना, कमानी लगाना, पालो की मरम्मत करना और लगाना, सभी दिशाओ मे नाव खेना और चढना-उतरना आदि काम तो करना ही पडता है तो किसी के मुह से यह सवाल नही निकलेगा कि "आखिर समुद्र पर नाविक को काम ही क्या हो सकता है?"

अगर इस कठिन परिश्रम के बाद भी—तूफान, पानी और सर्दी में अपनी

जान हथेली पर लेकर चलने के बाद भी—अगर व्यापारी और कप्तान समझते हैं कि नाविकों ने उनके बारह डालर प्रति मास (जिसमें से उन्हें अपने लिए कपडे भी बनवाने पडते हैं), नमकीन बीफ और कडी रोटी हलाल नही किये तो वे उनसे अनिश्चित काल तक ओकम तैयार कराते रहते हैं।

अक्सर इस उपाय का सहारा बरसात मे लिया जाता है। बरसात मे रस्सियो वगैरह को ठीक करने का काम नही रहता और जब भयानक बारिश होती है तो बजाय इसके कि नाविको को किसी सुरक्षित स्थान में खडे होकर बातचीत करने और आराम से रहने की इजाजत दी जाये, उन्हे जहाज के विभिन्न भागो में भेज दिया जाता है जहाँ उन्हे ओकम तैयार करना पडता है। मैंने देखा है कि ओकम का सामान अक्सर जहाज के विभिन्न भागो में रखा जाता है ताकि विषुवत रेखा पर आने वाले तूफानो में भी नाविक भाग-दौड करते रहे और आलसी न बनें।

कुछ अफसर तो नाविको के लिए काम निकालने मे इतने चतुर होते हैं कि जब जहाज का लगर उठा दिया जाता हैं तो वे नाविको को उसकी जजीर की जग वगैरह छुडाने के काम पर बैठा देते हैं।

केपहार्न से गुजरते समय, केप आफ गुडहोप और एकदम उत्तरी व दक्षिणी अक्षाशों मे इस तरह का काम नही लिया जाता; लेकिन मैने ऐसी स्थिति में डेको की धुलाई होते देखी है जिसमे ताजा पानी जम जाये। पी जाकेट पहने सब मल्लाहों को मैने ऐसे मौसम मे रस्सिया ठीक करते देखा है जिसमे हमारे हाथ इतने जम जाते थे कि उनसे सूआ भी न पकडा जाता था।

मैं अपनी कहानी से इसलिए कुछ दूर निकल आया हूँ ताकि पाठक नाविक के जीवन और काम के बारे में यथासभव सही अनुमान लगा सके। मैंने यह सारा विवरण यहा इसलिए दे दिया है क्योकि कुछ दिनो तक हमारा जीवन इन कामो को यथावत दुहराने तक ही सीमित रहा जिनके बारे में एक साथ ज्यादा अच्छी तरह बताया जा सकता था।

इस प्रसंग को समाप्त करने से पहले मै यह जरूर बताना चाहूँगा कि जहाज का बढई उन जहाजो मे भी बारहो महीने काम मे लगा रहता है जो यात्रा के लिए सर्वथा उपयुक्त समझे जाते हैं। इस एक बात से स्थल पर रहने वाले लोग अनुमान लगा सकते हैं कि जहाज के बारे मे उनकी जानकारी कितनी कम है।

अध्याय ४

"कैरोलिना" से हमारी मुलाकात इक्कीस अगस्त को हुई थी। इसके बाद कई दिन तक कोई ऐसी बात नही हुई जो हमारे जीवन की एकरसता को भग करे कि—

शुक्रवार, पाँच सितम्बर, हमने अपने जहाज के जमना बाजू पर एक जहाज देखा। पता चला कि वह दो मस्तूलो वाला एक अग्रेजी जहाज है। उसे ब्यूनोस आयर्स से चले ४९ दिन हो चुके थे और वह लिवरपूल जा रहा था। वह अभी गया भी न था कि "जहाज हो !" की पुकार फिर से हमारे कानो मे पडी और हमारी नजर अपने से दूर जाते हुए एक जहाज पर गयी। जल्दी ही वह हमारी आवाज की पहुच से बाहर हो गया लेकिन हम इतना समझ गये कि वह हरमाफ्रोडाइट किस्म का दो मस्तूलों वाला ब्राजीली जहाज था। वह जिस रास्ते पर जा रहा था उसे देख कर ऐसा लगता था कि वह ब्राजील से चला था और यूरोप के दक्षिण में, सभवत. पुर्तगाल, जा रहा था।

रविवार, सात सितम्बर, उत्तरी-पूर्वी व्यापारी हवाओ का प्रदेश शुरू हो गया। आज सुबह हमने पहली बार डालफिन मछली का शिकार किया। मैं इस मछली को देखने को बहुत उत्सुक था। मरती हुई मछली के रंगो को देख कर मुझे निराशा ही हुई। ऐसी बात नही कि वे रग सुन्दर नही थे, लेकिन इतने सुन्दर नही थे जितने सुन्दर बताये जाते हैं। वे बडे अस्पष्ट थे। फिर भी यह मानना पडेगा कि दिन के साफ मौसम मे पानी की सतह के कुछ फुट नीचे तैरती हुई डालफिन की सुन्दरता की बराबरी और कोई चीज़ नही कर सकती। इसके शरीर की बनावट बडी शानदार होती है, साथ ही खारे पानी मे रहने वाली मछलियो मे यह सब से तेज तैरती है, और इसकी प्रतिपल परिवर्तित भगिमाओं पर पडने वाली और पानी से टकरा कर लौटने वाली सूरज की चमकीली किरणें इसे ऐसा सौंदर्य प्रदान कर देती हैं मानो यह मछली न होकर इन्द्रधनुष की सात कलाओं मे से अलग छिटकी हुई कोई एक कला हो।

यह रविवार भी समुद्र पर हसी-खुशी बीतने वाले सैबाथ की तरह गुजरा। सैबाथ के दिन डेक धोये जाते है, डोरियो वगैरह की तह की जाती है और हर चीज ठीक-ठाक कर दी जाती है, फिर सारे दिन एक बार में एक ही पहरा रखा जाता है। मल्लाह लोग अपनी सब मे बढिया सफेद पतलून और लाल या चैक की कमीज

पहनते हैं, और उन्हे पालो मे जरूरी परिवर्तन करने के अलावा और कोई काम नही रहता। वे पढने, गप्प लडाने, तम्बाकू पीने और कपडो की मरम्मत वगैरह मे मशगूल रहते हैं। अगर मौसम अच्छा हो तो वे अपना काम या किताबें लेकर डेक पर आते हैं और अगवाड या बेलन चरखी पर बैठे रहते हैं। उन्हे यह आजादी सिर्फ सैंबाथ के दिन ही मिलती है। जब सोमवार आता है तब वे फिर अपने काम के कपडे पहन कर छ दिन तक काम करने के लिए तैयार हो जाते हैं।

सैंबाथ का महत्व बढाने के लिये उस दिन मल्लाहो को एक तरह का हलुआ खिलाया जाता है, जिसे 'डफ' कहते हैं। इसमे कोई खास बात नही होती। यह आटे को पानी मे उबाल कर तैयार किया जाता है और शीरे के साथ खाया जाता है। यह बहुत गाढा, काला-सा और लसदार होता हे, लेकित जहाज पर इसे भी पकवान्न समझा जाता है और नमकीन बीफ और सूअर के गोश्त के मुकाबले ऐसा मानना कही तक ठीक भी है। कुछ शैतान कप्तान घर लौटते समय मल्लाहो को सप्ताह में दो बार डफ देकर उनका दिल जीत लेते हैं।

कुछ जहाजो पर सैंबाथ के दिन धार्मिक उपदेशो आदि का प्रबन्ध होता है, लेकिन चूंकि हमारे जहाज पर कप्तान से लेकर छोकरो तक—सभी लोग स्वेअरर्स थे इसलिए हमारे लिए एक दिन का आराम और शात सामाजिक आनन्द ही एक बडी गनीमत था।

कई दिन तक हमारा जहाज उत्तरी-पूर्वी व्यापारी हवाओ में तेजी से आगे बढता रहा, कि—बाईस सितम्बर की सुबह को सात घटिया सुनने पर जब हम डेक पर पहुंचे तो देखा कि दूसरे पहरे के लोग पालो पर पानी फेंक कर उन्हे भिगो रहे हैं और पीछे की तरफ देख रहे हैं। हमने उस दिशा मे अपना पीछा करता हुआ एक छोटा, दो मस्तूलो वाला, क्लिपर जैसी बनावट वाला जहाज देखा जिसका ढाँचा काला था। हमने तेजी से काम शुरू कर दिया और जहाज पर अधिक से अधिक पाल तान दिये। पालो पर बाल्टियो से पानी फेंक-फेंक कर हम उन्हे बराबर गीला करते रहे। अत मे नौ बजे के लगभग हल्की बारिश आ गयी और हमने हाथ रोक दिया।

उस जहाज ने हमारा पीछा करना जारी रखा। जिधर हम मुडते उधर ही वह भी मुड जाता था ताकि वह हवा के रूख में आगे बढ सके। कप्तान ने अपनी दूरबीन से देख कर बताया कि वह जहाज हथियारो से लैस है; उस पर काफी

आदमी हैं और किसी देश का झन्डा नही है। हमने जहाज को हवा के ऊपर छोड दिया। हमे मालूम था इसी मे हमारी भलाई है, क्योकि तेज हवा मे हमारा जहाज विलपर का मुकाबला नही कर सकता था। इसके अलावा एक और बात हमारे पक्ष मे थी। हवा हलकी चल रही थी और उस जहाज के मुकाबले हमारे पास पाल कही ज्यादा थे। सुबह के समय वह हमसे तेज चल रहा था और दोनो जहाजो के बीच का फासला घटता जा रहा था लेकिन बारिश आने पर और हवा के कुछ और धीमे हो जाने के बाद हम उसे पीछे छोडने लगे।

सारे दिन जहाज का हर आदमी काम पर लगा रहा। हमने अपने हथियारो को तैयार कर लिया था लेकिन अगर वह जहाज वही चीज साबित होता जिसका हमे डर था तो हम थोड़े से लोग उसका कुछ भी न बिगाड पाते। सौभाग्य से आकाश मे चन्द्रमा नही था और रात एकदम काली थी। हमने जहाज की रोशनी पूरी तरह बुझा दी थी और रास्ता कुछ बदल दिया था। इन सब बातो को देखते हुए हमे आशा थी कि हम उसकी पकड से निकल जायेंगे, बिनैकल मे रोशनी नही थी और तारे ही हमारे मार्ग दर्शक थे। सारी रात जहाज पर खामोशी छायी रही। भोर होने पर उस जहाज का कही नाम-निशान भी न था, और हमने अपना जहाज फिर सही रास्ते पर डाल दिया।

बुधवार, एक अक्टूबर। आज देशातर २४° २४' प० मे विषुवत रेखा पार कर ली। पुराने रिवाज के अनुसार आज मैं पहली बार वरुण का बेटा कहलाने का अधिकारी बना। इस पदवी को पाकर मैं बहुत खुश था। इसे प्राप्त करने के लिए शुरू में अधिकतर नये लोगो की जो मिट्टी पलीद की जाती है, मैं उससे बच गया था। एक बार इस रेखा को पार कर लेने के बाद मल्लाह को वरुण का बेटा समझा जाता है और उसे कोई तग नही कर सकता, वल्कि वह खुद दूसरो का मजा लेने का हकदार हो जाता है। यह रिवाज पुराना है और अब इसका प्रचलन बहुत कम हो गया है। हा, अगर जहाज मे मुसाफिर हो तो मल्लाह इसका फायदा उठाते हैं और तब खासी दिल्लगी रहती है।

पिछले कुछ दिनो से सब मल्लाह समझ गये थे कि दूसरा मान्मि, जिसका नाम फास्टर था, सुस्त और लापरवाह किस्म का आदमी है और नौविद्या मे अनाडी है। वे यह भी समझते थे कि कप्तान उससे सख्त नाखुश है। इस मामले मे कप्तान की

शक्तिमत्ता सर्वविदित थी और हम सब को लगता था कि किसी दिन फास्टर की शामत जरूर जायगी।

फास्टर (जिसके पद के कारण उसके नाम के आगे मिस्टर लगाना जरूरी था) आधा नाविक था। उसने छोटी-मोटी यात्राए ही की थी और उनके बीच बहुत दिनो तक वह अपने घर पर रहता था। उसका बाप अमीर था और उसे खूब पढाना चाहता था लेकिन सुस्त और निकम्मा होने के कारण उसे जहाज पर काम करने के लिये भेज दिया गया। यहाँ भी उसे कामयाबी न मिल सकी। बहुत से बदमाश लडको में मल्लाह के गुण होते हैं लेकिन उसमे यह प्रतिभा भी नही थी— उसमे वह बात ही नही थी जो असली मल्लाहो मे होती है। वह उन अफसरों के वर्ग में से था जिन्हे उनका कप्तान नापसन्द करता है और मल्लाह नफरत की नजर से देखते हैं। वह मल्लाहो से बडी दूनगी हाकता, कप्तान के बारे में अनापशनाप बकता और छोकरो के साथ खेलता था। फलस्वरूप अनुशासन मे ढील आ गयी थी।

इस तरह के व्यवहार से कप्तान शक्की हो उठता है और मल्लाह नाखुश। वे ऐसा अफसर चाहते हैं जो सक्रिय और सजग हो, उनमे कम घुलेमिले लेकिन उनसे उदारता का बरताव करे। उसमे एक बुराई यह भी थी कि पहरा देते समय वह अक्सर सो जाया करता था। एक बार कप्तान ने उसे सोता हुआ पकड लिया था और उसे चेतावनी दे दी गयी थी कि अगर आइन्दा ऐसा हुआ तो उसे अपदस्थ कर दिया जायगा। इस सोने को रोकने के लिए डेक पर से मुर्गियो के दरबे हटा दिये गये क्योंकि कप्तान न तो डेक पर खुद बैठता था और न किसी अफसर को ही बैठने देता था।

विषुवत रेखा को पार करने के अगले दिन की बात है। रात को आठ से बारह बजे वाले पहरे मे मै भी था। अंतिम दो घन्टो मे सुकान चलाने का काम मुझे करना था। रात-भर छोटे-मोटे अधड आते रहे थे और कप्तान ने हमारे पहरे के मुखिया मि० फास्टर को पहरे पर बहुत सावधान रहने का आदेश दे दिया था। जब सुकान मेरे हाथो मे आया तो कुछ ही देर बाद मैने देखा कि वह बहुत उनीदा हो चला है। अन्त मे वह कम्पेनियन पर पाव फैला कर लेट गया और गहरी नीद सो गया।

कुछ ही देर बाद कप्तान दबे पाँव डेक पर आया और कुछ देर कुतुबनुमा को देखता हुआ मेरे पास खडा रहा। आखिरकार अफसर को कप्तान की मौजूदगी का

पता लग गया, लेकिन उसने इसका अहसास न होने दिया, बल्कि यह जनाने के लिए कि वह सो नही रहा है खुद ब-खुद गुनगुनाने और सीटी बजाने लगा। इसके बाद पीछे की ओर देखे बिना वह आगे गया और प्रमुख रायल पाल को ढीला कर देने का हुक्म दिया। जब वह पलट कर पीछे आने लगा तो उसने ऐसा अभिनय किया मानो डेक पर कप्तान को देख कर उसे आश्चर्य हुआ हो।

लेकिन उसकी यह चाल बेकार गयी। कप्तान की आखे बहुत तेज थी। ठेठ मल्लाहाना लहजे मे वह दूसरे मालिस पर बरस पडा..."बदमाश! तुम बिल्ली के गू हो...लीपने के मतलब के हो न पोतने के, तुम न आदमी हो, न लडके, न मल्लाह! तुम तो जहाज पर दूसरी चीजो की तरह एक बेजान चीज हो! नमक हराम हो। तुम एकदम गये—बीते हो!" उसने मल्लाह के शब्द कोश में पाये जाने वाले इससे भी कही खूबसूरत शब्दो का प्रयोग किया। इस लताड के बाद दूसरे मालिम को उसके कमरे मे भेज दिया गया और बाकी पहरा खुद कप्तान ने पूरा किया।

सुबह सात बजे सब लोगो को जहाज के पिछले भाग में बुलाकर यह सूचना दी गयी कि फास्टर को अपदस्थ कर दिया गया है। हमसे अपने में से किसी एक मल्लाह को दूसरा मालिम चुन लेने को कहा गया। अक्सर कप्तान इस तरह का प्रस्ताव रखते ही हैं। यह एक अच्छी नीति है क्योकि मल्लाह यह सोच कर खुश होते हैं कि उन्हे अफसर को चुनने की शक्ति प्राप्त है और उस चुने गये अफसर का भी आदेश तो उन्हें मानना ही पडता है।

जैसा कि अक्सर होता है, हमारे मल्लाहो ने एक ऐसे आदमी को चुनने की जिम्मेदारी लेने से इनकार कर दिया जिसकी वे शिकायत भी न कर सकें। उन्होंने यह काम कप्तान को ही सौप दिया। कप्तान ने एक चुस्त और होशियार नौजवान मल्लाह को चुना जिसका जन्म केनेबेक के पास हुआ था और जो कई लम्बी यात्राए कर चुका था। कप्तान ने यह घोषणा की

"मैं जिम हाल को चुनता हूँ—वह तुम्हारा दूसरा मालिम है। तुम लोगो को मेरी ही तरह उसके आदेशो का भी पालन करना होगा और उसे मिस्टर हाल कह कर पुकारना होगा।" फास्टर को अगवाड में एक साधारण मल्लाह बना दिया गया और उसके नाम के साथ लगा हुआ मिस्टर उड गया, जबकि एक साधारण नौज

वान मल्लाह जिम अब मिस्टर हाल बन गया और छुरी-काटों और चाय की प्यालियो के प्रदेश मे निवास करने लगा ।

रविवार, पाँच अक्टूबर । मैं सुबह वाले पहरे मे था । पौ फटनी शुरू ही हुई थी कि अगवाड मे से एक मल्लाह चीख उठा, "जमीन हो !" मैने पहले कभी यह आवाज नही सुनी थी इसलिए मेरी समझ मे इसका मतलब नही आया । लेकिन जब मैने उस दिशा मे देखा जिसमे और सब लोग देख रहे थे तो पाया कि जमीन दिखायी दे रही है । हमने जल्दी से अपना जहाज जमीन की ओर बढाया । जमीन से हम अपने देशातर का निश्चय कर लेना चाहते थे, क्योकि कप्तान के क्रोनोमीटर के हिसाब से हम २५° पश्चिम मे थे जबकि उसका खयाल था कि हम पश्चिम की दिशा मे काफी दूर चले आये हैं । वह काफी समय से इस चक्कर मे पडा था कि उसका क्रोनोमीटर खराब हो गया है या सेक्सटेंट । इसका फैसला जमीन ने किया और यह साबित हुआ कि खराबी कप्तान के क्रोनोमीटर में थी । उसका प्रयोग करना बन्द कर दिया गया, और बाद को और ज्यादा खराब हो जाने के कारण उसका प्रयोग कभी किया ही नही गया ।

किनारे की ओर जाने पर हमे ज्ञात हुआ कि हम पर्नेम्ब्यूको बन्दरगाह के सामने आ पहुँचे हैं । दूरबीन से ओलिंडा कस्बा, घरो की छतें और विशाल गिरजा घर दिखायी पड रहे थे । हम बन्दरगाह के मुहाने से होते हुए आगे बढे तो हमे सम्पूर्ण पालो का दो मस्तूलो वाला एक जहाज बन्दरगाह मे जाता मिला । दोपहर के दो बजे हम फिर हवा के रुख मे अपने मार्ग पर चल पडे । अब जमीन पीछे छूट चली थी और दिन छिपते-छिपते वह ओझल हो गयी ।

यहाँ पहली बार मैंने कट्टूमारन नौकाए देखी । इनका निर्माण लट्ठो को बाध कर किया जाता है, इनमे एक विशाल पाल होता है और, यद्यपि यह बात अजीब-सी लगती है, इन्हे समुद्र मे चलने वाली नावो की दृष्टि से श्रेष्ठ और विश्वसनीय माना जाता है । हमने देखा कि हर नाव में एक से लेकर तीन तक आदमी बैठे थे और, यद्यपि तब तक काफी अधेरा हो चला था, वे समुद्र की ओर जा रहे थे । इन नावो में इन्डियन आदिवासी मछलिया पकडने जाते हैं और चूंकि कुछ ऋतुओ मे मौसम स्थिर रहता है इसलिए उन्हे कोई भय नही लगता । ओलिंडा से विदा लेकर हम केप हार्न की ओर चल दिये ।

हमारे लाप्लाटा नदी के अक्षाश मे पहुँचने से पहले कोई खास घटना नही

हुई। इस प्रदेश मे दक्षिण-पश्चिम दिशा से भयानक झंझाए उठती हैं जिन्हे पेम्परो कहते हैं। इस नदी में चलने वाले जहाजो के लिए ये झझाए बहुत ही विनाशक होती हैं। समुद्र मे मीलो तक इनका डर रहता है। अक्सर झझा आने के पहले बिजली चमकती है। कप्तान ने मालिम अफसरो को समझा दिया था कि बहुत चौकस रहना और अगर दक्षिण-पश्चिम मे बिजली चमकती दिखायी दे तो फौरन पाल गिरा लेना। इसकी पहली झलक तब दिखायी पडी जब मैं डेक पर था। मैं अनुवात गली मे पहरा दे रहा था कि मुझे मोरों पर बिजली चमकती दिखायी दी। मैंने इसकी सूचना मालिम को दी। वह वहाँ आया और उस दिशा में कुछ देर देखता रहा। दक्षिण-पश्चिम की ओर घोर अधकार छाया हुआ था और कोई दस मिनट बाद हमें बिजली साफ दिखायी पडी। जो दक्षिण-पूर्वी हवा पहले चल रही थी वह अब थम गयी थी और चारो ओर पूर्ण निस्तब्धता छायी हुई थी। हम तुरन्त ऊपर चढ गये और हमने रायल व टापगैलेट पालो को लपेट दिया। इसके बाद हमने फ्लानजीब उतार ली और यार्डों को पवनानुकूल कर के हम झंझा के आक्रमण की प्रतीक्षा करने लगे। एक विराट कुहेलिका, जिसके ऊपर एक काला बादल था, हमारी ओर बढी आ रही थी और उसने क्षितिज के उस भाग को ढक लिया। यद्यपि सारे आसमान में तारे चमक रहे थे लेकिन उस कोने के तारे उस विराट कुहेलिका में छिप गये थे। आँधी के एक जोरदार झोके के साथ यह कुहेलिका हम पर टूट पडी। ओलो और वर्षा की झडी लग गयी और हम देखते रह गये। अच्छे-अच्छे सूरमाओ को पीठ दिखानी पडी। सौभाग्य से हम इस आक्रमण के लिए पहले से तैयार थे। जहाज के पालों की अधिकाश रस्सिया खोल दी गयी थी। वह आधी के रुख मे दौड रहा था और उसकी रस्सियां उड रही थी। कप्तान ने सब लोगो को ऊपर काम पर बुला लिया था। बडी तरकीबो से और बडी मुश्किल से हम जहाज को उसके रास्ते पर डाल सके।

जिसे वाकई झझा कहते हैं उसका यह पहला ही झटका था जो मेरे देखने में आया। गल्फस्ट्रीम में हमने अपने शिखर पाल छोटे कर दिये थे। मैं इसे बहुत महत्वपूर्ण बात समझता था लेकिन एक अनुभवी मल्लाह के लिए यह बडी ही मामूली बात है। अब मैं जहाज की बातो और अपनी जिम्मेदारी को समझने लगा था इसलिए मैं पालो की रस्सी छोटी-बडी करने का काम बखूबी करने लगा था। आदेश मिलते ही मै डेक पर पहुँच गया और इस काम मे मुझे बेहद

मजा आया । इसकी वजह यह है कि एक पहरे के लोग तो जहाज के अग्र भाग के शिखर पाल को छोटा करते हैं और दूसरे पहरे के लोग प्रमुख भाग के शिखर पाल को, और हर एक की कोशिश यह रहती है कि पहले उसका पाल छोटा हो । दूसरे पहरे के मुकाबले हमें एक फायदा था । उनका मुखिया मुख्य मालिम कभी ऊपर नही जाता जबकि हमारा नया मुखिया बडा ही फुर्तीला था और हमारे काम मे हाथ लगाते ही वह पालो को छोटा करने मे जुट जाता था । इस तरह हम हमेशा आगे रहते थे और चटपट अपना काम खत्म करने के बाद गाने लगते थे ताकि दूसरे पहरे वालो को पता चल जाय कि हमने उनसे पहले अपना काम पूरा कर लिया है ।

मल्लाह के जितने काम हैं उनमें पालो की रस्सिया छोटा करना सबसे मजेदार है । सब मल्लाह यह काम करते हैं और पाल रस्सियों को खोलने के बाद वे समय नही गवाते । अगर कोई आदमी फुर्तीला नही होता तो दूसरा उससे बाजी मार ले जाता है । एक आदमी खुले बाजू पर पतवार डोरी ठीक करने जाता है, दूसरा आदमी अनुवात में जाता है । तीसरा और चौथा मल्लाह पाल-कोनो पर काम करने जाते हैं । बाकी लोग बट मे काम करते है । वहाँ काम करते समय उनकी कुहनी से कुहनी भिडी रहती हैं । रस्सियाँ छोटा करने मे यार्डों के किनारो का महत्व सबसे अधिक है लेकिन पाल लपेटते समय सबसे शक्तिशाली और अनुभवी मल्लाह यार्ड के बिचले हिस्से मे बट बनाता है । अगर दूसरा मालिम फुर्तीला हो तो ये दोनो काम वह खुद ही करता है । अगर उसमे अनुभव, शक्ति या फुर्ती की कमी है तो कोई दूसरा आदमी यह गौरव प्राप्त कर लेता है, जिससे दूसरे मालिम की बदनामी होती है ।

बाकी रात और अगले दिन भर हमने अपने जहाज के पाल बहुत छोटे रखे क्योकि हवा तेज चल रही थी । इसके बाद ओले तो नही पडे लेकिन बारिश खासी हुई और मौसम बडा ठन्डा और तकलीफदेह रहा । हमे इसलिए तकलीफ और अधिक उठानी पडी क्योकि हम ठन्डे मौसम का सामना करने के लिए तैयार नही थे और हमारे शरीरो पर महीन कपडे थे । जब हमे नीचे पहरा देने का हुक्म मिला तो हम खुश हुए । हमने मोटे कपडे, बूट और साउथ वेस्टर टोप पहन लिए । सूरज ढलने के समय झंझा कुछ कम हुई और दक्षिण पश्चिम में अंधेरा छंटना

शुरू हुआ। धीरे-धीरे हम अपने पाल बढ़ाने लगे और मध्य रात्रि से पहले ही जहाज पर टापगैलेंट पाल तान दिये गये।

अब हम केप हार्न पहुंचने की सोच रहे थे। आगे हमें सर्दी के मौसम की आशंका थी और हम जरूरी तैयारी करने में लगे थे।

मंगलवार, चार नवम्बर। भोर में बांई ओर जमीन दिखायी दी। वे दो द्वीप थे जिनकी शक्ल एक सी थी आकार अलग-अलग। वे द्वीप पानी के तल से ही उठने शुरू हो गये थे और काफी दूर तक उनकी ऊँचाई आड़ी थी। बहुत दूर होने के कारण वे गहरे नीले रङ्ग के लग रहे थे और कुछ ही घन्टों में हम उन्हें उत्तर-पूर्व की दिशा में छोड़ आये। ये फाकलैंड द्वीप थे। हम उनके और पैटैगोनिया प्रदेश के बीच से गुजरे थे। संध्या के समय दूसरे मालिम ने, जो कि मस्तूल के सिरे पर था, बताया कि उसने दांयी ओर जमीन देखी है। वह जरूर स्टेटनलैंड द्वीप रहा होगा; और अब हम केप हार्न प्रदेश में प्रवेश कर चुके थे। उत्तर की ओर सुहावनी हवा चल रही थी। हमने शिखर मस्तूल और टापगैलेंट पाल तान लिये थे और इस बात की पूरी आशा थी कि आगे की यात्रा सुन्दर होगी और उसकी गति तेज होगी।

* * *

अध्याय—७

बुधवार पांच नवंबर। पिछली रात मौसम साफ था और हमने साफ तौर पर मैंगेलन बादलों और साउदर्न क्रास के दर्शन किये। मैगेलन बादलों में तीन छोटी नीहारिकाएं हैं—दो आकाशगंगा की तरह चमकीली हैं और एक अंधेरी। दक्षिणी उष्णकटिबंध को पार करने के तुरन्त बाद पहली बार इनके दर्शन होते हैं। जब केप हार्न से चलते हैं तब ये सीधे सिर के ऊपर होते हैं। क्रास में सलीब की शक्ल में स्थित चार तारे होते हैं और इसे आकाश का सबसे चमकीला तारा-मंडल माना जाता है।

आज (यानी बुधवार) दिन के पूर्वार्द्ध में हवा मन्द थी लेकिन अपराह्न में तेज चलने लगी और हमने रायल पाल लपेट दिये। हमने दुपेंचा पाल तने रहने दिये। कप्तान का कहना था कि जहां तक हो सका वह उन्हें लपेटे बिना ही काम चलायेगा। ठीक आठ बजे के पहले (उस अक्षांश में उस समय सूरज छिप

ही था) "सब लोग ऊपर आयें" की पुकार आयी। जब हम तेजी से डेक पर पहुँचे तो देखा कि दक्षिण-पश्चिम से एक बडा काला बादल सारे आसमान को काला करता हुआ हमारी ओर लुढकता चला आ रहा है। "यह आया केप हार्न" मुख्य मालिम ने कहा और हम पाल छोटे भी न कर पाये थे कि उसने हमे धर लिया।

कुछ ही क्षणो मे सागर इतना अधिक उमड आया जितना मैने पहले कभी नही देखा था। सामने समुद्र उफन रहा था और हमारा नन्हा-सा जहाज उसमें ऊब-डूब रहा था। उसका अगला हिस्सा पानी में था। पानी उसके अन्दर घुसा आ रहा था और जहाज की हर चीज को धो डालने की धमकी दे रहा था। कुछ हिस्सो में कमर-कमर पानी भर गया था। हम ऊपर पहुँचे, शिखरपालो को और छोटा कर दिया और दूसरे सब पालो को लपेट दिया।

लेकिन इससे भी कुछ न हुआ, जहाज उफनते हुए सागर में ऊब-डूब कर रहा था और झंझा प्रतिक्षण तेज हुई जा रही थी। सहिम वृष्टि और ओले हम पर कयामत बरपा कर रहे थे। हमने फिर-फिर इससे बचने की अनेक तरकीबें कीं लेकिन यह तय हो गया कि आगामी यात्रा सुखमय नही होगी। मन ही मन हम भीषण आंधियो और ठन्डे मौसम के लिए तैयार हो गये।

रात भर वह भयानक तूफान छाया रहा—वर्षा, ओले, बर्फ और हिमयुक्त वृष्टि जहाज पर आघात करते रहे—आँधिया चलती रही और सागर उफनता रहा। भोर के समय (सुबह के ३ बजे के करीब) डेक बर्फ से भर गया था। कप्तान ने स्टीवार्ड के हाथ पहरा देने वाले हर मल्लाह के लिए एक-एक गिलास ग्राग शराब भिजवायी, और जब तक हम केप प्रात से निकल नही आये तब तक सुबह के पहरा देने वाले और शिखरपाल छोटा करने वाले मल्लाहो को रोज यह शराब मिलती रही। सूर्योदय के समय वादल छंट गये और हवा अनुकूल होने पर हम फिर अपने रास्ते पर चल पडे।

बृहस्पतिवार छ नवबर। दिन के पूर्वार्द्ध मे तो मौसम पहले से अच्छा रहा, लेकिन रात को हमें फिर वही दृश्य देखना पडा। इस बार हमे पिछली रात की तरह जहाज का रुख नही बदलना पडा बल्कि शिखरपाल को छोटा करके हम जहाज को प्रतिवात दिशा मे ही चलाते रहे।

आज रात दो घन्टे जहाज का सुकान मुझे चलाना था। मै अनुभवहीन था लेकिन मेरे काम से अफसर सतुष्ट हुआ, और जितने दिन हमारा जहाज केप हार्न

प्रदेश में रहा उतने दिन मैंने और एस—ने सुकान चलाने का मौका नही छोडा। यह बात गर्व करने योग्य थी क्योकि झझा में और उफनते हुए समुद्र मे ऐसे जहाज को चलाना जिसके पाल बिल्कुल छोटे कर दिये गये हो भारी निपुणता और सतर्कता का काम है। इसका मंत्र है "जब धक्का लगे तो ढीला छोड दो"; इस दशा में जरा सी लापरवाही से उफनते हुए समुद्र की कोई उत्ताल तरंग जहाज में घुसकर डेको पर की हर चीज को बहा ले जा सकती है या जहाज के मस्तूलो को उखाड सकती है।

शुक्रवार, सात नवबर। सुबह के समय हवा कुछ मन्द पडी और दोपहर से पहले हवा रुकी रही और लगातार एक गहरा सन्नाटा छाया रहा। हमारे चारो ओर घना कुहरा फैला था। सागर के सन्नाटे दुनिया के अन्य सब भागो के सन्नाटे से निराले होते हैं, क्योकि यहा हर समय समुद्र उफनता रहता है और सन्नाटे का आलम कुछ देर ही रह पाता है, और चू कि जहाज पर न पालो का नियत्रण होता है न रडर का इसलिए वह पानी पर लठ्ठो की तरह असहाय भाव से तिरता रहता है।

सुबह के सन्नाटे से मुझे एक दृश्य याद आ गया जिसका वर्णन करना मैं उस समय भूल गया था, लेकिन जो मुझे इसलिए याद रहा चू कि वह पहला मौका था जब मैंने ह्वेल मछलियो को सास लेते सुना था। यह उस रात की बात है जब हम फाकलैंड द्वीपसमूह और स्टेटनलैंड के बीच से होकर गुजरे थे।

हमे बारह से चार तक पहरा देना था। डेक पर आने पर पता चला कि हमारा जहाज शान्त पडा है। उसके चारो ओर घना कुहरा था और समुद्र इतना चिकना था मानो उस पर तेल डाल दिया हो। थोडी-थोडी देर बाद समुद्र-तल से एक नीची लहर सी उठती थी जो जहाज को थोडा सा उकसा देती थी लेकिन उससे पानी की शीशे जैसी चिकनाहट नही टूटने पाती थी।

हमारे आस-पास श्लथ ह्वेलो और दूसरी बड़ी मछलियों के झुन्ड थे जो हमें कुहरे के कारण दीख नही रहे थे। वे या तो धीरे-धीरे तल की ओर आ रही थीं या अपने लम्बे शरीर को पसार रही थी और इस क्रम में उनके उन खास तरह के गहरे लम्बे साँस लेने की आवाज आ रही थी जिनसे उनके आलस्य और शक्ति का परिचय मिलता है।

पहरे के कुछ मल्लाह सो रहे थे और बाकी एकदम चुप थे, इसलिए मेरा

व्यामोह तोडने वाली कोई चीज नही थी, और मै समुद्र की ओर झुका हुआ उन शक्तिशाली जीवो का धीरे-धीरे सास लेना सुन रहा था। एक मछली उछली और मुझे ऐसा लगा मानो मै कुहरे मे भी उसके काले शरीर को देख सकता हूँ, फिर एक दूसरी, जिसकी आवाज मै दूर से सुन सकता था—अन्त में मुझे ऐसा लगा जैसे वह नीचा और स्थायी उभार सागर की उस चौडी छाती का उभार हो जो सास लेने मे उठ-गिर रही है।

आज शाम के समय (अर्थात् शुक्रवार सात नवबर को) कुहरा साफ हो गया और हम समझ गये कि अब फिर वही मुसीबत आयेगी। सूरज छिपते ही फिर वही सिलसिला शुरू हो गया। फिर से हमने वे ही तरकीबे की। जहाज के कुछ पाल बहुत छोटे कर दिये गये और कुछ लपेट दिये गये। लगभग सारी रात बर्फ, ओले और हिमयुक्त वृष्टि जहाज पर प्रहार करते रहे और समुद्र उसके मोरो से टकराता रहा। उसने उसका अगला हिस्सा घेर रखा था लेकिन, चूंकि वह अपने रास्ते पर बढ रहा था इसलिए कप्तान ने उसका रुख बदलने से इनकार कर दिया।

शनिवार, आठ नवबर। आज का दिन सन्नाटे और घने कुहरे से शुरू हुआ और ओलो, बर्फ, तूफानी हवा और छोटे किये गये शिखरपालो के साथ खत्म हुआ।

रविवार, नौ नववर। आज सूरज साफ उगा और बारह बजे तक यही आलम रहा। इस समय कप्तान ने चारो ओर निरीक्षण किया। केप हार्न को देखते हुए आज का मौसम अच्छा था और हम यह सोचकर खुश हुए कि चूकि सारी यात्रा मे सभी रविवार सुख से बीते है इसलिए आज रविवार के दिन मौसम अच्छा रहे—यह ठीक ही है। हमे जो समय मिला उसे हमने स्टीअरेज और अग-वाड को साफ करने दूसरी सब चीजो को ठीक-ठाक करने और अपने गीले कपडो को सुखाने मे लगाया।

लेकिन यह सिलसिला ज्यादा देर तक नही चला। पाँच और छ बजे के दर-म्यान—तब सूरज को निकले लगभग तीन घन्टे बीत चुके थे—हमे डेक पर पहुँचने की हाँक सुनायी पडी। सभी लोगो को काम करने डेक पर बुलाया गया था। एक असली केप हार्न हमारी तरफ बढा आ रहा था। दक्षिण-पश्चिम की ओर से स्लेटी काले रंग का एक विराट बादल हमारी ओर आ रहा था हमने उसके

आने से पहले ही पाल उतार लेने की पूरी कोशिश की (क्योंकि दिन के पूर्वार्द्ध में हमने जहाज पर हल्के पाल तान दिये थे)। हमने पाल लपेट दिये थे और आगे के हिस्से की डोरियो को ठीक-ठाक कर रहे थे कि तूफान ने हमे आ दबोचा। पलक मारते समुद्र, जो तूफान से पहले अपेक्षाकृत शान्त था, उफन-उफन कर ऊंचा उठने लगा, और अधेरा इतना बढ गया मानो रात हो गयी हो।

ऐसे ओले और हिमयुक्त वृष्टि मैने पहली बार देखे थे। इनकी तेजी के कारण हम जहाज के ऊपरी हिस्से की रस्सियो मे चिपके से रह गये। पाल उतारने में हमे और दिनो के मुकाबले अधिक समय लग रहा था क्योकि पाल कडे और गीले हो गये थे और रस्सिया, जजीरें आदि बर्फ व हिमयुक्त वृष्टि से ढक गयी थी। हमारे शरीर सर्द पडे जा रहे थे और तूफान की प्रचडता ने हमे अंधा-सा कर दिया था। जब हम रस्सियो पर उतर कर डेक पर पहुँचे तो हमने देखा कि नन्हा जहाज क्षुब्ध सागर मे गोते खा रहा है और हर बार पानी उसके मोरो पर से होता हुआ जहाज के अगले हिस्से को डुबो देता है।

ऐसे मे मुख्य मालिम ने आदेश दिया "कोई जाकर जिब को लपेट दो।"

यह काम बडा खतरे का था, फिर भी इसे करना तो था ही। अगवाड मे काम करने वाला स्वीडन का एक अनुभवी नाविक (जो उस समय मौजूद नाविको मे सबसे कुशल था) यह काम करने के लिए आगे बढा। उसका साथ देने के लिए एक और आदमी का जाना जरूरी था। मै मालिम अफसर के पास खडा था इसलिए मुझे ही आगे बढना पडा। बाकी नाविको ने बेलनचरखी के पास खड़े होकर रस्सी की मदद से जिब को नीचे झुका लिया और हम दोनो डन्डो और रस्सियो का सहारा लेते हुए जिब को लपेटने के लिए उसकी बल्ली की ओर बढे। विशाल जिब अनुवात दिशा मे उड रहा था और ऐसा लगता था जैसे हमे बल्ली से छुडा कर फेंक देगा।

कुछ देर तक हम कुछ न कर सके, केवल बल्ली पकडे खडे रहे। उफनते हुए समुद्र की दो उत्ताल तरगों ने हमे दो बार ठोढी-भर पानी मे धकेल दिया।

जान (उस स्वीडिश मल्लाह का यही नाम था) डर रहा था कि बल्ली धोखा जायगी इसलिए वह वही से चीख-चीख कर मालिम अफसर से सावधानी बरतने को कह रहा था लेकिन हवा का वेग इतना प्रचड था और समुद्र के जहाज के मोरों पर टकराने की आवाज इतने जोर की थी कि हमारी आवाज उन लोगों तक

पहुँच ही नही पा रही थी, और मजबूरन हमें अपनी बल-बुद्धि पर ही निर्भर रहना पडा।

सौभाग्य से फिर इतनी उत्ताल तरगें नही आयी और हम जिब लपेटने में सफल हो गये। रस्सियो के जाल पर से होते हुए जब हम नीचे आये तो यह देख-कर हमे बडी खुशी हुई कि डेक पर पूर्ण शान्ति थी और पहरा देने वाले नीचे जा चुके थे। हम पूरी तरह भीग चुके थे और हमे सर्दी लग रही थी। रात को भी मौसम लगभग ऐसा ही रहा।

सोमवार, दस नवम्बर। आज कुछ देर तो हमारा जहाज थमा रहा लेकिन बाकी समय उसने आगे बढ़ना जारी रखा। अब हमने पाल छोटे कर दिये थे। दिन भर समुद्र उफनता रहा, प्रचंड वायु चलती रही और ओले तथा हिम के प्रचंड झोके बराबर आते रहे।

मंगलबार, ग्यारह नवम्बर। वही हाल रहा।

बुधवार। वही हाल रहा।

बृहस्पतिवार। वही हाल रहा।

अब हम केप के मौसम के अभ्यस्त हो चुके थे। जहाज के पाल छोटे कर दिये गये थे और डेक की तथा नीचे की हर चीज की सुरक्षा की व्यवस्था कर दी गयी थी, इसलिए जहाज चलाने और पहरा देने के अलावा हमे और कुछ काम ही न रह गया था। हमारे सब कपडे गीले हो चुके थे और थोडी-थोडी देर बाद और गीले हो जाते थे।

नीचे पढने या काम करने की बात सोचना ही बेकार था, क्योकि हम थकान से चूर थे, फलको के मुख बन्द कर दिये गये थे और हर चीज गीली, तकलीफदेह, काली, गन्दी और अस्तव्यस्त हो रही थी। हम नीचे तभी आते थे जब पहरा खत्म हो जाता था। आते ही अपने गीले कपडे निचोड कर टाग देते थे और गहरी नीद सो जाते थे। इसके बाद हम दूसरा पहरा शुरू होने के समय ही जागते थे।

एक मल्लाह कही भी सो सकता है। कैसी भी आवाज—वह आधी की हो या पानी की, लकडी की हो या लोहे की...उसकी नीद मे बाधा नही डाल सकती... और जब सुबह को हमे सर्द गीले डेक पर पहरा देने के लिए हाँक लगायी जाती थी तो हम गहरी नीद मे सोये होते थे।

सुबह और शाम के समय हमें अपने-अपने टीन के डब्बे मे शीरा पडी हुई गर्म,

चाय दी जाती थी। इस समय को हम आनन्द का समय कह सकते हैं। यह चाय उम्दा होती हो—ऐसी बात न थी, लेकिन गर्म और थकान मिटाने वाली होती थी और इसके साथ बिस्कुट और नमकीन बीफ खा कर हम मजे से पेट पर हाथ फेरते थे। लेकिन, हमारे इस भोजन की प्राप्ति के साथ भी एक तरह का अनिश्चय जुडा था। हमे ऊपर रसोई मे जाकर खुद अपने डब्बो मे चाय और बीफ का टुकडा लेना होता था और इस बात का पूरा खतरा रहता था कि नीचे आने से पहले ही हम भोजन से वंचित न हो जाएं।

मैंने बीसो बार बीफ को जहाज के पतनाले में लौटते और लाने वाले को डेक पर चारो खाने चित्त पड़े देखा है। मुझे एक अग्रेंज नाविक की याद आती है। वह मल्लाहो की टोली की जान था लेकिन कुछ ही दिन बाद हम उसे हमेशा के लिए खो बैठे। एक बार वह चाय से भरा डिब्बा हाथ में लिये दस मिनट तक रसोई में खडा इस बात का इन्तजार करता रहा कि जहाज का हिलना कम हो तो नीचे जाय। दस मिनट बाद जब उसने सोचा कि जहाज कम हिल रहा है तो वह नीचे अगवाड में पहुँचने के लिए रवाना हुआ। अभी वह बेलन चरखी के सिरे तक ही पहुचा था कि समुद्र की एक भीषण तरग जहाज के मोरौं से टकरायी और एक क्षण के लिए मुझे उसके कन्धो और सिर के अलावा कुछ दिखायी नही दिया; अगले ही क्षण वह गिर पडा और मोरो से होकर जहाज में घुसती तरग ने उसे जहाज के पिछले भाग मे पहुँचा दिया। तब दूसरे तरगघात से जहाज का पिछला सिरा ऊचा उठ गया और पानी जहाज के अगले हिस्से की ओर बह आया। अब वह नाविक दीर्घ नौका के ऊँचे उठे पार्श्व में सूखा पडा था। उसने अपने हाथ का चाय का डब्बा अभी पकड ही रखा था जिसमे चाय की जगह समुद्र का खारा पानी भर गया था। लेकिन वह पस्त होने वाला जीव नही था। मुसीबत की घडी में भी उसकी विनोदी प्रकृति हारना नही जानती थी। अगले ही क्षण वह उठ खडा हुआ और पहिए पर काम करते हुए लोगों की तरफ घूंसा तानते हुए वह नीचे की ओर चल दिया। जाते-जाते वह कह गया, "वह आदमी नाविक नही हो सकता जो मजाक को मजाक की तरह न ले।"

ऐसे मामलो मे गिर पडने के अलावा एक और नुकसान भी होता था। रसोई से चाय एक बार ही मिल सकती थी। अगर वह गिर जाती थी तो दुबारा नही मिलती थी। यद्यपि मल्लाह लोग किसी मल्लाह को चाय से वंचित नही रहने देते

थे बल्कि सब थोडी-थोडी चाय उसके डब्बे में डाल देते थे, फिर भी इसे ज्यादा से ज्यादा, किसी नुकसान को मिल कर बाट लेने का नाम ही दिया जा सकता है।

कुछ दिनो बाद मेरे ऊपर भी कुछ इसी तरह की बीती। रसोइए ने एक तरह का गरम मलीदा बनाया था। इसमे महीन पिसे हुए बिस्कुट और काली मिर्च आदि चीजे डाली गयी थी।

यह एक दिव्य पदार्थ था और अन्तिम बारी होने के कारण मुझे इस दिव्य पदार्थ को रसोई से मल्लाहो के लिए नीचे ले जाने का भार सौपा गया। फलका मुख तक तो मै सही-सलामत आ गया लेकिन जब मैं सीढी से नीचे उतर रहा था तो समुद्र की एक तरग ने पहले तो जहाज के पिछले भाग को ऊपर उठा दिया और फिर उसे नीचे गिराती हुई आगे निकल गयी। इस झटके से सीढी अपनी जगह से हट गयी और मै अपना सतुलन खो बैठा। नतीजा यह हुआ कि सारा दिव्य पदार्थ फर्श पर नजर आया।

आप चाहे कुछ भी महसूस करे—जहाज पर हर चीज को मजाक समझ कर उडा देना जरूरी है। अगर आप ऊपर से गिरे और पाल की पैदी मे अटक जाए तो इसका मतलब तो यही हुआ कि आप मौत के मुंह मे से बाल-बाल बच गये, लेकिन जहाज पर इस बात मे आपका परेशान या गम्भीर हो उठना एकदम बेकार है।

शुक्रवार, चौदह नवम्बर। अब हम केप से पश्चिम की दिशा मे चल रहे थे और अपना रास्ता अधिक से अधिक उत्तर को ओर बदल रहे थे क्योकि उस समय प्रचड दक्षिण-पश्चिमी आँधिया चल रही थी और हमे पैटेगोनिया की ओर धकेल रही थी।

दो बजे हमने अपनी अनुवात दिशा मे एक जहाज देखा। चार बजे पता चला कि वह एक विशाल जहाज था और हमारे ही रास्ते पर जा रहा था। उस समय हवा हल्की थी और हमने अपने प्रमुख टापगलेंट पाल तान लिए थे।

इस बात का निश्चय होते ही कि उस पर कौन-कौन से पाल तने हैं हमारे कप्तान ने अपने और पाल भी तान लिये और जहाज को तेजी से आगे बढाया। उस जहाज ने आगे निकलने की कोशिश की लेकिन बेकार, कुछ ही देर मे हमने उसे जा पकडा। हमारी हाक के उत्तर मे उसके कप्तान ने बताया कि उसका जहाज पफकीसाई का "न्यू इंग्लैंड" है। वह ह्वेल मछली का शिकार करने वाला

जहाज था और उसे न्यूयार्क मे चले १२० दिन हो चुके थे । हमारे कप्तान ने उसे अपने जहाज का नाम बताया और यह भी बताया कि हमे बोस्टन से चले ६२ दिन हो चुके थे । इसके बाद दोनो कप्तानो मे देशांतर के बारे मे कुछ बातचीत हुई जिस मे वे दोनो एकमत नही हो सके । फिर वह जहाज पिछड गया लेकिन रात भर वह हमे अपने पीछे आता हुआ दीखता रहा ।

भोर मे हवा हल्की थी इसलिए हमने पाल तान लिये । सूर्योदय के समय हमें एक और बडा जहाज मिला जिसके अगले पिछले—दोनो भागो मे पाल तने हुए थे । यह भी ह्वेल का शिकारी जहाज था । उसने हमे रुकने का इशारा किया । करीब साढे सात बजे उनकी एक नाव हमारे जहाज के किनारे आ गयी और कप्तान जाब टेरी उससे उतर कर हमारे जहाज मे चढ आया । जाब टेरी का नाम प्रशांत महासागर के बंदरगाहो और उनमें चलने वाले जहाजो के प्रायः सभी लोग जानते थे ।

"क्या तुम जाब टेरी को नही जानते ? मेरा ख्याल था जाब टेरी को सभी जानते हैं," उस नाव पर आये एक नौसिखुए मल्लाह ने मेरे प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा । मैंने उससे उसके कप्तान के बारे मे पूछा था ।

वाकई वह आदमी यकता था । वह छ फुट लबा था और मोटे कपडे के जूते व भूरे रंग का कोट-पतलून पहने था । धूप की वजह से उसका रंग जरूर काला पड गया था—लेकिन इसके अलावा उसमे ऐसी कोई बात नही थी जिससे उसके मल्लाह होने का अनुमान किया जा सके, फिर भी वह चालीस वर्षो से ह्वेल का व्यापार कर रहा था, और जैसा कि खुद उसने बताया कि कई जहाजो का मालिक, निर्माता और कप्तान रह चुका था । उसकी नाव के मल्लाह काफी कच्चे और नौसिखुए थे ।

कप्तान टेरी ने हमारे कप्तान को समझा दिया कि उसके देशातर के हिसाब मे कुछ गलती है । दिन हमारे जहाज पर बिता कर सूर्यास्त के समय वह नाव में बैठ कर अपने जहाज की ओर चला गया जो अब छः–आठ मील पीछे छूट गया था ।

जहाज पर आते ही उसने एक गप्प-कथा शुरू कर दी थी जो चार घन्टे तक प्राय अविराम चलती रही । यह गप्प स्वय जान टेरी, पेरू की सरकार, डब्लिन फ्रिजेट और लार्ड जेम्स टाउंसलैड, राष्ट्रपति जेक्सन और बाल्टीमोर के जहाज

"एन एम किम" के बारे मे थी । यह गप्प-कथा शायद कभी खत्म न होती लेकिन सध्या के समय तेज़ हवा चल निकली और जाब टेरी ने अपने जहाज पर लौट आने का फैसला किया ।

उसकी नाव पर जो लोग आये थे उनमे से एक लडका ठेठ देहाती लग रहा था । उसने जहाज या उसमें लगे पालो या रस्सियो आदि में कोई दिलचस्पी नही दिखायी बल्कि पशुओ मे घूमता रहा । जहाज के सुअरो के बाडे के ऊपर झुक कर वह बोला—काश मैं अपने पिता के पास लौट कर उसके सुअरो को चरा सकता ।

आठ बजे हमने अपने जहाज का रुख उत्तर की ओर कर दिया । अब हमारा लक्ष्य जुआन फर्नांडीज पहुचना था ।

आज हमने अन्तिम बार अल्वाट्रास चिडियो के दर्शन किये । केप से चलने के बाद बहुत समय तक इन चिडियो ने हमारा साथ दिया था । इन चिडियो के बारे में मैने जो कुछ पढा था उसके कारण इन में मेरी दिलचस्पी हो गयी थी और इन्हे देख कर मै निराश नही हुआ । हमने लकडी की एक पटिया पर काँटा व हुक लगा कर उसे डोरी से बाँध कर जहाज के पीछे की ओर बहा दिया । इस पटिया की मदद से हमने दो-एक चिडियें पकड ली । उनके लम्बे फडफडाते पंख, लम्बे पाव और बडी घूरती-सी आँखे.. ये सब चीजें उन्हे एक विशेष प्रकार का रूप प्रदान कर देती हैं । वे उडती हुई सुन्दर लगती हैं . लेकिन जीवन में मैंने जो सुन्दरतम दृश्य देखे हैं उनमे से एक इस प्रकार है . केप हार्न से चलने के बाद एक दिन समुद्र बहुत विक्षुब्ध था । बीच-बीच मे गहरी निस्तब्धता छा जाती थी । ऐसी ही निस्तब्धता के समय एक अल्बाट्रास समुद्र पर सोई हुई थी ।

उस समय हवा बिल्कुल बन्द थी और पानी का तल छितरा नही रहा था, लेकिन एक विराट लहर रह-रहकर उभर आती थी । हमारे ठीक सामने ही एक सर्वांगश्वेत अल्बाट्रास लहरो पर सोई हुई थी । उसने अपना सर पखो में छिपा रखा था । एक क्षण में वह किसी विराट लहर के सिरे पर उठती दिखायी देती और फिर ऐसा लगता जैसे लहर-कोटर मे समा गयी है । कुछ देर तो वह अपनी मस्ती में पडी रही लेकिन हमारा जहाज उसी की दिशा में बढ रहा था और मोरो से पानी के टकराने की आवाज तेज होती जा रही थी । इस आवाज को सुन कर वह जाग उठी । सिर उठा कर एक क्षण उसने हमारी ओर घूरा और फिर अपने विशाल डेनो को फैला कर उड गयी ।

अध्याय—६

सोमवार, उन्नीस नवम्बर। आज का दिन बड़ा मनहूस था। सुबह के सात बजे थे। डेक पर दूसरी टोली पहरा दे रही थी और हमारी टोली नीचे सो रही थी। हम गहरी नींद सोये थे कि "सब लोग ऊपर आओ। एक आदमी डूब गया" की आवाज सुन कर जाग उठे।

इस मनहूस पुकार को सुन कर सभी लोगो के दिल लरज उठे। जब हम दौड़ कर डेक पर पहुँचे तो देखा कि जहाज को पीछे लौटाया जा रहा है। जो लड़का कर्ण चला रहा था वह उसे छोड़ कर कुछ फेंकने चला गया था, और बढ़ई ने, जो कि एक अनुभवी व कुशल मल्लाह था, यह देख कर कि हवा हल्की है कर्ण नीचे रख दिया था और अब वह जहाज को पीछे की ओर ले जा रहा था।

डेक पर पहरा देने वाले मल्लाह एक नाव उतार रहे थे और अगर मैंने डेक पर पहुँचने मे जरा भी देर की होती तो मैं उसमे बैठने से रह ही जाता। जब हमारी नन्ही नाव विशाल प्रशात महासागर मे पहुँची तब कही मुझे पता चल सका कि हमने किसे खो दिया है। हमें छोड़ जाने वाले का नाम ज्यार्ज बाल्मर था। वह एक जवान अग्रेज मल्लाह था जो अपनी फुर्ती और आगे बढ कर काम करने की आदत के कारण अफसरो को प्रिय था और जिसकी मस्ती और हसी-मजाक के कारण सभी मल्लाह उसे बहुत पसन्द करते थे। वह प्रमुख शिखर-मस्तूल के सिरे में एक फीता बाधने जा रहा था। उसकी गरदन में एक फीता, ब्लाक, पाल-रस्सी और सूआ आदि चीजें लटकी थी। कुछ दूर जाने पर अचानक वह गिर पड़ा और शायद गिरते ही डूब गया होगा क्योकि एक तो उसे तैरना नही आता था, दूसरे उसने भारी कपड़े पहन रखे थे और फिर उसकी गरदन मे वे सारी चीजें लटकी हुई थी।

हम पीछे की ओर उस दिशा मे चले जिसमे वह गिरा था, और यद्यपि हम जानते थे कि उसके बच पाने की कोई आशा नही है फिर भी वापस लौट चलने की बात कहना कोई नही चाहता था। लगभग एक घन्टे तक हम नाव खेते रहे और यद्यपि हम सब जानते थे कि हमारी इस कोशिश से कुछ होना-जाना नही है फिर भी दिल नही मान रहा था कि उसे छोड़ कर वापस लौट चलें। अंत मे हमने नाव का मु ह मोड़ा और जहाज की ओर वापस चल पड़े।

मृत्यु सदैव हमे एक रहस्यमय रूप से प्रभावित करती है, लेकिन समुद्र पर

उसका प्रभाव सब से अधिक होता है। स्थल पर आदमी मरता है, उसके मित्रों को उसका शरीर मिल जाता है, लोग गलियो मे उसका शोक मनाते फिरते हैं, लेकिन जब आदमी जहाज मे समुद्र मे गिरता है और खो जाता है तब इस मृत्यु-घटना मे एक आकस्मिकता होती है, उस पर विश्वास कर लेना कठिन होता है, इससे सब पर एक आतन्कपूर्ण रहस्यमयता छा जाती है।

स्थल स्थल पर आदमी मरता है—आप उसके शरीर के साथ कब्र तक जाते हैं और उसकी याद मे एक पत्थर लगा देते हैं। अक्सर आप इस घटना का सामना करने के लिए तैयार रहते हैं। इसमे हर बार कुछ ऐसी चीज होती है कि जब यह मौत होती है तो आप उसे महसूस कर सकते हैं और जब यह घटना बीत जाती है तो उसे याद कर सकते हैं।

युद्ध मे आपकी बगल मे लड़ते हुए आदमी को गोली लगती है, उसका गोलियों से छलनी हुआ शरीर एक ठोस चीज के रूप मे रह जाता है और यह मौत का एक ठोस सबूत है। लेकिन समुद्र मे आदमी आपके पास है—बिल्कुल बगल मे—आप उसकी आवाज सुन रहे हैं, और दूसरे ही क्षण वह चल देता है, और उसका स्थान एक शून्य ले लेता है।

इसके अलावा समुद्र पर आपको अपने साथी की याद बेहद सताती है।

विराट समुद्र पर एक नन्हे से जहाज मे एक दर्जन आदमियो को एक साथ कैद कर दिया जाता है—और फिर महीनों तक अपने अलावा न उन्हे कोई शक्ल दीखती है और न कोई आवाज ही सुनाई देती है, और फिर अचानक उनका एक साथी उनसे छीन लिया जाता हैं, और हर बारी पर उन्हे उसकी याद आती है। ऐसा लगता है जैसे उनका कोई अग ही कट गया हो।

समुद्र पर इस रिक्ति को भरने वाले नये चेहरे या नये दृश्य नही होते। अगवाड मे एक बेच हमेशा खाली पडी रहती है और जब रात को पहरा देने के लिए पहरा टोली बुलायी जाती है तो उसमे एक आदमी हमेशा कम रहता है। पहिया चलाते समय एक आदमी अपनी पारी लेने के लिए नहीं रहता और यार्ड पर काम करते समय एक आदमी की कमी हमेशा महसूस होती है। आप उसकी सूरत देखने और आवाज सुनने के लिए तरस जाते हैं क्योकि आप उस सूरत और उस आवाज के आदी हो चले हैं, और ये चीजे आपके लिए जरूरी हो गयी हैं। आपकी हर इन्द्रिय इस क्षति का अनुभव करती है।

ये सब चीजे इस तरह की मृत्यु के प्रभाव को कई गुना बढा देती हैं और कुछ दिनो तक मल्लाहो के दिल-दिमाग पर यह असर छाया रहता है। अफसर नाविकों के प्रति पहले के मुकाबले कुछ दयालु हो जाते हैं और नाविक एक दूसरे के प्रति उदार हो जाते हैं। चुप्पी और गम्भीरता बढ जाती है। बात बात पर कसम खाना और जोर-जोर से हसना बद हो जाता है। अफसर कुछ अधिक सजग हो जाते हैं और नाविक ऊपर जाते समय विशेष सावधान रहते हैं। मृत नाविक का जिक्र कम होता है या यह कह कर खत्म कर दिया जाता है—"गरीब ज्यार्ज चल बसा! उसकी यात्रा खत्म हो गयी! वह अपने काम मे कुशल था और कर्तव्य निभाना जानता था, और हमारा प्रिय साथी था।"

तब प्राय दूसरी दुनिया की चर्चा शुरू हो जाती है क्योकि प्राय सभी नाविक उसमे विश्वास करते हैं, लेकिन उनके विश्वास स्थिर और बद्धमूल नही होते। वे कहते हैं—"ईश्वर उस गरीब आदमी के प्रति कठोर नही होगा", और अक्सर इस आमफहम वाक्य को दुहराते हैं जिसका अर्थ है कि इस जन्म मे उन्हें जो कष्टमय और यातनापूर्ण जीवन भोगना पडा है वह इसी जन्म मे समाप्त हो जायगा—"कठिन परिश्रम करने, अभाव-ग्रस्त जीवन जीने और निर्दय मृत्यु पाने के बाद नरक मे जाना असभव है।"

हमारा रसोइया एक सीधा-सादा बूढा अफ्रीकी था। वह धार्मिक प्रवृत्ति का व्यक्ति था और जब जमीन पर होता था तो दो बार गिरजा जाता था। रविवार के दिन वह रसोई में बाइबिल पढता रहता था। यह रसोइया अक्सर नाविको को इस बात के लिए ऊच-नीच समझाता रहता था कि सैबाथ का दिन बुरे कामो मे नही बिताना चाहिए। वह उन्हे जताता रहता था कि वरना तुम भी ज्यार्ज की तरह किसी दिन अचानक और असावधानी मे ही चल दोगे।

फिर भी, नाविक का जीवन एक ऐसा मिश्रण है जिसमे अच्छाई कम है बुराई ज्यादा, खुशी कम है गम ज्यादा। सुन्दर के साथ वीभत्स का, उदात्त के साथ सामान्य और महत्वपूर्ण के साथ तुच्छ का, नाविक के जीवन मे अटूट सम्बन्ध है।

हम ज्यार्ज के न मिलने की दुखद सूचना लेकर पूरी तरह लौटे भी न थे कि उस अभागे आदमी के कपडो की नीलामी की तैयारी होने लगी। पहले कप्तान ने सब लोगों को जहाज के पिछले हिस्से मे बुलाया और पूछा कि क्या सब लोग इस बात मे सतुष्ट हैं कि ज्यार्ज को बचाने के लिए जितने प्रयत्न किये जा सकते थे वे

सब किये जा चुके हैं, और अब अब यहा और रुकने से कोई लाभ नही है ? सब नाविको ने कहा कि अब और रुकना बेकार है क्योंकि ज्यार्ज तैरना नही जानता था और उसने भारी कपडे पहन रखे थे। इसलिए हमने पालो में हवा भर ली और अपने रास्ते पर चल पडे ।

नौचालन के नियमो के अनुसार यात्रा मे मरे नाविक की संपत्ति का उत्तरदायित्व कप्तान पर होता है; और या तो यह कोई नियम है अथवा सुविधा के लिए प्रचलित किया गया सार्वभौमिक रिवाज कि किसी नाविक के मरते ही कप्तान को फौरन उसकी चीजें नीलाम कर देनी चाहिये। इस नीलाम में नाविक बोली लगाते हैं और जिस रकम पर बोली छूटती है वह रकम यात्रा की समाप्ति पर उन्हे दिये जाने वाले वेतन मे से काट ली जाती है। इस प्रकार मृत व्यक्ति की चीजो की हिफाजत का सर दर्द व खतरा भी दूर हो जाता है और कपडे वगैरह आम तौर पर बाजार से महंगे भाव पर बिक जाते हैं।

अत जहाज के रवाना होने से पहले ही ज्यार्ज का सन्दूक अगवाड मे लाया गया और नीलाम शुरू हो गया। उसकी यह जैकेट और पतलून जिनमें हमने उसे कुछ ही दिन पहले देखा था, संदूक से निकाली गयी और उनका नीलाम कर दिया गया, जबकि शायद अभी उसका प्राण शरीर से निकला भी न हो। उसका सन्दूक जहाज के पिछले हिस्से में गोदाम के सन्दूकों के साथ रखवा दिया गया। इस तरह, ऐसी कोई चीज नही रह गई जिसे उसकी कहा जा सके। नाविक उसी यात्रा मे मृत व्यक्ति के कपड़े पहनने मे झिझकते हैं, और जब तक बहुत ही जरूरी न हो वे प्राय: ऐसा नही करते।

जैसा कि मृत्यु के बाद प्राय होता है, ज्यार्ज के बारे मे अनेक कहानिया गढ ली गयी। एक ने कहा ज्यार्ज को तैरना न सीखने के लिए पछतावा था, और उसे मालूम था कि उसकी मृत्यु डूबने से होगी। दूसरे ने कहा जिस यात्रा के लिए आदमी का मन गवाही न दे उसका अत शुभ नही होता, मृत ज्यार्ज ने जहाज पर नौकरी कर ली थी और कुछ एडवास ले लिया था और उसे खर्च भी कर दिया था। बाद मे उसका मन इस यात्रा पर आने को नही था लेकिन रुपया चुका पाने की स्थिति मे न होने के कारण उसे हमारे साथ आना पडा था। एक छोकरा, जिससे ज्यार्ज की अच्छी पटती थी, बोला कि मरने से एक रात पहले पहरे के समय ज्यार्ज उससे अधिकतर अपनी मा और परिवार की बातें करता रहा था, जबकि यात्रा में इससे

पहले उसने इस विषय पर किसी से एक बार भी बात नही की थी।

इस घटना से अगली रात को मैं सिगार जलाने रसोई में पहुँचा तो मुझे लगा कि रसोइया कुछ बात करना चाहता है। इसलिए मैं डंडे पर बैठ गया और उसे गप्प मारने का मौका दिया। मैंने ऐसा इसलिए भी किया क्योंकि मैं समझता था कि नाविको में आमतौर पर प्रचलित अंधविश्वास उसमें भी हैं और हाल ही मे हुई मृत्यु ने उन्हे जगा दिया है।

उसने बताया कि ज्यार्ज ने अपनी मौत के बारे में अपने मित्रो को पहले ही बता दिया था। रसोइए का विश्वास था कि ऐसे बहुत कम लोग होते हैं जो मौत की चेतावनी पाये बिना ही मर जायें। अपने इस विश्वास को उसने अनेक सपनो और मृत्यु के पूर्व व्यक्तियो के विलक्षण व्यवहार की कहानिया सुनाकर पुष्ट किया। इसके बाद वह फ्लाइंग डचमैन आदि अन्धविश्वासों की बातें करने लगा। वह बडे रहस्यपूर्ण ढंग से बात कर रहा था, जिससे साफ विदित होता था कि उसके मन मे कोई बात है। अन्त में उसने रसोई मे से अपना सर निकाला और सावधानी से देखा कि कोई हमारी बातें सुन तो नही रहा है और विश्वास हो जाने पर मुझसे नीची आवाज में पूछा—

"सुनो! तुम्हे पता है यह बढई किस देश का है ?"

"हा", मैंने कहा, "वह जर्मन है।"

"किस तरह का जर्मन ?" रसोइए ने पूछा।

"ब्रेमेन का रहने वाला है", मैंने कहा।

"क्या तुम्हे पक्का पता है ?" उसने पूछा।

मैंने उसे यह दलील देकर आश्वस्त किया कि वह जर्मन और अंग्रेजी के अलावा और कोई भाषा नही बोल सकता।

"मुझे यह सुनकर बहुत खुशी हुई", रसोइए ने कहा। "मै डरता था कही वह फिनलैंड का न हो। मैं तुम्हे बताता हूँ, इसी डर के कारण मैं यात्रा में हमेशा उससे नम्रता से बात करता रहा हूँ।"

मैंने उससे डर का कारण पूछा। तब मुझे पता चला कि उसकी दृढ धारणा है कि फिनलैंड के लोग जादूगर होते हैं, खास तौर पर आंधी और तूफान तो उनके इशारे पर चलते हैं। मैंने तर्क द्वारा उसकी इस धारणा का खंडन करना चाहा लेकिन वह अनुभव की दुहाई देता रहा और अपनी बात पर अडा रहा। एक बार

वह एक जहाज मे सैंडविच द्वीप समूह की ओर जा रहा था। इस जहाज का सिल-मा[illegible] फिन[illegible]ड का रहने वाला था, और उसमे कुछ भी कर सकने की ताकत थी, इस आदमी के पास एक बोतल थी जो हमेशा रम से आधी भरी रहती थी, यद्यपि वह इसमे से रोज खूब रम पीता था। उसने देखा था कि यह आदमी उसको मेज पर [illegible] लेता था और घंटो उससे बाते करता रहता था। एक दिन इस आदमी ने अपना गला काट लिया। हर किसी का कहना था कि उसमे प्रेतात्मा [illegible] निवास था।

उसने यह भी सुना था कि फिनलैंड की खाडी मे जाते हुए जहाजो के साथ अक्सर ऐसा होता है कि फिनलैंड के जहाज उनके पीछे होते है, और दूसरे ही क्षण उनसे आगे निकल जाते हैं।

"ओह हो !" उसने कहा, "मै इन लोगो को बहुत देख चुका हूँ। अगर कोई उनकी बात न माने तो ये उसके पीछे भूत-प्रेत लगा देते हैं।"

मैं अब भी सदेह प्रकट कर रहा था। अत मे रसोइए ने कहा कि इसका फैसला जहाज के सबसे पुराने और अनुभवी मल्लाह जान पर छोड दिया जाय। जान जहाज का सबसे पुराना, साथ ही सबसे मूर्ख, मल्लाह था, लेकिन मैने उसे बुलाने की सहमति दे दी। रसोइए ने सारी बात उसके सामने रखी और जैसी कि मुझे आशा थी, जान ने उसी का पक्ष लिया। उसने बताया कि एक बार वह जिस जहाज मे था उसे पद्रह दिन तक बराबर प्रचड आधियो का सामना करना पडा। अत मे कप्तान का ध्यान इस बात पर गया कि कुछ देर पहले उसने जिस मल्लाह को सख्त-सुस्त कहा था वह फिनलैंड का रहने वाला था। कप्तान ने फौरन उसे पकडा और कहा कि अगर वह पर्वट आधी को रोकेगा नही तो उसे अधोभाग मे बद कर दिया जायगा। वह मल्लाह नही माना और कप्तान ने उसे जहाज के अधो-भाग मे बन्द कर दिया। उसका खाना भी बन्द कर दिया गया। डेढ दिन तक तो मल्लाह भूखा रहा। लेकिन अत मे जब उससे भूख बर्दाश्त नही हुई तो पता नही उसने क्या तरकीब की कि हवा ठीक बहने लगी। तब उसे छोड दिया गया।

"देखा", रसोइए ने कहा, "अब तुम इसके बारे मे क्या कहते हो ?"

मैने उसे बताया कि मैं इस घटना के सच होने से इन्कार नही करता। लेकिन वह मल्लाह फिनलैंड का होता या न होता पद्रह दिन के बाद आधी को आखिर रुकना तो था ही।"

"ओह", वह बोला, "जाओ अपना रास्ता नापो ! तुम समझते हो तुमने कालिज में चार जमातें क्या पढ ली, तुम सबसे ज्यादा जानते हो, तुम उनसे ज्यादा जानते हो जिन्होने अपनी आखो से यह सब कुछ होता देखा है। अभी कुछ दिन ठहरो, जब तुम मेरे बराबर मल्लाही कर चुकोगे तब तुम्हे पता चलेगा।"

* * *

अध्याय ७

मगलवार, पच्चीस नवबर, तक हम अनुकूल पवन और सुन्दर मौसम मे आगे बढते रहे। मगलवार को सुबह के समय हमारी नजर जुआन फर्नाडीज द्वीप पर पडी। वह हमारी दृष्टि की सीध मे था और इस तरह उठा हुआ था जैसे समुद्र से कोई गहरा नीला बादल उठ रहा हो। उस समय हम द्वीप से कोई सत्तर मील दूर थे; और वह हमें इतना ऊचा और इतना नीला लग रहा था कि मैंने उसे द्वीप के ऊपर झुका हुआ बादल समझ लेने की गलती की और मैं उस बादल के नीचे द्वीप की तलाश करने लगा। धीरे-धीरे उसका रंग धूमिल और हरा पडता गया और मैंने देखा कि उसका धरातल ऊचा-नीचा है। अतत हमें द्वीप के पेड और चट्टाने दिखने लगी और तीसरे पहर तक हम उस सुन्दर द्वीप के काफी करीब पहुच गये, और जहाज का रुख उसके एकमात्र बन्दरगाह की ओर कर दिया।

दिन छिपे जब हम बन्दरगाह के मुहाने पर पहुचे तो हमें चिली का एक लडाकू जहाज बाहर आता हुआ मिला। उसने हमें हाक लगायी। उसके अफसर ने, जो हमारे विचार से अमरीकी था, हमे रात से पहले ही बन्दरगाह में पहुँच जाने की सलाह दी और बताया कि उनका जहाज वैल्परेजो जा रहा है।

हम तुरन्त लंगरगाह पहुँचे लेकिन चूंकि पहाडों के पास चलने वाली हवाएं हमारे जहाज के चारो ओर तूफानी झोको के रूप में आ रही थी इसलिए मध्य रात्रि के पहले हम लंगर डालने मे सफल नही हो पाये। लगभग बारह बजे हम चालीस फैदम गहरे पानी में आये और बोस्टन से चलने के १०३ दिन बाद हमारे जहाज ने पहली बार लगर डाला। इसके बाद पहरे की तीन टोलिया बना दी गयी और इस तरह हमने बाकी रात काट दी।

मुझे पहरा देने के लिए सुबह के तीन बजे के लगभग बुलाया गया और एक बार फिर से जमीन से घिरे होने पर, तट की ओर से आने वाले मृदुल समीर का

स्पर्श पाकर और दादुरो व झींगुरो का स्वर सुनकर मुझे जो अनुभूति हुई उसे मैं कभी नही भुला पाऊंगा। पर्वत ऐसे लगे जैसे ऊपर लटके हुए हो और कुछ देर ठहर-ठहर कर उनके बीच से एक ऊची अनुगू ज आ रही थी जो मुझे मानवेतर लगी। हमें उस ओर रोशनी नही दिखायी दे रही थी और उस आवाज का हम कोई अर्थ नही समझ पाये। लेकिन मालिम अफसर ने, जो यहा पहले भी आ चुका था, बताया कि यह उन स्पेनी सिपाहियो की चौकसी की आवाज है जो पर्वत की काफी ऊचाई पर स्थित गुफाओ में कैद अपराधियो को निगरानी पर तैनात हैं। अपने पहरे का समय खत्म होने पर मै नीचे चला गया। मैं इस बात के लिए व्यग्र था कि कब दिन निकले और मुझे इस रोमाटिक, बल्कि कहना चाहिए क्लासिक, द्वीप को निकट से देखने-परखने का अवसर मिले।

जब सब लोगो को काम पर बुलाया गया तो सूरज निकल आया था, और यद्यपि तब से ले कर नाश्ते के समय तक मैं पानी के पीपे वगैरह पहुँचाने में काफी व्यस्त रहा, फिर भी अपने चारो ओर की चीजो को मैंने अच्छी तरह देख लिया। बन्दरगाह जमीन से घिरा हुआ था। एक सिरे पर नावो के किनारे लगने की जगह थी जिसकी सुरक्षा के लिए पत्थरो का एक छोटा बाध बना हुआ था। बन्दरगाह के इस सिरे पर दो बडी नौकाएं खडी थी जिन पर एक सतरी पहरा दे रहा था। इसके पास कई तरह की झोपडिए और कुटिएं थी जिनकी सख्या सौ के लगभग थी। इसमें से जो अच्छी थी वे गारे की बनी थी और उन पर कलई हो रही थी, लेकिन अधिकांश राबिन्सन क्रूसो की कुटिया की तरह खंभो और पेडो की शाखाओ से बनी हुई थी।

गवर्नर का भवन अपनी जालीदार खिडकियो, प्लास्टर की हुई दीवारो और लाल टायलो की छत के कारण अलग ही चमक रहा था, फिर भी वह अन्य कुटियो की तरह इकमजिला ही था। इसके पास ही एक छोटा सा पूजाघर था जो अपनी सलीब की वजह से दूर से दिखायी दे रहा था। पास ही एक लबी, नीची, भूरी-सी इमारत थी जो एक तरह के जगले से घिरी हुई थी जिसपर चिली का एक पुराना मैला-सा झडा फहरा रहा था। लेकिन असल मे इस इमारत को दुर्ग (स्पेनी भाषा मे प्रेसिडियो) के गौरवपूर्ण नाम से पुकारा जाता था।

एक संतरी पूजाघर पर तैनात था, दूसरा गवर्नर भवन पर। कुछ सगीनधारी सैनिक या तो मकानो के इर्द-गिर्द घूम रहे थे या नावो के किनारे लगने वाले स्थान पर

खडे हमारी नाव के आने का इतजार कर रहे थे। वे कुछ फटेहाल-से थे और उनके जूतो में से उनकी एडिया झांक रही थी।

पर्वत ऊचे थे लेकिन इतने ऊंचे नही जितने उस तारो-भरी रात में लग रहे थे। वे द्वीप के मध्य भाग की ओर झुके हुए लगते थे। उन पर हरियाली थी और पेड घने थे। उन पर्वतो पर कुछ विशाल—और मेरी सूचना के अनुसार अत्यत उपजाऊ—घाटिया थी। पर्वतो मे द्वीप के विभिन्न भागो को खच्चरों के रास्ते चले गये थे।

मुझे याद आता है कि किनारे पहुँचने की उतावली में मैं और मेरा दोस्त एस–किस प्रकार मल्लाहो की हसी का निशाना बने थे। कप्तान ने जैसे ही जहाज से नाव उतारने का आदेश दिया हम दोनो तेजी से नीचे अगवाड मे गये और हमने द्वीप के लोगो से अदला-बदला करने के लिए अपनी जाकेटो की जेबो मे तम्बाकू भर लिया। फिर जब कप्तान ने चार आदमियो को नाव मे बैठने का आदेश दिया तब सबसे पहले नाव पर पहुँचने की जल्दबाजी मे हम शायद अपनी गरदन ही तोड़ बैठते। इसके बाद आध घन्टे तक नाव खेने के बाद जब हम किनारे पर पहुँचे तो मल्लाह हम पर हँसे क्योकि वे हमारी चालाकी समझ चुके थे।

नाश्ते के बाद दूसरे मालिम को हुक्म दिया गया कि वह पाच आदमियो के साथ जा कर पानी के पीपे भर कर लाये। उन पाचो मे अपना नाम भी पाकर मैं बडा खुश हुआ। हम खाली पीपे लेकर द्वीप पर आये और यहा किस्मत ने फिर मेरा साथ दिया। पानी बहुत गाढा व गदला था और पीपो मे भरने काबिल नही था। गवर्नर ने हमारा खयाल करके कुछ आदमियो को सोते पर ऊपर जाकर सफाई करने के लिए भेजा था। इस प्रकार हमे दो घन्टे का अवकाश मिल गया। यह समय हमने मकानो के आस-पास घूम कर और भेंट किये गये फल खाकर बिताया। द्वीप पर ग्राउड एपिल, खरबूजे, अगूर और बहुत बडे आकार की स्ट्राबरी आदि फल बहुतायत से होते हैं। कहते हैं कि अतिम फल पहली बार लार्ड एसन ने लगवाया था।

सिपाहियो की वर्दी वगैरह की हालत खस्ता थी। उन्होने बडी उत्सुकता से पूछा कि क्या हमारे पास जहाज पर कुछ ऐसे जूते हैं जिन्हे हम बेचना पसद करें? मुझे इस बात में पूरा शक है कि उनके पास खरीदने के साधन रहे होगे। उन्होंने शख और फलो के बदले तम्बाकू बडे शौक से लिया। वहां के लोग चाकू भी खरी-

देना चाहते थे लेकिन गवर्नर ने हमे आज्ञा दी थी कि उनके हाथ चाकू न बेचें। इसका कारण यह बताया गया कि सिपाहियो और कुछ अफसरो को छोड़कर वहा जितने लोग हैं वे सब दडप्राप्त अपराधी हैं जो वैलेपेरेजो से यहा भेजे गये हैं, इसलिए उन्हे किसी भी तरह के हथियार देना अनुचित है।

ऐसा लगता है कि इस द्वीप पर चिली का अधिकार था और लगभग दो साल से सरकार इसका उपयोग काले पानी के रूप मे कर रही थी। लोगो मे व्यवस्था बनाये रखने के लिए वहा एक गवर्नर की नियुक्ति की गयी थी जो मूलत. अग्रेज था लेकिन जो चिली की नौसेना मे भरती हो गया था। गवर्नर की मदद के लिए एक पादरी, आधा दर्जन कार्याध्यक्षो और सिपाहियो के एक दस्ते को भी नियुक्त कर दिया गया।

यहा व्यवस्था बनाये रखना आसान नही था। हमारे वहा पहुँचने से कुछ ही महीने पहले कुछ अपराधियो ने रात मे एक नाव चुरा ली। फिर वे बन्दरगाह मे खडे हुए दो मस्तूलो वाले एक जहाज पर पहुँचे, अपनी नाव मे कप्तान और मल्लाहो को उन्होने द्वीप पर भेज दिया और जहाज़ लेकर चम्पत हो गये। हमें इसकी सूचना दे दी गयी थी। हमने अपने हथियार तैयार कर लिये, रात के समय जहाज पर कडी निगरानी रखी और जब द्वीप पर पहुँचे तो अपराधियो के हाथ अपने चाकू नही बेचे।

मुझे पता चला कि सबसे खतरनाक कैदी पहाडो में बनी गुफाओ मे रखे गये थे और उन पर निगरानी रखने के लिए सतरी तैनात किये गये थे। दिन में उन्हे गुफाओ से निकाल कर काम पर ले जाया जाता था जहा वे कार्याध्यक्षो की देख-रेख में पानी की नहर, घाट या सार्वजनिक महत्व की किसी और चीज के निर्माण में काम करते थे। बाकी लोग अपने हाथ से बनाये घरो में सपरिवार रहते थे। और मुझे वे दुनिया के सबसे निकम्मे आदमी लगे।

उन्हे कुछ काम न था। कभी वे जगल मे चहलकदमी कर आते, कभी घरों के आस-पास। कभी वे घाट पर मटरगश्ती कर लेते। कभी हमारी और हमारे जहाज की तरफ देख लेते। उनसे तेजी से बोलते नही बनता था। दूसरे लोगो के साथ बिल्कुल दूसरी तरह का सुलूक किया जाता था। उन्हे एक कतार मे तेजी से हाका जाता था। उनके कधो पर बोझा लदा होता था और उनके पीछे कार्याध्यक्ष चलते थे जिनके हाथ में लबी छडी रहती थी और सिर पर चौड़े किनारो वाला

तिनकों का बना टोप होता था। इतना अधिक फर्क किस विशेष आधार पर किया जाता था इसके बारे मे मुझे कुछ मालूम नही क्योकि पूरे द्वीप पर केवल गवर्नर ही ऐसा आदमी था जो अग्रेजी बोलता था और वह उस समय वहां नही था।

अपने पीपे भर कर हम जहाज पर लौट आये। कुछ ही देर बाद गवर्नर, पादरी और कप्तान हमारे जहाज पर डिनर के लिए आये। गवर्नर ने अमरीकी सैनिक अधिकारी जैसी पोशाक पहन रखी थी और पादरी अपने हुड वगैरह से लैस था जब कि कैपिटेन के बड़े-बडे गलमुच्छे थे और वह मैली सैनिक पोशाक पहने हुए था।

डिनर चल ही रहा था कि हमे कुछ दूर पर एक बडे जहाज का आभास हुआ। जल्दी ही हमें एक ह्वेल पोत बदरगाह की ओर आता दिखायी दिया। वह जहाज कुछ दूर पर रुक गया और एक नाव हमारे पास आ लगी और उसका कप्तान हमारे जहाज पर चढ आया। वह एक सादा नौजवान क्वेकर था और उसने भूरे कपडे पहन रखे थे। उस जहाज का नाम "कोट्‌ंस" था और वह न्यू बेडफोर्ड का था। कप्तान यह देखने के लिए इधर चला आया था कि केप हार्न होकर आया कोई जहाज बदर में है या नही। साथ ही वह अमरीका के ताजे समाचारो से भी परिचित हो लेना चाहता था। वे कुछ देर हमारे जहाज पर रहे, मल्लाहो से कुछ बातचीत की और फिर अपनी नाव पर चढकर जहाज पर लौट गये। कुछ ही देर बाद उन्होने पालो में हवा भरी और हमारी आखो से ओझल हो गये।

गवर्नर और उनके साथियो को वापस ले जाने के लिए जो छोटी-सी नाव आई उसमे मल्लाहों के लिए उपहार-स्वरूप दूध का एक बडा कढ़ाव, कुछ शंख और चदन का एक लट्ठा था। दूध को बंटते और खत्म होते देर न लगी। बोस्टन से चलने के बाद हमने पहली बार दूध चक्खा। मुझे चंदन का एक टुकडा भी मिला। पता चला कि चदन के पेड द्वीप के बीच मे स्थित पहाडियो पर हैं।

मुझे इस बात का हमेशा पछतावा रहा है कि मैं द्वीप पर पैदा होने वाली दूसरी चीजो के नमूने अपने साथ नही ला सका। आगे चलकर तो मेरे पास जो कुछ था—चन्दन का वह टुकडा और एक नन्हा फूल जो मैं अपने टोप मे लगा कर जहाज पर ले आया था और जिसे मैंने किताब के पन्नों मे दबा कर सुरक्षित रखा था—वह भी खो गया।

सूर्यास्त के लगभग एक घन्टा पहले पानी के पीपो को यथास्थान रखने के बाद हमने चलने की तैयारी शुरू की। इसमे हमे काफी समय लगा। एक तो हम तीस फैदम पानी मे थे दूसरे तीर की ओर से आये एक झोके की वजह से हमने मोरे वाला लगर भी डाल दिया था, तीसरे दक्षिणी पवन के झोके हमारे जहाज को रह-रह कर हिलाते रहे थे—इसलिए हमारा लगर खराब हो गया था। जजीर और पालो की सहायता से बडी मुश्किल से हम लगर उठा सके और तब समुद्र की ओर चल पडे।

जब हम खाडी से बाहर आये तो तारो का उजला प्रकाश चारो ओर फैला था। पीछे यह उत्तुंग द्वीप अपने निस्तब्ध सौदर्य मे परिवेष्टित खडा था। मैने अपने जीवन के उस सर्वाधिक रूमानी स्थल पर आखिरी नजर डाली और अलविदा ली। तब भी, और उस दिन के बाद भी हमेशा; मुझे उस द्वीप के प्रति एक अद्भुत मोह की अनुभूति हुई है। इसमे कोई शक नही कि इस मोह का एक कारण यह भी है कि घर छोडने के बाद मैने पहली बार इसी द्वीप को देखा था, लेकिन इसका इससे भी बडा कारण यह था कि बचपन मे मैने 'राबिसन क्रूसो' पढा था और इस उपन्यास के किसी भी बाल पाठक के मन मे उपन्यास मे वर्णित इस टापू के प्रति एक लगाव हो जाना स्वाभाविक है। इसके अलावा इस द्वीप के विशिष्ट आकर्षण के कुछ और भी कारण हैं—इसके पर्वतो की ऊची-रूमानी सीमा, इसकी वनस्पति की सुन्दरता और हरियाली, मिट्टी की अतिशय उर्वरता और दक्षिणी प्रशात के सर्वजयी व्यापक विस्तार के बीच इसकी एकाकी सत्ता।

समय-समय पर जब-कभी इस जगह की यादों ने मुझे घेरा है मैने इसके बारे में कुछ और बाते पता लगाने की कोशिश की है। यह लगभग ३०° ३०' दक्षिण मे स्थित है और उसी अक्षाँश मे चिली के तट पर स्थित वैलपरेजो से ३०० मील से कुछ अधिक दूर है। इसकी लम्बाई लगभग पन्द्रह मील और चौडाई पाँच मील है।

पूरे द्वीप मे एक ही बन्दरगाह था जिसमे हमने लगर डाला था (लार्ड एन्सन के नाम पर उसका नाम कबरलैंड खाडी पड गया था)। मुख्य खाडी के दोनो ओर दो छोटे खात थे जिन पर नावें लग सकती थी। लगर डालने की सब से अच्छी जगह खाडी के पश्चिमी किनारे पर है जहाँ हमने समुद्र-तट से करीब तीन केबिल दूर और ३० फैदम से कुछ अधिक पानी मे लंगर डाला था। यह बन्दर-

गाह उत्तर-पूर्व की ओर, और असल मे उत्तर से पूर्व तक, खुला हुआ है, लेकिन चूंकि सबसे ऊची पर्वत बन्दरगाह के दक्षिण पूर्व की ओर हैं और सिर्फ उसी ओर से चलने वाली हवाए खतरनाक होती हैं इसलिए उत्तर-पश्चिम की दिशा सर्वथा सुरक्षित मानी जाती है।

मछलियो की अधिकता बन्दरगाह की सब से उल्लेखनीय विशेषता है। जब हम नाव पर चढ कर तीर पर चले गये थे तो कुछ मल्लाहो को जहाज पर ही छोड़ गये थे। उसमे से दो ने कुछ ही देर मे इतनी मछलियाँ पकड ली जो हम लोगो के लिए कई दिन तक काफी थी। उनमे से मारबिलहेड के मल्लाह ने बताया कि उसने मछलियो की ऐसी बहुतायत न कभी देखी न सुनी। उस समुद्र मे काड, ब्रीम, सिलवरफिश और अनेक दूसरी किस्मो की मछलियाँ थी जिनके नाम या तो मल्लाह जानते नही थे या मै भूल गया हूँ।

द्वीप पर उत्तम पानी की भी बहुतायत है। हर घाटी मे छोटे-छोटे झरने बहते हैं और पहाडियो की बगल से सोते फुदक पडते हैं। एक काफी बडा झरना मध्यवर्ती मैदान में बहता हुआ मकानो के पास से निकल गया है और उनमें रहने वालो को बढिया पानी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हो गया है। एक छोटी काठ की नाली के सहारे इस झरने का पानी हमारी नावो के पास तक लाया गया था। कैदियो ने वहा एक तरह का घाट-सा बना दिया था और उन दिनो वे नावो और सामान को उतारने के लिए एक जगह बना रहे थे। इन चीजो के निर्माण के बाद चिली की सरकार का इरादा बन्दरगाह का कर वसूल करना शुरू करने का था।

जहा तक जगल का सवाल है मै इतना ही कह सकता हूँ कि मुझे वहाँ पेडो की बहुतायत दिखायी दी। नवम्बर के महीने मे, जबकि हम वहा थे, बसन्त की हरियाली और रमणीयता के कारण ऐसा लगता था मानो द्वीप को पेडो ने चारो ओर से ढक लिया हो। अधिकाश पेड सुगधयुक्त थे और उनमें सब से लम्बे पेड मिर्टल के थे।

मिट्टी भुरभुरी और उपजाऊ है और जहा भी उसे खोदा जाय वही से मूली, शलजम, ग्राउड एपल और दूसरी सब्जिया निकल आती थी। हमें बताया गया कि वहा बकरियों की बहुतायत नही है, और हमें एक भी बकरी नही दिखाई दी, यद्यपि लोगो का कहना था कि अन्दर के इलाको में जाने पर बकरिया दिखायी पड

सकती है। पहाडो की बगल के तंग रास्ते पर हमें कोल्हू मे जूते हुए कुछ बैल मिले और द्वीप पर हमें हर राष्ट्र के, हर नस्ल और डिग्री के कुत्ते मिले। मुर्गियो और चूजो की भी बहुतायत थी और ऐसा लगा कि औरतें उनकी अच्छी देखभाल करती थी।

आदमियो को देखकर ऐसा लगा जैसे दुनिया के परदे पर उनसे अधिक आलसी आदमी हो ही नही सकते, और दर हकीकत मैं समझता हूँ कि अमरीकी शब्द 'लोफर' इन स्पेनी अमरिकियो से ज्यादा मोजू दुनियाँ के दूसरे किसी प्रदेश के लोगो के लिए नही हो सकता। ये लोग अपने लबादे पहने निकम्मे खडे रहते थे। बुनाई के लिहाज से ये लबादे इन्डियन आदि-वासियो के कम्बलो जैसे ही थे, लेकिन थे रंगीन। इन लबादो को ये इस अदा से अ ने कधो पर डाले रहते हैं कि उनके बारे मे कहावत ही चल निकली है कि स्पेनी भिखारी अपने चिथडो को भी रौनक बख्श सकता है। उनके बोलने में बडी नम्रता और सहानुभूति थी, भले ही उनके जूतो के तल्लो में छेद थे और जेब मे फूटी कौडी न थी।

उनके दैनिक जीवन की एकरसता केवल तभी भग होती थी जब पहाडो मे मचलती हुई हवा का कोई झोका उन शाखाओं को उडा ले जाता जिनसे उन्होने अपने मकानो की छतें बना रखी थी, वे उन शाखाओ को पकडने के लिए उनके पीछे भागते, और इस प्रकार उन्हे कुछ मिनट काम करना पडता था। जब हम किनारे पर थे, तब ऐसा एक झोका आया था। इन लोगो ने चारो ओर देखा, और जिन लोगो की छतें नही उडी वे तो फिर वैसे ही खडे हो गये, जबकि वे लोग जिनकी छतें उड गयी थी स्पेनी भाषा में गालियाँ देते और अपने लबादो को कन्धो पर लपेटते हुए उनके पीछे दौडे। हमें यह देख कर बडा मजा आया। शाखाए ज्यादा दूर नही गयी और जल्दी ही वे उन्हे लेकर लौट आये और पहले की तरह निठल्ले खडे हो गये।

शायद यह कहने की जरूरत नही कि हम द्वीप मे ज्यादा अंदर नही जा सके लेकिन जो लोग वहाँ गये हैं उन्होने वहा का बडे सुन्दर शब्दो मे बखान किया है, हमारा कप्तान गवर्नर और कुछ सेवको के साथ खच्चरो पर चढ कर पर्वतो पर गया था और जब वे लोग लौटे तो मैंने गवर्नर को कप्तान से इधर से होते हुए लौटने का अनुरोध करते सुना। उसने कप्तान को कैलिफोर्निया से कुछ हिरन खरीद लाने के लिए एक बडी रकम दी। उसने कहा कि द्वीप पर हिरन एकदम नही हैं और मैं उन्हे यहा पालना चाहता हूँ।

दक्षिणी-पश्चिमी हवा हल्की थी लेकिन लगातार बह रही थी और उसमें हमारा जहाज द्वीप से काफी दूर निकल आया था। जब मैं बीच का पहरा देने डेक पर आया तो मैं द्वीप को सिर्फ इस वजह से पहचान सका क्योंकि उसने दक्षिणी क्षितिज के कुछ निचले तारों को ढक लिया था, यद्यपि मेरी आँखें इतनी अनुभवहीन थी कि मैं द्वीप के उस उभार को जमीन नहीं समझ सकता था। पहरा खत्म होने के समय व्यापारी हवाओ के बादलो ने, जो उनके अक्षाश में जहाज के पहुचने से पहले ही उमड आये थे, उसे हमारी आँखो से ओझल कर दिया।

वृहस्पतिवार, सत्ताईस नवम्बर। सुबह डेक पर आने पर पता चला कि हमारा जहाज फिर से विराट प्रशांत महासागर में आ गया है। इसके बाद विशाल महाद्वीप अमरीका के पश्चिमी किनारे पर पहुँचने से पहले हमें जमीन के दर्शन नहीं हुए।

*   *   *

अध्याय—८

जुआन फर्नाडीज से चलकर कैलिफोर्निया पहुँचने तक मार्ग मे हमें न तो जमीन हो दिखाई दी और न कोई जहाज ही मिला, इसलिए इस बीच जहाज पर हमारी अपनी गतिविधियो के अलावा कोई मनोरंजक बात नही हुई। हमारा जहाज दक्षिणी-पूर्वी व्यापारी हवाओ मे पड गया था और लगभग तीन हफ्तो तक हम अनायास ही अपने लक्ष्य की ओर बढते रहे।

कप्तान ने इस बढ़िया मौसम का फायदा उठाते हुए जहाज को ठीक-ठाक करने का फैसला किया, क्योकि अब किनारा बहुत दूर नही था। बढई से कहा गया कि वह स्टीअरेज के एक हिस्से को दूकान की शक्ल दे दे क्योकि हमने सुना था कि जहाज का सामान उतारा नही जायगा बल्कि उसकी फुटकर बिक्री जहाज मे ही की जायगी, और यह दूकान भारी चीजो के नमूने और हल्का-फुलका सामान रखने और दूकानदारी की दूसरी जरूरतो को पूरा करने के लिए बनवायी जा रही थी।

इस बीच हम लोगो को जहाज की रस्सियो वगैरह को ठीक करने के काम में लगाया गया। हर चीज को कस दिया गया और नीचे की सभी रस्सियो-डोरियो की पूरी जाच पडताल कर ली गयी। ढेर सारा बटा सन और दराज भरने का मसाला तैयार किया गया और अन्त में सभी रस्सियो पर कोलतार कर दिया गया।

कोलतार करने का मेरा यह पहला मौका था, और मुझे इस बार बहुत काम करना पड़ा, क्योंकि लगभग यह सारा काम मेरे मित्र एस— और खुद मेरे कन्धों पर ही आ पड़ा। बाकी लोग और दूसरे कामों पर लगाये गये थे और हमारे साथ काम करने वाले तीसरे आदमी एम— के पैरों में गठिया हो गया था और वह वैसे भी इतना कम उम्र और छोटा था कि कोलतार करने का काम उसके बस का था भी नहीं। हवा हल्की और नियमित थी इसलिए दिन में उसे अधिकतर सुक़ान सौंप दिया जाता था। इस प्रकार कोलतार करने का प्रायः सारा काम हम दोनों को ही करना पड़ा। हमने सन के बने ऊंचे फ्राक पहने, कोलतार की एक-एक नन्हीं बाल्टी संभाली, ओकम का एक गुच्छा लिया और धुर ऊपर पहुँच गये। वहां से हमने नीचे की ओर कोलतार करना शुरू किया।

यह काम बड़ा महत्वपूर्ण है और लम्बी यात्रा पर निकले जहाजों में आमतौर पर छः महीने में एक बार किया जाता है। इस मौके के बाद हमारे जहाज पर यह कई बार किया गया। एक बार तो सब मल्लाह इसी पर जुटे और उन्होंने एक ही दिन में काम खत्म कर डाला, लेकिन इस बार चूंकि एक तो यह काम हम दो ही लोगों ने किया, दूसरे हम नये थे इसलिए हमें कई दिन लग गये। यह काम हमेशा शुरू ऊपर से होता है और तब ऊपर से कोलतार करते हुए मल्लाह नीचे की ओर आते हैं।

तान-रस्सियों पर कोलतार करना मुश्किल काम है। इसका एक खास तरीका है। मस्तूल से एक लम्बी रस्सी नीचे लटकायी जाती है जिसमें लकड़ी की एक पटिया बांध कर तान रस्सी के चारों ओर एक झूला-सा बनाया जाता है जिसमें कोलतार करने वाला आदमी कोलतार की बाल्टी और ओकम का गुच्छा लेकर बैठ जाता है। इस रस्सी का दूसरा सिरा डेक पर बांध दिया जाता है। धीरे धीरे डेक से यह झूला नीचा किया जाता है और वह आदमी नीचे की ओर आता हुआ सावधानी से तान-रस्सियों पर कोलतार करता चलता है। इस तरह वह आदमी "आकाश और पाताल के झूले में झूलता है" और अगर रस्सी फिसल जाय या टूट जाय या छोड़ दी जाय, या तख्ते की नीचे लगी गाँठ खुल जाय तो या तो वह समुद्र में गिर सकता है अथवा जहाज पर गिर कर अपनी गर्दन तुड़वा सकता है।

लेकिन मल्लाह कभी इन बातों की परवाह नहीं करता। उसे इसी बात की

चिन्ता रहती है कि रस्सी का कोई हिस्सा बिना कोलतार के न रह जाय, क्योकि ऐसा होने पर उसे दुबारा से कोलतार करना पड़ता है। इसके अलावा उसे इस बात का भी ध्यान रखना पड़ता है कि डेक पर कोलतार के छींटे न पड़ें, वर्ना मालिम अफसर कुछ सुना बैठता है। इस तरह मैने सभी शीर्ग-तानो पर कोलतार किया लेकिन मुझे जिब बूम, मार्टिगेल और स्प्रिटपाल के यार्ड पर कोलतार करना सबसे कठिन लगा, क्योकि यहा आँखे ऊपर रखनी पडती हैं और हाथ मे कोलतार करना पडता है।

यह गन्दा काम भी आखिर कब तक चलता। शनिवार की रात को हमने इसे खत्म कर दिया, डेक तथा दूसरी चीजो पर से कोलतार के धब्बे छुडा दिये, अपने आप को पूरी तरह साफ किया, कोलतार मे सने फ्राको और पतलूनो को आइन्दा इसी काम के लिए रख दिया, साफ कपड़े पहन लिए और शनिवार की रात बडे आराम से बितायी।

अगला दिन बडा सुहावना था। वास्तव मे केपहार्न से लौटते हुए जो इतवार पडा था उसके अलावा पूरी यात्रा मे हमारा हर इतवार बडा सुन्दर बीता और केपहार्न के आस-पास तो अच्छे मौसम की बात सोचना ही फिजूल था। सोमवार से हमने जहाज पर रोगन करने का काम शुरू किया ताकि जहाज बन्दरगाह में जाने योग्य हो सके। यह काम भी मल्लाहो द्वारा ही किया जाता है और लम्बी यात्राओं पर जाने वाला हर मल्लाह, अन्य उपलब्धियो के अलावा, थोडा-बहुत रोगनसाज अवश्य हो जाता है। हमने पूरे जहाज को अन्दर बाहर—दोनो ओर से रगा। बाहर की ओर रगने के लिए रस्सियो के सहारे तख्ते लटका दिये गये और हम उन पर ब्रश व रोगन के डब्बे लेकर बैठ गये। रोगन करने मे आधे समय हमारे पॉव पानी मे लटके रहे। रोगन उसी दिन किया जा सकता है जब समुद्र शान्त हो और जहाज ज्यादा हिचकोले न खा रहा हो।

मुझे अच्छी तरह याद है, एक बार मै बाहर की तरफ रोगन कर रहा था; तीसरा पहर था और मौसम बडा सुन्दर था। जहाज चार या पाच नाट की गति से चल रहा था। जहाज के साथ-साथ शार्क मछली के आगे चलने वाली एक पाइलट मछली तैरती चल रही थी। कप्तान रेलिंग पर झुक कर उसे देख रहा था और हम चुपचाप अपना काम कर रहे थे। अभी रोगन का काम चल ही रहा था कि शुक्रवार, उन्नीस दिसम्बर को हमने भूमध्यरेखा को दुबारा पार किया।

ऐसा करते समय मुझमें भी वही भावना जगी जो पहली बार भूमध्यरेखा को पार करने वाले के मन में तब जगती है जब वह अपने को सर्वथा परिवर्तित मौसम में पाता है। दिसम्बर के महीने में वहाँ सूरज आग उगल रहा था और चार जुलाई को जब मैंने इस रेखा को दुबारा पार किया तो वहाँ बर्फ पड रहा था।

बृहस्पतिवार, पच्चीस दिसम्बर। आज बडा दिन था, लेकिन हमें छुट्टी नही मिली। आज सिर्फ एक परिवर्तन हुआ और वह यह कि हमें डिनर में किशमिश पडा हुआ हलुआ दिया गया। आज मल्लाहो का स्टीवार्ड से झगडा हो गया क्योकि उसने हमें हलुए के साथ मिलने वाला शीरा नही दिया। उसने सोचा था कि शीरे की जगह किशमिश देने से काम चल जायगा लेकिन हम इस तरह से अपने अधिकारों से वंचित होने वाले जीव न थे।

ऐसी ही छोटी-मोटी बाते जहाज पर झगडे का रूप धारण कर लेती हैं। सच्ची बात तो यह है कि हमें बन्दरगाह से दूर हुए बहुत अरसा हो चुका था। हम एक-दूसरे से ऊब चले थे और ज़रा-ज़रा सी बात पर हममें झडप हो जाती थी। हमारी रसद खत्म हो चली थी और कप्तान ने हमारा चावल बन्द कर दिया था। नतीजा यह हुआ कि हमे खाने के लिए नमकीन बीफ और नमकीन पोर्क के अलावा कुछ नही मिलता था। हाँ इतवार को हमे थोडा सा हलुआ जरूर मिलता था।

इससे असन्तोष और बढ गया, इसके अलावा हर रोज, बल्कि हर घन्टे, होने वाली हजारो चीजें—छोटी-मोटी झडपें और उनकी अफवाहे—केबिन मे कही गयी बातो के समाचार—शब्दो और मुख-मुद्राओ से पैदा हुई गलत-फहमी—गालिया—हमे ऐसी स्थिति मे ले आयी थी कि हर चीज हमें गलत दिखायी देती थी। जो आदमी ऐसी लम्बी और थका देने वाली यात्रा पर नही गया वह हमारी स्थिति को पूरी तरह नही समझ सकता। अगर आराम के लिए निर्धारित समय में हमसे जरा भी काम करने के लिए कहा जाता तो हमे वह अनावश्यक प्रतीत होता था। जब हमसे दुपेचा पालो को बदलने को कहा जाता था तो ऐसा लगता था जैसे मल्लाहो को तग करने के लिए ही ऐसा किया जा रहा हो।

इन हालात मे मै और मेरा साथी एस— कप्तान के पास गये और उससे इस बात की आज्ञा मागी कि हम लोगो को स्टीअरेज छोडकर अगवाड मे जाने की इजाजत दी जाय। जब हमे यह इजाजत मिल गयी तो हमारी खुशी का ठिकाना न रहा, और हम अगवाड में आ गये।

अब हमने अपने आपको असली मल्लाह समझा । स्टीअरेज मे रहते हुए हमें ऐसा महसूस नही होता था । वहाँ रहते हुए आप कितने ही काम के और फुर्तीले आदमी क्यो न हो आपकी औकात एक कुत्ते से अधिक नही होती । अफसरो की आँख हमेशा आप पर रहती है । आप न नाच सकते हैं न गा सकते हैं, न खेल सकते हैं और न धूम्रपान ही कर सकते हैं, न गुल-गपाडा कर सकते हैं और न दुहाई दे सकते हैं...यानी आप मल्लाह की जिन्दगी की कोई तफरी नही ले सकते । आपको स्टीवार्ड के साथ रहना पडता है जो एक तरह का बिचौदिया होता है, और मल्लाह लोग आपको अपने दर्जे का नहीं समझते ।

लेकिन अगवाड मे रहने पर आप पूरी तरह आजाद और पक्के मल्लाह माने जाते हैं । आप उनकी बातचीत सुनते हैं, उनके तौर-तरीके, उनके महसूस करने, कहने और करने के खास अन्दाज सीखते हैं । इसके अलावा उनकी गप्पो और आपसी झगडो से आपको मल्लाहो के अजीबो-गरीब और उपयोगी गुरो, जहाज के रीति-रिवाजों और विदेशो के बारे में बहुत कुछ जानकारी हासिल होती है ।

जब तक कोई आदमी मल्लाहो के साथ अगवाड मे न रह ले, उनके साथ उठ-बैठ न ले, उनके साथ हमप्याला और हमनिवाला न हो जाये, तब तक न तो वह मल्लाह हो सकता है और न यही समझ सकता है कि मल्लाह लोग कैसे होते हैं । एक हफ्ता अगवाड मे रह लेने के बाद मेरे मन मे यह बात कभी नही आयी कि इससे तो मै स्टीअरे मे ही अच्छा था । यहाँ तक कि आगे चल कर केप हार्न से गुजरते समय जब मौसम बहुत खराब था और अगवाड मे पानी भरने लगा था तब भी एक क्षण के लिए भी मेरे मन मे यह ख्याल नही आया कि मैं स्टीअरेज में होता तो अच्छा रहता ।

अगवाड में एक फायदा यह भी है कि और जगहो के मुकाबले यहाँ आप कपडो की मरम्मत करना ज्यादा अच्छी तरह सीख सकते हैं और मल्लाहो के लिए यह बहुत जरूरी है । जब वे नीचे होते हैं तब अपना अधिकाश समय इसी में बिताते हैं, और मैंने भी यह कला यही सीखी जो आगे चल कर मेरे बडे काम आयी ।

लेकिन हम मल्लाहों की बात पर लौट आयें । जब हम अगवाड में आये तो हमे पता चला कि रोटी के भत्ते को लेकर कुछ गडबडी है जिसकी वजह से हमे कुछ पाउड का नुकसान उठाना पडेगा । इससे हम लोगो में खलबली मच गयी ।

कप्तान इतना उदार नही था कि हमे समझाता इसलिए हम एक प्रतिनिधिमन्डल बना कर उससे मिलने गये। हमने एक स्वीडन-निवासी मल्लाह को अपना नेता चुना जो सब से अनुभवी और कुशल मल्लाह था।

आगे जो दृश्य देखने को मिला उसकी, और खास तौर पर कप्तान की शान-शौकत की, याद करके आज भी हसी आ जाती है। वह छतरी पर टहल रहा था। हमें आते देख कर वह रुक गया और अपनी आवाज और दृष्टि से हमें चीरता हुआ सा बोला...

"हूँ! तो फरमाइए! आप चाहते क्या है?"

इस पर हमने अत्यन्त आदर पूर्वक उसके सामने अपनी शिकायतें रखी लेकिन वह हम पर बिफर पडा...तुम लोग मोटे और काहिल होते जा रहे हो, तुम्हे कोई काम-धाम नही है इसलिए तुम हर बात मे मीनमेख निकालते हो। इस पर हम भडक उठे और हमने ईट का जवाब पत्थर से दिया। लेकिन इसका कुछ असर नही हुआ।

कप्तान ने अपनी मुट्ठी तान कर अपनी हथेली पर जोर से मारी और बात-बात पर कसम खाते हुए हमें अगवाड मे जाने का आदेश दिया...

"दफा हो जाओ यहाँ से! तुम सब अगवाड मे जाओ! मैं तुम्हे नचा दूँगा। मैं तुम्हे थका मारूंगा! तुम्हारे पास काम-धाम नही है! अगर तुम संभल कर नहीं रहोगे तो मैं इस जहाज को नरक बना दूँगा! तुमने मुझे समझा क्या है? मेरा नाम एफ टी ..है, मैं पूरब का रहने वाला हूँ। मैं चक्की मे पिस कर रोटी बन गया हूँ जो गरम तो अच्छी लगती है मगर ठण्डी होने पर खट्टी और गरिष्ठ हो जाती है, अब तुम देखते रहो! मैं तुम्हे ठण्डा और गरिष्ठ बनकर दिखाऊँगा।"

इस फटकार का अन्तिम हिस्सा मुझे अच्छी तरह याद है, क्योकि इसका हम पर बहुत प्रभाव पडा था, और यह रोटी वाली बात तो यात्रा के बाकी दिनो मे बात-बात पर दुहरायी जाती रही। अपनी शिकायतें पेश करने का यह नतीजा हुआ। बाद में चलकर हमारी शिकायत दूर कर दी गयी क्योकि जब मालिम अफसर ने यह समझा कि कप्तान का पारा उतर गया है तो उसने उसे सारी बात समझा दी और हमे एक और फटकार सुनने के लिए जहाज के पिछले हिस्से मे बुलाया गया। इस बार गलतफहमी पैदा करने की पूरी जिम्मेदारी हमारे ऊपर

डाल दी गयी। हमने यह कहने की कोशिश की कि हमे अपनी बात कहने का मौका ही कहा दिया गया था, लेकिन हमारी कोशिश बेकार रही। हमे परास्त करके खदेड दिया गया।

इस तरह मामला खत्म हुआ लेकिन इससे उत्पन्न कडवाहट रह ही गयी और कप्तान तथा मल्लाहो के बीच शाति या सद्भावना फिर कभी सभव नही हुई।

हम प्रशात महासागर की सुन्दर व समशीतोष्ण जलवायु मे आगे बढते रहे। इस महासागर का 'प्रशात' नाम उचित ही है क्योकि केपहार्न के दक्षिणी भाग और चीन व हिंदमहासागर के निकटवर्ती कुछ पश्चिमी हिस्सो को छोडकर इसमे तूफान बहुत कम आते हैं और जलवायु न तो अत्यधिक उष्ण है और न शीत। उष्ण-कटिबन्धो के बीच एक हल्का-सा कुहरा छाया रहता है जो सूरज के चारो और छाये कुहरे की पतली पर्त जैसा लगता है। यह कुहरा दृष्टि-पथ मे कोई बाधा नही डालता बल्कि अटलाटिक और हिंदमहासागर के उष्ण कटिबन्धो पर पडने वाली भीषण गर्मी को कम कर देता है।

उत्तरी-पश्चिमी व्यापारी हवाओ का पूरा लाभ उठाने के लिए हम अपने जहाज को पश्चिम की ओर ही चलाते रहे। हमे पाइंट कस्पेप्शन पर किनारे लगना था, लेकिन जब हम उसके अक्षाश में पहुँचे तो विदित हुआ कि हम उसके कई सौ मील पश्चिम में निकल आये हैं। हमने तुरन्त अपने जहाज का रुख पूरब की ओर कर दिया और कई दिनो तक उसी दिशा में बढते रहे। अन्त में, इस डर से कि कही रात के समय हमारा जहाज किसी ऐसे किनारे पर न जा लगे जहा न प्रकाशस्तंभ हो और न अच्छे चार्ट, हमने सूर्यास्त के बाद जहाज की प्रगति रोक दी।

वृहस्पतिवार, १३ जनवरी १८३५, को भोर मे हमारा जहाज पाइंट कस्पेप्शन (अक्षाश ३४° ३२' उ०, देशातर १२०° ०६' प०) पर किनारे लगा। हमें सैंटा बारबरा बन्दरगाह पहुँचना था जो वहा मे दक्षिण की ओर लगभग साठ मील था। हमने अपनी यात्रा जारी रखी तथा दिन और रात भर चल कर अगले दिन १४ जनवरी १८३५ की सुबह को हमने सैंटा बारबरा की विशाल खाडी में लंगर डाला। तब तक हम बोस्टन से चलने के बाद १३० दिन की समुद्री यात्रा कर चुके थे।

* * *

अध्याय—९

केलिफोर्निया मेक्सिको के लगभग सपूर्ण पश्चिमी तट पर फैला है। इसके दक्षिण में कैलिफोर्निया खाडी और उत्तर मे सर फ्रैंसिस ड्रेक की खाडी है। दूसरे शब्दो मे कह सकते है कि यह २२ और ३८ डिग्री उत्तरी अक्षाश के बीच स्थित है।

यह दो प्रदेशो में उपविभक्त है—लोअर या ओल्ड कैलिफोर्निया जो कैलिफोर्निया खाडी और ३२वी डिग्री अक्षाश और उसके निकटवर्ती क्षेत्र के बीच स्थित है (मेरा ख्याल है कि विभाजन-रेखा टोडोज़ सैंटोज खाडी और सेन डियागो बन्दरगाह के बीच से गुजरती है); और न्यू या अपर कैलिफोर्निया, जिसका सबसे अधिक दक्षिणवर्ती बन्दरगाह ३२° ३९' अक्षाश में स्थित सैन डियागो है और सबसे उत्तर की ओर ३७° ५८' अक्षांश में स्थित बन्दरगाह सैन फ्रैंसिस्को, जो सर फ्रैंसिस ड्रेक की विशाल खाडी में स्थित है। अग्रेजों ने इस खाडी को यह नाम सर फ्रैंसिस ड्रेक के कारण दिया था क्योंकि उसने ही इसकी खोज की थी। मेक्सिको के लोग इसे यर्बा ब्यूना कहते हैं। अपर कैलिफोर्निया की सीट मोटेरी है। कस्टम हाउस भी इसी नगर में है। यह पूरे तट का एकमात्र कस्टम हाउस है और तट पर व्यापार करने वाले हर जहाज को अपना व्यापार शुरू करने के पहले अपना नौभार यहाँ दर्ज कराना पडता है।

हमे इस तट पर ही व्यापार करना था और इसलिए पहले हमें मोटेरी ही जाना चाहिए था लेकिन कप्तान को आदेश दिया गया था कि जहाज को तट के कैंद्रीय बन्दरगाह सैंटा बारबरा पर रोक कर एजेन्ट का इन्तजार करे जो वही रहता था और जहाज की मालिक फर्म का सारा लेन-देन करता था।

सैंटा बारबरा की खाडी (जो सैंटा बारबरा कैनाल के नाम से अधिक प्रसिद्ध है) बहुत विशाल है। इसके एक ओर (उत्तर मे पाइन्ट कन्सेप्शन और दक्षिण में पाइन्ट सैंट ब्यूनावेंचरा के बीच) मुख्य भूमि है जो कि यहाँ एक अर्धचन्द्र की भाति झुक गयी है और इसके सामने बीस मील की दूरी पर तीन बड़े द्वीप हैं।

इसे खाडी का नाम देना एक हद तक ही ठीक है। कारण, यह इतनी विशाल है और दक्षिणी पूर्वी तथा उत्तरी-पश्चिमी हवाओ के लिये इतनी खुली है कि इसे एक खुले लंगरगाह से कुछ ही अच्छा कहा जा सकता है। इसके अलावा दक्षिणी-पूर्वी हवाओ के चलने से प्रशात महासागर का समूचा उभार इस खाडी में इतने

वेग से बढता है और इसके छिछले पानी में गिर कर इतनी महाकाय तरंगें उठाता है कि दक्षिणी-पूर्वी हवाओं के मौसम, यानी नवम्बर से लेकर अप्रैल तक, तट के पास लगर डालना निहायत खतरनाक समझा जाता है।

ये (दक्षिणी-पूर्वी) हवाए कैलिफोर्निया के तट पर होने वाले विनाश की जड हैं। नवम्बर और अप्रैल के बीच (बल्कि इन दोनो महीनो के भी कुछ हिस्सों में) इस अक्षाश मे बरसात का मौसम रहता है, और इन दिनो में आप पर कब मुसीबत आ टूटे—यह नही कहा जा सकता। इसी कारण इन दिनो जिन बन्दरगाहो में ये हवाए पहुँचती हैं उनमें जहाज किनारे से तीन मील की दूरी पर लंगर डालते हैं और इस बात के लिए पूरी तरह तयार रहते हैं कि एक मिनट की चेतावनी मिलने पर ही समुद्र के लिए रवाना हो सकें। उत्तर में सैन फ्रैंसिस्को और मोटेरी तथा दक्षिण मे सैन डियागो ही ऐसे बन्दरगाह हैं जो इन हवाओं से सुरक्षित हैं।

हम यहा जनवरी के महीने में पहुँचे, जबकि दक्षिणी-पूर्वी हवाओं का मौसम आधा ही बीता था, इसलिए हमने किनारे से तीन मील दूर ग्यारह फदम पानी में लङ्गर डाला और एक मिनट की चेतावनी पर समुद्र में चल पडने की पूरी तैयारी कर ली। इसके बाद एक नाव कप्तान को लेकर किनारे पर गयी और मालिम अफसर के लिए उसका यह आदेश लकर लौटी कि दिन ढले कप्तान को लेने के लिए नाव किनारे पर भेज दी जाय।

मैं पहली नाव मे नही गया, और जब मुझे पता चला कि रात के पहले एक और नाव किनारे पर जायगी तो मै बडा खुश हुआ क्योंकि हमारी जसी लम्बी यात्रा के बाद जमीन के पास होते हुए भी उससे दूर रहकर कुछ घन्टे गुजारना भी दुश्वार हो जाता है। दिन भर हम जहाज पर ही रहे और रोजमर्रा के काम-धन्धे मे लगे रहे। चूकि कप्तान की अनुपस्थिति में जहाज पर रहने का हमारा यह पहला मौका था इसलिए हम कुछ ज्यादा आजादी महसूस कर रहे थे और यह देखने-समझने की कोशिश कर रहे थे कि जिस देश में हम आ गये हैं, और जिसमें हमें एकाध वर्ष बिताना है, वह है कैसा ?

सब से पहली बात तो यह कि वह दिन बडा सुन्दर था। गरमी इतनी थी कि हमने तिनको के टोप, मोटे कपडे की पतलूनें और गरमियो के कपडे पहन रखे थे जब कि उन दिनो जाडो का मौसम अपनी जवानी पर था.. इससे आप जलवायु का अन्दाज लगा सकते हैं, और आगे चल कर हमने अनुभव किया कि पूरी सर्दियों

में थर्मामीटर का पारा हिमांक से नीचे कभी नहीं गिरा और ऋतुओं में का फर्क बहुत कम था, हां इतना जरूर था कि बरसात और दक्षिणी-पूर्वी हवाओं के लम्बे मौसम में मोटे कपड़े नागवार नहीं होते थे।

हमारे चारों ओर विशाल खाड़ी थी। वह एकदम शांत थी क्योंकि हवा दम साधे हुए थी, यद्यपि सुबह जो नाव किनारे पर गयी थी उसके मल्लाहों ने हमें बताया था कि महासागर का बड़ा भारी उभार तट से टकराकर उत्ताल तरंगें उत्पन्न करता है। बन्दरगाह में सिर्फ एक जहाज था। यह एक लम्बा नुकीला लगभग ३०० टन का दो मस्तूलों वाला जहाज था जिसकी चोटी पर इंग्लैंड का झन्डा फहरा रहा था।

हमें बाद में पता चला कि उसका निर्माण गायाक्विल में हुआ था और उसका नाम था "आयाकुचो"। यह नाम उस स्थान पर रखा गया था जहाँ पेरू ने स्वतन्त्रता-संग्राम किया था और विजय प्राप्त की थी। उन दिनों जहाज का कप्तान विल्सन नामक एक स्काटलैंडवासी था जो कैलाओ, सैंडविच द्वीपसमूह और कैलिफोर्निया के बीच तिजारत करता था। जैसा कि हमने बाद में अक्सर गौर किया वह जहाज बहुत तेज चलता था और उसके मल्लाह सैंडविच द्वीपसमूह के निवासी थे। इस जहाज के अलावा खाड़ी के पानी की चिकनी तह को तोड़ने के लिए वहां कोई चीज मौजूद न थी। मुख्य भूमि के अर्द्धचन्द्र के दो सिरे थे। इनमें से पश्चिमी सिरा नीचा और रेतीला था और दक्षिणी-पूर्वी हवाओं के मौसम में जब जहाज बचाव के लिए भागते थे तो उससे काफी दूर रहने का खास ख्याल रखते थे; दूसरा सिरा ऊंचा, मजबूत और हरियाली वाला है। हमें पता चला कि इस सिरे पर एक मिशन है जिसका नाम सेंट ब्यून वेंचुरा है और इस सिरे का नाम इसी मिशन पर रखा गया है।

इस अर्द्धचंद्र के बीच में, लंगरगाह के ठीक सामने सैंटा बारबरा कस्बा और मिशन है। यह एक निचले और समतल मैदान पर बसा है लेकिन समुद्र की तह से कुछ ऊंचा है। चारों ओर घास उगी हुई है लेकिन पेड़ों का नाम-निशान तक नहीं है। इसके तीनों ओर पहाड़ों की ढलवां शृंखलाएं हैं जो पन्द्रह-बीस मील तक नीची होती चली गयी हैं।

मिशन कस्बे के किसी कदर पिछले भाग में है। यह एक विशाल इमारत, बल्कि कई इमारतों का समूह, है जिसके बीचों-बीच एक ऊंचा पाँच घड़ियों का

मीनारतुमा घंटा घर है। मिशन की पूरी इमारत प्लास्टर की बनी हुई हैं और दूर से देखने मे बडी शानदार लगती हैं। यह एक ऐसी निशानी है जिसे देख कर जहाज अपने लगर डालते हैं।

मिशन की अपेक्षा कस्बा समुद्र तट के अधिक निकट—लगभग आधा मील दूर—है। कस्बे के अधिकाश इकमजिले मकान भूरी मिट्टी के बने हैं, कुछ पर प्लास्टर भी किया गया है और उनकी छतें लाल टायलो से बनायी गयी हैं। मेरा ख्याल है मकानो की संख्या एक सौ के लगभग होगी और उनके बीच में दुर्ग है जो वैसे ही मसाले से बना है और लगभग उतना ही मजबूत है। कस्बे की पृष्ठ-भूमि वाकई बडी सुन्दर है—सामने विशाल खाडी और पीछे ढलवाँ पर्वत-शृखलाए।

इसकी सुन्दरता को कम करने वाली केवल एक चीज थी। वह यह कि पहाडिया की चोटिया पर बडे-बडे पेड नही थे। लगभग बारह वर्ष पहले एक भयानक आग लगी थी जिसने पहाडिया के सभी पेडा को फूक दिया था और वे अभी तक उगे नही थे। मुझे कस्बे के एक निवासी ने बताया कि आग बहुत ही भीषण और दर्शनीय थी। समूची घाटी की वायु इतनी गरम हो उठी थी कि लोगो को अपने घर छोडने पडे और कई दिनो तक समुद्र-तट पर पडे रहना पडा।

सूर्यास्त के तुरन्त बाद मालिम अफसर ने आदेश दिया कि किनारे जाने वाली नाव के मल्लाह तैयार हो जायें। जाने वालो मे मै भी शामिल था। हम ब्रिटिश जहाज के पीछे मे हो कर गुजरे और किनारे तक पहुचने के लिए हमे अपनी नाव काफी खेनी पडी।

जब कैलिफोर्निया के तट पर पहली बार हमारी नाव लगी तब जो छाप मेरे मन पर पडी उसे मै कभी नहीं भूलूगा। सूरज छिपा ही था, अधकार बढता जा रहा था, रात की भारी हवा चलनी शुरू ही हुई थी और प्रशात महासागर का विशाल उभार आ-आकर किनारो से टकरा कर मुखर और उत्ताल तरंगो में बिखर रहा था। हमारी नाव तरगो से कुछ ही दूर पर उस उभार मे चल रही थी और हम केवल चप्पुओ से काम ले रहे थे। हम आगे जाने के लिए किसी अच्छे मौके का इतजार ही कर रहे थे कि "आयाकुचो" मे चली एक नाव हमारे पास ही आ गयी। उसके सावले मल्लाह सैडविच द्वीपसमूह के थे और अपनी गंवारू भाषा में बात-चीत और हल्लाहू कर रहे थे।

वे समझ गये कि हम इस तरह के नौचालन मे नौसिखुए थे, इसलिए वे रुक कर इस बात का इंतजार करने लगे कि पहले हम किनारे पर पहुँचे। उधर हमारी नाव दूसरा मालिम खे रहा था। उसने इन लोगो के अनुभव का फायदा उठाने का फैसला कर लिया था, इसलिए वह पहल नही करना चाहता था। अत मे वे लोग हमारा मशा समझ गये और उन्होने एक किलकारी भरी। इतने में एक विराट तरग आयी जिसने हमारी नाव के पिछले भाग को बहुत ऊचा उठा कर नीचे गिरा दिया। इस तरग का फायदा उठाते हुए उन्होने अपनी नाव मे तीन-चार चप्पू जोर से मारे और तरग के सिरे पर पहुँच गये। अब उन्होने अपने चप्पू समुद्र में, और नाव से ज्यादा से ज्यादा दूर, फेंक दिये। जब नाव किनारे पर पहुँची तो वे उससे कूद पडे और उसे पकड कर रेत पर चढा दिया।

हम फौरन समझ गये कि हमें क्या-कुछ करना है। हम यह भी समझ गये कि नाव का पिछला हिस्सा किनारे की ओर नही समुद्र की ओर ही रहना चाहिये क्योकि ऐसा न होने पर समुद्र उसकी चौडी दीवार या क्वार्टर पर आघात करता है जिससे नाव उलट कर डूब जाती है। हमने कुछ चप्पू जोर से मारे और जब हमें लगा कि तरग ने हमे पकड लिया है और हमें घुडदौड के घोडे की रफ्तार से लिए भागी जा रही है तब हमने अपने चप्पू नाव से ज्यादा से ज्यादा दूर फेंक दिये और नाव की ऊपरी पट्टी को पकड लिया। हम इस बात के लिए तैयार हो गये कि तट पर पहुँचते ही नाव से कूद कर उसे पकड लें। दूसरा मालिम जी-जान से कोशिश कर रहा था कि नाव का पिछला भाग ही समुद्र की ओर रहे। हम धनुष से छूटे हुए तीर की गति से किनारे पर पहुचे और नाव को पकड कर उसे रेत पर घसीट लाये। इसके बाद हमने अपने अपने चप्पू उठा लिये और कप्तान का इंतजार करते हुए नाव के पास खडे हो गये।

जब हमने यह देखा कि कप्तान के आने मे देर है तो अपने चप्पू नाव मे रख कर और एक आदमी को उसकी देख-रेख के लिए छोड कर, उस प्रदेश को देख लेने के इरादे से हम समुद्र-तट पर टहलने लगे। यह समुद्र-तट लगभग एक मील लम्बा है और यहा की बालू चिकनी है। हमने सबसे अच्छी जगह लंगर डाला था। यह जगह बीच मे थी। दोनो किनारो पर समुद्र-तट कुछ पथरीला हो चला था। उच्चजलचिह्न और मिट्टी वाले किनारे के बीच के समुद्र तट की चौडाई लगभग बीस गज है। यह हिस्सा इतना बडा है कि इसे घुडदौड का प्रिय स्थल समझा जाता है।

अंधेरा बढता जा रहा था और हम कुछ दूर पर खडे जहाजों के खाकों में मुश्किल से भेद कर पा रहे थे। समुद्र मे रह-रह कर विराट तरगें उठ रही थीं। किनारे पर पहुचने पर उनका आकार विराटतर हो जाता था। फिर वे समुद्र-तट पर टूट कर बिछ जाती थी, उनके सिरे मुड जाते थे और वे सफेद झागो से भर उठती थी। एक दूसरे पर गिरती-पडती तरगें इस तरह बिखर जाती थी जैसे बच्चे ताश के पत्तो के बडे घर को एक किनारे से हिलाते हैं तो ताश के पत्ते भरभरा कर गिर पडते हैं।

इस बीच सैंडविच द्वीपसमूह के मल्लाहों ने अपनी नाव का मुह समुद्र की ओर फेर लिया था और उसे पानी मे उतार लिया था। वे नाव पर खालें और चर्बी के थैले लाद रहे थे। चूंकि जल्दी ही हमें भी यही काम करना था इसलिए हम इसे दिलचस्पी से देखने लगे। वे नाव को पानी में इतनी दूर ले गये थे कि समुद्र की हर बडी तरंग उसे हिला देती थी इसलिए दो आदमी अपनी पतलूनें ऊपर चढा कर उसके मोरो को पकडे खड़े थे ताकि नाव तरगों से विचलित न हो सके।

यह कसाले का काम था, क्योंकि नाव को ठीक स्थिति मे रखने के लिए उन्हें बडा जोर लगाना पड रहा था। इसके अलावा वृहद तरंगें उनके पैर उखाडे दे रही थी। कुछ मल्लाह नाव मे किनारे की ओर दौड रहे थे जहा, पानी की पहुंच के परे, बैल की सूखी खालों का एक ढेर लगा था जो लम्बाई में दुहरी मुडी हुई थी और तख्ते की तरह कडी थी। वे इन्हे एक-एक, दो-दो करके सिर पर ले जा रहे थे जहा उनमें से एक उन्हे करीने से रख रहा था। खालो को सिर पर रख कर इसलिए ढोया जा रहा था ताकि वे पानी में भीगे नही, और हमने गौर किया कि उन लोगों ने सिर पर मोटी ऊनी टोपियाँ पहन रखी हैं।

"देखा बिल, तुम्हें भी यही-कुछ करना है।" हमारे एक मल्लाह ने नाव के पास खडे दूसरे मल्लाह से कहा।

"सुनो डाना !" दूसरा मालिम मुझसे बोला, "क्या कैंब्रिज कालिज से इस काम का कोई मेल है ? मैं इसी को "कपाल का काम" कहता हूँ।"

सच बात तो यह है कि यह सब देख कर सब लोगो को निराशा ही हुई।

खालें लाद चुकने के बाद उन्होने चरबी के थैले (ये थैले खाल के बने थे और आकार में अनाज की बोरी के बराबर थे) लादने शुरू किए। दो-दो आदमी एक

एक बोरे को उठाते थे और लाकर नाव पर लाद लेते थे। इसके बाद वे जहाज पर जाने के लिए तैयार हो गये।

इस बार फिर कुछ बातें हमारे सीखने के काबिल थी। नाव खेने वाले आदमी ने अपना चप्पू संभाल लिया और वह पिछले हिस्से में खडा हो गया, और जो दूसरे मल्लाह पीछे चप्पू चलाने के लिए तैनात थे वे भी अपने चप्पू संभाल कर तैयार हो गये ताकि नाव के तैरते ही चप्पू चला सकें। मोरो के दोनो मल्लाह उसे पकड़े वैसे ही खडे रहे। अन्त में एक जोरदार तरंग आयी जिससे नाव तैरने लगी। नीचे खडे दोनो मल्लाहों ने नाव को पकड कर समुद्र की ओर दौड़ लगायी और जब पानी उनकी बगल तक आ गया तब वे कूद कर नाव मे चढ गये। उनके शरीर से पानी चू रहा था।

मल्लाहों ने चप्पू चलाने शुरू किये लेकिन इससे काम चला नही। समुद्र ने उन्हें पीछे खदेड दिया और वे फिर वही आ गये जहा से चले थे। मोरो के दोनो मल्लाह फिर नीचे कूद पडे। अगली बार लहर आने पर उन्होने फिर वैसा ही किया और इस बार उन्हे सफलता मिली और वे गंवारू बोली मे हल्ला हू और गुल-गपाडा करते हुए नाव सही तरीके से खेते हुए चल दिये। हमने उन्हे तरगो के परे अपने जहाज की ओर जाते हुए देखा जो कि अब अंधेरे के कारण हमारी नजर से ओझल हो चुका था।

सागर-तट की बालू हमारे नंगे पाँवो को ठन्डी लगने लगी। दलदलो में मेढकों की टर्र-टर्र शुरू हो गयी थी। कही दूर से किसी अकेले उल्लू की उदास आवाज आ रही थी जो बहुत दूर से आने के कारण तीखी नही लग रही थी। अब हमने सोचना शुरू किया कि कप्तान, जिसे आम तौर "बडे बूढे" कहा जाता है, के आने का समय हो गया है।

कुछ मिनट बाद हमे ऐसा लगा जैसे कोई हमारी ओर आ रहा हो। यह एक घुडसवार था। वह घोडे को तेजी से भगाता हुआ आया, हमारे पास रुका, हमसे कुछ बोला, और कोई उत्तर न पाकर उसने घोडे का रुख मोडा और तेजी से उसे भगाता हुआ चला गया। वह इन्डियन आदिवासी की तरह काला था, उसके सर पर एक बडा स्पेनी टोप था, बदन पर कंबल का लबादा और परो पर चमडे का खोल जिसमे उसने एक बडा चाकू खोस रखा था।

"मैने यह सातवा नगर देखा है और यहा भी कोई सभ्य मनुष्य दिखायी नही दिया", बिल ब्राउन ने कहा ।

"देखते रहो !" टाम बोला, "अभी तुमने देखा ही क्या हे ?"

ये बाते हो ही रही थी कि कप्तान आ गया और हमने नाव का मुह समुद्र की ओर घुमा लिया, उसे नीचे पानी मे उतार लिया और चलने को तैयार हो गये । कप्तान यहाँ पहले भी आ चुका था और सब बातें समझता था, इसलिए उसने स्टीअर-चप्पू सभाला और जिस प्रकार पहले वाली नाव गयी थी, उसी प्रकार हमारी नाव भी आगे बढी । उम्र मे सबसे छोटा होने के कारण नाव के मोरे को पकड कर पानी मे धकेलने का काम मुझे करना पडा, और मै पूरी तरह भीग गया । यद्यपि ऊची तरगें उठ रही थी फिर भी हम सकुशल आगे बढे । कुछ तरगो ने हमे ऊचा उठा दिया और नाव के नीचे से फिसलते हुए उसे इतनी जोर से नीचे गिराया जैसे किसी ने लकडी के सपाट तख्ते को पानी पर पटका हो । कुछ मिनट बाद हम समुद्र के नीचे, नियमित उभार मे पहुच गये ।

जहाज पर पहुच कर हमने नावो को यथावत रखा, अगवाड मे जाकर अपने गीले कपडे बदले और खाने पर जुट गये । खाने के बाद मल्लाहो ने अपने पाइप (जिनके पास सिगार थे उन्होने सिगार) जलाये और हमे दूसरे लोगो को किनारे की सारी बाते बतानी पडी । तब किनारे के लोगो के बारे मे अनेक अनुमान लगाये गये,यात्रा की दूरी और खालें ढोने आदि के बारे मे बाते होती रही और अन्त मे आठ घन्टियाँ बजी, सब लोगों को पिछले भाग मे बुला लिया गया और लंगर पर पहरा बिठा दिया गया ।

पहरा दो-दो आदमियो की टोली को देना था और चू कि रातें काफी लम्बी होती थी इसलिए हर टोली को दो घन्टे पहरा देना पडता था । दूसरे मालिम को आठ बजे तक डेक पर पहरा देना था, और भोर मे सब लोगो को काम पर बुलाना था । पहरा देने वालो को विशेष सतर्क रहने का आदेश दे दिया गया था और उन्हे बताया गया था कि अगर दक्षिण-पूर्व दिशा से आँधी चले तो मालिम अफसर को इसकी खबर फौरन दी जाय । हमे समुद्र के नियम के अनुसार रात भर हर आध घन्टे बाद घन्टे बजाने के भी आदेश दिये गये ।

मेरी टोली मे स्वीडन का मल्लाह जान था और हम दोनो को बारह से दो तक पहरा देना था । वह डाबा बाजू पर पहरा दे रहा था और मै जमना बाजू

पर। पौ फटने पर सब लोगो को काम पर बुलाया गया। हमने सफाई-धुलाई आदि रोजमर्रा के काम निबटाये। आठ बजे हमने नाश्ता किया। तीसरे पहर के समय एक नाव "आयाकुचो" जहाज पर गयी और वहा से बीफ का एक चौथाई टुकडा ले आयी, जिससे हमें डिनर मे ताजा बीफ मिल सका। इसमें हमें बडा मजा आया और मालिम अफसर ने बताया कि किनारे पर हमें ताजा बीफ सस्ता पडता है।

हम खाना खा ही रहे थे कि रसोइए ने "जहाज हो" की पुकार लगायी और डेक पर पहुँचने पर हमें दो जहाज आते दिखायी दिये। उनमे से एक विशाल जहाज था और दूसरा दो मस्तूलो वाला हर्माफ्रोडाइट जहाज। दोनों ही जहाजों ने अपने शिखरपाल छोटे कर के अपनी गति कम की और अपनी नौकाए हमारे जहाज की ओर भेजी। बडे जहाज के झन्डे ने हमें चक्कर में डाल दिया था। लेकिन अन्तत हमें पता चला कि वह जिनेवा का है। उसके पास मिला-जुला नौभार था और वह तट पर व्यापार कर रहा था। कुछ देर बाद उसने फिर पाल ताने और सैन फ्रैंसिस्को के लिए चल प-ा।

दो मस्तूलो वाले जहाज से आयी हुई नाव के मल्लाह सैंडविच द्वीप समूह के थे। उनमें से एक कुछ टूटी-फूटी अंग्रेजी बोल लेता था। उसने हमें बताया कि उस जहाज का नाम "लोरियट" था, कप्तान का नाम नाये था और वह ओग्राहू का रहने वाला था। जहाज का काम इस तट पर व्यापार करना था। वह जहाज हमे किसी चीज का एक ऊँचा ढेर सा लग रहा था जिसे मल्लाह अपनी भाषा में "मक्खन का डब्बा" कहते हैं। इस जहाज पर "आया कुचो" पर तथा बाद में मिलने वाले इस तरह के अन्य व्यापारी जहाजों पर हमने एक बात खास तौर पर देखी—इनके अफसर अंग्रेज या अमरीकी होते थे, रस्सियो आदि को ठीक करने और मल्लाही के भारी काम करने के लिए दो एक अंग्रेज या अमर की साधारण मल्लाह अगवाड में होते थे और बाकी आदमी सैंडविच द्वीपसमूह के रहने वाले होते थे जो फुर्तीले और नाव खेने मे विशेष कुशल होते हैं।

तीनो जहाजो के कप्तान डिनर के बाद किनारे पर चले गये और रात को लौट आये। जब जहाज बन्दरगाह मे होता है तब सारा काम मालिम अफसर ही करता है और कप्तान कुछ नही करता बल्कि अपना ज्यादातर समय किनारे पर बिताता है। हा, अगर वह नौभार-विक्रय-अधिकारी भी हो तो बात दूसरी है।

हमने सोचा, अब हमारी मौज रहेगी क्योंकि मालिम अफसर अच्छी आदत का था और इतना कठोर नहीं था।

कुछ वक्त बडे मजे में गुजरा, लेकिन अन्त मे हमारा खाया-पिया निकल गया; क्योकि जब कप्तान कठोर और फुर्तीला आदमी हो और मालिम मे ये दोनो ही बातें न हो तो हमेशा कोई न कोई झंझट खडा हो जाता है। हम अभी से इसका अनुमान लगाने लगे थे। कप्तान कई बार मल्लाहो के सामने ही मालिम को डाट-डपट चुका था और ऐसी सरगोशिया थी कि दोनो के सम्बन्ध विशेष अच्छे नही है। जब ऐसी हालत हो और कप्तान को यह शक हो कि मालिम अफसर मल्लाहो से रोब से नही आपसदारी से काम लेता है तो वह हर काम मे अपनी टाग अडाना शुरू कर देता है और लगाम कस देता है जिससे मल्लाहो की शामत आ जाती है।

● ● ●

अध्याय १०

आज सूर्यास्त के बाद शाम के समय दक्षिण और पूर्व मे कालिमा फैलती नजर आयी। हमे पहरे पर विशेष सतर्क रहने का आदेश दिया गया। यह सोचकर कि पता नही हमे कब पुकार लिया जाय, हम जल्दी ही सो गये। मध्यरात्रि के समय मेरी बात एक मल्लाह से हुई जो अभी-अभी ऊपर से पहरा देकर आया था और रोशनी कर रहा था। उसने मुझे बताया कि दक्षिण-पूर्व से हवाएं चल निकली हैं और समुद्र उमडता चला आ रहा है और कप्तान को बुला लिया गया है। यह कहते ही वह अपने सन्दूक पर लेट गया जिससे मैं समझ गया कि उसे जल्दी ही कप्तान की ओर से आदेश मिलने की आशा है इसलिए तब तक कुछ आराम कर लेना चाहता है।

मुझे महसूस हुआ कि लंगर पर खडा हुआ जहाज हिल-डोल रहा है, जंजीर आवाज करती हुई खिसक रही है। इसके बाद में यह सोचकर जागता ही रहा कि पता नही ऊपर से कब आवाज आ जाय। कुछ क्षणो के बाद मोखे पर तीन चोटें पडी और आवाज आयी, "आओ रे! जहाज को रवाना करो!"

हमने झटपट कर कपडे पहने। अभी हम आधे ही तैयार हुए थे कि मोखे से मालिम अफसर की आवाज आयी—

"यहा आओ रे! लगर ठीक काम नही दे रहा है।"

अगले क्षण हम डेक पर थे।

"ऊपर जाओ और शिखर पालो को ढीला कर दो!" पहले आदमी को देखते ही कप्तान ने आदेश दिया।

जब मैं रस्सियो को ठीक-ठाक करने मे जुटा था तब मैंने देखा कि "आया-कुचो" के शिखर पाल ढीले कर दिये गये हैं और उसके मल्लाह पालो की निचली रस्सियाँ पकडे गा रहे हैं और जहाज का रुख पलट रहे हैं। शायद यही सब देख कर हमारे कप्तान को भी तैयारी करने की सूझी थी क्योंकि "बुजुर्ग विल्सन" (आयाकुचो का कप्तान) इस तट पर बरसो रह चुका था और उसे मौसम की पहचान थी।

हमने जल्दी ही शिखरपाल खोल दिये। इसके बाद एक-एक आदमी तो रस्सियाँ वगैरह को टीक करने के लिए शिखर पालो पर रह गया और बाकी के लोग पाल की निचली रस्सियो पर जुट गये। हम अभी इन रस्सियो की मदद से पालो को ठीक ही कर रहे थे कि हमने देखा हवा के रुख पर तेजी से दौडता हुआ "आया-कुचो" उमडे हुए समुद्र को चाकू की तरह चीरता हुआ हमारे पास से होकर गुजर गया। उसके झुके हुए मस्तूल और नुकीले मोरे दौडते हुए काले शिकारी कुत्ते के सर की तरह लग रहे थे। यह एक सुन्दर दृश्य था। "आयाकुचो" उस चिडिया की तरह लगा जिसने डर कर डैने फैला दिये हो।

इसके बाद अपनी तैयारिया पूरी कर चुकने के बाद हम भी समुद्र की ओर चल पडे।

"नाये भी चल दिया है," कप्तान ने मालिम अफसर से कहा। पीछे की ओर देखने पर हमें वह छोटा दो मस्तूलो वाला हर्माफ्रोडाइट जहाज "लोरियट" अपने पीछे आता दिखायी दिया।

अब हवा तेजी पकडने लगी, बारिश तेज होने लगी और घना अंधेरा छा गया; लेकिन पाइंट से सकुशल निकल चलने से पहले कप्तान का इरादा पालो को लपेटने का नही था। जब हम पाइंट को पीछे छोड आये और समुद्र में आ गये तब हमें पाल बाध देने के आदेश दिये गये। हम उछल कर ऊपर चढ गये और शिखर पालों को दुहरा बाँध दिया और जल्दी ही हमारा जहाज बडे मजे मे आगे जाने लगा।

दक्षिणी-पूर्वी हवाओ से बचने के लिए समुद्र की ओर भागते हुए जब आप किनारे से दूर निकल आते हैं तब आपके लिए कोई काम नही रह जाता। जहाज अपनी

रफ्तार से आगे बढता रहता है और आप तूफान के रुकने का इन्तजार करते रहते हैं। कभी-कभी यह तूफान दो दिनो तक बना रहता है लेकिन आम तौर पर बारह घन्टो मे शात हो जाता है, लेकिन यदि वर्षा अधिक परिमाण में नही हुई है तो तूफान के शात हो जाने के बाद भी हवा दक्षिण के रुख मे नही बहती।

"पहरे के लोग नीचे जायें" मालिम अफसर ने आदेश दिया, लेकिन इस बात पर झगडा हो गया कि कौन से पहरे के लोग नीचे जायें। इसका फैसला मालिम अफसर ने अपनी टोली के लोगो को नीचे भेज कर किया। हमे बताया गया कि यदि फिर ऐसी जरूरत पडी तो पहले हम लोगो को नीचे भेजा जायेगा।

पहरे का समय खत्म होने तक हम डेक पर रहे। हवा बहुत तेज थी और मूसलाधार वर्षा हो रही थी। जब सुबह चार बजे हम दुबारा ऊपर आये तब घना अधेरा छाया हुआ था, हवा तो इतनी तेज नही थी लेकिन वर्षा इतने जोर की थी कि मैंने पहले इतने जोर की वर्षा कभी नही देखी थी। हमने मोमजामे के सूट पहन रखे थे और साउथवेस्टर टोप लगा रखे थे, और हमारे पास उस जोरदार बारिश मे चुपचाप भीगते रहने के अलावा कोई काम न था। समुद्र पर न छाते होते हैं और न छतें।

जब हम डेक पर खडे थे तब हमने देखा कि मस्तूलों वाला छोटा-सा जहाज (लोरियट) हमारे पास से भूत की तरह तैरता हुआ निकल गया। उन लोगो से हमारी कोई बात नही हुई। जहाज के अग्र शिखरपाल दुहरे बधे हुए थे और हमे उसके डेक पर कोई आदमी नही दीखा, हा पहिए पर एक आदमी जरूर बैठा था। सुबह के समय कप्तान ने डेक सीढी मे से अपना सर निकाला और दूसरे मालिम को, जो कि हमारी टोली का मुखिया था, हवा का रुख बदलने पर विशेष ध्यान रखने का आदेश दिया। अक्सर शॉत और भारी वर्षा के बाद हवा का रुख बदल जाता है। उसकी यह चेतावनी बहुत अच्छी रही क्योकि कुछ ही क्षणो के बाद चारो ओर सन्नाटा छा गया, जहाज ने अपनी कर्ण चाल खो दी और वर्षा रुक गयी।। हमने जरूरी तैयारी कर ली और हवा के रुख बदलने का इन्तजार करने लगे। कुछ ही मिनट बाद वपरीत दिशा यानी उत्तर-पश्चिम से तेज हवा बह निकली।

अपनी पहली तैयारियो के कारण हमें इस परिवर्तन के कारण कोई परेशानी नही उठानी पडी बल्कि हम हवा के रुख मे आगे बढे। हवा के साथ-साथ मौसम

भी बदल गया और दो घन्टो में तेज हवा उस मन्द समीर में बदल गयी जो साल के अधिकांश दिनो मे तट पर बहता है और अपनी नियमितता के कारण व्यापारिक हवा के नाम से पुकारा जा सकता है। सूरत निकल आया और हमने जहाज के सब पाल तान लिये व आराम से सैंटा बारबरा की ओर चल दिये ।

नन्हा "लोरियट" पीछे छूट गया था और ओझल हो गया था लेकिन "आयाकुचो" के बारे में हमें कुछ नही मालूम था, कुछ ही देर बाद वह सैंटा रोजा द्वीप की बगल से बाहर निकला। वही एक सुरक्षित स्थान में उसने रात गुजारी थी। हमारा कप्तान उससे पहले किनारे पर पहुचना चाहता था, क्योकि 'आयाकुचो' छः वर्षों से भी अधिक समय से इस तट पर व्यापार कर रहा था और उसे उत्तरी प्रशात महासागर का सर्वश्रेष्ठ जहाज माना जाता था, इसलिए उसे दौड में पीछे छोड देना एक बहुत बडी बात थी। हल्की हवाओ मे हमारी स्थिति उससे अच्छी थी क्योकि हमारे पास उसके मुकाबले कही अधिक पाल थे।

चू कि हवा हल्की थी इसलिए कुछ देर तो हम आगे रहे, लेकिन पाइन्ट के पास उसने हमे पकड लिया और हमसे आगे निकल गया।

"आयाकुचो" हमसे लगभग आधा घन्टा पहले लंगरगाह पर पहुँच गया और जब हम वहाँ पहुँचे तो उसके मल्लाह जहाज के पाल लपेट रहे थे। यह भाग-दौड हंसी-खेल नही है। एक जगह से हटना और फिर दूसरे जहाजो से पहले ही फिर वहा आकर लगर डाल देना कुशल मल्लाहो के ही बूते का रोग है।

इस विद्या में कप्तान विल्सन तट के मल्लाहो मे सब से अधिक प्रसिद्ध था। दूसरा नम्बर हमारे कप्तान का था क्योकि जितने दिन मैं उसके साथ रहा उसने किसी और जहाज को अपने से पहले लगर नही डालने दिया।

जब हमने जहाज को सुरक्षित रूप मे लंगरगाह में खडा कर दिया तो मालिम अफसर ने हमें बताया कि यह कैलिफोर्निया का बडा मामूली-सा झटका था और जाडो में इस तरह की बातो की आशका करना नितांत स्वाभाविक है।

जब हम पाल लपेट चुके और डिनर ले चुके तब हमे "लोरियट" आता दिखायी दिया और रात से पहले ही उसने भी लङ्गर डाल लिया, सूर्यास्त के समय हम फिर किनारे पर गये तो देखा कि वहा "लोरियट" की नाव खडी थी। सैंडविच द्वीप के उस अग्रेजी-भाषी मल्लाह ने हमें बताया कि हमारे एजेंट मिस्टर आर— और कुछ दूसरे यात्री हमारे साथ मोटेरी जायेंगे, और हमें उसी रात चल देना है।

कुछ ही देर में कप्तान टी—आया। उसके साथ दो पुरुष और एक महिला थी। उनके आने पर हम चलने के लिए तैयार हो गये।

उनके पास काफी सामान था जो हमने नाव के मोरों में रख दिया। इसके बाद हममे से दो मल्लाहो ने उस भद्र महिला को उठाया खुद पानी में चलते हुए नाव तक गये, और उसे सम्भाल कर नाव के पिछले भाग मे बैठा दिया। इस सवारी से वह बहुत खुश हुई और उसका पति भी यह सोच कर सतुष्ट हुआ कि उसे अपने पाव नही भिगोने पडे। मैं पीछे वाला चप्पू चला रहा था और उनकी बातचीत की भनक मेरे कान में पड रही थी। उनमें से एक आदमी यूरोपियन पोशाक में था और उसने अपना शरीर एक बडे लबादे से ढक रखा था। वह एक जवान आदमी था और अधेरे में भी मैं उसके सुन्दर होने का अनुमान कर सकता था। वह हमारे जहाज की मालिक फर्म का एजेंट था दूसरा आदमी हमारे कप्तान का भाई था। उसने देहाती स्पेनी पोशाक पहन रखी थी। वह कई वर्षो से तट पर व्यापार कर रहा था और नाव में बैठी भद्र महिला उसकी पत्नी थी। वह नाजुक सावली नवयुवती कैलिफोर्निया के चोटी के घराने की लडकी थी। मुझे यह भी पता चला कि हमें उसी रात चल देना है।

हमारे जहाज पर पहुँचते ही नौकाओ को चढा लिया गया, पाल तान दिये गये, बेलन-चरखी पर काम शुरू कर दिया गया और लगभग बीस मिनट मे यह सब तैयारिया करके हम मजेदार हवा में मोटेरी के लिए रवाना हो गये। "लोरियट" भी हमारे साथ ही साथ रवाना हुआ लेकिन चू कि उसने किनारे-किनारे जाना पसन्द किया जबकि हम समुद्र के बीच से होकर जा रहे थे, इसलिए जल्दी ही वह हमारी आँखा से ओझल हो गया।

* * *

अध्याय—११

अगले दिन सूर्योदय के पहले ही हम द्वीपो को पीछे छोड चुके थे। बारह बजे तक हम नहर से बाहर निकल आये और पाइट कंस्पेप्शन, जहा बोस्टन से चलने के बाद हमने पहली बार जमीन के दर्शन किये थे, से चल दिये। कैलिफोर्निया के तट पर यह सबमे विशाल पाइट है। इसकी मुख्यभूमि प्रशात महासागर में दूर तक चली गयी है और निर्जन है। आधियो के लिए यह पाइट प्रसिद्ध है।

अगर कोई जहाज यहा से गुजर जाये और उसे झझा का सामना न करना पडे तो यह एक बडी बात मानी जाती है, खास तौर पर जाडो मे तो ऐसा होना असभवप्राय माना जाता है। हमारे जहाज के दोनो ओर दुपेचा पाल तने हुए थे। पाइट के मोड पर पहुँच कर जहाज का रुख बदल गया और हमने अनुवात दिशा के दुपेंचा पाल उतार दिये। अब हवा सामने की थी और जहाज की हरकतो से ऐसा लग रहा था कि इतने पाल इससे चल नही रहे हैं, और हमने आकाशपालों को नीचा कर दिया लेकिन खुले बाजू वाले दुपेंचा पालो को पहले की ही तरह तना रहने दिया। अब जहाज रुक-सा गया था। हवा तेज होती जा रही थी और कप्तान पाल न खोल कर जहाज के साथ ज्यादती कर रहा था।

मि० आर—व उसका भाई ये दोनो तूफान की आशका से अधिक ग्रस्त थे और उन्होने कप्तान से कुछ कहा भी, लेकिन उत्तर मे उसने यही कहा—मुझे मालूम हैं जहाज पर कितने पाल ताने जा सकते हैं। जाहिर था कि वह अपने जहाज की शान बघार रहा था और यह दिखाना चाहता था कि पाल तने रहने पर भी वह अपने रास्ते पर आगे बढ सकता है। वह खुले हिस्से पर खडा था और उसकी नजर डडो पर गडी थी कि वे पालो का कितना बोझ सभाल सकते हैं। इतने मे हवा का एक तेज झोका आया और उसने सारा फैसला ही कर दिया। तब उसने एक साथ ही रायल पालो, फ्लान जीब और दुपेंचा पालो को खोल देने का हुक्म दे दिया। अब जहाज की अजीब हालत थी। कोई भी पाल सभाल कर लपेटा नही गया था और पाल व रस्सिया तेज हवा मे उड रहे थे।

वह गरीब स्पेनी औरत डेक-सीढी तक आयी। उसका रग पीला पड गया था और वह डर के मारे मरी जा रही थी। मालिम और कुछ दूसरे मल्लाह अगवाड मे निचले दुपेंचा पाल को लपेटने की कोशिश मे लगे थे जो उड कर दूसरी रस्सिया और डडो मे उलझ गया था। मै प्रमुख टापगैलेट दुपेचा पाल को लपेटने के लिए ऊपर चढा, लेकिन इसके पहले कि मैं वहा तक पहुँचू उस पाल की रस्सी खुल गयी और वह उड कर टापगैलेट पाल से आगे पहुँच गया और हवा के जोर से उसकी धज्जिया उड गयी। तब तक पाल-रस्सियाँ भी अपनी जगह से खुल गयी, और इससे पहले किसी पाल को लपेटने मे मुझे कभी इतनी कठिनाई नही हुई थी।

बडी मेहनत के बाद मै उस तक, या उसके बचे-खुचे हिस्से तक, पहुँचा और उसे बाध ही रहा था कि कप्तान ने ऊपर मेरी तरफ देखते हुए हुक्म दिया, "डाना,

वहा उस रायल को लपेट देना।" दुर्पेचा पाल को छोडकर मैं क्रास ट्रीज पर पहुँचा। यहाँ हवा का जोर बहुत ज्यादा था। टापगेलेंट मस्तूल बुरी तरह हिल रहा था और रायल मस्तूल तक पहुँचना खतरे से खाली नही था क्योकि हर चीज बुरी तरह हिल रही थी और टूट-फूट रही थी।

लेकिन एक अदना मल्लाह हुक्म बजा लाने के अलावा और कर ही क्या सकता है ? इसलिए मै यार्ड पर चढ गया और तब मुझे पता चला, यहां की हालत नीचे से भी बुरी थी। कमानिया खोल दी गयी थी और यार्ड चारो ओर तैरते से जान पडते थे। पूरा पाल उडकर अनुवात दिशा में चला गया था। सभी आकाश पाल खुल चले थे और मेरे सिर पर उड रहे थे। मैने नीचे देखा लेकिन नीचे मेरी आवाज नही पहुँच पाती क्योकि एक तो सब लोग अपने-अपने काम मे लगे थे, दूसरे झंझा की गरजन और पालो की फट-फट आवाज मे मेरी आवाज दब कर रह जाती।

सौभाग्य मे समय दोपहर का था और चारो ओर दिन का प्रकाश था। पहिए पर तैनात मल्लाह की आँख ऊपर उठी तो उसने मेरी परेशानी समझ ली और अनेक इशारो की मदद से मैं उसे समझा सका कि अमुक-अमुक रस्सियो को खोलने-बांधने के लिए किसी को बुलाओ। इस बीच मैने एक नजर नीचे डाली। डेक पर ऐसा घपला मचा हुआ था कि कुछ समझ में ही नही आ रहा था और जहाज पागल की तरह पानी को चीरता हुआ आगे बढ रहा था। तरंगें उसके ऊपर लहरा रही थी और सीधे खडे रहने वाले मस्तूल पैंतालीस डिग्री के कोण पर झुक गये थे।

दूसरे रायल मस्तूल पर एस—था। वह उडते हुए पाल को जितना पकडना चाहता था उतना ही वह उसमे उडा जा रहा था। कुछ ही देर मे मेरे नीचे वाला टापगैलेंट पाल नीचा करके बाध दिया गया। अब मस्तूल का हिलना कुछ कम हुआ और कुछ ही देर मे उसे लपेट कर मैं नीचे उतरा। लेकिन इस सिलसिले में तिरपाल का बना मेरा नया टोप उड कर समुद्र मे जा गिरा जिससे मुझे तकलीफ हुई। लगभग आध घंटे तक हम पूरी ताकत मे काम करते रहे और जिस समय झंझा ने हमारे पालो को पतगो की तरह उडा दिया था उसके लगभग एक घंटे बाद हम अपने शिखर-पालो और तूफानी पालो को दुहरा बाध चुके थे।

झंझा के दौरान हमारा जहाज हवा के रुख में बह रहा था और हम सीधे पाइंट की ओर जा रहे थे। इसलिए जैसे ही हमने अपने पाल ठीक किये वैसे ही

हमने सुकान को घुमा कर अपने जहाज का रुख बदला और तब नये सिरे से आगे बढना शुरू किया। अब हमारे सामने यह सुखद संभावना थी कि लगभग सौ मील दूर स्थित मोटेरी तक पहुँचने में हमें गोसाती (प्रचड पवन की प्रतिकूल दिशा) में यात्रा करनी पडेगी। रात होने से पहले ही बारिश शुरू हो गयी और पाच दिन तक हमे बरसाती और तूफानी मौसम का सामना करना पडा। नतीजा यह हुआ कि हमारा जहाज तट से कई सौ मील दूर जा पडा। इसी बीच हमें पता चला कि तूफान मे हमारा अगला शिखर मस्तूल उखड गया है और इस वजह से हमे अगले टापगैलेंट मतूस्ल को नीचा करना पडा और कम से कम पालो से काम चलाना पडा।

हमारे चारो यात्री बेहद बीमार थे, इसलिए इन पाच दिनो में हमें उनके दर्शन ही नही हुए। छठे दिन मौसम साफ हो गया और सूरज निकल आया लेकिन अभी हवा जोर को थी और समुद्र में उत्ताल तरगें उठ रही थी। हम एक बार फिर समुद्र में निकल आये थे क्योकि सैकडो मीलो तक जमीन दिखायी नही देती थी। कप्तान रोज दोपहर को यन्त्रो की सहायता से सूरज के बारे में जानकारी हासिल करता था। अब हमारे यात्रियो ने दर्शन देने शुरू किये, और मुझे पहली-बार यह देखने का मौका मिला कि समुद्री यात्रा से तग आया यात्री कितना दयनीय प्राणी होता है।

बोस्टन से रवाना होने के बाद दो दिनो तक मैं बीमार रहा था। लेकिन अपने ठीक होने के बाद आज तक मैंने स्वस्थ और हृष्ट-पुष्ट मल्लाह ही देखे थे, जो चलते जहाज में बडे आराम के साथ एक भाग से दूसरे भाग में आ जा सकते थे (इसका कारण शायद यह रहा हो कि हमारे जहाज मे यात्री थे ही नही)। और मैं स्वीकार करता हूँ कि डेक पर चलते समय, खाते समय और इच्छानुसार चलते-फिरते समय जब मैं अपनी तुलना उन दो दुर्बल, दुखी और पीले पडे यात्रियो से करता था, जो डेको पर चलते लडखडाते थे या अपने चक्कर खाने सिरो को थाम कर हमे मस्तूलो पर चढते या ऊचे-ऊचे यार्डों पर बैठ कर चुपचाप काम करते देखते थे, तब मुझे अपनी श्रेष्ठता की सुखद अनुभूति होती थी।

कुछ दिनो बाद हम पाइन्ट पाइन्ज पर उतरे। यह पाइन्ट मोटेरी की खाडी के मुहाने के सिरे की छूट (भूमि) है। जब हम किनारे के निकट पहुँचे तो पता चला कि पाइन्ट कस्पेप्शन के दक्षिणी भाग के मुकाबले यहाँ के जगल घने हैं।

दरअसल, जैसा कि मुझे बाद मे पता चला, पाइन्ट कंस्पेप्शन इस पूरे प्रदेश के दो पाश्वों को अलग करने वाली विभाजन रेखा है। यदि आप इस पाइन्ट से उत्तर की ओर चलेंगे तो आपको जङ्गल घने मिलेंगे, प्रदेश की समृद्धता का आभास होगा और पानी की बहुतायत मिलेगी।

मोटेरी, और उसमे भी ज्यादा सैन फ्रैंसिस्को, के साथ यही बात है, जबकि पाइन्ट के दक्षिण की ओर चलने पर सैंट बारबरा, सैन पेड्रो, और सब से अधिक सैन डियागो, में जमीन नगी और सपाट है, यद्यपि उर्वरता की दृष्टि से वह जमीन भी कम नहो है।

मोटेरी की खाडी मुहाने पर बहुत चौडी है। दोनो पाइटो के बीच इसकी चौडाई लगभग चौबीस मील है। इसके उत्तर में पाइन्ट एनो न्यूवो और दक्षिण में पाइन्ट पाइनोज है। लेकिन जब आप शहर की तरफ चलते है तो यह खाडी तंग होती जाती है। मोटेरी नगर पाइन्टो से लगभग अट्ठारह मील दक्षिण में धनुषाकार बसा है। दोनो तटो पर घनी हरियाली है (दोनो तटो पर चीड के पेडो की बहु-तायत है) और चूकि इन दिनो बरसात का मौसम था इसलिए चारो तरफ हरियाली ही हरियाली दिखायी देती थी—घास, पत्तिया और सब कुछ। जगलो में चिडिए चहचहा रही थी और बहुत बडी सख्या में जङ्गली पक्षी हमारे सिरो के ऊपर उड रहे थे। यहाँ हमें दक्षिणी-पूर्वी झझाओ से कोई खतरा नही था।

किनारे से दो केबिन की दूरी पर हमने लगर डाला। अब कस्बा हमारे ठीक सामने था और बडा सुन्दर लग रहा था। कस्बे के मकानो पर प्लास्टर किया गया था इसलिए वे सैंटा बारबरा के मटमैले मकानो से कही अच्छे लग रहे थे। छत पर लाल टायलें बिछी हुई थीं जो सफेद प्लास्टर की दीवारो की शोभा बढा रही थी। चारो तरफ हरे-हरे लान थे और ऐसा लगता था जैसे एक विशाल लान पर कोई सौ मकानो को यहाँ वहाँ बेतरतीब छिटका दिया गया हो। इस कस्बे में, और कैलिफोर्निया में मैंने जितने भी कस्बे देखे उनमें, गलियाँ या बाडें नही हैं (यह-वहाँ छोटी सी बाड लगा कर छोटा-सा बगीचा जरूर बना लिया गया है) इसलिए ऐसा लगता है जैसे हरियाली के बीच इन मकानो को बिना किसी तरतीब के रख दिया गया है और चूकि सब मकान इकमजिले और कुटियो के नमूने पर बने हुए हैं, इसलिए कुछ फासले से देखने पर बडे सुन्दर लगते हैं।

हमने शनिवार को तीसरे पहर सुहावने मौसम में लंगर डाला था। रोशनी

काफी थी और हर चीज बडी खुशगवार लग रही थी। छोटे से दुर्ग पर मैक्सिकन झण्डा फहरा रहा था और परेड करते हुए सैनिको के ढोल और बिगुल की आवाजें पानी पर तैर रही थी और उस दृश्य मे एक नयी जान डाल रही थी। सब लोगों के मन मे इस दृश्य से खुशी हुई। हमें ऐसा प्रतीत हुआ मानो हम किसी सभ्य देश में आ गये हो।

कैलिफोर्निया का हम पर पहला प्रभाव अच्छा नही पडा था—सैंटा बारबरा का खुला चिखिल बन्दर, किनारे से तीन मील दूर लंगर डालना, हर दक्षिणी-पूर्वी झझा से बचने के लिए समुद्र की शरण लेना, ऊची भग्नोर्मियो को पार करके नाव से तीर पर पहुँचना और वहा से एक मील दूर अधियारे कस्बे मे जाना, न सुनने के लिए कोई आवाज और न देखने के लिए कोई चीज—ले-दे कर फिर वही सैंडविच द्वीपो के मल्लाह, फिर वही खाले और चरबी के बोरे। इसमे पाइन्ट कस्पेप्शन के पास आयी झझा को और शामिल कर लीजिए और अब आप आसानी से समझ गये होगे कि मोटेरी पहुचने तक हम कैलिफोर्निया से किस कदर निराश हो चुके होगे। लेकिन यहा पहुच कर हमे सुकून मिला। यह सुन कर हम और खुश हुए कि यहाँ भग्नोर्मिया बहुत कम, नही के बराबर, हैं और आज तीसरे पहर सागर-तट किसी तलैया की तरह शाँत था।

हमने एजेन्ट और यात्रियो को किनारे पर उतारा और देखा वहा कई लोग उनकी प्रतीक्षा में खडे थे। उनमे कुछ लोग ऐसे भी थे जिन्होने कपडे तो उस प्रदेश के पहन रखे थे लेकिन जो अंग्रेजी बोल रहे थे, बाद में हमे पता चला कि ये लोग मूलत अग्रेज और अमरीकी थे जिन्होने स्थानीय परिवारो मे विवाह किये थे और अब यही बस गये थे।

मोटेरी पहुँचने के साथ एक और बात भी जुडी हुई है, जिसका सम्बन्ध खास तौर पर मुझसे है। यहा पहुँच कर मैंने पहली बार रायल यार्ड को नीचा किया। यह काम कुशल मल्लाह ही कर सकते हैं। समुद्र पर मैंने इसे नीचे किये जाते समय ध्यान से देखा था और एक अनुभवी मल्लाह ने, जिसे मैंने बडे यत्न से खुश कर लिया था, मुझे इससे सम्बद्ध सारी बाते समझा दी थी। उसने मुझे सलाह दी थी—मौका मिलते ही इस काम को खुद कर के देखना। दूसरे मालिम से मेरी खासी घनिष्ठता थी क्योकि पहले वह मेरी ही तरह अगवाड में साधारण मल्लाह था। मैंने उसे बताया कि यह काम मैं करना चाहता हूँ। मैने उससे कहा कि जब

भी मौका मिले तो वह मालिम से कह कर मुझे ऊपर जाने का हुक्म दिला दे। अत. ज्योही जरूरत पडी, मालिम ने मुझे रायल यार्ड नीचा करने का हुक्म दिया। मैं ऊपर चढा और मन ही मन सारी प्रक्रिया को दुहराता रहा क्योकि जरा सी चूक मेरी सारी कोशिशो पर पानी फेर सकती थी। सौभाग्य से मैंने काम पूरा कर लिया और अफसर को मुझे कोई आदेश नही देना पडा। जब रायल यार्ड डेक पर पहुचा तो मैंने अफसर के मुह से "बहुत अच्छे" सुना और मुझे इन शब्दो से इतना ही सतोष हुआ जितना कैंब्रिज मे लेटिन पढते समय अपनी अभ्यास-पुस्तिका पर अध्यापक द्वारा दी गयी शाबाशी के शब्दो को पढ़ कर होता था।

*　　*　　*

अध्याय—१२

अगले दिन इतवार, यानी छुट्टी का दिन था। अक्सर इतवार के दिन कुछ मल्लाहो को तीर पर जाने की इजाजत मिल जाती है, और हम लोग इस बात को लेकर झगड रहे थे कि तीर पर कौन जायगा कौन नही। जब सुबह को हमें काम पर बुलाया गया और हमने रस्सियो वगैरह की सज्जा ठीक की तो देखा कि पिछले तूफान मे जो शिखर मस्तूल चटख गया था उसे उतार कर उसकी जगह नया मस्तूल लगाना पडेगा। इसके साथ ही दूसरे मस्तूलो की साज-सज्जा भी ठीक करनी होगी। यह बात हमें बहुत नागवार हुई। अगर मल्लाहो से उनका सैबाथ छीन लिया जाय तो वे भन्ना उठते हैं, और ऐसा महसूस करते हैं जैसे उन्हे काम मे पीसा जा रहा हो। इसकी वजह यह नही है कि वे हमेशा, या अक्सर, सैबाथ का दिन धर्म-कर्म के कामो में बिताते हैं, बल्कि उनकी नाराजगी की वजह यह है कि उन्हे हफ्ते मे सिर्फ यही दिन आराम के लिए मिलता है। इसके अलावा तूफानों के और अत्यत आवश्यक काम के कारण उन्हे वैसे भी कई बार छुट्टी से वंचित रह जाना पडता है, इसलिए जब ऐसी कोई बात न हो और जहाज बन्दरगाह में आराम से सुरक्षित रूप में खडा हो, तब यदि बिना किसी अत्यावश्यक कारण के उनसे उनका सैबाथ छीन लिया जाय तो उन्हे और भी बुरा लगता है। इस बार हमारा सैबाथ छिनने का केवल यह कारण था कि कप्तान ने कस्टमहाउस के अधिकारियों को सोमवार को जहाज पर बुलाने का फैसला कर लिया था और उनके आने से पहले वह जहाज की टीम-टाम ठीक कर लेना चाहता था।

जहाज पर मल्लाह की स्थिति गुलाम जैसी होती है, लेकिन ऐसे मौको की

कभी नहीं जब वह अपने कप्तान की कोशिशों पर पानी फेर सकता है। जब खतरे या जरूरत का वक्त हो, या उससे कायदे से काम लिया जाय तब वह बिजली की तेजी से काम करता है, लेकिन जिस क्षण वह यह महसूस करता है कि उसे मुफ्त में, बेगार में, जोता जा रहा है तब अजगर भी उसकी सुस्ती का मुकाबला नहीं कर सकता। वह अपने काम को मना नही कर सकता और न अधिकारियो की अवज्ञा ही कर सकता है, लेकिन फिर भी अफसर को चाहिए कि जितना काम मल्लाह कर दे उसी को गनीमत समझे। समुद्र पर जो आदमी तीन महीने मल्लाह रह चुका हो वह "करो कम दिखाओ ज्यादा" के मूल मंत्र को भली भाति हृदयंगम कर लेता है।

उस दिन सुबह के समय यही समा रहा। हर आदमी ऊंघते हुए काम कर रहा था। किसी आदमी को नीचे से एक ब्लाक लाने के लिए भेजा जाता था तो वह उसे ढूंढने के पहले सब चीजें तितर-बितर कर देता था, जब अफसर दो बार चीख चुकता तब कही वह ब्लाक को ऊपर लाता और फिर चीजो को करीने से लगाने में काफी वक्त जाया कर देता। सूए खो गये। चाकू इतने भौथरे पाये गये कि उन पर धार रखाना जरूरी हो गया। सान के पास हर दम तीन-चार मल्लाह अपने भौथरे चाकुओं पर धार चढाने के लिए खडे रहते थे। जब एक आदमी को मस्तूल की चोटी पर भेजा जाता था तब वह वहा पहुँचने के कुछ ही देर बाद यह बहाना लेकर नीचे उतर आता था कि वह कोई जरूरी चीज नीचे ही भूल गया था; और जब रस्से-कप्पियां लगाये गये तो छ आदमी मिल कर भी उतना काम नही कर रहे थे जितना अपनी मर्जी से एक मल्लाह कर लेता है। जब मालिम अफसर वहा से चला जाता था तो रत्ती भर काम नही होता था। सारा काम बडा मुश्किल था, और आठ बजे जब हम नाश्ते के लिए लौटे तो काम उसी हालत में था जिसमें हमने शुरू किया था।

नाश्ते के समय इस बात पर विचार-विमर्श हुआ। एक ने सुझाव दिया कि काम करने से साफ इनकार कर दिया जाय, लेकिन इस बात से विद्रोह की बू आती थी और हमने इस सुझाव को फौरन रद्द कर दिया। मुझे यह भी याद है कि एक मल्लाह ने कहा था कि फादर टेलर (वे बोस्टन के समुद्र तट के उपदेशक को इसी नाम से पुकारते थे) का उपदेश था कि अगर मालिम लोग तुमसे रविवार

को भी काम करने को कहें तो उनका कहना मानना तुम्हारा फर्ज है, और इसका पाप तुम्हे नही लगेगा।

नाश्ते के बाद इस बात का पता चला कि अगर हम अपना काम जल्दी खत्म कर लें तो दोपहर के बाद हमें नाव में बैठ कर मछलियों का शिकार करने की इजाजत मिल जायगी। यह चारा रग लाया क्योकि कई लोग मछलियों के शिकार के बडे शौकीन थे; सब लोगो ने सोचा, चू कि सारे दिन काम में नही लगे रहना है बल्कि एक ही काम करना है इसलिए इसे जितनी जल्दी कर डालें उतना ही अच्छा रहेगा। इसके बाद तो नक्शा ही बदल गया। जिस काम को देखकर ऐसा लगता था कि दो दिन मे खत्म होगा वह दो बजे के पहले ही पूरा हो गया, और हम पाच मल्लाह एक नाव मे बैठकर पाइंट पाइनोज़ की ओर मछलियों का शिकार करने निकल पडे; लेकिन हमें तीर पर जाने की मनाही कर दी गयी थी।

पाइन्ट पाइनोज पर हमने "लोरियट" को आते देखा जो सैंटा बारबरा से हमारे साथ ही चला था। पाइन्ट के आगे दोपहर से पहले तो सन्नाटा छाया रहा था लेकिन दोपहर को हल्का समुद्री समीर चल पडा था और उसमें चलता हुआ "लोरि-यट" धीरे-धीरे आ रहा था। हमने कई तरह की अनेक मछलियां पकडी जिनमें बहुतायत काड और पर्च की थी और फास्टर (अपदस्थ किये गये दूसरे मालिम) के काटे में एक बडी और सुन्दर मोती वाली सीप फंस गयी। हमें बाद में पता चला कि यह जगह सीपियों के लिए प्रसिद्ध थी और एक छोटा-सा स्कूनर जहाज यहाँ से सीपिया भर कर सयुक्त राज्य अमरीका ले गया था, और उसकी यह यात्रा बड़ी लाभदायक रही थी।

सूर्यास्त होते-होते हम लौट आये। तब तक "लोरियट"हमारे "पिलग्रिम" से लगभग एक केबिल की दूरी पर लगर डाल चुका था। अगले दिन हमने जल्दी काम शुरू कर दिया और फलके उतारने, नौ-भार को ठीक-ठाक करने और मुआ-इने के लिए तैयारी करने में जुट गये। आठ बजे पांच कस्टमअधिकारी जहाज पर आये और उन्होने सामान और सामान की सूची का मुआयना शुरू कर दिया।

मैक्सिको के राजस्व-विषयक नियम बडे कठोर हैं। उनके अनुसार यह जरूरी है कि पहले सारा नौभार किनारे पर उतारा जाय, वहाँ उसकी जाँच हो और तब दुबारा उसे जहाज पर चढ़ाया जाय, लेकिन हमारे एजेन्ट मि० आर—पिछले दो जहाजो से उन्हे जहाज पर ही ले आते थे और इस प्रकार नौभार को किनारे पर

ले जाने की तबालत बच गयी। अफसरो की वर्दी वही थी जो देश-भर में हमें दिखाई दी थी। उनके सिर पर काले या गहरे-भूरे रंग का चौड़े किनारे वाला टोप था जिसके अगले हिस्से पर गिलट की या कढी हुई पट्टी लगी हुई थी और उनके अन्दर सिल्क का अस्तर लगा हुआ था, सिल्क या कढे हुए सूती कपडे की छोटी जाकेट (यूरोपियन स्कर्ट वाला बाडी कोट यहा नही पहना जाता), कमीज गर्दन के पास खुली होती है, वास्कट, अगर होती है तो, उम्दा होती हैं; पतलून चौडी सीधी और लम्बी होती है और अक्सर मखमल, वेलवेटीन या ब्राड क्लाथ की बनी होती है, या उसकी जगह छोटी ब्रीचिस और सफेद जुर्राबें रहती हैं। वे हिरन की खाल का जूता पहनते हैं जो कि गहरे भूरे रग का होता है और (चूंकि उसे इन्डियन आदिवासी बनाते है) प्राय उस पर काफी काम वगैरह किया रहता है। उनकी पतलूनों में गेटिस नही होते बल्कि वे कमर में एक पेटी बाधते हैं, जिसका रग आम तौर पर लाल होता है और जिसका बढिया या घटिया होना पहनने वाले की हैसियत पर निर्भर करता है। इसमे आप लबादे को और शामिल कर लीजिए, जोकि एकदम जरूरी है, और अब आपके पास कैलिफोर्निया के निवासी की पूरी पोशाक हो गयी है। लबादे से पहनने वाले आदमी के पद और वैभव का पता लगाया जा सकता है।

अमीरजादे काले या गहरे नीले रग के ब्राडक्लाथ के बने लबादे पहनते हैं और उन पर मखमल व जरी का काम खूब हुआ रहता है, घटिया लबादे इन्डियन आदिवासियो के कबलो जैसे होते हैं, मध्यम वर्ग के लोगो का लबादा एक बड़े मेजपोश की तरह होता है जिसके बीच मे सर निकालने के लिए एक छेद बना होता है। यह प्राय कबल की तरह खरखरा होता है, लेकिन बनावट सुन्दर और रंग बिरंगी होने के कारण यह दूर से देखने मे अच्छा लगता है।

स्पेनियो में कोई आदमी मेहनत—मजदूरी नही करता (मेहनत—मशक्कत का सारा काम दास इन्डियन आदिवासियो को करना पडता है), और हर अमीर स्पेनी मनसबदार दिखायी पडता है, तो हर गरीब और बदमाश स्पेनी किसी बदकिस्मत शरीफजादे से कम नही लगता। मैंने अक्सर देखा है कि सुन्दर आकृति वाले, विनम्र व्यवहार वाले, ब्राड क्लाथ और मखमल के कपडे पहने, सजे-सजाये घोडे के मालिक की जेब में एक सिक्का तक नही रहता था और वह भूख के मारे तडप रहा होता था।

* * *

अध्याय -१३

अगले दिन जब नौ-भार करीने से लगा दिया गया तब हमने तिजारत शुरू कर दी। व्यापार-कक्ष स्टीअरेज में बनाया गया था और उसमे हल्की-फुल्की चीजें और बाकी सामान के नमूने रख दिये गये थे। हमारे साथ एम—नाम का जो मल्लाह बास्टन से आया था उसे अगवाड से हटा कर अति नौभार का क्लर्क बना दिया गया। वह इस काम के लिए उपयुक्त था क्योंकि वह बोस्टन मे एक काउटिंग हाउस में क्लर्क रह चुका था। पिछले कुछ समय से वह गठिया से पीडित था जिसके कारण वह तीर पर नाविक का काम नही कर सकता था, क्योंकि इस काम मे उसे पानी और हवा मे काम करना पडता।

आठ-दस दिन जहाज पर बडी चहल-पहल रही। सभी तरह के लोग—मर्द, औरतें और बच्चे—सामान देखने और खरीदने आये और हम लोग सवारियों और सामान को नावो मे लाने-ले जाने मे लगे रहे, क्योंकि उनके पास अपनी नावें नही थी। यदि किसी का पिनों का पलीता भी खरीदना होता था तो उसके लिए बन-सवर कर नये जहाज को देखने आना जरूरी था। एजेंट और उसके क्लर्क ने बिक्री का काम सभाला और हम जहाज के फलके पर या नावो पर काम करने मे लगे रहे।

हमारा नौभार मिला-जुला था; यानी हमारे जहाज मे दुनिया की हर चीज थी। हमारे पास सब तरह की शराब, (जो हम पीपे की नाप से बेचते थे), चाय, काफी, चीनी, मसाले, मुनक्का, शीरा, पीतल-ताँबे आदि का सामान, चीनी-मिट्टी के बर्तन, टिन के बर्तन, छुरी-काटे आदि, सब तरह के कपडे, लिन के जूते, लावेल के सूती कपडे, क्रेप, सिल्क; औरतो के लिए शाल, स्कार्फ, नैकलिस, हीरे जवाहिरात और कघे, फर्नीचर आदि सभी सामान था, और असल बात तो यह है कि हमारे जहाज पर ऐसी हर चीज मौजूद थी जिसकी कल्पना की जा सके—हमारे पास चीनो आतिशबाजी भी थी और इग्लैंड की गाडी के बारह जोडी पहिए भी जिन पर लोहे की हाल चढी हुई थी।

कैलिफोर्निया के लाग आलसी और फिजूल खर्च होते हैं, और अपनी जरूरत की चीजें खुद नही बना सकते। देश मे अगूरो की बहुतायत है लेकिन फिर भी वे हम से बोस्टन की सडी शराब ऊचे दाम देकर खरीदते हैं और आपस मे उसकी फुटकर बिक्री एक रीयल (१२½ सेंट) फी वाइन गिलास करते हैं। वे एक खाल

के लिए नकद दो डालर मांगते हैं, लेकिन वे उसी खाल को किसी ऐसी चीज के बदले दे देते हैं जिसकी कीमत बोस्टन में ७५ सेंट से अधिक नही होती। और वे (अपनी उन खालो से तैयार किये गये जो केप हार्न के दो चक्कर लगा आयी हैं) जूते तीन और चार डालर मे खरीद लेते हैं और चिकेनस्किन बूटो के लिए पन्द्रह डालर तक देते हैं।

आम तौर पर चीजें बोस्टन से तिगुनी कीमत पर बिक रही थी। इसका एक कारण तो यह था कि सरकार ने, अपनी ओर से होशियारी बरती थी और, आयात की जाने वाली चीजो पर भारी कर लगा दिये थे। ऐसा करने में उनका उद्देश्य देश का धन देश मे ही रखना था। इन करो और इतनी लम्बी यात्रा पर होने वाले भारी व्यय के कारण इस व्यापार मे बहुत बडी पूंजी वाले व्यापारी ही कदम रख सकते थे। पिछले छ: वर्षों में यहा जितना माल केप हार्न होते हुए आया था उसका लगभग दो–तिहाई भाग अकेली ब्रायट स्टर्गिस एन्ड कम्पनी से आया था जो हमारे जहाज की मालिक फर्म थी और जिसने इस तट पर एक स्थायी एजेन्ट को नियुक्त कर रखा था।

इस तरह का व्यापार हमारे लिए नया था और कुछ दिनो तक हमें वह बडा मजेदार लगा यद्यपि हमें पौ फटने से सूरज ढलने तक, और कभी-कभी उसके बाद भी, बराबर कठोर परिश्रम करना पडता था।

इस तरह सवारियो और सामान को बराबर इधर मे उधर लाने और ले जाने में व्यस्त रहने के कारण इन लोगो के चरित्र, वेश-भूषा और भाषा के बारे में हमें काफी जानकारी हो गयी। मर्दों की पोशाक के बारे में मैं पहले ही बता चुका हूं। औरतें सिल्क, क्रेप या सूती कपडे की बनी यूरोपियन काट की मिली गाउनें पहनती थी। उनकी गाउनो की विशेषता यह थी कि उनकी आस्तीनें छोटी होती थी जिनसे बाहें उघडी रहती थी, कमर के पास वे कुछ खुली होती थी और उनमें चोली नही होती थी। वे मेमने की खाल या साटिन के जूते पहनती थी, शोख रंगो की पेटियां बांधती थी, और प्राय. नेकलिस और कुन्डल अवश्य पहनती थी। वे बोनेट एकदम नही पहनती थी। मैंने केवल एक औरत को बोनेट पहने देखा। वह एक अमरीकी जहाजी कप्तान की बीबी थी जो सैन डियागो में बस गया था। उसने अपनी बीबी के लिए बडी तायदाद में तिनको और रिबन का यह शानदार तोहफा मगवाया था। यहाँ की स्त्रियां अपने (काले या बहुत गहरे भूरे) बालो

को गले में डाले रहती थीं जो कभी तो खुले रहते थे और कभी ये उनकी लम्बी चोटिया गूथ लेती थी, यद्यपि विवाहित स्त्रियाँ अक्सर ऊचे कंघे पर बालो का एक जूडा बना लेती थी।

धूप और मौसम से बचने का एक मात्र साधन उनका बडा मेटल है जिसे वे अपने सर पर पहनती हैं और जब बाहर जाती हैं तो उसे खीच कर अपने मुह के चारो ओर लपेट लेती हैं। अक्सर घर से वे अच्छे मौसम में ही निकल पाती हैं। जब वे घर में होती हैं या घर के बाहर खुले में बैठी होती हैं, जो कि वे अच्छे मौसम में अवसर करती हैं, तो वे अपनी गरदन में एक बढिया डिजाइनदार रुमाल डाले रहती हैं। औरतो मे सर के ऊपर एक पट्टी पहनने का रिवाज भी काफी प्रचलित है जिसके ऊपर सलीब, सितारा या कोई और सज्जा-चिन्ह रहता है। औरतें कई रंगो की हैं। उनका रंग—उनकी वेश-भूषा और व्यवहार के अलावा—उनके पद पर निर्भर करता है। दूसरे शब्दो में कहा जा सकता है कि उनका रंग इस बात पर निर्भर करता है कि उनके अन्दर स्पेनी रक्त कितनी मात्रा में है।

जिन स्त्रियों में विशुद्ध स्पेनी रुधिर है, और जिनके परिवारो में आदिवासियों से विवाह नही हुए, उनका रग पक्का है, और उनमें से कुछ तो अंग्रेज औरतों की तरह गोरी हैं। कैलिफोर्निया में इस तरह के परिवारों की सख्या बहुत कम है; जो हैं उनमें से अधिकाश लोग सरकारी अधिकारी हैं या वे अवकाश प्राप्त अधिकारी हैं जो अपनी अर्जित सपत्ति का भोग करने के लिए यही रुक गये हैं; कुछ ऐसे लोग भी हैं जो अपराध करने के कारण इधर भेज दिये गये हैं। ये लोग यहाँ के अभिजात वर्ग के हैं। ये आपस में ही शादी-ब्याह करते हैं, और हर तरह से अपने को दूसरे वर्गों से अलग रखने की कोशिश करते हैं। ये लोग अपने रंग, वेश भूषा, व्यवहार और बोली से अलग ही पहचाने जाते हैं; ये अपने को कैसिलियंस कहते हैं और शुद्ध कैसिलियन भाषा बोलने की महत्वाकांक्षा रखते हैं। नीचे तबकों में इसी भाषा का बोलचाल का भ्रष्ट रूप प्रचलित है।

इस उच्च वर्ग से जैसे-जैसे आप नीचे के वर्गों मे उतरते जायेंगे वैसे-वैसे आप देखेंगे कि उनका रङ्ग काला और धूसर पडता जायेगा। अत में आप शुद्ध इन्डियन आदिवासी पर जा पहुचेंगे जो अपने शरीर पर कपडे की एक छोटी पट्टी मात्र धारण करता है, जिसे वह कमर की चमड़े की पेटी से कोपीन की तरह बाधे रहता है। आम तौर पर हर व्यक्ति की जाति का पता उसके रुधिर से चलता है और

पहली ही मुलाकात से यह पता चल जाता है कि उसका रुधिर किस कोटि का है। फिर भी, जिसके बदन मे स्पेनी रुधिर की एक बूंद भी होती है, यानी चाहे वह एक चौथाई या एक बटा आठ स्पेनी भी क्यो न हो, उसे दास नही माना जाता और उसे कपडे, बूट, टोप, लबादा, रकाब, लम्बा चाकू आदि चीजें—चाहे वे कितनी ही रद्दी और गन्दी क्यो न हो—रखने का अधिकार मिल जाता है। वह स्वय को एस्पानोलो कह सकता है और अगर सभव हो तो, सपत्ति का स्वामित्व भी प्राप्त कर सकता है।

औरतो मे कपडो-लत्तो का मोह अत्यधिक है और अक्सर उनमे से अनेक के विनाश का कारण बनता है। एक सुन्दर मेंटिल, नेकलिस या कुडलो की एक जोडी दे कर उनमे से अधिकाश का कृपा-कटाक्ष प्राप्त किया जा सकता है। यह बडी आम बात हैं कि केवल दो कमरो के कच्चे फर्श वाले मकान मे रहने वाली औरत साटिन के सलमे-सितारे वाले जूते, सिल्की गाउन, ऊचा कन्घा, सोने के नही तो गिलट के कुडल और नेकलिस धारण करे। अगर उनके पति उनकी पोशाक पर काफी रुपया खर्च नही कर पाते तो जल्दी ही वे दूसरो के तोहफे स्वीकार करने लगती हैं। वे दिन-दिन भर हमारे जहाज पर महगे कपडो और गहनो की खरीदारी करती रहती थी और इतना सामान खरीदती थी कि बोस्टन की दरजिनो और वेटिंग मेडों की भी आखें खुल जाय।

पोशाक के मोह के बाद जिस चीज ने मुझे सब से अधिक आकर्षित किया वह था यहां के स्त्री-पुरुषो की आवाज का सुरीलापन और स्वर-विन्यास का सौदर्य। यहां टोप का किनारा झुकाये, कबल का लबादा पहने, अन्दर गन्दे कपड़े पहने और चमडे की धूलभरी लेंगिंग पहने घूमता-फिरता अदना शोहदा-सा लगने वाला हर आदमी शानदार स्पेनिश बोलता था।

उनकी भाषा का अर्थ समझे बिना भाषा की ध्वनि सुनने मे ही आनन्द आ जाता था। वे प्राय नीग्रो लोगो की तरह रूक-रूक कर बोलते हैं, लेकिन फर्क यह है कि कभी-कभी बीच मे वे बहुत तेजी से बोलते हैं, तब ऐसा लगता है जैसे वे एक व्यजन से कूद कर दूसरे व्यजन पर पहुँच रहे हो, अत मे वे जैसे संयोगवश एक दीर्घ स्वर पर आ जाते हैं और उस पर कुछ रूक कर ध्वनि में सतुलन स्थापित कर लेते हैं।

बोलने की यह विशेषता पुरुषो की अपेक्षा स्त्रियों में कही अधिक है। पुरुषों में

उच्चारण की स्निग्धता और गरिमा विशेष रूप से पायी जाती है। जब एक अदना सा गाडीवान घोडे की पीठ पर बैठ कर कोई सदेश देता था तो ऐसा लगता था जैसे कोई राजदूत श्रोताओ से कुछ कह रहा हो। सच तो यह है कि कभी-कभी ये लोग ऐसे अभिशप्त मानव लगते थे जिनका सब—कुछ नष्ट हो गया हो और केवल अभिमान, व्यवहार व स्वर ही बचा हो।

मुझे यह देख कर भी आश्चर्य हुआ कि यहाँ कितने बड़े परिमाण मे चादी परिचलन में थी। निश्चित रूप से मैंने अपने जीवन मे कभी एक बार मे इतनी चादी नही देखी जितनी मोटेरी में गुजरने वाले इस सप्ताह मे देखने को मिली। असली बात यह है कि यहा के लोगो में न तो कोई उधार प्रथा है, न बैंक और न वे पशुओ के अलावा किसी दूसरी चीज मे अपना धन ही लगा सकते हैं। उनके पास चाँदी और खालो (जिन्हे मल्लाह "कैलिफोर्निया के बैङ्क नोट" कहते हैं) के अलावा परिचलन का कोई माध्यम नही है। वे जो भी चीज खरीदते हैं उसकी कीमत के बदले या तो चाँदी देते हैं अथवा खाल। वे सुखायी गयी और दुहरी तह की हुई खालें भोडी बैलगाडियों या खच्चरो की पीठो पर लाद कर लाते हैं और धन-पचास, अस्सी या सौ डालर और अर्द्ध डालर—रूमाल मे बाध कर।

जब मैं कालिज मे पढता था तो मैने स्पेनिश नही पढ़ी थी और जब जुआन फर्नाडीज मे पहुँचा था तब मै स्पेनिश का एक शब्द भी नही बोल सकता था, लेकिन वहाँ से रवाना होने के कुछ दिनो बाद मैंने केबिन से स्पेनिश का एक व्याकरण और शब्द कोश प्राप्त कर लिया था और इनके निरन्तर प्रयोग से तथा दूसरो द्वारा बोली गयी भाषा को विशेष ध्यान से सुन कर मैंने अपने लिए एक छोटा सा शब्द-सग्रह तैयार कर लिया था और इसकी मदद से मैं काम चलाऊ स्पेनिश बोलने लगा था। चूंकि मैं मल्लाहों के बीच सबसे ज्यादा स्पेनिश जानता था (सच तो यह है कि उनमे से कोई भी यह भाषा जानता ही न था), कालिज में पढ चुका था और लैटिन जानता था इसलिये मैं महान भाषाविद के नाम से विख्यात हो गया और जब कप्तान व अफसरो को कस्बे के विभिन्न भागों से सामान लाने या पत्र अथवा सवाद आदि भेजने की जरूरत पडती तो अक्सर यह काम मुझी को सौपा जाता था। कई बार मुझे ऐसी चीज लेने के लिए भेजा जाता था जिसका नाम भी मैंने नही सुना होता था : लेकिन यह सिलसिला मुझे पसन्द था और इसीलिए मैंने कभी अपनी अज्ञता प्रकट नही होने दी। कभी-कभी मैं चुप-

चाप नीचे खिसक जाता था और तीर पर जाने से पहले शब्दकोश देख लेता था; अथवा रास्ते में किसी अंग्रेजी-भाषी को पकड़ता और उससे अपने मतलब का शब्द मालूम कर लेता था, और तब इशारों व लैटिन और फ्रेंच के ज्ञान की सहायता से अपना काम निकाल लेता था।

यह अभ्यास मेरे लिए बड़ा उपयोगी सिद्ध हुआ। इससे मैंने जितना सीखा उतना महीनों के अध्ययन से भी नहीं सीखा जा सकता था। इससे मुझे लोगों के रीति-रिवाजों, चरित्रों और गृह-व्यवस्था को देखने-समझने का भी सुयोग मिला, इसके अलावा यह बन्दरगाह में खड़े जहाज के जीवन की एक रसता से छुटकारा देने वाला सुयोग तो था ही।

जहाँ तक मैं समझता हूँ, मोंटेरी कैलिफोर्निया का सब से रमणीय और सभ्य दिखायी देने वाला स्थान है। इसके बीच में एक खुला चौक है जिसके चारों ओर इकमंजिली प्लास्टर की हुई इमारतें हैं, बीचोबीच आधा दर्जन तोपें हैं, जिनमें कुछ आकाश की तरफ उठी हुई हैं, कुछ नहीं। यह स्थान दुर्ग कहलाता है। हर कस्बे का दुर्ग उसके बीचोबीच स्थित है बल्कि यह कहना चाहिए कि हर किले के चारों ओर एक कस्बा बस गया है क्योंकि मेक्सिको की सरकार ने पहले दुर्ग बनवाये थे, और तब अपने बचाव के लिए लोग उनके आस-पास बसने लगे। इस कस्बे का दुर्ग एकदम खुला था और उसमें शहरपनाह नहीं थी।

कस्बे में लम्बी उपाधि वाले कई अफसर थे और लगभग अस्सी सैनिक थे जो वेतन, भोजन, वस्त्र और अनुशासन सभी दृष्टियों से दरिद्र थे। गवर्नर जनरल या जनरल (वह इसी नाम से अधिक लोकप्रिय है) मोंटेरी में रहता है इसलिए सरकारी सीट भी यही कस्बा है। उसकी नियुक्ति मेक्सिको की केंद्रीय सरकार करती है और वह प्रधान सैनिक तथा असैनिक अधिकारी होता है। उसके अलावा हर कस्बे में एक कमांडर होता है जो प्रमुख सैनिक अधिकारी है और दुर्ग की देख-रेख वही करता है तथा सभी विदेशियों व विदेशी जहाजों से सभी तरह की बातें उसी को तय करनी होती हैं। इसके अलावा दो या तीन "अल्काल्दी" और "कोरेजिडोर" भी होते हैं जिन्हें कस्बे के निवासी चुनते हैं और जो असैनिक अधिकारी होते हैं।

यहां के निवासियों को अदालतों और विधिशास्त्र के बारे में कुछ पता नहीं। मामूली म्युनिसिपल मामलों की सार-संभाल अलकाल्दी और कोरेजिडोर कर लेते है। गवर्नर जनरल के नीचे काम करते हुए कमांडर सरकार, सेना और विदेशियों

से सम्बद्ध मामलो की सुनवाई करते हैं। गम्भीर मामलों का निर्णय गवर्नर जनरल खुद करता है। अगर वह पास ही होता है तो खुद पडताल करता है, लेकिन दूर होने पर सम्बद्ध अफसर जो रिपोर्ट भेज देते हैं उन्ही के आधार पर वह फ़ैसला करता है।

प्रोटेस्टेंट मतावलम्बी व्यक्ति को कोई नागरिक अधिकार प्राप्त नही हैं, न वह कोई सपत्ति ही खरीद सकता हैं। सच तो यह है कि अगर वह बाहर से आये किसी जहाज पर नौकर न हो तो उसे वहां कुछ ही दिनो के लिये रहने दिया जाता है। परिणामतः वे अमरीकी और अग्रेज जो यहाँ बसने का इरादा करते हैं वे कैथोलिक हो जाते हैं, उनके बीच यह कहावत विशेष प्रचलित है—"आदमी को चाहिए कि वह अपनी अतरात्मा केपहार्न पर ही छोड दे।"

लेकिन अभी मोंटेरी की ही बात करें। कैलिफोर्निया के अन्य स्थानों की भांति ही यहाँ भी मकान इकमंजिले हैं। वे लगभग डेढ वर्ग फुट के तीन या चार इंच मोटे चौको से बने हैं। ये चौके गारे से चिने गये हैं, सारे मकान धूसर रंग के हैं। फर्श ज्यादातर कच्चे हैं, खिडकिया जालीदार और बिना शीशो वाली हैं। दरवाजे बहुत कम बन्द होते हैं और सीधे कामन रूम में खुलते हैं क्योकि उनमें दूसरे दरवाजे नही होते।

कुछ अमीर लोगो ने अपनी खिडकियो में काँच लगवा रखे हैं और उनके मकानो में फर्श लकडी का है, और मोंटेरी मे लगभग सभी मकानो में बाहर की तरफ प्लास्टर किया गया है। जो मकान अच्छे हैं उनकी छतें लाल टायलो से बनी हैं।

साधारण मकानो में दो या तीन कमरे होते हैं जो एक-दूसरे में खुलते हैं और जिनमें फर्नीचर के नाम पर दो-एक खाटें, कुछ कुर्सिया और मेजें; दर्पण, किसी न किसी तरह की सलीब, किसी चमत्कार या शहादत से सबद्ध शीशे से मढे हुए चित्र आदि चीजें रहती हैं। घरो में धुनाले या चूल्हे नही होते, क्योकि यहा की जलवायु ऐसी है कि हर समय आग की आवश्यकता नही पडती, और उनका खाना वगैरह घर से कुछ अलग हटकर बनी रसोई में पकाया जाता है।

जैसा कि मैं पहले भी कह चुका हूँ, मेहनत का सारा काम इंडियन आदिवासी करते हैं। हर घर में दो या तीन आदिवासी रहते हैं। गरीब से गरीब लोग भी एकाध आदिवासी को तो रख ही सकते हैं, क्योकि मजदूरी के रूप में खाने के

अलावा उन्हे पुरुष आदिवासी को महज मोटे कपड़े का एक छोटा टुकड़ा और पेटी देनी पडती है और स्त्री आदिवासी को जूते या मोजे के बिना एक मोटे-झोटे कपड़े की गाउन भर देनी पडती है।

मोटेरी मे ऐसे अनेक अग्रेज (अग्रेजी भाषा बोलने वाले सभी लोगों को यहा अंग्रेज या "इंगलिस" कहा जाता है) और अमरीकी हैं जिन्होने कैलिफोर्निया की लडकियो से विवाह कर लिये हैं, कैथलिक चर्च को स्वीकार कर लिया है और बडी-बडी जमीन-जायदाद वगैरह के मालिक बन बैठे हैं। कैलिफोर्निया के लोगो के मुकाबले इनमे परिश्रम, मितव्ययिता और उद्यम की अधिकता होने के कारण जल्दी ही इन लोगो ने सारे व्यापार पर अधिकार जमा लिया है। इनमे से अधिकाश लोग दूकानदार हैं और हमारे जहाज से थोक माल खरीद कर उसकी फुटकर ब्रिक्री करते हैं। इसके अलावा वे देश के अदर वाले इलाकों से नकद पैसे देकर खालें भी खरीदवाते हैं और फिर उनका विनिमय हमारे जहाज से कर लेते हैं।

समुद्र तट पर स्थित प्रत्येक कस्बे मे इस तरह का व्यापार विदेशियो के हाथ में है। मुझे याद पडता है कि मैंने केवल दो दूकाने ऐसी देखी थी जिनके मालिक कैलिफोर्निया के ही निवासी थे। कुदरती तौर पर यहा के लोग विदेशियो को सदेह की दृष्टि से देखते हैं और अगर वे अच्छे कैथोलिक नही बन जाते, उनकी लडकियो से शादी करके अपने बच्चो का पालन-पोषण कैथोलिक और स्पेनी बच्चो की तरह नहीं करते, और उन्हे अग्रेजी पढाते हैं तो उन्हे इन कस्बो में टिकने नही दिया जाता। हा अगर विदेशी ये सब काम करते हैं तो वे शक करना बद कर देते है और उस दशा मे ये विदेशी लोकप्रिय और अग्रणी नागरिक भी हो जाते है। मोटेरी और सैंटा बारबरा —दोनो कस्बो के प्रमुख अल्काल्दी जन्मत अमरीकी थे।

मुझे ऐसा लगा जैसे मोटेरी के आदमी हर दम घोडे के पीठ पर सवार रहते हो। यहाँ घोडो की इतनी ही बहुतायत थी जितनी जुआन फर्नांडीज मे कुत्तो और चूजो की थी। घोडो को बाधने के लिए अस्तबल नही हैं बल्कि उन्हे जहाँ चाहे वहा चरने के लिए आजाद छोड दिया जाता है। घोडो को दागी कर दिया जाता है और उनकी गरदनो मे चमडे की लंबी पट्टिया बाध दी जाती हैं जिन्हे "लसो" कहा जाता है और जो जमीन पर घिसटती चलती हैं। इन पट्टियो की मदद से घोडो को बडी आसानी से पकडा जा सकता है। पुरुष अक्सर सुबह के समय किसी घोडे को पकड लेते हैं और उस पर जीन और लगाम कस देते हैं। दिन भर वे उसकी

सवारी करते हैं और रात को छोड देते हैं और फिर अगले दिन कोई और घोडा पकड लेते हैं। जब वे लबे सफर पर निकलते हैं तो पहले एक घोडा लेते हैं, कुछ दूर चलने के बाद वे किसी दूसरे घोडे को पकड कर उस पर जीन और लगाम कस कर उसकी सवारी करते हैं, और फिर आगे चलकर उसे भी छोड देते हैं और तीसरा घोडा पकड लेते हैं। इस तरह पूरे सफर में वे अनेक बार अपना घोडा बदलते हैं।

इतने अच्छे घुडसवार दुनिया में शायद ही कहीं हो। यहा के लोग चार-पाच वर्ष की उम्र मे ही घुडसवारी करने लगते हैं जबकि उनके नन्हे पाव घोडे के पुट्ठे तक भी मुश्किल से पहुँच पाते हैं, और ऐसा लगता है जैसे उसके बराबर ऊचा कद होने तक ये उसमे उतरते ही नही। रकाब का अगला हिस्सा बंद होता है ताकि जगल मे सवारी करते समय उलझे नही; जीनें बडी और भारी होती हैं जिन्हे घोडे पर पूरी तरह कस दिया जाता है, उनके अगले हिस्से मे बडी-बडी घुन्डियाँ होती हैं जिनमे (प्रयोग न होने की अवस्था मे) लासो को बाँध दिया जाता है। बिना घोडे के वे एक-दूसरे के घर तक नही आ-जा सकते क्योकि आम तौर पर उनकी छोटी झोपडियो के बाहर वाले खंभे से कई घोडे बधे रहते हैं। जब उन्हे अपनी फुर्ती दिखानी होती है तो वे उस पर चढने मे रकाब पर पाव नही रखते बल्कि घोडे को चाबुक लगाते हैं और जब वह चल पडता है तो उछल कर सीधे जीन पर जम जाते हैं और एड लगाते हुए उसे हवा की रफ्तार से भगा ले जाते हैं। उनकी ऐडे बडी जालिम होती हैं। हर एड में एक इच लम्बी चार-पाच जग लगी काँटेदार फिरकी लगी रहती हैं। घोडो की कोखें इनके कारण अक्सर घायल रहती हैं। मैंने एकाध बार देखा कि लोग साडो के पीछे अपने घोडे दौडाते हुए आते थे और घोडो के पिछले पैर खून मे लथपथ हो जाते थे।

वे अक्सर अपनी घुडसवारी, घुडदौड मे और घोडो पर चढकर साड पकडने आदि करतबो में प्रदर्शित करते रहते थे, लेकिन चूंकि हमने कोई छुट्टी तौर पर नही बितायी इसलिए हमे यह कुछ देखने को नही मिल सका। मोटेरी मुर्गी की लडाई, सब तरह के जुए के खेलो, नाच-गानो और हर तरह के खेल-तमाशो और बदमाशो का एक बडा अड्डा है। जानवर पकडने वाले और शिकारी लोग राकी पर्वतो से उतर कर कभी कभी यहा आ जाते हैं। इन लोगो के पास कीमती खालें और फर होते हैं, और इन्हे मनोरंजन और खुल कर खेलने का हर मौका दिया

जाता है, और अंत मे ये अपना समय तथा धन गंवा कर कंगाल बन कर लौट जाते हैं।

मोटेरी के बडा कस्बा बनने मे सबसे बडी बाधा यहाँ के लगों का चरित्र ही है। यहाँ की मिट्टी निहायत जरखेज हैं; जलवायु श्रेष्टतम हैं, पानी की बहुतायत है और कस्बे की स्थिति बेहद सुन्दर है। बन्दरगाह भी बहुत अच्छा है क्योकि इसमें केवल उत्तर की ओर से चलने वाली हवाए ही खतरा पैदा कर सकती है, और यद्यपि तल-पकड सर्वश्रेष्ठ कोटि की नही है फिर भी मुझे पता चला कि यहा केवल एक ही जहाज डूबा है। यह जहाज मेक्सिको का दो मस्तूलो वाला जहाज था, और हमारे आने से कुछ महीनो पहले तूफान उसे किनारे की ओर खीच ले गया था। तूफान ने इसे पूरी तरह नष्ट कर दिया। एक को छोड कर उसमें सवार सभी मल्लाह और अफसर डूब गये। फिर भी, यह दुर्घटना कप्तान की लापरवाही या मूर्खता के कारण हुई। उस समय बोस्टन का जहाज "लॅगोडा" भी वही था और बुद्धिमानी से काम लेने के कारण वह झंझा उसका कुछ भी न बिगाड सकी थी।

हमारे जहाज के अलावा बन्दरगाह मे केवल नन्हा "लोरियट" था। मैं अक्सर उस पर जाया करता था और उसके सैंडविच द्वीप के मल्लाहो से मेरा खासा परिचय हो गया था। उनमे से एक मल्लाह थोडी-बहुत अंग्रेजी बोल लेता था और उससे मुझे उनके बारे में काफी जानकारी मिली। वे सब सुगठित शरीर वाले फुर्तीले लोग थे, उनकी आँखें काली थी, चेहरे से बुद्धिमत्ता प्रकट होत थी, रंग कुछ काला-पन लिये हुए भूरा था, बल्कि मैं तो उन्हे ताम्रवर्णी कहना ज्यादा पसन्द करूंगा, बाल काले और मोटे थे, लेकिन नीग्रो लोगो की तरह ऊन जैसे नही थे। वे प्राय हमेशा बोलते ही रहते थे, और जहाज के अगवाड में हमेशा कच-कच मची रहती थी।

उनकी भाषा में गले का प्रयोग बहुत अधिक होता है और पहली बार सुनने मे अच्छी नही लगती, लेकिन धीरे-धीरे वह इतनी बुरी नही लगती, और कहा जाता है कि उसमें भाव-प्रकाशन की काफी क्षमता है। वे संकेतो की काफी सहायता लेते हैं और बडे जोश खरोश से दुनिया-भर की बातें करने लगते हैं। पानी के तो उन्हे कछुए ही समझो, इसलिए वे नाव खेने में बडे कुशल माने जाते हैं। यही वजह है कि कैलिफर्निया के तट पर ये लोग इतनी बडी संख्या में पाये जाते

हैं। भग्नोर्मि मे नौचालन करने मे वे विशेष सिद्धहस्त होते हैं। वे रस्से-रस्सियों को ठीक-ठाक करने में भी तेज और फुर्तीले माने जाते है और गर्मियो में काम अच्छी तरह करते हैं, लेकिन जो लोग उनके साथ केप हार्न के प्रदेशो में और ऊँचे अक्षांशो मे गये हैं उनका कहना है कि जाडो के मौसम के लिए वे बेकार हैं। उनकी पोशाक लगभग हमारे मल्लाहो जैसी ही होती है। इन द्वीपवासियो के अलावा इस जहाज में दो अग्रेज मल्लाह भी थे जो द्वीपवासी मल्लाहो के ऊपर बौसुन का काम करते थे और रस्सियो की सज्जा आदि का निरीक्षण करते थे।

उनमें से एक को मैं पक्के अग्रेज नाविक के सर्वश्रेष्ठ उदाहरण के रूप में हमेशा याद रखूंगा। वह लड़कपन से ही जहाज पर काम करने लगा था। अन्य सभी अंग्रेज नाविको की तरह सात साल तक वह सीखतर रहा। उस समय उसकी उम्र चौबीस-पच्चीस के आस-पास रही होगी। वह लम्बा था लेकिन इस बात का पता तभी चलता था जब वह दूसरो के पास खडा होता था क्योकि उसके कधे और सीना इतना चौडा था कि वह मझोले मे कुछ ही ऊंचे कद का दिखायी पडता था। उसकी छाती जितनी चौडी थी उतनी ही गहरी, भुजाए हैरावलीम की तरह थी; और उसके हाथ "मल्लाह की मुट्ठी—उसका हर बाल रस्सी का सूत होता है," इसके अलावा उस जैसी प्यारी मुस्कान मैंने कभी नही देखी। उसके गाल सुन्दर भूरे रग के थे, दांत बेहद सफेद थे, और बाल काले स्याह और घुन्घराले थे और पूरे सिर पर फैले हुए थे। उसका माथा चौडा और सुन्दर था; उसकी आखो में इतनी चमक थी कि वह उन्हे हीरो के भाव किसी डचेज़ (ड्यूक की पत्नी) को बेच सकता था। उसकी आंखो का रग आयरलैंड के उस बहुरगी सुअर की तरह था जिसके रग गिनने से पहले ही बदल जाते हैं, स्थिति और प्रकाश में लेशमात्र परिवर्तन होने पर उसकी आखो मे एक नयी रगत आ जाती थी, लेकिन प्राय: उनका रंग काला या काला-सा रहता था।

सिर के पिछले हिस्से पर वह तिरपाल का बना वार्निश किया हुआ टोप पहनता था; उसके बालो के बड़े गुच्छे आखो तक लटके रहते थे; वह 'मोटे कपड़े की सफेद पतलून और कमीज पहनता था, उसकी जाकेट का रग अक्सर नीला रहता था और काला रुमाल गरदन में लिपटा रहता था; वह पुरुष के सौंदर्य का एक उत्तम उदाहरण था। अपनी चौडी छाती पर उसने "विदाई के क्षण" गुदवा रखा था, एक जहाज विदा होने वाला था, तट पर एक बेंच पडी थी, और एक युवती

व उसका नाविक प्रेमी एक दूसरे से जुदा हो रहे थे। नीचे उसके नाम के छोटे दस्तखत थे और दो और अक्षर थे जिनका अर्थ मेरे मुकाबले वह ज्यादा अच्छी तरह समझता था। गुदाई बडी सुन्दर थी और हावर मे एक आदमी ने यह गुदाई की थी जिसका पेशा ही मल्लाहो के शरीर पर गोदना था। अपनी एक स्वस्थ भुजा पर उसने सलीब पर ईसा का चित्र गुदवाया था और दूसरी पर "फसा हुआ लगर" का।

उसे पढने का बडा शौक था, और हमारे पास अगवाड मे जितनी किताबें थी वे हमने उसे दे दी, जिन्हें पढने के बाद उसने हमें वापस कर दिया। उसे काफी जानकारी थी और उसके कप्तान का कहना था कि वह एक निपुण मल्लाह है और मौसम अच्छा हो या खराब—किसी भी जहाज के लिए अपने वजन के बराबर सोने मे भी सस्ता है। उसकी शक्ति अपरिमित रही होगी और उसके पास गिद्ध की दृष्टि थी।

यह शायद कुछ अजीब-सा लगे कि कोई आदमी उस अजनबी और गैर मल्लाह के बारे में इतनी बारीकी से बताये जिससे दुबारा मिलने की भी उम्मीद न हो, और जिसके बारे मे जानने की किसी को परवाह न हो, लेकिन यह बात ही कुछ ऐसी है। कुछ लोग ऐसे होते हैं जो अविस्मरणीय परिस्थिति मे न मिलने पर भी, किसी ज्ञात या अज्ञात कारण से, हमसे भुलाये नही जाते। उसका नाम बिल जैक्सन था; और मैं समझता हूँ कि जो लोग सयोगवश मेरे परिचित हो गये हैं उनमें शायद ही कोई ऐसा हो जिससे मिलने मे मुझे इतनी अधिक खुशी हो जितनी जेक्सन से मिलने पर होगी। अपने सपर्क मे आने वाले हर आदमी के लिए वह एक सुन्दर और मस्त आदमी तथा जहाज पर एक अच्छा साथी साबित होगा।

मोटेरी में इतवार फिर से आया लेकिन पहले की तरह ही हमें छुट्टी इस बार भी नही मिली। उस दिन किनारे के लोग पहले के मुकाबले कही बडी मात्रा में सज-धज कर जहाज पर आ गये और हम सारे दिन नाव खेने और नया सामान खोलने मे इस कदर व्यस्त रहे कि हमे खाने का समय भी मुश्किल से मिल सका। हमारा भूतपूर्व दूसरा मालिम छुट्टी पाने के लिए कृतसकल्प था। उसने लाँग कोट और काला टोप पहना, जूतो पर पालिश किया और जहाज के पिछले भाग में कप्तान से तीर पर जाने की आज्ञा मागने गया।

इससे ज्यादा अविवेकपूर्ण काम और क्या हो सकता था; क्योकि उसे मालूम

था कि छुट्टी मिलनी असम्भव है, और इसके अलावा मल्लाह को छुट्टी मिलने की चाहे सोलहो आने उम्मीद क्यो न हो, फिर भी उसे पिछले भाग मे हमेशा काम के कपडो मे ही जाना चाहिए ताकि उससे यह प्रकट हो कि छुट्टी मिलने या न मिलने का उन्हे कोई निश्चय नही है । छुट्टी मिलने के बाद उसे नहाना-धोना, कपड़े पहनना और दाढी बनानी चाहिए । लेकिन यह गरीब आदमी बडी जल्दी गरम हो उठता था और गलत काम का विरोध करने को तैयार रहता था । हमने उसे पिछले हिस्से मे जाता देखा, और हमे पूरी तरह मालूम था कि उसका स्वागत किस प्रकार होगा ।

कप्तान सुबह का सिगार पीता हुआ छतरी मे टहल रहा था और फास्टर कुछ दूर जाकर इस इन्तजार मे खडा हो गया कि कप्तान की नजर उस पर पडे । कप्तान ने दो-एक चक्कर लगाये और तब सीधा चलकर उसके पास आया और उसे सर से पैर तक घूर कर देखा, और तब अपनी तर्जनी उठा कर नीची आवाज में एकाध शब्द कहा जो हम नही सुन सके लेकिन उन शब्दो का फोस्टर पर जादू की तरह असर हुआ । वह आगे बढ कर अगवाड मे पहुँचा और एक मिनट बाद अपने सादा कपडो में दिखायी दिया और चुपचाप अपने काम पर फिर से जुट गया । कप्तान ने उससे क्या कहा यह हम उससे कभी नही पूछ पाये, लेकिन निश्चय ही उसने कुछ ऐसा कहा था जिससे हमारे भूतपूर्व दूसरे मालिम का बहिरंग और अन्तरंग इतना बदल गया था कि हमें आश्चर्य हुआ ।

* * *

अध्याय—१४

कुछ दिन बाद, जब हमने देखा कि व्यापार कुछ मन्दा हो गया है, तो हमने लंगर उठा दिया । हमने अपने जहाज पर शिखरपाल तान लिये और चलने के पहले एक तोप दागी जिसके जवाब में दुर्ग से एक तोप दागी गयी । अब हम किनारे-किनारे चल रहे थे और वह छोटा-सा कस्बा मोंटेरी पीछे छूट चला था । हमारा इरादा सैंटा बारबरा पहुँचने का था और चूंकि हम अनुवात दिशा में चल रहे थे इसलिए हवा खूब चल रही थी । पाइंट पाइनोज पार करने के बाद हमने नीचे और ऊपर के दुपेंचा पाल तान लिये और हम आठ-नौ नौट की गति से आगे बढे । हमें आशा थी कि आते समय जिस फासले को तय करने में हमें तीन सप्ताह

लग गये थे उसे इस बार हम चौबीस घंटो मे ही पार कर लेंगे। हमने हवाई रफ्तार से पाइंट कस्पेप्शन को पार किया। हवा इतनी तेज चल रही थी कि अगर हम दूसरे रास्ते से जा रहे होते तो हमे ऐसा लगता जैसे झंझा चल रही हो। जब हम सैंटा बारबरा के समीपवर्ती द्वीपो पर पहुचे तो हवा कुछ मन्द पड गयी लेकिन फिर भी मौटेरी से चलने के बाद ३० घंटो के अदर ही हमने फिर अपनी पुरानी जगह पर ही लगर डाल लिया।

यहा हर चीज पहले-जैसी ही सुन्दर थी—विशाल पोतहीन खाडी, गरजती और सागर-तट से टकराती भग्नोर्मि, सफेद मिशन; अघेरा कस्बा और ऊचे वृक्षहीन पर्वत। यहा पहुँचते ही हमने जहाज पर दक्षिणी-पूर्वी झंझा के समय समुद्र की ओर भाग खडे होने की पूरी तैयारी कर ली।

हम यहा लगभग पद्रह दिन रहे। जब भग्नोर्मि खास ऊंची नही होती थी तब हम सामान किनारे पर पहुचा आते थे और किनारे से खालें जहाज पर ले आते थे; लेकिन मोटेरी के मुकाबले यहा आधा व्यापार भी नही था। सच तो यह है कि जहा तक हमारा ताल्लुक है हम तो यही समझते थे कि वह कस्बा पहाडो के बीच में कही होगा। हमारे जहाज ने जहा लगर डाला था वह जगह समुद्र-तट से तीन मील थी और कस्बा समुद्र-तट से भी एक मील परे था इसलिए हम उसे बहुत कम, या नही के बराबर, ही देख पाये।

कभी-कभी हम कुछ सामान किनारे पर उतारते थे। वहा से उस सामान को इडियन लोग अपनी भोडी, बडी बैलगाडियो मे लाद कर ले जाते थे। इन गाडियों में जुआ बैल की गरदन के ऊपर रहता था और पहिए छोटे और भारी-भरकम होते थे। कुछ खालें कस्बे से किनारे पर लायी गयी थी और हम उन्हे कैलिफोर्निया स्टाइल मे जहाज पर ले आये। अब हमे खालें ढोने का अभ्यास हो गया था और हम थोडे से पुख्ता भी हो चले थे, क्योकि कोई आदमी कितना ही कसीला क्यो न हो इस काम के लिए उसे थोडा और पुख्ता होना पडता था।

खालें सुखा कर ही लायी जाती हैं, वर्ना उन्हे खरीदा नही जाता। जब जानवरो की खालें उतारी जाती हैं तब उनके सिरो पर छेद होते हैं जिनमे खूंटिया ठोक कर उन्हे सुखाया जाता है ताकि वे खुली धूप मे सूख भी जायें और सिकुडें भी नही। सूखने के बाद उन्हे लबाई से मोड कर दुहरा किया जाता है, जिसमें आम तौर पर बालो वाला हिस्सा अदर की तरफ रहता है। और फिर उन्हे खच्चरो

था गाडियों में लाद कर पूर्ण ज्वार सीमा के बाहर उनका ढेर लगा दिया जाता था, और तब हम उन्हे एक-एक, या छोटी हो तो दो-दो, करके सिर पर लादते थे और उन्हें नाव मे फेंक देते थे जो आम तौर पर भग्नोर्मि के बाहर किसी छोटी बाड या नाव-लगर के सहारे खडी कर दी जाती थी।

हम सब अपने सिरो पर मोटी स्काटिश टोपिया पहने रहते थे जो मुलायम भी रहती थी और सर का बचाव भी करती थी, क्योकि हम जल्दी ही समझ गये थे कि पहली बार देखने मे यह कैसा ही लगे या ढोने वाला आदमी कैसा ही महसूस करे, लेकिन कैलिफोर्निया मे इस "कपाल कर्म" के बिना गुजारा नही हो सकता। इसका कारण यह है कि एक तो खालो को सिर पर ही रखना इसलिए जरूरी है कि ऊची लहरे उन्हे भिगो न दें, दूसरे खालें इतनी बडी और भारी होती थीं, और इतनी सख्त होती थी जैसे तख्ता, कि उन्हे सिर पर ढोने में ही सबसे अधिक सहूलियत रहती थी। कुछ मल्लाहो ने, यह कहकर कि सर पर ढुलाई तो वेस्ट इडीज के नीग्रो लोगो की तरह लगती है, कुछ और तरीके आजमाये लेकिन अन्त मे हार कर उन्हे यही तरीका अपनाना पडा। उन्हे उठा कर सिर पर रखना एक बडी कला है। हमे खालो को जमीन पर से उठाना पडता था और चूंकि उनमें से अधिकाश बहुत भारी होती थी और इतनी चौडी होती थी कि दोनों हाथो में मुश्किल से समा पाती थी और इसके अलावा हवा उन्हे आसानी से उडा ले जाती थी, इसलिए उन्हे ढोने मे कठिनाई का सामना करना पडता था।

इस धरा-उठाई के सिलसिले मे कई बार मेरी हंसी उडी है और कई बार मैंने दूसरो की हसी उडाई है। कई बार रेत पर से किसी बडी खाल को उठा कर सिर पर रखते समय लोग खुद रेत मे गिर पडते थे और कई बार हवा के झोके में उडती हुई खाल को रोकने के प्रयत्न मे वे खुद कुछ दूर घिसटे चले जाते थे। कप्तान ने यह कहकर हमारा काम और मुश्किल कर दिया कि "कैलिफोर्निया फैशन" यह है कि एक बार में दो खाले सिर पर उठायी जाये ; और चूंकि एक तो उसने इस बात पर जोर दिया, दूसरे हम दूसरे जहाजो से पिछडना नही चाहते थे, इसलिए पहले कुछ महीनो तक हमने एक बार मे दो खाले ही ढोयी; लेकिन बाद मे हमारा साबका कुछ और खाले ढोने वालो से पडा तो हमने देखा कि वे एक बार मे एक ही खाल ढोते हैं, लिहाजा हमने भी एक ही खाल ढोना शुरू किया और अपने काम को किसी कदर हल्का किया।

जब हमें सिर पर बोझ उठाने की आदत हो गयी और हमने "खाल को उछालते चलने" का कैलिफोर्निया स्टाइल सीख लिया तो थोडी ही देर में दो-तीन सौ खालें ढो सकना हमारे लिए आसान हो गया, लेकिन यह पानी मे पैर देने का काम था और अगर सागर-तट पथरीला होता था तो हमारे पावो के लिए और नुकसान-देह रहता था, क्योकि हम यह काम हमेशा नगे पॉव इसलिए करते थे कि खारे पानी में मुतवातर भीगने से अच्छे से अच्छे जूतो का नष्ट हो जाना निश्चित है। इसके अलावा हमे तीन मील तक भरी हुई नाव को भी खेना पडता था जिसमें अक्सर दो घन्टे लग जाते थे।

अब हम बन्दरगाह के कामो के अभ्यस्त हो चले थे और चूंकि यह ड्यूटी समुद्र की ड्यूटी से बहुत कुछ अलग तरह की थी इसलिए इसके बारे मे कुछ जान लेना अच्छा रहेगा। सबसे पहले, सुबह होते ही सब लोगो को काम पर जुट जाने का आदेश दिया जाता है, खास तौर पर अगर दिन छोटे होते हैं तब तो पौ फटने से पहले ही काम शुरू हो जाता है। रसोइया रसोई में आग तैयार कर लेता है; स्टीवार्ट केबिन मे अपना काम शुरू कर देते हैं। मालिम अफसर बराबर डेक पर मौजूद रहता है लेकिन वह काम मे कोई हिस्सा नही बँटाता और काम का सारा भार दूसरे मालिम पर आ पडता है जो दूसरे मल्लाहो की तरह अपनी पतलून ऊपर चढाए डेक पर दौड-धूप करता रहता है।

धुलाई, सफाई और पुंछाई के काम में आठ बज जाते हैं, तब सब लोगो को नाश्ता दिया जाता है। नाश्ते के लिए आधे घन्टे का समय नियत रहता है, इसके बाद नावें नीचे उतारी जाती हैं और जहाज के पिछले भाग से बाध दी जाती हैं, और मल्लाह लोग अपने-अपने काम पर जुट जाते हैं। यह काम अनेक प्रकार का होता है और उस समय की परिस्थिति पर निर्भर करता है।

छोटी नावो मे किनारे पर जाने का सिलसिला तो चलता ही रहता है; और अगर भारी सामान किनारे पर पहुँचाना होता है, या खालें किनारे तक लानी होती हैं तो सब मल्लाह एक अफसर के साथ दीर्घ नौका मे बैठ कर किनारे पर जाते हैं। इसके अलावा फलके मे काफी काम रहता है : कभी सामान खोलना होता है तो कभी सामान इधर-उधर रखना पडता है, कभी खालो के लिए जगह बनानी होती है तो कभी जहाज की टीम-टाम मे लगे रहना पडता है। इसके अलावा रस्सियो वगैरह को ठीक करने का रोज का काम तो होता ही है। इस काम

का कुछ हिस्सा ऐसा होता है जो तभी किया जा सकता है जब जहाज बन्दरगाह में खडा हो, इसके अलावा हर चीज चुस्त-दुरुस्त रखी जाती है, बटा सन तैयार किया जाता है और दूसरे कई काम किये जाते हैं।

समुद्र और बन्दरगाह की ड्यूटी मे सबसे बडा भेद समय के विभाजन का है। समुद्र मे एक पहरा डेक पर रहता है और एक नीचे, लेकिन बन्दरगाह मे सुबह से शाम तक, खाने का समय निकाल कर, सभी लोगो को काम पर लगे रहना पडता है; और रात को लंगर पहरा लगाया जाता है जिसमें सिर्फ दो आदमी रहते हैं, और इसमे सभी मल्लाह अपनी-अपनी बारी से पहरा देते हैं। डिनर के लिए एक घन्टे का समय नियत रहता है और शाम को डेक साफ किये जाते हैं, नावें जहाज पर चढा ली जाती हैं, सपर का आर्डर दे दिया जाता है, और आठ बजे बिनैकल के अलावा, सब जगह रोशनी बुझा दी जाती है, और लगर पहरा बिठा दिया जाता है। इस तरह जब जहाज लगर पर खडा होता है तो मल्लाहों के पास रात के समय ज्यादा अवकाश होता है (उन्हे सिर्फ २ घन्टे के लगभग पहरा देना होता है) लेकिन दिन के समय उन्हें बिल्कुल फुर्सत नही मिलती, इसका नतीजा यह होता है कि पढने-लिखने या कपडों की मरम्मत वगैरह का काम इतवार तक मुल्तवी रखना पडता है। इतवार को अक्सर उन्हे छुट्टी दी जाती है। कुछ धार्मिक प्रवृत्ति के कप्तान अपने मल्लाहो को शनिवार को तीसरे पहर के बाद छुट्टी देते हैं ताकि वे उसी दिन अपने कपडे धोने और मरम्मत करने के काम से निबट जायें और पूरा इतवार अपनी मर्जी के मुताबिक बिता सकें। यह बात बडी अच्छी है और अक्सर इसी वजह से मल्लाह लोग धार्मिक प्रवृत्ति वाले जहाजो पर काम करना ज्यादा पसन्द करते हैं।

जब हमे इतवार को अपनी मर्जी से बिताने का मौका मिल जाता था तब तो हम बडे प्रसन्न रहते थे, लेकिन कई बार ऐसा नही होता था क्योकि अगर इतवार के दिन खालें आती थी (जब खालें दूर से लायी जाती थी तो अक्सर ऐसा होता था) तो हमें उसी दिन उन्हे जहाज पर लाना पडता था और इसमे आम तौर पर आधा दिन लग जाता था। इसके अलावा अब हम ताजे बीफ पर गुजारा कर रहे थे और हफ्ते मे एक बैल खा जाते थे, इसलिए हर इतवार को हमें एक बैल खरीद कर किनारे पर लाना पडता था, उसे वही काट कर उसका गोश्त साफ करके जहाज पर लाना पडता था। यह भी एक व्यवधान ही था। इसके अलावा

जब तीसरे पहर की समाप्ति पर खालें आ जाती थीं, तब हमारा आम दिन का काम बहुत अधिक और थकाने वाला हो जाता था क्योंकि इस हालत में हमें तारे निकलने तक भग्नोर्मि में काम करना पडता था, फिर हम नाव खे कर जहाज पर आते थे और सपर मिलने से पहले ही हमे खालो को यथास्थान रख देना पडता था।

इस खीझ और मशक्कत को हम समुद्री जीवन की आम खराबी समझ कर बर्दाश्त कर सकते थे—क्योंकि कोई भी मल्लाह, जो जवांमर्द हो, इस सबको बिना शिकायत किये झेल लेता है—लेकिन हमारी यात्रा की प्रकृति और अवधि पर अनिश्चय का जो पर्दा पडा था वह हमसे बर्दाश्त नही हो पा रहा था। हम एक छोटे से जहाज में, मुट्ठी भर मल्लाहों के बीच, दुनिया के दूसरे छोर पर एक अर्द्ध सभ्य समुद्र-तट पर पडे थे और हमें यहाँ अनिश्चित अवधि तक, कम से कम दो तीन वर्ष की अवधि तक, रहना था।

जब हम बोस्टन से चले थे तो हमारा ख्याल था कि यह यात्रा अट्ठारह महीने तक, या अधिक से अधिक दो साल तक, चलेगी; लेकिन समुद्र तट पर पहुँचने के बाद हमे व्यापार के बारे में कुछ और सुनने को मिला, तब हमें पता चला कि खालों की हर साल बढती हुई कमी के कारण हमें कम से कम एक साल तो अपना नौभार इकट्ठा करने में लग जायगा (इसमें घर से यहाँ तक पहुँचने और फिर वापस घर पहुँचने का समय शामिल नही है), और हमें अपने जहाज को मालिक फर्म के एक और बडे जहाज के लिए भी नौभार इकट्ठा करना है जोकि कुछ ही दिन बाद समुद्र-तट पर पहुँचने वाला है। हमने इस तरह की अफवाहे सुनी थी कि हमारे पीछे एक इस तरह का जहाज रवाना होगा। ये अफवाहे कप्तान और मालिम अफसर से शुरू हुई थी और शुरू में हमने इन्हे कोरी "गप्पें" समझा था। लेकिन एजेन्ट के लिए मालिको की तरफ से हम जो पत्र लाये थे उनसे इन बातो की पुष्टि हो गयी।

हमारी फर्म का एक और जहाज "कैलिफोर्निया" लगभग दो साल से समुद्र तट पर घूम रहा था। इन दिनो वह पूरा नौभार इकट्ठा कर चुका था और सैन डियागो बन्दरगाह में था, जहा से कुछ ही सप्ताह में उसे बोस्टन के लिए रवाना होना था। हमे आदेश था कि हम अधिक से अधिक खालें इकठ्ठा करके उन्हें सैन डियागो पर जमा करा दें जहा से फर्म का एक नया जहाज चालीस हजार खालें

भर कर घर के लिए रवाना हो जायगा। इसके बाद हमें नये सिरे से काम करना था और अपना नौभार इकट्ठा करना था।

वाकई हमें अपना भविष्य अंधकारमय लगता था। "कैलिफोर्निया" बीस महीनो से समुद्र तट पर घूम रहा था और उससे छोटा जहाज "लैगोडा", जिसे सिर्फ ३१-३२ हजार खाले ले जानी थी, अपना नौभार भरने के लिए दो साल से घूम रहा था, और हमे अपने बारह-पन्द्रह हजार खालों के नौभार के अलावा चालीस हजार खालें और भी इकट्ठी करनी थी, और खालो की दिन-ब-दिन कमी हुई जा रही थी। सबसे बडी बात तो यह थी कि यह नया जहाज जो अब तक हमारे लिए किसी भुतहे जहाज से छोटा हौआ नही था, अब भूत या हौआ नहीं रह गया था बल्कि वास्तविकता में बदल चुका था, यहा तक कि उसका नाम भी रख दिया गया था। कहा जाता था कि इस जहाज का नाम "एलर्ट" है। यह एक विख्यात जहाज था और हमारे बोस्टन से चलने के कुछ महीनो बाद वहां पहुँचने वाला था।

अब सन्देह की कोई गुंजाइश नही रह गयी थी और हम सब लोग हताश हो गये। कुछ लोगो ने कहा यह यात्रा तीन-चार साल तक चलेगी, कुछ वयोवृद्ध मल्लाहो ने कहा कि अब उन्हे बोस्टन देखना नसीब नही होगा और उनकी हड्डियाँ कैलिफोर्निया मे ही दफन की जायेंगी, और ऐसा लगा जैसे पूरी यात्रा पर एक बादल मंडरा रहा हो। इसके अलावा हम इतनी लम्बी यात्रा के लिए तैयार नही थे और मल्लाहो के कपडे व दूसरा जरूरी सामान वहाँ बेहद—बोस्टन से तीन या चार गुना—महंगा था।

यह सब-कुछ सभी मल्लाहों के लिए अहितकर था लेकिन मेरे लिए तो यह खास तौर पर अशुभ था क्योंकि मैने मल्लाही का पेशा सारी जिन्दगी के लिए नही चुना था, मेरा इरादा सिर्फ अठारह महीने या दो वर्ष के लिए ही मल्लाह बनने का था। तीन-चार सालो में तो मैं हर मानी में—दिमागी तौर पर और आदतो मे—पक्का मल्लाह हो जाऊगा, और मेरे साथी मुझसे इतने आगे निकल जायेंगे कि कालिज मे पढने और कोई अच्छा पेशा चुनने की बात सोचना ही मूर्खता होगा, और मैने सकल्प किया कि मन को भला लगे या बुरा मुझे एक नाविक अवश्य बनना चाहिए और मेरी चरम महत्वाकाँक्षा एक जहाज का कप्तान बनना ही होनी चाहिए।

यात्रा की लम्बी अवधि और तकलीफो व खतरो से भरी जिन्दगी के अलावा हम धरती के बिल्कुल दूसरे छोर पर थे, प्राय. निर्जन तट पर एक ऐसे देश मे थे जहा न कोई कानून था न सिद्धात, जहा मल्लाहो का एकमात्र निर्णायक उनका कप्तान था क्योकि वहाँ न अमरीकी कौसल था और न कोई अन्य व्यक्ति जिससे दाद-फरियाद की जा सके। यात्रा मे हमारी रुचि समाप्त हो गयी, हमे उस नौभार की कोई चिन्ता न रही जो हम सिर्फ दूसरो के लिए इकठ्ठा कर रहे थे; हम अपने कपडो में थेगडी लगाने लगे और हम ऐसा महसूस करने लगे जैसे हम ऐसी मंजिल पर पहुच गये हैं जहाँ किसी प्रकार के परिवर्तन की आशा नही है।

इस सब के अलावा, शायद, बहुत-कुछ इस प्रकार की परिस्थिति के परिणामस्वरूप ही, जहाज पर मुसीब्त मंडराती सी दिखाई दे रही थी। हमारा मालिम अफसर बडा सुयोग्य था, उससे अधिक ईमानदार, कायदे का पाबन्द और दयालु आदमी मैने जीवन मे कभी नही देखा था लेकिन वह इतना सज्जन था कि एक व्यापारी जहाज के मालिम अफसर के पद के उपयुक्त नही था। वह न तो मल्लाहों को बात-बात पर गाली ही दे सकता था और न उन्हे झव्वल से पीट ही सकता था। हमारी जैसी लम्बी यात्रा और हमारे जैसे कप्तान के साथ निभाव करने के लिए जिस दम-खम और जोश-खरोश की जरूरत है वह उसमे न था।

कप्तान टी—एक जाबाज और दमदार आदमी था। मल्लाहो की भाषा में कहे तो "उसके शरीर की एक भी हड्डी मरियल नही थी।" वह फौलाद और ह्वेल के हाड से बना था। वह ऐसा आदमी था जो काम खत्म होने से पहले न खुद सुस्ताता था और न किसी और को सुस्ताने देता था। मैं जितने दिन उसके साथ रहा उन दिनो मैने उसे कभी डेक पर बैठे नही देखा। वह बडा फुर्तीला और आगे बढ कर काम करने वाला था, अनुशासन के मामले मे वह बेहद कडा था। अपने अफसरो से भी वह इसी प्रकार की सख्ती की उम्मीद करता था।

मालिम अफसर को आगे बढ कर काम करने की इतनी आदत नही थी और वह मल्लाहो को खास तौर पर डाट-डपट कर नही रखता था इसलिए कप्तान उससे असन्तुष्ट था। उसे शक हो गया कि अनुशासन मे ढिलाई आ रही है और वह हर बात मे हस्तक्षेप करने लगा। उसने लगाम कस दी, और चूकि अफसरो के बीच होने वाले झगडो में मल्लाह अक्सर उसी का साथ देते हैं जो उनसे अच्छा व्यवहार करे, इसलिए कप्तान मल्लाहो पर भी शक करने लगा। उसे लगा

जैसे हर बात मे कोई न कोई गलती है, जैसे सब लोग बेगार सी टालते हैं, और इस बीमारी का इलाज सख्ती से करने की कोशिश में उसने हालात और भी बिगाड़ दिये ।

हम हर तरह से दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति मे पड गये थे । कप्तान, अफसर और मल्लाह एक-दूसरे के सवथा अननुकूल थे, और हर स्थिति एक दुधारी तलवार की तरह थी जो दोनो ओर काट करती थी । यात्रा की जिस बढती अवधि से हम असंतुष्ट हो उठे थे उसी ने कप्तान को व्यवस्था और कठोर अनुशासन बनाये रखने मे प्रवृत्त किया, और इस प्रदेश की जिस परिस्थिति के कारण हम यह महसूस करने को बाध्य हुए कि यहा ऐसी कोई जगह नही हैं जहा हमारी दीद-शुनीद हो सके बल्कि हम एक कठोर कप्तान की दया पर निर्भर हैं उसी ने कप्तान को यह फैसला करने पर मजबूर किया कि जो कुछ करना है वह खुद करेगा ।

कठोरता से असन्तोष बढा और असन्तोष ने कठोरता को और अधिक उकसाया । और फिर दुर्व्यवहार और असन्तोष से कोई समस्या सुलझती नही है । मैंने अनेक बार मल्लाहो को यह कहते सुना है कि अगर उनसे उदारतापूर्ण व्यवहार किया जाय और उन्हे यह महसूस हो कि हालात को बेहतर बनाने की कोशिश को जा रही है तो वे यात्रा की अवधि और कष्टों को नजर अन्दाज कर सकते हैं ।

हम महसूस करते थे कि हमारे हालात की माँग है कि हमारे अधिकारी लोग हमें समय-समय पर कुछ छूटें देते रहे और हमारे जुए को कुछ हल्का करें । लेकिन उधर से जो नीति अपनायी गयी वह इसके ठीक विपरीत थी । जिन दिनो हम बन्दरगाह में थे उन दिनो हमें दिन भर काम पर लगाये रखा जाता था, रात को एक बार पहरा भी देना पडता था, इसलिए नीचे आते ही हम सो जाते थे । इस प्रकार पढने—या पढने से भी जरूरी कपडो की धुलाई या मरम्मत आदि कामो—के लिए हमे जरा भी समय नही मिलता था ।

और जब हम समुद्र में होकर एक बन्दरगाह से दूसरे को जाते थे तब प्रचलित प्रथा के अनुसार "देखते रहो" की सुविधा न देकर हमसे डेक पर काम लिया जाता था, चाहे वर्षा हो या धूप, और जब इतनी बारिश होती थी कि और कुछ काम नही हो सकता था तो हमें ओकम तैयार करना पडता था । सब लोगों को "ऊपर आकर बारिश देखो" का आदेश देकर बुलाया जाता था और डेक

पर चुपचाप घन्टो भीगते रहने के लिए इतनी दूरी पर खड़ा कर दिया जाता था कि एक-दूसरे से बात न कर सकें। हम तिरपाल और मोमजामे की जाकेट पहने रहते थे और पुरानी रस्सी के टुकडे करके ओकम तैयार करते रहते थे।

जब जहाज दुहरा लंगर डाले बन्दरगाह में खड़ा रहता था और डेक पर देख भाल के लिए एक आदमी से ज्यादा की जरूरत नही होती थी, तब भी हम सब को अक्सर दिन भर काम करना पडता था। नाविको की भाषा में इसे "कचूमर निकालना" या "उनके पुराने लोहे की जंग छुडाना" कहते हैं।

जब हमारा जहाज सैंटा बारबरा में था तब हमें एक और दक्षिणी पूर्वी झंझा का सामना करना पडा था, और पहली झंझा की तरह ही यह भी रात में आयी: दक्षिण की ओर से एक विशाल काला बादल उमडता हुआ आया, उसने पर्वत को ढक लिया और कस्बे पर मडराने लगा और ऐसा लगा, जैसे वह घरो की छतो पर बैठ गया हो।

हमने लगर उठा दिया, पाइन्ट से आगे निकल गये और निरन्तर वर्षा, उत्तुंग लहरो और हवाओ के बीच चार दिन तक समुद्र पर भटकते रहे। हमने सोचा कि यदि इस प्रदेश मे दूसरी ऋतुओ मे वर्षा नही होती तो इसमें अचरज की कोई बात नही है, क्योकि इन चार ही दिनो मे वहा इतनी बारिश हो गयी थी जितनी आम तौर पर पूरी ग्रीष्म ऋतु मे होती है।

पाचवें दिन स्नान घर मे लगे फुहारे की चार घन्टो तक होने वाली रिम-झिम की तरह कुछ घन्टो तक तो बारिश हुई, उसके बाद, जैसा कि आम तौर पर होता है, मौसम साफ हो गया। तब हमे पता चला कि हम लंगरगाह से लग-भग दस लीग दूर निकल आये हैं। हल्की सम्मुख हवाए चल रही थी इसलिए हम छठे दिन अपनी जगह वापस आ सके। फिर से लगर डालने के बाद हम अनुवात दिशा में फिर से चलने की तैयारी मे लग गये। हम सीधे सैन डियागो पहुँचना चाहते थे ताकि "कॅलिफोर्निया" के बोस्टन पहुँचने के पूर्व ही हम उससे मिल सकें, लेकिन हमे बिचले बन्दरगाह सैन पेड्रो पर रुकने का आदेश था, और चूंकि हमें वहा एकाध हफ्ते रुकना था जब कि "कैलिफोर्निया" कुछ ही दिन में रवाना होने वाला था, इसलिए हम इस अवसर से वचित रह गये।

रवाना होने से कुछ ही पहले कप्तान एक छोटे, लाल बालो और गोल कंधो वाले बेहुदा से लगने वाले एक आदमी को अपने साथ लाया, वह एक आँख से

काना था और दूसरी से भेंगा; कप्तान ने हमें बताया, कि उसका नाम मि० रसेल है और वह हमारा अफसर है। यह हमें बडा नागवार खातिर हुआ। आते समय हम अपना एक श्रेष्ठ नाविक खो चुके थे और दूसरे को हमारे बीच से हटा कर क्लर्क बना दिया गया था, और इस प्रकार हम दुर्बल और न्यून हो गये थे लेकिन हमारे काम को आसान बनाने के लिए कुछ मल्लाहो को रखने के बजाय कप्तान ने जासूसी करने और हुक्म चलाने के लिए हमारे ऊपर एक और अफसर ला बिठाया था। अब जहाज पर चार अफसर थे जब कि अगवाड में मल्लाहो की संख्या कुल छ. रह गयी थी। हमें आराम पहुँचाने का कप्तान ने यह अनोखा तरीका निकाला था।

सैंटा बारबरा छोडने के बाद हम किनारे-किनारे चले। वह प्रांत समतल या कम ऊचा नीचा था और उसका अधिकाश रेतीला और वृक्षहीन था, अन्त में एक ऊँचे रेतीले स्थान का चक्कर लगाते हुए हम एक स्थान पर पहुँचे जो समुद्र-तट से लगभग साढे तीन मील था, हमने यही लगर डाल दिया। हमे यह ऐसा लगा जैसे किसी जहाज को जाना हो हैलिफाक्स और वह लगर डाले ग्रैंड बैंक्स पर; क्योकि किनारा निचला होने के कारण उससे कही दूर लग रहा था जितना वह वास्तव में था, और हमने सोचा कि अगर हम जहाज को सैंटा बारबरा में ही रहने देते और खालें लेने के लिए अपनी नाव भेज देते तब भी कुछ बुरा न रहता।

जमीन दूर तक मटियाली थी और जहा तक नजर जाती थी उस पर कहीं पेड क्या झाडिया तक नही दिखायी पडती थी, और कस्बे का तो कोई नामो-निशान तक नही था—एक घर तक दिखायी नही दे रहा था। लगर डालने के लिए यह जगह क्यो चुनी गयी—इसके बारे में हम कुछ नही समझ पाये। लगर डालने के तुरन्त बाद ही हमने दक्षिणी-पूर्वी झझाओ से बचाव की सारी जरूरी तैयारी कर ली, और यह उचित ही था, क्योकि उत्तरी पश्चिमी हवाओ के अलावा सभी ओर से चलने वाली वे सब हवाएँ हम तक पहुँच सकती थी जो उस समतल और एक लीग पानी की रेंज वाले प्रदेश मे चल सकती थी। जैसे ही जहाज पर सब ठीक-ठाक हो गया वैसे ही नाव उतारी गयी और हम उसमें अपने नये अफसर को बिठा कर तीर पर गये। वह इस बन्दरगाह पर पहले भी आ चुका था और नाव का स्टीअरर उसी ने सभाला।

जब हम किनारे पर पहुँचे तो हमने देखा कि ज्वार नीचा था और लगभग एक

फर्लांग तक चट्टाने और पत्थर केल्प और दूसरी समुद्री घासों को लपेटे पड़े थे। इन पर होकर नंगे पाँव चलते हुए हम उच्च जलचिह्न के पास घाट पर पहुँचे। जैसा कि दूर से लगा था मिट्टी ढीली और चीडल थी और सरसो के पौधो के तनों के अलावा वनस्पति एकदम नही थी।

घाट के ठीक सामने ऊपर की ओर एक छोटी पहाडी थी जिसे हम अपनी लंगरगाह से नही देख सके थे क्योंकि उसकी ऊंचाई तीस-चालीस फुट से अधिक नही थी। इस पहाडी पर से हमे तीन आदमी उतरते दिखायी पडे जो वेश भूषा से आधे मल्लाह लगते थे और आधे कैलिफोर्नियाई। उनमें से एक ने बिना कमाये चमडे की पतलून और लाल ऊनी कमीज पहन रखी थी।

जब वे नीचे उतर कर हमारे पास आये तो पता चला कि वे अंग्रेज हैं। उन्होने हमें बताया कि वे एक छोटे मैक्सिकन ब्रिग में थे जिसे एक दक्षिणी-पूर्वी झझा ने किनारे पर घसीट कर नष्ट कर दिया था और अब वे उस पहाडी पर बने छोटे घर मे रह रहे हैं।

उनके साथ पहाडी के ऊपर जाकर हमने देखा कि पहाडी के ठीक पीछे एक छोटी सी निचली बनी इमारत है जिसमें सिर्फ एक कमरा है और उस कमरे में एक चूल्हा है और खाना पकाने का साज-सामान है, इमारत का बाकी हिस्सा ठीक से नही बना था और खालें व दूसरी चीजे रखने के लिए गोदाम का काम देता था। उन्होने हमें बताया कि यह इमारत प्यूब्लो (लगभग ३० मील दूर अन्दर की ओर स्थित कस्बा जिसका व्यापार इस वन्दरगाह से होता था) के कुछ व्यापारियों ने बनवायी है। वे लोग इसे अपने गोदाम के रूप में इस्तेमाल करते है और जब वे जहाजो से सौदापत्ता करने बन्दरगाह मे आते हैं तो ठहरते भी यही हैं।

ये तीनो लोग उन व्यापारियो के नौकर थे और इनका काम था मकान को ठीक-ठाक रखना और गोदाम की चीजो की देखभाल करना। उन्होने बताया कि यहा रहते हुए उन्हे लगभग एक साल हो गया है और अधिकाश समय उनके पास कोई काम नही होता। वे बीफ, कडी रोटी और फ्रिजोल (एक खास तरह की फली जो कैलिफोर्निया में बहुतायत से होती है) पर गुजारा कर रहे हैं। उन्होने बताया कि वहा से निकटतम घर एक पशु-फार्म है जो लगभग तीन मील दूर है। हमारे अफसर की प्रार्थना पर उनमें से एक आदमी वहां गया और पशु फार्म के

मालिक से समुद्र-तट पर एक घोडा भेज देने को कहा जिस पर बैठ कर हमारा एजेन्ट, जो जहाज पर था, प्यूब्लो जा सके।

उनमें से एक से, जो एक चतुर अंग्रेज नाविक था, कुछ ही देर की बातचीत में मुझे उस स्थान, वहा के व्यापार के बारे में और दक्षिणी बन्दरगाहो की खबरो की खासी जानकारी हो गयी। उसने बताया कि सैन डियागो सैन पेड्रो से अनुवात दिशा में लगभग अस्सी मील है, वहा से आये एक स्पेनी घुडसवार ने उन्हे बताया था कि "कैलिफोर्निया" सैन डियागो से बोस्टन के लिए रवाना हो चुका है और "लैगोडा", जो कुछ ही सप्ताह पूर्व सन पेड्रो मे था, उसका नौभार बोस्टन ले जा रहा है।

"आयाकुचो" भी वहा मौजूद था और कैलाओ जाने के लिए भार लाद रहा था। नन्हे "लोरियट" को हमने मोटेरी मे छोडा था जहा से सीधा चल कर वह यहा आ पहुँचा था। उस अंग्रेज मल्लाह ने मुझे बताया कि सैन डियागो एक छोटा सा शात स्थान है जहा व्यापार बहुत कम है लेकिन इस तट पर वह निश्चित रूप से सर्वश्रेष्ठ बन्दरगाह है क्योकि वह चारो ओर जमीन से घिरा हुआ है और वहा का पानी तालाब की तरह शात है।

यह डिपो इस व्यापार मे लगे हुए सभी जहाजो के लिए काम देता था। यहा हर जहाज की ओर से खुरदरे तख्तो का एक बडा मकान बनवाया गया है जिसमें वे इधर-उधर से इकट्ठी की गयी खालें रखते जाते हैं। जब वे अपना नौभार पूरा कर लेते हैं तब कुछ सप्ताह खालो को जहाज में रखने, जहाज में धुआँ करने, लकडी व पानी जमा करने और यात्रा की दूसरी तैयारियो मे लगाते हैं। "लैगोडा" इन दिनो इन्ही तैयारियो मे लगा था। हम ये तैयारियां कब शुरू करेंगे—इस बारे में मैं कुछ नहीं कह सकता था—कम से कम दो साल तो जरूर लगेंगे, मैंने सोचा।

यह सुन कर मुझे आश्चर्य हुआ कि यह ऊजड सा स्थान पूरे तट पर खालें मिलने की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ समझा जाता है। अस्सी मील के क्षेत्र में यह एक मात्र बन्दरगाह था और लगभग तीस मील अन्दर की ओर एक सुन्दर समतल प्रदेश था जिसमें पशुओ के गोल के गोल भरे पडे थे, और जिसके बीचोंबीच कैलिफोर्निया का सबसे बडा कस्बा प्यूब्लो डी लास एंजेलस था और ऐसे अनेक समृद्ध मिशन थे जिन सबका समुद्री बन्दरगाह सैन पेड्रो ही था।

अगले दिन एजेंट के प्यूब्लो जाने के लिए घोडे का इन्तजाम करने के बाद

हम फिर काई-लगी फिसलनी चट्टानो पर होते हुए नाव में आये और वहा से जहाज के लिए चल पडे। जहाज इतनी दूर था कि बढते हुए अन्धकार में हम उसे देख नही पा रहे थे। जब हम वहा पहुँचे तो देखा नावें ऊपर चढा ली गयी थी और मल्लाह सपर खा रहे थे।

नीचे अगवाड मे जाकर हमने अपना सपर लिया और अपने सिगार व पाइप जला कर हमेशा की तरह किनारे पर जो कुछ हमने देखा, या सुना, था उसके बारे में दूसरे मल्लाहो को बताने लगे। हम सब इस बात पर एकमत थे कि खालों की दृष्टि से यह स्थान सबसे बुरा है और समुद्र-तट से इतनी दूर लगर डालने से जाहिर होता है कि दक्षिणी पूर्वी झझाओ की दृष्टि से भी यह बुरा है। इस बात पर कुछ विवाद हुआ कि हमारे लिए अपना माल पहाडी पर ले जाना उचित है या अनुचित और इसके बाद हम सैन डियोगो के बारे में बातें करने लगे और इस बारे में भी चर्चा हुई कि शायद "लैगोडा" के जाने से पहले उससे हमारी मुलाकात हो जाय।

अगले दिन हम एजेंट को किनारे पर ले गये और वह प्यूब्लो व पडोस के मिशनों में गया; उसके परिश्रम के फलस्वरूप कुछ ही दिनो में उस समतल प्रदेश से बड़ी-बडी बैलगाडियो और झुन्ड के झुन्ड खच्चरो पर खालें आने लगी। हमने सब तरह के...हल्के और भारी...माल को दीर्घ नौका में लादा और उसे तीर पर ले गये।

माल को उतारने और तट के पत्थरो पर लपेट कर पुलदे बनाने के बाद हम गाडियो का इन्तजार करने लगे कि वे पहाडी पर ले आयें और इन्हे ले जायें; लेकिन कप्तान ने हमे सब चीजो को पहाडी पर पहुचाने का आदेश देकर सारा बखेडा ही तय कर दिया। उसने कहा "कैलिफोर्निया फैशन" यही है। इस प्रकार जो काम बैल भी नही कर सकते थे वह मजबूर होकर हमें करना पडा।

पहाडी नीची थी लेकिन उसकी चढाई खडी थी और पिछले दिनो की बारिश के कारण जमीन चिपकनी और गीली हो गयी थी, और हमारे पावो को पकड रही थी। भारी ड्राम और पीपो को लुढका कर और पीछे से कन्धे से धकेल कर, ऊपर ले जाने मे हमें काफी कठिनाई हुई और रह-रह कर हमारे पाव फिसल रहे थे जिससे यह डर लग रहा था कि कही भारी ड्राम पीछे लुढक कर हमारे ऊपर न गिर पड़ें। लेकिन, चीनी के बड़े बक्सो ने हमे सबसे अधिक परेशान किया। इनका

इलाज हमें दूसरी तरह से करना पडा। हमने इन बक्सों को चप्पुओं में लटका लिया और दो दो लोग उन चप्पुओ को अपने कन्धो पर रख कर शव यात्रा के जुलूस की चाल से रेंगते हुए ऊपर की ओर बढे।

एकाध घन्टे के कठोर परिश्रम के बाद हमने सारा सामान ऊपर पहुँचा दिया, तब हमने देखा कि खालो से भरी गाडिया खडी हैं। हमें गाडियो मे खालें उतारनी पडी और फिर उनमे अपना माल भरना पडा। गाडियो के साथ जो सुस्त इडियन आये थे वे हाथ पर हाथ धर कर बैठ गये और इधर-उधर देखने लगे, और जब हमने उनसे अपनी मदद करने को कहा तो उन्होने अपने सिर हिला दिये या "नो क्वायरो" कह दिया।

गाडियो को भरने के बाद हमने इंडियनो को हाक दिया जो बैलो को चुभाने के लिए हाथ मे पैनी लेकर बैलो की बगल में पहुँच गये थे। कैलिफोर्निया में मेहनत बचाने का यही तरीका है...दो बैल और दो इडियन।

अब खालो को नाव में रखना था, इसके लिए हम नाव को एक ऐसी जगह पर ले आये जहा पहाडी की चढाई एक दम सीधी थी और तब उन्हे ढाल पर से लुढका दिया। उनमें से बहुत सी खालें ढाल पर ही अटक गयी और हमे खुद नीचे जाकर उन्हें फिर से लुढकाना पडा और इस प्रयत्न मे हम धूल से भर गये और हमारे कपडे फट गये।

जब हमने उन सबको उतार लिया तब उन्हे सिर पर रखकर पत्थरों पर पानी में चलते हुए नाव तक पहुँचे। पानी और पत्थर मिलकर जूतो की एक जोडी को एक दिन में नष्ट कर सकते थे और चूंकि जूते बहुत मंहगे थे इसलिए हमें नगे पावो ही चलना पडता था।

रात को हम जहाज पर पहुँचे। आज से पहले किसी एक दिन में हमने इतना कठिन और नापसंद काम नही किया था। कई दिन तक हम इसी प्रकार काम मे जुटे रहे। जब हम चालीस-पचास टन माल पहुँचा चुके और लगभग दो हजार खालें जहाज पर लाद चुके और व्यापार कुछ मन्दा हो चला तो सप्ताह के अन्तिम दिनो में हमे जहाज पर ही फलके में या रस्सियो को ठीक-ठीक करने मे लगे रहना पडा।

बृहस्पति की रात को उत्तर की ओर से एक प्रचण्ड झोका आया लेकिन चूंकि वह किनारे से दूर था इसलिए हमने दूसरा लगर डाल दिया और वही डटे रहे।

रात को हमें रायल यार्डों को नीचे करने के लिए पुकारा गया। घना अंधकार छाया हुआ था और जहाज अपने लगरो पर डोल रहा था। मै अगले हिस्से में गया और मेरा मित्र एस...मुख्य भाग मे और जल्दी ही हमने उन्हे नीचा कर दिया जिससे जहाज ''शिपशेप एंड ब्रिस्टल फैशन'' मे आ गया। अब हम अपनी ऊपर की ड्यूटी को अच्छी तरह पूरी करना सीख गये थे और यद्यपि एक लडके के अलावा हम सभी मल्लाहो से कम उम्र के थे फिर भी क्रास ट्रीज के ऊपर का हर काम हमे सौप दिया जाता था।

* * *

अध्याय—१२

कई दिनो तक कप्तान का मिजाज बिगडा रहा। उसे ऐसा लगता था जैसे हर काम या तो गलत हो रहा है या बहुत धीरे-धीरे हो रहा है। एक दिन वह रसोइए पर बिगड गया और डेक पर लकडी फेंकने पर उसे कोडो से खबर लेने की धमकी दी। इसी तरह एक बार वह एक रस्सी को छोटा करने के तरीके को लेकर मालिम अफसर से उलझ गया, मालिम का कहना था कि उसका तरीका सही है और उसने वह तरीका एक निपुण मल्लाह से सीखा हैं, इस पर कप्तान को गुस्सा आ गया और तब से वे दोनो एक दूसरे की काट करने लगे।

लेकिन कप्तान का गुस्सा मिडिल स्टेट्स के निवासी साम पर उतरा जोकि एक लबा-चौडा और भारी-भरकम आदमी था। इस आदमी को बोलने में कुछ परेशानी होती थी और काम करने मे वह किसी कदर ढीला भी था; लेकिन वैसे वह अच्छा मल्लाह था और हमेशा मन लगा कर काम करता था, लेकिन कप्तान को वह नापसद था और वह उसे उजड्ड और आलसी समझता था, और जैसी कि मल्लाहो की कहावत है, ''अगर एक बार आपने मल्लाह को बदनाम कर दिया तो वह समुद्र मे कूद भी सकता है।'' कप्तान इस आदमी के हर काम मे मीन-मेख निकालने लगा और एक बार जब वह प्रमुख यार्ड को ठीक कर रहा था तब उससे सूआ गिर पडा और इस बात पर कप्तान ने उससे डट कर बेगार करायी। यह एक संयोग ही था, लेकिन इससे कप्तान उससे और नाखुश हो गया।

शुक्रवार को कप्तान सारे दिन जहाज पर ही रहा और सब मल्लाहो का उस दिन हुलिया तग रहा। ''चलते बैल के आर लगाने से वह धीमा पड जाता है''

यह कहावत हमारे ऊपर भी चरितार्थ हुई। शुक्रवार की रात को हम देर तक काम में लगे रहे और शनिवार की सुबह को जल्दी ही फिर काम पर जुट गये। करीब दस बजे कप्तान ने हमारे नये अफसर रसेल, जिसे अब सभी मल्लाह नफरत की नजर से देखने लगे थे, को आदेश दिया कि वह उसे तीर पर ले जाने के लिए नाव तैयार करे।

स्वीडन का मल्लाह जान पास वाली नाव में बैठा था और रसेल और मैं मुख्य फलका मुख मे खडे कप्तान की राह देख रहे थे जो फलके में गया था जहाँ मल्लाह काम कर रहे थे। अचानक हमने सुना कप्तान किसी से झगड रहा है। मेरी समझ मे यह नही आया कि वह मालिम से झगड रहा है या किसी मल्लाह से। तभी घूँसो और हाथापायी की आवाजें आने लगी। मै दौड कर जान के पास गया जो मेरे साथ ऊपर आया और हमने फलका मुख मे झुक कर नीचे देखा। हम यह तो नही समझ सके कि झगडा किससे हो रहा है लेकिन कप्तान की आवाज ऊँची और साफ थी जिससे जाहिर था कि वह दूसरे से इक्कीस पड रहा है—

"देखी तुमने अपनी हालत! तुमने अपनी हालत देख ली न? अब कभी मुझसे जबानदराजी करोगे?" कोई जवाब नही आया, बल्कि गुत्थम-गुत्था होने और घसीटने जैसी आवाजें आयी। ऐसा लगा जैसे आदमी उसे ढकेलने की कोशिश कर रहा हो।

"खैर चाहो तो चुपचाप पडे रहो क्योंकि मैने तुम्हे धर लिया है", कप्तान ने कहा। इसके बाद फिर वही सवाल, "अब कभी मुझसे जबानदराजी करोगे?"

"मैने आपसे जबानदराजी कहा की, सर!" यद्यपि बोलने वाले की आवाज नीची और रुंधी हुई थी, लेकिन हम सुनते ही समझ गये कि यह आवाज सैम की है।

"मैने यह नही पूछा। मैं पूछता हूँ क्या तुम कभी हुकुम-उदूली करोगे?"

"मैंने तो कभी नही की", सैम ने कहा।

"मेरे सवाल का जवाब दो वर्ना मैं तुम्हे बाध कर लटका दूँगा! ईश्वर की कसम मैं कोडो से तुम्हारी खाल उधेड दूँगा।"

"मैं कोई नीग्रो गुलाम नही हूँ", सैम ने कहा।

"नही हो तो मैं तुम्हे बनाता हूँ", कप्तान ने कहा। वह फलकामुख में आया और उछल कर डेक पर चढ़ गया। अपना कोट उसने एक ओर फेंका और कमीज

की आस्तीनें चढाने लगा। उसने मालिम को बुला कर कहा—"उस आदमी को पकड कर ऊपर लाओ मि० ए—! ऊपर ला कर उसे बाँध दो! मैं तुम्हे बताता हूँ कि जहाज पर किसका हुक्म चलेगा!"

कप्तान के साथ अफसर मल्लाह भी फलकामुख मे आ गये थे, और बार-बार कहने पर मालिम ने सैम को पकड लिया और उसे गलियारे मे ले आया। सैम ने जरा भी प्रतिरोध नही किया।

"आप किस कसूर पर उसे कोडो से पीट रहे हैं, सर?" जान ने कप्तान से पूछा।

यह सुनते ही कप्तान उसकी तरफ मुडा लेकिन उसकी फुरती और दृढता का ध्यान आते ही वह रुक गया। उसने स्टीवार्ड से हथकडी लाने को कहा और रसेल से अपने साथ आने को कहकर कप्तान जान की तरफ बढा।

"मुझे छोड दो" जान ने कहा। "मैं खुद हथकडी पहन लूँगा, तुम्हे ताकत का इस्तेमाल करने की जरूरत नही। उसने अपने हाथ आगे कर दिये और कप्तान ने उसे हथकडी पहना दी और उसे पीछे छतरी में भेज दिया। तब तक सैम को बाँध दिया गया था। उसकी दोनो कलाइयाँ बराँडलो से बाध दी गयी थी और जैकेट उतार कर उसकी पीठ नगी कर ली गयी थी। कप्तान डेक पर उसके पीछे और कुछ ऊचाई पर खडा था ताकि पूरी ताकत के साथ उस पर कोडे से प्रहार कर सके। उसके हाथ मे एक मोटी और मजबूत रस्सी का टुकडा था। अफसर उसके चारो ओर खडे थे और सभी मल्लाह कटि मे जमा हो गये थे।

इन सब तैयारियो से मेरा जी खराब हो गया। मै इतना क्रुद्ध और उत्तेजित था कि मुझे मूर्छा सी आने लगी। एक मनुष्य को—एक नर को जो नारायण का ही स्वरूप है—पशु की तरह बाध कर पीटा जा रहा था! एक ऐसे आदमी को पीटा जा रहा था जिसके साथ मै महीनो से खा-पी और सो रहा था और जिसे मैं अपने भाई की तरह समझता था।

मेरे मन मे जो भावना सबसे पहले जनमी, और जिसे नियंत्रण मे रखना मेरे लिए असभवप्राय हो उठा, वह प्रतिरोध की थी। लेकिन किया क्या जा सकता था? इसका वक्त निकल चुका था। दो श्रेष्ठ मल्लाह बाधे जा चुके थे और मेरे अलावा केवल दो मल्लाह और बचे थे। उनके अलावा दस-बारह साल का एक छोकरा और था। उस तरफ (कप्तान के अलावा) तीन

अफसर, स्टीवार्ड, एजेंट और क्लर्क—इतने लोग थे। लेकिन अगर सख्या की बात छोड भी दें तो भी मल्लाह बेचारे कर क्या सकते हैं ? अगर वे प्रतिरोध करें तो उसे विद्रोह कह कर पुकारा जाता है, और अगर वे सफल हो जायें और जहाज पर अधिकार कर लें तो इसे जलदस्युता का नाम दिया जाता है। अगर भविष्य में कभी भी वे अपने को कानून के हवाले कर दे तो उन्हे दन्ड जरूर मिलेगा, अगर ऐसा न करें तो उन्हे अपना सारा जीवन जलदस्यु बन कर काटना होगा। अगर कोई नाविक अपने कमाडर की अवज्ञा करता है तो वह कानून की अवज्ञा करता है और उसके लिए दो ही रास्ते हैं—या तो जलदस्यु बन जाये अथवा अवज्ञा का दन्ड भुगते। यह था तो बहुत बुरा लेकिन हमें इसी को सिर-माथे रखना था। आखिर यही दिन देखने के लिए तो आदमी जहाज मे मल्लाह बनता है।

रस्सी को अपने सिर पर घुमाते हुए और अपने शरीर को लचकाते हुए, ताकि रस्सी पूरे जोर से पडे, कप्तान ने सैम की नगी पीठ पर प्रहार किया। एक, दो—छः बार। "अब करोगे मुझसे जबानदराजी ?" सैम दर्द से कराहता रहा लेकिन बोला एक शब्द भी नही। तीन कोडे और। यह इन्सान की बरदाश्त के बाहर था और अभागे सैम ने धीरे से कुछ कहा जिसे मैं सुन नही पाया, फलस्वरूप उस पर इतने कोडे बरसाये गये जितने वह सह सकता था। अत में कप्तान ने उसके हाथ खोल दिये और उससे अगवाड में जाने को कह दिया।

"अब आपकी बारी है", कप्तान ने जान की हथकडिया खोलते हुए कहा। हाथ खुलते ही जान अगले हिस्से की तरफ भाग कर अगवाड मे पहुच गया। "उस आदमी को पीछे लाओ", कप्तान ने चीख कर कहा। दूसरा मालिम, जो जान के साथ साधारण मल्लाह रह चुका था, स्तब्ध-सा कटि में खडा था, और मालिम धीरे-धीरे आगे की तरफ चल दिया था लेकिन तीसरे मालिम ने सोचा जोश दिखाने का यह अच्छा मौका है इसलिए वह कूद कर बेलनचरखी पर चढ़ गया और जान को पकड लिया लेकिन जान ने एक ही झटके में उसे दूर पटक दिया।

इस समय अगर कोई ताकत अभागे जान को बचा पाती तो मैं उसे न जाने क्या बख्श देता, लेकिन मेरा ऐसा सोचना बेकार था। कप्तान छतरी पर खडा था, उसका सिर नंगा था, आखें क्रोध से चमक रही थीं, चेहरे से खून-सा टपक रहा था। वह बार-बार रस्सी को घुमा रहा था और अपने

अफसरो से कह रहा था, "उसे घसीट कर यहाँ लाओ—पकड लाओ ! मैं उसे मजा चखा दूँगा !"

अब मालिम आगे गया और शाति पूर्वक जान से पीछे चलने के लिए कहा। जब जान ने देखा कि प्रतिरोध का कोई लाभ नही है तो उसने तीसरे मालिम को झटक कर दूर कर दिया और कहा कि वह अपने आप चलेगा, उसे घसीटने की कोशिश न की जाय। वह गलियारे में गया और अपने हाथ आगे बढा दिये। लेकिन जब कप्तान उसे बाँधने लगा तो यह अपमान उससे सहन न हुआ और वह प्रतिरोध करने लगा लेकिन चूंकि मालिम ने और रसेल ने उसे पकड रखा था इसलिये जल्दी ही उसे बाँध दिया गया।

जब वह बध गया और कप्तान कोडे लगाने के लिए अपनी आस्तीनें चढाने लगा तब जान ने कप्तान से पूछा कि उसे यह सजा किस कसूर पर मिल रही है। "सर ! क्या मैंने कभी अपने काम से इनकार किया है ? क्या आपको कभी मुझसे कामचोरी की, ढीलेपन की या ढग से काम न करने की शिकायत हुई है ?"

"नही", कप्तान ने कहा, "मै इसलिए तुम्हारे कोड़े नही लगा रहा हूँ, तुम्हारा कसूर है दस्तंदाजी, सवाल पूछना।"

"क्या आपके जहाज मे बिना कोडे खाये कोई सवाल नही पूछ सकता ?"

"नही", कप्तान चीखा, "इस जहाज में मेरे अलावा कोई भी मुह नही खोल सकता", और उसने जान पर कोडे बरसाने शुरू कर दिये। बीच-बीच में वह अपने शरीर को लचकाता जाता था ताकि कोडा पूरे ज़ोर से पडे। कोड़े लगाते-लगाते वह और भी आवेश मे आ गया और रस्सी को झुलाते हुए वह डेक पर नाच-नाच कर कहने लगा—"अगर तुम जानना चाहते हो कि मैं तुम्हारे कोडे क्यो लगा रहा हूँ तो सुनो ! मै तुम्हे बताता हूँ। कोडे लगाने में मुझे मजा आता है, समझे ! यह मेरा मन पसन्द काम है ! समझे मैं तुम्हारे कोडे क्यो लगाता हूँ !"

जान दर्द से कराह रहा था। अत में उससे बरदाश्त न हुआ और वह ईसा की दुहाई देने लगा जो कि हमारी अपेक्षा विदेशी नाविक अधिक करते है—"ओह, ईसा मसीह, ओह, ईसामसीह !"

"ईसामसीह की दुहाई मत दो", कप्तान गरजा, "उसके किये तुम्हारा कुछ

न होगा। कप्तान टी—की दुहाई दो। वह तुम्हारी मदद कर सकता है! ईसामसीह अब तुम्हारी मदद नही कर सकता!"

इन शब्दो को सुन कर, जिन्हे मै कभी नही भुला पाऊंगा, मेरा खून सर्द हो गया। मुझसे और अधिक देखा नही गया। जुगुप्सा, वेदना और आतक से मेरा मन भर उठा। मैने मुह मोड लिया और पटरी पर झुककर नीचे पानी में देखने लगा। अपनी स्थिति और भावी प्रतिशोध के कुछ विचार मेरे मस्तिष्क में तेजी से कौंध गये लेकिन कोडो की आवाज और जान की चीखो के कारण मुझे उसी समय वापस आना पडा।

अन्त मे वे आवाजे बन्द हुई। मैने मुड कर देखा तो कप्तान के इशारे पर मालिम ने जान के बंधन काट दिये थे। दर्द से दुहरा होता हुआ अभागा जान अगले हिस्से मे गया और वहाँ से उतर कर अगवाड मे चला गया। सब लोग अपनी-अपनी जगह स्तब्ध खडे थे। कप्तान आवेश और मिली हुई सफलता के अहकार से भर कर छतरी पर चहलकदमी कर रहा था और जब वह आगे की तरफ आता था तो हमे सुना कर कहता था—

"तुमने अपनी औकात देखी! तुमने देखा मैं तुम्हारा क्या हुलिया बनाता हूँ। अब तुम समझे, तुम सब की भी यही हालत हो सकती है। तुमने मुझे गलत समझा था—तुम्हे मालूम नही था मैं क्या हूँ! अब तुम समझे मैं क्या चीज हूँ! अगर तुम मेरी आख के इशारे पर काम नही करोगे तो मैं तुम सबकी खाल उधेड लूँगा! छोकरे से लेकर बडो तक—एक सिरे से दूसरे सिरे तक—मै सबके कोड़े लगाऊंगा। तुम्हारे हन्टर लगाने वाला तुम्हारे ऊपर मौजूद है! हा, वह गुलामो और नीग्रो लोगो की तरह तुम्हारे हन्टर लगा कर तुमसे काम लेगा! अब मैं देखूगा कौन कहता है कि वह नीग्रो गुलाम नही है।"

इस लताड और इसी तरह की नपी-तुली डाट-फटकार से वह दस मिनट तक हमारा सत्कार करता रहा, ताकि भविष्य मे हम उसके लिए कोई झझट खडा न करें। तब वह नीचे चला गया। कुछ ही देर बाद जान पिछले भाग मे आया। उसकी नंगी पीठ पर हर जगह कोडो के निशान उभर आये थे और वह बेहद सूज गयी थी। उसने स्टीवार्ड से कहा कि कप्तान से कह कर उसे पीठ पर लगाने के लिए मरहम या बालसम दिलवा दे।

"नही", कप्तान चीखा। उसने नीचे से जान की बात सुन ली थी। "उससे

कह दो अपनी कमीज पहन लेगा, इसी में उसकी भलाई है, और मुझे नाव में बैठा कर तीर पर छोड आयेगा। इस जहाज मे कोई आलसी की तरह पडा नही रह सकता।"

इसके बाद उसने मि० रसेल को बुलाया और आज्ञा दी—सैम व जान के अलावा दो और मल्लाहो को लेकर मुझे नाव से तीर पर पहुँचा आओ। मै भी उस नाव के खेने वालो मे से एक था। दर्द के मारे दोनो मल्लाहो से अपनी कमर नही झुकायी जा रही थी और कप्तान "तेज" "और तेज!" की आवाज लगाये जा रहा था। लेकिन जब उसने देखा कि दोनो अपनी तरफ से पूरी कोशिश कर रहे हैं तो उसने उनसे कुछ नही कहा। एजेन्ट पीछे उसके पास ही बैठा था लेकिन एक लीग या उससे भी अधिक की उस यात्रा में कोई एक शब्द भी नही बोला।

हम तीर पर पहुँचे। कप्तान, एजेन्ट और अफसर को लेकर पहाडी पर बने घर की तरफ चला गया, और हमे नाव के पास छोड गया! मैं और मेरे साथ आया दूसरा मल्लाह नाव के पास ही रहे, जबकि जान और सैम टहलते हुए कुछ दूर निकल गये, और चट्टानो पर जाकर बैठ गये। कुछ देर वे बातें करते रहे, लेकिन फिर अलग हो गये, और अकेले-अकेले बैठ गये।

जान की तरफ से मुझे खटका था। वह विदेशी था, गुस्सेबाज था और उत्पीडित था। उसका चाकू उसके पास था और कप्तान को उधर से नाव तक अकेले आना था। शायद कप्तान भी सशस्त्र था और इतना तय था कि अगर इन दोनों मे से किसी ने उस पर हाथ उठाया तो उसे भाग कर कैलिफोर्निया के जगलों में शरण लेनी पडेगी और भटकन व भूख का सामना करना होगा, या उसे सिपाही अथवा इन्डियन शिकारी कुत्ते पकड लेगे जो बीस डालर देने पर उसकी तलाश मे दौडाये जा सकते हैं।

दिन का काम खत्म होने पर हम नीचे अगवाड मे गये और अपना सादा सपर लिया, लेकिन किसी ने किसी से एक शब्द तक नही कहा। आज शनिवार की रात थी लेकिन गीत नही गाये गये। हर चीज पर उदासी का परदा पडा था।

दोनो मल्लाह अपनी-अपनी बेंचो पर पडे दर्द से कराह रहे थे। सब लोग सो गये लेकिन मुझे नीद नही आयी। रह-रह कर उन दोनो की बेंचो से कराहने की आवाज आ रही थी जिससे स्पष्ट था कि वे जाग रहे हैं, और वे सो भी कैसे सकते थे क्योकि वे एक मिनट के लिए भी एक करवट पर तो लेट ही नही सकते थे।

अंगवाड का धुंधला, झूलता हुआ लैंप हमारे रहने की अंधेरी माद में रोशनी फैला रहा था। और मेरे मन मे तरह-तरह के अनेक विचार और तर्क आ रहे थे।

मैंने अपनी और उन नाविको की स्थिति पर सोचा जो नृशसतापूर्ण अनुशासन मे रह रहे थे। मैंने अपनी यात्रा की अवधि और उस पर पडे अनिश्चय के परदे पर सोचा और यह भी सोचा कि अगर मैं अमरीका लौटने मे सफल होऊंगा तो इन अभागे लोगो के जीवन को न्यायाश्रित और सतोषप्रद बनाने के लिए क्या कुछ करूगा। मैंने प्रतिज्ञा की कि यदि किसी दिन ईश्वर ने मुझे साधन सपन्न बनाया तो मैं अभागे लोगो के इस वर्ग की शिकायतो को दूर करने और उत्पीडन को कम करने के लिए अवश्य प्रयत्न करूंगा जिसका सदस्य फिलहाल मैं भी हूँ।

अगले दिन रविवार था। नाश्ते के समय से पहले हम रोजमर्रा की तरह डेको की धुलाई वगैरह में लगे रहे। नाश्ते के बाद हम कप्तान को तीर पर ले गये। जब उसने वहा पिछली रात को लायी गयी कुछ खालें देखी तो मुझे तीर पर रह कर उनकी देख-भाल करने की आज्ञा दी और कहा कि नाव एक बार और आयेगी, अब मैं अकेला रह गया और मैंने वह दिन पहाडी पर बडी शाति से गुजारा। अपना डिनर मैंने उस छोटे घर मे रहने वाले तीनों लोगो के साथ लिया।

दुर्भाग्य से उनके पास किताबे नही थी, और मैं कुछ देर उनसे बातें करने और कुछ चहल कदमी करने के बाद कुछ भी काम न होने के कारण ऊबने लगा। छोटा-सा जहाज "पिलग्रिम", जो कठिनाई और यातना का भन्डार रहा था, दूर पर दिखायी दे रहा था और उसके अलावा उस विशाल खाडी के तल को तोडने वाली एक ही चीज थी। यह चीज एक छोटा और वीरान सा टापू था जो खडा और नोकीला था व चीड़ल मिट्टी से बना था। वनस्पति के नाम पर इस पर एक पत्ती तक नही थी, लेकिन इसे देख कर मेरे मन मे एक खास तरह का अवसाद का भाव जागता था क्योकि मुझे ज्ञात था कि इस टापू की चोटी पर एक अंग्रेज की हड्डियाँ दफनायी गयी हैं जो कि एक छोटे दो मस्तूलो वाले व्यापारी जहाज का कमाडर था और जब उसका जहाज बन्दरगाह में खडा था उस समय मर गया था।

इसे देख कर मैं हमेशा गम्भीर हो जाता था। सामने वह टापू था, वीरान और वीराने मे आबाद, और उसके ऊपर एक ऐसे आदमी की हड्डिया थी जो एकाकी था और बन्धुहीन था। अगर यह सामान्य कब्रिस्तान होता तो मुझ पर इसका इतना प्रभाव न पडता। वह अकेला शव चारो ओर की हर चीज की

एकांत प्रकृति के अनुरूप ही था। कैलिफोर्निया में यही एक ऐसी चीज थी जिसे देख कर मुझ मे कविता कभी नही फूटी। और फिर वह आदमी घर से कितनी दूर मरा था और अन्तिम समय उसका कोई भी मित्र उसके पास नही था। लोगों को संदेह था कि उसे जहर देकर मारा गया है लेकिन इसकी जाँच करने वाला कोई नही था। उसका अन्तिम सस्कार भी विधिवत नही हो सका था, और (जैसा कि मैने सुना था) अपने रास्ते से उसे हटा कर मालिम उसके शव को जल्दी से उस पहाडी पर ले गया और जमीन में दफन कर दिया। उसकी आत्मा की शाँति के लिए एक शब्द या प्रार्थना भी उच्चरित नही की गयी।

तीसरे पहर के अन्त मे मैं नाव की राह देखता रहा, लेकिन नाव नही आयी। सूर्यास्त के समय मुझे एक धब्बा सा दिखायी दिया और पास आने पर मैंने देखा कि नाव इसी तरफ आ रही है और उस पर कप्तान बैठा है। इसका मतलब यह हुआ कि नावे आज जहाज पर नही जायेगी। कप्तान पहाडी पर आया। उसके साथ एक आदमी था जिसके पास मेरी मकी जाकेट और कम्बल था। कप्तान अब भी क्रोध मे था लेकिन फिर भी उसने मुझसे पूछा कि मुझे खाने की तो कोई तकलीफ नहीं हुई। उसने मुझसे खालो का एक डेरा बना लेने और अपना शरीर गरम कर लेने को कहा क्योकि मुझे खालो के पास ही सो कर उनकी रखवाली करनी थी। एक मिनट मैने अपनी जाकेट लाने वाले मल्लाह से बात की।

"जहाज पर कैसी हालत है ?" मैने पूछा।

"बहुत बुरी," उसने बताया, "कठोर काम और सहानुभूति का एक शब्द तक नही।"

"क्या," मैने पूछा, "क्या आज भी तुम दिन भर काम करते रहे ?"

"हाँ ! अब हमे इतवार को भी छुट्टी नही मिलेगी। आज हम जहाज की हर चीज फलके मे पहुचाने मे लगे रहे।"

सपर लेने मे ऊपर मकान मे गया। सपर मे हमे फ्रिजोल (कैलिफोर्निया के निवासी सदा इसी को खाते है लेकिन अगर ढग से पकायी जायें तो ये दुनिया की स से बेहतरीन फलिया हैं), जले हुए गेहूँ की काफी और कडी रोटी दी गयी। खाने के बाद तीनो आदमी चरबी की रोशनी के सहारे ताश खेलने लगे और मैं वहा से तोर पर खालो के बीच अपना डेरा डालने चल दिया।

अब अधेरा हो गया था। जहाज आँखो से ओझल हो गया था, और पहाडी

पर बने घर के तीन आदमियो के अलावा एक लीग के क्षेत्र में एक भी जीवित प्राणी नही था। कोएटी (लोमडी और भेडिये की मिली-जुली आदतो और आकार-प्रकार के जगली) जतुओ ने अपनी तीखी आवाज मे भौकना शुरू कर दिया था। जहा मैं लेटा था वहाँ से दोनो ओर की पहाडियाँ खाली मे चली गयी थी और उन दोनो पाइन्टो पर दो उल्लू बैठे थे जो उदास स्वर मे एक के बाद एक हूके भर रहे थे।

रात के समय यह आवाज मैंने इससे पहले भी सुनी थी लेकिन मैं यह नही जानता था कि यह किस पन्छी की है। पहाडी पर से एक आदमी मेरा डेरा देखने आया था, उसने मुझे बताया कि यह उल्लू बोल रहा है। दूर से आने के कारण आवाज इतनी कर्कश नही थी। मै एकदम अकेला था और रात का समय था, इसलिए मुझे ऐसा लगा कि ऐसी विषण्ण और अशुभसूचक आवाज मैंने पहले कभी नही सुनी है।

लगभग सारी रात वे रह–रह कर धीमी आवाज एक–दूसरे के प्रश्नो का उत्तर देते रहे। कोएटी के शोर मचाने के कारण मुझे इस आवाज से छुटकारा मिला। ये जंतु तो मेरे डेरे के बिल्कुल पास चले आये थे लेकिन अपने इन पडोसियो को देख कर मुझे कोई खुशी नही हुई। अगले दिन सूर्योदय से पहले ही दीर्घ नौका तीर पर आ गयी और खालें जहाज पर पहुँचा दी गयी।

हम सैन पेड्रो में लगभग एक सप्ताह रहे। इस बीच हमने खालें ढोयी और दूसरी बेगारें की जो अब हमारी ड्यूटी मान ली गयी थी। मुझे पहाडी पर कुछ खालों और दूसरे सामान की निगरानी के लिए एक रात और रहना पडा। इस बार सौभाग्य से मुझे घर के एक कोने में स्काट के "पाइरेट" के एक खंड का कुछ हिस्सा मिल गया, लेकिन जब सबसे मनोरंजक प्रसंग आया तब यह खत्म हो गया, लिहाजा मैं तट पर रहने वाले अपने परिचितो के पास गया और उनसे उस प्रदेश के रीति–रिवाजो और बन्दरगाहो वगैरह के बारे मे जानकारी हासिल करता रहा।

उन्होने मुझे बताया कि दक्षिणी–पूर्वी झञ्झाओं की दृष्टि से यह बन्दरगाह सैंटा बारबरा से बुरा है। इसका कारण यह कि यहा की मुख्य भूमि का दिङ्मान वहा की अपेक्षा डेढ पाइन्ट प्रतिवात दिशा में है। खाडी इतनी छिछली है कि अक्सर समुद्र उस स्थान तक चढ आता है जहां हमारा जहाज लंगर डाले खडा

था। जिस झंझा से बचने के लिए हमने सैंटा बारबरा में समुद्र की शरण ली थी, वह इस बन्दरगाह के लिए इतनी बुरी रही थी कि सारी खाडी मानोर्मियो के झाग से भर उठी थी, और लहरें मृत व्यक्ति के टापू को छूने लगी थी।

उन दिनो "लैगोडा" इसी बन्दरगाह मे था। झझा के आसार देखते ही वह समुद्र की ओर चल पडा था और जल्दी-जल्दी मे लगर डाले खडी अपनी लाच छोड ही गया। कई घन्टो तक तो वह छोटी नौका समुद्र के थपेडे झेलती रही। उसका लगर हिल रहा था और लहरो के वेग के कारण वह शीर्षासन-सा करती नजर आ रही थी। लोगो ने मुझे बताया कि रात तक तो उन्होने उस नाव को वहाँ देखा लेकिन अतत: तरगो ने उसे लंगर से आजाद कर के तीर पर फेंक दिया।

"प्रिलग्रिम" पर सब-कुछ नियमित ढग से चल रहा था और हर आदमी बिना किसी झझट के अपना काम करने की कोशिश कर रहा था, लेकिन यह तो स्पष्ट ही था कि यात्रा का सुख समाप्त हो गया है। "यह एक लम्बी गली है जो कही मुडती नही है"—"बारह बरस बाद तो घूरे के दिन भी फिरते हैं, एक दिन मेरे भी फिरेंगे"—और इसी तरह की दूसरी कहावतो का प्रयोग तो कभी कभी किया जाता था, लेकिन यात्रा की संभावित समाप्ति अथवा बोस्टन या इससे मिलती-जुलती बात कोई नही करता था। और अगर कोई करता भी था तो उसे अपने ही साथी से यह जवाब मिलता था—"क्या बोस्टन की बात करते हो ? अगर बोस्टन की सूरत भी देखने को मिल जाये तो अपने भाग सराहना; या कुछ इस तरह का उत्तर मिलता—"बोस्टन पहुँचने से पहले ये खालें तुम्हारी खोपडी के सारे बाल पहन लेगी और तुम्हारा सारा वेतन कपडों पर खर्च हो जायगा। तुम्हारी जेब में एक कौडी तक नही बचेगी जिससे नकली बाल खरीद कर अपना गजापन छिपा सको।"

कोडे लगने की घटना की चर्चा बहुत कम या नही के बराबर होती थी। अगर कोई शुरू भी करना चाहता तो कोई दूसरा बात की नजाकत को समझता हुआ उसे रोक देता था, या बात टाल देता था। मुझे मल्लाहो से इतनी समझ-दारी की उम्मीद न थी। लेकिन जिन दिनो मल्लाहो के कोडे लगे थे वे एक-दूसरे से इतनी नम्रता और आदर के साथ व्यवहार करने लगे थे कि जीवन के उच्चतम क्षेत्र में भी उसे प्रशसनीय कहा जायगा।

सैम को इस बात का अहसास था कि जान ने यह यातना उसी के कारण सही है, और वह जब भी शिकायत करता था तो यह अवश्य कहता था कि अकेले उसी के कोडे लगाये जाते तब भी कही तक ठीक था, लेकिन जब भी वह जान को देखता है तो उसे याद आता है कि उसी के कारण जान को यह अपमान सहना पडा है; और जान अपने वचनो से या कृत्यो से यह कभी भी प्रकट नही होने देता था कि अपने साथी नाविक के मामले में हस्तक्षप करने के कारण ही उसे वह यातना सहनी पडी थी।

जब हमारी सारी फालतू जगह खालो से भर गयी तो हमने लंगर उठाया और सैन डियागो के लिए चल दिये। जहाज को रवाना करना एक ऐसी प्रक्रिया है जिससे आप नाविको की मन स्थिति का सही अनुमान लगा सकते हैं।

जब नाविक "उमग के साथ" काम करते है तो हर नाविक बिल्ली की तरह उछल कर ऊपर चढ जाता है। पलक मारते पाल ढीले कर दिये जाते हैं। हर आदमी अपने हवीत–दड पर पूरा जोर लगा देता है और बेलन चरखी "यो हीव हो ! हीव एड पा ! हीव हार्टी हो !" के निनाद के साथ घूमना शुरू कर देती है। लेकिन इस बार हम मरे मन से काम कर रहे थे। एक नाविक भी अपनी सामान्य गति से तेज चलकर ऊपर नही चढा और बेलनचरखी धीरे-धीरे घूम रही थी।

सबदरा कोहनी में खडा मालिम अफसराना ढंग मे हमे उकसाने का निरर्थक प्रयत्न करता रहा—"जान लगा कर खीचो हो !"—"जोर लगा के हेइसा !"—"खीचो–खाचो, पार करो !" आदि-आदि लेकिन सब बेकार रहा। उसके उकसाने का नाविको पर कोई प्रभाव नही पडा।

और जब बेलन-चरखी पर रस्से-कप्पियाँ बाँध दी गयी और सब मल्लाह—रसोइया, स्टीवार्ड और बाकी सब—फलके मे लगर उठाने के लिए जुट गये तब भी "चीयरिली मेन" वाला जानदार सहगान गाने के बजाय हमने धीरे-धीरे और चुप-चाप रहकर लगर उठाया। और, जैसा कि मल्लाहो का कहना है एक गीत दस मल्लाहो के बराबर काम करता है इसलिए गीत के अभाव में लगर को ऊपर आने में खासी देर लगी। मालिम ने कहा "चीयरिली" गाओ, लेकिन हमारे लिए खुशी मिट चुकी थी, इसलिए हमने खुशी का गीत भी नही गया।

कप्तान छतरी पर चहलकदमी करता रहा, लेकिन बोला एक शब्द भी नहीं।

उसने यह परिवर्तन अवश्य ही देखा होगा लेकिन इसमे ऐसा कुछ न था जिसके विरुद्ध वह कोई कार्रवाई कर सके।

हम धीरे-धीरे किनारे-किनारे हल्की हवा में आगे चले। रास्ते में हमने दो मिशन और देखे जो दूर से सफेद प्लास्टर के ब्लाक जैसे दिखायी दे रहे थे। उनमें से एक तो एक ऊँची पहाडी की चोटी पर था। उसका नाम सैन जुम्रान कैम्पे-स्ट्रानो था और उसके नीचे गर्मियो के दिनो मे खालें चढाने के लिए कभी कभी जहाज लगर डाला करते थे। सबसे दूर वाले मिशन का नाम सैन लुई रे था। तीसरे मालिम ने बताया कि यह मिशन सैन डियागो से केवल चौदह मील है। अगले दिन सूर्यास्त के समय हमारे सामने विशाल और जगलयुक्त मुख्य भूमि थी जिसके पीछे सैन डियागो का छोटा सा बन्दरगाह था। सारी रात हवा बन्द रही लेकिन अगले दिन यानी शनिवार, चौदह मार्च को तेज समीर बह निकला और हम पाइट का चक्कर लगा कर और हवा बदल कर अपने जहाज को ठीक सामने उस छोटे बन्दरगाह मे ले आये जोकि दरअसल एक छोटी सी नदी का निकास है।

हर आदमी नयी जगह को आख भर कर देख लेना चाहता था। पाइट से ही (जोकि हमारे डाबा बाजू पर खाडी मे घुस आया था) ऊची पहाडियो की एक शृ खला शुरू हो गयी थी जो उत्तर तथा पश्चिम में बन्दरगाह की रक्षा करती थी, यह शृ खला अदरूनी हिस्सो में बहुत दूर तक चली गयी थी। दूसरी तरफ जमीन नीची और हरियाली है लेकिन उसमे पेड नही उगे हैं। मुहाना इतना तंग हैं कि उसमें से एक बार मे एक ही जहाज आ सकता है। धारा का वेग तेज है और चैनल एक नीचे पथरीले पाइन्ट के इतने निकट मे बहती है कि ऐसा लगता है जैसे जहाज के पार्श्व पाइट से छू रहे हो।

वहाँ से कस्बा नही दिखाई दे रहा था। लेकिन चिकना रेतीला तट निकट ही था और हम से एक लीग के फासले के अन्दर ही तीन जहाज लंगर डाले खडे थे। तीर पर चार बडे मकान थे जो खुरदरे तख्तो से बनाये गये थे और बोस्टन के उन कोठारो से मिलते-जुलते थे जो वहा के निकटवर्ती बडे तालाबो के किनारो पर बर्फ जमा करने के लिए बनाये गये हैं। उनके चारो ओर खालो के ढेर लगे थे और लाल कमीजें व तिनको के बडे टोप पहने आदमी दरवाजो मे से आ जा रहे थे। ये खालो के घर थे।

जहाजो मे एक तो छोटा और गंदा-सा हरमाफ्रोडाइट दो मस्तूलो वाला

जहाज था जिसे देखते ही हम समझ गये कि यह हमारा पूर्व परिचित "लौरियट" ही है। दूसरे जहाज के मोरे तेज थे और मस्तूल झुके हुए, उस पर ताजा रग-रोगन हुआ था और सूरज के प्रकाश मे वह चमचमा रहा था। उसका झंडा लाल रग का था और चोटी पर सैंट ज्यार्ज का क्रास लगा था। यह जहाज सुन्दर "आयाकुचो" था। तीसरा जहाज एक विशाल पोत था जिसके टापगैलेंट मस्तूल बधे हुए थे और पाल खुले हुए। वह इतना खस्ता हाल लग रहा था जितना दो सालो तक खालें ढोना किसी जहाज को बना सकता है। इस जहाज का नाम "लैगोडा" था।

धारा मे तेजी से चलते हुए हम निकट आये और हमने जजीर ढीली कर दी और शिखर पाल बाध दिये। "लगर डाल दो!" कप्तान ने आदेश दिया, लेकिन या तो बेलन-चरखी मे आगे की तरफ जजीर कम रह गयी थी, या लगर गलत गिरा, या हम ज्यादा आगे बढ आये थे—बहरहाल लगर डला नही। "जंजीर ढीली छोड दो!" कप्तान चीखा, और हमने जजीर ढीली छोड दी लेकिन उससे भी कुछ न हुआ।

इससे पहले कि हम दूसरा लगर डालें हमारा जहाज बहने लगा और "लैगोडा" से जा टकराया। उसके मल्लाह अगवाड में नाश्ता कर रहे थे और जब रसोइए ने देखा कि हमारा जहाज उस ओर बढ रहा है तो वह रसोई से भागा और अफसरो व मल्लाहो को ऊपर बुला लाया।

सौभाग्य से नुकसान अधिक नही हुआ। उसकी जिब बूम हमारे अगले और प्रमुख मस्तूलो के बीच मे घुस गयी, इसके फलस्वरूप हमारे कुछ पाल वगैरह नष्ट हो गये और पटरी टूट गयी। उसे अपनी मार्टिंगेल से हाथ धोना पडा। इससे हमारा जहाज रुक गया और जब उन्होने जजीर ढीली छोडी तो हम उनके जहाज से आगे निकल गये और हमने दूसरा लंगर डाला लेकिन दुर्भाग्य से यह भी पहले की तरह बेकार रहा और इसके पहले कि किसी का ध्यान इस तरफ जाये हमारा जहाज "लोरियट" की तरफ बहने लगा था।

अब कप्तान तेजी से और गुस्से में आदेश देने लगा था। उसने शिखरपाल तनवा दिये। उसने सोचा शायद पालों मे हवा भरने से उसकी ताकत से लगर बाहर निकल आये, लेकिन यह कोशिश भी बेकार रही। अन्त में वह बेफिक्री से

पटरी पर बैठ गया और "लोरियट" के कप्तान नाये से पुकार कर कहा—मैं तुमसे मुलाकात करने आ रहा हूँ।

हमारा जहाज जोर से "लौरियट" से जा टकराया। उसका डाबा बाजू वाला मोरा हमारे जमना बाजू के क्वा र से टकराया और हमारे क्वार्टर का जंगला गायब हो गया जबकि उसके डाबा बाजू का बमकिन टूट गया। इसके अलावा उसके डेक के ऊपर का एकाध खभा भी टूट गया। हमने अपने सुन्दर नाविक जैक्सन को सैंडविच द्वीपो के मल्लाहो के साथ अगवाड मे देखा। वे सब हमारे जहाज को आगे निकालने के प्रयत्नो में लगे हुए थे। जंजीर ढीली छोडने से हम "लोरियट" से निकल गये लेकिन हमारे लंगर बेकार हो गये थे। हमने सब लोगों को बेलन चरखी पर लगा दिया और लगर उठाने के लिए पूरा जोर लगाया, लेकिन कुछ न हुआ। बडी कोशिश करने से कभी–कभी लगर का कुछ तार ऊपर आता भी था लेकिन तभी कोई विराट तरग आती और उसे फिर से नीचे ले जाती थी।

अब हनारा जहाज "आयाकुचो" की तरफ बहने लगा। उसका कमांडर कप्तान विल्सन अपनी नाव पर बैठ कर हनारे जहाज पर आ गया। वह छोटे कद का, चुस्त और पुष्ट आदमी था। उसकी उम्र ५० और साठ के बीच की होगी—यानी वह हमारे कप्तान मे लगभग ३० माल बडा था—और वह अत्यन्त अनुभवी नाविक था। वह बिना किसी झिझक के अपनी राय देने लगा और राय देते देते वह धीरे-धीरे हुक्म ही देने लगा। जब भी वह ठीक समझता हमें आदेश देता—अब ठहराओ, अब घसीटो, अब शिखरपालो को हवा के सामने करो और अब उनमें हवा भरने दो, अब जिब लगाओ और अब लपेटो, आदि।

हमारे कप्तान ने कुछ आदेश दिये लेकिन जब विल्सन ने प्रेम से पिता की तरह समझाते हुए, "अरे नही कप्तान टी—, अभी उस पर जिब मत लगवाओ', या, "अभी कुछ देर रुक कर टहराना!' उसके आदेशो के विरुद्ध आदेश देने शुरू कर दिये तब हमारा कप्तान चुप हो गया। इस बात मे हमें कोई एतराज नहीं था। विल्सन दयालु स्वभाव का बूढा आदमी था और हमसे इतने बढावा देने वाले और खुशगवार लहजे में बोल रहा था कि सब काम ठीक होते गये। दो–तीन घन्टे तक बेलन चरखी पर अविरत परिश्रम करने और पूरी ताकत से "यो हो" करने के बाद हम एक लगर डालने में सफल हो सके, वह भी तब जब "लोरियट" के

मोरे का छोटा लगर उसमे बाध लिया गया। यह करने के बाद हमने अपनी लगर-जंजीर ठीक की और जल्दी ही दूसरा लगर भी डाल दिया जो कि बन्दरगाह की ओर आधो दूर तक चला गया था।

"अब", विल्सन ने कहा, "मैं आपको बढिया जगह दिलवाता हूँ"; और दोनों शिखरपाल तानने के बाद वह हमारे जहाज का कुछ नीचे ले गया और बडे शानदार तरीके से लगर डलवा दिया। हमने जहाँ लगर डाला था वहा से ठीक सामने खालो का वह मकान था जिसका इस्तेमाल हमें करना था। यह सब करने के बाद वह विदा हो गया। हमने अपने पाल लपेटे और तब हमे नाश्ता दिया गया जिससे हम बहुत खुश हुए क्योकि हम कठिन परिश्रम कर के चुके थे और समय भी बारह के आस-पास हो गया था। नाश्ते के बाद से रात तक हम नावो को उतारने और जहाज को बाधने मे लगे रहे।

सपर के बाद हम दो मल्लाह कप्तान को नाव में बैठा कर "लैगोडा" जहाज पर ले गये। पास आने पर उसने अपना नाम बताया और गली में खडे "लैगोडा" के मालिम ने अपने कप्तान से पुकार कर कहा—"सर! कप्ता टो-आपसे मिलने आये हैं!" "क्या वह अपना जहाज भी साथ ही लाया है?" उस मुहफट बूढे कप्तान ने यह बात इतने जोर से कही कि पूरे जहाज में उपस्थित सभी लोगो ने सुन ली। यह सुनकर हमारा कप्तान निष्प्रभ हो गया, और शेष यात्रा में हम नाविक लोग इस मजाक को बराबर दुहराते रहे।

कप्तान नीचे केबिन में चला गया, और हम अगले हिस्से मे पहुच कर नीचे अगवाड मे झाकने लगे। हमने देखा वहाँ मल्लाह सपर खा रहे थे। जैसे ही उनकी नजर हम पर पडी वे बोले, "आओ साथी मल्लाहो! नीच आ जाओ!" नीचे पहुचने पर हमने देखा उनका अगवाड बडा, ऊँचा और रोशनी वाला था। मल्लाहो की संख्या बारह-चौदह के लगभग रही होगी। वे टबो और तसलो में खा रहे थे और अपनी चाय पी रहे थे, और एकदम आजाद बदो की तरह हस-बोल रहे थे।

हमें अपने जहाज के छोटे और अधेरे अगवाड और मुट्ठी भर असतुष्ट नाविकों की याद आयी और हमें लगा ये लोग हमारे मुकाबले कितने मजे में हैं। आज शनिवार की रात था और वे हफ्ते का अपना काम निपटा चुके थे। चूंकि उनका जहाज आराम से बधा हुआ था इसलिए अब सोमवार से पहले उनक पास कोई

काम नही था। दो साल की जानलेवा नौकरी के बाद—उन्होने इस अरसे में कैलिफोर्निया मे हर तरह के पापड बेल लिये थे—अब वे अपना नौभार प्राय पूरा कर चुके थे और एकाध सप्ताह के अन्दर बोस्टन के लिए रवाना होने वाले थे।

हम उनके पास घन्टे-सवा घन्टे रहे होगे, और इस बीच हमने कैलिफोर्निया प्रदेश के बारे मे बातें की, कि "पिलग्रिम वाले चलें!"—यह आदेश मिला और हमें अपने कप्तान के साथ वापस जाना पडा। हमे वे जीवट वाले चतुर मल्लाह लगे। कैलिफोर्निया ने उन्हे किसी कदर खस्ताहाल कर दिया था और उनके कपडो पर थेगडिया लगी हुई थी और वे घिस चले थे। वे सुयोग्य मल्लाह थे और उनकी उम्र बीस और पैंतीस के बीच की थी।

उन्होने हमारे जहाज और वहा के हाल-चाल पूछे और कोड़े लगने की घटना से उन्हे बडा आश्चर्य हुआ। उन्होने कहा जहाजो पर अक्सर परेशानियाँ तो सामने आती रहती हैं और झगडे रगडे भी होते रहते हैं लेकिन किसी मल्लाह को बाका-यदा बाँध कर कोडे लगाने की बात तो उन्होने पहली बार सुनी है।

उन्होने कहा सैन डियागो मे रविवार की छुट्टी हमेशा दी जाती है चाहे आदमी तीर पर स्थित खालो के मकान मे नौकरी करता हो या जहाज पर। प्राय: अधिकाश लोग छुट्टी मनाने कस्बे मे चले जाते हैं। हमने उनसे खालो को सुखाने और जहाज में रखने के बारे में काफी कुछ सीखा, और वे बोस्टन के नवीनतम (यानी सात महीने पुराने) समाचार जानने को बहुत उत्सुक थे। सबसे पहले उन्होने बोस्टन मे नाविको के उपदेशक फादर टेलर के हालचाल पूछे। इसके बाद बातचीत, सवालात, कहानियो और मजाको का वही दौर शुरू हुआ जो मल्लाहो के अगवाड मे हमेशा होता है लेकिन जो शायद कमरो मे सुवेशी भद्र पुरुषो के वार्त्तालाप से ज्यादा भद्दा या फोहश नही होता।

* * *

अध्याय १६

अगले दिन रविवार था, इसलिए डेको की धुलाई व सफाई करने के बाद, जब हम लोग नाश्ता कर चुके, तब मालिम ने आकर हम लोगो की एक टोली को छुट्टी मनाने के लिए तीर पर जाने की मजूरी दी। हम लोगो ने परची डाल कर इसका फैसला किया और तकदीर ने डाबा बाजू पर काम करने वाले नाविको का

साथ दिया, जिसमें मैं स्वयं भी आता था। तत्काल, जिधर देखो उधर, तैयारियाँ होने लगी। मीठे पानी की बाल्टियो (जिसकी इजाजत हमे बन्दरगाहो पर रहती थी) और साबुन की टिकियो का इस्तेमाल होने लगा। लोक पर जाने की जैकेट और पतलून निकाली जाने लगी और उन्हे झाडा-पोछा जाने लगा। नतीजा यह हुआ कि हममे से हर आदमी को बाहर निकलने के लिए एक अच्छी खासी पोशाक मिल गई। अब छुट्टी पाए हुए नाविको को तीर पर पहुँचाने के लिए एक नाव निकाली गई, और हम लोग नाव के पिछले हिस्से में उसी शान से डटकर बैठ गए जैसे भाडा देकर चलने वाले यात्री हो और तीर पर पहुँचने ही सैर करने के लिए नगर की ओर चल पड़े जो वहाँ से तीन मील दूर था।

दु ख की बात है कि व्यापारी जहाजो पर छुट्टी के दिन के लिए कोई ठीक इन्तजाम नही है। जब जहाज बन्दरगाह पर होता है तब नाविको को पूरे हफ्ते काम पर लगाए रखा जाता है। अगर उन्हे आराम या मौज के लिए कोई दिन मिलता है तो वह है रविवार और अगर उस दिन भी उन्हे तट पर जाने को न मिले तो वे कही जा ही नही सकते। मैंने एक धार्मिक प्रवृत्ति वाले कप्तान के बारे मे सुना है कि वह अपने नाविको को शनिवार के दिन दो बजे के बाद छुट्टी दे देता था। अगर जहाज के कप्तान अपने नाविको को इतना अवकाश देने को भी राजी हो जायँ तो यह एक अच्छी बात हो।

नौजवान नाविको के लिए, जिनमें से अनेक का पालन-पोषण इस तरह से हुआ रहता है कि ये इस दिन को एक पवित्र दिन मानते हैं, इस पवित्रता को भङ्ग करने का तीव्र प्रलोभन बहुत हानिकर होता है। मौजूदा हालात में यह आशा करना अनुचित है कि एक लम्बी और मुश्किल यात्रा पर लगे हुए नाविको को अगर अपनी मशक्कत और पाबन्दियो से चन्द घन्टो की आजादी मिलती है, और धरती पर पाँव रखने और समाज और मानवता की रगीनियो को देखने का अवसर मिलता है तो महज इतवार होने ही के कारण ही वे इससे इनकार कर दें। यह बहुत कुछ वैसा ही है जैसे आप किसी आदमी से यह आशा करे कि वह सैबाथ के दिन किसी जेलखाने या खड्ड से बच कर न निकले।

मुझे एक दिन के लिए ही सही, खुली हवा और चहचहाती चिडियो के बीच में रहने और जहाज के उग्र श्रम और कठोर नियम से छूट पाने और एक बार और जिन्दगी का रस लेने और खुदमुख्तार होने से जो आह्लाद मिला, उसे मैं कभी नहीं

भूल पाऊँगा। नाविक की आजादी होती तो केवल एक दिन की है, लेकिन जब तक वह बनी रहती है तब तक इसमें कोई कमी नही आ पाती। उस पर किसी की नजर नही रहती, वह जो चाहे वह कर सकता है, और जहाँ चाहे वहा जा सकता है।

सच कहूँ तो आज जीवन मे पहली बार मुझे "आजादी की मधुरता" शब्द का सही अर्थ विदित हुआ' जिसे अक्सर मैं सुनता आया था। मेरा मित्र एस-मेरे साथ था और जहाज से मुह मोड कर, खुदमुख्तारी के आनन्द की चर्चा करते, उस बीते समय की बातें करते हुए जब हम अमरीका मे बिल्कुल आजाद होकर अपने दोस्तो के बीच रहते थे, और यह योजना बनाते हुए कि जब हम फिर घर पहुचेंगे तो कहाँ-कहा जाएगे और क्या-क्या करेंगे, हम धीरे-धीरे टहलते रहे।

जब हमने इस नए नजरिए से देखा तो भविष्य कितना उज्जवल और यात्रा कितनी छोटी और सहय प्रतीत हुई, यह देख कर हमें अचरज हुआ। जिस दिन सैन पेड्रो मे नाविको के कोडे लगे थे उसके बाद की रात को जहाज के छोटे अधेरे अगवाड मे बात करते समय हमें हर चीज जैसी दिखाई दी थी, अब उसमे बिल्कुल बदली हुई दिखाई देने लगी। नाविको को समय-समय पर एक दिन की छुट्टी देना एक बडी सहूलियत है। इससे उन्हें एक दिन की बहार नसीब होती है—जो उन्हें खुशदिल और आजाद बना देती है, और जो कुछ समय के लिए उन्हे हर चीज को अकारण ही आशावादी दृष्टिकोण से देखने को प्रेरित करती है।

एस-और मैंने निश्चय किया कि जहा तक सम्भव होगा हम साथ साथ रहेंगे, यद्यपि हम यह जानते थे कि हम अपने जहाज के साथियो से भी कट कर अलग नही रह सकते। हमारे कुल और शिक्षा को जानने के कारण उन्हे इस बात का सन्देह बना हुआ था कि किनारे पहुँचने पर हम लोग भद्र पुरुषो का वेश बना लेंगे और उनके साथ रहने में शर्म महसूस करेंगे, और नाविक यह बात कभी गवारा नही कर सकते। यात्रा की समाप्ति पर आप अपनी मर्जी से चल सकते है, लेकिन जब तक आप जहाज पर हैं, तब तक किनारे पर भी आपको उनका दोस्त बना रहना होगा, नही तो जहाज पर भी वे आपके दोस्त नही रह जाएगे। चूँकि समुद्री नौकरी करने के पहले ही मुझे इससे आगाह कर दिया गया था, इसलिए मैं अपने साथ अधिक सामान नही ले गया था और दूसरो की तरह की ही मैं भी पतलून नीला जैकेट और तिनको की हैट पहनता था जिससे मैं उनसे अच्छे लोगो की सगति में

खाने से वंचित रह जाता था। उनके प्रति उपेक्षा का कोई भाव न दिखाकर मैंने उनके सारे सन्देह दूर कर दिये।

हमारी टोली का साथ एक दूसरे जहाज की टोली से हो गया और हम लोग ठेठ नाविको की तरह सबसे नजदीक पडने वाली ठर्रे की दूकान की ओर चल पडे। यह एक छोटा सा कच्चा मकान था जिसमे एक ही कमरा था और शराब, कपड़े-लत्ते और पश्चिमी द्वीप समूह की चीजें, जूते, रोटिया, फल और कैलिफोर्निया के फेरी वालो द्वारा बेची जाने वाली सभी चीजें इसी में रखी हुई थी। यह दूकान एक याकी की थी, जो मूल रूप से फाल नदी के तट का रहने वाला था और ह्वेल मछली का शिकार करने वाले एक जहाज मे चढ़कर प्रशान्त महासागर में आया था और उस जहाज को सैंडविच द्वीप पर छोडकर कैलिफोर्निया में एक पल्पेरिया (वह दूकान जिसमें किराने के सामानो के साथ साथ शराब भी बिकती है) खोलने के इरादे से चला आया था। एस—और मैं अपने साथियो के पीछे-पीछे यह सोचकर चल पडे कि उनके साथ पीने से इन्कार करना सबसे बडी गुस्ताखी होगी, लेकिन हमने यह निश्चय कर लिया कि जरा भी मौका मिलते ही हम खिसक लेंगे।

नाविकों में एक आम रिवाज है कि उनमें से हर एक अपनी बारी आने पर सबकी खातिरदारी करता है और वहाँ मौजूद हर आदमी यहां तक कि शराबखाने के मालिक तक से एक गिलास पीने का अनुरोध करता है। जब हम लोग भीतर घुसे तो कुछ देर इस बात पर हुज्जत होती रही कि पहले हम नवागन्तुक पिलाना शुरू करेंगे या कैलिफोर्निया के वे पुराने नाविक, लेकिन चूंकि मामला कैलिफोर्निया के पुराने नाविको के पक्ष में तय हुआ, इसलिए दूसरे जहाज के हर नाविक ने बारी-बारी हर नाविक को शराब पेश की और चूंकि वहा बहुत से लोग मौजूद थे (जिनमें कुछ आवारे भी शामिल हो गए थे जो वहां का रग-ढंग भांप कर चले आए थे और नाविकों की अतिथिवत्सलता का लाभ उठाना चाहते थे) और शराब भी पूरी गिलास भर कर दी जा रही थी (जो फी गिलास १२½ सैंट पडती थी), इसलिए उनकी जेबें काफी हल्की हो गईं।

अब हमारे जहाज की बारी थी और चूंकि एस—और मैं वहा से खिसकना चाहते थे, इसलिए हम लोगों से पीने का अनुरोध करने को बढे। लेकिन हमें जल्द ही पता चल गया कि यह काम आयुक्रम से ही हो सकता है—जो जितना बुजुर्ग

होगा वह उतना ही पहले, क्योकि बूजुर्ग नाविको को यह पसन्द नही था कि उनसे पहले ही चन्द नौजवानो की बारी आ जाए, इसलिए हमे अपनी बारी की प्रतीक्षा करनी पडी। इस समय हमे दो खयाल सता रहे थे। एक तो हमे उस दिन के लिए घोडे पाने मे देर हो रही थी, दूसरे हमे शराब चढ जाने का डर था, क्योकि पीना तो हर हालत मे था ही, और अगर एक के साथ पीजिए और दूसरे के साथ नही, तो इसे वह आदमी अपनी तौहीन समझता।

आखिरकार अपनी बारी पूरी करके और हर प्रकार के आभार से मुक्त होकर हम खिसक गए और निकट के घरो मे घोडे की तलाश मे गए ताकि हम घोडे पर सवार होकर आस-पास के स्थानो को देख सकें। पहले तो हमें सफलता नही मिली। उन काहिल आदमियो से अपने सवालो के जवाब में हमें एक ही उत्तर मिलता था, "कौन जाने !" हर सवाल का एक मात्र जवाब यही था।

कई बार कोशिश करने के बाद अन्ततः हमे एक लडका मिला जो कप्तान विल्सन का नौकर था और उस जगह से पूरी तरह वाकिफ था। चूंकि उसे पता था कि घोडे कहा मिल सकते हैं इसलिए उसने हमारे लिए दो सजे-सजाए घोडो का जुगाड कर दिया, जिनमें से हर एक की काठी के अगले हिस्से पर एक रस्सी लिपटी हुई थी। उन्हे एक डालर मे, जो हमें पेशगी चुकाना पडा, पूरे दिन रखा जा सकता था और साथ ही उन पर चढकर रात में समुद्र तट तक जाने की भी सहूलियत थी। कैलिफोर्निया मे घोडे बहुत सस्ते पडते हैं। अच्छे से अच्छा घोडा दस डालर से अधिक का नही पडता और खासा अच्छा घोडा तीन-चार डालर मे बिकता है। एक दिन की सवारी करने मे जीन का इस्तेमाल करने और घोडो को पकडने की परेशानी और मेहनत के लिए भी पैसे चुकाने पडते हैं। अगर आप जीन को सही सलामत वापस कर दें तो उन्हे इस बात की फिक्र नही रहती कि घोडे का क्या हुआ। हमारे घोडे जानदार थे। इस प्रदेश मे घोडो की गर्दन में पडी हुई लगाम को दबाकर उन्हे दौडाया जाता है, लगाम को खीचना या ढीला नही करना पडता। घोडो पर चढकर तेज रफ्तार से हम सैर को निकल पडे।

सबसे पहले हम उस पुराने उजडे दुर्ग पर गए, जो गाव के पास ऊची जमीन पर था और जहा से गाव दिखायी देता था। यह पुराने जमाने के दूसरे सभी स्पेनी दुर्गो की तरह आयताकार बना हुआ था और जिस ओर कमान्डर अपने परिवार के साथ रहता था उसे छोडकर इसके सभी हिस्से बिल्कुल बर्बाद हो चुके थे। वहा

केवल दो ही तोपें थीं, जिनमे से एक का मुंह कील ठोक कर बन्द कर दिया गया था और दूसरी मे कैरिज ही नही थी। बारह अधनंगे और अधभूखे से दीखने वाले सैनिको की एक रक्षक टुकडी थी, और हमने सुना था कि उनके पास एक बन्दूक तक नही है।

वह छोटी सी बस्ती दुर्ग के ठीक नीचे बसी हुई थी, जिसमे चालीस के लगभग घुमैने मकान और झोपडिया थी और दो बडी पक्की इमारतें थी। यह नगर मोटेरी या सैन्टा बारबरा से आधा भी नही है और यहां किसी तरह का काम-धाम नही होता, या होता भी है तो, नाम-मात्र को। दुर्ग से हम लोग मिशन की ओर चल पड़े जो वहा से तीन मील दूर था। वहा की जमीन बलुई थी और मीलो तक पेड जैसी किसी चीज़ का अता-पता नही था, लेकिन घास खूब उगी हुई थी और बीच-बीच में झाड झखाड भी थे, और लोगो का कहना था कि वहा की जमीन काफी उपजाऊ है।

लगभग दो मील तक बडी मजेदार घुडसवारी के बाद हमे मिशन की सफेद दीवारें दिखाई पडी और एक छोटी सी नदी को पार करने के बाद हम इसके ठीक सामने पहुच गए। मिशन की इमारत मिट्टी की या कहिए कच्ची ईंटो की है जिस पर प्लास्तर किया हुआ है। इसकी बनावट में बडी मोहकता थी। बेतरतीब बनी हुई कई इमारतें जो एक दूसरे से जुडी हुई थी, और सभी मिलकर बीच में एक चौखटा सा बनाती थी। एक छोर पर एक गिरजाघर था जो सबसे ऊंचा था और जिसमे एक बुर्ज बना हुआ था जिसमे पाच घन्टे लगे हुए थे और सिरे पर एक बहुत बडा जग खाया हुआ लोहे का सलीब बना था।

इमारतो के ठीक बाहर और दीवालो के नीचे ही बीस-तीस झोपड़िया बनी हुई थी जिन्हे सरपत और पेडो की टहनियो से छाया गया था। इनमें मिशन की सेवा में लगे हुए और उसी की छत्रछाया मे जीने वाले कुछ इन्डियन आदिवासी रहते थे।

एक फाटक से घुस कर हम, घोडो पर सवार हो, एक खुले आंगन में पहुंच गए, जिसमे मौत की सी खामोशी छाई हुई थी। एक ओर गिरजा घर था, दूसरी ओर ऊची इमारतो का एक सिलसिला था, जिनमे जालीदार खिडकिया लगी हुई थी, तीसरी ओर छोटे मकानो या दफ्तरो की कतार थी, और चौथी ओर इन्हे जोडने वाली एक ऊची दीवार से कुछ अधिक ऊची दिखाई देती थी।

हमें कोई जीवित प्राणी दिखाई नही दिया। इस आशा में, कि घोडो की टाप से लोगो की नीद टूट जायगी, हमने आगन के दो चक्कर लगाए। पहले चक्कर में हमें एक लम्बा सा सन्यासी दिखाई पडा, जिसका सिर घुटा हुआ था। वह सैंडल पहने हुए था। वह गली मे हाकर तेजी से निकल गया पर उसके चेहरे से ऐसा लगा कि उसने हमे देखा ही नही।

दो चक्कर लगाने के बाद हमने घोडो को रोक दिया और हमारी नजर छोटी इमारतो मे से एक की खिडकी से एक आदमी की आकृति पर पडी। हम घोडो पर चढे हुए ही उसके पास गए। उस आदमी ने वहा के देहातो मे पहनी जाने वाली आम पोशाक ही पहन रखी थी। उसके गले मे चांदी की एक जंजीर पडी हुई थी जिसमें चाबियो का एक बडा सा गुच्छा झूल रहा था। इससे हमने यह अन्दाज लगाया कि वह मिशन का परिचारक होगा। हम लोगो ने उसे 'मेयरडोमी' कह कर सम्बोधित किया और जवाब मे उसने जरा सा झुक कर हम लोगो से भीतर आ जाने को कहा। अपने घोडो को बाँध कर हम लोग भीतर गए।

यह एक सा सादा कमरा था जिसमें एक मेज, तीन या चार कुर्सियाँ, सन्तो की चमत्कार या बलिदान की एक दो छोटी तस्वीरें, कुछ तश्तरिया और गिलास रखे थे। स्पेनी भाषा में अभिवादन आदि के बाद उससे हमने खाने के बारे मे पूछा।

मैने, यह सोच कर कि अगर इनके पास और कुछ नही भी होगा तो भी फ्रिजोल (एक प्रकार की फली) तो होगी ही, फ्रिजोल, बीफ तथा रोटी लाने को कहा, और यह भी इशारा कर दिया कि यदि उनके पास शराब हो तो वह भी हम लेना चाहेगे। वह आगन पार करके एक दूसरी इमारत मे गया और कुछ ही मिनटो में दो इन्डियन आदिवासी छोकरो के साथ लौटा जो तश्तरिया और शराब की कुप्पी लिए हुए थे।

तश्तरियो में सिका हुआ मास प्याज और काली मिर्च डालकर तैयार की हुई फ्रिजोल फलियाँ, उबले हुए अन्डे, और मैदे की बनी हुई एक तरह की सेवइयां थी। इन सब के साथ शराब के होने से खाने में इतना मजा आया कि इतना उम्दा खाना बोस्टन छोडने के बाद हमें मिला ही नही था और सात महीने तक हमें जो कुछ खाने को मिला था उसकी तुलना मे तो यह एकदम शाही खाना था।

खाना खा लेने के बाद हम लोगो ने कुछ धन निकाला और उससे पूछा कि हमें कितना चुकाना होगा। उसने अपना सिर हिलाया और सीने पर सलीब का

चिन्ह बनाते हुए कहा कि खाने का मूल्य नही देना होगा—हम इसे प्रभु का प्रसाद समझें। हमने इसका मतलब यह लगाया कि वह खाने का मूल्य नही लेना चाहता; लेकिन पुरस्कार-स्वरूप कुछ मिल जाए तो लेने को तैयार है, इसलिए हमने उसे बारह रीयल (एक सिक्का) दिये जिन्हे उसने बडे निस्पृह भाव से जेब मे डाल लिया।

उससे विदा लेकर हम घोडो पर सवार होकर इन्डियन आदिवासियो की झोपडियो की ओर चल पडे। नग-धडंग बच्चे झोपड़ियों मे इधर से उधर दौड रहे थे, और पुरुषो की हालत भी उनसे अच्छी नही कही जा सकती थी, लेकिन औरतें सन के मोटे कपडे का एक तरह का लबादा पहने हुई थी। पुरुष अधिकतर मिशन के चौपायों को पालते थे या उसके बाग में मजदूरी करते थे। यह बाग बहुत बडा है और कई एकड मे फैला है और कहा जाता है कि उस बगीचे में उस जलवायु मे पैदा होने वाले सब से अच्छे फल भरे पडे हैं।

यहाँ की भाषा, जिसे कैलिफोर्निया के सभी इन्डियन आदिवासी बोलते है, उन सभी भाषाओ से अधिक असभ्य और अमानुषिक है जिन्हे आज तक मैंने सुना था या जिसकी कल्पना की जा सकती है। यह पूरी की पूरी बलबलाहटों की भाषा है। शब्द उनकी जीभ की नोक से निकलते हैं जिसमे दातो के बाहर और गालो मे लगातार बलबलाने की ध्वनि होती रहती है। मैंने सोचा, मोखटे-जुमा और स्वतन्त्र मेक्सिकन लोगो की भाषा यह नही रही होगी।

यहा, इन झोंपडियो में, मैने अपने जीवन का सब से बूढा आदमी देखा, और सच तो यह है कि मैं यह कभी सोचता ही नही था कि कोई आदमी इतनी अधिक अवस्था तक जीवित रह भी सकता है। वह झोपडी के एक किनारे झुका हुआ धूप में बैठा था, उसके हाथ और पाँव नगे थे, और गहरे लाल रंग के थे, चमडी इस तरह सिकुडी हुई और मलिन थी मानो झुलसा हुआ चाम हो, और हाथ पाव इतने पतले थे कि उनकी मोटाई किसी पाच साल के लडके के हाथ पाव से अधिक नही रही होगी। उसके सिर पर चन्द सफेद बाल थे, जिन्हे पीछे की ओर करके बाध दिया गया था। वह इतना कमजोर था कि जब हम उसके पास गए तब वह आहिस्ता से अपने हाथों को उठा कर चेहरे के पास ले गया, और उंगलियों से अपनी पलको को पकड कर हमे निहारने के लिये उठाया और संतुष्ट होकर उन्हे फिर गिरा लिया। लगता था उसका अपनी पलको पर कोई जोर ही

नही रह गया था। मैने उससे उसकी उम्र पूछी, लेकिन "कौन जाने ?" के अलावा कोई जवाब नही पा सका। सम्भवत उन लोगो को अपनी उम्र मालूम ही नही थी।

मिशन से लगभग सारे रास्ते पूरी रफ्तार से घोडे दौडाते हम गाव लौटे। कैलिफोर्निया के घोडे दुलकी चाल से चलते ही नही, जोकि चलने और दौडने के बीच होती है और मजेदार रहती है, क्योकि वहा न तो सडकें हैं और न परेड ग्राउन्ड, इसलिए दुलकी चाल की जरुरत ही नही पडती। उनके सवार उन्हे पूरी रफ्तार से तब तक दौडाते हैं जब तक वे थक न जाए और फिर आराम देने के खयाल से उन्हे टहलने के लिए छोड देते हैं।

तीसरे पहर की मजेदार हवा, घोडो की तेज चाल, जो लगभग जमीन पर उडते हुए से मालूम हो रहे थे, और हमारे लिए, जो इतने अरमे से जहाज में ही घिरे रह गये थे, इस रफ्तार की नवीनता और उत्तेजना, इतनी आह्लादकारी मालूम हो रही थी कि जिसका वर्णन ही नही किया जा सकता, और हमारा मन कर रहा था कि सारे दिन घुडसवारी हो करते रहे।

जब हम गाँव मे आए, तब हमे हर चीज बहुत सजीव मालूम हो रही थी। इन्डियन आदिवासी, जो इतवार को सदा छुट्टियाँ मनाया करते हैं, अपने घरो के नजदीक एक चौरस मैदान मे गेंद खेल रहे थे। बूढे लोग घेरे मे बैठे तमाशा देख रहे थे और नौजवान—आदमी, लडके और लडकियाँ—गेंद के पीछे दौड रहे थे और उसे पूरी ताकत से फेंक रहे थे। कुछ लडकिया तो शिकारी कुत्तो की तरह दौड रही थी। हर घटना और खेल के कमाल पर बूढे इतनी जोर से चीखते और ताली बजाते थे कि कान बहरे हो जाए।

अनेक नाविक घरो के बीच लडखडाते पैरो से चल रहे थे, जिससे पता चलता था कि पल्पेरियो ने उन्हे अच्छी तरह आश्रय प्रदान किया है, एक दो नाविक घोडो पर भी चढे थे, लेकिन अच्छे घुडसवार न होने के कारण, और स्पेनियो द्वारा उन्हे बदमाश घोडे दिए जाने के कारण, उन्हे घोडो ने जल्द ही नीचे फेक दिया था और इससे वहाँ के लोगो का खासा दिल-बहलाव हुआ था। खालो के घरो और दोनो मस्तूलो वाले जहाजो पर काम करने वाले आधे दर्जन सैंडविच द्वीपो के निवासी, जो निडर घुडसवार थे, जगली आदमियो की तरह चिल्लाते और हसते हुए पूरी रफ्तार से इधर उधर अपने घोडे दौडा रहे थे।

अब सूर्यास्त होने ही वाला था और एस—तथा मैं एक मकान मे गए और तीर पर जाने के पहले आराम करने के विचार से चुपचाप बैठ गए। थोड़ी ही देर में बहुत से लोग हमे—लास ऐंजेल्स के नाविको को—देखने के लिए इकठ्ठे हो गए और उनमे से एक तरुणी मेरे रूमाल पर बेतरह फिदा हो गई। यह रूमाल रेशमी था और काफी बडा था, और इसे मैने जहाज पर नौकरी करने से पहले खरीदा था। देखने मे यह उन रूमालो से अधिक खूबसूरत था जैसे रूमालो को देखने के वे आदी थे। मैंने उसे वह रूमाल दे दिया, जिससे हम लोग उनके प्रिय पात्र हो गए, और हमे कुछ नासपातिया और दूसरे फल उपहार मे दिये गए जिन्हें हम समुद्र तट तक ले आए।

जब हम लोग उस मकान को छोडने लगे तब पता चला कि हमारे घोडे जिन्हे हमने दरवाजे पर बाध कर छोड दिया था, गायब हैं। हमने उनके लिए जो पैसा चुकाया था वह तीर पर लौटने तक के लिए था, लेकिन वे अब मिल ही नही रहे थे। हम लोग उस आदमी के पास पहुँचे जिससे घोडे किराये पर लिए थे लेकिन हमारे यह पूछने पर कि "घोडे कहां हैं ?" ऊसने अपना कन्धा सिकोड लिया और केवल इतना ही कहा—"कौन जाने ?" लेकिन चू कि उसने बडे इतमीनान से हम से बातचीत की, और जीन के बारे मे कोई पूछ-ताछ नही की, इसलिये हम अच्छी तरह समझ गये कि उसे सब पता है कि घोड़े कहा है।

थोडी सी परेशानी झेलने के बाद हमने यह इरादा किया कि अब पैदल नही लौटेंगे—तीर वहा से तीन मील दूर था—हमने चार रीयल की दर से दो घोडे लिए और यह तय पाया कि एक इन्डियन लडका उनके पीछे दौडता चलेगा और उधर से घोडो को वापस ले आएगा। हमे जो परेशानी उठानी पडी थी उसके बदले मैं घोडों को जी जान से दौडाने का इरादा करके, हम लोग पूरी रफ्तार से समुद्र के किनारे की ओर लौटे और पन्द्रह मिनट में तीर पर पहुँच गए। अपनी छुट्टी को अधिक से अधिक लम्बी बनाने की इच्छा से हम खालो के मकानो के बीच वापस लौटते हुए लोगो को देखकर (अब गोधूलि की वेला हो चुकी थी) अपना जी बहलाते हुए इधर इधर घोडो पर घूमते रहे। कुछ लोग घोडो पर सवार होकर आ रहे थे और दूसरे पैदल।

सैंडविच द्वीपवासी समुद्र तट की ओर घोड़ों पर सवार चले आ रहे थे, और वे बहुत भन्नाये हुए थे। हमने उनसे अपने साथियो के बारे मे पूछ-ताछ की।

पता चला कि उनमें से दो लोग घोडो पर सवार होकर चले थे और या तो वे खुद गिर पड़े थे या उन्हे घोडो ने झटक कर गिरा दिया था । अन्ततः उन्होने उन्हे तीर की ओर आते तो देखा था, लेकिन उम्मीद यह थी कि वे आधी रात के कुछ ही पहले तीर पर पहुच पायेंगे ।

अब तक आदिबासी लडके वहां पहुँच चुके थे, इसलिए हम लोगों ने उन्हे अपने घोडे दे दिये और जब हमने उन्हे सकुशल वापस होते देख लिया तब एक नाव के लिए गुहार लगाई और जहाज पर पहुँच गए । इस तरह समुद्र तट पर हमारी छुट्टी का पहला दिन खत्म हुआ । हम लोग थक गए थे, लेकिन हमें मजा बहुत आया था और अब हम लोग अपने पुराने कामों पर अधिक तत्परता से जुट सकते थे । आधी रात के लगभग अपने दो साथियो के कारण हमारी नीद टूट गई जो बहुत जोर से झगडते हुए जहाज पर आए थे । ऐसा लगता था कि वे एक ही घोडे पर दुहरी सवारी करके वापस चले थे, और दोनों अपने गिरने का दोष दूसरे के सिर मढ रहे थे । खैर वे दोनों जल्द ही बिस्तर पर पड रहे और सो गए और सम्भवतः इस झगडे को बिल्कुल भूल ही गए, क्योकि दूसरे दिन सुबह को यह झगडा फिर से शुरू नही हुआ ।

* * *

अध्याय—१७

सोने के बाद हमारी नीद "सभी मल्लाह ऊपर आओ !" की आवाज सुन कर ही टूटी । हमने मोखे की ओर देखा तो पाया कि धूप निकल आई है । हमारी आजादी सचमुच हवा हो चुकी थी, और इसके साथ ही हम लोगो ने अपने जूते, मोजे, नीले जैकेट, रुमाल तथा तीर पर जाने के समय पहनी जाने वाली दूसरी चीजें उतारी और नाविको की पतलून, लाल कमीज, स्काच टोपी पहन कर हम खालो को निकालने और किनारे पर पहुँचाने के काम में जुट गये ।

तीन दिन तक हम लोग सुबह के धुधलके से लेकर शाम को तारे निकलने तक जी जान से काम पर लगे रहे । इस बीच हम लोगो को अगर कभी फुरसत मिलती तो वह थी दोपहर का खाना खाने की छोटी-सी छुट्टी ।

खालो को तीर पर पहुँचाने और जहाज पर चढाने की दृष्टि से सैन डियागो निश्चय ही कैलिफोर्निया का सबसे अच्छा स्थान है । बन्दरगाह छोटा है और तीन

और स्थल से घिरा है। यहा भग्नोर्मिया नही हैं। जहाज तट से एक केबिल की दूरी के अन्दर ही लगर डाल लेते हैं। खुद किनारा भी चिकना और सख्त बालू का बना हुआ है जिस पर न कोई पत्थर है न चट्टान। इन कारणों से सभी व्यापारी जहाज इसका इस्तेमाल डिपो की तरह करते हैं, और सचमुच वापसी के समय लदे हुए जहाज पर किसी खुले बन्दरगाह से तैयार खालो को बिना भग्नो मर्यों में भिगोए चढा पाना असम्भव सा हैं, और भीग जाने से खालों के एकदम बर्बाद हो जाने का अन्देशा रहता है।

हमने खालो के एक गोदाम पर कब्जा जमाया, जो हमारी फर्म का था और जिसका इस्तेमाल "कैलिफोर्निया" जहाज भी करता था। इसमें चालीस हजार खालो के अटने की जगह थी, और हम लोगों को तट छोडने के पहले इसे भर देना था। अब तक जो साढे तीन हजार खालें हम लोग लाये थे उनसे कोई बात बनती नही नजर आती थी। जहाज का कोई भी ऐसा आदमी नहीं था, जो गोदाम में एक दर्जन बार न गया हो और जिसने गोदाम में इधर-उधर निगाह न दौडा कर यह अन्दाज़ न लगाया हो कि इसे भरने में कितना समय लगेगा।

चू कि जहाज से जो खालें उतारी जाती हैं वे कच्ची और सख्त होती हैं इसलिए गोदाम के बाहर ही इनकी ढेरी लगा दी जाती है जहा उन्हें सिझाने, सुखाने व साफ़ करने के नियमित क्रम से गुजरना होता है और फिर जहाज़ पर चढ़ाने के लिए एकदम तैयार हालत में उन्हे गोदाम में भरा जाता है। यह तैयारी इसलिए जरूरी होती है कि लम्बी यात्रा के बीच और गर्म प्रदेशो से गुज़रते हुए चमडा खराब न होने पाए। इन खालो की तैयारी और देखभाल के लिए हर जहाज़ का एक अफ़सर और कुछ मल्लाह अक्सर समुद्र तट पर ही छोड दिए जाते हैं; और अब आकर हमें पता चला कि हमारे नये अफ़सर को इसी काम के लिए नियुक्त किया गया था। जैसे ही खालें उतारी गयी उसने गोदाम का चार्ज ले लिया और कप्तान ने हममे से दो तीन को वही छोडने और हमारी जगह सैंडविच द्वीप के निवासियो को पन्द्रह डालर माहवार तक देने को कहा लेकिन कोई आदमी जहाज़ पर जाने के लिए राजी नही हुआ; क्योकि कोडे लगने की घटना की खबर चारो ओर फैल गई थी और वे लोग उसे आउल माइकाइ (निकृष्ट) कहने लगे थे। इस तरह यह बात खत्म हो गयी। बहरहाल, वे किनारे पर काम करने के लिए तैयार थे और उनमें से चार को भाड़े पर रखा गया और खालों की

तैयारी के लिए रसेल महोदय के साथ छोड दिया गया ।

सारी खालें उतार लेने के बाद, हम लोगो ने अपने सारे फालतू डन्डे, रस्सियाँ पाल और वह सारा असबाब भी जिसे हम प्रतिवात दिशा के इस एक चक्कर के दौरान इस्तेमाल नही करना चाहते थे तीर पर भेज दिया । और सच कहे तो हम जितना सामान उतार सकते थे, हमने वह सब उतार दिया ताकि चमडा लादने के लिए जगह बनाई जा सके । दूसरी चीजो के साथ सूअरो का बाडा और उसके साथ ही 'बूढी बेस'' को भी उतार दिया गया । इस बूढी सुअरिया को हम बोस्टन से लाये थे और केपहार्न पर दूसरे सारे सूअर तो ठन्ड खाकर और भीगकर मर गए थे लेकिन यह बच रही थी । रिपोर्ट से पता चलता है कि वह दूसरी कुछ यात्राओ में भी रही थी । वह रास्ते भर रसोइये की लाडली रही थी, और उसने उम्दा से उम्दा चीजें खिलाकर इसे पाला था और अपनी आवाज पहचानना तथा अपने दिलबहलाव के लिए कई दूसरे विचित्र तमाशे करना सिखाया था ।

टाम क्रिगल का कहना है कि नीग्रो सूअरो को कितना प्यार करते हैं इसकी थाह पाना असंभव है, और मैं समझता हूँ कि उसका कहना सच है क्य कि जब उस बेचारे "नीग्रो'' ने सुना कि बेस को किनारे पर उतारा जाने वाला है और पूरी यात्रा के दौरान उसे उसकी देखभाल करने का मौका नही मिलेगा तो उसका तो दिल ही टूट गया । तट से समुद्र और समुद्र से तट की ओर लम्बी यात्रायें करने के दौरान, उसके लिए सान्त्वना की वही एक चीज थी ।

''चाहे मालिक टूट जायें, फिर भी हुकुम तो बजाना ही होगा !'' उसने कहा । वह कहना चाहता था, ''चाहे दिल टूट जाये'', और जब सुअरिया को नाव पर चढाया जाने लगा तब उसने भी अपना हाथ लगाया ताकि वह ज्यादा से ज्यादा आराम से चढ सके । हमें मुख्य यार्ड मे एक गरारी और रस्सी वाला यत्र मिल गया और उसके शरीर के चारो ओर एक पट्टी बाँध कर और उसमे एक हुक लगा कर हमने उसे टाँग लिया और एक दूसरे को आँख से इशारा देते हुए उसे यार्ड तक ले गये । "बस, बस ।'' मालिम ने कहा, ''यह झूला झुलाना बन्द करो । इसे नीचे उतारो ।'' लेकिन इतना स्पष्ट था, कि उसे इस मजाक में रस आया था । सुअरिया इतने जोर से चिचियाई मानो ''आसमान फटा पड रहा हो'', और बेचारे नीग्रो की आँखो से आंसू आ गए, और वह गूंगे जानवर पर तरस न खाने के बारे में कुछ बडबडाया । ''गूंगा जानवर । अगर इसे ही तुम

गू गा जानवर कहते हो, तब तो मेरी आँखें मल्लाह की आखें नही हैं।" जैक ने कहा। इसे सुनकर रसोइये को छोडकर हर आदमी हंस पडा। वह उसे नाव पर सकुशल चढाने मे ही तल्लीन था। तट पर ले जाये जाते समय रास्ते भर वह आंख गडाए उसे ही देखता रहा। तीर पर उतारे जाने के बाद उसका स्वागत उसकी जाति के एक पूरे दल ने किया, जिन्हे दूसरे जहाजो से उतारा गया था, और जिनकी सख्या बढकर कई गुना हो गई थी और जिन्होने अपना एक बडा सा साम्राज्य कायम कर लिया था।

रसोई के दरवाजे से, रसोइया सूअरो को लडते झगडते देखता रहता और जब कच्चे चमडे के टुकड़े या समुद्र के किनारे इधर उधर पडी हुई बोटी लगी हड्डियो के लिए होने वाली भिडन्त मे बेस जीत जाती तो जोर से चीख उटता और तालिया बजाने लगता। दिन में उसने तमाम अच्छी-अच्छी चीजें बचा कर रखी और उन्हे टोकरी में भर कर हम लोगो से उसे छोटी नाव में रखकर तीर पर पहुँचाने का अनुरोध करने लगा और जब मालिम ने कहा कि अगर उसने इसमें से कुछ भी नाव मे जाते देखा तो वह पहले टोकरी को समुद्र मे फेंकेगा और उसके बाद रसोइये को भी फेंक देगा, तो वह बिल्कुल बेचैन सा दिखाई देने लगा।

हम लोगो ने उससे कहा कि वह उस सुअरिया के बारे मे अपनी बीबी से भी अधिक सोचता है जो राबिन्सन ऐली मे रहती है, और निश्चय ही वह उसका ध्यान इससे अधिक ध्यान शायद ही रख पाता, क्योकि कई रातो में, अधेरा हो जाने के बाद, जब वह समझता कि उसे कोई देख नही सकता, तब एक छोटी सी नाव मे बैठकर डाड मारता हुआ अच्छे पकवानो से भरी एक बाल्टी लेकर वह किनारे पर जाता था और जैसे यूनानी पुराण कथा का नायक अपनी प्रेमिका से मिलकर रात के अधेरे मे हैलेसपोट की खाडी को तैरकर लौटता था वैसे ही वह भी वापस आता था।

दूसरे रविवार को हमारी दूसरी टोली के नाविक छुट्टी मनाने तीर पर गए और हम लोग समुद्र के किनारे पडने वाली पहली शान्त इतवार को मनाने के लिए जहाज पर छूट रहे। यहा न तो खालें लदनी थी, न दक्षिणी-पूर्वी झंझा का डर था। हम लोगो ने सुबह को अपने कपडे धोए और उनकी मरम्मत की, शेष दिन को हमने लिखने-पढने में गुजारा। हममे से कई ने "लैगोडा" जहाज से घर भेजने के लिए चिट्ठिया लिखी।

बारह बजे "आयाकुचो" ने अपने अगले शिखरपाल गिरा दिये, जो उसके रवाना होने का सकेत था। उसने अपना लगर उठाया और मुडकर खाडी के गासे की ओर चल पड़ा जहाँ से वह अपनी यात्रा पर रवाना हो गया। इस दौरान उसके नाविक दम लगा कर बेलन-चरखी पर काम करते रहे और मै लगभग एक घन्टे तक सैंडविच द्वीप के महुआ नाम के एक निवासी का सगीतमय सुर सुनता रहा।

जब मल्लाह चर्खी पर काम करते है तो उनके साथ एक आदमी हमेशा गाता रहता है ताकि वे एक साथ दम लगा सकें। गाने वाले का सुर विचित्र, ऊंचा और लम्बा होता है तथा चर्खी की स्थिति के अनुसार बदलता रहता है। इसके लिए ऊची आवाज, मजबूत फेफडो, और प्रचुर अभ्यास की जरूरत पडती है। इस आदमी का सुर बडा विचित्र और ऊचा था जो बीच-बीच में भाय-भाय बनकर रह जाता था। मल्लाहो का ख्याल था कि उसका सुर बहुत ऊचा था और उसमें बोसुन जैसी कर्कशता नही थी, लेकिन मुझे वह बहुत सुन्दर लगा। बन्दरगाह बिल्कुल खामोश था, और उसकी आवाज पहाडियो के बीच इस तरह गूंज रही थी, जैसे इसे मीलो दूर से भी सुना जा सकना हो।

सूर्यास्त के कुछ पहले समीर चल पडा और उसके साथ ही "आयाकुचो" भी अपने लम्बे नुकीले मोरो से बडी शान मे पानी को चीरता हुआ चल पडा। कुछ ही दर मे वह बन्दरगाह से बाहर निकल गया और वहा से दक्षिण की ओर चला गया। उसे कैलाओ जाना था, वहा से सैंडविच द्वीपसमूह और फिर आठ या दस माह में उसे फिर तट पर लौट आना था।

हफ्ते के अन्त तक हम लोग भी यात्रा पर चलने के लिए तैयार हो गए, लेकिन एफ—, के जो पहले हमारा दूसरा मालिम था और जिसे अपदस्थ करने के बाद अगवाड मे भेज दिया गया था, भाग जाने से, हमें एक दो दिन और रुकना पडा। जब से उसे निकाला गया था, जहाज पर उसकी हालत कुत्ते से भी बदतर हो गई थी और उसने मौका हाथ आते ही भाग निकलने की ठान रखी थी। वह पक्का नाविक भी न बन पाया था, तभी से एक अफसर की हैसियत से काम करने के कारण, मल्लाहो में से कोई उससे जरा भी सहानुभूति नही रखता था और उसमें इतनी हिम्मत नही थी कि वह उनके बीच खडा भी रह सके।

कप्तान उसे "निठल्ला" कह कर पुकारता था और कसमें खाकर कहता था

कि वह उसे बुरी तरह रौंद देगा और जब कोई अफसर किसी को रौंदने के लिए कमर कस लेता है तो समझो अब उसका कोई बचाव नही। कप्तान उसे बात-बात पर परेशान करता रहता था और जब उसने "लेगोडा" जहाज से घर जाने की इजाजत माँगी तो कप्तान ने उसे भी नामन्जूर कर दिया।

एक दिन वह समुद्र-तट पर एक अफसर के साथ गुस्ताखी से पेश आया और उसने नाव में बैठ कर जहाज पर आने से इनकार कर दिया। उसकी शिकायत कप्तान से की गई और ज्योही वह जहाज पर आया—इस समय तक उसके हाजिर होने का समय बीत चुका था—उसे जहाज के पिछले भाग में बुलाया गया और उसे बताया गया कि उसके कोडे लगाये जायेंगे। यह सुनते ही वह जहाज के डेक पर यह चिल्लाते हुए गिर पडा—"कप्तान टी—मुझे कोडे मत लगवाइये, कोडे मत लगवाइये!" और कप्तान ने उससे गुस्सा होकर और उसकी कायरता से खीझ कर उसकी पीठ पर एक रस्सी के सिरे से एक-दो सडाके लगाये और उसे आगे भेज दिया। उसे ज्यादे चोट नही आई थी, लेकिन वह डर बहुत गया था और उसने उसी रात भाग निकलने का निश्चय कर लिया।

इसका इन्तजाम उसने इतनी अच्छी तरह किया जितनी अच्छी तरह अपने जीवन मे उसने और कुछ नही किया होगा, और इस बार उसने सचमुच साहस और दूरदर्शिता का परिचय दिया। उसने अपना बिस्तर और तोशक तो "लैंगोडा" के एक नाविक को दे दिया, जो उसे इस तरह अपने जहाज पर लेकर गया जैसे वह कोई चीज खरीद कर लाया हो और इसे उसके लिए रखे रखने का वायदा किया। फिर उसने अपना सन्दूक खोला, और अपने सारे कीमती कपडो को किर-मिच के एक झोले मे रख दिया और हम में से पहरे वाले मल्लाह से कहा कि उसे आधी रात के समय पुकार ले। आधी रात को डेक पर आ कर और डेक पर किसी अफसर को न पाकर, और पिछले हिस्से में भी खामोशी छाई देखकर, उसने अपना झोला एक नाव मे उतार दिया और खुद भी बडे आहिस्ते से उसमें उतर गया, और नाव के अगले भाग मे बधी रस्सी को खोल दिया और आवाज के परे पहुँचने तक नाव को ज्वार मे खामोशी से बहने दिया, और अन्त मे डाँड़ मार कर तीर पर पहुँच गया।

दूसरे दिन जब सभी मल्लाह इकठ्ठा हुए तब एफ—का पता लगाने के लिए बडा कोहराम मचा। हम लोग निश्चय ही कुछ बताने वाले नही थे और वे केवल

इतना ही पता लगा सके कि वह अपने पीछे एक खाली पेटी छोड़ गया है, और यह कि वह नाव से भाग कर गया है, क्योंकि नाव किनारे पर सूखी पड़ी थी।

नाश्ते के बाद कप्तान शहर गया और वहां उसने उसे पकड़ने वाले को बीस डालर का इनाम देने की घोषणा की और दो दिन तक ऐसे सभी सिपाही, आदि-वासी और दूसरे लोग जिनके पास कोई दूसरा काम नहीं था, उसे ढूंढ़ निकालने के लिए घोड़े पर सवार उस इलाके को छानते रहे, लेकिन सब बेकार रहा, क्योंकि उसे इस बीच, चमड़े के गोदाम से पचास ही लठ्ठे की दूरी पर अच्छी तरह छिपा कर रखा गया था।

किनारे पर पहुँचते ही वह सीधा "लैगोडा" के खालों के गोदाम पर उसके कुछ मल्लाहों के पास पहुँचा, जो किनारे पर रह रहे थे, उन्होंने "पिलग्रिम" के रवाना होने तक उसे और उसके सामान को छिपाए रखने, और फिर कप्तान ब्राडशा से कह सुन कर उसे "लैगोडा" में ले चलने का वायदा किया।

खालों के गोदामों के ठीक पीछे झाड़-झंखाड़ के बीच एक छोटी सी गुफा थी, जिसमें घुसने का रास्ता तीर पर रहने वाले केवल दो आदमियों को मालूम था, और जो इतनी गुप्त थी कि, हालांकि जब मैं किनारे रहने को आया था,
यह मुझे दो तीन बार दिखायी गयी फिर भी मैं उसे अकेले कभी नही ढूंढ़ पाया। पौ फटने के पहले ही उसे इस गुफा में पहुँचा दिया गया था और रोटी व पानी दे दिया गया था, और वह तब तक वहां रहा जब तक कि उसने हम लोगों के जहाज को रवाना होते और खाड़ी के बाहर मुड़ते नहीं देख लिया।

शुक्रवार, सत्ताईस मार्च। कप्तान ने एफ़—को ढूंढ़ पाने की सारी आशा छोड़ देने के बाद, अब अधिक रुकना बेकार समझ कर, जहाज को खोलने का हुक्म दिया और हम लोगों ने पाल ताने, और ज्वार तथा हल्की हवा के साथ धीरे धीरे जहाज को खाड़ी की ओर बढ़ा दिया। हम लोगों ने कप्तान ब्राडशा को अपने खत बोस्टन ले जाने को दे दिये और उससे यह सुन कर हमें सन्तोष हुआ कि हम लोगों के तट से रवाना होने के पहले ही सम्भवतः वह वापस भी आजाएगा।

पाइन्ट पार करते ही हवा, जो पहले बहुत मन्द थी, अब बिल्कुल बन्द हो गई और दो दिन तक हमारे जहाज की प्रगति रुकी रही, इस पूरे समय में हम लोग तीन मील से अधिक नहीं बढ़ पाए, और दूसरे दिन के कुछ समय तक बन्दरगाह के जहाजों पर से हमारा जहाज देखा जा सकता था। तीसरे दिन लहरें उठाता

और पानी के तल को धूमिल करता हुआ ठन्डा समुद्री समीर बह निकला और सूर्यास्त तक हम लोग सैन्टजुआन से आगे निकल गए जो सैन डियागो से चालीस मील दूर है, और जिसे सैन पेड्रो के बीच का मुकाम कहा जाता है, जहाँ हमें जाना था।

अब तक हमारी नाविक शक्ति काफी क्षीण पड गयी थी। एक नाविक को तो हमने जहाज पर ही खो दिया था, दूसरे को क्लर्क बना दिया गया था, और एक तीसरा भाग खडा हुआ था, इस तरह एस—को और मुझे छोडकर केवल तीन ही योग्य नाविक रह गए थे। उनके अलावा एक बारह वर्ष का लडका भी था। इस घटे हुए और असन्तुष्ट नाविक-दल के साथ और एक छोटे से जहाज में, हमें दो वर्षो तक चौकसी रखने के मुश्किल काम से जूझते रहना था, लेकिन फिर भी कोई मल्लाह ऐसा नही था जो इस बात से खुश नही था कि एफ—भाग खडा हुआ; क्योंकि यद्यपि वह अनाडी और बेकार नाविक था लेकिन यह कोई नही चाहता था कि वह इसी तरह दबा हुआ और डरा हुआ रहकर यह नारकीय जीवन बिताये। और, दो महीने बाद सैन डियागो लौटने पर जब हम लोगो ने सुना कि उसे तत्काल "लेगोडा" मे चढा लिया गया था और वह एक नियमित मल्लाह के वेतन पर उसमें बैठकर घर चला गया, तो हमें बहुत खुशी हुई।

पाच दिन तक धीमी गति से चलने के बाद बुधवार के दिन पहली अप्रैल को हम लोग अपने नियत स्थान सैन पेड्रो पहुँच गए। खाडी उतनी ही उपेक्षित पडी थी और उतनी ही सुनसान मालूम हो रही थी जितनी पहले मालूम हुई थी। इसके मुकाबले सैन डियागो की खाडी कही सुरक्षित और शान्त थी। इसके अलावा वहा चार-चार जहाज थे जिन्हे भरने और खाली करने की क्रियाओ ने उस दृश्य को गति और रुचिरता प्रदान कर दी थी। इस दृश्य की तुलना में सैन पेड्रो की खाडी हमे बुरी ही लगी।

कुछ ही दिनों मे धीरे-धीरे खालें आने लगी और हम लोग माल को लुढकाते हुए ऊपर पहाडी पर चढाने, खालें नीचे लुढकाने और नावो को तीर पर और वहां से जहाज पर रखने के कामो मे लग गये।

जब तक हम लोग वहाँ रहे कोई खास बात नही हुई; अलावा इस बात के कि दक्षिणी-पूर्वी झंझा ने जिस दो मस्तूलों वाले मैक्सिको के जहाज को तीर से ला टकराया था और जो अब चट्टानी और रेतीले तीर पर पडा था उसकी मरम्मत

की कोशिश की गयी । हमारे बढई ने उसका मुआयना किया और यह ऐलान किया कि उसकी मरम्मत की जा सकती है, और चन्द दिनो में ही उसके मालिक प्यूब्लो मे आए, और बसन्तकालीन ऊंचे ज्वार का इन्तजार करने के बाद हमारे रस्सों, लगों और मल्लाहो की मदद से कई बार कोशिश करने के बाद उसे समुद्र में लाया गया ।

किनारे के खालो के गोदाम, के तीन आदमी, जो पहले उसके नाविक थे, अब उस पर आ गए और समुद्र तट से दूर ह पाने की संभावना पर काफी खुश मालूम हुए ।

हमारे अपने जलयान पर हर काम उसी एकरस ढग से चलता रहा । कोडे लगने की घटना के तत्काल बाद जो उत्तेजना फैली थी वह तो खत्म हो गई थी, लेकिन नाविको पर, और खास करके उन दोनो आदमियो पर, इसका असर अभी तक बना था । दोनो व्यक्तियो पर उन दोनो के अलग-अलग स्वभाव के अनुसार जो अलग-अलग ढग का जो असर हुआ था वह कम विलक्षण नही था । जान एक विदेशी था और स्वभाव का उग्र था, और जैसा कि किसी भिडन्त का भयानक दुष्परिणाम भोगने के बाद किसी भी आदमी के साथ स्वाभाविक था, यद्यपि उसका मान भंग हो गया था, फिर भी उसकी प्रमुख भावना क्रोध की थी, और वह कहता था कि अगर कभी भी उसे बोस्टन पहुँचने का मौका मिला तो वह अपना बदला जरूर चुकायेगा तभी उसे सन्तोष मिलेगा । लेकिन दूसरे आदमी के साथ बात बिल्कुल दूसरी थी । वह अमरीकी था और कुछ शिक्षित भी था, और इस घटना ने उसे बिल्कुल तोड ही दिया था ।

उसका जो घोर अपमान किया गया था वह उसके मन पर छाया हुआ था, जिसको महसूस करने में दूसरा असमर्थ था । इसके पहले वह अक्सर मजाक किया करता था, और नीग्रो लोगो के बारे में विचित्र-विचित्र कहानियाँ सुनाकर हम सबका दिल-बहलाव किया करता था—(वह एक गुलाम राज्य का रहने वाला था), लेकिन बाद में वह बहुत कम मौको पर ही मुस्कराता था, और लगता था उसकी सारी जिन्दादिली और शोखी खत्म हो गई है. उसकी केवल एक ही इच्छा रह गयी थी और वह यह कि यह यात्रा किसी तरह खत्म हो । मैने अक्सर उसे एकान में लम्बी आहे भरते देखा था, और वह जान की तुष्टि या प्रतिशोध की योजनाओ में कोई रुचि नही लेता था ।

एक पखवाड़े वहाँ रहने के बाद, जिसके दौरान एक बार दक्षिणी पूर्वी तूफान के कारण हम लोगो को समुद्र की ओर भागना पडा, और दो दिन तक समुद्र मे ही रहना पडा, हम लोग सैन्टा बारबरा के लिए रवाना हुए।

अब यह अप्रैल का मध्य था, और दक्षिणी पूर्वी तूफानो का मौसम लगभग बीत चुका था, और हर रोज दोपहर के बाद हल्की, स्थायी व्यापारी हवा, जो समुद्र के किनारे की ओर से बहती है, बहने लगी। इसके विरुद्ध, हम लोगों ने सैण्टा बारबरा—जो नब्बे मील की दूरी पर था—का रास्ता धीरे-धीरे तीन दिन में तय किया। वहा हमने लगर पर जिनेवा के बड़े जहाज को उसी स्थान पर पड़े पाया, जहा हमने समुद्र के किनारे पहले आने पर उसे पाया था। वह सैन फ्रान्सिसको से होकर आया था, और आती दफा मोटेरी में रुका था, और जल्द ही सैन पेड्रो और सैन डियागो के लिए रवाना होने वाला था और वहा से अपना नौभार लेकर वाल्परेज़ो और काडिज़ जाने वाला था।

यह एक बडा सा, भद्दा सा जहाज था और अपने मस्तूलों और डेक की बनावट के कारण किसी बूढी कुबडी औरत जैसा लग रहा था।

* * *

अध्याय—१८

अगला रविवार ईस्टर का रविवार था, और चूंकि सैन पेड्रो में कोई छुट्टी नही हुई थी, इसलिए तीर पर किनारे जाने और सैबाथ का एक बार फिर अपव्यय करने की बारी हमारी थी।

नाश्ते के तुरन्त बाद इटालियन जहाज से एक बडी नाव नीली जैकेट, सिन्दूरी रग की टोपिया और रग-बिरंगे पाजामे पहने छुट्टी मनाने तीर पर जाने वाले नाविक के दल को लेकर हमारे जहाज के पिछले हिस्से से गुजरी। वे लोग सुन्दर इटालियन माझियो के गीत गा रहे थे और रास्ते-भर मस्ती से सुर में सुर मिलाकर वे पूरे जोर से गाते ही रहे। इन गीतों में मैंने "ओ पेस्केटर डेल ओंडा" का लोकप्रिय गीत भी सुना। इसने मुझे पियानो की झकारो, ड्राइंग रूमों, तरुण गायिकाओं और दूसरी हजारो चीजो की याद दिला दी, जिनके बारे में, उस स्थिति में रहकर सोचते रहना, मुझे अजीब-सा लगा। यह सोचकर कि तीर पर पूरा दिन गुजारना मुश्किल हो जायगा, क्योकि वहा कोई स्थान ऐसा नही था, जहाँ घुड़सवारी करके जा सकते, हम लोग दोपहर का खाना खाने तक चुपचाप जहाज पर ही पड़े रहे।

फिर हम लोगों को नाव के पिछले हिस्से में बैठाकर किनारे पहुँचा दिया गया और सूर्यास्त तक समुद्र तट पर लौट आने का हुक्म दे दिया गया। तीर से हम लोग कस्बे की ओर चल पड़े।

वहां हर ओर छुट्टी का माहौल था। लोग अपने उम्दा से उम्दा कपड़े पहने हुए थे; पुरुष घोड़ों पर चढ़कर मकानों के आसपास घूम रहे थे और औरतें दरवाजों के सामने चटाइयों पर बैठी हुई थीं। एक पल्पेरिया के दालान के नीचे दो आदमी फीतों, झालरों और फूलों के गुच्छों से सजे हुए बैठे थे और वायलिन तथा स्पेनी गिटार बजा रहे थे। मोंटेरी में मैंने दमामे और बिगुल जरूर देखे थे, लेकिन उसके अलावा मैंने संपूर्ण कैलिफोर्निया में वायलिन और स्पेनी गिटार के अलावा कोई साज नहीं देखा। और मेरा ख्याल है वे इनके अलावा दूसरा कोई साज बजाते भी नहीं, क्योंकि बाद में, मैं एक बहुत बड़े फैंडेंगो में शामिल हुआ, जिसमें उन्होंने वे सारे बाजे जुटाने का प्रयत्न किया जो उन्हें मिल सकते थे, लेकिन फिर भी उसमें तीन वायलिन और दो गिटारों को छोड़कर दूसरा कोई वाद्य यंत्र नहीं था।

चूंकि दोपहर के ससय नृत्य का आनन्द नहीं लिया जा सकता था। और लोगों का कहना था कि एकाध घन्टे में ही देहात से एक सांड आनेवाला है जिसे दुर्ग वाले चौक में बांधकर उस पर कुत्ते छोड़े जायेंगे, इसलिए यह सुनकर हम लोग मकानों के आसपास मटरगश्ती करने लगे। एक अमरीकी के बारे में पूछताछ करने पर, जिसके बारे में हमें बताया गया था कि उसने कहीं शादी कर ली है, और एक दूकान कर रखी है, हमें एक लम्बी नीची इमारत दिखायी गयी, जिसके सिरे पर एक दरवाजा था और उस पर स्पेनी में एक साइनबोर्ड लगा था।

दूकान के भीतर पहुँचने पर हमें वहाँ कोई नहीं मिला और पूरी दूकान सूनी और वीरान-सी लग रही थी। कुछ मिनटों में वह दूकानदार निकलकर आया और हम लोगों से इस बात के लिए क्षमा-याचना करने लगा कि उसके पास हम लोगों के लिए कुछ नहीं है, क्योंकि पिछली रात उसके मकान पर एक फैंडेंगो का आयोजन हुआ था और लोगों ने सारी चीजें खा-पी डाली थीं।

"ओह ! ईस्टर की छुट्टी !" मैंने कहा।

"नहीं ! मेरी एक छोटी सी लड़की थी जो पिछले दिन मर गयी थी, और इस देश का यही रिवाज है !" उसने अपने चेहरे पर एक विचित्र भाव लाते हुए कहा।

इसपर मुझे बडी हैरानी हुई और मैं यह निश्चय न कर सका कि इससे क्या कहना चाहिए, इसे सान्त्वना देनी चाहिए या नही ? मैं लौटने ही लगा था कि उसने बगल का एक दरवाजा खोला और हमसे भीतर आने को कहा। यहा भी मुझे कम अचम्भा नही हुआ, क्योकि अदर पहुचकर हमने देखा एक बडे कमरे मे तीन-चार वर्ष से लेकर चौदह-पन्द्रह वर्ष की उम्र की लडकिया बैठी हैं। उन सबने एकदम सफेद कपडे पहन रखे थे और उनके सिरो पर फूलो के गजरे और हाथो में फूलो के गुच्छे थ ।

इन लडकियो के बीच मे होते हुए, जो बडे उत्साह से खेल रही थी, हम लोग उस आदमी के पीछे कमरे के अन्त मे रखी एक मेज के पास पहुँचे जिसपर सफेद मेजपोश बिछा था और उसके ऊपर लगभग तीन फुट लम्बा एक तावूत रखा था जिसमें उसकी बच्ची का शव था। तावूत के ऊपर सफेद कपड़े का और भीतर सफेद साटन का अस्तर लगा था और उस पर फूल बिखरे हुए थे ।

एक खुले दरवाजे से हमने दूसरे कमरे मे साधारण पोशाक मे कुछ प्रौढ व्यक्तियो को देखा, जबकि एक कोने में फेंकी हुई बेंचें और मेजें तथा रंगी हुई दीवारें पिछली रात के रंगारग उत्सव का स्पष्ट संकेत दे रही थी।

गेरिक की भाति मैं भी अपने को कामडी और त्रासदी उद्देश्यहीनता और बेढगेपन की स्थिति के बीच पा रहा था। अतत. मैंने उस आदमी से पूछा कि बच्ची को दफनाया कब जायेगा ? और यह बताये जाने पर कि शव-यात्रा लगभग एक घन्टे मे मिशन की ओर प्रारंभ होगी, हम लोगो ने विदा ली।

समय बिताने के लिए हम लोगो ने घोडे लिये और उन पर चढकर समुद्र के किनारे आये, जहाँ हमने तीन या चार इटालियन नाविको को घोडे पर चढकर कडी बालू पर बहुत तेज रफ्तार से इधर से उधर घोडा दौडाते पाया। हम लोग भी उनमे शरीक हो गये और यह एक अच्छा-खासा खेल मालूम हुआ। समुद्र तट पर एक मील या इससे अधिक का ही कुछ फैलाव था और घोडे चिकनी बलुई चट्टान पर समुद्र की नमकीन हवा और लहरो की निरन्तर दहाड और किनारे से टकराती हुई लहरो से पुष्ट और उत्तेजित होकर उड से रहे थे ।

किनारे से हम लोग नगर को लौटे और यह पाकर कि शव यात्रा का जुलूस चल चुका है, घोडो पर चढकर आगे बढे और मिशन के आधे रास्ते मे ही इसे पकड लिया। यहा भी उतना ही विचित्र दृश्य उपस्थित था जितना हम लोगो ने

उसके मकान पर देखा था। मैंने सोचा शव यात्रा का यह जुलूस भी खूब है और मातम वाला वह घर भी खूब था।

उस छोटे से ताबूत को आठ लडकियो ने उठा रखा था। थोडी-थोडी देर बाद जुलूस से दूसरी लडकिया दौडकर आगे आती थी और उनका स्थान लेकर उन्हे छुडा देती थी। इसके पीछे पहले की भाति सफेद कपडो और फूलो से सजी हुई लडकिया एक बिखरे-से गोल मे चल रही थी और उनकी सख्या को देखते हुए मेरा ख्याल है कि उस जगह की पाच से पन्द्रह वर्ष की सभी लडकियाँ उस जुलूस मे सम्मिलित थी। राह चलते हुए वे खेलती जाती थी और एकाएक रुकती और फिर किसी से बात करने या फूल चुनने को दौड पडती थी और फिर दौडकर ताबूत को सभाल लेती थी।

कुछ प्रौढ महिलाए भी सामान्य कपडे पहने थी और पैदल या सवार जवानो और लडको का एक जत्था उनके पीछे या अगल बगल चल रहा था जो रह-रहकर मजाक या सवालो से उन्हे छेडता चलता था।

लेकिन सबसे विचित्र बात यह थी कि दो आदमी अपने हाथ मे बन्दूकें लिये हुए ताबूत के दोनो ओर चल रहे थे जिन्हे वे लगातार भरते और हवा मे दागते चलते थे। मै कह नही सकता कि यह आयोजन भूत—बाधा को दूर रखने के लिए था या किसी और वजह से। कम से कम मै इसकी व्याख्या इसी तरह कर सका।

जब हम लोग मिशन के पास पहुँचे तो देखा कि उसका फाटक बिल्कुल खुला हुआ है और पादरी एक हाथ मे सलीब लिये सीढियो पर खडा है। मिशन बडा और उपेक्षित जैसा लग रहा था। उसकी बाहरी इमारत गिरने-गिरने को थी और हर चीज से नष्टप्राय गौरव की झलक मिल रही थी। गिरजा के दरवाजे के सामने एक बडे से पत्थर के फौवारे के चार मुहो से एक कुन्ड मे शुद्ध पानी झर रहा था और हम लोग अपने घोडो को उसमे पानी पीने के लिए छोडने ही वाले थे कि सहसा हमें यह सूझा कि हो सकता है कि यह जल पवित्र हो और हमने अपना इरादा बदल दिया।

ठीक इसी क्षण घन्टिया अपनी तीखी बेसुरी धुन में टनटना उठी और जुलूस चौक मे दाखिल हुआ। मैं जुलूस के साथ जाने और सस्कार को देखने के लिए उत्सुक था, लेकिन हमारे साथियो में से एक का घोड़ा भडक उठा था, और अपने

सवार को फेंक कर शहर की ओर भागने लगा था कि उसकी जीन में, जो सरक गयी थी, उसका एक पैर फंस गया और वह उसे तेजी से खीचता और उसकी धज्जिया उडाता आगे बढ़ा जा रहा था।

यह सोच कर कि मेरा साथी स्पेनी का एक शब्द भी नही बोल सकता, और इस भय से कि वह मुसीबत मे न पड जाये, मैं सस्कार को छोड कर उसके घोड़े का पीछा करने को बाध्य हो गया। मैंने शीघ्र ही उसे पकड लिया। वह घोड़े को गालिया देते हुए लगडा कर चल रहा था और उसने सडक पर पड़े जीन के टुकड़े इकट्ठे कर लिये थे।

घोड़े के मालिक के पास जाकर हम लोगो ने उसके साथ समझौता कर लिया और उसकी उदारता देख कर हम अचरज में पड गये। जीन के सारे टुकड़े मिल गये थे और चू कि उनकी मरम्मत हो सकती थी, इसलिए वह छ' रीयल लेकर ही सतुष्ट हो गया। हमने सोचा था कि इसके लिए हमें कई डालर देने पडेंगे। हमने घोडे की ओर इशारा किया जो पहाड की आधी चढाई पार कर गया था, लेकिन उसने "कोई बात नही" कह कर अपना सिर हिलाया। उसने हमें बताया कि उसके पास बहुत-सारे घोडे हैं।

शहर मे वापस आकर हमने मुख्य पल्पेरिया के सामने वाले चौक में बहुत बडी भीड जुडी देखी, और वहा पहुच कर पाया कि ये सभी लोग—पुरुष, स्त्रिया और बच्चे—एक जोडी छोटे मुर्गों के कारण यहा इकट्ठे हुए हैं। मुर्गे पूरे जोश से एक दूसरे पर वार कर रहे थे और लोग हसते और चिल्लाते हुए इतने उत्सुक मालूम हो रहे थे मानो लडाके इन्सान हो।

साड के बारे मे निराशा ही हाथ लगी, वह अपना रस्सा तुडा कर भाग खडा हुआ था, और अब इतना बिलम्ब हो चुका था कि दूसरा साड लाया ही नही जा सकता था। इसलिए लोग अब मुर्गों की लडाई से ही सन्तोष करने को बाध्य थे। एक मुर्गे के सिर पर चोट लग गयी और उसकी एक आँख बाहर निकल आयी। उसने हार मान ली, फिर दो बहुत बडे-बडे लडाकू मुर्गे लाये गये। इन्ही के लिए यह सारा तमाशा खडा किया गया था, दोनो छोटे मुर्गे तो लोगो को इकट्ठा करने के लिए और लडाई का समाँ बाधने के लिए लडाये गये थे।

दो आदमी, जो अपनी बाहो में मुर्गों को पकडे हुए मैदान में आये—उन्हें खुनका देते हुए और दोनो मुर्गों को लड़ने के लिए उत्साहित करते रहे। ऊची-ऊची

बाजियां लगने लगीं और अधिकांश दूसरी लड़ाइयों की तरह कुछ देर तक कोई फैसला नहीं हो सका। इन दोनों ने बहुत चुस्ती दिखायी और वे उससे अधिक अच्छा और ज्यादा देर तक लड़े—जैसे और जितनी देर तक उनके मालिक लड़े होते।

अन्त में सफेद मुर्गा जीता या लाल, यह मुझे याद नहीं, लेकिन जो भी जीता, वह बड़े गर्व से "मैं आया, मैंने देखा, मैंने फतह किया" के अन्दाज में अकड़ता हुआ एक ओर चल दिया और दूसरा चारों खाने चित्त पड़ा कराहता रहा।

इस मामले के तै हो जाने के बाद हम लोगों ने घुड़दौड़ के बारे में कुछ बातें होती सुनीं, और लोगों को एक दिशा में बढ़ते देख कर हम भी उनके पीछे लग गये और एक समतल मैदान में आ निकले जो शहर के ठीक बाहर था और जिसका इस्तेमाल घुड़दौड़ के मैदान के रूप में होता था। यहां भीड़ फिर जम गयी, जमीन पर निशान बनाये गये, निर्णायकों को नियुक्त कर दिया गया और घोड़ों को एक छोर पर ले जाया गया।

दो बूढ़े भद्रपुरुषों ने, जो देखने में सुन्दर थे और जिन्हें लोग डान कार्लोस और डान डोमिंगो के नाम से पुकार रहे थे, बाजियाँ बदीं और सब कुछ तैयार था। हम लोग कुछ देर तक इन्तजार करते रहे, इस बीच हम सिर्फ घोड़ों को अपनी गरदनें इधर-उधर ऐंठते और मुड़ते देखते रहे। आखिरकार लाइनों के पास जोर की एक आवाज सुनायी दी, और वे आगे बढ़े—उनके सिर आगे को तने हुए थे और आंखें थिरक रही थीं—घोड़े और उनके सवार दोनों जी-जान से आगे निकलने की कोशिश में लगे हुए थे। घोड़े हम लोगों के पास तक इस तरह साथ-साथ आये जैसे उन्हें एक जंजीर में बांध दिया गया हो—और अगले ही क्षण हमें उनके पिछले हिस्से और हवा में उड़ते उनके पिछले खुरों के अलावा कुछ नहीं दिखायी पड़ा।

ज्योंही घोड़े मुड़े, त्यों ही भीड़ जितनी तेजी से हो सकता था, उनके पीछे और गोल की ओर भाग पड़ी। जब हम निशान से बहुत आगे तक दौड़ कर चले जाने के बाद वहां पहुंचे तो घोड़ों को धीरे-धीरे लौटते हुए पाया और सुना कि उनमें जो लम्बा और पतला-सा घोड़ा था, वह दूसरों से बहुत आगे निकल कर विजयी हुआ।

घुड़सवार हल्के-फुल्के शरीर के आदमी थे, उन्होंने गले में रुमाल बाँध रखे थे

और खाली हाथ और नगे पाव थे। घोडे देखने मे बड़े सीधे मालूम हो रहे थे। वे इतने चिकने और सुथरे नही थे जैसे हमारे बोस्टन के घुडसवारो के घोडे होते हैं। लेकिन उनके अग बहुत सुन्दर और आँखे सतेज थी। जब दौड का निर्णय हो गया और इसकी चर्चा खत्म हो गयी, तब भीड पुन छितरा गयी और नगर की ओर वापस चल पडी।

उस बडी पल्पेरिया पर लौट कर आने के बाद हमने बरामदे मे वायलिन और गिटार को अभी भी बजते हुए ही पाया जहा वे पूरे दिन बजते रहे थे। चू कि अब सूर्यास्त हो गया था, इसलिए वहा नाच शुरू हो गया था। इटालियन मल्लाह नाच रहे थे। हमारी टोली के एक मल्लाह ने पश्चिमी द्वीप-समूह का एक नाच दिखाया, जिसे देख कर आस-पास खडे लोगो का काफी दिलबहलाव हुआ। वे रह-रहकर "शाबाश", "बहुत अच्छा", "धन्य हो माझी"—चिल्ला उठते थे। लेकिन नृत्य अभी आम नही हुआ था क्योकि अभी तक महिलाओ और नगर के भद्र पुरुषो का आगमन नही हुआ था।

अपनी बडी ख्वाहिश थी कि हम वहा रूकें और नाचने की शैली देखें, लेकिन हालाँकि दिन में हम लोगो को मनचाही छूट थी; लेकिन सब के बावजूद थे तो अगवाड के अदना मल्लाह ही न! और सूर्यास्त तक समुद्र के किनारे पहुचने का हुक्म होने के कारण, हम वक्त से एक घन्टे से अधिक देर करने का साहस नही कर सकते थे, इसलिए हम लोगो ने अपनी राह ली। हमने नौका को उत्ताल तरगो के बीच से होते हुए किनारे की ओर आते देखा। बाहर घना कुहरा छाया था। कुहरा जब भी पडता है तब या तो उसके बाद या उसके पहले समुद्र का उग्र होना निश्चित है।

छुट्टी पर निकले नाविक जहाज को छोडने से पुन जहाज पर लौटने तक अपने मन के बादशाह होते है, इसलिए हम लोगो ने जहाज के पिछले भाग में यात्रियो और मल्लाहो के बैठने के बीच के स्थान पर आसन जमाया। हम इसके लिए एक-दूसरे को बधाई ही दे रहे थे कि नाव चल भी दी और हम सूखे ही रहे कि तभी एक भीमकाय तरग ने हम सब को आपादमस्तक भिगो दिया और नाव की आधी ऊंचाई तक पानी अदर भर गया। पानी के बोझ के कारण नाव की गति बहुत मन्द पड गयी थी और अब हर टकराने वाली तरंग के समाने यह ठिठक सी जाती थी। जब हम भग्नोर्मियो से गुजर कर समुद्र के गहरे पानी में पहुँचे, तब

हमारी नाव पानी के ऊपर तिर-भर रही थी और उसमें हम लोगों के घुटनों तक पानी भरा था।

एक छोटी-सी बाल्टी और अपने टोपों की सहायता से हम लोगों ने पानी उलीच कर किसी तरह उसे पार लगाया; जहाज पर पहुँचे, नावों को यथास्थान रखा, सपर खाया, कपड़े बदले, (जैसा कि अक्सर होता है) अपने उन साथियों को जो जहाज पर रह गये थे अपने सारे दिन की करतूत सुनायी और फिर धूम्र-पान के बाद अपने-अपने बिस्तरों में जा रहे। इस तरह समुद्र के तट पर हमारी दूसरी छुट्टी हुई।

मानों रविवार के खेलकूद के मुआवजे के तौर पर सोमवार की सुबह को सब को जहाज के ऊपरी लट्ठों और रस्सों में कोलतार करने के काम पर लगा दिया गया। यह काम सब लोगों में बांट दिया गया। हम लोगों ने अपने झोलों को खोला और उनमें से अपने कोलतार लगे हुए पाजामे और फ्राक निकाले, जिनका इस्तेमाल हम लोगों ने इससे पहली बार कोलतार करते समय किया था और सूरज निकलते ही कोलतार करने में जुट गये।

नाश्ते के बाद हम लोगों को यह देख कर बड़ा सन्तोष हुआ कि अपने नाविकों से लदी इटालियन जहाज की नाव किनारे पर जा रही है, जो पिछले दिन की भाँति ही बढ़िया-बढ़िया कपड़े पहने हुए हैं और मल्लाहों के गीत गा रहे हैं। तट पर ईस्टर की छुट्टी तीन दिन रहती है और कैथोलिक फर्म का जहाज होने के कारण उसके नाविक अपनी छुट्टियों का आनन्द लूट रहे थे।

बाद के दिनों में ऊपरी रस्सियों पर बैठे, कोलतार में सने और अपने नामाकूल काम में लगे हुए; हम लोग इन्हें सुबह को बड़े उत्साह से समुद्र के किनारे जाते हुए और फिर शाम को लौटते हुए देखते रहे। प्रोटेस्टेंट होने का हमें यह सुफल मिला।

न्यू इंग्लैंड में कैथोलिक सम्प्रदाय के प्रसार का कोई खतरा नहीं है; यांकियों को इतनी फुर्सत ही नहीं है कि वे कैथोलिक हो सकें। अमरीकी जहाजों के मालिकान अपने नाविकों से कैथोलिक देशों के जहाजों से एक साल में तीन हफ्ते अधिक काम लेते हैं। यांकी बड़ा दिन नहीं मनाते, समुद्र में रहने वाले जहाज के कप्तान यह जान नहीं पाते कि धन्यवाद प्रकाशन का दिन कब आता है, इसलिए मल्लाहों को एक भी त्योहार मनाने का मौका नहीं मिलता।

दोपहर के लगभग ऊपर से एक आदमी चिल्लाया—"जहाज हो!" और चारो ओर निगाह दौडाने पर हम लोगो की नजर पाइन्ट पर मुडते एक जहाज के शीर्षपालो पर पड़ी। मुडने पर पता चला कि वह सम्पूर्ण पालो का, दो मस्तूलों वाला जहाज है जिसके ऊपर याकी झन्डा लगा हुआ है। हमने अपना सितारों और धारियो वाला झन्डा जहाज पर फहरा दिया और चूंकि किनारे पर हमारे जहाज को छोड कर दूसरा कोई अमरीकी जहाज नही था, इसलिए हमें घर के कुछ समाचार मिलने की आशा हुई।

अब उसने पूरा मोड लिया और लंगर डाल दिया। लेकिन जब उसके नाविक पालो को लपेटने के लिए यार्डों पर चढे तब उनके स्याह चेहरो और डेक पर मचने वाली चिल्लपो से हम समझ गये कि यह जहाज तो द्वीपों की ओर से आ रहा है। कुछ ही देर बाद कुछ नाविक अपने कप्तान को नाव में बिठा कर हमारे जहाज पर आये और तब हमें पता चला कि वह जहाज ओआहू का है और "आयाकुचो", "लोरियट" आदि जहाजों से मिल कर कैलिफोर्निया के तट, सैंडविच द्वीपसमूह और पेरू व चिली के अनुवात तट के बीच उसी व्यापार में लगा था।

उसका कप्तान, अफसर और कुछेक नाविक अमरीकी थे—शेष द्वीपों के निवासी थे। इसका नाम "कैटेलिना" था और "आयाकुचो" को छोड कर इस व्यापार मे लगे हुए दूसरे जहाजो की तरह इस पर भी अमरीकी झन्डा लहरा रहा था। निश्चय ही यह जहाज हमारे लिए कोई समाचार नही लाया था और इससे हम लोगो को दूनी निराशा हुई, क्योकि हम लोगो ने पहले यह सोचा था कि हो सकता है कि यह वही जहाज हो जो बोस्टन से आने वाला था और जिसका हमें इन्तजार था।

यहाँ पर एक पखवाडे रहने और यहा उपलब्ध सारी खालें इकट्ठा करने के बाद हम लोग सैन पेड्रो के लिये रवाना हुए। वहा हमे वही जहाज लंगर डाले मिला जिसे निकलवाने में हमने मदद की थी। उसके नाविक-दल मे अमरीकी, अंग्रेज, सैंडविच द्वीपसमूह के निवासी, स्पेनी और स्पेनी इन्डियन आदिवासी सभी थे, और हालाकि यह जहाज हमारे जहाज से बहुत छोटा था फिर भी इस जहाज पर हमारे जहाज से तीन गुने आदमी थे, और उसे वाकई इनकी जरूरत थी क्योकि उसके अफसर कैलिफोर्निया के थे। दुनिया के किसी भी अन्य देश के जहाजों पर आदमियो की उतनी कमी नही होती जितनी अमरीकी और अंग्रेजी

जहाजो पर । अगर उस आकार का कोई यॉकी जहाज होता तो उस पर चार आदमियो का नाविक-दल रहा होता, और सभी नाविको को लगातार काम करना पड़ता। इटालियन जहाज पर तीस आदमियो का नाविक-दल था, जो "एलर्ट" से जो बाद मे समुद्र तट पर आया और लगभग उसी आकार का था, तीन गुना था, फिर भी "एलर्ट" उससे आधे समय मे ही रवाना हो जाता और वापस आकर दो लंगर डाल देता। जितने समय मे वे जंगलियो के झुन्ड की तरह एक साथ बातें करते रहे और अपनी रस्सियाँ ढूढने के लिये डेक पर इधर उधर भाग-दौड करते रहे ।

एक ही बात मे वे हमसे आगे थे । अपने गीतो से वे अपने परिश्रम को हल्का बना लेते थे । अमरीकी लोग समय और पैसे की दृष्टि से मितव्ययी होते है। लेकिन, एक राष्ट्र के रूप में, अभी वे यह नही सीख पाये हैं कि संगीत आर्थिक दृष्टि से भी लाभजनक हो सकता है ।

हम लोग अपनी लदी हुई नावो को बिना एक भी शब्द बोले और चेहरो पर असतोष का भाव लिए दूर-दूर तक खेते रहते थे, जबकि वे लोग न सिर्फ नाव खेने के श्रम को ही हल्का कर लेते थे, बल्कि अपने संगीत से उसे सुखद और उल्लासपूर्ण भी बना लेते थे । यह बात इतनी सच है कि—

गीत थके गुलाम के बेजान चप्पू को उठाता है,
और फिर झंकार के साथ उसे प्यार से गिराता है ।
जिससे सुन्दरतम समुद्र-तट की शोभा भी बढ जाती है,
और उग्रतम जलवायु सह्य बन जाती है ।

हम लोग एक हफ्ते तक सैन पेड्रो रहे और चूकि अब दक्षिणी-पूर्वी हवाओ का मौसम लगभग बीत चुका था और अब या तो खतरे का कोई डर नही था या था तो बहुत कम, इसलिए हम सैन डियागो के लिए रवाना हो गये। हमारा विचार मार्ग मे सैन जुआन मे भी रुकने का था ।

चूकि आज कल बसन्त का मौसम था इसलिए सैन पेड्रो का बन्दरगाह उसी तरह ह्वेलो से भरा हुआ था जैसे समुद्र तट के दूसरे खुले बन्दरगाह। हर वर्ष की भाति इस बार भी वसत मे ये मछलिया समुद्र-तट पर आयी थी। सैन पेड्रो और सैण्टा बारबरा में अपने आरंभिक दिनो में इन्हे बहुत चाव से देखते थे, और जब भी किसी ह्वेल का नथुना पानी के तल से ऊपर उठता देखते तो चिल्ला

उठते, "वह देखो, वहाँ ह्वेल साँस ले रही है!" लेकिन जल्द ही वे हमारे लिए इतनी आम हो गयी कि हम उनकी ओर ध्यान बहुत कम देने लगे। वे हमें अक्सर अपने बहुत नजदीक दिखायी देती थी और एक अंधेरी, कुहरे-भरी रात में जब चारो ओर निस्तब्धता छाई हुई थी और मैं लंगर की निगरानी पर तैनात था, एक ह्वेल मछली हमारे इतनी नजदीक आ गयी कि वह हमारे लंगर के रस्से से टकरा गयी और चारो ओर लहरें ही लहरें दिखाई देने लगी। ऐसा लगा कि यह भिडन्त उसे भी बहुत पसन्द नही आयी, क्योकि वह तुरन्त वहा से कतरा कर निकल गयी और काफी दूर जाकर उसने अपना नथुना बाहर निकाला।

एक बार जब हम एक छोटी सी नाव मे थे तब हमारी नाव एक ह्वेल से टकराती टकराती बच गयी। अगर यह टक्कर हो जाती तो ह्वेल ने हमारी नाव को चकनाचूर कर दिया होता और हमे आसमान में उछाल दिया होता। हम अपनी नाव मे स्पेनी जहाज पर से होकर लौट रहे थे और तेजी से चप्पू चला रहे थे जिससे वह छोटी सी नाव अबाबील की तरह भागी जा रही थी; आगे की ओर हमारी पीठ थी, (जैसा कि नाव चलाते समय हमेशा होता है) और कर्ण कप्तान के हाथ मे था जो आगे की ओर नही देख रहा था। अचानक हमें ह्वेल का नथूना अपने ठीक सामने महसूस हुआ। "नाव पीछे! जान प्यारी हो तो नाव पीछे!" कप्तान चीख उठा, और हम लोगो ने अपने चप्पू पीछे की तरफ इतनी तेजी से मारे कि नाव के चारो ओर झाग ही झाग दिखाई देने लगे। अपना सिर घुमाने पर हम लोगो ने एक बहुत बडी, रुक्ष, कूबडदार ह्वेल को तीन-चार गज की दूरी पर अपनी नाव के अगले डाबा बाजू से धीरे-धीरे गुजरते देखा।

अगर हम अपनी नाव को पीछे मोडने मे जरा भी सुस्ती दिखाते तो नाव उससे निश्चित ही टकरा जाती। हमारी नाव का माथा उसके बीचो बीच जा कर लगता। उसने हम लोगो की ओर ध्यान ही नही दिया और धीरे-धीरे आगे को बढ गयी, और हम लोगो से कुछ गज आगे जाने के बाद अपनी पूछ को हवा में ऊचे उछालकर डुबकी ले ली। वह हम लोगो के इतने नजदीक थी कि हम लोगो ने उसे अच्छी तरह देख लिया और जाहिर है कि इससे अधिक नजदीक से उसे देखने की इच्छा किसी की नही थी। वह एक घृणास्पद जीव था; उसकी चमडी खुरदरी, रोयेंदार और लोहे जैसे काले रंग की थी। इस तरह की ह्वेल स्पर्म

ह्वेलो से रग और चमडी मे बहुत भिन्न-किस्म के होती हैं और इन्हे अधिक भयंकर माना जाता है।

हम लोगो ने कुछ स्पर्म ह्वेल भी देखो, लेकिन तट पर आने वाली अधिकाश ह्वेले पच्छदार या कूबडदार होती हैं जिनका शिकार बडी मुश्किल से हो पाता है और कहा जाता है कि उनको पकडने मे जितनी परेशानी उठानी पडती है उनसे उतना तेल नही निकलता। इसी कारण ह्वेल का शिकार करने वाले जहाज उनके पीछे समुद्र तट की ओर नही जाते। एक बार हमारे कप्तान ने "लागियट" के कप्तान नाये के साथ मिलकर जो ह्वेल के शिकारी जहाज पर रह चुका था, दो नावो मे नाविको को लेकर एक ह्वेल का शिकार करने की सोची लेकिन चूकि हमारे पास सिर्फ दो ही हारपून थे और कोई ठीक ढंग के रस्से वगैरह भी नही थे इसलिए उसने यह इरादा छोड ही दिया।

मार्च अप्रैल और मई के महीनो मे ये ह्वेल सैंटा बारबरा, सैन पेड्रो आदि खुले बन्दरगाहो मे बहुत बडी सख्या मे दिखाई पडती हैं, और किनारे के आस-पास मडराती रहती हैं। कुछ मछलियाँ सैन डियागो और मोटेरी के घिरे हुए बन्दरगाहो की ओर भी बढ जाती हैं। ग्रीष्म ऋतु के मध्य में वे गायब हो जाती हैं और "किनारे से दूर" समुद्र मे दिखाई देती हैं। हमने सैन जुआन जाते समय प्रतिवात दिशा मे कुछ मील दूर जाते हुए स्पर्म ह्वेलो के कुछ बहुत अच्छे झुण्ड देखे। ये मछलियाँ अपने नथुनो से छोडी गयी फुहारो के कारण आसानी से पहचान में आ जाती हैं।

प्रशान्त महासागर के शान्त समुद्र तट पर होते हुए हम २० फैदम गहरे पानी में, एक ऊंची पहाडी के ठीक सामने, जो समुद्र के ऊपर लटकी सी लग रही थी और हमारे जहाज के रायल मस्तूल शिखर से लगभग दूनी ऊँची थी, अपना लगर डाला। यह लगरगाह इतना खुला हुआ था कि ऐसा लगता था जैसे हमने समुद्र में ही लङ्गर डाल दिया हो।

हमने इसके बारे मे "लैगोडा" के नाविको से बहुत-कुछ सुन रखा था जिनका कहना था कि यह कैलीफोर्निया का सबसे खराब स्थान है। किनारा चट्टानी है और दक्षिणी-पूर्वी दिशा में एकदम अरक्षित है। अत झन्झा के आसार दिखायी देते ही जहाजो को वहाँ से समुद्र की ओर भाग कर अपनी रक्षा करनी पडती है, और हालाकि हमें यहाँ सिर्फ बीस ही घन्टे रुकना था, और मौसम के आखिरी

दिन थे, फिर भी हमने झन्झा के आसार देखते ही समुद्र की ओर भाग चलने की पूरी तैयार कर ली।

हम अपने एजेन्ट को नाव में बिठाकर किनारे पर ले गये। वहा पहुँच कर वह तो एक चक्करदार रास्ते से पहाड़ी के पीछे छिपे मिशन की ओर चला गया और हम कप्तान के आदेशानुसार वहो रह कर उसका इंतजार करने लगे। हमें इस बात से प्रसन्नता हुई कि इस विलक्षण स्थान को ठीक से देखने का हमें अवसर मिला, और नाव को ऊपर खीच कर और उसे मजबूती से बाध कर हम लोग इस स्थान को घूम-घूम कर अच्छी तरह देख लेने के इरादे से अलग-अलग रास्तो से पहाड़ी की ओर चले।

केलिफोर्निया में सैन जुआन ही एकमात्र रूमानी जगह है। यहाँ का प्रदेश कई मील तक ऊँचा और पठारी है। यह ऊँची जमीन समुद्र तक चली गयी है और अन्त मे एक खडी पहाडी में परिणत हो गयी है, जिसके चरणो से प्रशान्त महासागर का जल निरन्तर टकराता रहता है। कई मील तक जल पहाडी का पाद-प्रक्षालन करता रहता है या उसकी उभरी हुई चट्टानो या शिखरो पर जो समुद्र में काफी भीतर तक चले गए हैं, आ आकर टक्कर मारता रहता है।

जहा हम लोगो की नाव लगी थी ठीक वही पर छोटा सा गुम या खात था जिसकी वजह से ऊँचा ज्वार आने पर समुद्र और पहाडी की तलहटी के बीच कुछ वर्ग फुटो का बलुआ घाट मिल जाता था। नाव बाधने का यही एक मात्र स्थान था। हम लोगो के ठीक सामने चार-पाच सौ फुट ऊँची साधी खडी चढाई थी। हमारी समझ मे नही आया कि इतनी ऊँची जगह से खालें उतारने या वहाँ सामान पहुँचाने का काम हम क्योकर कर सकेंगे।

एजेन्ट लम्बे और घुमावदार रास्ते से गया था फिर भी उसे बीच-बीच मे खड्डो को फलागना और खडी चढाइयो को पार करना पडा था। यह काम या तो मनुष्य ही कर सकता था या फिर बन्दर, और किसी प्राणी के बस का काम यह नही था। बहरहाल, यह हमारे सोचने की बात नहा थी, और चू कि हमे ज्ञात था कि एजेन्ट को लौटने में एक घन्टा या उससे अधिक समय लगेगा, हम लोग शंख और घोंघे बीनने और बडी-बडी चट्टानो की दरारो में भीतर तक घुसे, गरजते और फेन छोडते समुद्र का अवलोकन करते हुए इधर-उधर घूमते रहे।

मैंने सोचा, दक्षिणी पूर्वी झन्झाओ मे यहा क्या हालत होती होगी? यहा

चट्टानें उतनी ही विशाल थी जितनी नैहाएट या न्यूपोर्ट की चट्टानें, लेकिन मुझे उनकी अपेक्षा ये अधिक शानदार और उबड-खाबड लगी । इसके अलावा यहाँ आस-पास की हर वस्तु में एक भव्यता थी जो इस दृश्य को अद्भुत महिमा प्रदान कर रही थी, यहाँ एक सर्वग्राही शान्ति और एकान्तता का साम्राज्य था । मीलो तक हम लोगो को छोड कर न कोई आदमी था न आदमजाद, सुनने के लिए विराट प्रशान्त महासागर की धडकनो के अलावा दूसरी कोई आवाज नही थी ! और उस विशाल, दीवार की तरह सीधी खडी, पहाडी ने "वरुण लोक !" के अलावा अन्य सभी लोको से हमारा सम्बन्ध विच्छिन्न कर दिया था ।

मैं अपने साथियो से अलग हो गया और एक चट्टान पर बैठ गया । समुद्र इस चट्टान के ठीक नीचे भीतर तक घुस आता था और एक बहुत खूबसूरत खाडी में परिणत हो गया था जिसमें फुहारें छूट रही थी । कैलिफोर्निया के सपाट, आकर्षण-हीन बलुए-तट की तुलना में यह हिस्सा इतनी चित्ताकर्षक थी जैसे किसी वीराने मे एक विशालकाय चट्टान । उस दिन, घर छोडने के बाद शायद पहली बार मुझे सही अर्थों मे एकात-सेवन का अवसर मिला था । पहली बार मुझे इस बोध से मुक्ति मिली कि मनुष्य नामधारी जीव मुझसे बोल नही रहे तो क्या, है तो मेरे बिल्कुल पास ही । अनुकूल अवसर पाकर मेरी उदात्त प्रकृति प्रकाश मे आ रही थी । सभी बातें मेरी भावना के अनुरूप ही थी और मुझे यह जानकर परम आह्लाद हुआ कि समुद्र का कठोर और अपव्ययी जीवन मुझमें विद्यमान कवित्व और रूमानियत के तत्वो की हत्या नही कर पाया है । मैं जिस नाटक में इतने दिनो से अभिनय करता आया था उसके इस सर्वथा नूतन दृश्य के वैभव में खोया मै एक घटे तक बैठा रहा । तभी अपने साथियो की दूर से आती हुई आवाज से मेरा ध्यान टूट गया और मैंने देखा कि एजेंट को नाव की ओर वापस आता हुआ देखकर वे सब वहा इकट्ठे हो रहे थे ।

हम लोग नाव खे कर जहाज पर पहुँचे । वहाँ हमने देखा कि दीर्घ नौका नीचे उतार दी गयी है और वह माल से लगभग पूरी भरी हुई है । डिनर के बाद हम सभी छोटी नाव में बैठकर बडी नाव को रस्से के सहारे खीचते हुए किनारे गये । जब हम किनारे के पास पहुँचे तो हमने एक बैलगाडी और दो आदमियो को पहाडी के ऊचे सिरे के पास सडक पर खडे पाया । जब नाव को बाध दिया गया तब कप्तान ने पहाडी का रास्ता पकडा और मुझे और एक दूसरे नाविक को अपने

पीछे आने को कहा। हम लोग रास्ता निकालते, कूदते और हाथ टेक कर ऊपर चढते, जगली गुलाब और नासपाती की कंटीली झाडियो पर चलते हुए, चोटी पर पहुँच गए।

यहा मीलो तक, जहाँ तक दृष्टि जा सकती थी वहा तक, समतल पठारी भूमि फैली हुई थी, और सैन जुआन कैम्पेस्ट्रेनो का सफेद मिशन, जिसके आस पास कुछ इंडियन आदिवासियो की झोपडिया बनी हुई थी और जो हमसे लगभग एक मील की दूरी पर एक छोटे से खड्ड में स्थित था, वहा से दिखायी देने वाली एकमात्र आबादी था।

पहाडी के छोर के पास पहुँचकर हमने खालों के कई ढेर देखे। इडियन आदिवासी उनके चारों ओर बैठे थे। मिशन की ओर से एक या दो और बैलगाडियां धीरे धीरे चली आ रही थी और कप्तान ने हमें खालो को नीचे फेंकने का आदेश दे दिया। अब हमारी समझ में आया कि ये खालें नीचे किस तरह पहुँचेंगी : एक बार में एक खाल को चार सौ फुट की ऊंचाई से फेंकना वाकई खूब काम था। पहाडी के कगार पर खडे होकर सीधी, खडी ऊचाई से नीचे की ओर देखने पर, नाविक—

"जो समुद्र तट पर चल फिर रहे थे,

चूहों जैसे मालूम हो रहे थे, और लंगर डाले हुए हमारा ऊंचा जहाज

घट कर कुक्कुट नाव के आकार का रह गया था; और उसकी नाव बोया के आकार की हो गयी थी।

इतनी छोटी कि नजर भी न आ सके।"

इतनी ऊचाई से हमने खालो को नीचे फेकना शुरू किया। हम उन्हे अपने से अधिक से अधिक दूर फेंकने की कोशिश करते थे और चूंकि वे सभी कडी, और किताब की जिल्द की तरह मुडी हुई थी, इसलिए हवा उन्हे उडा ले जाती थी और वे कटी पतंग की तरह इधर उधर मडराती हुई नीचे पहुचती थी। चूंकि यह भाटे का समय था इसलिए खालो के भीगने का कोई खतरा नही था, और नीचे गिरते ही वहा खडे लोग उन्हें उठा लेते थे और सिर पर रखकर नाव की ओर चल देते थे।

यह दृश्य सचमुच मनोरम था। इतनी अधिक ऊंचाई; खालो को उतारना और

तट पर मकोड़े जैसे लगने वाले लोगों का लगातार चल-चलाव ! खालों की लदाई का ऐश यही था ।

कुछ खालें उन खड्डो मे अटक गयी जो सामने वाले किनारे की ओर और ठीक हमारे नीचे होने के कारण हम लोगों की दृष्टि से ओझल थे : लेकिन उन पर दूसरी खालो को निशान बाध कर फेंकने से हम उन्हे नीच फेकने मे स फ ल हो गये । अगर वे वही रुकी रह जाती तो कप्तान का कहना था कि वह किसी को जहाज पर भेजकर दो लबी पाॅल रस्सिया मगवाता और उन्हे उतारने के लिए किसी आदमी को नीचे उन खड्डो में उतारता ।

मैंने सुना था कि कुछ साल पहले एक अंग्रेजी जहाज का मल्लाह इसी सूरत से उतरा था। हम लोगो ने उधर झाँक कर देखा और सोचा कि इस काम को कोई भी नही करना चाहेगा, खास करके थोडी सी नाचीज खालों के लिए, लेकिन जब तक किसी के ऊपर कोई काम आ नही पडता तब तक उसे यह पता नहीं चलता कि वह क्या-कुछ कर सकता है, क्योकि छः महीने बाद खुद मुझे उसी स्थान पर एक जोडा टापगॅलेंट दुपेंचा पाल-रस्सियो के सहारे खड्डो में अटकी आधी दर्जन खालों को छुडाने के लिए नीचे उतरना पडा ।

खालो को नीचे फेंक कर, हम लोग फिर पीछे को लौटे और जब तीर पर पहुँचे तो नाव लद चुकी थी और रवाना होने के लिए तैयार थी । हम नाव खे कर जहाज पर गये, सारी खालें जहाज पर लादी, अपना लंगर उठाया, पाल ताने और सूर्यास्त से पहले सैन डियागो के रास्ते पर रवाना हो गए ।

शुक्रवार, आठ मई १८३५ । सैन डियागो पहुँचे । हमें यह छोटा सा बन्दर-गाह बिल्कुल निर्जन पडा मिला । "लैगोडा", "आयाकुचो", "लोरियट" और दूसरे सभी जहाज यहा से रवाना हो चुके थे और हम लोग लगभग अकेले ही थे । हमारे गोदाम को छोडकर खालो के दूसरे सभी गोदाम बन्द थे । सैंडविच द्वीप समूह के पंद्रह-बीस निवासी, जिन्होने दूसरे जहाजो के लिए काम किया था और उनके रवाना होने के पहले अपना हिसाब चुकता पाया था, तीर पर रह कर नौरोज मना रहे थे ।

एक रूसी खोजी जहाज ने, जो इस बन्दरगाह पर कई साल पहले आया था, रोटियाँ पकाने की एक बहुत बडी भट्ठी बनायी थी और जाते समय इसे यू ही बना छोड गया था । सैंडविच द्वीप के निवासियो ने इस पर कब्जा जमा लिया था

और इसे ज्यों का त्यों बना रहने दिया था। यह इतनी बडी थी कि इसमें छः से आठ आदमी तक आ सकते थे—अर्थात् यह किसी जहाज के अगवाड जितनी बडी थी। इसकी बगल मे एक द्वार बना हुआ था, और ऊपर धुआ निकलने के लिए एक सूराख बना था। वे इसमे आोआहू की चटाइया या कोई गलीचा बिछाए रखते थे और जब मौसम खराब होता था तब ऊपर का धुनाला बन्द कर देते थे। इस प्रकार उन्होने इसे अपना अड्डा बना लिया था। इस समय इसमे पद्रह-बीस आदमी थे जो वहा बिल्कुल काहिली की जिन्दगी बिता रहे थे। वे शराब पीते थे, ताश खेलते थे और मतवाले से बने रहते थे। हर हफ्ते वे एक बैल खरीद कर लाते थे जिससे उन्हे गोश्त मिल जाया करता था, और उनमे से एक आदमी हर रोज फल, शराब और रसद वगैरह खरीदने के लिए कस्बे मे जाता था। इसके अलावा उन्होने "लंगोडा" के रवाना होने के पहले उससे एक पीपा जहाजी रोटिया और एक पीपा आटा खरीद लिया था। इस प्रकार वे बडी शान-शौकत और बेफिक्री से जिन्दगी बिता रहे थे।

कप्तान टी—उनमें से तीन-चार लोगों को "पिलग्रिम" पर मल्लाह रखने के लिए बहुत उत्सुक था क्योंकि हम लोगो की सख्या बहुत कम हो गई थी। वह भट्ठी प॰ गया और उनसे बात तय करने मे एकाध घन्टा वहा बिताया। एक सुगठित सक्रिय, हृष्ट पुष्ट और बुद्धिमान मल्लाह—जो एक तरह से उनका राजा था—उनकी ओर से बोलता रहा। उसका नाम मानिनी था—उसके महत्व और प्रभाव के कारण सब उसे मिस्टर मानिनी कहते थे—और वह कैलिफोर्निया के सपूर्ण प्रदेश में विख्यात था। उसके द्वारा कप्तान ने उन लोगो के सामने पन्द्रह डालर प्रति मास और एक महीने का वेतन पेशगी का प्रस्ताव रखा लेकिन यह भैंस के आगे बीन बजाना ही सिद्ध हुआ। पैसा रहने पर ये लोग पचास डालर प्रति मास पर भी काम करने को राजी नही होते और पैसा खत्म हो जाने के बाद दस डालर प्रति मास पर भी काम कर लेते हैं।

"मि० मानिनी, आप यहाँ क्या करते हैं?" कप्तान ने पूछा।

"ओह, हम लोग ताश खेलते हैं, दारू पीते हैं; धूम्रपान करते हैं—और जो भी जी में आता है, करते हैं।"

"क्या आप जहाज पर आकर काम करना नही चाहते?"

"इस समय तो पैसा काफी है; काम करने से क्या फायदा ! पैसा खत्म ! आह ! बहुत ठीक, अब काम करो !"

"लेकिन इस तरह तो तुम्हारे पास जो पैसा हैं वह सब खर्च हो जायगा ।" कप्तान ने कहा ।

"हा ! मुझे मालूम है । धीरे-धीरे सारा पैसा खर्च हो जाएगा; तब हम खूब डट कर काम करेंगे ।"

बात बढाने से कोई लाभ नही था और कप्तान वहा से चला आया और उनका पैसा खत्म होने का इतजार करने लगा ।

हम लोगो ने अपनी खालें और चर्बी के थैले उतारे और लगभग एक हफ्ते के भीतर प्रतिवात दिशा में यात्रा करने के लिए फिर तैयार हो गए । हमने जहाज का लंगर उठाया और चलने की सारी तेयारी करने के बाद कप्तान ने उन्हे जहाज पर रखने के लिए एक बार और कोशिश की । इस बार वह सफल रहा । उसने मि० मानिनी को पटा लिया और चू कि अब उनकी जेब खाली होती जा रही थी, इसलिए कप्तान ने मि० मानिनी और तीन दूसरे लोगो को अपना बक्सा और बिस्तर लेकर जहाज पर आने के लिए राजी कर लिया । उसने जल्दी-जल्दी मुझे और एक छोकरे को अपने सामान के साथ किनारे पर खालो के गोदाम में काम करने वाले लोगो के साथ काम करने का हुक्म दे कर बुला भेजा ।

यह मेरे लिए अप्रत्याशित था, लेकिन चू कि मैं हर तरह के परिवर्तन का स्वागत करने के लिए तैयार था इसलिए हम लोग नाव पर चढकर किनारे पर पहुँच गये । जब जहाज रवाना हुआ तो मै समुद्र के किनारे खडा उसे तब तक निहारता रहा जब तक वह पाइन्ट पर जाकर अपनी दिशा मे मुड नही गया, और फिर खालो के गोदाम में चला गया जहा रहकर मुझे कुछ महीनो तक काम करना था ।

*　　　*　　　*

अध्याय—१९

मेरे जीवन का यह परिवर्तन जितना आकस्मिक था, उतना ही पूर्ण भी था । पलक मारते मैं नाविक के स्थान पर "किनारे का कबाडी' और खालें तैयार करने वाला बन गया था, लेकिन नयेपन और आजादी की वजह से यह जिन्दगी मुझे बुरी नही लगी ।

हमारा खालो का गोदाम लकडी के खुरदरे तख्तों से बना था और वह विशाल गोदाम चालीस हजार खालें रखने के लिए बनाया गया था। इसके एक कोने में एक छोटा-सा कमरा अलग बना लिया गया और उसमे चार मल्लाहों के सोने के लिए जगह कर ली गयी। धरती मैया ही हमारी शैया थी। कमरे में एक मेज थी, बरतनो, चम्मचो और प्लेटो के लिए एक छोटी-सी पेटी थी और रोशनी आने के लिए एक छोटा-सा रोशनदान बना लिया गया था। यहाँ हमने अपनी पेटियाँ रख दी, बिस्तर पटक दिये और रहने के लिए तैयार हो गये।

हमारे कमरे के ऊपर एक और छोटा कमरा था जिसमें मि० रसेल रहते थे, जो इस गोदाम के प्रमुख थे। यह वही आदमी था जो कुछ दिनो "पिलग्रिम" पर अफसर रह चुका था। उस कमरे में वह अपने एकात वैभव का आनन्द लूटता था; अकेला खाता और सोता था (और उसका अधिकतर समय इन्ही कामों में बीतता था) और साथी के नाम पर उसके पास अपनी ही गरिमा थी। छोकरे को रसोइए का काम सौपा गया। मुझे और निकोलस नामक एक विशालकाय फ्रासीसी मल्लाह को चार सैंडविच द्वीप के निवासियो के साथ खालो को सुखा कर तैयार करने का काम दिया गया। सैम, फ्रासीसी मल्लाह और मैं—हम लोग साथ-साथ कमरे में रहते थे और सैंडविच द्वीप समूह के चारो लोग काम मे और खाने में तो हमारे साथ रहते थे लेकिन आम तौर पर सोते भट्ठी में थे।

अपने नये साथी निकोलस जैसा भीमकाय आदमी मैंने अपने जीवन में नही देखा। वह जिस जहाज में मल्लाह बनकर कैलिफर्निया के तट पर आया था वह डूब गया था और अब वह विभिन्न खालो के गोदामो में खालो को सुखाने और तैयार करने का काम करता था। उसकी लम्बाई छः फुट से काफी अधिक थी और हाड इतना चौडा था कि उसे नुमाइश मे रखा जा सकता था। लेकिन उसके पैर सब से विचित्र थे। उसके पैर इतने बडे थे कि कैलिफोर्निया में उसे अपने नाप का जूता ही नही मिल सका और उसे ओआहू से अपने लिए एक जोडा जूता मंगाना पडा; और इन जूतो को भी, एडी को ठोक-पीट कर और फैला कर, वह अपने पहनने के काबिल बना पाया।

उसने मुझे खुद सुनाया कि एक बार गुडविन सैंड्स पर, वह जिस दो मस्तूलों वाले अमरीकी जहाज में था, वह नष्ट हो गया और उसे लन्दन-स्थित काउंसल में भेजा दिया गया। उस समय न उसकी पीठ पर कोई कपड़ा था और न

पैर में जूता। जनवरी के महीने में वह तीन-चार दिन तक लन्दन की गलियों में बिना जूते के मारा-मारा फिरता रहा, अन्त में काउसन ने उसे एक जोड़ा जूता बनवा कर दिया। उसकी शक्ति उसके विशाल आकार के अनुपात में थी और मूर्खता शक्ति के अनुपात में—"बैल की तरह शक्तिशाली, और जितना शक्तिशाली उतना ही मूर्ख।" पढ़ने-लिखने के नाम पर उसके लिए काला अक्षर भैंस बराबर था।

लड़कपन से ही वह समुद्री जीवन बिताता आया था और सभी तरह की नौकरियां कर चुका था तथा—व्यापारी जहाज, युद्ध पोत, निजी पोत और गुलामों को व्यापार करने वाले—सभी प्रकार के जहाजों पर काम कर चुका था। सचाई तो यह है कि उसके अपने बारे में दिये गये हवाले से, और कालांतर में मुझ से अच्छी जान-पहचान हो जाने पर उसके खुद के कबूल करने से, मुझे पता चला था कि वह गुलामों के व्यापार से भी बुरे काम कर चुका था।

साउथ कैरोलिना के चार्ल्सटन नामक कस्बे में एक बार उस पर हत्या के अभियोग में मुकदमा चला था, और यद्यपि उसमें वह बरी कर दिया गया था, फिर भी उसके मन में ऐसा डर बैठ गया था कि वह फिर कभी संयुक्त राज्य अमरीका में अपना मुंह दिखाने को तैयार नहीं था। मैं लाख कोशिश करने पर भी उसे यह समझाने में असफल रहा कि अब वहां जाने में उसे कोई खतरा नहीं है, क्योंकि एक ही अपराध के लिए उस पर दुबारा मुकदमा नहीं चलाया जा सकता। उसका कहना था कि एक बार भग्नोर्मियों से सकुशल बच आया है और इतना अनाड़ी मल्लाह वह नहीं है कि उनमें अपनी नाव दुबारा ले जाय, और मुफ्त का खतरा मोल ले।

यह जानते हुए भी कि वह किस तरह की जिन्दगी गुजार चुका है, मुझे उससे जरा भी डर नहीं लगा। हम दोनों में बड़े चैन की छनी और यद्यपि मेरे मुकाबले वह कहीं तगड़ा और लम्बा-चौड़ा था फिर भी वह मेरे शिक्षित होने, और जहाज पर आने के पहले की मेरी स्थिति से परिचित होने, के कारण मेरा लिहाज करता था।

"मैं तुमसे दोस्ती निभाऊंगा", वह मुझसे कहा करता था, "क्योंकि नहीं तो तुम एक न एक दिन कप्तान बन कर यहां आओगे और तब मेरा कचूमर निकाल दोगे।" मेल से रहने के कारण हमारे अफसर के होश भी ठिकाने रहे

क्योकि स्पष्ट ही वह निकोलस से डरता था और हमे सिर्फ तभी हुक्म देता था जब हम खालो का सुखाने वगैरह के काम मे लगे होते थे। हा सैंडविच द्वीपसमूह के साथी मल्लाहो के बारे मे यहा कुछ बता देना उपयुक्त ही होगा।

पिछले अनेक वर्षों से कैलिफोर्निया और सैंडविच द्वीपसमूह के बीच प्रचुर मात्रा में व्यापार होता आया है, और अधिकांश जहाजो पर इन द्वीपो के मल्लाह काम करते हैं। प्राय ये किसी प्रकार के कागजात वगैरह पर दस्तखत नही करते, इस लिए जब मन मे आता है तब नौकरी छोड देते हैं, और सैन डियागो के गोदामो मे खालो को सुखाने और तैयार करने की मजदूरी कर लेते हैं। अगर तट पर व्यापार करने वाले अमरीकी जहाजो में मल्लाहो की कमी हो जाती है तो ये उनकी जगह नौकरी भी कर लेते है।

इस तरह उनकी एक छोटी-मोटी बस्ती ही बस गयी है और सैन डियागो को उनका प्रमुख कार्यालय समझना चाहिए। हाल ही में इनमें से कुछ मल्लाह "आयाकुचो" और "लोरियट" मे चले गये थे, और मि० मानिनी और तीन दूसरे मल्लाहो को "पिलग्रिम" पर ले लिया गया था, इसलिए अब अधिक से अधिक बीस लोग वहाँ रह गये थे। इनमे से चार "आयाकुचो" के गोदाम पर तनख्वाह पर काम कर रहे थे और बाकी भट्ठी पर शात भाव से अपने दिन गुजार रहे थे क्योकि उनका धन अब समाप्तप्राय हो चला था और किसी नये जहाज के आने और नयी मजदूरी मिलने तक उन्हे इसी धन मे काम चलाना था।

मैं जिन चार महीनो मे तट पर रहा उनमें मैंने उन सब से अच्छा परिचय प्राप्त कर लिया और उनकी भाषा, आदतो और चरित्रों का अध्ययन करने मे मैने बडे परिश्रम से काम लिया। मैने उनकी भाषा जबानी ही सीख सका क्योकि उनके पास किताबें नही थी यद्यपि उनमे से अनेक लोगो ने घर पर रह कर प्रचारको से पढना-लिखना सीखा था। वे टूटी-फूटी अंग्रेजी बोलते थे और कई भाषाओ के मेल से एक भाषा बना ली गयी थी जिसे तौर पर सभी लोग समझ लेते थे।

सैंडविच द्वीपसमूह के निवासियो को इस लम्बे नाम से नही पुकारा जाता बल्कि सपूर्ण प्रशात महासागर मे गोरे लोग उन्हे "कनाका" के नाम से पुकारते हैं। यह उनकी अपनी भाषा का शब्द है, और वे इसका प्रयोग अपने लिए तथा दक्षिण समुद्र के द्वीपों के निवासियो के लिए करते हैं। यहाँ रहने वाले गोरे लोगो के लिए

वे "हाग्रोल" शब्द का प्रयोग करते हैं। कनाका शब्द बहुवचन भी है और एकवचन भी।

उनकी अपनी भाषा में उनके नाम ऐसे होते हैं जिनका उच्चारण करना और उन्हे याद रखना कठिन होता है इसलिए अक्सर उन्हे उन्ही नामो से पुकारा जाता है जो जहाजो के कप्तान या मल्लाह उन्हे दे देते हैं। कुछ लोगो के नाम उनके जहाज पर रख दिया जाता है, और कुछ को जैक, टाम, बिल आदि के नाम से पुकारा जाता है, और कुछ के नाम कल्पना से रख दिये जाते हैं, जैसे बैन-वैन, फोर-टाप, रोप यार्न, पेलिकन आदि। हमारे गोदाम में जो चार लोग काम कर रहे थे उनमे से एक का नाम "मिस्टर बिघम" था। उसका यह नाम ओआहू के मिशनरी के ऊपर पड गया था। दूसरे आदमी का नाम होप था—कारण वह "होप" नामक जहाज पर काम कर चुका था। तीसरे आदमी का नाम उसके पहले कप्तान पर टाम डेविस पड गया था। चौथे आदमी का नाम पेलिकन था क्योंकि यह कल्पना की जाती थी कि उसकी शक्ल इस चिडिया से मिलती जुलती है। अन्य मल्लाहो के नाम लँगोडा जैक और कैलिफोर्निया बिल आदि थे।

लेकिन उन्हे चाहे जिन नामो से पुकारा जाय, इसमें कोई शक नही कि इससे पहले इतने दिलचस्प, चतुर और उदार लोगो से मेरा साबका नही पडा था। उन सभी से मुझे गहरा लगाव हो गया था, और उनमें से अनेक के प्रति मेरे मन में आज भी इतना अनुराग है कि मैं एक लम्बा फासला तय कर के उनसे मिलने जा सकता हूँ। दरअसल, मै हमेशा किसी भी आदमी मे सिर्फ इसी लिए रुचि लेता रहूँगा कि वह सैंडविच द्वीपसमूह का निवासी है।

टाम डेविस लिख-पढ सकता था और उसे सामान्य गणित भी आता था। वह संयुक्त राज्य अमरीका हो आया था और अग्रेजी खासे अच्छे ढंग से बोल लेता था। उसकी शिक्षा कैलिफोर्निया के तीन चौथाई याकियो से बुरी नही हुई थी और अदब-कायदे व उसूलो की नजर से वह उनसे कही अच्छा था। वह इतना जहीन था कि अगर कोई सिखाता तो वह नौविज्ञान तथा अनेक विज्ञानो के तत्वो को बडी आसानी से सीख सकता था।

बूढा मि० बिघम अग्रेजी बहुत कम—नाम मात्र को -बोलता था। वह लिखना-पढना नही जानता था लेकिन वह दुनिया का सबसे नेकदिल बूढ़ा था। वह ५८.स ८ र्ष से ऊपर का रहा होगा और जब सैंडविच द्वीपसमूह का महान राजा

तामामाहा मरा तब उसके माँ-बाप ने शोक-प्रदर्शन के लिए अपने इस पुत्र के सामने के दो दाँत निकलवा दिये थे। हम उसे छेड़ने के लिए कहा करते थे कि कप्तान कुक को खाने मे उसके दोनो दाँत टूट गये थे। सिर्फ यही एक ऐसी बात थी जिस पर वह भडक उठता था। यह सुन कर वह हमेशा जोश में आ जाता था; और कहता था—

"नही ! मैंने कप्तान कुक को नही खाया। मैं इतना छोटा—इतना ऊंचा—नही ! मेरे बाप ने कप्तान कुक को देखा। मैंने तो देखा तक नही !"

उन लोगो मे से कोई भी कप्तान कुक की चर्चा नही चलने देना चाहता था, क्योंकि सभी नाविको का विश्वास था कि कप्तान कुक को नरभक्षी लोग खा गये थे जब कि कनाका लोग इस प्रकार के व्यग्यों को सहन नही कर पाते थे—

"न्यूजीलैंड के कनाका गोरो को खाते हैं—सैंडविच द्वीप के कनाका नही। सैंडविच के कनाका तो तुम लोगों की तरह ही होते है !"

उन लोगो में मिस्टर बिंघिम का दरजा पिता के बराबर था, और सभी लोग उसकी इज्जत करते थे, यद्यपि उसके पास शिक्षा और शक्ति की कमी थी जिसके कारण मिस्टर मानिनी का कनाकाओ पर प्रभुत्व था। मै इस बूढे आदमी से घन्टो तक तामामाहा, जिसे सैंडविच द्वीपसमूह का शार्लमाने कहा जाता है, और उसके पुत्र और उत्तराधिकारी रीहो रीहो—जिसकी मृत्यु इंग्लैंड मे हुई थी और जिसका शव कप्तान लार्ड बाइरन "ब्लौडी" नामक युद्धपोत मे ओग्राहू लाया था, और जिसके अंतिम संस्कार की उसे अच्छी तरह याद थी—बातचीत करता रहा हूँ। इसके अलावा हम इस विषय पर भी बातें करते थे कि उसके बचपन में उसके देश में क्या रीति-रिवाज थे और मिशनरियो ने उनमे क्या-कुछ परिवर्तन किया था।

वह इस मान्यता का कट्टर विरोधी था कि उसके प्रदेश मे नर-भक्षण होता रहा है; और सचाई यह है कि ऐसे सहृदय, चतुर और सभ्य मानवो की जाति के बारे में यह कहना, कि कुछ ही दिनों पहले उनके अपने ही देश मे मनुष्य-भक्षण जैसी बर्बर प्रथा प्रचलित थी, उसकी तौहीन करना ही था। विश्व की किसी भी जाति के इतिहास में इतना त्वरित विकास देखा ही नही जा सकता। इन लोगो में से किसी के भी हाथ में मैं अपना जान—माल सौंप सकता था; और वाकई अगर मुझे किसी प्रकार की सहायता की आवश्यकता पडती या मैं अपने मित्रो से अपने

लिए कोई कुर्बानी चाहता तो मैं तट पर पाये जाने वाले अपने देशवासियों के पास जाने की बजाय इन्हीं लोगों की शरण में जाता, और मुझे आशा थी कि जितनी देर में मेरे देशवासी ऊंच-नीच ही सोचते रहते उतनी देर में ये लोग मेरा काम पूरा भी कर देते।

उनके रीति-रिवाज और आपसी व्यवहार से एक सरल, आदिम सदाशयता टपकती है, जिसे देखकर हर्ष होता है, और अपनी जाति के लोगों पर क्षोभ होता है। उनमें से अगर किसी एक के पास कोई चीज है तो वह सबकी है। धन, भोजन, वस्त्र—यहाँ तक कि पाइप में रखा जाने वाले तम्बाकू का अंतिम हिस्सा भी—सभी चीजों का उपयोग वे मिल-बांट कर करते हैं। एक बार एक यांकी व्यापारी ने मि० बिघिम को अपना पैसा अपने व्यक्तिगत उपयोग के लिए रख छोड़ने की सलाह दी थी, तब मैंने मि० बिघिम को उसे लताड़ते हुए सुना था—

"नहीं! हम तुम्हारी तरह नहीं हैं। मान लो किसी के पास पैसा है, वह पैसा सब का है। तुम्हारे यहाँ—किसी के पास पैसा है—तो वह पेटी में ताला बन्द करके रखेगा—कितनी बुरी बात! कनाका लोग सब एक हैं!"

अपने इस उसूल के वे इतने पक्के हैं कि कोई भी आदमी अपनी चीज सबको बांटे बिना सबके सामने नहीं खायेगा। मैंने देखा एक आदमी को एक बिस्कुट दिया गया, और हालांकि उन दिनों तीर पर खाने की चीजों की कमी के कारण लोगों को बहुत कम चीजें मिल रही थीं, फिर भी उसने उस बिस्कुट को तोड़ कर उसके पांच हिस्से किये, और खुद एक ही हिस्सा खाया।

उन सब में होप नामक आदमी मुझे विशेष प्रिय था। वह अफसरों और नाविकों को और संपर्क में आने वाले सभी लोगों को बेहद पसन्द आता था। वह एक छोटा सा, चतुर और उदार प्रकृति का मनुष्य था और यद्यपि मैं उसे एक साल से अधिक समय से जानता था और गोरे लोग उस पर रौब गांठ लेते थे, व जहाज के असभ्य अफसर उसे गाली तक दे लेते थे, फिर भी मैंने उसे कभी क्रुद्ध होते हुए नही देखा था। वह हमेशा सभ्यता से पेश आता, काम करने को तत्पर रहता था और कृतज्ञता उसके स्वभाव में प्रचुर मात्रा में थी। एक बार वह बीमार पड़ा और कप्तान या किसी अफसर ने उसके लिए कुछ नहीं किया तब मैंने उसकी तीमारदारी की थी और जहाज की पेटियों में से उसे दवाएँ दिलवायीं थीं, और इस बात को वह कभी नहीं भूला।

हर कनाका का एक खास दोस्त होता है जिसे वह अपने से अभिन्न समझता है और उसके लिए कुछ भी कर गुजरना अपना कर्त्तव्य समझता है, उसके साथ उसका एक समझौता सा होता है कि आक्रमण और प्रतिरक्षा के समय वे एक-दूसरे का साथ देगे। अपने उस मित्र के लिए वह कनाका बडी से बडी कुर्बानी दे सकता है। इस दोस्त को वे "ऐकाने" कहते हैं, और होप ने मुझे अपना ऐकाने बनाया था। मैं सोच ही नही सकता कि उसके पास कोई चीज होती और मेरे माँगने पर वह मुझे न देता। इसके बदले मे अमरीकी लोगो के बीच में मैं हमेशा उससे दोस्ती निभाता था। मैं उसे अक्षरो और अंकों का ज्ञान कराता था क्योंकि पढना लिखना सीखने से पहले ही उसने अपना घर छोड दिया था।

वह बोस्टन (वे सयुक्त राज्य अमरीका को इसी नाम से पुकारते थे) के बारे में बहुत-कुछ जानना चाहता था। वहा के घरो और लोगो वगैरह के बारे में ढेर-सारे सवाल पूछता रहता था और इस बात पर हमेशा जोर देता था कि पुस्तको मे दी गयी तस्वीरें उसे समझायी जायें। जब मैं व्याख्या करने लगता तो वे सब बातो को इतनी तेज़ी से समझते थे कि मुझे आश्चर्य होता था। ऐसी बहुत सी बातें थी जिन्हे मैं उनकी समझ के एकदम परे समझता था लेकिन शुरू करने पर वे उन्हे एक ही क्षण में समझ जाते थे और ऐसे प्रश्न करते थे जिनसे जाहिर होता था कि मेरी बतायी हुई बात वे समझ गये हैं, और आगे जानना चाहते हैं।

मेरे पास जो अखबार थे उनके कुछ स्तभो में अगन-बोटो और रेल के डब्बो के चित्र बने हुए थे। इन्हे समझाने में मुझे सबसे ज्यादा दिक्कत पेश आयी। सडक के निर्माण, रेल की पटरियो और डब्बो के निर्माण की बाबत तो वे आसानी से समझ गये लेकिन भाप से पैदा होने वाली गति को समझना एक ऐसा विषय था जो उनके लिए बहुत सूक्ष्म था। मैंने रसोइए के तावे के बरतनो की सहायता से एक प्रयोग करके भी उन्हे समझाना चाहा लेकिन इस बारे में कुछ तो मेरा ज्ञान अपूर्ण था और कुछ बातें उनकी समझ के बाहर थी इसलिए मुझे अपने प्रयत्न में सफलता नही मिल सकी, लेकिन मुझे विश्वास है कि वाष्प शक्ति के सिद्धात के बारे मे जो-कुछ मुझे आता था उतना तो मैने उन्हे समझा ही दिया। अगन बोट के सम्बन्ध में भी यह अडचन बदस्तूर थी, और जब मैं उन्हें समझा नही पाया तो मै तथ्यो और आंकडो पर उतर आया और—इस आविष्कार के परिणामस्वरूप पानी पर कितनी तेज रफ्तार से चला जा सकता है—इसके बारे

मे ही थोडी-बहुत जानकारी दे सका। रफ्तार के बारे में टाम ने मेरी बात का समर्थन किया। वह नेंटुकेट हो आया था और न्यू बेडफोर्ड जाने वाली छोटी अगनबोट देख आया था।

मैने उन्हे दुनिया का एक नक्शा दिखाया और वे घन्टो तक उसे ध्यान से देखते रहे। जो लोग पढ सकते थे वे स्थानो पर उगली रखकर मुझसे उनकी दूरी पूछते थे। मुझे याद आता है होप के एक प्रश्न पर मुझे बडी हसी आयी थी। नक्शे मे ध्रुवो के आस-पास एक विशाल अनियत प्रदेश को यह दिखाने के लिए खाली छोड दिया जाता है कि अभी इसकी खोज नही हो पायी है। इस हिस्से पर उंगली रखते हुए उसने सिर उठाकर मेरी ओर देखा, और पूछा—बस ? खत्म ?

सडकों के नाम रखने और मकानो पर नबर डालने का क्या तरीका है, और इसकी क्या उपयोगिता है, इसे वे जल्दी ही समझ गये। अमरीका जाने की उनकी बडी इच्छा थी लेकिन केपहार्न से गुजरने की बात सोच कर ही उनकी नानी मर जाती थी। इसका कारण यह कि सर्दियो मे उन्हे बहुत कष्ट होता है और उनमे से जो लोग केप हार्न हो आये थे उन्होने वहॉ का ऐसा हौलनाक हवाला दिया था कि इनकी हिम्मत ही न पडती थी।

वे धूम्रपान बहुत करते हैं, यद्यपि एक बार मे ज्यादा तम्बाकू नही पीते। इनके पाइप बडे मुह वाले और छोटी डन्डी, या बिना डन्डी, के होते हैं। पाइप जला कर वे मुंह में लगा लेते हैं और एक लम्बा कश लगाते हैं जिससे उनका मुह धुए से भर जाता है, और गाल फूल जाते हैं। इसके बाद वे अपने मुंह और नाक से धुआ बाहर निकाल देते हैं। तब पाइप आगे बढा दिया जाता है और अगला आदमी भी उसी तरह एक कश लगाता है। इस तरह एक बार के भरे हुए पाइप से छ लोगो का काम चल जाता है।

वे यूरोपियनो की तरह रह-रह कर छोटे-छोटे कश नही खीचते, लेकिन नाविको की भाषा में यह "ओआहू कश" कनाकाओ के लिए एकाध घन्टे को काफी होता है, तब तक कोई दूसरा आदमी अपना पाइप जला लेता है और पाइप का दौर फिर शुरू हो जाता है। तीर पर रहने वाले हर कनाका के पास पाइप, चकमक पत्थर, फौलाद का टुकडा, आग बनाने का सामान और जैक चाकू जरूर रहता था और इन चीजो को वह हरदम अपने साथ रखता था।

अजनबी आदमी को इनके गाने के ढंग पर सबसे अधिक अचरज होता है।

वे एक धीमी, एकरस आवाज में गुनगुनाना शुरू करते हैं; गाते समय उनके होंठ और जीभ हिलती नही दिखायी देती और आवाज का उतार-चढाव केवल कन्ठ पर आधारित रहता है। तर्ज कोई खास नही होती और जहा तक मैं समझ पाया हूँ गीत के बोल ज्यादातर फिलबदी होते हैं। वे अपने चारो ओर के लोगो और चीजों के बारे में गाते हैं और जब वे यह नही चाहते कि उनके अलावा उनकी बात कोई और समझे तो इस उपाय का अवलम्ब ले लेते हैं, और इसमें पूरी तरह कामयाब होते हैं, क्योकि कई बार पूरी कोशिश करने पर भी मुझे उनके गीतो में एक शब्द भी ऐसा नही मिला जिसे मैं जानता रहा होऊं।

मैंने अक्सर मिस्टर मानिनी को, जो उनमे विशेष सिद्धहस्त गानुकनाकार माना जाता था, अमरीकी और अग्रेज लोगो के बीच एक-एक घन्टे तक अविरत गाते सुना था, और वहा से कुछ दूर मौजूद कनाका लोग जिस तरीके से रह-रह कर टहाके लगा रहे थे उससे स्पष्ट था कि वह अपने साथ काम मे लगे हुए विभिन्न लोगो के बारे मे गा रहा है। दूसरो की खिल्ली उडाने में ये लोग माहिर हैं और नकल उतारने मे भी इनका जवाब नही हैं। अनेक कनाका लोग हमारे अपने लोगो के खास अदाज का पता लगा कर उसकी नकल उतार कर दिखा देते थे जब कि वे खुद हमारी नजर में भी नही आयी होती थी।

तो, इन्ही लोगो के साथ मुझे कुछेक महीने बिताने थे। अगर अफसरो, फ्रॉसीसी निकोलस और मेरे साथी छोकरे को निकाल दें तो तीर की आबादी में कनाका ही कनाका थे। शायद कुत्तो को भी अपवाद मानना ही पडेगा क्योकि वे भी हमारी बस्ती मे एक खास दरजा रखते थे। शुरू मे आने वाले कुछ जहाज अपने साथ कुत्तो को भी लाये थे लेकिन बाद मे सुविधा के लिए उन्हे किनारे पर छोड गये और वहा उनकी सख्या बढती ही चली गयी।

जिन दिनो मैं तट पर था उन दिनो उनकी सख्या लगभग चालीस थी, और हर वर्ष इतने ही, या इससे भी ज्यादा, कुत्ते डूब कर मर जाते हैं या किसी और तरह से मार दिये जाते हैं। किनारे पर चौकसी रखने मे कुत्तो से बडी मदद मिलती है क्योकि रात के समय आदिवासी लोग नीचे आते डरते हैं और किसी को गोदाम से आधा मील दूर जाना हो तो सब को जगाये बिना वह ऐसा नही कर पायेगा।

जब बस्ती का पिता साचेत मरा तो मैं वहीं था। उसका यह नाम उस जहाज

के ऊपर रख दिया गया था जिसमें वह आया था। वह पूर्णायु प्राप्त करने के बाद मरा था और उसे बड़े सम्मान के साथ दफनाया गया। तीर पर पूर्ववर्णित जीवों के अलावा सूअर और मुर्गियां-मुर्गे भी थे और कुत्तों की तरह यह पशु-धन भी सब का था, यद्यपि इन जीवों पर निशान बने हुए थे और आम तौर पर इन्हें खाना उसी गोदाम में मिलता था जिसकी ये संपत्ति होते थे।

तीर पर मुझे कुछ ही घन्टे बीते थे और "पिलग्रिम" अभी पूरी तरह आंख से ओझल भी नहीं हुआ था कि "जहाज हो" की आवाज गूंज उठी और पाइन्ट के पास एक छोटा सा दो मस्तूलों वाला जहाज बन्दरगाह की ओर आता दिखायी दिया। जल्दी ही उसने लंगर डाल दिया। यह वही मैक्सिकन जहाज "फ्रैंज़ियो" था जिसे हम "सैन पेड्रो" में छोड़ आये थे। यह यहां पर अपनी चरबी किनारे पर ला कर, उसे पिघला कर साफ करने और नये थैलों में भरने के बाद कैलिफोर्निया तट छोड़ देने के विचार से आया था। उन्होंने अपना जहाज बांध दिया, किनारे पर पहुंच कर अपनी भट्ठी वगैरह बना ली और अपने रहने व काम करने के लिए एक छोलदारी तान ली। इनके आने से हमारा समाज बढ़ गया और हमारी अनेक शामें उनकी छोलदारी में गुजरीं। यहीं हमने अंग्रेजी, स्पेनिश, फ्रेंच, इन्डियन और कनाका भाषाओं की गड्डमड्ड में से कुछ ऐसे शब्द निकाले जिन्हें प्रायः हम सभी लोग समझ लेते थे।

तीर पर पहुंचने के अगले दिन सुबह ही मैं खालों को तैयार करने के काम में लग गया। इस काम को समझने के लिए खाल के पूरे इतिहास—अर्थात् जब से बैल के शरीर पर से खाल उतारी जाती है तब से लेकर बोस्टन जाने वाले जहाज में रखे जाने तक की पूरी प्रक्रिया—को समझ लेना जरूरी है। जब बैल के शरीर पर से खाल उतारी जाती है तब उसके किनारों पर छेद कर दिये जाते हैं जिनमें खूंटियां गाड़ कर खाल को सुखाया जाता है। इस तरह सुखाने से खाल सिकुड़ती नहीं।

इस तरह धूप में सुखायी गयी खालों को जहाज खरीद लेते हैं, और डिपो में ले आते हैं। जहाज उन्हें किनारे पर उतार देते हैं और गोदामों के बाहर उनके बड़े-बड़े ढेर लगा कर छोड़ जाते हैं। अब चमड़ा तैयार करने का काम शुरू होता है। सब से पहले उन्हें भिगोया जाता है। इसका तरीका यह है कि रस्सियों की मदद से खालों के छोटे-छोटे गट्ठर बना लिये जाते हैं और निम्न ज्वार के

समय इन गठ्ठरों को समुद्र-तट पर रख दिया जाता है। समुद्र का ज्वार इन तक आता है, और इन्हे भिगो जाता है। हर रोज हम पच्चीस खालें की आदमी के हिसाब से भिगोते थे यानी हम छ लोग मिल कर डेढ सौ खालें रोज भिगाते थे। अडतालीस घन्टे भीगने के बाद उन्हे निकाल लिया जाता है, और उन्हे पुलन्दो की तरह गोलाई मे मोड कर कुन्डो में डाल दिया जाता है। इन कुन्डो में समुद्री पानी मे बहुत सा नमक डाल कर तैयार किया गया घोल मौजूद रहता है। इस घोल का नमक खालो में पहुच जाता है और इसमें वे अडतालीस घन्टो तक पडी रहती है, इससे पहले समुद्र के पानी में तो उन्हे साफ करने और मुलायम बनाने के लिए ही भिगोया जाता है। इन कु डो से निकाल कर खालो को चौबीस घन्टो के लिए एक ऊचे स्थान पर रख दिया जाता है, और इसके बाद उन्हें जमीन पर उतार लिया जाता है, और सावधानी पूर्वक फैला कर उनके छेदो में खूटियां गाड दी जाती हैं ताकि वे ठीक तरीके से सूख सकें।

खूंटिया गाड देने के बाद हम उन गीली और मुलायम खालों पर अपने चाकू संभाल कर बैठ जाते थे और गोश्त व चरबी वाले उन हिस्सो को काट फेंकते थे जिनसे यह डर रहना था कि लम्बी यात्रा में जहाज में ले जाने पर वे सड जायेंगे और दूसरी खालो को भी गला देंगे। इसके अलावा हम कानो और ऐसे दूसरे हिस्सो को भी काट देते थे जिनमे जहाज में खालो को ठूंस-ठूस कर भरने में दिक्कत पडे। यह हमारे काम का सब से मुश्किल हिस्सा था क्योंकि हर त्याज्य हिस्से को काट फेंकना और खाल को भी कटने या नुकसान न पहुँचने देने के लिए भारी निपुणता की अपेक्षा थी।

यह प्रक्रिया लम्बी भी बहुत थी, क्योंकि एक तो हम छः लोगों को डेढ सौ खालें रोज तैयार करनी पडती थी, दूसरे स्पेनी लोग अपने जानवरो की खालें बडी लापरवाही से उतारते थे इसलिए उनमें हमें बहुत-सा काम करना पडता था। इसके अलावा, चू कि खालें तो खू टियो की मदद से जमीन से चिपकी रहती थी, इसलिए जितनी देर उनकी सफाई होनी थी उतनी देर हमें बराबर उन पर झुका रहना पडता था। इसके कारण जो आदमी यह काम शुरू ही करता है उसकी पीठ में दर्द हो जाता है।

पहले दिन मैंने इतने धीमे और बेढगेपन से काम किया कि मैं दिन भर में आठ खालें ही तैयार कर सका; कुछ दिन बाद मैं इससे दुगनी खालें तयार करने

लगा; और पन्द्रह-बीस दिन में ही मैं दूसरे लोगो के कंधे से कन्धा मिला कर काम करने लगा और अपना कोटा—यानी पचीस खालो को तैयार करना-पूरा करने लगा।

सफाई का काम दोपहर के पहले ही खत्म हो जाना चाहिए, क्योंकि दोपहर के समय खालें बहुत सूख जाती हैं। जब खाले कुछ घन्टे धूप में सूख चुकती हैं तब उन्हे सावधानी से खुरच दिया जाता है ताकि धूप से पिघल कर जो चरबी ऊपर आ गयी है उसे निकाल दिया जाय। इसके बाद खूटिया निकाल ली जाती हैं, और खालो को सावधानी से मोड कर दुहरा कर लिया जाता है। उनका बालो वाला किनारा बाहर की ओर रखा जाता है। अब उन्हे सूखने के लिये छोड दिया जाता है। तीसरे पहर के बाद उन्हे उलट दिया जाता है और सूर्यास्त के समय उनके ढेर लगा कर उन्हे ढक दिया जाता है। अगले दिन उन्हे फिर से खोल कर फैलाया जाता है, और अगर रात को वे पूरी तरह सूख जाती हैं तो उन्हे (एक बार में पाँच खालो को) एक (क्षतिज) पडे बास पर डाल कर मूगरियो से पीटा जाता है जिससे उनकी सारी धूल निकल जाती है। इस तरह, नमक लगाने, खुरचने, साफ करने और पीटे जाने की प्रक्रिया से गुजरने के बाद, इन खालो को गोदाम में रख दिया जाता है। इनके इतिहास का यही अन्त है हाँ, इतना और समझ रखना चाहिए कि जब जहाज घर रवाना होने के लिए तैयार हो जाता है तब इन खालो को फिर से निकाला जाता है, फिर से पीट कर इन्हे झाडा जाता है और तब जहाज में भर कर बोस्टन पहुचाया जाता है, जहाँ इन्हे कमाने के बाद इनसे जूते और चमडे की दूसरी चीजे बनायी जाती हैं, और शायद इन्ही में से अनेक खाले जूतो की शक्ल मे कलिफोर्निया लौट आती हैं, और दूसरे बैलो को पकडने या दूसरी खालो को तैयार करने में ये फिर काम आ जाती हैं।

प्रति दिन भीगने के लिए डेढ सौ खालें रखने का मतलब यह हुआ कि चमडा तैयार करने की हर स्थिति मे हमारे पास डेढ सौ खाले रहती थी, इसका मतलब यह हुआ कि हर रोज हमे इतनी ही खालो पर इतना ही काम करना पडता था। हम नित्य प्रति डेढ सौ खालें भिगोते थे, डेढ सौ खालो को धोकर कुन्डो मे डालते थे, फिर डेढ सौ खालो को कुन्डो से निकाल कर चबूतरे पर रख देते थे ताकि उनका पानी टपक सके, फिर डेढ सौ खालो को फैलाकर उनमे खूटिया गाड कर उनकी सफाई करते थे, और फिर डेढ सौ ही खालो को मूगरियो से पीट कर उन्हे

गोदाम में रखते थे। हा इसमें रविवार अपवाद था क्योंकि वर्षों से तौर पर काम करने वालो को इस दिन छुट्टी दी जाती रही है; और अभी तक इस प्रथा को तोडने की हिम्मत किसी कप्तान या एजेन्ट ने नही की है। शनिवार की रात को खालें जिस अवस्था मे भी हो उसी में उन्हे सावधानी पूर्वक ढक कर रख दिया जाता है और सोमवार की सुबह से पहले उन्हे कोई नही खोलता। रविवार को हमारे पास करने के लिए कोई भी काम नही होता था। हा, एक सप्ताह में हमारे लिए एक बैल भेजा जाता था, और कभी-कभी वह रविवार को भी आ जाता था, तब हमे उसे मारने का काम जरूर करना पडता था।

इस व्यवस्था की एक अच्छाई यह भी थी कि अगर हम कम समय में अपना नियत काम पूरा कर लें तो बाकी समय को हम मनमाने ढङ्ग से बिताने के लिए आजाद थे। इससे हम जी-जान लगाकर काम करते थे, और अफसर को हममे कहने-सुनने या काम पर लगाने की जरूरत नही पडती थी। रोज सुबह को सवेरे ही हम काम के लिए निकल पडते थे और आठ बजे के लगभग कुछ समय नाश्ता करने के अलावा बराबर काम मे लगे रहते थे। एक-दो बजे के लगभग हम अपना काम खत्म कर लेते थे, और अपना डिनर लेते थे। अब सूर्यास्त तक का समय हम मनचाहे ढङ्ग से गुजारने के लिए आजाद रहते थे। सूर्यास्त से कुछ ही पहले हम सूखी हुई खालो को पीट कर उन्हे गोदाम मे रख देते थे, और बिना सूखी खालों को ढक देते थे। इस प्रकार रोज तीसरे पहर के समय लगभग तीन घन्टे हम मनमाने ढग से गुजारने के लिए आजाद थे, और सूर्यास्त के समय सपर खाने के बाद हमारा दिन का काम खत्म हो जाता था। यहाँ न पहरा देने का झझट था और न शिखर पाल छोटे करने का बखेडा।

शामे हम अक्सर एक-दूसरे के गोदामो में बिताया करते थे, और मैं अक्सर एकाध घटे के लिए भट्ठी पर भी हो आता था जो "कनाका होटल", और "ओआहू काफी हाउस" के नाम से विख्यात हो चुकी थी। डिनर के ठीक बाद हम एक हल्की सी झपकी लेते थे ताकि सवेरे उठने की कमी पूरी हो जाय और तब बाकी समय इच्छानुसार बिताते थे। मैं आम तौर पर पढता-लिखता था या नये कपड़ो को सीने अथवा पुराने कपडो की मरम्मत मे लगा रहता था क्योकि आविष्कार की जननी आवश्यकता ने मुझे ये दोनो अन्तिम कलाए सिखा दी थी। कनाका लोग भट्ठी पर चले जाते थे और अपना समय सोने, गप लडाने और धूम्रपान करने में

बिताते थे। मेरा साथी निकोलस लिखना-पढना नही जानता था; इसलिए वह पहले तो एक लम्बी झपकी लेता था, फिर दो-तीन बार पाइप पीता था और इसके बाद दूसरे गोदामो तक चहलकदमी कर आता था।

अवकाश के इस समय में कोई व्यवधान उपस्थित नही होता क्योंकि कप्तान जानते हैं कि ये मजदूर खून-पसीना एक करके अवकाश के इन क्षणो को अर्जित करते हैं। अगर कप्तान इस समय को उन्हे इच्छानुसार न बिताने दें तो आदमी बडी आसानी से पच्चीस खाले फी आदमी तैयार करने के काम में पूरा दिन निकाल सकते थे। हमें आजादी भी काफी मिली हुई थी क्योंकि खालें तैयार करने के समय के अलावा गोदाम का अध्यक्ष...कप्टेन डी ला कासा...हमसे कुछ नहीं कहता था, और यद्यपि हम उसकी इजाजत के बिना कस्बे में नही जा सकते थे लेकिन अनुमति मांगने पर वह शायद ही कभी हमे मना कर सकता था।

इस काम में कई ऐसी बातें थी जो इसे अकरणीय और थका देने वाला बना देती थी, मिसाल के तौर पर पुलन्दे की तरह मोडने के लिए गीली खालो को ढोना, खूंटियो के सहारे जमीन पर फैली खालो की सफाई करते समय उन पर बराबर झुके रहना, खालो को दबाने के लिए दुर्गंधपूर्ण कुन्डो में घुटनो-घुटनो धंसना आदि का उल्लेख किया जा सकता है। लेकिन जल्दी ही हम इस सब के अभ्यस्त हो गये, और इस काम में हमे जो आजादी मिली थी उसके कारण हम इससे सन्तुष्ट हो गये। यहा हमें पेल मारने वाला या हमारे काम में मीन मेख निकालने वाला कोई न था; और काम खत्म कर चुकने के बाद मुंह-हाथ धोकर और कपड़े बदलने के बाद हम अपने वक्त के खुद मालिक थे।

हाँ, अपने वक्त के मालिक बनने का एक अपवाद था। हर सप्ताह मे दो दिन तीसरे पहर के समय हमें रसोइए के लिए लकडी लाने जाना पडता था। सैन डियोगो के इलाके में लकडी की बडी कमी है। मीलो तक किसी भी तरह का कोई पेड ही नही है। कस्बे मे लोग झाड-झखाड जला कर अपना काम चलाते हैं। यह झाड-झंखाड लाने के लिए कस्बे के लोग कुछ-कुछ दिनो के बाद इडियन आदिवासियो को बडी मात्रा में भेजते रहते हैं। सौभाग्य से यहा की जलवायु इतनी उत्तम है कि घरो को गर्म रखने के लिए आग की जरूरत नही पडती बल्कि उसकी जरूरत केवल खाना पकाने के लिए पड़ती है। लकडी लाने मे हमें बडी कठिनाई आयी क्योंकि घरो के आस-पास के झाड झंखाड तो पहले ही काट लिये गये थे। हमें

एकाध मील दूर से ये झाड-झखाड लाने पड़े और कुछ दूर तक तो इन्हें अपनी पीठ पर ही ढोना पडा क्योकि पहाडियो और ऊंची-नीची जगहो पर ठेला ले जाना मुश्किल था।

हफ्ते मे दो दिन, आम तौर पर सोमवार और बृहस्पतिवार को, दोपहर के बाद डिनर खाते ही हम लोग झाड-झखाड की तलाश में चल देते थे। हर आदमी के पास एक कुल्हाडी और रस्सी होती थी। हम ठेले को घसीटते हुए ले जाते थे और बस्ती के सारे कुत्ते हमारे साथ हो लेते थे। कुत्ते इस मौके पर हमारे साथ जाने के लिए तैयार रहते थे और जब हमें जाने की तैयारियों मे लगा देखते थे तो पागल-से हो जाते थे। जहा तक हो सकता था वहा तक हम ठेले को घसीटते हुए ले जाते थे, और फिर उसे एक खुली और ऊची-सी जगह में छोड कर हर आदमी औरो से अलग होकर कोई अच्छी जगह देख कर झाड-झखाड काटने की शुरूआत करने के इरादे से अपने रास्ते पर चल देता था। अक्सर हमें ठेले से एक मील दूर निकल जाना पडता था, तब कही हमें अच्छी जगह मिल पाती थी।

किसी अच्छी जगह पहुँच कर हमें पहले तो नीचे के झाड-झखाड का सफाया करना पडता था और उसके बाद पेडों पर जम कर कुल्हाडी चलानी पडती थी। अक्सर ये पेड पाँच-छ फुट से ज्यादा ऊचे नही होते थे, और इस काम के दौरान मैंने बारह फुट से ऊचा एक भी पेड नही देखा। नतीजा यह होता था कि टहनियो और झाड झखाड को काटने के बाद हमें बहुत थोडी लकडी के लिए बहुत अधिक मेहनत करनी पडती थी। जब एक खेप लकडी हो जाती थी तब हम रस्सी से बाध कर उसका गट्ठा बनाते थे और गट्ठे को अपनी पीठ पर लाद कर, कुल्हाड़ी से लाठी की तरह चढने-उतरने में सहारा लेते हुए ठेले तक पहुँचते थे।

हर आदमी की दो खेपो से ठेला भर जाता था, और हर आदमी को इतना ही काम करना भी पडता था। लिहाजा, जब हर आदमी अपना दूसरा गट्ठा ले आता था, तब हम लकडी ठेले मे भर लेते थे और उसे ठेलते हुए धीरे-धीरे समुद्र तट की ओर चल देते थे। प्राय: हमारे लौटते-लौटते सूरज छिप जाता था और लकडी उतार कर हम रात भर के लिए खालो को ढक देते थे। इसके बाद हमें सपर मिलता था और दिन का काम खत्म।

लकडी की तलाश में हमारे इस तरह निकलने में एक तरह का खुशी का पुट मिला रहता था। जंगलो में हाथ मे कुल्हाड़ी लिए बने जंगलो के लकड़हारों

की तरह घूमना, साथ मे कुत्तो की सेना, चिडियो, सांपो, खरगोशो और लोमडियों का हमें देखते ही भाग पडना, अनेक पेडो, फूलो और चिडियो के घोसलो के बारे में जाच करना—जहाज से किनारे पर और किनारे से जहाज पर आने-जाने के एकरस क्रम से यह सब-कुछ कही मनोरजक और नवीनता लिये था।

अक्सर मनोरजक और साहसपूर्ण करतब देखने का भी अवसर हमें मिलता रहता था। कोएटी के बारे मे मै पहले भी लिख चुका हूँ। ये छोटे खूख्वार जतु लोमडी और भेडियो के बीच के होते हैं। इनकी पूंछ झबरीली और सिर बड़े होते हैं। इनकी आवाज तेज और तीखे सुर मे भौकने जैसी होती है। केलिफोर्निया के सभी भागो की तरह यहा भी इनकी बहुतायत थी। कुत्ते इन जतुओ की ताक में खास तौर पर रहते थे, और इन्हे देखते ही पूरी रफ्तार मे इनके पीछे दौड पडते थे।

हमने अनेक बार इस दौड का आनन्द लिया, और यद्यपि हमारे कुत्ते बहुत तेज दौडते थे लेकिन आम तौर पर ये बदमाश जंतु बच कर निकल ही जाते थे। एक कोएटी एक कुत्ते की टक्कर की होती है लेकिन चूंकि कुत्ते अक्सर झुन्ड बना कर जाते थे इसलिए उनमे धर्मयुद्ध बहुत कम हो पाता था। एक बार हमारे एक छोटे से कुत्ते ने अकेले ही एक अकेली केओटी के ऊपर हमला किया था। लडाई में केओटी ने उसे बुरी तरह घायल कर दिया, और अगर हम कुत्ते की मदद न करते तो शायद वह मर ही जाता। हाँ, हमारे पास एक शानदार, ऊंचा कुत्ता ऐसा जरूर था जो उन्हे काफी तग करता था और बुरी तरह दौडाता था। ताकत और फुर्ती का जैसा मणि-कांचन सयोग मैने उसमें देखा वैसा किसी दूसरे कुत्ते में नही देखा।

वह सैंडविच द्वीपसमूह मे पैदा हुआ था। उसका बाप इग्लिश मैस्टिफ था, और मा ग्रेहाउंड। अपनी मा की तरह उसका सिर ऊचा, पाँव लम्बे, शरीर छरहरा और चाल मस्त, और अपने बाप की तरह उसका जबडा भारी, गाल मोटे और सीना मजबूत था। जब उसे पहले पहल सैन डियागो लाया गया तो एक अग्रेज मल्लाह ने जिसने ड्यूक आफ वेलिगटन को एक बार टावर में देखा था, कहा था कि यह बहुत कुछ ड्यूक आफ वेलिगटन से मिलता-जुलता है, और वाकई वह ड्यूक के चित्रो से कुछ मेल खाता था। तभी उसका नाम "वेली" रख दिया गया और वह सब का मुंह लगा और किनारे पर का सब से शैतान कुत्ता बन गया। केओटी

जतुओ का पीछा करते हुए कुत्तो में वह अन्य कुत्तो से कई गज आगे निकल जाता था और दो बार धर्मयुद्ध में उसने इन दो जतुओ का काम तमाम कर दिया था।

अक्सर इनकी वजह से हमारा अच्छा मनोरजन हो जाता था। केओटी की तेज तीखी आवाज सुनी नही कि अगले ही क्षण हर कुत्ता उस दिशा में हवा हो जाता था। अगर कोई तेज दौडने वाला कुत्ता कुछ क्षण बाद भागता था तो वह कुछ ही देर मे यह कमी पूरी कर लेता था और सब कुत्ते अपनी सही स्थिति में आ जाते थे। सब से आगे वेली रहता था जो झाडियो को फलागता-सा दिखायी देता था, उसके पीछे फैनी, ब्रेवो, चाइल्टर्स और दूसरे स्पेनियल व टेरियर कुत्ते रहते थे और अन्त में बुलडाग आदि भारी-भरकम कुत्ते रहते थे, क्योंकि हमारे पास लगभग हर नस्ल के कुत्ते मौजूद थे। उनकी तलाश में हमारा निकलना बेकार होता था, और कोई आधे घन्टे में ही हांफते हुए और एक-एक दो दो करके कुछ कुत्ते वापस लौट आते थे।

केओटी के अलावा कुत्ते कभी-कभी खरगोशों को भी पकड लेते थे जो वहा बहुतायत से पाये जाते थे और जिनमें से बहुनो को हम डिनर के लिए मार लेते थे। एक और भी तरह के जीव यहा थे, लेकिन उनसे मेरा मनोरजन नही होता था। ये थे रैटल साँप जो यहा, खास तौर पर बसन्त के मौसम में, प्रचुरता से पाये जाते थे। जिन दिनो मैं तीर पर था, उस दौरान अन्तिम दिनों में तो इन सापों से मेरा ज्यादा मुचाटा नही हुआ, लेकिन शुरू के दो महीनो में तो हम जब झाडी में घुसते थे तब प्राय: हर बार हमारे किसी न किसी साथी की आहट पा कर भागते हुए रैटल साप दिखायी पडते थे।

रैटल साँप से अपनी पहली मुलाकात की बाबत मुझे बखूबी याद है। अपने साथियो से जुदा होकर मैंने पेडो के एक शानदार झुरमुट को साफ करना शुरू ही किया था कि तभी अपने से कोई आठ गज दूर झुरमुट के बीचो-बीच मैंने देखा कि एक रैटल साप बैठा फूत्कार कर रहा है। उसकी फूत्कार एक तरह की तीखी और निरतरित ध्वनि है जो अगन बोट के छोटे पाइप में से निकलने वाली भाप की आवाज से मिलती-जुलती होती है। फर्क यह है कि साप की आवाज उससे कम होती है। कुल्हाडी की आवाज सुन कर मैं समझ गया कि मेरा कोई साथी पास ही काम कर रहा है और मैंने उसे आवाज देकर बुलाया कि देखना यह क्या बला है ?

उसका व्यवहार ऐसा था जैसे कुछ हुआ ही न हो, और चूंकि वह मेरे भयभीत हो उठने के कारण मेरा मज़ाक उड़ाने पर आमादा था इसलिए मैंने अपनी जगह से न हटने का फैसला किया। मुझे मालूम था कि जब तक मुझे इसकी आवाज सुनाई दे रही है तब तक मुझे कोई खतरा नहीं है क्योंकि जब ये सांप चलते हैं तो जरा भी आवाज नहीं करते। लिहाजा, मैं काम पर लगा रहा और पेड़ों को काटने में जो आवाज हो रही थी उसके कारण साँप भी चौकन्ना रहा। इस प्रकार उसकी आवाज बराबर मुझे उसके हाल-चाल बताती रही।

एकाध बार कुछ समय के लिए उसकी आवाज बन्द हुई और मैं कुछ परेशान सा हो उठा। कुछ कदम पीछे हट कर मैंने झाड़ी की ओर कोई चीज फेंकी जिससे वह फिर आवाज करने लगा और उसे अपनी पहली जगह पर यथावत देखकर मुझे राहत मिली। इस तरह मैं अपने काम पर जुटा ही रहा। अन्त में मैंने एक गट्ठे के लायक लकड़ियाँ काट लीं। इस बीच मैंने उसे चुप होने का मौका नहीं दिया था। लकड़ियाँ काटने के बाद मैंने उन्हें बांधकर गट्ठा बनाया और चलने की तैयारी पूरी कर ली। अब मुझे महसूस हुआ कि अगर मैं और लोगों को बुलाऊं तो वे यह नहीं समझेंगे कि मैं डर कर उन्हें मदद के लिए पुकार रहा हूँ। लिहाजा, मैं उनकी तलाश में निकल पड़ा। कुछ ही मिनटों में हम सब इकट्ठा हो गये और हमने झाड़ी पर धावा बोल दिया।

पहले जिस आदमी को मैंने मदद के लिए बुलाया था, और जिसने मेरा मजाक उड़ाया था, वह वही भीमकाय फ्रांसीसी निकोलस था जिसका जिक्र मैं पहले कर चुका हूँ। अब मैंने देखा कि सांप के नजदीक जाने की हिम्मत उसकी भी नहीं हो रही है। लगता था कुत्ते भी सांप से डर गये थे क्योंकि वे दूर से ही उस पर भौंक रहे थे; लेकिन कनाका लोग नहीं डरे। वे लम्बी लकड़ियाँ लेकर झाड़ी में घुस गये और सावधान रहते हुए उससे कुछ फुट की दूरी पर जा खड़े हुए। जब उसके पास ही जमीन पर दो-चार बार लकड़ी फटकारी गयी और दो-चार पत्थर उसकी ओर फेंके गये तब वह भाग खड़ा हुआ और हमारी आखों से ओझल हो गया। अब यह सोच कर सबकी नानी मरने लगी कि कहीं सांप उसी के पांव के नीचे न आ जाये।

हमने भिन्न-भिन्न दिशाओं में पत्थर फेंके जिससे उसने फिर से फुंकार भरना शुरू कर दिया। हमने फिर उस पर हमला बोल दिया। इस बार हम उसे साफ

जमीन में खदेड लाये। वह अपना सिर और पूंछ ताने, फिसलता हुआ चला जा रहा था कि हममें से किसी ने निशाना साध कर उस पर एक पत्थर मारा। तब तक वह पन्द्रह-बीस फुट गहरे एक खड्ड के किनारे पर पहुंच चुका था। पत्थर लगते ही वह वहीं ढेर हो गया। कुछ और पत्थर मारने पर जब वह नहीं हिला, और हमें उसके मरने का निश्चय हो गया तब हम नीचे उतरे और एक कनाका ने उसकी पूंछ में से "खड-खड" करने वाला यंत्र काट लिया। सभी सॉपो म इन यंत्रो की संख्या एक सी नही होती बल्कि उनकी संख्या साप की उम्र पर निर्भर है; यद्यपि इन्डियन आदिवासियो का विश्वास है कि यह संख्या इस बात पर निर्भर करती है कि वह साप कितने जीवो की हत्या कर चुका है।

हम इन यंत्रो को ट्राफी की तरह सुरक्षित रखते थे, और गरमियाँ खतम होने तक हमारे पास ये काफी तायदाद में जमा हो गये।

किसी साप ने हमारे किसी साथी को नही काटा, लेकिन हमारा एक कुत्ता साप के काटने से मर गया था, और एक और कुत्ते के बारे में लोगो का खयाल था कि उसे साप ने काट लिया है, यद्यपि वह बच गया। हमारे पास सर्पदंश की कोई दवा नही थी, यद्यपि यह कहा जाता था कि उस प्रदेश के इन्डियन आदि-वासियो के पास इसकी दवा है। कनाका लोगो का कहना था कि उनके पास भी सर्पदंश की एक जडी है, लेकिन सौभाग्य से उसकी आजमाइश की जरूरत ही नही पडी।

जैसा कि मैं पहले भी कह चुका हूँ, यहाँ खरगोशो की बहुतायत थी और सर्दियो में तालाब और झीलें जंगली बत्तखो और हंसो से भर जाती थी। कौए भी बडी तायदाद मे थे और अक्सर हमारी खालो पर टूट कर सूखे गोश्त और चरबी के टुकडो को चट कर जाते थे। ऊंचे और अन्दर के इलाको में अनेक भालू और भेडिये थे (और हमारे वहाँ रहने के दौरान सैन पेड्रो मे कुछ ही मील दूर पर एक भालू ने एक आदमी को मार दिया था) लेकिन हमारे आस-पास के इलाके में उनका अभाव था।

इन जीवो के अलावा वहाँ घोडे थे। एक दर्जन से अधिक घोडों के मालिक तीर पर ही रहते थे। इनके मालिक घोडो के एक लम्बी रस्सी बाँध कर पहाडियों पर खुला छोड देते थे और वे जो मिल जाता था उसी को खा कर अपना पेट भर लेते थे। हमे वे एक बार जरूर दिखायी देते थे, क्योंकि पहाड़ियो पर कही भी

पानी नही था, और उन्हे प्यास बुझाने के लिए तीर पर खोद कर बनाये गये कुए पर आना पडता था ।

इन घोडो को दो से लेकर छ –आठ डालर तक खरीद कर लाया गया था और एक बडी हद तक उनका उपयोग सार्वजनिक सपत्ति के रूप मे होता था । आम तौर पर हम किसी गोदाम पर एक घोडे को बाधे रहते थे ताकि जरूरत पडने पर उस पर चढ कर जायें और दूसरे घोडो को पकड सकें । कुछ घोडे तो वाकई बहुत शानदार थे और दुर्ग तक, या देहात मे जाने के लिए बहुत बढिया सवारी का लुत्फ देते थे ।

*　　*　　*

अध्याय २०

कुछ हफ्ते किनारे पर रहने के बाद हम, अपनी जिन्दगी की नियमितता के कारण, टूटा हुआ महसूस करने लगे थे कि प्रतिवात दिशा से दो जहाजो के पहुँच जाने से हमारे जीवन की एकरसता टूट गयी । जब हमें "जहाज हो" की आवाज सुनायी दी तब हम अपने छोटे से कमरे में डिनर ले रहे थे । हम लोग समझ गये थे कि इसका मतलब हमेशा जहाज मे ही नही हुआ करता, बल्कि जब कस्बे की ओर से कोई औरत, या कोई अमरीकी इन्डियन औरत, आती हुई दिखाई देती थी, कोई बैलगाडी या सडक पर कोई और असामान्य चीज दिखाई देती थी तो भी इसी तरह की आवाज की जाती थी, इसलिए हमने इस पर ध्यान नही दिया । लेकिन जल्द ही यह आवाज इतनी बुलन्द और आम हो गई कि हम लोगो को दरवाजे तक आना पडा और अब इस बात में कोई सन्देह नही रह गया था कि पाइन्ट पर दो जहाज मुड रहे थे । रोज तीसरे पहर तट से बहने वाली तेज उत्तरी-पश्चिमी हवा के कारण उन दोनो जहाजों के पाल झुके जा रहे थे । आगे एक पूरा जहाज था और पीछे दो मस्तूलो वाला एक जहाज ।

तीर पर हर आदमी मे जान आ गई थी और तरह तरह से अटकल लगायी जाने लगी थी । कुछ का कहना था कि दो मस्तूलो वाला जहाज "पिलग्रिम" है जिसके साथ बोस्टन का वह जहाज है जिसकी हम प्रतीक्षा कर रहे थे । लेकिन, जल्दी स्पष्ट हो गया कि दो मस्तूलो वाला जहाज "पिलग्रिम" नही है, और जहाज जिसके टापगैलेंट मस्तूल ठूंठ जैसे थे और जिसके पहलुओं में मोर्चा लगा हुआ था, बोस्टन का सजीला जहाज नही हो सकता ।

कुछ और निकट आने पर उसके ऊंचे वराम और टापगैलें अगवाड को देख कर हम समझ गये कि वह इटालियन जहाज "रोज़ा" है, और वह ब्रिग "कैटे-लिना" साबित हुआ जिसे हमने सैंएटा बारबरा मे देखा था और जो वाल्परेजो से सीधा चला आ रहा था। वे लगर पर आ लगे, जहाज़ को बाँध दिया गया और चमडा और चर्बी उतारने का काम शुरू हो गया।

"रोजा" ने "लँगोडा" वाले गोदाम को खरीद लिया था, और "कैटेलिना" ने दूसरे खाली गोदाम को लिया था जो हमारे और "आयाकुचो" के बीच था। अब हर गोदाम पर काम शुरू हो गया और समुद्र तट पर कई दिनो तक चहल-पहल रही। "कैटेलिना" पर कई कनाका मल्लाह थे, जिन्हे तीर पर रहने वाले दूसरे कनाका लोगो ने घेर लिया और भट्ठी के पास ले गये जहा वे देर तक गप-शप करते रहे और तम्बाकू पीते रहे।

"रोजा" के दो फ्रासीसी जो हर शाम को निकोलस से मिलने चले आते थे, उनसे हमे पता चला कि "पिलग्रिम" सैन पेड्रो में हैं और अब समुद्र तट पर सिर्फ वही दूसरा पोत था। अनेक इटालियन तीर पर आकर अपने चमड़े के गोदाम में सोते थे; तथा वहा, और उस खेमे में जहाँ "फेजो" के नाविक रहते थे हम लोग हर शाम को अच्छा खासा गाना बजाना कर लेते थे।

इटालियन तरह तरह के···गंडोला के माँझियोके गीत और प्रादेशिक गीत—गाते थे जिनमें से कई गीतो मे मुझे अपने प्रिय आपेरा और भावुकता पूर्ण गीतों के कुछ टुकड़े मिल जाते थे। सहगान गाते समय वे गीतो की कडियों को आपस में बाँट कर गाते थे, जिसका बहुत अच्छा प्रभाव पडता था क्योकि उनमें से कई की आवाज़ बहुत सुरीली थी और सबके सब बडी तन्मयता और भावविह्वलता से गाते थे, खास तौर पर एक नौजवान की आवाज़ तो एकदम क्लारनेट जैसी सुरीली थी।

इन जहाजो के अधिकाश नाविक हर शाम तीर पर चले आते थे और हम लोगो का समय एक गोदाम से दूसरे में आने-जाने और हर तरह को भाषाए सुनने में बीत जाता था। हमारे सामान्य व्यवहार की भाषा स्पेनिश थी क्योकि हर आदमी को थोडी बहुत स्पेनिश आती थी।

इस समय हम चालीस-पचास लोगों की मन्डली में दुनिया के लगभग हर राष्ट्र के प्रतिनिधि मौजूद थे : दो अंग्रेज, तीन याकी, दो स्काट, दो वेल्श, एक आयरिश, तीन फ्रासीसी, (जिनमें से दो नारमन थे और एक गैस्कनी का निवासी),

एक डच, एक आस्ट्रियाई, दो या तीन स्पेनी, (पुराने स्पेन के), आधे दर्जन स्पेनी-अमरीकी और वर्णसंकर स्पनी, चिली और चिलाई द्वीप के दो इन्डियन आदिवासी, एक नीग्रो, एक मुलैटो (गोरे और हब्शी की संकर सन्तान), इटली के लगभग हर हिस्से के करीब बीस इटालियन, लगभग इतने ही सैंडविच द्वीपसमूह के निवासी, एक ओटेहीटन और मार्विवस द्वीप का एक कनाका।

जिस दिन ये जहाज रवाना होने वाले थे उससे पहली रात को सभी यूरोपीयों ने "रोजा" के गोदाम पर मनोरंजन का एक कार्यक्रम रखा और हम लोगों ने हर राष्ट्र और हर भाषा के गीत सुने। एक जर्मन ने हमें "आख! मीन लाइबर आगस्टिन!" गीत सुनाया, तीनों फ्रांसीसियों ने कड़कती आवाज़ में फ्रांस का राष्ट्रीय गान सुनाया; अंग्रेजों और स्काटों ने "रूल ब्रिटैनिया" और "हू विल बी किंग बट चार्ली ?" सुनाया, इटालियनों और स्पेनियों ने बड़ी सुरीली आवाज में कोई राष्ट्रीय गीत गाया, जो मेरी समझ में नहीं आया, और हम तीनों यांकियों ने "स्टार स्प्रैंगल्ड बैनर" गाया।

इन राष्ट्रीय गीतों के बाद आस्ट्रियाई नाविक ने बहुत सुन्दर प्रेम—गीत सुनाया और फ्रांसीसियों ने बड़े जोश के साथ "सेन्तीनेला! ओ प्रेनेज गार्द अ वाउ" "शीर्षक गीत सुनाया और इसके बाद, जैसी कि आशा थी, अपनी-अपनी डफली अपना अपना राग होने लगा। जब मैं उनसे अलग हुआ तब उन सबको गहरा नशा-सा हो गया था, और वे सभी एक साथ ही गाने गा रहे थे और बातें कर रहे थे और बात-बात पर अपनी विशेष राष्ट्रीय कसमों का प्रयोग कर रहे थे।

दूसरे दिन दोनों जहाज प्रतिवात दिशा में चल पड़े, और खामोश तीर को हमारे अधिकार में छोड़ गए। नए गोदामों के खुलने से हमारी संख्या कुछ बढ़ सी गई थी, और तीर के समाज में कुछ परिवर्तन हो गया था। "कैटैलिना" के गोदाम का अध्यक्ष एक बूढ़ा स्काट था, जो अपने देश के अधिकांश लोगों की तरह काफी पढ़ा-लिखा और उनमें से अनेक की तरह आत्मलीन और अत्यन्त अहंकारी था। वह अपना समय अपने सूअरों, मुर्गियों, टर्कियों, कुत्तों आदि की देखभाल करने और पाइप पीने में बिताता था। उसके गोदाम में इतनी सफाई रहती थी कि कहीं एक तिनका भी नहीं पाया जा सकता था, और वह कालमापी की तरह अपने समय का पाबन्द था, लेकिन चूंकि वह किसी से बोलता-चालता नहीं था, इसलिए उससे हमारे समाज में कोई बहुत बड़ा इज़ाफा नहीं हुआ। जब तक वह तीर पर

रहा तब तक उसने एक दमडी खर्च नही की, और दूसरे लोगो का ख्याल था कि वह अच्छा साथी मल्लाह नही था। वह ब्रिटेन के युद्धपोत "डबलिन" जिसका कप्तान लार्ड-जेम्स टाउनशेड था, पर एक अदना सा अफसर रह चुका था, और वह अपने को बहुत बडा आदमी समझता था।

"रोज़ा" के गोदाम का अध्यक्ष जन्म से आस्ट्रियाई था, लेकिन वह बडी आसानी से और सही-सही चार भाषाए पढ, लिख और बोल लेता था। जर्मन उसकी मातृभाषा थी, लेकिन इटली की सरहद के पास पैदा होने के कारण और जिनेवा तक नौचालन करने के कारण इटालियन भी उसके लिए मातृभाषा जैसी ही हो गई थी। वह छः वर्ष तक एक अग्रेजी युद्धपोत पर रह चुका था जहा उसने हमारी भाषा सीख ली थी, और अब बिना किसी कठिनाई के उसे बोल, पढ़ और लिख सकता था। वह कई सालो तक स्पेनी जहाजों पर भी रहा था, और उस भाषा का इतना अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया था कि वह उस भाषा की कोई भी पुस्तक पढ़ सकता था। उसकी उम्र चालीस-पचास के बीच में थी और उसमें युद्ध-पोत के नाविक और प्यूरिटन (शुद्धतावादी ईसाई) का अनूठा मिश्रण था। वह प्राय. शिष्टाचार और दृढता की बात करता रहता था और नौजवानो को तथा कनाका लोगो को सत्परामर्श दिया करता था लेकिन ऐसा शायद ही कभी हुआ हो कि वह कस्बे की तरफ गया हो, और वहा से जब नशे में धुत होकर न लौटा हो। एक बार छुट्टी के दिन वह और बूढा राबर्ट ("कैरलिना" का अध्यक्ष स्काट) कस्बे की ओर गए, और अपनी पुरानी कहानियो की चर्चा करते हुए और एक दूसरे को सत्परामर्श देते हुए परस्पर इतने आत्मीय हो उठे कि दोनो एक ही घोडे पर सवार होकर वापस लौटे और तीर पर आकर जैसे ही घोडा रुका वे दोनो बालू में लुढक गए। इस घटना के बाद उन्होंने बनना बन्द कर दिया और बाकी मल्लाह तो इस घटना का जिक्र करते थकते ही न थे।

"रोज़ा" के गोदाम पर होने वाले मनोरंजन की रात को मैंने बूढे श्मिट (उस आस्ट्रियाई का यही नाम था) को एक पीपे के पास खडा देखा था, जिसे वह दोनो हाथो से पकड कर स्वय को सबोधित करके कह रहा था—"बस इसे पकडे ही रहो श्मिट! पकडे रहो मेरे दोस्त, नही तो चारों खाने चित्त हो जाओगे!" फिर भी वह एक जहीन और अच्छे स्वभाव का बुजुर्ग आदमी था, और उसके पास किताबो से भरी पूरी एक पेटी थी, जिन्हे उसने बडी खुशी से मुझे पढ़ने को दिया।

उसी गोदाम में उसके साथ एक फ्रांसीसी, और एक अंग्रेज रहते थे; इनमें से दूसरा युद्धपोत पर रह चुका था और एक मंजा हुआ नाविक था, वह दिलेर और उदार किस्म का आदमी था, लेकिन इसके साथ ही साथ पक्का पियक्कड और लम्पट कुत्ता भी था। उसने पखवाडे मे एक बार शराब पीकर मतवाला होने (जब वह हमेशा सडक पर सो रहता था और उसके पैसे कोई भी चुरा ले जाता था।), और हफ्ते में एक बार फ्रांसीसी से झगडने का नियम सा बना लिया था। ये लोग, चिली का एक निवासी और आधे दर्जन कनाका—हमारी मंडली मे यह बढोतरी हो गयी थी।

"पिलग्रिम" के जाने के बाद लगभग छ सप्ताह के भीतर हम लोगो ने उन सारी खालो को तैयार कर दिया और उन्हे सभाल कर रख दिया था जो वह हमारे पास छोड गया था। जमीन को साफ करने, हौजो के खाली करने और हर चीज को ठीक-ठाक करने के बाद हम खाली हो गये। अब जहाज के लौटने तक लकडी जुटाने के अलावा हमारे पास कोई काम न था।

इस काम के लिए हफ्ते मे दो बार जाने के बजाय अब हम लोगो ने पूरा एक हफ्ता खर्च करने का निश्चय किया, ताकि हमारे पास इतनी लकडिया इकट्ठी हो जाएं कि आधी गर्मी तक चल जाए। लिहाजा हम लोग सबेरे ही नाश्ता करके हर अपनी कुल्हाडी हाथ में लेकर चल देते, और तब तक लकडी काटते रहते थे जब तक सूरज पाइन्ट के पीछे नही पहुच जाता था,—हमारे पास समय की यही एक पहचान थी, क्योकि तीर पर किसी के पास घडी नही थी -- और तब हम लोग डिनर खाने लौटते थे, और डिनर के बाद अपना ठेला और रस्सिया लेकर फिर चल पडते थे, और पीठ व ठेले पर लाद कर सूर्यास्त तक लकडी लेकर वापस आ जाते थे।

यह क्रम हमने एक हफ्ते तक चलाया और अंतत हम लोगो ने लकडी के बहुत सारे गट्ठे—हम लोगो का छ से आठ हफ्ते तक का काम चलाने भर को काफी—इकट्ठे कर लिये। इसके बाद हम लोगो ने इस काम से भी छुट्टी पाई, और इससे मुझे बेहद खुशी हुई, क्योकि यद्यपि मुझे जगल में इधर उधर भटकना और लकडी काटना बहुत पसन्द था, फिर भी इतनी दूरी तक नीची-ऊची जमीन पर पीठ पर लकडी लाद कर चलना, नि सन्देह मेरे जीवन का सबसे कठिन काम था। मजबूती से बधे गट्ठे को अपनी पीठ पर लादने के लिए मुझे अक्सर घुटनो के बल बैठ कर जोर लगाना पडता था। इसके बाद मै खडा होकर उसे पीठ पर

लादे पहाडियो पर और घाटियो में, और कभी-कभी झाडियो से होकर, ऊपर चलना पडता था—उनकी नोक चमडी में चुभ जाती थी और कपडो को फाड देती थी। हालत यह थी कि हफ्ते के अन्त तक मेरे पास शायद ही कोई कमीज साबुत बची हो।

अब हमने अपना सारा काम खत्म कर लिया था और "पिलग्रिम" के लौटने तक हमारे पास कोई काम नही रह गया था। काम के साथ-साथ हमारी रसद भी चुक सी गयी थी, क्योकि हमारा अफसर रसद की बहुत बर्बादी करता था, और चाय, आटा, चीनी और शीरा सब खत्म हो गया था। हम लोगो को शक था कि वह रसद को कस्बे में भी भेजता था, और जब कभी तीर पर अमरीकी इन्डियन औरतें आती थी तब वह सदा शीरे से उनकी आवभगत करता था।

गेहूँ की काफी और रुखी रोटी पर गुजर होता न देखकर हम लोगो की मंडली ने एक योजना बनायी, और उसके मुताबिक मैं घोडे पर सवार होकर और जीन के पीछे एक बोरा बाध कर और अपनी जेब में कुछ रीयल रखकर कस्बे की ओर गया और वहा से बोरे में प्याज, नासपाती, फलियां, खरबूजे और दूसरे फल लेकर लौटा, बागबानी करने वाली युवती ने, यह जान कर कि मैं अमरीकी जहाज का नाविक हूँ और हम लोगो के पास रसद की कमी पड गई है, मुझे दूनी चीजें दे दी। इसके भरोसे हम लोग एक या दो हफ्ते तक लडाकू मुर्गो की तरह अकड कर खाते पीते रहे, और खर्राटे भर कर सोते रहे और सुबह के समय हम लोग तब तक बिस्तर नही छोडते थे जब तक हमारा नाश्ता तैयार नही हो जाता था।

मैंने अपने बक्स की हर चीज को ठीक करने और अपने सारे कपडो की मरम्मत करने मे कई दिन लगाये, आखिरकार मेरी हर चीज बिल्कुल व्यवस्थित हो गई—उनमें किसी बजरे के पाल की तरह पैबन्द पर पैबन्द लगे हुए थे। तब मैने बोडिक रचित "नेविगेटर" को उठाया जिसे मैं हमेशा अपने साथ रखता था। मैं इसका आधे से अधिक भाग पढ़ चुका था और अब मैं इसे आरभ से अन्त तक बडी सावधानी से पढ गया और इसमें दिये गये अधिकाश उदाहरणो को मैने कार्य रूप में परिणत किया। यह काम पूरा हो जाने पर भी जब "पिलग्रिम" के आने का कोई लक्षण नही दिखाई दिया तो मैं बूढे श्मिट के पास जा धमका और तीर पर जितनी भी किताबें उपलब्ध थी उन सबको ले-लेकर पढ गया।

वहा पर किताबो का ऐसा अकाल था कि मुझे कोई भी किताब, यहां तक कि

बच्चों की कहानियों की पुस्तकें, या किसी जहाजी कैलेंडर का कोई अंश भी किसी खजाने से कम नहीं मालूम हुआ। मैं सचमुच चुटकुलों की एक किताब को किसी उपन्यास की तरह, शुरू से अन्त तक एक ही बैठक में पढ़ गया और इसमें मुझे बहुत आनन्द मिला। अन्त में जब मैं सोच रहा था कि अब और कुछ भी मिलना मुश्किल है तो मुझे श्मिट के बक्स में "मैनडेविल, गाडविन द्वारा पांच खन्डों में लिखी गयी रोमांस-कथा" मिल गयी। इसे मैंने कभी पढ़ा नहीं था लेकिन गाडविन का नाम ही काफी था, और उस तमाम कूड़े को पढ़ने के बाद, कोई ऐसी चीज, जिसके साथ किसी ख्यातिप्राप्त बुद्धिजीवी का नाम लगा हो, वास्तव में एक बहुत बड़ी नेमत थी। मैं इसे अपने साथ ले आया और दो दिनों तक हर समय मैं इसी में डूबा रहा और वास्तविक आनन्द का पान करता रहा। यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि वह रेगिस्तान में बसन्त जैसा था।

हाथी से उतर कर गधे की सवारी...इसी तरह, मेरे लिए मैनडेविल से चमड़े की तैयारी तक सिर्फ एक कदम का फासला था; क्योंकि बुद्धवार, अठारह जुलाई, प्रतिवात दिशा से "पिलग्रिम" आ गया। जैसे ही वह भीतर आया; हमने देखा कि उसकी शक्ल काफी बदली हुई थी। उसके टागेलेंट मस्तूल ऊपर उठे हुए थे और उसकी सभी बोलिन (रद्दा को छोड़कर) उतरी हुई थी; बूम छल्ले उसके निचले यार्डों से उतरे हुए थे; जैक छड़ें नीचे चली गई थीं; अनेक दराबियां निकलकर गिर गई थीं, चालू रस्से-रस्सियां सरक कर नई जगहों पर पहुँच गई थीं, और इसी तरह के अनगिनत परिवर्तन हो गए थे। इसके अलावा हुक्म देने वाली आवाज भी बिल्कुल नई थी और छतरी पर एक नया चेहरा...एक नाटा, कुछ सांवले रंग का आदमी, हरा जैकेट और चमड़े की ऊंची टोपी पहने...दिखाई दे रहा था।

ये परिवर्तन निश्चय ही तीर के सभी लोगों को यह सोचने को बाध्य कर रहे थे कि यह कौन आदमी हो सकता है? और हम सभी जहाज की नाव के तीर पर, आने की प्रतीक्षा बेताबी से कर रहे थे ताकि सारी बातें साफ-साफ जान सकें। आखिरकार जब पाल उतर गए और लङ्गर डाल दिया गया, तब नाव तीर पर आयी और जल्दी ही सारे में यह खबर फैल गई कि जिस जहाज के आने की आशा में हम थे वह सैन्टा बारबरा तक आ पहुँचा है, और कप्तान टी...ने उसकी कमान संभाल ली है, और उसके कप्तान, फाकन ने "पिलग्रिम" की कमान संभाली है और छतरी पर हरा जैकेट पहने हुए जो आदमी हुक्म दे रहा था वह कप्तान

फाकन ही है। हम लोगो को कोई और सवाल करने का मौका दिये बिना ही नाव लौट पडी, और हम लाग रात होने तक प्रतीक्षा करने को मजबूर हो गये। रात को हम लगो ने तीर पर पडी एक छोटी सी नाव ली और उसे खेते हुए जहाज की ओर चल पडे।

जब मैं जहाज के ऊपर चढा तब दूसरे मालिम ने मुझे पिछले हिस्से में बुलाया और मेरे लिए भेजा गय एक बडा पैकिट दिया जिस पर अकित था "शिप एलर्ट।" इसके लिए मै बेहद बेताब था, लेकिन फिर भी मैने तीर पर पहुँचने से पहले इसे न खोलने का निश्चय किया। जब मैं अगवाड में गया तो मुझे वही पुराने नाविक मिले, और उन्हें फिर देखकर मुझे सचमुच बहुत खुशी हुई। नये जहाज और बोस्टन के नये समाचारो इत्यादि के बारे में तमाम तरह की पूछताछ की गई। एम...के घर से खत आया था और वहा कोई असाधारण बात नही हुई थी। सभी नाविक यह मानते थे कि नया जहाज "एलर्ट' बहुत अच्छा है, और है भी काफी बडा · "रोजा से भी बडा"—"इतना बडा कि कैलीफोर्निया की सारी खालें लाद कर ले जाय"... "उसकी पटरी इतनी ऊची है जितना आदमी का सर"—"क्या खूब जहाज है"
"उसकी पटरा इतन ऊंची है जितना आदमी का सर"—"क्या खूब जहाज है"
—"सदा सजीला जहाज" इत्यादि, इत्यादि। कप्तान टी—ने उसकी कमान सभाल ली है और वह पीछे मोण्टे री गया है, वहा से उसे सैन फ्रान्सिस्को जाना था, और वह सम्भवत दो या तीन महीने के पहले सैन डियागो में नही पहुचेगा।

"पिलग्रिम" के कुछ नाविको की उस पर अपने पुराने जहाजी साथियो से मुलाकात हुई थी और उन्होने उनके रवाना होने से पहले की शाम को उसके अग-वाड में घन्टा दो घन्टा समय बिताया था। उनका कहना था कि उसके डेक बर्फ की तरह सफेद थे, युद्धपोत की तरह हर सुबह बलुए पत्थर के झावे मे उसकी रग-डाई होती है, उस की पर हर चीज "जहाज के शक्ल की और ब्रिस्टल फैशन की" है, नाविक दल काफी अच्छा है, तीन मालिम हैं, एक सिनमाकुर है और एक बढ़ई : किसी चीज की कमी नही है। "उन्होने मालिम के पद पर एक बढिया आदमी तनात कर रखा है न कि डेक पर रहने वाले किसी खून के प्यासे जानवर को।"—"वह ऐसा मालिम है जो अपने काम को बखूबी जानता है और हर आदमी से काम लेता है, और न तो कप्तान उसे धौंस दे सकता है, और न नाविक ही।"

सारी सूचना लेने के बाद हमने उनके नये कप्तान के बारे में कुछ बातें पूछीं। अभी उसे जहाज़ पर आये इतने दिन नहीं हुए थे कि वे उसके बारे में अधिक जान पाते। लेकिन कमान संभालते ही—पहले ही दिन टापगैलेंट मस्तूलों को नीचे उतरवा कर और आधे रस्से-रस्सियों को उखड़वा कर—उसने सब पर अपनी धाक जमा दी थी।

जो भी समाचार हमें मिल सकता था उसे ले चुकने के बाद हम लोग नाव खेकर तीर पर लौटे. गोदाम पर पहुँचते ही मैंने, जैसा कि स्वाभाविक ही था, पहले अपना पैकिट खोला। उसमें मोटे सूती कपड़े, फलालैन की कमीजें, जूते इत्यादि थे। इन सबसे कहीं अधिक मूल्यवान था ग्यारह खतों का एक छोटा-सा पैकेट। मैं लगभग सारी रात बैठा अपने पत्र पढ़ता रहा और फिर अवकाश के समय बार-बार पढ़ने के लिए उन्हें संभाल कर रख दिया। इसके बाद थे आधा दर्जन अखबार, जिनमें सबसे अन्तिम तिथि के अखबार में 'थैंक्स गिविंग' दिवस की सूचना थी और इस बात की सूचना थी कि कप्तान एडवर्ड एच० फाकन के संरक्षण में ब्रायन्ट स्टर्गिस एन्ड कम्पनी का "एलर्ट" नामक जहाज केलाओ और कैलिफोर्निया के लिए रवाना हो गया है।

लम्बी समुद्री यात्राओं पर, घर से लम्बे अरसे तक बाहर रहने के बाद घर से प्रकाशित होने वाले अखबार का मिलना कितना आनंददायक हो सकता है इसे भुक्तभोगी ही समझ सकता है। मैंने इनके हर हिस्से को पढ़ा—किराये के मकान, खोई और चोरी चली गयी चीजें; नीलाम और शेष सभी कुछ। अखबार की तरह कोई दूसरी चीज आपको पूरी तरह किसी स्थान पर नहीं पहुंचा पाती और न आप के मन को पूरी तसल्ली ही दे पाती है। "बोस्टन डेली एडवर्टाइज़र" का नाम ही मेरे कानों में आत्मीयता घोल देता था।

"पिलग्रिम" ने अपनी खालों को उतारा और हम फिर काम पर लग गये। कुछ दिनों तक हम सूखी खालों के अपने पुराने काम में लग गए—भीगी खालें—सफ़ाई—पिटाई इत्यादि। एक दिन जब मैं अपनी छुरी से खालों पर का गोश्त और सड़े हिस्से काट कर अलग कर रहा था, तो कप्तान फाकन मेरे पास आया और मुझसे पूछा कि कैलिफोर्निया मुझे कैसा लगता है और एक बार लैटिन में फिर उसी सवाल को दुहराया, मैंने सोचा सवाल बहुत उपयुक्त है, और साथ ही इससे यह भी व्यंजित होता है कि आप लैटिन भी समझते हैं। बहरहाल, किसी कप्तान

के मुह से निकला हुआ नम्रतापूर्ण शब्द बहुत बडी चीज है इसलिए मैंने बहुत ही भद्रता से अवसर के अनुकूल उत्तर दिया।

शनिवार, ग्यारह जुलाई "पिलग्रिम" प्रतियात दिशा में रवाना हुआ और हम लोगो को उसी पुराने ढग से काम करने को छोड गया। हम लकडी काफी तायदाद मे जुटा चुके थे, और अब दिन के बडा और सर्वथा सुखद होने के कारण हम लोगो के पास काफी समय बच जाता था। घर से आये सूती कपडे के मैंने पाजामें और फ्राक बना डाले और हर रविवार को अपने हाथ की सिली हुई सर से पाँव तक की एक पूरी की पूरी पोशाक पहनने लगा, कतरनो को जोड कर मैंने अपने लिए एक टोपी बना ली थी।

पढना, मरम्मत करना, सोना और इसके साथ कुत्तो को लेकर कभी-कभी झाडियो मे केकरोटी, खरगोश आदि की तलाश में घूमना, या किसी रैटल साप का मुकाबला, और जब-तब किले की ओर निकल जाना, इन कामों मे उस दिन का चमडा ठीक करने के बाद का हमारा समय बीत जाता था। कभी-कभी हम लोग एक और तरह से दिलबहलाव करते थे और वह था मशाल की रोशनी में चिगट मछली पकडना। इस काम के लिए हम लोगो ने एक जोडा कटिया प्राप्त कर लिया था जिसमें हारपून की तरह का लम्बा डन्डा लगा हुआ था। चीड के एक लम्बे डन्डे के चारो ओर कोलतार लगी हुई रस्सिया लपेट कर हम तीर की एक मात्र नाव को ले लेते, एक आदमी मशाल लेकर नाव के मोरे में और एक माझी को पतवार चलाने को पिछले हिस्से मे बैठा लेते थे और एक एक आदमी को कंटिया लेकर दोनो ओर बैठा देते थे और अधेरी रातो में पानी के ऊपर मशाल की रोशनी में चिगटो का शिकार करने को निकल पड़ते थे।

यह बडा मनोरजक शिकार है। तीर से कुछ ही दूरी पर जहा पानी तीन-चार फुट से अधिक गहरा नही था और जहा तलहटी साफ और बलुई थी, मशालों से हर चीज़ साफ दिखायी देती थी, यहाँ तक कि अगर बालू में एक आलपिन भी गिरी हो तो सभवत: वह भी दिखाई पड सकती थी। चिगट बडी आसानी से पकड में आ जाती हैं और हम लोग बहुत जल्द ही ढेरों चिगट पकड लेते थे। दूसरी मछलियों को पकडना अधिक कठिन होता था, फिर भी अक्सर हम लोग विभिन्न आकार-प्रकार की बहुतेरी मछलिया मार लेते थे। "पिलग्रिम" अपने साथ हमारे लिए मछली पकड़ने के कुछ काटे लेता आया था, जो हम लोगो के

पास तौर पर पहले कभी नही थे । इसके बाद हम कई बार पाइन्ट तक गये और वहाँ से काफी मात्रा मे काड और माकरेल मछली पकड कर लाये ।

इन अभियानो मे एक बार हम लोगो ने सैंडविच द्वीप के दो निवासियो और एक शार्क मछली के बीच लडाई होती देखी । "जौनी" मछली हमारी नाव के आसपास ही कुछ देर तक चक्कर ‹ती रही और दूसरी मछलियो को भगाती और हमारे चारे को देख कर दात दिखाती रही, तब अचानक वह हम लोगो की आँखों से ओझल हो गयी । क्षण बाद हमने अपने सामने वाली चट्टान पर मछली मारने वाले दो कनाका लोगो को, बहुत जोर-जोर से चिल्लाते सुना और उन्हे एक मजबूत रस्सी को अपनी ओर खीचते और दूसरे सिरे पर "जौनी शार्क" को विपरित दिशा में जोर लगाते पाया । रस्सी जल्द ही टूट गई, लेकिन कनाका उसे इतनी आसानी से अपने हाथ से निकलने देने वाले जाव नही थे, और वे उसके पीछे पानी में कूद पडे ।

अब रस्साकशी शुरू हुई । इसके पहले कि शार्क गहरे पानी मे जाए, एक ने उसकी पूंछ जा पकडी और उसे तीर की ओर खदेडने लगा, लेकिन जौनी अपने सिर को अपने शरीर के नीचे मोड कर छटपटाती रही, और कनाका के हाथो पर अपने दातों से प्रहार करती रही, अत मे उसने अपने को छुडा लिया और रास्ते से छिटक गयी । अब शार्क ने अपनो दुम मोडी और गहरे पानी की ओर तेजी से भागी; लेकिन इस बार भी इसके पहले कि वह बहुत दू‹ निकल जाए, दूसरे कनाका ने उसकी दुम पकड ली और तीर की ओर लपका । उसी समय इसका साथी उसे एक लम्बे डन्डे और ढेलो से मारने लगा ।

बहरहाल, जैसे ही शार्क ने अपना शरीर ऐंठा, उसे अपनी पकड ढीली कर देनी पडी, लेकिन ज्यो ही वह गहरे पानी की ओर बढी वे दोनो फिर उसे पकडने के फिराक मे उसके पीछे लग गए । इस तरह कुछ देर तक यह युद्ध चलता रहा, शार्क क्रोध में पागल होकर पानी में छपाके लगा रही थी और अपना बदन ऐंठ रही थी और कनाका अत्यन्त उत्तेजित होकर अपना गला फाड कर चिल्ला रहे लेकिन थे; आखिरकार शार्क एक कन्टिया और डोरी और कुछ गहरे जख्म लेकर भाग ही निकली ।

* * *

अध्याय-२१

हम लोग दुर्ग से बराबर सम्पर्क बनाए रहे। ग्रीष्म के अन्त तक मैंने उस स्थान के लगभग सभी व्यक्तियो से परिचय प्राप्त करने के अलावा, अपने शब्द-भडार में काफी वृद्धि कर ली, और वहाँ के लोगों के चरित्र और आचरण के और उन संस्थाओ के बारे में भी कुछ जानकारी प्राप्त कर ली जिसमें वे रह रहे थे।

कैलिफोर्निया की खोज सर्व प्रथम सन् १६३६ में कार्टेज ने की थी, और उसके बाद अनेक साहसिक यात्री और सम्राट द्वारा नियुक्त यात्री वहा जाते रहे। यहाँ इडियन आदिवासियों के असख्य कबीले बसे हुए थे और इसके कई प्रदेश बेहद उपजाऊ पाए गए; इसके अलावा इन प्रदेशो में सोने की खानो, और समुद्र में मोतियो के पाये जाने की अफवाहे भी जुडी हुई थी।

जैसे ही इस देश के महत्व का पता चला कि जैसुइट सम्प्रदाय के लोग यहां के इडियन आदिवासियो में धर्म का प्रकाश फैलाने और उन्हे ईसाई बनाने के उद्देश्य से यहाँ बसने के लिए चल पडे। सत्रहवी शताब्दी के अन्त मे उन्होने इस देश के विभिन्न भागो में अपने मिशन कायम किये और आदिवासियो को अपने सम्प्रदाय मे दीक्षित करके, और उन्हे सभ्य जीवन कैसे बिताया जाता है, इसकी शिक्षा देकर अपने आसपास बसा लिया। अपने मिशनो में जेसुइट लोगों की सुरक्षा, और साथ ही सभ्य आदिवासियो पर साम्राज्य की शक्ति की धाक जमाने, के लिए दो दुर्ग बनाये गये। इनमें एक तो सैन डियागो में बनाया गया और दूसरी मोटेरी मे। इन्हे प्रेसिडियो कहा जाता था, और इन दोनो मे इस पूरे प्रदेश का शासन बटा हुआ था।

उसके बाद सैंटा बारबरा और सैन फ्रासिस्को में भी दुर्ग कायम हुए। इस तरह यह प्रदेश चार बडे-बडे जिलो मे विभाजित हो गया, जिसके हर भाग में एक दुर्ग पडता था और उसका शासन एक कमाडर करता था। इनके सिपाहियों ने प्राय. सभ्य आदिवासियो की लडकियो से शादियाँ की और इस तरह हर दुर्ग के आसपास धीरे-धीरे एक छोटा सा कस्बा बस गया। कालाँतर में, जहाज यहा के बन्दरगाहो पर मिशनो के साथ व्यापार करने के लिए आने लगे और वहां से दूसरी चीजो के बदले खालें प्राप्त करने लगे; और इस तरह कैलिफोर्निया के इस बड़े व्यापार की शुरूआत हुई।

इस देश के लगभग सारे ढार मिशनों के थे जिन्होने यहा के इंडियन आदि-

वासियों को, जो वास्तव में उनके गुलाम बनकर रह गए थे, अपने चौपायों के बड़े बड़े झुन्डों को पालने के लिए रखा हुआ था। सन् १७६३ में जब वानकोबर सैन डियागो आया था, तब तक मिशनो ने बहुत सी संपत्ति और शक्ति एकत्र कर ली थी, और उन पर यह इलजाम लगाया जाता है कि उन्होने यह कह कर कि उन्हें इस सारी सपत्ति का पूरा अधिकार मिल जायगा, साम्राज्य की अवमानना की थी।

स्पेनी उपनिवेशो से जेसुइटो के निष्कासन के बाद मिशन फ्रांसिस्कनों के हाथ में चले गए, हालाकि उनकी व्यवस्था मे कोई आधारभूत अन्तर नही आया। मैक्सिको की स्वतन्त्रता के बाद से मिशनो की हालत बिगडती ही गयी। अन्त में एक कानून बनाकर उन्हे सारी सम्पत्ति से वचित कर दिया गया, और पादरियों का अधिकार-क्षेत्र धार्मिक कृत्यो तक ही सीमित कर दिया गया। इसके साथ ही सभी इडियन आदिवासियो को मुक्त और स्वाधीन पशुपालक घोषित कर दिया गया।

जैसी कि कल्पना की जा सकती है, आदिवासियो की स्थिति में इस कानून से नाम-मात्र का ही परिवर्तन आया · वस्तुत· वे आज भी उतने ही गुलाम हैं जितने पहले थे। लेकिन मिशनो मे आमूल परिवर्तन आ गया। पादरियो को, धार्मिक अधिकारो को छोडकर अन्य कोई अधिकार प्राप्त नही हैं, और मिशनो की भारी सम्पत्ति को सिविल प्रशासन के दैत्यो के भक्षण के लिए छोड दिया गया है जो यहां प्रशासको की हैसियत से, झगडों को निबटाने के लिए भेजे जाते हैं; और जो अन्ततः कुछ वर्षों बाद बडी मात्रा मे निजी सम्पत्ति इकट्ठी कर के, और अपने प्रदेश को पहले से भी गिरी हालत मे छोड कर, अलग हो जाते है।

पादरियो का राजवश यहा के लोगो को, और वास्तव में ऐसे हर व्यक्ति को जो इस देश से व्यापार या किसी अन्य तरीके से सम्बन्धित था, इन प्रशासको से कहीं अधिक स्वीकार्य था। पादरी सदा एक ही मिशन से सम्बद्ध रहते थे, और उसकी साख बनाए रखने की जरूरत महसूस करते थे। लिहाजा वे अपना कर्ज नियमित रूप से चुकाते थे और लोगो के साथ प्राय अच्छा सलूक किया जाता था, और लोग उन पादरियो से काफी लगाव महसूस करते थे जिन्होने अपना पूरा जीवन उनके बीच गुजारा था। लेकिन प्रशासक ऐसे अजनबी थे जिन्हे मैक्सिको से भेजा जाता था, और जिन्हे इस देश मे कोई दिलचस्पी नही होती थी; जिन्हे अपने

कर्त्तव्य का कोई ज्ञान नही होता था। उनमे से अधिकाश लोग ऐसे हुआ करते थे जो अपना धन बर्बाद कर चुके होते थे—असफल राजनीतिज्ञ और सैनिक—जिनका एक मात्र लक्ष्य जितना जल्दी हो सके, अपनी बिगड़ी हुई हालत को पुनः बनाना होता था।

यह परिवर्तन हम लोगों के इस समुद्र तट पर आने के कुछ ही वर्ष पहले हुआ था लेकिन फिर भी, इस थोडे समय मे ही व्यापार बहुत कम हो गया था, साख घट गई और आदरणीय मिशन पराभव को प्राप्त होते जा रहे थे। बाहरी व्यवस्था ज्यो की त्यो हैं।

तट पर कुल मिला कर चार दुर्ग हैं जिनकी छत्रछाया मे विभिन्न मिशन और प्यूब्लो है जो सिविल प्रशासन द्वारा निर्मित ऐसे नगर हैं जिनमें कोई मिशन या दुर्ग नही हैं। सबसे उत्तरी दुर्ग सैन फ्रांसिस्को है, उसके बाद मोंटेरी है, उसके बाद सैंटा बा.बरा है जिसमें वहा का मिशन सैंट लुई ओबिस्पो और सैंट ब्यूना-वेंचुरा, जो समूचे देश में सबसे सुन्दर मिशन है और जिसके पास बहुत उपजाऊ जमीन और बहुत समृद्ध अंगूर के बागान हैं, आते हैं। अन्तिम और सब से दक्षिण की ओर, सैन डियागो है जिसमें वहा का मिशन सैन जुआन कैम्पेस्ट्रानो प्यूब्लो व लास एंजेलस, जो कैलिफोर्निया का सबसे बड़ा नगर है और जिसके पडोस में सैन गैब्रील का मिशन है, आते हैं।

धार्मिक मामलो में पादरी मैक्सिको के आर्कबिशप के अधीन हैं और भौतिक मामलों में गवर्नर जनरल के अधीन, जो इस देश के सिविल और सैनिक मामलों का सब से बड़ा अधिकारी है।

इस देश की सरकार निरंकुश प्रजातान्त्रिक पद्धति की है, जिसके न तो आम कानून हैं और न न्यायाग। उनके कानून विधायिका की उच्छृंखलता से बनते-बिगडते रहते हैं और वे वहा की विधायिका जैसे ही परिवर्तनशील हैं। उन्हें मैक्सिको की काँग्रेस में प्रतिनिधियों को भेज कर पारित कराया जाता है, लेकिन चूंकि वहा तक जाने और लौटने मे कई महीने लग जाते हैं, और राजधानी तथा इस सुदूर प्रदेश के बीच बहुत कम ही पत्र व्यवहार हो पाता है, इसलिए एक सदस्य आम तौर से वहा स्थायी सदस्य के रूप मे रहता है। उसे विदित रहना है कि इसके पहले कि वह लिख कर जवाब मगा सके घर पर क्रान्ति हो जाएगी; और

अगर दूसरा सदस्य भेजा गया तो वह उसे चुनौती दे सकता है और चुनाव से इसका फैसला करा सकता है।

कैलिफोर्निया में क्रान्तियां अक्सर होती ही रहती हैं। हमारे देश के नये राजनीतिक दलों को शुरूआत करने वालों की तरह ही इन क्रान्तियों की जड़ में भी वे लोग होते हैं जो सबसे निचले तबके में और फटेहाली की स्थिति में होते हैं। निःसन्देह इनका एक मात्र लक्ष्य खाने पीने का होता है; और हम लोगों की तरह स्थानीय दलबन्दियां करने, इश्तहारबाजी करने, निन्दात्मक लेख लिखने, दावतें उडाने, वायदे करने, और झूठ बोलने के स्थान पर, वे बन्दूकें और संगीनें संभाल लेतें हैं और दुर्ग और जकात कार्यालयों पर कब्जा करके, जो कुछ लूटपाट से मिला रहता है उसे आपस में बाँट लेते हैं, और एक नये शासक वंश की घोषणा कर देते हैं। जहां तक न्याय का सवाल है स्वेच्छा और आतंक ही उनके लिए एक-मात्र कानून हैं।

एक बार एक यांकी, जो यहीं बस गया था और कैथोलिक सम्प्रदाय को अपना चुका था, और इसी देश की एक लड़की से शादी कर चुका था अपनी बीबी और बच्चों के साथ प्यूब्लो द लास ऐंजेल्स में अपने घर में बैठा हुआ था, कि एक स्पेनी, जिसके साथ उसका कुछ झगडा चल रहा था, घर में घुसा और उन सबके सामने उसके कलेजे में छुरा भोक दिया। हत्यारे को वहीं बसे हुए कुछ यांकियों ने पकड़ लिया और उसे तब तक बन्द रखा गया जब तक कि पूरे मामले का हवाला गवर्नर जनरल के पास नहीं भेजा गया। उसने इस मामले में कुछ भी करने से इनकार कर दिया और जिस आदमी की हत्या हुई थी उसके इलाके के लोगों ने यह देख कर कि न्याय होने की कोई संभावना नहीं है, यह निश्चय प्रकट किया कि यदि कुछ नहीं होगा तो वे खुद इस आदमी को सजा देंगे।

संयोग से इसी समय केंटकी के चालीस अहेरियों और शिकारियों का राइफलों से लैस एक दल, जिसने प्यूब्लो में अपना मुख्यालय बना रखा था, वहां आ निकला और तीस-चालीस स्थानीय अग्रेजों और अमरीकियों को साथ लेकर उसने नगर पर कब्जा कर लिया। काफी समय तक इन्तजार करने के बाद अपने देश के नियमानुसार वे लोग इस आदमी पर मुकदमा चलाने को अग्रसर हुए। एक जज और जूरी के सदस्यों का निर्वाचन किया गया और उस पर मुकदमा चलाया गया। वह स्पेनी दोषी पाया गया और उसे गोली से मार कर प्राण-दण्ड की सजा दी गई।

अब उसकी आखों पर पट्टी बाँध कर कस्बे में घुमाया गया। फिर सभी आदमियों के नामो के परचे एक टोप मे इकट्ठे किये गये और जब हर आदमी ने अपने कर्त्तव्य का पालन करने की प्रतिज्ञा कर ली तब उसमें से बारह परचे निकाले गये। ये बारहो लोग अपनी बन्दूकें लेकर अपने-अपने स्थान पर निशाना साध कर खडे हो गये। एक आवाज के साथ सबने गोली चलाई और वह ढेर हो गया। उसे अच्छी तरह दफन किया गया और उस स्थान को शान्ति पूर्वक उपयुक्त अधिकारियो को सौंप दिया गया।

एक जनरल ने, जो गैब्रील में था और जिसके पास इतनी उपाधिया थी जिनके बल पर उसे स्पेन के विशिष्ट जनो में शुमार किया जा सकता था, विद्रोहियो को नष्ट-भ्रष्ट करने की बडी लम्बी-चौडी घोषणा की लेकिन वह अपने किले से कभी बाहर नही आया; क्योकि कैंटकी के चालीस शिकारी अपनी बन्दूकों के साथ भूखे, मग्यिल और दोगले सिपाहियो की एक पूरी रेजीमेंट के लिए काफी थे। जब यह घटना हुई तब हम लोग सैन पैड्रो (प्यूब्लो के बन्दरगाह) मे थे, और हम लोगों को इस घटना की सारी जानकारी सीधे उन लोगो द्वारा प्राप्त हुई जो घटना स्थल पर मौजूद थे।

इसके कुछ महीने बाद एक दूसरे आदमी ने जिसे हम लोग प्राय सैन डियागो में देखते थे, एक आदमी और उसकी पत्नी की हत्या प्यूब्लो और सैन लुई रे के राजमार्ग पर कर दी, और चू कि विदेशियो ने इस बार बीच मे पडना उचित नहीं समझा, क्योकि दोनो ही पक्ष आदिवासी थे, इसलिए कुछ भी न हो सका। और, मैंने इसके बाद उस आदमी को अक्सर अपनी पत्नी के और परिवार के साथ सैन डियागो मे रहते हुए देखा।

जब अपराधी कोई आदिवासी होता है तो न्याय, कहिए प्रतिहिंसा, में इतना विलम्ब नही हो पाता। एक दिन शनिवार को तीसरे पहर में सैन डियागो में था, एक इन्डियन आदिवासी घुडसवार के पास एक दूसरा इन्डियन पहुँचा जिसके साथ उसका कुछ झगडा चल रहा था। नवागंतुक ने एक लम्बा छुरा निकाला और उसे घोडे के सीने में भोक दिया। आदिवासी अपने गिरते हुए घोड़े से कूद पडा, उसने भी छुरा निकाला, और दूसरे आदिवासी के सीने में भोक दिया और उसे खत्म कर दिया। उस बेचारे को पकड लिया गया, और चटपट जेलखाने में डाल दिया गया,

और तब तक वही बन्द रखा गया जब तक कि मोटेरी से फैसले की सूचना नही आ गयी।

कुछ ही हफ्तो बाद मैने उस बेचारे अपराधी को, जेलखाने के सामने नंगी ज़मीन पर बैठे हुए पाया। वह हथकडी-बेडी से जकडा हुआ था। मै समझ गया कि इसके बचने की बहुत कम ही उम्मीद है। हालाकि यह काम उत्तेजना मे किया गया था, क्योकि जिस घोडे पर वह बैठा था वह उसका अपना था और उसको बहुत प्यारा था, फिर भी वह "आदिवासी था और इतना ही इसके लिए काफी था। इस घटना के एक हफ्ते बाद मैने सुना कि उसे गोली से उडा दिया गया। ये कुछ उदाहरण यह बता सकते है कि कैलिफोर्निया में न्याय का वितरण कैसा है।

घरेलू मामलो मे भी इन लोगो की हालत सार्वजनिक मामलो से अच्छी नही है। पुरुष उडाऊ, घमडी और फिजूल खर्च हैं, और जुआ खेलने के बहुत आदी हैं, और स्त्रियो की शिक्षा नही के बराबर है और सुन्दरता काफी अधिक है, जबकि नैतिकता की दृष्टि से वे बहुत अच्छी नही कही जा सकती, लेकिन फिर भी उनमें बदचलनी के उदाहरण उसकी अपेक्षा बहुत कम पाये जाते हैं जितना किसी को पहले-पहल देखकर लगेगा। वास्तव मे यहाँ एक बुराई के विरुद्ध दूसरी बुराई मौजूद है, इसलिए एक तरह का सतुलन सा स्थापित हो गया है। स्त्रियो मे गुण तो नाम-मात्र के है, और उधर उनके पतियो की ईर्ष्या हद दर्जे की है और उनका प्रतिशोध घातक और लगभग निश्चित ही होता है। अनेक असावधान पुरुषो को, जिनका अपराध सम्भवत. बदचलनी से अधिक असावधानी रहा है, सजा मिली है—कुछ इंच ठन्डा लोहा। ऐसे प्रयत्नो में कठिनाइया आती हैं, और पता चल जाने पर जान से हाथ धोने पडते हैं।

अविवाहित स्त्रियो पर भी कडी निगाह रखी जाती है। माता-पिता का सबसे बडा उद्देश्य होता है लडकियो की अच्छी तरह शादियां करना और इसलिए जरा सा भी डिग जाना घातक हो सकता है। बूढियो की तीखी निगाह और पिता या भाई का छुरा ही उनके चरित्र का एकमात्र रक्षक है, लेकिन उन में से अधिकाश—स्त्रिया और पुरुष—इस रक्षक को एकदम बेकार बना देते हैं, क्योकि वे ही आदमी जो अपने परिवार की बेइज्जती का बदला लेने के लिए अपनी जान हथेली पर रख सकते हैं उसी जान को दूसरे की बेइज्जती करने के लिए भी हथेली पर रख सकते हैं।

बेचारे आदिवासियों की बहुत कम खोज-खबर ली जाती है। मिशनों के पादरियो के बारे में कहा जाता है कि वे उन पर कडी पाबन्दी रखते हैं और उनको चरित्रहीनता के लिए दन्डित करने के लिए अल्कान्डियो ने भी कुछ नियम बनाए हैं, लेकिन यह सब कुछ मिलकर भी बहुत थोडा ही पडता है। वास्तव में उनमें नैतिकता और घरेलू कर्त्तव्यों ... ... अभाव होता है, यह बात इसी से जाहिर होती है कि मैं एक ऐसे आदिवासी को जानता हूँ जो अक्सर अपनी पत्नी को जिससे चर्च मे उसका विधिवत विवाह हुआ है, तीर पर लाता था और फिर मल्लाहों से मिलने वाले पैसे को बाढ कर वापस ले जाता था।

अगर किसी अल्कान्दी को किसी ऐसी लडकी का पता चल जाता था जो अनैतिक जीवन बिताती थी, तो उसे कोडे लगाए जाते थे और उसे दुर्ग के आँगन को बुहारने या मकानो के लिए गारा और ईंट ढोने के काम में लगाया जाता था; फिर भी चन्द रीयलो के लिए वे आम तौर पर बिक जाती थी। नशाखोरी भी आदिवासियो की एक आम बुराई है। इसके विपरीत स्पेनी इस विषय में बहुत संयत होते हैं और मुझे याद नही आता कि मैंने कभी किसी स्पेनी को कभी नशे में धुत देखा हो।

ऐसे हैं वे लोग जो एक ऐसे देश में आबाद हैं जिसका समुद्र तट चार-पाँच सौ मील लम्बा है, और जिस पर अनेक अच्छे बन्दरगाह हैं, उत्तर में सुन्दर दुर्ग हैं, नदी-पोखर मछलियों से भरे हैं, और मैदानो में ढोरों के हजारों गोल हैं, जलवायु इतनी अच्छी कि दुनिया मे इतनी अच्छी जलवायु मिल नही सकती, लोग हर तरह की बीमारियो से अछूते हैं, चाहे वे महामारियाँ हो या स्थानीय बीमारियाँ, और यहाँ की जमीन इतनी उपजाऊ है कि इसमें सत्तर अस्सी गुना अनाज पैदा होता है। हम कह सकते है कि, उद्यमी लोगो के हाथ पडने पर यह देश क्या हो सकता है। लेकिन यह भी सच है कि किसी ऐसे देश में कितनी देर तक लोग उद्यमी रह सकते हैं? अमरीकी (सयुक्त राज्य वालो को अमरीकी कहा जाता है) और अंग्रेजी, जो यहा के प्रमुख नगरों में भरते जा रहे हैं और यहाँ का व्यापार अपने हाथ में लेते जा रहे हैं, वास्तव मे स्पेनियो से अधिक उद्यमी और प्रभावशाली हैं, फिर भी उनके बच्चे हर दृष्टि से स्पेनियों जैसे ही हो जाते हैं और अगर पहली पीढ़ी को कैलिफोर्निया का बुखार (काहिली) बख्श भी दे, तो दूसरी पीढ़ी को जरूर आ दबोचता है।

अध्याय—२२

शनिवार, अट्ठारह जुलाई। आज मैक्सिको का दो मस्तूलों वाला जहाज "फैजो" सैन ब्लास और मैंजाटलान के लिए रवाना हुआ। यह वही जहाज था जिसे सैन पेड्रो में दक्षिणी पश्चिमी झंझा ने किनारे से ला टकराया था और जो सैन डियागो में मरम्मत कराने और अपना लौभार लादने के लिए रुका हुआ था। उसके मालिक को सरकार ने कर इत्यादि के बारे में काफी परेशानी में डाल रखा था और उसकी यात्रा कई हफ्तों के लिए स्थगित हो गई थी, लेकिन सारा मामला तय हो जाने के बाद वह हल्के समीर में रवाना हुआ, और वह बन्दरगाह से बाहर की ओर जा रहा था कि इसी समय दो घुड़सवार पूरी रफ्तार से दौडते हुए तट पर आए और उस तक पहुँचने के लिए एक नाव लेने की कोशिश करने लगे; लेकिन चूंकि तट पर कोई नाव उस समय थी ही नही इसलिए उन्होने किसी भी कनाका को जो तैर कर ब्रिग के पास जा सके और उसे एक खत दे सके चाँदी के काफी सिक्के देने का प्रस्ताव रखा।

एक कनाका ने, जो काफी सजीला, फुर्तीला और हट्टा-कट्टा था अपने सूती पाजामे को छोडकर शेष कपडे उतार फेंके और खत को अपने टोप में रखकर जहाज के पीछे तैर चला। सौभाग्य से हवा बहुत मन्द थी और जहाज धीरे-धीरे ही जा रहा था इसलिए, हालांकि जब वह रवाना हुआ तब जहाज लगभग एक मील दूर जा चुका था फिर भी वह बडी तेजी से उसके पास पहुँचने लगा। वह पानी को किसी छोटी अगनबोट की तरह चीरता और अपने पीछे एक लकीर सी छोडता जा रहा था। मैंने ऐसी जबरदस्त तैराकी पहले कभी नही देखी थी। मल्लाहो ने उसे डेक पर से अपनी ओर बढते हुए देखा लेकिन उन्हे शक था कि न जाने यह क्यो आ रहा है इसलिए—उन्होने जहाज को रोका नही; लेकिन चूंकि हवा अब भी हल्की ही बह रही थी, इसलिए वह तैर कर जहाज के पास पहुँचा और उस पर चढ कर खत दे दिया।

कप्तान ने खत पढा और कनाका से कहा कि इसका हमारे पास कोई जवाब नही है, और एक गिलास ब्राडी पिलाकर उसे जहाज से कूदकर किनारे पहुँचने का सबसे सुगम रास्ता ढूंढ लेने के लिए छोड दिया। कनाका वहाँ से कूद कर किनारे के सबसे निकटवर्ती बिंदु की ओर बढा; और एक घन्टे के भीतर ही चमडे के गोदाम पर दिखाई पडा। वह जरा भी थका हुआ नही लगता था। उसने तीन-चार

डालर कमा लिये थे, एक गिलास ब्राडी उडा ली थी और काफी मौज में दीख रहा था ।

जहाज अपने रास्ते पर ही बढ़ता गया और सरकारी अफसर जो उसको रवाना होने से रोकने आए थे, और जा उसके मालिक से कुछ और रकम ऐंठने की आशा बाँध कर आए थे, अब दाढ़ सी उखडवा कर लौट रहे थे ।

अब तक "एलर्ट" को सैंटा बारबरा पहुँचे लगभग तीन माह हो चले थे, और हम लोग हर रोज इस आशा मे रहते कि वह आज पहुँच जाएगा । खालो के गोदाम के पीछे आधी मील की दूरी पर एक ऊँची पहाडी थी, और हर रोज दिन ढले अपना काम कर चुकने के बाद, हममे से कोई, व्यापारी हवाओ के चलने से पहले जो रोज दोपहर के बाद बहने लगती हैं, उस पर जाकर यह देख आता था कि क्या कोई जहाज नजर आ रहा है । जुलाई के आखिरी दिनो में हम लोग हर रोज पहाडी पर जाते थे और वहा से निराश होकर लौटते थे । मैं उसके आने की बडी उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहा था, क्योकि पत्र द्वारा मुझे यह बताया गया था, कि मेरे मित्रो के अनुरोध पर हमारे मालिको ने जो बोस्टन में रहते थे, कप्तान टी—को एक पत्र लिखा था कि अगर "एलर्ट" "पिलग्रिम" से पहले संयुक्त राज्य अमरीका पहुँचने वाला हो तो वे मुझे उस पर ले लें, और मैं निश्चय ही यह जानना चाहता था कि यह हुक्म कप्तान को मिल गया था या नही, और जहाज का गन्तव्य स्थान क्या है ।

एक साल शायद दूसरों के लिए कोई महत्व न रखना हो लेकिन मेरे लिए इसका महत्व असाधारण था । बोस्टन से चले हम लोगो को लगभग एक साल हो गया था और वहाँ तक पहुँचने में किसी जहाज को आठ—नौ महीने से कम समय तो किसी तरह लग ही नही सकता था । इस प्रकार कुल मिलाकर मेरा बोस्टन से अलग रहना दो साल तो हो ही जाता । यह अवधि काफी लम्बी थी, लेकिन घातक नही थी । यह मेरे भावी जीवन के लिए निर्णायक सिद्ध नही हो सकती थी । लेकिन एक साल और रह जाने पर तो सारा मामला ही खत्म हो जाता । मैं जीवन भर के लिए नाविक ही बनकर रह जाता; और हालाकि घर से पत्र आने के पहले मैंने नाविक बनने का ही निश्चय कर लिया था, और जैसा कि मैं समझता हूँ इसमे बिल्कुल सन्तुष्ट भी था, लेकिन जैसे ही मुझे वापस लौटने का एक अवसर दिखाई पडा, वैसे ही मेरी वापसी की चिन्ता और कम से कम अपने

जीवन की दिशा का निर्णय करने का अवसर पाने की चिन्ता बढ़ गई।

इसके अलावा मैं यह चाहता था कि अगर मुझे इस ओर ही अपने भाग्य का चुनाव करना पड़े तो इसके उपयुक्त बन सकूं, और अपने को एक अफसर के पद के लिए योग्य बना लूं, और नौकौशल सीखने के लिए खालों का गोदाम उपयुक्त स्थान नहीं था। मैं चमड़ा तैयार करने में अनुभवी हो गया था और हर काम बड़े सुचारू रूप से चल रहा था, और मुझे लोगों से परिचय प्राप्त करने के अनेक अवसर मिलते थे, और नौचालन का अध्ययन करने के लिए बहुत अवकाश भी मिलता था, फिर भी व्यावहारिक नौकौशल केवल जहाज पर रहकर ही सीखा जा सकता था और इसलिए मैंने निश्चय कर लिया था कि जहाज के आते ही मैं कप्तान से कहूँगा कि मुझे जहाज पर ही काम करने का मौका दिया जाय। पहली अगस्त तक हमने अपनी सारी खालें सुखा ली और उन्हें संभाल कर रख दिया, अपने हौजों को साफ कर लिया (इस दूसरे काम में हम लोगों ने दो दिन अपने घुटनों तक कीचड़ और छः महीने तक चमड़ा तैयार करने के दौरान जमे हुए तल-छट, और ऐसी बदबू में धस कर बिताये जिससे कोई आयरिश भी अपना नाश्ता छोड़कर भाग जाये) और जहाज के आगमन की प्रतीक्षा करने लगे, और फिर हमें आराम करने का तीन-चार सप्ताह का अवकाश मिल गया; जिसे मैंने हमेशा की तरह पढने, लिखने, अध्ययन करने, अपने कपड़ों और जूतों की मरम्मत करने और अपनी पेटी को जहाज पर जाने की दृष्टि से तैयार करने, और मछली मारने, कुत्तों के साथ जंगल छानने, और यदा-कदा दुर्ग और मिशन में जाने में बिताया।

मेरा काफी समय एक छोटे पिल्ले की देखभाल में चला जाता था जिसे मैंने अपने गोदाम पर तीन दिनों में पैदा होने वाले छत्तीस कुत्तों में से चुना था। यह पिल्ला बहुत सुन्दर और होनहार था, इसके चारों पंजे सफेद रंग के थे और शेष शरीर गहरे भूरे रंग का था। मैंने उसके लिए एक ओर एक छोटी सी कुठरिया-सी बना ली थी, और उसे दूसरे कुत्तों से अलग वहीं बाँधकर रखता था और उसे खिलाता और सिखाता था। कुछ ही हफ्तों में वह पूरी तरह मेरे इशारे पर नाचने लगा। वह बहुत अच्छी तरह बढ़ रहा था, मुझसे बहुत हिल गया था, और यह बात साफ जाहिर होती थी कि वह समुद्र तट के सबसे अच्छे कुत्तों में से एक होगा। मैं उसे ब्रेवो कहता था और इस तट को छोड़ने की बात सोचने पर मुझे एक मात्र इसी बात पर दुख होता था कि मुझे उससे अलग होना पड़ेगा।

रोज ही हम लोग पहाडी पर जाते लेकिन कोई जहाज नजर नही आता था और हम लोग इस विषय मे तमाम तरह की अटकलबाजिया लगाने लगे थे कि इस समय वह कहां होगा, विभिन्न गोदामो पर शाम को और समुद्र के किनारे दोपहर बाद टहलते-घूमते हम लोगों के बीच चर्चा का विषय वह जहाज ही रहता था—वह कहा होगा—वह सैन फ्रासिस्को तो नही चला गया—वह अपने साथ कितनी खालें ले आएगा, इत्यादि, इत्यादि।

वृहस्पतिवार, पच्चीस जुलाई। आज सुबह हमारे गोदाम के अफसर दो कनाको को लेकर मछली का शिकार करते हुए पाइट से आगे चले गए थे, और हम लोग चुपचाप अपने कमरे में बैठे हुए थे कि दोपहर के ठीक पहले हम लोगो ने "जहाज हो !" की बहुत जोर की आवाज समुद्र तट के हर हिस्से मे आती हुई सुनी। कनाका लोगो की भट्ठी से लेकर "रोजा" के गोदाम तक—सब कही से यही आवाज आ रही थी। एक क्षण में ही हर आदमी अपने गोदाम से बाहर निकल आया; और हमने देखा कि एक बहुत शानदार, लम्बा जहाज अपने रायल और आकाश पाल ताने, दोपहर के बाद चलने वाली तेज हवाओ मे झुकता हुआ बडी तेजी से पाइन्ट से होकर तट की ओर चला आ रहा था। उसके यार्ड बहुत मजबूती से काफी ऊपर की ओर बंधे हुए थे, हर पाल चढ़ा हुआ था और उसमे खूब हवा भरी हुई थी। उसके तीसरे मस्तूल के शिखर पर थाकी झडा फहरा रहा था, और चू कि ज्वार उसके अनुकूल पड रहा था इसलिए वह घुडदौड के घोड़े की तेजी से बन्दरगाह में चला आ रहा था।

डियागो के बन्दरगाह पर पिछले छ महीनों से कोई नया जहाज नही आया था और निश्चय ही हर आदमी इसे देखकर सोच-विचार में पड गया। वह देखने में निश्चय ही बहुत सुन्दर था। जैसे ही वह आगे बढा, त्यों ही उसके हल्के पालों को बाध दिया गया और अपने शिखरपाल की रस्सियो को कस कर, तीसरे मस्तूल के शिखरपाल को ताने रहकर, उसने बड़ी खूबसूरती से मोड लिया और समुद्र के किनारे लगभग एक केबिल की दूरी पर अपना लगर डाल दिया। कुछ ही मिनटो में शिखर पालो के यार्डों पर आदमी चढ़ा दिए गए और उसके तीनो शिखरपाल एक साथ ही लपेट दिये गये। अगले टापगैलेन्ट यार्ड से आदमी खिसक कर जिब को समेटने के लिए तान पर चले गए, और तीसरे मस्तूल के टापगैलेन्ट यार्ड से, तान द्वारा होकर प्रमुख शिखर पर और फिर वहा से यार्ड पर चले गए; और

ऊपरी पाल के यार्डो के आदमी लिफ्ट के नीचे कोर्सो के यार्ड आर्मों पर चले आए। पालो का बहुत सावधानी से उनके बीच के हिस्सो को चरखी के सहारे बाधा गया, और जिबो को कपडो मे सभाल कर रख दिया गया। फिर यार्डो को अलग किया गया और चर्खियो का यार्ड आर्मो और तान पर लाया गया, दीर्घ नौका को बाहर निकाला गया और पीछे भी एक बडा लगर डाल दिया गया और तब जहाज को बाध दिया गया।

इसके बाद छतरी पर से कप्तान की छोटी नाव नीचे उतारी गयी और चौदह से अठारह वर्ष के बीच की आयु के खासे अच्छे छोकरो का नाविकदल कप्तान की नाव को किनारे की ओर ले आया। यह नाव ह्वेल मारने की हल्की नौका जैसी थी, जिस पर खूबसूरती से रग-रोगन किया हुआ था, और उसके पिछले भाग में गद्दिया इत्यादि लगी हुई थी। हम लोगो ने नाव के नाविको पर तत्काल धावा बोल दिया और कुछ ही मिनटो में उनसे बहुत हिल-मिल गए। हम लोगो को बोस्टन के रास्ते आदि के बारे में तमाम सारी बातें पूछनी थी और वे यह जानने को उत्सुक थे कि हमें समुद्र तट पर कैसी जिन्दगी बितानी पड रही है। उनमें से एक मुझसे अदला-बदली करने को राजी हो गया; और मैं तो यही चाहता ही था, और अब हमें सिर्फ कप्तान की अनुमति लेनी बाकी थी।

डिनर के बाद नाविक खालें उतारने लगे और चूंकि हम लोगो के पास भी गोदाम पर कोई काम नही रह गया था, इसलिए हमें जहाज पर जाकर उनकी सहायता करने का हुक्म हुआ। मुझे उस जहाज को देखने का पहला अवसर प्राप्त हुआ जो, मुझे आशा थी कि, अगले वर्ष के लिए मेरा घर बनने वाला था। अदर से भी वह वैसा ही था जैसा बाहर से दीखता था। उसके डेक चौडे थे और उनमें काफी जगह थी (क्योकि डेको पर बराम या घर नही बना था, जो हमारे अधिकाश जलयानो के पिछले भाग को बदशक्ल बना देता है।), वे आगे से पीछे तक एक दम चिकने और दूध जैसे धवल थे। नाविको ने हमें यह बताया कि यह बलुए पत्थर से लगातार रगडाई होते रहने के कारण ऐसा है। स्थल के लोगो और यात्रियों की दृष्टि को आकर्षित करने के लिए उस पर किसी तरह का भोडा मुलम्मा नहीं चढा था और न ही और कोई तडक-भडक थी, लेकिन हर चीज़ ऐसी थी जैसी किसी अच्छे जहाज पर होनी चाहिए और जहाज ब्रिस्टल के फैशन का

था। न तो कही जग, न गदगी, न तो ढाली-ढाली रस्सिया, न रस्सियो के टुकड़े इधर उधर बिखरे हुए।

मालिम एक अच्छा, जिन्दादिल और शोर मचाने वाला आदमी था, उसकी आवाज शेर जैसी थी, और वह हमेशा बहुत सनक रहता था। जैसा कि नाविक उसके बारे मे बताते थे, रोम रोम से वह सच्चा नाविक था, और हालाकि वह कुछ दुनियादार किस्म का आदमी था और बहुत अच्छी से पेश आता था, फिर भी आमतौर पर सभी नाविक उसे प्यार करते थे। जहाज पर दूसरे और तीसरे नम्बर के मालिम भी थे, एक बढई, एक सिलमाकुर, स्टीवार्ड और रसोइया आदि थे और छोकरो को मिला कर बारह नाविक अगवाड में थे।

उस पर सात हजार खालें लदी थी, जिन्हे उसने प्रतिवात दिशा की यात्रा के दौरान एकत्र किया था, इसके अलावा सीग और चर्बी भी थी। हम लागो ने उसका सामान दोनो गलियारो से दो नावो में उतारना शुरू किया। दूसरे मालिम ने लाच का नेतृत्व सम्भाला था और तीसरे मालिम ने दूसरी नौका का। कई दिनो तक हम लोग इसी तरह का काम करने मे लगे रहे। अन्ततः सारी खालें उतार ली गयी। तब जहाज के नाविको ने उसमें नीरम भरना शुरू किया और हम लोग अपने चमड़ा तैयार करने के काम पर जुट गये।

शनिवार, उन्तीस अगस्त। "कैटलिना" नामक दो मस्तूलो वाला जहाज प्रतिवात दिशा से बन्दरगाह में पहुचा।

इतवार, तीस तारीख। नाविको को सैन डियागो में मिलने वाला यह पहला इतवार था, और निश्चय ही वे सभी कस्बा देखने जाने वाले थे। आदिवासी सबेरे ही अपने घाडो को किराये पर देने के लिए समुद्र के किनारे आ गए और, वे सभी माझी जिन्हे छुट्टी मनाने का हुक्म मिल गया, दुर्ग और मिशन देखने गए और रात के पहले कोई लौटकर नही आया। मैं सैन डियागो को काफी देख चुका था इस लिए मैं जहाज पर गया और अपना दिन उसके मल्लाहो के साथ बिताया। जब मैं पहुँचा तो ये लोग अगवाड में चुपचाप अपने कपडो की मरम्मत और धुलाई करने, लिखने या पढने में लगे हुए थे।

उन्होने मुझे बताया कि जहाज कैलाओ में रुक गया था और वहा तीन हफ्ते तक पडा रहा। बास्टन से कैलाओ तक पहुँचने में उन्हे केवल अस्सी दिन लगे जो कि एक रिकार्ड था। वहाँ उन्होने "ब्रेंडीवाइन" युद्धपोत और दूसरे अमरीकी

युद्धपोतों, और अंग्रेजी युद्धपोत "ब्लाडी" और एक फ्राँसीसी जहाज को छोडा। कैलाग्रो से वे सीधे कैलीफोर्निया की ओर गये। रास्ते में वे समुद्र तट के सभी बन्दरगाहो को, जिनमें सैन फासिस्को भी सम्मिलित है, देखते हुए आये हैं।

उनका अगवाड काफी बडा था और मोटे शीशो की खिडकियो के कारण उसमें काम चलाऊ रोशनी भी थी, और बिल्कुल साफ-सुथरा रखा जाने के कारण वह देखने मे बहुत कुशादा और आरामदेह लग रहा था; कम से कम यह उस छोटी, काली, गन्दी कोठरी से, जिसमे मै "पिलग्रिम" के नाविक के रूप में काम करते हुए कई महीने तक रहा था तो बहुत ही बढिया था।

जहाज के नियमानुसार अगवाड की रोज सफाई होती थी और चू कि इसके मल्लाह भी काफी साफ-सुथरे थे इसलिए इसे साफ-सुथरा रखने के लिए उन्होने अपने भी कुछ नियम बना लिये थे, मिसाल के तौर पर सीढियो के नीचे उन्होने उगालदान रख दिये थे और हर आदमी अपने भीगे कपडे टाग देता था। इसके अलावा हर शनिवार को सुबह बलुए पत्थर से इसकी घिसाई होती थी।

जहाज के पिछले हिस्से में एक खूबसूरत केबिन था, एक भोजन कक्ष था, और एक छोटी सी दूकान थी जिसमें शेल्फ लगे हुए थे और हर तरह का सामान रखा रहता था। इनके और अगवाड के बीच एक "डेको की मियानी" थी, जो उतनी ही ऊची थी जितना किसी युद्धपोत का गन डेक, यह शहतीर से साढे छः फुट नीचे पडता था। इन मियानियो को नियमित रूप से रगडा जाता था और इसे हमेशा दुरूस्त रखा जाता था, मियानी के एक हिस्से में बढ़ई की बेंच और उसके हथियार थे, दूसरे हिस्से में सिलमाकुर जमा हुआ था, और तीसरे मे बोसुन का सन्दूक रहता था जिसमें फालतू रस्से-रस्सिया रहती थी। यहा शहतीरों से आगे पीछे को झूलती हुई जालियो में कुछ मल्लाह भी सोते थे, और रोज सुबह उन्हे समेट कर रख देते थे। इस मियानी के पार्श्वों पर ढलवाँ तख्ते लगे हुए थे, जिनमें लोहे के कब्जे और कुन्दे लगे हुए थे जिन्हे जरूरत पडने पर निकाला भी जा सकता था।

मल्लाहों का कहना था कि उनका जहाज ढोल की तरह कसा हुआ है, और यह एक बडा श्रेष्ठ जलयान है, इसमें सिर्फ एक ही दोष है जो प्राय सभी तेज चलने वाले जहाजो में पाया जाता है—कि इसका अगला हिस्सा भीग जाता है। जब यह हवा के रुख में कभी कभी आठ या नौ नाट (समुद्री मील) की रफ्तार

से चलता था, जैसा कि यह कभी-कभी चलता ही था, तो गलियारे के आगे कोई जगह सूखी नही रह जाती थी। वे उसके चलने के सम्बन्ध में तरह तरह की कहानिया सुनाते थे और उन्हे इस बात का बहुत विश्वास था कि वह एक "भाग्यशाली जहाज" है। इसकी उम्र सात साल थी और हमेशा कैंटन मे व्यापार करता आया था, पर कभी भी इसके साथ कोई खास दुर्घटना नही घटी और ऐसा भी कभी नही हुआ जब इसने अपना फासला औसत से कम समय मे तय न किया हो, तीसरा मालिम, जिसकी उम्र लगभग अठारह वर्ष की थी और जो इसके मालिको में से एक का भतीजा था, इस पर छोटेपन से ही रहा था, और उसे इस जहाज पर काफी भरोसा था; और मुख्य मालिम तो उसका इतना ख्याल रखता था जितना वह अपनी बीबी और परिवार का भी नही रखता होगा।

जहाज बन्दरगाह पर एक हफ्ते तक पडा रहा। इसके बाद अपना माल उतार लेने और तीरम भर लेने के बाद वह चलने के लिए तैयार हो गया। अब मैंने कप्तान से जहाज पर काम करने के लिए आवेदन किया। उसने मुझे बताया कि मैं उस जहाज में तब घर जा सकूंगा जब यह यहा से रवाना होगा (जैसा कि मैं पहले से ही जानता था); और यह जानकर कि मैं तीर पर न रह कर उसके जहाज में अभी से काम करना चाहता हूँ, उसने कहा कि उसे कोई आपत्ति नही हैं, बशर्ते मैं अपनी ही आयु के किसी आदमी के साथ अपने काम की अदलाबदली कर लू। यह शर्त मैंने बडी आसानी से पूरी कर दी; क्योंकि वे लोग कुछ महीने किनारे पर रह कर वहाँ का नजारा देखने और इसके साथ ही सर्दी और दक्षिणी पश्चिमी झंझाओ से जान बचाने की बात से बहुत खुश थे, और मैं दूसरे ही दिन अपना सन्दूक और झूलना लेकर जहाज पर चला गया और एक बार मैंने फिर अपने को पानी पर तिरते हुए पाया।

* * *

अध्याय २३

मंगलवार, आठ सितम्बर। इस जहाज पर काम करने का आज मेरा पहला दिन था, और यद्यपि मल्लाह की जिन्दगी हर जगह मल्लाह की जिन्दगी ही होती है, फिर भी मुझे यहा की हर चीज "पिलग्रिम" से जुदा रगत लिए दिखायी दी। भोर में सब लोगो को काम पर बुलाने के समय हर आदमी को कपड़े पहनने और

डेक पर आने के लिए साढ़े तीन मिनट का समय दिया जाता था। अगर किसी को ज्यादा देर लगती थी तो मालिम, जो हमेशा डेक पर मौजूद रहता था, उसे जोर से आवाज देकर दुबारा बुला लेता था। सब लोगों के आ जाने के बाद हेड पप लगाया जाता था और दूसरे व तीसरे मालिम डेकों की धुलाई शुरू करा देते थे; इस बीच मुख्य मालिम छतरी पर टहलता रहता था, वह काम पर नजर तो रखता था लेकिन खुद हाथ नही लगाता था। अन्दर और बाहर, आगे और पीछे, ऊपरी डेक और डेकों की मियानी, स्टीअरेज और अगवाड, पटरी के अडवाल और नालियाँ—सभी की, झाड़ू और कपडे की मदद से, धुलाई, रगडाई और घुटाई होती थी। इसके बाद डेकों को गीला किया जाता था और उन पर बालू बिछा कर बलुए पत्थर से उनकी रगडाई होती थी।

बलुआ पत्थर एक बडा, मुलायम पत्थर होता है, जिसकी तली को घोट कर चिकना कर लिया जाता है। इसके दोनो ओर रस्सिया बाध दी जाती हैं जिन्हें पकड कर मल्लाह गीले और रेत-बिछे डेकों पर इस पत्थर से घोटा लगाते हैं। जो जगह तंग होती हैं और जहाँ यह पत्थर नही जा पाता वहाँ मल्लाह अपने छोटे बलुआ पत्थरों से घुटाई करते हैं। इन छोटे पत्थरों को वे "प्रार्थना पुस्तकों" के नाम से पुकारते हैं। एकाध घन्टे हम इसी काम पर लगे रहते थे। इसके बाद हेड पम्प फिर चालू किया जाता था और डेकों और जहाज के पहलुओं पर से रेत को बहा दिया जाता था। इसके बाद इन्हे सुखाया जाता था; और तब हर आदमी अपने-अपने काम पर जुट जाता था।

जहाज में पाँच नावें थी—लाच, पिनेक, जाली नाव, डाबा क्वार्टर नाव और गिग। हर नाव का एक कनहार होता था जो अपनी नाव का अध्यक्ष होता था और उस पर व्यवस्था व सफाई बनाये रखने के लिए जिम्मेदार होता था। सफाई का बाकी काम नाविको में बाट दिया गया था। एक का काम था ह्वील पर नगे पीतल वगैरह की सफाई करना। दूसरे के हिस्से मे घन्टी की सफाई थी। घन्टी पीतल की थी। और हरदम चमचमाती रहती थी। तीसरे आदमी का काम गोश्त के पीपे की सफाई करना था। चौथा आदमी रस्सियों के खभे की सफाई के लिए जिम्मेदार था, दूसरे मल्लाहो का काम अगवाड़ और फलकों की बलुए पत्थर से घुटी हुई सीढियों की सफाई करना था।

नाश्ते से पहले ही इन सब कामो का खत्म होना जरुरी था। नाश्ते से पहले ही

बाकी के मल्लाह मोखे की टंकी भर लेते थे और रसोइया खाने के काठ के टबो को साफ कर के मुआइने के लिए रसोई के आगे रख देता था। जब डेक सूख गये तब महामहिम कप्तान महोदय ने छतरी पर दर्शन दिये और कुछ देर चहलकदमी करते हुए सब चीजो का निरीक्षण किया। इसके बाद आठ घन्टियाँ बजी, और सब लोगों को नाश्ता दिया गया।

नाश्ते के लिए आधे घन्टे का समय दिया गया। जब टब, बरतन, रोटियो के थैले वगैरह यथास्थान पहुचा दिये गये तब आज सुबह चलने की तैयारिया शुरू हुई। जिस जजीर से हमारा जहाज बधा हुआ था उसे हमने ढीला छोडना शुरू किया, और दूसरी को लपेटना शुरू किया। इस तरह हमने लगर को कुछ ऊपर उठा लिया और जजीर को लपेटना बन्द कर उसे अधर में लटका रहने दिया। यह काम "पिलग्रिम" की अपेक्षा कम समय में सम्पन्न हो गया, क्योंकि यद्यपि हर चीज "पिलग्रिम" से दुगुनी बडी और भारी थी—मिसाल के तौर पर इस जहाज की लंगर कप्पी इतनी बडी थी कि एक आदमी मुश्किल से उठा सके, जंजीर "पिलग्रिम" की जजीर से तिगुनी लम्बी थी—फिर भी एक तो लोगो के हिलने-डुलने की गुन्जाइश काफी थी, दूसरे काम अनुशासित और व्यवस्थित ढँग से हो रहा था, तीसरे आदमियो की संख्या "पिलग्रिम" से अधिक थी और पारस्परिक सद्-भावना प्रचुर मात्रा में थी, फिर अफसर और नाविक अपने-अपने काम के जान-कार थे, इसलिए सब काम बडे आराम से हो रहा था।

लगर के कुछ उठते ही अगवाड में खडे मालिम ने पालो को ढीला करने का हुक्म दिया। पलक झपकते ही सब लोग रस्सियो पर टूट पडे और एक दूसरे को धकियाते बराडलो पर से होते हुए यार्डों पर चढ़ गये। सबसे कुशल मल्लाह सब से पहले यार्ड पर पहुचा, और उसने यार्ड-भुज और बन्ट की गैस्केट रस्सियाँ खोल दी। हर यार्ड पर एक आदमी हुक्म मिलते ही पाल की गाठ खोलने के लिए ऊपर रह गये और बाकी रस्सियो व पाल रस्सियों को खोलने के लिए नीचे रह गये।

तब मालिम ने यार्डों के लोगो को संबोधित करके कहा—"आगे सब तैयार है ?"—"यार्ड तैयार है ?" आदि आदि; और हर आदमी से "हा हां, सर!" का जवाब आया। अब पाल खोल देने का हुक्म दिया गया और पलक मारते जिस

जहाज पर नगे यार्डो के अलावा कुछ भी नही था उस पर रायल मस्तूल के शिखर से डेको तक ढीले-ढाले पाल तन गये ।

तब शिखरपालों पर एक-एक आदमी को छोडकर सब लोग नीचे उतर आये। इसके बाद शिखरपाल भी तान दिये गये और उनकी रस्सिया बाध दी गयी । तीनों यार्ड मस्तूलो के शिखरों पर साथ ही साथ पहुँचे । आगे यार्ड पर डाबा बाजू के नाविक थ और प्रमुख यार्ड पर जमना बाजू के । दोनों बाजुओ को पहरा-टोली में से पांच मल्लाह (जिनमें मैं भी शामिल था) रस्सियो पर काम करने के लिए चुन लिये गये थे, और उन्हे पिछले यार्ड का काम सौपा गया था ।

इसके बाद यार्डो को हवा की अनुकूल स्थिति मे कर दिया गया । अब लगर उठाया गया और लंगर कप्पी को हुक कर दिया गया । इसके बाद सभी मल्लाहों और रसोइये ने लंगर उठाना शुरू किया और "चीअरिली मैन !" के उत्साहपूर्ण सहगान के साथ लगर को उसके कुंदे तक उठा लिया गया ।

अब जहाज चल पडा था और झटपट उसके ऊपर हल्के पाल ताने जाने लगे, और रेतीले पाइन्ट को पार करने के पहले ही जहाज पर संपूर्ण पाल तान दिये गये थे । अगला रायल पाल तानना मेरे हिस्से मे आया था (क्योकि मैं मालिम वाली पहरा-टोली में था) । यह पाल "पिलग्रिम" के अगले रायल पाल से दुगुने से भी बडा था । "पिलग्रिम" के पाल को मै आसानी से भुगत लेता था लेकिन इस पाल से मेरे हाथ भर से गये । इसकी खास वजह यह थी कि सफाई को दृष्टि में रखते हुए डेको पर जैक नही रखे गये थे और गरीब मल्लाह को अपना काम बिना किसी तरह की मदद के पूरा करना होता था ।

पाइन्ट से आगे निकलने और सब पालो के तन जाने के तुरन्त बाद "बहरा टोली नीचे जाए !" का आदेश दिया गया । बाद में नाविको ने मुझे बताया कि जब से वे कैलिफोर्निया-तट पर आये हैं तब से एक बन्दरगाह से दूसरे तक जाने में उन्हे "लगातार पहरा" देना पडा है । और सच तो यह है कि यद्यपि जहाज पर कडा अनुशासन रखा जाता था और हर आदमी से उसकी कूवत भर पूरा पूरा काम लिया जाता था फिर भी कुल मिलाकर जहाज पर मल्लाहो के साथ बहुत अच्छा सुलूक किया जाता था ।

हर आदमी जानता था कि उसे पक्का मल्लाह बनना है और अपने काम को फुर्ती से करना है, लेकिन हर आदमी अपने साथ होने वाले बरताव से संतुष्ट था;

और वह संतुष्ट, एक-दूसरे से सहमत और बात-बात में त्रुटि न निकालने वाला नाविक दल "पिलग्रिम" के छोटे, काम में पिले हुए, असतुष्ट, रोते हुए और निराश नाविक दल के ठीक विरोध में था।

नीचे जाने की बारी हमारी पहरा टोली की थी, इसलिए नीचे जा कर हमारी टोली के लोग कपडो की मरम्मत या अपने दूसरे छोटे मोटे कामों में लग गये; और चूंकि मैंने सैन डियागो मे रहते हुए ही सारी तैयारी कर ली थी, इसलिए मेरे पास पढने के अलावा कोई काम न था। लिहाजा, मैंने नाविको की पेटियो को उलटना-पलटना शुरू किया लेकिन अपने मतलब की कोई किताब मुझे नही मिल सकी। तभी एक मल्लाह ने बताया कि उसके पास एक ऐस किताब है जिसमें "एक बडे डकैत का किस्सा" है। उसने अपने सन्दूक के नीचे से वह किताब निकाल कर मुझे पकडा दी, और मुझे यह देखकर हैरत और खुशी हुई कि वह किताब बुल्वर-रचित "पाल क्लिफोर्ड" थी। मैंने झपट कर वह किताब ली और जाकर अपनी जाली में लेट गया जहा अपनी टोली का पहरा शुरू होने तक मैं पढता और झूलता रहा। डेको की मियानी साफ थी, फलका-मुख खुले हुए थे और उनसे होकर ठन्डी हवा आ रही थी। जहाज मजे से चल रहा था और सब-कुछ ठीक-ठाक था। मैने अभी कहानी शुरू ही की थी कि आठ घन्टिया बजी और हमें डिनर का हुक्म दिया गया।

डिनर के बाद हमारी टोली को डेक पर चार घन्टे तक पहरा देना पडा, और चार बजे मैं फिर नीचे गया और अपनी जाली में लेट कर अधपहरे के समय तक किताब में खोया रहा। चूंकि आठ बजे के बाद रोशनी करना मना था, इसलिए रात के समय मैं नही पढ सका। हल्की हवाओं और सन्नाटो में होते हुए हमारा जहाज तीन दिन तक आगे बढता रहा और, किताब खत्म होने तक, दिन में अपनी पहरा टोली के नीचे आते ही मै किताब में खो जाता था।

इस पुस्तक से मुझे जो आनन्द मिला उसे मैं कभी नही भूल पाऊंगा। उस माहौल में साहित्यिक गुणो से युक्त किसी भी किताब का हाथ लग जाना इतनी बडी बात थी कि यह किताब तो मुझे अमृत-तुल्य ही लगी। पुस्तक में लेखक की तेजस्विता, व्यग्यो का शानदार सिलसिला, सजीव और विशिष्ट रेखाचित्र—इस सबने मुझे बराबर हर्ष-पुलकित रखा। एक मल्लाह के नसीब में भला यह कहाँ बदा है? मेरी यह खुशी ज्यादा देर तक चल भी कैसे सकती थी।

डेक पर जहाज का काम नियमित रूप से चल रहा था। सिलमाकुर और बढई डेको की मियानी में काम करते थे और अन्य व्यापारी पोतो की तरह नाविक पाल ठीक करने, गप्पें लडाने और बटा सन तैयार करने में लगे रहते थे।

रात के पहरे "पिलग्रिम' के मुकाबले कही सुखद थे। वहाँ पहरा टोली में नाविको की सख्या इतनो कम थी कि जब एक नाविक पहिए पर बैठ जाता था और दूसरा पहरा देने लगता था तो बातें करने को कोई साथी नही मिलता था। लेकिन यहाँ एक पहरा टोली मे सात नाविक थे, इसलिए हम खुल कर गप्प लडा सकते थ। दो तीन रात पहरा देने के बाद ही मै डाबा पहरा-टोली के सभी नाविको से परिचित हो गया।

हमारी टोली का मुखिया सिलमाकुर था और आम तौर पर वह जहाज का सबसे अनुभवी नाविक माना जाता था। वह एक युद्धपोत का मंजा हुआ नाविक था और बाईस बार समुद्र-यात्रा कर चुका था। वह प्राय सभी प्रकार के—युद्ध-पोत, निजी जहाज, गुलामो को पकडने वाले जहाज, और व्यापारी—जहाजो पर नौकरी कर चुका था। सिफ ह्वेल पोत उससे अछूने रह गये थे, और हर पक्का मल्लाह इन पोतो से नफरत करता है, और मौका मिलते ही भाग निकलता है। वह दुनिया के प्राय सभी भागो मे हो आया था और गप्प मारने में उसका सानी नही था। पहरे के समय उसकी गप्पें अक्सर चलती रहती थी और वह सब लोगो को जगाये रहता था। अपनी असभाव्यता के कारण उसकी गप्पें हमेशा मनोरजक होती थीं और यह यह नही चाहता था कि लोग उन पर विश्वास करें बल्कि उसका उद्देश्य लोगो का मनोरजन ही होता था, और चूकि उसमें हास्य-विनोद की क्षमता थी और वह युद्धपोत के विशिष्ट ग्रामीण प्रयोगो और मल्लाहो के नम-कीन मुहावरो का ज्ञाता था इसलिए वह हमेशा मजा बाध देता था।

अवस्था, अनुभव और पद की दृष्टि से उसके बाद हमारी पहरा टोली में हैरिस नामक एक अग्रेज का नाम आता था। उसके बारे मे मैं आगे चलकर बताऊगा। इसके बाद दो-तीन अमरीकी नाविक थे जो यूरोप और दक्षिणी अम-रीका की सामान्य यात्राओ पर हो आये थे। एक अमरीकी ह्वेलपोत पर काम कर चुका था और उसके पास ह्वेल-विषयक असंख्य कथाओ का भन्डार था। टोली का अंतिम नाविक केप कौड का चौडी कमर और बडे सिर वाला एक छोकरा था जो एक मैकरैल स्कूनर में काम कर चुका था और किसी खरेवाह वर्दी के

जहाज में पहली बार यात्रा कर रहा था। उसका जन्म हिंघाम में हुआ था और मल्लाहो ने उसका नाम "बकेटमेकर" रख छोडा था।

दूसरी टोली में भी लगभग इतने ही मल्लाह थे। उस टोली का मुखिया एक लंबा, खूबसूरत फ्रांसीसी था जिसके गलमुच्छे काले स्याह और बाल घुंघराले थे। वह अव्वल दर्जे का मल्लाह था, और उसका नाम जान था (मल्लाह के लिए इतना छोटा-सा नाम ही काफी होता है)। उसके अलावा इस टोली में दो अमरीकी नाविक (इनमें से एक तो बिगडा रईस था और अच्छे परिवार से था लेकिन अब मोटे सूती कपडे की पतलून पहनने और मासिक वेतन पर नौकरी करने को मजबूर हो गया था), एक जर्मन नाविक, बेन नामक एक अंग्रेज छोकरा जो मेरे साथ पिछले शिखरपाल में काम करता था और अपनी उम्र को देखते हुए अच्छा नाविक था और बोस्टन के पब्लिक स्कूलो से अभी-अभी निकले दो छोकरे थे। कभी-कभी बढई को भी जमना टोली मे शामिल कर लिया जाता था जो जन्म से स्वीडिश था। वह एक अनुभवी मल्लाह था और जहाज का सर्वश्रेष्ठ कर्णधार माना जाता था। हमारे जहाज पर इतने लोग थे। इनके अलावा अश्वेत रसोइया और स्टीवार्ड था, तीन मालिम थे और कप्तान तो था ही।

हमें निकले दूसरा दिन ही हुआ था कि सामने आंधी आती दिखायी दी और हमें किनारे की ओर जाना पडा। जहाज के रास्ता बदलने मे मुझे जहाज के नियमो का भी काफी ज्ञान हो गया। यहा ऐसा नही था कि जहाँ सुविधा हो वहाँ जाओ या जहाँ काम पडे वहाँ भागते फिरो, बल्कि हर आदमी का एक नियत स्थान था। जहाज का रास्ता बदलने की एक निश्चित रूपरेखा बना ली गयी थी।

अगवाड मे मुख्य मालिम का हुक्म चलता था और शीर्षपालो व जहाज के अगले हिस्से की जिम्मेदारी उसी पर थी। जहाज में दो सर्वश्रेष्ठ मल्लाह—हमारी टोली में से सिलमाकुर, और दूसरी टोली से जान नामक फ्रांसीसी—अगवाड में काम कराते थे। कटि में तीसरे मालिम का हुक्म चलता था और वह बढई व एक दूसरे नाविक की सहायता से जहाज का रुख मोडते थे। रसोइया अगली रस्सियो और स्टीवार्ड मुख्य भाग की रस्सियो की मदद से यह काम करते थे। दूसरा मालिम पिछले यार्डो का अध्यक्ष था और अनुवात, अगली तथा मुख्य कमानियो को खोलता था। मैं खुले बाजू की क्रासजैक कमानी पर नियुक्त था; तीन मल्लाह अनुवात पर नियुक्त थे, एक छोकरा स्पेकर पाल की रस्सी और गाई पर नियुक्त था; एक आदमी

और एक छोकरा प्रमुख शिखरपाल, टापगॅलेंट और रायल कमानियों पर नियुक्त थे; और बाकी सब मल्लाह—आदमी और छोकरे—प्रमुख कमानी पर काम करते थे।

जहाज पर हर आदमी को अपनी जगह का पता था, और जहाज का रुख मोडने के लिए जब सब आदमियों का आह्वान किया जाता था तब हर आदमी अपने निश्चित स्थान पर आ डटता था, और अपने को सौंपी गयी हर रस्सी के लिए उसे जवाबदेह होना पडता था। हुक्म मिलते ही हर मल्लाह को अपनी रस्सी छोडनी या खीचनी पडती थी और जहाज का रुख मुड जाने के बाद उसे सफाई के साथ बाधना होता था और उसकी तह करनी होती थी। जब सब लोग अपनी-अपनी जगह संभाल लेते हैं तो छतरी के खुले बाजू मे खडा कप्तान पहिये पर बैठे आदमी को पहिया रख देने का इशारा करता हैं, और आदेश देता है, "सुकान अनुवात को !"; अगवाड में खडा मालिम यही शब्द दुहराता है और नाविक शीर्ष रस्सियो को छोड देते हैं। तब कप्तान कहता है, टैक और रस्सिया छोड दो।" मालिम अगवाड में इसी आदेश को दुहराता है और आगे की टैक और मुख्य यार्ड की रस्सिया छोड दी जाती हैं।

इसी तरह दूसरे भागो में भी हुक्म के मुताबिक काम किया जाता है। इसके बाद जमना बाजू के नाविक मुख्य टैक पर और डाबा बाजू के नाविक आगे जाकर अगले टैक पर काम करते हैं और जिब की रस्सी नीचे खीच देते हैं, और अगर हवा बहुत तेज हो उस पर एक कल्पी लगा देते हैं। तब पिछले यार्डों को वातानुकूल किया जाता है, और अक्सर इसकी देखभाल कप्तान खुद ही करता है। सब ठीक-ठाक हो जाने के बाद हर नाविक अपनी जगह खडा-खडा रस्सी की तह बनाने लगता है, और तब "पहरा टोली नीचे जाए !" का हुक्म दिया जाता है।

अगले चौबीस घन्टो के सफर में हम जमीन के पास आते और दूर हटते आगे बढते रहे। लगभग चार घन्टो में हम जहाज का रुख एक बार बदल लेते थे। इस प्रकार मुझे जहाज के काम को समझने का अच्छा मौका मिल गया। अब मुझे निश्चय हो गया कि इस जहाज के निचले यार्डों का रुख मोडने मे भी इतने ही आदमी काम करते हैं जितने "पिलग्रिम" में, जबकि इसके यार्ड "पिलग्रिम" से पचास फुट से भी अधिक तिरछे थे। "पिलग्रिम" के यार्ड इस जहाज के यार्डो से आकार मे भी लगभग आधे थे। वाकई, कमानियो और ब्लाको की अवस्था से कितना फर्क पड जाता है; और "आयाकुचो" के कप्तान विलसन, जो बाद में

चलकर हमारे साथ प्रतिवात दिशा में एक बार यात्री बनकर गया था, का कहना था कि हमारे जहाज़ में यह काम उसके जहाज के मुकाबले दो आदमियों की कमी से चला लिया जाता है।

शुक्रवार, ग्यारह सितंबर। आज सुबह चार बजे जहाज दुपेंचा पाल ताने नीचे की दिशा में बढ रहा था और संत पेड्रो पाइन्ट लगभग दो मील दूर रह गया था। कोई एक घन्टे बाद हम डेको पर जजीर के घिसटने की आवाज से जाग उठे और कुछ ही देर बाद सब लोगो को ऊपर बुलाने की आवाज सुनायी दी, और हम सब जंजीर को आगे की तरफ़ लपेटने और लगरो को तैयार करने के काम में लग गये।

"पिलग्रिम" वहा लँगर डाले खडा है", एक ने कहा, और डेको पर दौडते हुए पटरी की ओर देखने पर मुझे अपना पुराना दोस्त "पिलग्रिम" दिखाई दे गया। वह बहुत भरा हुआ था और लगर डाले खडा था।

लंगर डालने में भी रुख मोडने के समान ही सबका स्थान और काम निश्चित था। पहले हल्के पाल उतार कर लपेट दिये जाते थे, तब कोर्स पाल खोले जाते थे और जिबें नीचे उतार ली जाती थी, इसके बाद शिखरपाल बंट लाइनों में आ जाते थे और लगर डाल दिया जाता था। जब जहाज अच्छी तरह लंगर डाल लेता था तब सब मल्लाह शिखरपाल लपेटने ऊपर चढ जाते थे; और जल्दी ही मुझे पता चल गया कि इस जहाज पर इस बात को बहुत ज्यादा अहमियत दी जाती है क्योकि हर नाविक जानता है कि किसी जहाज की श्रेष्ठता की जाँच इस बात से की जाती है कि उसके पाल किस तरह लिपटे हैं। तीसरा मालिम, सिलमा-कुर और डाबा टोली के नाविक अगले शिखरपाल यार्ड पर जाते थे; दूसरा मालिम, बढई और जमना टोली के नाविक प्रमुख शिखरपाल यार्ड पर जाते थे और मै, अग्रेज छोकरा बेन, दोनो बोस्टन वाले लडके और केप कौड वाला लडका पिछले शिखर पाल को लपेटते थे।

यह पाल हमीं लोगों का था। हमी इसे छोटा करते थे और हमी लपेटते थे। किसी और आदमी को हम अपने यार्ड पर फटकने नही देते थे। मालिम हमारे काम का खास खयाल रखता था और जब तक हम अपने पाल की गाठ ठीक नहीं बांध देते थे और अगर पाल मे एक सिलवट भी पड़ी रहती थी तो वह हमसे तीन-तीन चार-चार बार पाल को लिपटवाता था।

जब सब-कुछ ठीक-ठाक निबट जाता था तब बंट अच्छी तरह बाध दी जाती थी और यार्ड भुज की गैस्केट रस्सिया बाध दी जाती थी ताकि यार्ड के आगे एक भी सिलवट न रहने पाये।

लङ्गर डालने के बाद कप्तान का सरदर्द खत्म हो जाता है और मुख्य मालिम एक तरह से जहाज का मालिक हो जाता है। सिह-शावक जैसी आवाज में वह इधर-से उधर आदेश देता हुआ घूम रहा था और हर काम को तेजी से और कुशलता से पूरा करा रहा था। वह "पिलग्रिम" के सुयोग्य, शात और साधु स्वभाव के मालिम से विरोधी प्रकृति का था . शायद एक इन्सान के रूप में वह इतना आदरणीय नही था लेकिन जहाज के मालिम के रूप में "एलर्ट" का मालिम "पिलग्रिम" के मालिम से कही अच्छा था, और इसमें कोई सदेह नही था कि "एलर्ट" की कमान सभालने के बाद कप्तान टी...के आचरण में जो परिवर्तन आया था उसका प्रधान कारण यह मालिम ही था।

अगर मुख्य मालिम मे ताकत नही है तो अनुशासन ढीला पड जाता है। कोई काम ठीक से नही होता और कप्तान हर बात में हस्तक्षेप करने लगता है। इससे उन दोनो में तनातनी होती है और नाविको को बढावा मिलता है, और यह कथा अतत. एक त्रिमुखी सघर्ष में परिणत हो जाती है। लेकिन मिस्टर ब्राउन ("एलर्ट" के मालिम का यही नाम था) को किसी की मदद की दरकार नही थी; वह हर काम अपने हाथो में ले लेता था और कहने-सुनने का मौका देना तो दूर रहा वह तो कप्तान के अधिकारों पर भी गाहे बगाहे हाथ साफ कर जाता था।

कप्तान टी—एकात में मालिम को समझा देता था, और लंगर डालते समय, जहाज के रवाना होते समय, रुख मोडते समय, शिखरपालो को छोटा करते समय या इसी तरह के सब मल्लाहो द्वारा किये गये कामो के अलावा खुद अपने मुंह से आदेश नही देता था। दरअसल यही उचित भी है और जब तक काम इसी प्रकार चलता है और अफसरो में अच्छी पटरी बैठती है, तब तक कोई परेशानी पैदा नही होती।

सब पालो को लपेट देने के बाद रायल यार्डों को नीचे किया गया। प्रमुख यार्ड को, जो कि "पिलग्रिम" के प्रमुख टागलैंट यार्ड से भी बडा था, अंग्रेज लडके ने और मैंने नीचा किया। दो और मल्लाहो ने अगला रायल यार्ड और एक लडके ने पिछला रायल यार्ड नीचा किया। जब तक हम तट पर रहे तब तक

बन्दरगाह में आते और वहाँ से निकलते समय यार्डों को ऊंचा नीचा करने का काम हमीं लोग इसी तरीके से करते रहे। उन सबको एक साथ नीचा किया गया। प्रमुख यार्ड को जमना बाजू पर और अगले व पिछले यार्ड को डाबा बाजू पर नीचा किया गया, यह सब काम होते ही यार्डों और तानो पर कप्पिया लगा दी गयी, और दीर्घ नौका और पिनेक को बाहर निकाल लिया गया। इसके बाद दोलायमान बूमो को रस्सी से बाध दिया गया और नावो को बाध कर सब चीजो को बन्दरगाह के हिसाब से टीक ठाक कर लिया गया।

नाश्ते के बाद फलके हटा दिये गये और सब लोग "पिलग्रिम" पर से खालें अपने जहाज पर लाने के लिए तयार हो गये। सारा दिन नावें इधर से उधर आती-जाती रही। अन्त में हमने उस पर लदी सारी खालें अपने जहाज पर लाद ली, और उस पर केवल नीरम ही रह गया। हमारे फलके में इन खालों का पता भी नही चल रहा था जबकि इन्ही खालो के बोझ से "पिलग्रिम" पानी में धसा जा रहा था।

खालो के बदलने से दोनो जहाजो के गतव्य का भी निश्चय हो गया, जिसके बारे में पहले हम लोग अपनी-अपनी अटकल लगा रहे थे। अब हमें अनुवात दिशा के बन्दरगाहो में रहना था और "पिलग्रिम" को अगले दिन सवेरे ही सैन फ्रैंसिस्को के लिए रवाना हो जाना था।

काम पूरा करने और रात के लिए डेको की सफाई करने के बाद मेरा मित्र एस—हमारे जहाज पर आया और उसने मेरे साथ एक घन्टा डेकों की मियानी में मेरी बेंच पर बिताया। उसने बताया कि "पिलग्रिम" के नाविक मेरे इस जहाज पर आने के कारण मुझ से ईर्ष्या करते हैं क्योकि अब मैं उनसे पहले घर पहुँच जाऊगा। एस—"एलर्ट" में घर लौटने पर आमादा था, चाहे इसके लिए कुछ भी क्यो न करना पडे। अगर कप्तान टी—ऐसे नही मानेगा तो वह कुछ ले-देकर किसी नाविक को अपनी जगह लेने को राजी कर लेगा। उसका विचार था कि "एलर्ट" के बोस्टन रवाना हो जाने के भी एक साल बाद तक कैलिफोर्निया के तट पर रहना निरी मूर्खता होगी।

कोई सात बजे मालिम नीचे स्टीअरेज मे आया। वह हँसी-मजाक के लिए तैयार होकर आया था। आते ही उसने छोकरो को सोते से जगा लिया, अपनी बासुरी से कोच कर उसने बढ़ई को उठा दिया, और स्टीवार्ड को डेको के बीच

वाले मचो पर रोशनी करने के लिए भेज कर सब लोगो को नाचने का हुक्म दिया। डेको की मियानी इतनी ऊंची थी कि उछल-कूद की जा सकती थी और साफ, सफेद और बलुए पत्थर से घुटी हुई होने के कारण उन्होने सुन्दर नाच घर का रूप ले लिया था। "पिलग्रिम" के कुछ नाविक अगवाड मे थे, और हम सभी नाच में शामिल हो गये, और आठ घन्टियाँ बजने तक नाविक की जिन्दगी के मजे लेते रहे।

केप कौड का लडका मछुआ नृत्य अच्छा करता था। वह सगीत की ताल पर अपनी नंगी एडियो और पजो से डेको को थपथपाता हुआ नाचता था। मालिम को इसमें खास लुत्फ आता था, और वह स्टीअरेज के दरवाजे मे खडा खडा देखता रहता था। और अगर छोकरे नाचते नही थे तो वह रस्सी के कोडे से उन्हें मारता था जिसमे सब मल्लाहो को बडा मजा आता था।

अगले दिन, एजेन्ट के हुक्म के मुताबिक, "पिलग्रिम" तीन-चार महीने की यात्रा पर प्रतिवात दिशा मे रवाना हो गया। उसे रवाना होने में कोई कठिनाई नही हुई और हमारे इतने नजदीक से होकर गुजरा कि हमारे जहाज पर कोई पत्र फेंक सकता था। पतवार पर खुद कप्तान फाकन खडा था और उसे बड़े मजे में चला रहा था।

जब "पिलग्रिम" की कमान कप्तान टी—के हाथ में थी तो रवाना होते समय ऐसी धूम-धाम होती थी मानो चौहत्तर तोपो वाला युद्धपोत रवाना हो रहा हो। कप्तान फाकन पक्का मल्लाह था। वह जानता था जहाज क्या चीज है और वह उसमें अपने घर की तरह उठता-बैठता था। मुझे इस बात का इससे बढ कर और क्या सबूत मिल सकता था कि उसके अपने नाविक, जो छ महीने से उसकी कमान में थे और समझ गये थे कि वह क्या है, उसे पक्का नाविक मानते थे, और अगर किसी जहाज के नाविक अपने कप्तान को श्रेष्ठ नाविक मानें तो फिर आपको उसकी श्रेष्ठता में सन्देह नही करना चाहिए क्योंकि यह एक ऐसी बात है जिसे नाविक बडी मुश्किल से ही मानते हैं।

"पिलग्रिम" के जाने के बाद तीन हफ्तो तक, यानी ग्यारह सितम्बर से दूसरी अक्टूबर तक हम सैन पेड्रो पर रहे और अपना भार उतारने और खालें लादने आदि के काम में लगे रहे। ये काम काफी आसान थे और "पिलग्रिम" के मुका-बले कही आसानी से पूरे हो जाते थे। "जितने अधिक उतने खुश", मल्लाहो का

यह मूल मन्त्र है, और श्रम-विभाजन इतना सुन्दर था कि नाव की एक दर्जन मल्लाहो की टोली तीर पर दिन-भर में जुटायी गयी सभी खालो को जहाज पर बडे आराम से पहुँचा देती थी। असन्तोष और रोने धोने के अभाव के कारण तीर पर भी और जहाज पर भी सब काम बड़े मज़े मे चल रहा था। हमारे साथ अक्सर जाने वाला अफसर, तीसरा मालिम, भी एक भला नौजवान था और हमें बेवजह तग नही करता था; लिहाजा, आमतौर पर हमारा समय मेल–जोल से हसी खुशी बीत जाता था और हम जहाज के कठोर अनुशासन से मुक्ति पा कर प्रसन्न ही होते थे।

यहाँ रह कर मैं अक्सर उन दु खदायी और निराशापूर्ण हफ्तो को याद कर लेता था जो हमने इस मनहूस जगह मे "पिलग्रिम" पर काम करते समय गुजारे थे। जहाज पर हम असन्तुष्ट थे और हमसे अच्छा सुलूक नही किया जाता था और तीर पर कुल चार आदमियों को सारा काम करना पडता था। बडे जहाज में ज्यादा जगह होती हैं, ज्यादा आदमी होते हैं, बेहतर सज्जा होती है, उदार नियम होते है, ज्यादा मजेदारी और बडी मन्डली होती है। यहा एक और सुविधा भी थी। जहाज में गिग का एक स्थायी नाविक दल था। एक हल्की ह्वेल नाव को, बढिया तरीके से रङ्ग-रोगन करके, पीछे गद्दार सीटें और पतवार की रस्सिया वगैरह लगा कर, जमना बाजू की छतरी पर टाँग दिया गया था और उसे गिग के रूप में इस्तेमाल किया जाता था।

इस नाव का कनवार जहाज का सबसे छोटा छोकरा था। बोस्टन का यह लडका तेरह वर्ष की आयु का था। वह पूरी नाव का अध्यक्ष था। नाव की सफाई और उसे कभी भी आने-जाने के लिए तैयार रखने की जिम्मेदारी उसी की थी। नाविको में उसी की उम्र और कद-काठी के चार और मल्लाह थे जिनमें से एक मैं भी था। हर मल्लाह के चप्पू और उसकी जगह पर नम्बर पडा था और हम अपनी-अपनी जगह पर ही बैठ सकते थे। हमें अपने चप्पुओ को रगडकर सफेद रखना पडता था, अपनी चप्पू खूटियो को अन्दर रखना पडता था और चपलान को बाजुओ पर रखना पडता था। मोरे का मल्लाह नाव के हुक और पागर के लिये जिम्मेदार था और कनवार रडर, योक और पिछली रस्सियों के लिए।

हमारा काम कप्तान और एजेंट को नाव में घुमाना और यात्रियो को लाना ले जाना था। यह आखिरी काम टेढी खीर था क्योकि लोगो के पास तीर पर

अपनी नावें नही थी और जूते खरीदने वाले छोकरे से लेकर पीपे और गाठें खरीदने वाले व्यापारी तक सभी गाहको को हम अपनी ही नाव मे लाते और पहुचाते थे ।

जिन दिनो लोगो का ताता बंधा रहता था उन दिनो हम दिन भर नाव में उन्हे लाने-ले जाने मे लगे रहते थे, और हमे खाने का समय भी न मिल पाता था । हमारा जहाज किनारे से करीब तीन मील दूर लगर डाले था, लिहाजा हमे तीस-चालीस मील के करीब नाव खेनी पड जाती थी । लेकिन फिर भी हम समझते थे कि जहाज में हमारा काम सबसे अच्छा है, क्योकि जितनी देर गिग चलती थी उतनी देर हमें जहाज के नौभार से कोई सरोकार नही रहता था, हाँ यात्रियों के साथ वाले छोटे बडलो की बात दूसरी थी । हमें खालें भी नही ढोनी पडती थी । इसके अलावा हमें सबसे मिलने-जुलने, जान-पहचान करने और तरह-तरह की खबरें सुनने का भी अवसर मिलता रहता था ।

जब कप्तान या एजेन्ट नाव में नही होते थे तो हमारे ऊपर कोई अफसर नही रह जाता था और हमारी यात्रियो से अच्छी पटती थी जो हमसे हंसने-बोलने के लिए हमेशा लालायित रहते थे । अक्सर हमें तीर पर घन्टो इन्तजार भी करना पडता था, तब हम नजदीक के घर में चले जाते थे या तट पर घूमने, सीपी और शख चुनने और कडी बालू पर तरह तरह के खेल खेलने मे लगे रहते थे ।

बाकी मल्लाह भारी सामान या खाले किनारे पर पहुँचाने के अलावा जहाज से कभी नही निकल पाते थे, और यद्यपि हम हमेशा पानी में रहते थे, क्योकि भग्नोर्मियो के कारण हम सुबह से रात तक सिर से पैर तक भीगे रहते थे लेकिन चूकि हम सभी युवा थे और जलवायु सुखद थी इसलिए हम अपने जीवन को जहाज के नीरस जीवन से कही अच्छा समझते थे ।

लगभग आधे कैलिफार्निया मे हमारा परिचय हो गया । मर्द, औरतें और बच्चे—इन सब के अलावा, सभी तरह के संवाद, पत्र और हल्के-फुल्के पैकिट आदि भी हमी पहुँचाते थे और हम अपने कपडो की वजह से जल्दी ही पहचान मे आ जाते थे, और हर जगह हमारा स्वागत किया जाता था ।

सैन पेड्रो में यह मजा नही था । उस स्थान पर केवल एक ही घर था और सग-साथ की कमी थी । वहा अगर मेरे लिए कोई नवीनता थी तो यह कि हफ्ते में एक बार घाडे पर चढ कर मैं सबसे निकट के पशु-फार्म पर जाता था और जहाज पर एक बैल भेज देने का आर्डर दे आता था ।

दो मस्तूलो वाला जहाज "कैटेलिना" सैन डियागो से आ गया था और चूंकि उसे भी प्रतिवात दिशा मे ही जाना था और वह भी हमारे जहाज के साथ ही रवाना हुआ इसलिए यहा से अस्सी मील दूर सैंटा बारबरा तक दोनो जहाजों में पहले पहुँचने की होड लग गयी। हमने लंगर उठाया और रात के ग्यारह बजे के करीब अपने पाल तान लिये। इस समय हल्का स्थल समीर चल रहा था, लेकिन सुबह के समय वह मन्द पड गया और हमारा जहाज अपनी लगरगाह से कुछ ही मील की दूरी पर थम-सा गया।

"कैटेलिना" छोटा, हमारे जहाज से आधे से भी छोटा, जहाज था। रात के समय उसने अपने चप्पू निकाल लिये, और एक नाव आगे निकाल ली जिससे हमारे मुकाबले समुद्र का समीर उसे पहले और प्रचुर मात्रा में मिल गया। हमारे देखते-देखते वह तट को पार करता हुआ निकल गया और हम तट पर निश्चेष्ट पड़े रहे। जब समुद्र का समीर मन्द पडा तो वह आखो से ओझल हो चुका था। तीसरे पहर के अतिम भाग में नियमित तेज उत्तरी-पश्चिमी पवन चलने लगा और हमने बड़े शानदार अन्दाज में उसका पीछा शुरू किया। अब हवा हमारे अनुकूल थी।

पाच घन्टे तक हम प्रतिवात दिशा में आगे बढते रहे। जितनी बार हम जहाज का रुख मोडते थे उतने ही "कैटेलिना" के निकल आते जाते थे। जब यह समीर बन्द हुआ तब हम उसके इतने नजदीक पहुँच चुके थे कि उसके पहलुओं पर चित्रित बन्दरगाहो को गिन सकते थे। सौभाग्य से जब यह समीर बन्द हुआ तो हमारे जहाज का रुख अन्दर की ओर था और उसका बाहर की ओर। नतीजा यह हुआ कि पहले पहरे के बीच में जब हमारी छतरी पर से स्थल-समीर चलना शुरू हुआ तो "कैटेलिना" के मुकाबले हमें उसका ज्यादा लाभ हुआ।

अब सब लोगों को लगा दिया गया और हमने, आकाश पाल से लेकर रायल दुपेंचा पाल तक, सभी पाल तान दिये, और इनकी मदद से हम पानी पर फिसलते से आगे बढे। "कैटेलिना" हमारी बराबर पाल नही तान सकता था, लिहाजा वह पिछडता चला गया। भोर होने तक हम सैंट ब्यूनावेंचुरा को पीछे छोड आये थे और हमारा प्रतिद्वन्द्वी आखो से ओझल हो चुका था। लेकिन समुद्री समीर ने फिर उसका साथ दिया जबकि हमारा जहाज मुख्य भूमि के आस-पास निश्चेष्ट पडा रहा और जब कि हमारा जहाज थोडा-थोडा आगे सरक रहा था तब दोपहर के समय "कैटेलिना" ने हमें पकड लिया। इस तरह हम आगे बढ़ते रहे, कभी

हम पिछड़ जाते कभी पछाड देते और कभी बराबरी पर आ जाते; कभी हम खुले समुद्र में निकल जाते और कभी तट से सट कर चलते थे ।

तीसरे दिन सुबह के समय हम सैंटा बारबरा की विशाल खाडी में पहुँचे । "कैटेलिना" हमसे दो घन्टे पहले ही पहुँच चुका था, और हम शर्त हार चुके थे, यद्यपि यह सच था कि अगर दौड पाइन्ट तक होती तो हम उसे पाँच-छः घन्टे से हरा देते । इस दौड से जहाजो की रफ्तार के बारे में पता चल गया । यह तय हो गया कि छोटा और हल्का होने के कारण बहुत हल्की हवा में वह हमारे जहाज से तेज चल सकता था, लेकिन अगर समीर काफी तेज हो और एक बार हमारा जहाज उसमे पड जाए तो हम उसे बहुत पीछे छोड सकते थे । किसी जहाज की असली पहचान यह है कि वह प्रतिवात दिशा मे कितना तेज चलता है, और इस दृष्टि से देखने पर हमारा जहाज उसकी तुलना में कही श्रेष्ठ था ।

रविवार, चार अक्टूबर । आज हम यहा पहुँचे । न जाने क्या बात थी कि हमारा कप्तान रविवार को न सिर्फ जहाज ही चलाता था बल्कि हमेशा किसी बन्दरगाह में भी पहुँच जाता था । सैबाथ के दिन जहाज चलाने का राज यह नही था कि रविवार को सौभाग्य का दिवस माना जाता है, बल्कि इसका राज यह है कि यह छुट्टी का दिन होता है । हफ्ते के छ दिन में नाविक नौभार और जहाज के दूसरे कामो में लगे रहते हैं, और चूंकि सैबाथ उनके विश्राम का एकमात्र दिन होता है इसलिए, इस दिन नाविको से जितना फालतू काम ले लिया जाय उतना ही मालिकान का फायदा होता है ।

यही कारण है कि हमारे जहाज सैबाथ को चलते हैं । उनके मालिकान पहले तो हफ्ते के छ दिनो में नाविको से कस कर काम लेते हैं और फिर जहाज को चलाने का अधिकाश काम सबाथ के दिन के लिए रख छोडते हैं । जितने दिन हम कैलिफोर्निया तट पर रहे हमारे साथ प्राय सब दिन यही होता रहा और हमारे अनेक सैबाथ इसी कारण मारे गये ।

तट पर कैथोलिक जहाज रविवार को न व्यापार करते हैं न यात्रा करते हैं, लेकिन अमरीकी आदमी का कोई राष्ट्रीय धर्म नही है और वह प्रभु के दिवस को इच्छानुसार बिता कर यह सिद्ध करना चाहता है कि वह पोप–लीला को नही मानता ।

सैंटा बारबरा बहुत-कुछ वैसा ही था जैसा मैं इसे पाच महीने पहले छोड

गया था : रेते का लम्बा तट, उस पर निरन्तर दहाड़ती हुई और टूटती हुई भीमकाय तरंगें, समतल मैदान पर उभरा हुआ और पर्वतशृंखला से घिरा हुआ छोटा सा कस्बा। दिन प्रति दिन विशाल खाडी और घरों की छतों पर पड़ने वाली धूप स्वच्छ और चमकीली होती जा रही थी। हर चीज मृत्यु की भाँति निश्चल थी। लोग स्वयं को मिलने वाली धूप को अर्जित करने के लिए प्रयत्नशील नही दिखायी देते थे बल्कि ऐसा लगता था जैसे दिन का प्रकाश उनके ऊपर फेंक दिया गया हो। हमारी मुलाकात कम लोगो से हुई और हमने कोई सौ खालें इकट्ठा की। रोज सूर्यास्त के समय गिग तीर पर भेजी जाती थी, जहा पहुँच कर हम कप्तान का इन्तजार करते थे जो अपना समय बिताने कस्बे में गया होता था। हम अपनी मन्की जाकेट पहन कर जाते थे और आग बनाने का सामान अपने साथ ले जाते थे। वहा बह कर आयी लकडी और आस-पास से इकट्ठे किये गये झाड-झखाड़ को इकट्ठा करके हम आग बनाते थे और रेते पर आग के पास पडे रहते थे।

अगर यह उम्मीद होती कि कप्तान कस्बे से देर से लौटेगा तो हम लोग भी कस्बे मे कुछ एसे घरो में अपना समय बिताते थे जहा हमेशा हमारा सत्कार होता था। कभी देर, कभी सवेर, कप्तान तीर पर आता था और तब भग्नोर्मियो में प्रेम से भीग कर हम जहाज पर पहुचते थे और कपडे बदल कर सो जाते थे— लेकिन पूरी रात के लिए नहीं, क्योंकि रात के समय हमें लगर पहरा भी देना पडता था।

इस पहरे के तुफैल में मैं अपने पहरे के साथी से नौ महीने तक बात करता रहा। इस साथी का नाम टाम हैरिस था, और सक्षेप में कहूँ तो ऐसा विलक्षण आदमी मैंने अपने जीवन में नही देखा। जब जहाज बन्दरगाह में रहता था तो रोज रात को एक घन्टे के लिए डेक मेरे और हैरिस के कब्जे में रहता था, और महीनो तक रोज रात को डेक के एक से दूसरे सिरे तक टहलते-टहलते मैंने उसके अपने चरित्र और इतिहास, दूसरे राष्ट्रों, विभिन्न प्रदेशो के लोगों की आदतों, नाविको के जीवन के रहस्य और उनके साथ होने वाली ज्यादतियो, व्यावहारिक नाविक-कर्म-कौशल (जिसमें वह मुझे बहुत-कुछ सिखाने के लिए सुयोग्य था) आदि के बारे मे जितना-कुछ सीखा उतना अपने जीवन भर में नही सीखा था।

उसकी मेधा विचक्षण थी। उसकी स्मरणशक्ति निर्दोष थी, वह एक व्यवस्थित शृंखला की तरह थी और उसमें उसके आरभिक बचपन से लेकर तब तक के

जीवन की एक भी कडी की कमी नही थी। हिसाब लगाने की भी उसमें विचक्षण प्रतिभा थी। अको के हिसाब में मैं अपने को काफी चतुर समझता था और मैं गणित का अध्ययन भी कर चुका था लेकिन जहा तक सिर्फ दिमाग से काम लेने का सवाल है मैं इस आदमी से होड नही ले सकता था जिसने अकगणित-मात्र पढ़ा था। हिसाब लगाने में उसकी तेजी का जवाब नही था।

सारी यात्रा की लाग बुक उसके दिमाग में रहती थी जिसमें हर सूचना सही और पूर्ण थी और जिसे कोई भी चुनौती नही दे सकता था। इसके अलावा पूरे नौभार का हवाला उसकी उगलियो पर रहता था, वह एक क्षण में बता सकता था कि कौन सी चीज कहा है और हमने किस बन्दरगाह से कितनी खालें जहाज में चढ़ायी थीं।

एक रात को उसने मोटा-सा हिसाब लगाया कि अगले और प्रमुख मस्तूलो के बीच निचले फलके में कितनी खालें रखी जा सकेंगी। उसने इस हिसाब में फलके की गहराई और शहतीर की चौडाई (क्योकि जहाज पर एक महीने रहने के बाद ही उसे उसके हर भाग के आयाम के बारे में पता चल जाता था) और एक खाल के औसत क्षेत्रफल और मोटाई का ध्यान रखा। और उसकी बतायी हुई संख्या, कालांतर में फलके में रखी गयी खालो की सख्या के इतने निकट थी कि देख कर विस्मय होता है।

मालिम अक्सर जहाज के विभिन्न भागो की क्षमता के बारे में पूछने उसके पास आता रहता था। वह सिलमाकुर को यह बता सकता था कि जहाज के इस इस पाल को तैयार करने मे इतना-इतना कपडा लगेगा क्योकि वह जहाज के हर मस्तूल और पाल की नस-नस से वाकिफ था, और फुट तथा इन्चो में उनका हिसाब बता सकता था।

उसे हर तरह के हिसाब में मजा आता था। उसके सन्दूक में मशीनो के आविष्कारों से सम्बद्ध कई पुस्तकें थीं जिन्हे वह बडे चाव से पढा करता था, और एक-एक बात समझता था। मुझे विश्वास है कि एक बार पढ लेने के बाद वह कुछ भी भूलता नही था।

कविता के नाम पर उसने सिर्फ "फाकनर्स शिपरैक" पढी थी और उसे बडा आनन्द आया था। अब भी वह उसके पृष्ठ के पृष्ठ सुना सकता था। वह अपने हर साथी नाविक का नाम जानता था और हर जहाज, कप्तान और अफसर का

नाम भी जानता था और हर यात्रा की प्रमुख तिथियां उसे मुंह जबानी याद थीं। कुछ दिन बाद हमें एक नाविक मिला जो लगभग बारह वर्ष पहले हैरिस का साथी नाविक रह चुका था। जब हैरिस ने उसे खुद उसके बारे में ऐसी-ऐसी बातें बतानी शुरू की जिन्हे वह पूरी तरह भूल चुका था तो उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा।

तिथियों और घटनाओं के बारे में उसके तथ्य अत्यन्त प्रामाणिक माने जाते थे और उसकी सम्मति का विरोध करने की हिम्मत बहुत कम नाविक कर पाते थे। सही हो या गलत, लेकिन हर बात के लिए वह दलील दे सकता था। उसकी तर्क करने की क्षमता विचित्र थी। पहरा देते समय अगर मुझे अपनी बात के सही होने का पूरा निश्चय भी होता था और वह उसकी प्रामाणिकता में अपना सन्देह व्यक्त कर बैठता था तो उससे बहस करने में मुझे पसीने आ जाते थे। वह जिद्दी नहीं था, लेकिन उसकी बुद्धि बला की पैनी थी। कालिज में अपने परिचय और स्तर के किसी भी लडके से भिड जाने में मुझे उलझन नही होती थी लेकिन इस आदमी को जिस विषय का साधारण सा ज्ञान भी होता था उसमें उससे भिडने से मैं कतराता था। उसके किसी भी सवाल पर कई बार सोचे बिना मैं जवाब नहीं देता था, न अपनी राय ही देता था।

उसकी स्मरण शक्ति ऐसी विचक्षण थी कि आपका पिछला सारा संभाषण उसे याद रहता था और यदि आपके मुंह से कोई ऐसी बात निकल जाय जो महीनो पहले खुद आपकी कही किसी बात के विरोध में पड़े तो यह निश्चय है कि वह आपको चारों खाने चित कर देगा। सच तो यह है कि उसके साथ रह कर मैं हमेशा यह महसूस करता रहा कि यह कोई साधारण आदमी नहीं है। उसकी मानसिक क्षमताओं को मैं आदर की दृष्टि से देखता था और सोचा करता था कि हमारे कालिजो में प्रति वर्ष छात्रों की पढाई में जितना श्रम किया जाता है यदि उसका आधा श्रम भी इसकी पढाई पर किया जाता तो निश्चय ही आज समाज में इसका बहुत बडा स्थान होता।

अधिकाश स्वयं शिक्षित लोगो की तरह वह शिक्षा को बहुत अधिक महत्व देता था, और यद्यपि इसमें मेरा ही फायदा था, फिर भी मैं अक्सर इस बारे में उसे सचेत करता रहता था। वह हमेशा मेरे साथ बडी इज्जत से पेश आता था और अक्सर मेरे ज्ञान को अनावश्यक महत्व देकर खामखा मेरी बात मान

लेता था। अन्य नाविको और कप्तान वगैरह को वह कुछ नही समझता था। वह बहुत कुशल नाविक था और शायद कप्तान से श्रेष्ठ नौचालक था, और जहाज के पिछले हिस्से में सारे लोगो के बुद्धि-बल से उस अकेले आदमी का बुद्धि-बल कही अधिक था।

मल्लाह उसके बारे में कहते, "टाम का दिमाग सबदरे की बराबर बडा है", और जब कोई उससे बहस करने लगता तो वे उसे समझाते—"अरे, भाई! उससे बहस मत करो, जलते हुए गरम आलू की तरह उसे छोड दो, वर्ना एक क्षण मे टाम तुम्हारी खाल उधेड कर रख देगा।"

मुझे याद आता है एक बार वह मुझसे खाद्यान्न कानूनो के विषय पर उलझ पडा। मुझे पहरा देने के लिए बुलाया गया था, और जब मैं डेक पर पहुँचा तो मैंने देखा वह वहाँ पहले से ही मौजूद है। हमेशा की तरह हमने कटि में इधर से उधर तक टहलना शुरू कर दिया, तब उसने खाद्यान्न कानूनों की बात चलायी, और मेरी राय मागी। मैंने अपनी राय दी, और अपने तर्क भी दिये। यह सोच कर कि इस विषय में उसे या तो बिल्कुल ही जानकारी नही होगी या बहुत कम होगी, मैंने अपने अल्प ज्ञान को भी बडी शान से बघारा।

जब मैं अपनी बात पूरी कर चुका तो उसने मुझसे मतभेद प्रकट किया और उस विषय से सम्बद्ध ऐसे तर्क और तथ्य मेरे सामने प्रस्तुत किये जो मेरे लिए नवीन और सर्वथा अकाट्य थे। मुझे स्वीकार करना पडा कि इस विषय में मुझे कोई ज्ञान नही है। मैंने उसकी जानकारी पर भी आश्चर्य व्यक्त किया।

उसने बताया कि कई साल पहले जब वह लिवरपूल के एक बोर्डिगहाउस में था तब इस विषय पर एक पुस्तिका उसके हाथ लग गयी थी, और चूंकि उसमें कुछ तथ्य दिये गये थे इसलिए वह इसे बडे चाव से पढ़ गया था और तब से बराबर किसी ऐसे आदमी की तलाश मे था जो इस विषय मे उसकी जानकारी में इजाफा कर सके। यद्यपि उसे यह किताब पढे कई बरस हो चुके थे, और इस विषय से वह तनिक भी पूर्वपरिचित नही था फिर भी उसके मस्तिष्क मे एक तर्क-शृंखला विद्यमान थी जो राजनीतिक अर्थ-व्यवस्था के सिद्धातो पर आधारित थी, और जहा तक मैं समझता हूँ उसके तथ्य सही थे, कम से कम उसने उन्हे एक विचित्र सूक्ष्मता के साथ प्रस्तुत तो किया ही था।

वह वाष्प इन्जन के सिद्धान्तो से भी परिचित था। इसका कारण यह कि

वह कुछ महीनो तक एक अगनबोट पर नौकरी कर चुका था और सब रहस्यो का पारगत हो गया था। वह दोनों गोलार्द्धों में स्थित प्रत्येक चाद्र तारक को जानता था और क्वाड्रैंट और सेक्सटैंट यंत्रो का पूर्ण ज्ञाता था। ऐसा था यह आदमी जो चालीस वर्ष की अवस्था में भी बारह डालर प्रति मास पर अगवाड में काम करने वाला नाचीज मल्लाह था। इसका कारण उसके विगत जीवन में खोजा जा सकता था जिसके बारे मे मुझे समय-समय पर उसी के मु ह से सुनने को मिला।

जन्म से वह अंग्रेज था और कार्नवाल के इल्फ्राकोम्ब नामक स्थान का निवासी था। उसका बाप ब्रिस्टल के एक छोटे से जहाज का कप्तान था। वह छोटा था तभी उसका पिता चल बसा और हैरिस को अपनी मा के संरक्षण में छोड गया। माँ के प्रयत्नो से उसने सामान्य स्कूली शिक्षा प्राप्त की। जाडो में वह स्कूल में पढता था और गरमियो में तटवर्ती व्यापार में काम करता था। जब वह सत्रह वर्ष का हुआ तो विदेश-यात्रा के लिए घर से निकल पडा।

अपनी मा का नाम वह बडे ही आदर से लेता था, उसका कहना था कि उसकी मां दृढ संकल्प वाली महिला थी और उसने उसे सर्वश्रेष्ठ शिक्षा दिलायी थी। इस शिक्षा ने उसके तीनो भाइयो को प्रतिष्ठित व्यक्ति बना दिया और वह भी अपनी जिद्दी प्रवृति के कारण ही शिक्षित और प्रतिष्ठित न बन सका।

वह अक्सर कहा करता था कि बच्चों के अनुशासन के मामलों में एक बात में उसकी मा अन्य माओ से सर्वथा भिन्न थी, जब वह गुस्से में खाने को मना कर देता था तो अन्य अधिकाश माओं की तरह वह यह सोच कर प्लेट उठा कर अलग नहीं रख देती थी कि जब भूख लगेगी तो अपने आप खायेगा, बल्कि उसके ऊपर खडी हो जाती थी और पूरी प्लेट खाने पर उसे मजबूर कर देती थी।

वह कहा करता था कि उसकी आज की हालत के लिए मा को दोषी नहीं ठहराया जा सकता। माँ के उन असफल प्रयत्नो के लिए उसके मन में इतनी कृतज्ञता थी कि उसने यात्रा की समाप्ति पर घर जाकर सारा वेतन मां पर और माँ के साथ, अगर सौभाग्य से वह जीवित मिली तो, खर्च करने का निश्चय कर लिया था।

घर से निकलने के बाद लगभग बीस साल तक वह प्राय. सभी तरह की यात्राओं, आम तौर पर न्यूयार्क और बोस्टन के बन्दरगाहों से, पर जाता रहा। दुर्गुणो के ये बीस बरस! नाविक के जीवन में जितने पाप संभव हैं वह उनमें

गले तक धस चुका था। अनेक बार उसे अस्पतालों की शरण लेनी पडी और हर बार उसकी शारीरिक शक्ति ने उसे बचा लिया। कई बार अपनी क्षमताओं के कारण उसे मुख्य आलिम के पद पर नियुक्त किया गया लेकिन बन्दर गाह मे अपने आचरण, खास तौर पर शराब खोरी जिसे वह न भय के कारण छोड सका था न महत्वाकाक्षा के कारण, की वजह से उसे फिर से अदना मल्लाह बनने पर मजबूर होना पडा। एक रात को वह मुझे अपना जीवन-वृत्त सुना रहा था कि अपनी मर्दानगी के कीमती बरसो को बरबाद कर देने के लिए दुखी होते हुए उसने कहा कि बाईस बरस के कठोर परिश्रम और वातावरण के अत्याचार सहने का पुरस्कार नीचे अगवाड मे पडी पेटी है जिसमें पुराने कपडों के अलावा कुछ नही है—उन बाईस बरसो का पुरस्कार जिनमें उसने घोड़े की तरह काम किया है और कुत्ते की तरह ललकारे खाये है।

उम्र के साथ-साथ उसे बुढापे के दिनों के लिए कुछ इन्तजाम करने की जरुरत महसूस हुई। वह इस नतीजे पर पहुँचा कि उसकी जानी दुश्मन रम है। एक रात को, जब वह हवाना में था, तब उसका एक युवा साथी मल्लाह नशे की हालत में जहाज पर लाया गया। उसके सिर में एक गहरा और खतरनाक जख्म था और उसके पैसे और नय नय कपडे लोगों ने छीन लिए थे। हैरिस ने ऐसे संकडो दृश्य खुद भुगते और देखे थे, लेकिन उन दिनो वह ऐसी मनःस्थिति में था कि इस घटना से उसके निश्चय को बल मिला, और उसने किसी भी तरह की शराब न पीने का निश्चय कर लिया। न उसने किसी तरह के प्रण पर हस्ताक्षर किये, न कोई प्रतिज्ञा की, लेकिन उसे अपने उद्देश्य की दृढ़ता पर भरोसा था।

उसके लिए पहली चीज थी तर्क, दूसरी सकल्प, और तब भला उसके कृतकार्य होने में अडचन ही क्या थी। अभी तक उसे अपने सकल्प की तिथि याद थी। यह बात मुझसे उसकी मुलाकात होने से तीन वर्ष पहले की थी, और इस बीच साइडर या काफी से कडी चीज उसने मुंह से नही लगायी थी। नाविक टाम को एक गिलास शराब पिलाने की उसी तरह नही सोचते थे जैसे वे जहाज की कुतुबनुमा से बात करने की नही सोचते थे। अब वह सारी जिन्दगी के लिए संयमी बन चुका था और जहाज पर किसी भी पद को सुशोभित करने के सर्वथा योग्य था, और तट पर अनेक ऐसे उच्च पद हैं जिन पर उसने कही गये बीते लोग आसीन हैं।

वह जहाज की व्यवस्था को वैज्ञानिक पद्धति पर समझता था, और यह बता

सकता था कि जहाज की कौन-सी रस्सी क्यो खीची जाती है। लम्बा अनुभव, सूक्ष्म पयवेक्षण और अमिट स्मरणशक्ति ने उसे ऐसा आश्चर्यजनक ज्ञान–भडार प्रदान किया था जिससे वह आपत्ति-विपत्ति में त्वरा और चतुराई से काम निकाल सकता था। मैं उसका कृतज्ञ रहूँगा क्योकि मै उसके लिए जो कुछ भी कर पाता था उसके बदले मे वह बड़े प्रेम से अपने ज्ञान का भडार मेरे लिए उन्मुक्त कर देता था।

अत्याचार और कठोरता की कहानी, जिन्होंने नाविको को जलदस्यु बनने पर मजबूर किया है कप्तानो और मालिमो की भयानक मूर्खताओ के किस्से, बीमार, मृत और मरणोन्मुख लोगो के प्रति भयानक पाशविकता की घटनाएं, और साथ ही जहाज के मालिकान, जमीदारों और अफसरो की मिली भगत से मल्लाहो पर होने वाले जोर-जुल्म के अनेक किस्से उसे जबानी याद थे, और मुझे उन पर विश्वास करना होता था क्योकि जो मल्लाह उसे पिछले पन्द्रह सालो से जानते थे उनका कहना था कि झूठ की तो बात क्या है रिस सचाई का बयान करते समय उसमें नमक-मिर्च तक नही लगाता, और जैसा कि मैं बता चुका हूँ उसकी बातों का कोई खन्डन नही कर सकता था।

उसने मुझे एक कप्तान के बारे में बताया था, जिसके बारे में मैं रिपोर्ट मैं भी पढ चुका था, कि वह कभी कोई चीज मल्लाह के हाथ में नही देता था, बल्कि उसे डेक पर रख कर ठोकर मार कर उसके आगे डाल देता था। बोस्टन का एक और साधनसपन्न कप्तान था जिसने सुमात्रा की यात्रा के लिए बोस्टन में मल्लाह के रूप में भरती हुए एक लडके की जान ही ले ली थी। लडका बुखार से पीडित था लेकिन कप्तान ने उसे भारी कामो में लगाये रखा और उसे बन्द स्टीअरेज में सोने पर मजबूर किया, लिहाजा वह मर गया। (यही कप्तान उसी तट पर उसी बुखार मे मरा था।)

वास्तव मे नौचालन, नाविकों के जीवन के इतिहास, व्यावहारिक बुद्धि, नयी परिस्थितियो मे मानव-स्वभाव (बहुत कम लोग इस अत्यत महत्वपूर्ण इतिहास से अवगत होते हैं)—इस सबके बारे में मैंने उससे जितना-कुछ सीखा उसके कारण मैं पहरे पर उसके साथ बिताये समय को स्वाध्याय और सामाजिक संपर्क के किसी भी दूसरे समय से अधिक मूल्यवान समझता रहूँगा।

* * *

अध्याय—२४

रविवार, ग्यारह अक्टूबर। आज सुबह हम अनुवात दिशा में रवाना हुए, सैन पेड्रो के पास से होकर गुजरे, और हमें यह देखकर अपार प्रसन्नता हुई कि जहाज ने यहा लगर नही डाला, बल्कि सीधा सैन डियागो की ओर चल दिया, जहाँ हम—

बृहस्पतिवार, अट्ठारह अक्टूबर को पहुँचे। यहाँ पहुँच कर हमने अपना जहाज बाँध दिया। यहाँ हमें प्रतिवात दिशा से आया दो मस्तूलों वाला "ला रोजा" नामक जहाज मिला जिसने हमें सूचना दी कि "पिलग्रिम" सैन फ्रैंसिस्को में है, और सकुशल है। यहा पहले जैसी ही शाति छायी थी। हमने अपनी खालें, सोग और चरबी के थैले वगैरह उतार दिये, और आगामी रविवार को फिर रवाना होने के लिए तैयार हो गये।

मैं गोदाम वाले अपने पुराने डेरे में गया जहां लोग पहले की तरह ही अपना वक्त बिता रहे थे। सूर्यास्त के एकाध घन्टा बाद मैं भट्ठी पर अपने कनाका मित्रों से मिलने गया। वे मुझे देखकर बडे खुश हुए और कनाका लोगों का "परम मित्र" होने के नाते मेरा अभिवादन किया। मुझे यह जानकर दु ख हुआ कि मेरा कुत्ता ब्रेवो मर गया है। जिस दिन मैं "एलर्ट" में भरती होकर यात्रा पर गया उसी दिन वह बीमार पडा, और अचानक ही मर गया।

पहले की तरह ही इस रविवार को भी हम फिर यात्रा पर निकल पड़े। जब हम चले तो तेज समीर चल रहा था, जिससे हमें याद आया कि आजकल पतझर के अंतिम दिन हैं और हमे एक बार फिर दक्षिणी-पूर्वी झंझाओं का सामाना करने को तैयार हो जाना चाहिये। हमने जहाज के शिखरपाल छोटे कर लिये और सामने के तेज पवन में सैन जुआन तक गये। यहा किनारे से लगभग तीन मील दूर पर हमने लगर डाल दिया और पिछले साल सर्दियो की तरह दक्षिणी-पूर्वी झंझा के आसार दिखायी देते ही समुद्र की ओर भाग निकलने की पूरी तैयारी कर ली।

इधर आते हुए जहाज पर हमारे साथ एक बूढा आदमी था जो किसी जमाने में एक जहाज का कप्तान रह चुका था, लेकिन अब उसने कैलिफोर्निया में शादी कर ली थी, और वही बस गया था। समुद्री यात्रा पर निकले उसे पन्द्रह वर्ष से अधिक हो गये थे। जहाजो में हुए परिवर्तनो और सुधारो को देखकर उसे बडा आश्चर्य हुआ। यह देखकर उसे और भी अधिक आश्चर्य हुआ कि हम जहाज पर कितने

अधिक पाल ताने रहते हैं, बल्कि यह देखकर तो वह सहम सा गया। उसने कहा कि जिन हालात में आप लोग टापगैलेंट पाल ताने रहते हैं उनमें हमारे जमाने में शिखरपालो को भी छोटा कर दिया जाता था। जहाज की गति और प्रतिवात दिशा मे उसकी प्रगति से वह बडा प्रसन्न हुआ। उसका कहना था कि हमारा जहाज प्रतिवात दिशा में इस तरह बढता है जैसे वह लोथाटी पर बढ़ रहा हो।

मंगलवार, बीस अगस्त। सब तैयारी करने के बाद हम एजेंट को किनारे पर पहुँचाने गये। वह वहा मिशन में गया और अगले दिन सुबह से ही खालो का आना शुरू हो गया। आज रात को हमें दक्षिणी-पूर्वी झंझाओ से विशेष सावधान रहने की सख्त हिदायत दी गयी क्योकि लम्बे, नीचे बादल डरावने लग रहे थे। लेकिन रात बिना किसी उत्पात के बीत गयी। अगले दिन सुबह हमने दीर्घ नौका और पिनेक नौका बाहर निकाल ली, क्वार्टर नावें भी नीचे उतार ली और खालें लाने किनारे पर चले गये।

अब हम एक बार फिर उसी रूमानी स्थल पर आ पहुँचे थे, जहाज़ के मस्तूल से दुगुनी ऊंची, सीधी खडी पहाडी, उस तक जाने वाला एकमात्र चक्करदार रास्ता, पहाडी की तलहटी में लम्बा बलुआ तट, पहाडी के चरणो पर गिर कर ऊंचा उठता हुआ संपूर्ण प्रशातमहासागर का उभार—और वहाँ, पहाडी की चोटी पर, हमारी खालों के अबार लगे हुए थे। नाविको में से केवल मैं ही पहले यहाँ आ चुका था, इसलिए कप्तान ने ऊपर जाकर खालो को गिनने और नीचे फेंकने के लिए मुझी को चुना। अब छः महीने पहले की तरह वहा खडा-खडा मैं खालों को नीचे फेंक रहा था। और जब वे मडराती हुई नीचे जमीन पर पहुँच जाती थी तो, इतनी ऊंचाई से बौने दिखायी देने वाले, नाविक उन्हे सिर पर उठा-उठा कर किनारे पर दूर बधी हुई नौकाओ पर लादने लगते थे।

दो-तीन नावें खालो से भर कर जहाज की ओर रवाना हो गई। अन्त में ऊपर सब खालें खत्म हो गयी और नीचे नावें दुबारा भर गयी। लेकिन दस-बीस खालें पहाडी की दराजो में रुकी रह गयी थी, और नीचे नही पहुँची थी। उन तक पहुंचने के लिए हमारे पास कोई चीज नही थी। पहाडी की चढाई एकदम खडी थी और वे दराजें पहाडी के अन्दर की तरफ थी, इसलिए पहाडी की चोटी पर से उन्हे देख पाना या उन तक पहुँच पाना असभव था।

चूंकि बोस्टन में खालों की कीमत साढे बारह सेंट प्रति पौड थी, और कप्तान

को दो प्रतिशत कमीशन मिलता था इसलिए वह उन्हें वहीं छोड देने को तैयार नही था। उसने एक आदमी को जहाज पर भेज कर टापगेलेंट—दुपेंचा—पाल रस्सियां मगवाई और प्रार्थना की कि कोई नाविक चोटी पर जाये और वहा से पाल रस्सियों के सहारे लटकता हुआ, खालो को छुडाता हुआ नीचे उतर आये। अब उम्र में बड़े मल्लाहो का कहना था कि हल्के-फुल्के और फुर्तीले होने के कारण यह काम उनके बस का नही है, क्योकि इसमें ताकत और तजुर्बे की जरूरत है। सबको दुविधा में पड़े देख, और इन सबै विशेषताओ को एक मात्रा में अपने अंदर पा कर मैंने अपनी सेवाएं प्रस्तुत की, और रस्सिया ढीली करने के लिए एक आदमी को साथ लेकर पहाडी पर गया और उतरने के लिए तैयार हो गया।

हमें जमीन में मजबूती से गडा एक खूंटा दिखायी दे गया। वह इतना मजबूत था कि मेरा बोझ संभाल सकता था। हमने पाल-रस्सियो का एक सिरा मजबूती से उस खूटे से बांध दिया। अब हमने रस्सियो को पहाडी की चोटी से नीचे फेंक दिया। हमने देखा कि रस्सियो का दूसरा सिरा एक ऐसी जगह जा पहुँचा है जहाँ से आसानी से तीर पर उतरा जा सकता है। मैं मल्लाहों की गर्मियो की पोशाक—कमीज, पतलून और टोप—में था, इसलिए मुझे कपड़े नही उतारने पड़े, और मैंने उतरना शुरू कर दिया। मैंने अपने दोनो हाथों में एक-एक रस्सी थाम ली और, कभी तो चारो हाथो-पावो से रस्सी के सहारे अधर लटकते हुए, और कभी एक हाथ से पहाडी के बाहर निकले कोनो को थामता और दूसरे हाथ से रस्सी को पकडे नीचे उतर चला। इस तरह नीचे उतरता हुआ मैं अंदर बंसी हुई उस जगह पर पहुँचा जहाँ खालें अटक गयी थी।

एक हाथ से रस्सी पकडे मैं लटका रहा और दूसरे हाथ व दोनों पावो की मदद से मैंने सब खालें नीचे फेंक दी और फिर से नीचे की ओर चल दिया। इस जगह के ठीक नीचे पहाडी की एक चट्टान आगे निकली हुई थी, और जब मैं उस पर पहुँचा तो मुझे अपने नीचे समुद्र के अलावा कुछ भी दिखायी नही दिया। यहां से मुझे वह चट्टान दिखायी दे रही थी जिस पर समुद्र अपना सिर पटक रहा था और कम ऊंचाई पर उडती कुछ समुद्री चिडिएं भी दिखायी दी। मैं सकुशल तीर पर पहुँच गया। धूल से मैं बुरी तरह भर उठा था, और इस भगीरथ प्रयत्न के लिए अपने साथियो से मुझे यह शाबाशी मिली, "तुम भी अजीब गदहे हो! आधा दर्जन खालो के लिए जान पर खेल गये!"

जब हम खालों को नाव में भर रहे थे तब मैंने गौर किया कि भारी और काले बादल समुद्र की ओर से घुमडते चले आ रहे हैं, और एक विशाल उभार तट की ओर उमडता आ रहा है; और दक्षिणी-पूर्वी झंझा के आसार दिखायी दे रहे हैं। पहले मै दूसरी बातो में इतना व्यस्त था कि इस ओर मेरा ध्यान ही नही गया था। कप्तान जल्दबाजी मचा रहा था। खालें नावों पर लाद दी गयी, और बगल-बगल पानी में से नावो को धकेल कर हमने भग्नोर्मिया पार कीं और जहाज की ओर चल दिये। गिग के नाविको ने पिनेक नौका को गिग के पीछे बांध लिया और जौली नाव में बैठे छः नाविको ने लाच को अपनी नाव के पीछे बांध लिया। जहाज वहाँ से तीन मील की दूरी पर अपने लगर पर खडा हिल-डोल रहा था और ज्यों-ज्यो हम आगे बढते जाते थे, त्यों-त्यों समुद्र का उभार भारी होता जा रहा था। कई बार हमारी नावें शीर्षासन करने की स्थिति में आ गयी, पिनेक गिग से जुदा हो गयी और लाच अब डूबी तब डूबी हो रही थी।

खुदा खुदा! करके हम जहाज तक पहुँचे। नावें पानी से आधी भर गयी थी। अब सबसे बडी परेशानी सामने आयी—क्षुब्ध समुद्र में खालो को नावों से जहाज पर कैसे चढ़ाया जाय। समुद्र नावो को गेंदो की तरह उछाल रहा था और उन पर खडा होना असंभव था। बडी कठिनाई से हमने खालो को जहाज पर चढाया और फलके में रख दिया। अब नावें जहाज पर चढ़ा ली गयी और हमने जंजीर पर तबा आजमायी शुरू की।

समुद्र की ऐसी हालत में लंगर डालना आसान नही था लेकिन चूंकि हमें लौट कर इस बन्दरगाह पर नही आना था इसलिए कप्तान ने यहां से न खिसकने का निश्चय किया। जहाज का सिर समुद्र में डूबा था और पानी उसके लगर-छेदों से होकर अंदर आ रहा था। जजीर इतनी जोर से हिल रही थी मानो बेलनचरखी की चरखी को तोड फेंकेगी। यह देखकर मान्चिम ने पाल तान देने का हुक्म दे दिया।

कुछ ही मिनटो में बंधे पाल खुल गये और उन्हें तान कर रस्सियों को ठीक से बाँध दिया गया। आज "आगे बढकर हाथ लगाओ" का आलम था, और हर आदमी इसकी जरूरत महसूस कर रहा था क्योंकि झंझा ने हमें धर ही दबाया था। जहाज ने खुद अपना लगर तोड लिया और अनुवात तट से सम्मुख उफनते समुद्र की ओर चल दिया। इस समय उसके शिखरपाल छोटे कर दिये गये थे और अगले स्थायी पाल और स्पैंकर पाल उस पर तने हुए थे।

जहाज के अगले हिस्से पर कोर्स पाल तान दिया गया जिससे उसे कुछ राहत मिली। लेकिन चूं कि जहाज उफनते समुद्र के आगे कुछ कर नही पा रहा था और समुद्र उसे अनुवात दिशा मे धकेले दे रहा था, इसलिए कप्तान ने प्रमुख पाल-रस्सी को बेलनचरखी में लगाने का हुक्म दिया, और ऐसा हो जाने पर सब लोगो को हवीत दडो की मदद से चरखी को घुमाने का आदेश दिया। ऊपर विशाल पाल इतने जोर से उड रहा था मानो प्रमुख तान को उडा ले जायगा लेकिन नीचे की मशीनरी के बल के आगे उसका बस नही चल रहा था। अब कप्तान ने जोर लगाने का आदेश दिया और ' हीव हो ! हीव एन्ड पा ! यो, हीव, हार्टी, हो !" के गीत के साथ बेलनचरखी धीरे-धीरे घूमने लगी और पाल का कोना जहाज की नाली से बाँध दिया गया। जमना बाजू के नाविको ने रस्सियाँ ठीक कर दी और और अब जहाज पागल घोडे की तरह पानी को चीरता हुआ भागने लगा। वह काप रहा था और जोडो पर से हिल रहा था। समुद्र उसके सिर से टकरा रहा था और हर टक्कर में समुद्र के झाग अनुवात दिशा मे कई-कई गज दूर तक छिटक जाते थे।

आधे घन्टे इस तरह बढने के बाद पाल के कोने बाँध दिये गये, पाल लपेट दिया गया और अग दबाव कम हो जाने से जहाज शातिपूर्वक आगे बढ रहा था। कुछ ही देर बाद अगला पाल छोटा कर दिया गया और हम पिछले शिखरपाल के नाविको को ऊपर जाकर पिछले शिखर पाल को दुहरा बाँध देने के लिए भेजा गया।

वेदर ईयरिंग तक पहुँचने का यह मेरा पहला मौका था, और मै ईयरिंग को पार करके यार्ड आर्म के दोनो तरफ पैर लटकाये बैठा "हाल आउट टू लीवार्ड !" गाने में विशेष गर्व का अनुभव कर रहा था। इस समय के बाद से बोस्टन पहुँचने तक मालिम ने पिछले शिखरपाल को छोटा करने या लपेटने के लिए हमारी मडली से बाहर के किसी नाविक को यार्ड पर नही भेजा, और ईयरिंग पर आमतौर पर मैं और वह नौजवान अंग्रेज ही पहुँचते थे।

पाइन्ट पार करने के बाद और समुद्र में अच्छी तरह निकल आने के बाद हमने यार्डो को पवन के अनुकूल स्थिति में कर दिया और जहाज पर और पाल तान दिये और हवा के रुख में सैन पेड्रो के लिए चल दिये। पवन की गति तेज थी और लगभग सारी रात बारिश होती रही, लेकिन सुबह के समय सन्नाटा छा गया, और झंझा बीत चुकने पर—

बृहस्पतिवार, बाईस अक्टूबर को सैन पेड्रो पहुँच कर तट से एक लीग दूर अपनी पुरानी जगह पर हमारे जहाज ने लगर डाल दिया। हमने झन्झा में जहाज को समुद्र की ओर ले जाने की तैयारी रखी, और शिखरपालो को छोटा कर के बाँध दिया। यहा हम दस दिन तक रहे और हमारे दिन नाव खेने, खालें ढोने, खडी चढाई वाली पहाडी पर नौभार पहुचाने, पत्थरो पर नगे पाँव चलने और खारे पानी में भीगने में बीते।

हमारे यहाँ आने के तीसरे दिन सैन जुआन की ओर से "रोजा" आ पहुँचा। वह झन्झा के अगले दिन सैन जुआन पहुँचा था। उसके नाविको ने बताया कि झन्झा के बाद वहाँ की खाडी तलैया की तरह शाँत हो गयी थी, और हमारे लिए तीर पर लगभग एक हजार खालें लायी गयी थी लेकिन चूंकि दक्षिणी-पूर्वी झन्झा के कारण हम उन्हे नही ले पाये, इसलिए उन खालों को "रोजा" ने ले लिया था। यह सुन कर हमारे पांव-तले से जमीन निकल गयी, क्योकि इस घटना से इस इटालियन जहाज ने हमे वाणिज्य के क्षेत्र में ही नही पछाड दिया था, बल्कि एक एक हजार करके ही तो हमारी चालीस हजार खालें पूरी होनी थी जिनके बिना हम कैलिफोर्निया को अलविदा नही कह सकते थे।

यहां एक नये मल्लाह को जहाज में भरती किया गया। यह मल्लाह बाईस तेईस वर्ष का अग्रेज था। यह नाविक हमारी उपलब्धि सिद्ध हुआ। वह एक अच्छा नाविक था, काम चलाऊ अच्छा गा लेता था और, जिस चीज का महत्व मेरे लिए सबसे अधिक था वह यह थी कि, वह काफी शिक्षित था, और इतिहास का उसे अच्छा ज्ञान था।

वह अपना नाम ज्यार्ज पी० मार्श बताता था। वह कहता था कि बचपन से ही वह जहाज पर नौकरी करता आया है, और अधिकाश समय में वह जर्मनी और फ्रास व इग्लैंड के तटो के मध्य तस्कर व्यापार करता रहा है। इसी कारण वह फ्रेंच भाषा सीख गया था और अब अग्रेजी की तरह ही फ्रेंच में भी बोल और पढ़ सकता था। लेकिन उसने अंग्रेजी भाषा का ज्ञान जहाजो में अर्जित नही किया था क्योकि तस्कर-व्यापार में लगे जहाज पर रह कर इतनी अच्छी अंग्रेजी नही सीखी जा सकती। उसका लेख असाधारण रूप से सुन्दर था, और वह सर्वथा शुद्ध भाषा धडल्ले से बोलता था। जब वह मुझसे निजी बातचीत करता था तब अक्सर किताबो के उद्धरण दिया करता था और उसकी बातो से समाज के रीति-रिवाज,

खासतौर पर इंग्लैंड की विभिन्न अदालतो और पार्लियामेंट की कुछ औपचारिकताओ की जानकारी टपकती थी। उसकी इतनी जानकारी देख कर मैं हैरान हो जाता था।

फिर भी वह अपने बारे में इसके अलावा कुछ नही बताता था कि उसकी शिक्षा-दीक्षा तस्कर व्यापार में लगे जहाज पर हुई थी। आगे चल कर हमारी मुलाकात एक ऐसे नाविक से हुई जो कई साल पहले ज्यर्ज का साथी नाविक रह चुका था। उसने हमें बताया कि जिस बोर्डिग हाउस से वे दोनो जहाज में भरती हुए थे वहा उसने सुना था कि ज्यार्ज कालिज (शायद वह नौसेना का कालिज रहा होगा क्योकि ज्यार्ज को लैटिन या ग्रीक भाषाए नही आती थी) में पढ़ा था और वहा उसने फ्रेंच भाषा और गणित का अध्ययन किया था।

ज्यार्ज की प्रकृति हैरिस से भिन्न थी। हैरिस ने विघ्न-बाधाओ के बावजूद अपना मानसिक और चारित्रिक विकास किया था, जबकि इस आदमी का जन्म प्रत्यक्षत एक भिन्न श्रेणी के परिवार में हुआ, और प्रारम्भ में उसने विधिवत शिक्षा पायी लेकिन तब से वह आवारा की तरह डोलता रहा था और अपने लिए कुछ भी नही कर सका था। अगर वह अपने साथियो से भिन्न था तो ऐसा दूसरों की सहायता और सहयोग के कारण था, जबकि हैरिस जो कुछ बन सका था वह अपने बल-बूते पर बना था।

ज्यार्ज के पास हैरिस जैसी चारित्रिक और मानसिक शक्ति, सूक्ष्मता और स्मरण शक्ति का भी अभाव था। लेकिन, उसकी उपयुक्त शिक्षा उस पर कुछ ऐसा प्रभाव छोड गयी थी कि वह अपनी मानसिक क्षमता से कही ऊंची बातें कर लेता था, और बरसो तक अदना मल्लाह की कुत्ते जैसी जिन्दगी बिताने पर भी उसका उत्साह या हास्य विनोद का गुण मिट नहीं सका था। जब उसे जहाज पर आये कुछ दिन हो गये तब उसने हमें पिछले दो सालों की अपनी विचित्र राम कहानी सुनायी, जिसकी सत्यता की पुष्टि कालातर में हो गयी।

अगर मैं भूलता नही तो, वह सन् १८३३ में "लैस्कर" नामक दो मस्तूलों वाले जहाज में न्यूयार्क से कैंटन की यात्रा पर एक साधारण मल्लाह के रूप में भरती हुआ। ईस्ट इडीज पहुँच कर वह जहाज बेच दिया गया और वह मनीला में एक छोटे से स्कूनर में भरती हो गया जो लैड्रोन और पेल्यू द्वीपसमूह की ओर व्यापारी यात्रा पर जा रहा था। पेल्यू द्वीपसमूह में एक द्वीप की समुद्री चट्टान से

टकरा कर उनका जहाज नष्ट हो गया और वहां के देशी लोगो ने उन पर हमला कर दिया। उन्होने डट कर लोहा लिया, और कप्तान, ज्यार्ज और एक लडके के अलावा सब लोग मारे गये या डूब गये। अन्त में इन तीनो ने समर्पण कर दिया और देशी लोग इन्हे कैद कर एक नाव में बिठा कर पडोस के द्वीप में ले गये।

लगभग एक महीने बाद एक ऐसा मौका आया जिसका फायदा उठा कर इन तीनो में से एक आदमी भाग सकता था। यह मौका किन परिस्थितियो के कारण आया, यह मुझे याद नही, लेकिन सिर्फ एक ही आदमी का भाग निकलना सम्भव था। उन दोनो ने यह मौका कप्तान को दिया। कप्तान ने प्रतिज्ञा की कि अगर वह बच निकला तो उन्हे छुडाने के लिए सहायता भेजेगा। वह बच निकलने में कामयाब हुआ, और एक अमरीकी जहाज में बैठ कर मनीला पहुँचा, और अपने दोनो साथियो के छुटकारे का कोई प्रयत्न न करके वह मनीला से अमरीका चला गया। बाद में ज्यार्ज को पता चला कि कुछ करना तो दूर रहा, उसने मनीला में उन दोनों के बारे में किसी से कोई बात तक नही की थी।

ज्यार्ज का साथी लडका चल बसा, और चूंकि अब ज्यार्ज अकेला रह गया था और उसके भाग निकलने की कोई सम्भावना नही थी इसलिए जल्दी ही देशी लोग उसके प्रति उदारतापूर्ण व्यवहार करने लगे, बल्कि उसका ख्याल रखने लगे। उन्होने उसे रङ्ग दिया, उसके शरीर का (क्योंकि उसने चेहरे या हाथो मे गुदवाने से इनकार कर दिया था) गोद दिया, उसे दो-तीन पत्निया दे दी, और एक तरह से उसे पालतू बना लिया। चौदह महीनो तक वह इसी हालत में रहा। इस प्रदेश की जलवायु सुन्दर थी, खाने की कमी नही थी और इस अधनगे आदमी के पास कोई काम नही था।

जल्दी ही वह इस सबसे ऊब गया। तरह-तरह के बहाने बनाकर वह द्वीप पर चारो ओर किसी जहाज की फिराक में घूमने लगा। एक दिन वह एक डोंगी में एक और आदमी के साथ मछलियो का शिकार कर रहा था कि उसने प्रतिवात दिशा में लगभग डेढ़ लीग दूर एक बडा जहाज देखा। जहाज द्वीप के पास से होता हुआ पश्चिम की ओर जा रहा था। उधर से तम्बाकू और रम लेकर लौटने का लालच देकर, बडी मुश्किल से वह अपने साथी को जहाज तक चलने के लिए राजी कर पाया।

अमरीकी व्यापारी जहाजों के कारण इन द्वीपवासियों को इन चीजों का चस्का

लग गया है। ज्यार्ज का साथी इस प्रलोभन से बच नही पाया, और राजी हो गया। चप्पू मारते हुए वे जहाज के मार्ग की ओर बढे और वहा रुक कर उसके आने की राह देखने लगे। सिर से पैर तक रङ्ग से पुता और प्रकटत अपने साथी से अभिन्न नग्नप्राय ज्यार्ज जहाज पर चढा, लेकिन बोलते ही उसकी भिन्नता सर्वविदित हो गयी।

अब लोगो के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। जब उसने कप्तान को अपनी राम कहानी सुनायी तो उसने उसे नहला-धुला कर कपडे पहनाये और उस विस्मय विमूढ देशी आदमी को एक-दो चाकू, कुछ तम्बाकू और कपडा देकर विदा किया और ज्यार्ज को यात्रा पर अपने साथ ले लिया। न्यूयार्क इस जहाज का नाम "कैबट" था और कप्तान का नाम था लो। वह, प्रशाँत महासागर को पार कर, मनीला जा रहा था और उसके मनीला पहुँचने तक ज्यार्ज ने उस पर मल्लाह के रूप में काम किया। मनीला पहुँच कर उसने "कैबट" को छोड दिया और सैंडबिच द्वीपसमूह की ओर आने वाले दो मस्तूलो वाले एक जहाज पर नौकरी कर ली।

ओआहू से वह दो मस्तूलो वाले ब्रिटिश जहाज "क्लेमैंटाइन" पर दूसरे मालिम के पद पर मोटेरी तक आया जहा कप्तान से कुछ अनबन होने के कारण उसने नौकरी छोड दी। वहाँ से वह सैन पेड्रो आया, और [हमारे जहाज पर नौकर हो गया।

लगभग छः महीने बाद हमें बोस्टन से भेजे कुछ अखबार मिले। एक अखबार में "कैबट" के कप्तान लो का एक पत्र छपा था जो उसने न्यूयार्क पहुचते ही प्रकाशित कराया था। उसमें दिया गया सारा हवाला बिल्कुल वही था जो ज्यार्ज ने हमें दिया था। कप्तान लो ने वह पत्र इस इरादे से प्रकाशित कराया था ताकि ज्यार्ज के मित्रों को उसके बारे में सूचना मिल जाय। अन्त में कप्तान लो ने लिखा था कि उसने ज्यार्ज को मनीला में छोडा था जहा से उसका इरादा ओआहू जाने का था, लेकिन तब से उसकी कोई खबर नही मिल सकी है।

ज्यार्ज ने पेल्यू द्वीपसमूह पर अपनी आपबीती एक दैनिकी में विस्तार से लिख रखी थी। उसने यह दैनिकी अंग्रेजी भाषा में लिखी थी। उसका लेख बहुत सुन्दर था और भाषा शुद्ध थी।

* * *

अध्याय—२२

रविवार, एक नवम्बर। आज (आज फिर रविवार था) हम सैंटा बारबरा के लिए चले और पाँच नवम्बर को वहाँ पहुँचे। सैंट ब्यूना वेदुरा के पास जब हम लगर डालने की तैयारी में थे तो हमें बन्दरगाह में दो जहाज दिखायी पड़े। उनमें से एक तो बडा और सम्पूर्ण पालो का जहाज था और दूसरा दो मस्तूलों वाला छोटा सा हर्माफ्रोडाइट था। पहले जहाज को हमारे मल्लाह "पिलग्रिम" समझ रहे थे लेकिन मैं "पिलग्रिम" पर इतने दिन काम कर चुका था कि मेरी आंख उसे पहचानने में धोखा नही खा सकती थी। दर असल, मेरा सोचना ही ठीक था क्योकि जब फ़ासला कम हुआ तो साफ़ पता चल गया कि लम्बे नीचे और तेज मोरो व झुके हुए मस्तूलो वाला यह जहाज "पिलग्रिम" नही कोई और है।

कुछ मल्लाहो ने कहा वह "दो मस्तूलो वाला लडाकू जहाज" है, दूसरों का कहना था कि वह "बाल्टीमोर क्लिपर" है। मेरा ख्याल था कि वह "आयाकुचो" होगा, और जल्दी ही उसकी चोटी पर सैंट ज्यार्ज का सुन्दर झण्डा—जिसका रंग सफेद था लेकिन जिस पर सुर्ख लाल रङ्ग का बार्डर और क्रास बना हुआ था—फहराया गया।

कुछ क्षणो बाद तो कोई सन्देह ही न रह गया और हम "आयाकुचो" के पास पहुँच गये थे जो कोई नौ महीने पहले सैन डियागो से चला था जबकि हम "पिलग्रिम" में वहाँ थे। वहाँ से चलने के बाद वह वालपरेजो, कैलाओ और सैंडविच द्वीप समूह हो आया था और अभी-अभी तट पर आया था। कप्तान विल्सन अपनी नाव में बैठकर हमारे जहाज पर आया और आधे घन्टे में ही यह खबर जहाज भर में फैल गयी कि अमरीका और फ्रांस में युद्ध छिड गया है।

अगवाड में बातें अतिरंजित होकर पहुची। खबर थी कि कई लडाइयाँ लड़ी भी जा चुकी हैं, और एक बडा फ्रांसीसी बेडा प्रशात महासागर में घूम रहा है, वगैरह-वगैरह, "आयाकुचो" से आने वाली नाव के एक मल्लाह ने बताया कि जब वे कैलाओ से चल रहे थे तब एक विशाल फ्रांसीसी युद्धपोत और अमरीकी युद्धपोत "ब्रन्डी वाइन" युद्ध करने बाहर जा रहे थे और ब्रिटिश युद्धपोत "ब्लाडी" अम्पायर का काम करने उनके साथ जा रहा था।

यह खबर हमारे लिए अत्यत महत्वपूर्ण थी। इसका कारण यह था कि हम जिस तट पर यात्रा कर रहे थे वह अरक्षित था, हजारो मील तक एक भी अमरीकी

युद्धपोत नही दीखता था, और घर वापस जाते हुए हमें प्रशांत और अटलांटिक महासागरो के तटो को पार करना था। इसलिए, इस खबर को सुन कर एक बार तो हमें ऐसा लगा कि हम बोस्टन के खूबसूरत बन्दरगाह में पहुँचने के बजाय किसी फ्रासीसी जेलखाने में सडेंगे।

लेकिन हम ऐसे कच्चे मल्लाह न थे कि अगवाड में पहुँची हर गप्प पर यकीन कर लें, और हम ऐसे मौके की तलाश में रहे कि उच्च अधिकारियो से मिल कर वस्तु-स्थिति का ज्ञान करें। प्रतिनीभार का क्लर्क होने के नाते मुझे असलियत का पता लगाने में सफलता मिल गयी। असलियत यह थी कि अमरीका और फ्रास की सरकारो में एक ऋण की रकम के भुगतान को लेकर मतभेद हो गया था, युद्ध की धमकियाँ तो दी गयी थी और तैयारियाँ भी शुरू हो गयी थी लेकिन युद्ध की घोषणा नही हुई थी, यद्यपि जन सामान्य युद्ध की आशंका से ग्रस्त अवश्य थे। वस्तुस्थिति इतनी बुरी तो नही थी, लेकिन थी चिंताजनक।

फिर भी हम लोग इससे चिंतित नही हुए। मल्लाह किसी बात की परवाह नही करता। हमें विश्वास था; कि फ्रासीसी कैदखाने मे सजा भुगतना कलिफोर्निया के तट पर "खालें जमा करने" से बुरा नही हो सकता; और यह सच है कि जो आदमी किसी जहाज में बन्द होकर एक लम्बी, नीरस समुद्री यात्रा पर नही हो आया है, वह इस बात की कल्पना कर ही नही सकता कि आदमी के वचारो और इच्छाओ पर एकरसता का प्रभाव कितना अधिक पड सकता है।

यहा परिवर्तन की संभावना रेगिस्तान में नखलिस्तान की तरह है, और बडी घटनाओ तथा उत्तेजक दृश्यों की थोडी भी संभावना इन लोगों को खुशी से भर सकती है और जीवन को गति प्रदान कर सकता है। जो आदमी इन हालात में नही है उसका इस सब की तरफ शायद ध्यान ही नही जायगा। सच तो यह है कि महीनो से हमने अगवाड में ऐसी पुरम्जाक रात नही बितायी थी। हर आदमी बडे जोश में था। हर आदमी त्वरित परिवर्तनो, नये दृश्यो और महान करतबो की अस्पष्ट-सी सभावना से भर उठा था, और जहाज की रोजमर्रा की बेगार के प्रति मल्लाहो का मन वितृष्णा से भर उठा था।

अब माहौल ही नया था बातचीत का एक जानदार विषय और बहस का जोरदार मसला मिल गया था। राष्ट्रीयता की भावना जाग उठी थी। जहाज पर एक ही फ्रासीसी था उस पर तरह-तरह के फिकरे कसे जाने लगे और उसे

"ट्टियल घोड़ा" और "आलू का पानी" कहा जाने लगा ।

दो महीने से अधिक इस युद्ध के बारे में हमें कोई निश्चित सूचना न मिल सकी । अन्त में सैंडविच द्वीप समूह से आये कुछ लोगो की जुबानी पता चला कि सारी परेशानी को दूर करने का हल ढू ढ लिया गया है और दोनो सरकारों में समझौता हो गया है ।

बन्दरगाह में मौजूद दूसरे जहाज का नाम "एवन" था । वह एक हर्मोफ्रोडाइट दो मस्तूलो वाला जहाज था और सैंडविच द्वीप समूह का था । उसकी साज-सज्जा सुन्दर थी, भोर और सांझ के समय उस जहाज पर रोज एक तोप छूटती थी और जहाज का झन्डा फहराया जाता था । जहाज पर बाजे-गाजे का भी प्रबन्ध था और वह व्यापारी जहाज की बजाय सैर-सपाटे के लिए बना बजरा नजर आता था; लेकिन "लोरियट", "क्लेमेंटाइन", या "बोलीवार", "कनवाय" या ओआहू के अमरीकियों के जहाजों से साठ-गाठ करके वह खालों, रेशम, चाय और मसालो वगैरह का—जायज और नाजायज—काफी बडा व्यापार करता था ।

हमारे आने के दूसरे दिन उत्तर की ओर से सपूर्ण साजो का दो मस्तूलों वाला एक जहाज वहा आया और मन्द गति से खाडी में चलता हुआ फिर दक्षिण-पूर्व की ओर विशाल कैटेलिना द्वीप की ओर चला गया । अगले दिन "एवन" ने भी वही रास्ता पकडा और वहाँ से सैन पेड्रो चला गया । समुद्री सेना और कैलिफोर्निया के लोग तो शायद इस झासे में आ जाते लेकिन हम इन चालो को खूब समझते थे । वह दो मस्तूलो वाला जहाज फिर तट पर कभी दिखायी नही दिया और लगभग एक हफ्ते बाद जब "एवन" सैन पेड्रो पहुचा तो उसमें कैंटन और अमरीका के सामान का पूरा नौभार था ।

यह एक ऐसा तरीका था जिससे आयात की जाने वाली वस्तुओं पर मैक्सिको सरकार द्वारा लगाया गया भारी आयात-शुल्क बचाया जा सकता था । मान लीजिए एक जहाज आता है तट के एकमात्र कस्टम हाउस मोटेरो में एक सामान्य नौभार दर्ज कराने के बाद व्यापार शुरू कर देता है । लगभग एक महीने में अपना काफी सामान बेच लेने के बाद वह कैटेलिना या तट के समीपवर्ती अन्य विशाल जनशून्य द्वीपो की ओर निकल जाता है । इन द्वीपो के पास ओआहू से आया हुआ एक जहाज पहले से उसकी प्रतीक्षा में है । अब मोटेरो से आया हुआ जहाज

ओआहू से आये जहाज पर से मनचाहा सामान ले लेता है। "एवन" के जाने के दो दिन बाद "लोरियट" ने भी हमें दर्शन दिये और बिला शक उसने भी उसी दो मस्तूलो वाले जहाज से माल मारा।

मंगलवार, दस दिसबर। हमेशा की तरह हम दिन ढले नाव ले कर कप्तान को लेने तीर पर गये। जब हम उसे ले कर लौट रहे थे तो हमने देखा कि हमारे जहाज पर झडा फहरा रहा है।

इसका मतलब था कि जहाज वालो को कोई दूसरा जहाज दिखायी दे रहा है लेकिन हमें अपनी नाव में से कुछ दिखाई नही पड रहा था। "तेज चलो लडको! तेज, अपने चप्पू तेजो से चलाओ!" कप्तान ने कहा, और हमने अपने हाथों को पूरा घुमाते हुए नाव को पानी मे राकेट की तेजी से चलाया।

इतनी तेजी से चलने के कारण कुछ ही मिनट बाद हमें एक-एक करके द्वीप दिखायी पडने लगे और हमे नहर की एक झलक दिखायी दी जहाँ टापगैलेंट पाल ताने हुए एक जहाज हल्की हवा में लंगर डालने की तैयारी कर रहा था। नाव का मुंह जहाज की दिशा में करके कप्तान ने हमे फिर तेजी से नाव चलाने का आदेश दिया और हमें किसी तरह के उद्दीपन की आवश्यकता न थी क्योकि हमारे लिए यह संभावना ही काफी उत्तेजक थी कि हम एक नये जहाज पर जायेंगे जो शायद हमारे घर की तरफ का निकले, वहां हमें कुछ खबरें सुनने को मिलेंगी जो हम अपने जहाज पर लौट कर अपने साथियों को सुनायेंगे। इसलिए हम खुशी से अपनी नाव तेजी से खे रहे थे।

इसी बीच चारो ओर निस्तब्धता छा गयी और चूंकि हम जहाज से दो मील से भी कम फासले पर थे इसलिए हमें उम्मीद थी कि कुछ ही क्षण में हम उस तक जा पहुचेंगे। लेकिन अचानक समीर वह निकला और जहाज को तेजी से द्वीपो की ओर भाग खडा होना पडा।

समीर के कारण हमे भी रुकना पडा और हम तेजी से अपने जहाज "एलर्ट" पर पहुँच गये। रात भर स्थल-समीर चलता रहा और अगले दिन सुबह के समय वह जहाज लगर डाल सका।

उसके लंगर डालते ही हम उस पर पहुँचे। तब हमें पता चला कि वह न्यू बेडफोर्ड का एक ह्वेल जहाज था। उसका नाम "विल्मिगटन एड लिवरपूल पैकेट" था और उस पर तेल के उन्नीस सौ ड्राम लदे थे।

हम तो उसकी क्रेनों और नावो को देखते ही समझ गये थे कि यह तेलवाहक जहाज है । उसके टापगैलेंट मस्तूल मोटे और छोटे थे, पाल, रस्सियां, डडे और पेंदी—सभी चीजें गन्दी सी थी, और जब हम ऊपर पहुचे तो हमने पाया कि जहाज की हर चीज वैसी ही है जैसी किसी तेलवाहक जहाज की होती है ।

उसका डेक कृत्रिम था । डेक खुरदरा हो रहा था और उस पर कही-कही तेल पडा था । तेल के ड्रामो की रगड से डेक पर जगह-जगह दरारें पड गयी थी, रस्सिया ढीली थी और सफेद पड रही थी, डडो पर या तख्तो पर से रोगन गायब था । गरज यह कि हर चीज की हालत खस्ता थी ।

मल्लाहो की हालत भी कम खस्ता न थी । जहाज का कप्तान एक लम्बा पतला, भद्दे ढंग से चलने वाला ववेकर था । उसने भूरे रग का सूट और चौडी बाढ वाला टोप पहन रखा था, और भेड की तरह सिर नीचा किये डेको पर डोलता फिरता था । जहाज के मल्लाह मल्लाह न लग कर मछुए या किसान लगते थे ।

यद्यपि अभी मौसम में सर्दी नही थी (हम लोग सिर्फ अपनी लाल कमीज और मोटे कपडे की पतलून पहने थे) फिर भी उन लोगो ने ऊनी पतलूनें डाट रखी थी—और वे भी नीली या जहाजी नही बल्कि सभी रंगो की—भूरी, काली, हरी—गेटिस उनके कन्धो पर बंधे थे और पतलूनो में हाथ डालने के लिए जेबें लगीं हुई थी । उन्होने ऊनी जर्सिया पहन रखी थी, गले मे धारीदार रूमाल पड़े थे, और पैरो मे मोटे चमड़े के जूते पहन रखे थे, उनके सिरों पर ऊनी टोपियां थी । उनसे तेल की तीखी बू आ रही थी और मल्लाही के काम में वे साफ अनाडी दिखायी दे रहे थे । आठ-दस मल्लाह आगे के शिखरपाल यार्ड पर लगे हुए थे, लगभग इतने ही प्रमुख शिखरपाल लपेट रहे थे और आठ-दस मल्लाह अगवाड में निठल्ले घूम रहे थे ।

जो जहाज लगर डाल रहा हो उसके मल्लाहो का यह हाल देख कर हमें अच-रज हुआ और हम ऊपर पहुच गये कि आखिर देखें तो बात क्या है ? एक स्वस्थ और मस्तमौला से मल्लाह ने अपना पाव दिखाते हुए बताया कि मुझे स्कर्वी हो गयी है; एक दूसरे मल्लाह ने अपना हाथ काट लिया था; दूसरे मल्लाह ठीक तो हो चले थे लेकिन उनका कहना था कि पाल वगैरह उतारने के लिए ऊपर काफी आदमी मौजूद हैं इसलिए हम अगवाड़ में मस्ती की छान रहे हैं । पूरे जहाज में

एक ही "पलासने वाला" था। वह एक सुन्दर बूढा मल्लाह था और इस समय आगे के शिखरपाल की बन्ट में काम कर रहा था। शायद मल्लाह नामधारी जो लोग जहाज में थे उनमें असली मल्लाह वही था।

मालिम अफसर, नाव चलाने वाले और दो मल्लाह—जहाज के सिर्फ इतने ही लोगो ने इससे पहले समुद्री यात्रा की थी, और वह भी ह्वेल मछलियो को पकड़ने के सिलसिले मे। बाकी सभी लोग एकदम अनुभवहीन थे और उन्हे समुद्री जीवन के बारे में कुछ भी पता न था

जब तक हर चीज नहीं लपेट दी गयी तब तक पिछले मस्तूल का शिखरपाल बट लाइनो में लटका रहा। इस प्रकार इस जहाज पर तीस मल्लाहो की टोली ने आधे घन्टे में इतना काम किया जितना हमारे जहाज "एलर्ट" पर अट्ठारह मल्लाह पन्द्रह या बीस मिनट में कर डालते।

हमें मालूम हुआ कि समुद्र में यात्रा करते करते उन्हे छ या आठ महीने हो चुके हैं और उनके पास हमारे लिए कोई नवीन समाचार नही है, इसलिए हम, शाम को छुट्टी ले कर उनसे कुछ अजीब चीजें वगैरह खरीदने आने के लिए कहकर, वहा से चल दिये। शाम को काम से फारिग होते ही हमने सपर लिया और छुट्टी ले कर उस जहाज पर दो-एक घन्टे बिताने के इरादे से एक नाव में बैठकर चल दिये।

उन्होने हमे ह्वेल की हड्डिया और समुद्र के कुछ दूसरे अद्भुत जीवों के दात और अन्य हिस्से दिये और हमने उनसे अपनी किताबो का विनिमय भी किया—विदेशी बन्दरगाहो में मिलने वाले जहाजो में यह प्रथा बहुत प्रचलित है। इसमें लाभ यह है कि आपको उन किताबो से छुटकारा मिल जाता है जो आप कई कई बार पढ चुके है और नयी किताबें पढ़ने को मिलती हैं, और जहा तक इस बात का सवाल है कि कुछ किताबें महगी होती हैं कुछ सस्ती, सो मल्लाह लोग इस बात की परवाह ही नही करते।

वृहस्पतिवार, बारह नवम्बर। आज भोर में खासी ठन्ड थी और चारों ओर काले बादल घिरे हुए थे लेकिन चू कि सुबह के समय अक्सर यही आलम रहता था इसलिए किसी तरह की आशका न हुई और सभी कप्तान दिन बिताने के लिए पार चले गये।

दोपहर के समय पर्वतों पर गहरे बादल घिर आये। सैंटा बारबरा को चारों

ओर से घेरने वाली पहाडियो पर आधा दूर तक झुक आये और दक्षिण-पूर्व की दिशा से एक भारी उभार किनारो से समुद्र की ओर चला आ रहा था । मालिम ने तुरन्त ही नाव के मल्लाहो को तीर पर जाने का हुक्म दिया । तभी हमने देखा कि दूसरे जहाजो से भी नावें तीर के लिए चल पडी है ।

नावो की दौड का यह अच्छा मौका था और सब ने उसमें आगे निकलने की पूरी कोशिश की । हम "आयकुचो" और "लोरियट" की नावो को तो पीछे छोड़ आये लेकिन ह्वेल जहाज की लम्बी छ चप्पुओ वाली नाव से आगे नही निकल सके । वे भग्नोर्मियो तक हमसे पहले पहुँच गये, लेकिन यहा आकर हमने उनसे बाजी जीत ली । चू कि वे अभी भग्नोर्मियो में नाव खेने से परिचित नही थे इस-लिये उन्हे यह देखने के लिए रुकना पडा कि हम अपनी नाव किनारे पर कैसे ले जाते हैं । मुझे याद आया कि लगभग एक साल पहले जब मैं "पिलग्रिम" में था इसी जगह पर हमें भी रुक कर कनाका मल्लाहो से भग्नोर्मियो को पार करना सीखना पडा था ।

अभी हमने नावो को किनारे पर लगाया ही था कि हमारा पुराना दोस्त खूबसूरत अग्रेज मल्लाह बिल जैक्सन; जो "लोरियट" की नाव चला कर लाया था, चिल्ला उठा कि "लोरियट" बह रहा है, और सचमुच ही उसका जहाज लगर को घसीटता हुआ खाडी की ओर बहा जा रहा था ।

चू कि जहाज पर मालिम और स्टीवार्ड के अलावा कोई भी न था, इसलिए कप्तान की प्रतीक्षा किये बिना ही वह उछल कर नाव में जा बैठा- कनाका मल्लाहों को भी बुलाकर बिठा लिया और जहाज की ओर जाने की कोशिश करने लगा । लेकिन यद्यपि कनाका लोग पानी की मछली होते हैं फिर भी अपने जहाज को बहता देख और स्थिति की गम्भीरता से वे घबरा गये और उनके होश-हवास गुम हो गये ।

उन्होने दो बार भग्नोर्मियो को पार कर के समुद्र में जाने की कोशिश की और दोनो बार उनकी नाव तीर पर आ गिरी । जैक्सन उन पर बुरी तरह बरस पडा और उनकी खाल उधेड लेने की धमकी दी ; लेकिन इससे कुछ न हुआ, आखिर हम लोगो ने हाथ बढाया, हमने कनाका लोगो को नाव में बिठा दिया और दो-दो आदमियों ने नाव को दोनो ओर से पकडा और उसे धकेलते हुए उसके साथ पानी में आगे बढे । जब पानी हमारे कन्धो तक आ गया तब हमने नाव

को आगे की ओर जोर का धक्का दिया और वे अपने चप्पूओं की सहायता से भग्नोर्मियों को पार कर के समुद्र के लम्बे और नियमित उभार में पहुँच गये।

इस बीच हमारे जहाज और ह्वेल जहाज से नौकाए भेज दी गयी थी और सब लोगो ने "लोरियट" पर पहुच कर दूसरा लगर डाल दिया और जहाज को रोक दिया।

कुछ क्षण बाद हमारा कप्तान जल्दी मचाता हुआ तीर पर आया, अब थोडा भी समय नष्ट करना उचित नही था क्योकि ऐसा लगता था कि भीषण झंझा आने ही वाली है। भग्नोर्मिया किनारे से टकरा रही थी और प्रति क्षण ऊची होती जा रही थी। सब से पहले चार कनाका मल्लाहो द्वारा चालित "आयाकुचो" की नाव रवाना हुई, और चूंकि उनकी नाव में रडर या कर्ण चप्पू नही था इसलिए अगर हम सहायता न करते तो शायद वे भग्नोर्मियों को कभी भी पार न कर पाते। इसके बाद ह्वेल जहाज की नाव रवाना हुई क्योंकि सब से अधिक अनुभवी होने के कारण हमे किसी की मदद की जरूरत न थी इसलिए हम अन्त तक रूके रहे।

नाव से लम्बी यात्रा में ह्वेल जहाज पर काम करने वाले मल्लाहों का कोई जवाब नही है लेकिन भग्नोर्मियो पार करने का उन्हें अनुभव नही था, और दूसरी नावों को पार होते देख कर भी वे इस प्रक्रिया को अच्छी तरह समझे नही थे इसलिए वे तेजी से समुद्र की ओर बढने लगे, नतीजा यह हुआ कि भग्नोर्मियों ने उन्हें उनकी नाव और चप्पुओ के साथ किनारे की रेत पर ला पटका। अगली बार फिर उन्होने खुद ही कोशिश की। इस बार उन्होने नाव को उलट लिया था, हम उनकी कोई मदद नही कर सकते थे क्योकि वे इतनी अधिक सख्या में थे कि एक दूसरे की ही नही सुन रहे थे। तीसरी बार उन्हे सफलता मिल गयी। फिर भी एक दीर्घ तरंग उनकी नाव में आ गिरी जिसने उन सबको भिगो दिया और उनकी नाव में इतना पानी भर गया कि जहाज पर पहुँचने तक वे उसे उलीचते ही रहे।

अब हमने चलने की तैयारी की। अंग्रेज मल्लाह बेन और मैं सबसे लम्बे थे इसलिए हम दोनों मोरो के दोनों ओर खडे हो गये और नाव को समुद्र के आमने-सामने रखा। दो लोगो ने चप्पू संभाले और कप्तान ने कर्ण चप्पू अपने हाथ में ले लिया।

किनारे पर दो-तीन स्पेनी लोग हमारी ओर देख रहे थे। उन्होने अपने लबादे लपेटे, सिर हिलाया और बुदबुदाये "करबा!" उन्हे हमारी यह हरकत पसन्द नही आयी। असल बात यह है कि पानी से डरना उनकी राष्ट्रीय बीमारी है और वह लोगों तथा उनके व्यवहार में स्पष्ट झलकती है।

"निरापद अवसर" देख कर हमने यह सोचा कि दूसरी नावो को दिखाया जाय कि भग्नोर्मिया किस तरीके से पार की जाती हैं। हम नाव को समुद्र के आमने-सामने रखकर अपनी पूरी ताकत से उसे पानी में धकेलते हुए भागे, कप्तान कर्ण चप्पू को और बाकी दो मल्लाह पिछले दो चप्पुओ को तेजी से चला रहे थे, अन्त में हम भागते-भागते उछल कर चुपचाप मोरो पर चढ गये ताकि दूसरे मल्लाहो के काम में विघ्न न पडे।

कुछ देर तो ऐसा लगा कि बात बनेगी नही। नाव पानी में शीर्षासन सा करने लगी। उसके नीचे से गुजरती हुई लहरें उसे इतना ऊपर उठा कर इतने जोर से नीचे पटक रही थी कि लगता था उसकी पेंदी ही फट जायेगी। हमने चुपचाप दो चप्पू संभाले और मोरों पर बैठ कर उन्हे चलाने लगे। इस प्रकार चार चप्पुओं व कप्तान के मजबूत बाजू की सहायता से हम भग्नोर्मियों को पार कर गये यद्यपि इस बीच कई लहरें हमारे ऊपर आ गिरी और नाव में काफी पानी भर गया।

"लोरियट" का कप्तान हमारी नाव में ही था। हम उसके पास से होकर गुजरे और कप्तान को उसके जहाज पर चढा दिया। हमने देखा कि "लोरियट" खिसकने की तैयारी में है। इसके बाद हम अपने जहाज पर पहुचे। वहां मि० ब्राउन ने हस्बमामूल पहले ही सारी तैयारी कर रखी थी, इसलिए जैसे ही हमने नाव को हुक में लगा कर ऊपर चढाया वैसे ही पाल ढीले करने का आदेश दे दिया गया।

हम अभी यार्डो पर काम ही कर रहे थे कि हमने "लोरियट" को जाते देखा और कुछ ही देर बाद हमने "आयाकुचो" को पंख फैलाये जाते हुए देखा।

दुनिया मे बहुत कम दृश्य ऐसे हैं जो सुन्दरता की दृष्टि से हवा के अनुकूल तेजी से बहते हुए संपूर्ण पालो के जहाज की तुलना कर सकें। एक क्षण में हमने भी लंगर उठा दिया और हवा भर कर चल पडे। हमारे बाद ह्वेल जहाज रवाना हुआ। केवल आधा घन्टा पहले चार जहाज लंगर डाले शांत भाव से पडे थे,

गति का कोई चिन्ह तक न था लेकिन अब खाडो उजाड लग रही थो और चार बादल समुद्र की ओर बढ़ रहे थे ।

दिन भर और रात के अधिकाश में हम दक्षिण-पूर्वी झझा का मजा लूटते रहे—कभी कम और कभो बहुत तेज झझा चलती रही और तीन-चार घन्टे जम कर बारिश भी हुई । भोर में बादल हल्के पड गये और फिर गायब हो गये और सूरज निकल आया । ऐसे में आम तौर पर हवा उत्तर से चलती है लेकिन आज लंदरगाह की ओर से लगातार ताज़ी हवा आ रही थी ।

यह बात हमारे लिए घाटे की थी, क्योकि हमारे पास केवल हल्के पाल थे जिनकी मदद से हम तेज हवा होने पर ही लंगरगाह तक सब से पहले पहुँच सकते थे । लेकिन अब इस बात की संभावना अधिक थी कि "आयाकुचो" हमसे बाजी मार ले जाय । क्योकि वह हमारे मुकाबले पवनाभिमुख था ।

हा, ह्वेल जहाज हमसे अनुवात दिशा में था और "लोरियट" द्वीपो में कही था और हमें दिखायी नही दे रहा था । हमने बडी तरकीब से काम लिया और अनुवात दिशा के जहाजों को हम पीछे छोड आए । लेकिन जब हम लगरगाह में पहुँचे तो "आयाकुचो" वहा पहुच कर लगर डाल चुका था । उसके पाल लपेटे जा चुके थे और वह इतना शात था जैसे पिछले चौबीस घन्टो में कुछ हुआ ही न हो ।

हम हमेशा की तरह पहला ही लंगर डालने मे सफल हो गये और आधे घन्टे में हमने जहाज़ का सब काम पूरा कर लिया । इसके लगभग दो घन्टे बाद ह्वेल जहाज़ आया और बडी मुश्किलों के बाद वह लंगर डाल पाया । तीन घन्टो में भी वे अपना काम पूरा नही कर पाये । दोपहर तक उनके यार्डों पर पाल लटके रहे और शाम से पहले उन्हे नही लपेटा जा सका । "लोरियट" साझ ढले आया और लंगर डाल कर खडा हो गया ।

हमारे जहाज़ और "आयाकुचो" में विगत घटना को ले कर विवाद हो गया, कौन सा जहाज तेज चलता है—इस बात पर कप्तानो में शर्त लग गयी, और मल्लाह लोग भी आपस में बाजी लगाने लगे; लेकिन चू कि दोनो जहाजों को दो भिन्न दिशाओ में जाना था और व्यापारी जहाजों के कप्तान मनमानी नही कर सकते इसलिए आजमाइश का मौका ही न आया । और शायद यह अच्छा ही हुआ क्योकि "आयाकुचो" आठ सालों से प्रशात महासागर में यात्रा कर रहा था, वह

उसके हर हिस्से—वाल्परेजो, सैंडविच द्वीपसमूह, कैंटन, कैलिफोर्निया और अन्य—से परिचित था और प्रशात महासागर में यात्रा करने वाला सबसे द्रुतगामी व्यापारी जहाज माना जाता था। हा, कालातर में यह श्रेय "जान गिल्पिन" और बाल्टीमोर के "ऐन मेककिम" नामक जहाजो को दिया जाने लगा।

शनिवार, चौदह नवबर। आज हमे एजेंट के साथ मोटेरी जाने वाले कुछ स्पेनी यात्री मिल गये। हम नाव ले कर उन्हे मय सामान के लेने किनारे पर गये। वे तट पर हमारी बाट देख रहे थे। उस समय भग्नोर्मिया ऊची उठ रही थी इसलिए वे कुछ डरे हुए से थे।

हमें क्या चिता थी, हमें तो स्पेनियो को समुद्र के खारे पानी का स्वाद चखाने में खास मजा आता था। इसके अलावा सभी मल्लाह एजेंट को सख्त नापसंद करते थे, और चूकि नाव पर कोई अफसर नही था इसलिए हम सोच रहे थे कि इन्हे एक गोता दिया जाये। हम यह सोच कर और भी निश्चित थे कि इन्हे यह भी पता नही चलेगा कि हमने जान-बूझ कर यह शरारत की है।

योजना के अनुसार ही हमने नाव इतनी दूर पर रोकी कि उस तक आने के लिए उन्हें पानी में चलने पर मजबूर होना पडा। इसके बाद जब एक बडी लहर आयी तो हमने उसे इस तरकीब से नाव में लिया कि वे लोग सिर से पैरो तक भीग गये। स्पेनी लोग उछल कर नाव से बाहर जा खडे हुए; उन्होने गालिया देना और अपने बदन को झटकना शुरू कर दिया और हमारा एजेण्ट बडी मुश्किल से उन्हें दुबारा नाव में बैठने के लिए राजी कर सका।

आगे हमने सावधानी से काम लिया और आराम से नाव खेते हुए उन्हे जहाज पर ले आये। जब मल्लाह लोग उनका सामान ऊपर चढाने के लिए जहाज के बाजू पर आये तो हमने उन्हे आख का इशारा दिया और अधभीगे स्पेनियो की खस्ता हालत का मजा उन्होने भी जी भर कर लूटा।

सारी तैयारियाँ हो चुकी थी और यात्री भी जहाज में आ गये थे इसलिए हमने अपना झडा और चौडी पताका (क्योकि आस-पास कोई लडाकू जहाज नही था और उस तट पर हमारा जहाज सबसे बडा था) फहरा दी, और दूसरे जहाजो ने भी अपने-अपने झडे फहरा दिये। हमने जहाज को थोडा ठहरा लिया, गैस्केट रस्सियो को ढीला छोड दिया और हर पाल की बंट जिगर से बाँध दी, हर यार्ड पर एक आदमी को तैनात कर दिया गया और जहाज के सभी पालो को ढीला छोड दिया

गया, और फिर बिजली की तेजी से हर पाल से रस्सियां बाँध दी गयीं और सब पालों को ऊपर चढा लिया गया। लंगर को पानी में से उठा कर लगर कुन्दे में रख लिया गया, और जहाज आगे बढने लगा।

हम "तेल वाहक" जहाज को यह दिखा देने पर आमादा थे कि एक अच्छे जहाज पर कुशल मल्लाह किस तरह काम करते हैं चाहे उनकी संख्या उसके मल्लाहो से आधी क्यो न हो। रायल यार्ड, रायल पाल और आकाश पाल लगा दिये गये। चूंकि हवा मजे की चल रही थी इसलिए बूम निकाल दी गयी। हर मल्लाह डेक पर बिल्ली की तरह फुरती से काम कर रहा था। कप्तान एक के बाद दूसरे पाल का ढेर लगाये जा रहा था। अन्त में जहाज पालों से ढक गया। उसके पाल ऐसे लग रहे थे मानो कोई भूधराकार श्वेत बादल किसी काले नन्हें बीज पर बैठ गया हो। कुछ ही देर मे हमारा जहाज तेज रफ्तार से चलने लगा।

इस चालीस मील लम्बी और दस मील चौडी खाडी को लोग "नहर" कह कर पुकारते हैं। नहर पार करते समय समीर चल रहा था। रात के समय समीर रुक गया और रविवार को सारे दिन हमारा जहाज हवा के अभाव के कारण प्रगति नही कर सका। रविवार को हम सैंटा बारबरा और पाइन्ट कंस्पेप्शन के बीच में रहे। रविवार की रात को फिर हल्का समीर बहने लगा और हमने आगे बढना शुरू किया; सोमवार को पूर्वाह्न में तेज समीर चलता रहा जिससे हमें उम्मीद हो चली कि हम कोई मुसीबत उठाये बिना ही पाइन्ट कंस्पेप्शन को पार कर जायेंगे। पाइन्ट कन्सेप्शन को कैलिफोर्निया का केपहार्न कहा जाता है, यहाँ पहली जनवरी से हवाए चलनी शुरू होती हैं और सारे साल चलती हैं।

हा, तीसरे पहर के समय हमेशा की तरह उत्तरी-पश्चिमी पवन बह निकली। अब हमने दुपेंचा पाल उतार लिये। अब हम हवा के रूख के विपरीत चल कर पाइंट कँसेप्शन को पार करना था जो दूर नही था। यह पाइट प्रशाँत महासागर में उत्तर से दक्षिण तक फैले सैंकडो मील लम्बे तट का मध्य बिन्दु है और ऊचा, पठारी तथा वीरान हैं। यहा थोडी हवा भी आधिक होती है यह सोच कर हमने रात से पहले ही रायल पाल लपेट लिये और टापगैलेंट पाल तने रहने दिये। हवा की विपरीत दिशा में हमारा जहाज बहुत भारी चल रहा था।

आठ घन्टिया बजी और हमारी पहरा-टोली नीचे गयी। अब जहाज पर

उतने ही पाल थे जिन्हे वह सभाल सकता था, वह हिचकोले खाता हुआ आगे बढ़ रहा था और हर हिचकोले के साथ समुद्र का पानी उसके अगवाड में आ जाता था। पवन वाकई बहुत तेज चल रहा था लेकिन आकाश में एक बादल भी नही था और सूरज साफ आसमान में डूबा था।

हमें नीचे आये कुछ ही देर हुई थी कि हमे झन्झा आने के आसार दिखायी देने लगे . जहाज के समूचे अगले भाग में लहरें घुसी आ रही थी और जहाज के मोरे लहरों से इतने जोर से और आवाज करते हुए टकरा रहे थे जैसे लकडी के भारी कुन्दो को घसीटा जा रहा हो। पहरा देने वाले लोग डेकों पर दौड-दौड कर काम कर रहे थे और रस्सियाँ थामे गा रहे थे।

मल्लाह आवाज सुनकर ही बता सकता है कि कौन-सा पाल नीचे आ रहा है। हमने एक-एक करके टापगैलेंट पालो और फलान जीब को नीचे आते सुना। इनके उतर जाने से जहाज को कुछ राहत मिली और उसकी रफ्तार तेज हो गयी। अचानक मोखे पर—बैंग, बैंग, बैंग—तीन आवाजें हुई और "आओ रे सब शिखर पाल को छोटा करो" की गुहार सुन कर हमें अपने बिस्तर छोड कर उठना पड़ा। अभी सर्दियां शुरू नही हुई थी इसलिए हमें ज्यादा कपड़े नही पहनने पडे और हम शीघ्र ही डेक पर पहुँच गये। वहा पहुँच कर मैंने जो दृश्य देखा उसकी भव्यता मैं कभी नहीं भूल सकता। रात उजली और किसी कदर ठन्डी थी, तारे चम-चम झिलमिला रहे थे और जहा तक दृष्टि जाती थी एक बादल भी दिखायी नही दे रहा था। एक सुस्पष्ट-रेखा पर क्षितिज समुद्र से मिल रहा था। कोई चित्रकार चित्र में भी इतना स्वच्छ आकाश अंकित न कर पाता। आकाश पर एक भी धब्बा तक नही था, फिर भी उत्तर-पच्छिम दिशा से तेज पवन चल रहा था। अगर आधी की दिशा में बादल दिखायी पड़े तो आप अनुमान लगा सकते हैं कि आँधी अमुक दिशा से आ रही है, लेकिन यहा तो पता ही नही चलता था कि यह आ किधर से रही है। कोरी आंख से आकाश की ओर देख कर कोई यह नही कह सकता था कि यह रात गर्मियो की शात रात नही है।

एक-एक रस्सी को खीच कर हमने शिखर-पालो को छोटा किया। अभी हम यह काम पूरा कर भी न सके थे कि वज्रघोष जैसी आवाज आयी और पाल-रस्सी से अलग होकर जीब की चिन्दी-चिन्दी हो गयी। हमने शिखर पालो को ठीक किया, जिब के टुकड़ो को ठिकाने लगाया और अगले शिखर मस्तूल के स्थायी पाल को

उसके स्थान पर लगाया कि अचानक बृहत प्रमुख पाल ने मुख फैला दिया और पाल एक से दूसरे सिरे तक फट गया ।

"प्रमुख यार्ड पर टूट पडो और चिथडे होने से पहले ही पाल को लपेट दो" कप्तान चिल्लाया; और अगले ही क्षण हम ऊपर चढ़ कर यार्ड पर पाल को लपेट रहे थे । हमने उसे यार्ड पर लपेट दिया और रस्सी से कस दिया और डेक पर आये ही थे कि एक और जोर की आवाज हुई जो सारे जहाज में गूंज गयी और अगला शिखरपाल जिसे बहुत छोटा कर दिया गया था दो टुकडे हो गया ।

अब हमें फिर यार्ड पर चढना पडा और पहले की तरह बडी तरकीब और मेहनत से काम लेने पर हम इसके सिरो में गांठ बाँध कर इसकी रस्सी छोटी करने में सफल हो सके ।

अब हम "पहरा टोली नीचे जाओ" के आदेश का इन्तजार ही कर रहे थे कि रस्सियो से बंधा प्रमुख रायल पाल ढीला हो गया और अनुवात दिशा में उडने लगा । उसके उडने से मस्तूल छडी की तरह खडखडा रहा था और हिल रहा था । यह काम कठिन था । पाल को नीचे उतारना या काट देना जरूरी था वर्ना मस्तूल के उखड जाने का डर था । जमना पहरा-टुकडी के सभी नये मल्लाहो से एक-एक करके यह काम कराया गया, लेकिन किसी को इसमें सफलता नही मिली ।

अन्त में जमना-टोली का मुखिया लम्बा फ्रासीसी जान (जो डेक पर मौजूद मल्लाहों में सबसे अधिक कुशल था) ऊपर चढा और अपने लम्बे हाथ-पैरों की मदद से बडी मशक्कत के बाद—क्योंकि पाल अनुवात दिशा में उड रहा था और इसके सिर के ठीक ऊपर आकाश पाल उड रहा था—वह पाल को समेटने और लम्बी रस्सियो से उसे बाधने में कामयाब हो सका । कई बार ऐसा लगा कि पवन का वेग उसे यार्ड पर से धक्का दे देगा या गिरा देगा लेकिन वह सच्चा मल्लाह था और इस सबसे घबराने वाला नहीं था ।

पाल को ठीक करने के बाद वह यार्ड नीचा करने की तैयारी में जुट गया, वह एक लम्बा और कठिन काम था, बार-बार उसे कई मिनटों तक काम रोक कर वहाँ रुके रहने के लिए पूरा जोर लगाना पडा क्योंकि जहाज इतने जोर से हिल-डोल रहा था कि इतनी ऊंचाई पर कुछ और कर पाना असंभव था । अन्त में यार्ड सही सलामत नीचा हो गया और इसके बाद अगले तथा पिछले रायल यार्डों को नीचा किया गया ।

तब सब लोगों को ऊपर चढ़ने का आदेश दिया गया और एकाध घन्टे तक हमें भारी मेहनत करनी पडी। हमने बूमो को कस कर बाँधा, यार्डो पर रस्सिया लपेटी, मौसम के हिसाब से जवाए ठीक की और तूफान का सामना करने के लिए दूसरी जरूरी तैयारिया की।

झझा को देखते हुए उस रात मौसम बुरा नही था। ठडक सहने योग्य थी और मन में तेजी से काम करने की इच्छा जगाती थी, सर्दी भी नही थी और उजाला इतना था जैसे दिन निकल रहा हो। ऐसे मौसम में झझा को झेलना एक खेल था। फिर भी पवन का वेग प्रभजन जैसा था। पवन जैसे दुश्मनो निकालना चाहता था और उसमें इतनी धार थी मानो वह हमें यार्ड से काट कर नीचे फेंक देना चाहता हो। पवन का ऐसा भयानक वेग मैंने पहले कभी नही देखा था, लेकिन मल्लाह की दुश्मनी तूफान की हवा से नही बल्कि उसके अधेरे, ठण्डक और नमी से है।

डेक पर दुबारा पहुँचने पर हमने, समय का अदाज लगाने के लिए और यह जानने के लिए कि पहरा किस टोली को देना है, चारो ओर देखा। कुछ क्षण बाद चार घन्टिया बजी जिसका मतलब होता था हमारी टोली के पहरे की शुरूआत। लिहाजा जमना पहरा-टुकडी नीचे चली गयी और दो घन्टे के लिए जहाज को हमारी निगरानी मे छोड गयी। फिर भी उसे आवाज सुनते ही ऊपर आने का आदेश दिया गया था।

वे नीचे पहुँचे भी न होगे कि अगले शिखर मस्तूल के तान पाल की धज्जियाँ उड गयीं। यह पाल छोटा था और हम पहरे के लोग ही इसका प्रबन्ध कर सकते थे इसलिए हमने दूसरी पहरा-टोली को नहीं बुलाया। हम सबदरे पर चढ गये और पाल के टुकडो को बाँध दिया। इस काम में आधे समय तक हमें पानी में रहना पडा। चूंकि जहाज पर कोई न कोई शीर्षपाल अवश्य होना चाहिए था इसलिए हम उसके स्थान पर दूसरा पाल बाँधने की तैयारी मे जुट गये। हमने एक नया पाल निकाल कर ऊपर चढाया लेकिन वह अभी आधी ऊचाई तक ही गया था कि पवन के एक झोके ने उसे भी टुकडे-टुकडे कर दिया।

जब हमने पाल रस्सियो में दुफडी गाँठ लगा दी तो पाल-रस्सी के अलावा जहाज पर कुछ रह ही नही गया। अब अगले पाल में बडे-बडे छेद दिखायी देने लगे और यह जानते हुए कि यह भी फटने ही वाला है मालिम ने हमें आदेश दिया

कि पाल को यार्ड से लपेट दिया जाय। दूसरी पहरा-टोली रात-भर डेक पर रही थी इसलिए वह उसे बुलाना नही चाहता था, अतः उसने बढई, सिलमाकुर, रसोइये, स्टीवार्ड और दूसरे आलसियो को जगाया और उनकी मदद से हम अगले यार्ड पर जुट गये। आधे घन्टे के कठिन परिश्रम के बाद हमने पाल पर काबू पा लिया और उसे यार्ड के चारो ओर कस कर लपेट दिया।

इस समय पवन का वेग अधिकतम था। जब हम रस्सियों पर चढकर ऊपर पहुँचते थे तो ऐसा लगता था जैसे हवा हमें बरांडलो से चिपका देगी, और यार्डों पर काम करते समय हम हवा' की तरफ रुख नही कर सकते थे। लेकिन फिर भी यहा केपहार्न की तरह हिम, अधेरा, नमी और ठडक नही थी; और कड़े आइल-क्लाथ के सूट, साउथवेस्टर टोपी और भारी-भरकम जूतो की जगह हमने टोप, जाकेट, सूती पतलून और हल्के जूते पहन रखे थे। मल्लाह के लिए यह फर्क बहुत माने रखता है।

जब हम डेक पर उतरे तो आठ घन्टियां (उस समय सुबह के चार बजे थे) बजायी गयी और हांक लगायी गयी जिसे सुनकर जमना पहरा-टुकडी ऊपर आ गयी। लेकिन हमें नीचे जाने का आदेश नही मिला।

अब झंझा अपने पूर्ण यौवन पर थी। कप्तान डेक पर मौजूद था। जहाज पर बहुत कम पाल थे और वह इस तरह हिचकोले खाता बढ रहा था मानो वह अपने शरीर में गडी हुई एक-एक लकडी को झटक कर दूर फेंक देगा। सभी और पालो में पहले कोई दराज़ दिखायी देती थी और फिर वे फट जाते थे।

अब पिछला शिखर पाल, जो अपेक्षाकृत नया पाल था और जिसे हमने काफी छोटा करके बाध रखा था, फट कर दो टुकडे हो गया। इसके बाद एक ही झटके में अगले शिखरपाल की धज्जिया उड गयी; एक चेन बाब स्टे खुल गया; स्प्रिट पाल की रस्सी स्लिग में चली गयी; मार्टिगेल रस्सी अनुवात दिशा में उडने लगी और लंबे खुश्क मौसम के कारण अनुवात की रस्सियां जगह-जगह उलझ गयी। प्रमुख टापगैलेंट का एक बरांडल अलग हो गया था और रसोई अपनी जगह से हट कर अनुवात दिशा में पहुँच गयी थी। अनुवात के मोरे से बंधा लंगर ढीला हो गया था और खटर-खटर कर रहा था।

यह काम इतना अधिक था कि सब लोग करते तो भी आधा दिन लग जाता। हमारी टोली पिछले शिखरपाल के यार्ड पर जुट गयी और लगभग आध घन्टे की

कडी मेहनत के बाद हम पाल को लपेटने में कामयाब हुए। इसी क्रम में एक बार यह पाल हमारे सिरों के ऊपर लिपट गया और फिर पवन के झोंके से इतने जोर से उडा कि हम पग रस्से पर से गिरते-गिरते बचे।

यार्डों के चारो ओर दुहरी गैस्केट रस्सिया बाध दी गयी और हर चीज की सुरक्षा का यथासभव प्रबन्ध कर लिया गया। नीचे आने पर हमने देखा कि बाकी के मल्लाह आगे की रस्सियों पर जुटे हैं। उन्होने चिथड़े-चिथड़े हुए शिखरपाल को लपेट लिया था, बल्कि उसे यार्ड के चारों ओर कस कर बाँध दिया था और वह ऐसा लग रहा था मानो किसी का कोई हाथ-पैर टूट गया हो और उस पर पट्टी बाध दी गयी हो।

अब स्पैंकर और छोटा करके बाधे गये प्रमुख शिखरपाल के अलावा जहाज पर कोई पाल न था। ये दोनों अभी ठीक काम दे रहे थे। लेकिन पीछे इतने पाल की जरूरत न थी इसलिए स्पैंकर को लपेट देने का आदेश दिया गया। ब्रेल घसीटे गये और अपना पहरा-टोली के सभी साधारण मल्लाह गैस्केट रस्सियां बाँधने के लिए उपदंड पर भेजे गये, लेकिन उनसे कुछ न हुआ। दूसरे मालिम ने उन्हें "हरामियो" का झुन्ड कहकर लताडा और दो श्रेष्ठ मल्लाहों को यह काम सौंपा लेकिन वे भी कुछ न कर सके और अतत. उपदन्ड को नीचा ही करना पडा।

अब सब लोगो को अनुवात की रस्सियो को व्यवस्थित करने का आदेश दिया गया। मैं डाबा टोली में था और मुझे अगले भाग में मार्टिगेल रस्सी लगवाने का काम दिया गया था। हममे से तीन मल्लाह मार्टिगेल गाई और बिचले रस्सो पर गये और आधे घन्टे तक रस्से-कुप्पियों को बाधने-खोलने में लगे रहे। कई बार बडी-बडी तरगो ने हमें भिगो दिया और अन्त में मालिम ने इस डर से हमें नीचे बुला लिया कि कही हम लहरो में बह न जायें।

इसके बाद लगरो को पटरी पर लाया गया जिसमें सब लोगो को एक घन्टे अगवाड में काम करना पडा। रह-रह कर तरगें अगवाड में आती रही और रस्सियो वगैरह को अनुवात दिशा में धकेलती रही। तरगो से नालियों में छाती-छाती पानी भर जाता था और अडास तफरैल की तरफ बह जाती थी।

सब चीजो को फिर से दुरूस्त कर चुकने के बाद हम कुछ नाश्ते की उम्मीद कर रहे थे, क्योकि सुबह के नौ बज गये थे, कि प्रमुख शिखरपाल के जाने के आसार दिखाई दिये। जहाज पर कोई पाल तो होना ही चाहिए यह सोच कर

कप्तान ने अगले और प्रमुख स्पेंसर के उपदन्डो को नीचा करने का आदेश दिया और उन पर दोनो स्पेंसरो (ये तूफानी पाल कोरे, छोटे और बहुत मजबूत कपड़े के बने हुए थे) को तान देने का आदेश दिया। प्रमुख शिखरपाल को पवन में उड़ जाने के लिए छोड दिया गया और हम प्रार्थना करने लगे कि यह हमारे स्पेंसर पाल लगाने तक बना रहे—यही गनीमत होगी। इसके बाद हमने बहुत ही साव-धानी से, और उनकी हिफाजत का पूरा प्रबन्ध करते हुए, स्पेंसर पालो को तान दिया।

अब तक प्रमुख शिखरपाल अतीत की वस्तुओं में शामिल हो चुका था और हम उस पाल के भग्नावशेष एकत्र करने ऊपर गये जो पिछले चौबीस घन्टो में नष्ट होने वाले पालो में अंतिम था। अब जहाज पर साबुत पालो के नाम पर केवल स्पेंसर पाल थे और चूंकि वे मजबूत और छोटे थे और डेक के नजदीक थे इसलिए उम्मीद थी कि वे झंझा के थपेडो को झेल जायेंगे। पालो के न होने के कारण जहाज उठता-गिरता अनुवात दिशा में बहा जा रहा था और एक युद्धपोत जैसा लग रहा था।

अब ग्यारह बज चुके थे और पहरा-टोली को नाश्ते के लिए नीचे भेज दिया गया और दोपहर को जब आठ घन्टिया बजी तो चूंकि चतुर्दिक शाति छा चुकी थी, यद्यपि झंझा की तीव्रता कम नही हुई थी, इसलिए पहरा बिठा दिया गया और दूसरी पहरा–टोली और आलसियो को नीचे भेज दिया गया।

तीन दिन और तीन रात झंझा की भीषणता कम नहीं हुई और वह उसी गति से चलती रही। बीच-बीच में निस्तब्धता नही छायी और न उसकी भीषणता भी कभी कम कभी ज्यादा नही हुई। हमारा जहाज पाल न होने के कारण हल्का था और जब वह चलता था तो ऐसा लगता था जैसे अगले यार्ड की भुजा तैराक की भुजा की तरह पानी में डूबती हो और उसके सहारे वह अनुवात दिशा में बढ रहा हो। इन तीन दिनो में—दिन या रात में—आकाश में एक बादल भी दिखायी नही दिया था—इन्सान के पन्जे के बराबर बादल भी आकाश में दिखायी नही पडा था।

हर रोज सुबह को सागर में से दमकता सूरज निकलता और रात को एक प्रकाश-पुन्ज से आवृत सूर्य सागर मे डूब जाता था। नीले आकाश में दिन प्रति दिन एक-एक करके चमकीले तारे निकल आते और दिन निकलने तक उसी तरह

टिमटिमाते रहते थे जैसे घर पर शांत कुहेलिकामय रात्रि में झाँकते थे। इस दौरान जिस तरफ भी जहा तक भी दृष्टि जाती समुद्र विशाल वीचियो में लहराता दिखाई देता और चारों तरफ सफेद झाग ही दिखायी देते क्योंकि अब हम समुद्र-तट से मीलों दूर निकल आये थे।

मध्य डेक रिक्त होने के कारण हममें से कई मल्लाह जालियो में सोये। तूफान के दौरान सोने के लिए इससे बढ़िया जगह हो ही नही सकती। कहावत है, हवा चलेगी तो पालना हिलेगा" लेकिन जालियो के बारे में यह सही नही है क्योंकि यहा जाली नही जहाज हिलता है जबकि वे कड़ियो से ऊर्ध्वाधर लटकी रहती हैं।

इन बहत्तर घन्टो में हमारे पास करने के लिए कोई काम न था। हम चार घन्टे डेक पर रहते और चार घन्टे नीचे, खाते, सोते, और पहरा देते। पहरा देने के रोज के क्रम में कोई परिवर्तन आता तो यह कि अपनी बारी मे सुकान सँभालना पडता, और जब कभी कोई लिपटा हुआ पाल खुल जाता तो उसे फिर से लपेटने के लिए हमें यार्ड पर चढना पडता था या कभी किसी ढीली रस्सी को ठीक करना होता था। एक बार पहिये की रस्सी अलग हो गयी। यह स्थिति हमारे लिए घातक सिद्ध हो सकती थी लेकिन मुख्य मालिम ने बडी मुस्तैदी से काम लिया और स्थिति पर काबू पा लिया। बीस तारीख को भोर में झंझा विनाश के खेल खेल कर थक गयी और धीमी पड गयी। यहाँ तक कि सब मल्लाहो को नये पाल बाधने के लिए बुला लिया गया, यद्यपि झझा अब भी सामान्य झंझा से दुगुनी तेज थी। बडी कठिनाई और मेहनत से एक-एक करके पुराने पाल उतारे गये और पाल-कक्ष से तीन नये शिखरपाल मगवाये गये जो घर की ओर लौटते समय केपहार्न के आसपास की यात्रा के लिए बनवाये गये थे। खिलमाकुर की देख-रेख में इन पालों को बडी सावधानी से यार्डों पर चढा दिया गया और छोटा करके तान दिया गया। पालों को एक-एक करके चढ़ाया गया और इसमें पूरी सावधानी बरती गयी और बडी दिक्कत पेश आयी। इसके बाद दो अतिरिक्त निचले पाल भी इसी तरीके से यार्डों पर चढाये गये और लपेट दिये गये और एक तूफानी जिब भी ऊपर चढ़ा कर बूम से लपेट दी गयी।

बारह बजे हम इस काम से निवृत्त हुए। पाच घन्टे में इतना थका देने वाला काम मैंने पहले कभी नही किया था। मैं तो यहाँ तक कहूँगा कि जहाज का कोई

भी मल्लाह कभी भी प्रचन्ड उत्तरी पश्चिमी झंझा के दौरान पाँच बडे पालों को उतारने और चढाने का काम करने की इच्छा नही करेगा । रात के समय क्षितिज पर कुछ बादल दिखायी दिये और झंझा की गति कुछ मंद पडी और कुछ देर बाद आकाश में बादल घुडदौड मचाने लगे ।

तूफान की शुरूआत के पाचवें दिन हमने हर शिखरपाल की एक-एक गाठ ढीली कर दी और अग्र पाल, जिब और स्पैंकर को छोटा करके लगा दिया; लेकिन जहाज पर पूरे पाल हम आठ दिन के बाद ही तान सके, और इसके बाद हम तेजी से बढे क्योकि कप्तान जहाज को जल्दी ही अपने रास्ते पर डाल देना चाहता था । झंझा ने हमारे जहाज को सैंडविच द्वीपो की ओर आधी दूर ला पटका था ।

इन्च–इन्च करके हम पाल बढाते गये । अभी हमे झंझा का लिहाज करना पडता था क्योकि वह अभी बन्द नही हुई थी और हमें उस देशातर में पहुचने में कई दिन लग गये जहा तूफान शुरू हुआ था । आगामी आठ दिनो तक हम प्रतिवात दिशा मे बढ़ते रहे । तब हवा बदल गयी और परिवर्ती हो गयी । इसके बाद दक्षिणी-पूर्वी समीर चल पडा और हम अनुमान से कही अधिक तेजी से आगे बढ़े ।

शुक्रवार, चार दिसम्बर । बीस दिन की यात्रा के बाद आज हम सैन फ्रैंसिसको खाडी के मुहाने पर पहुचे ।

*　　　*　　　*

अध्याय–२६

हम मोटेरी पहुँचना चाहते थे लेकिन जब हम उसके उत्तर में थे तभी हवा बदल गयी इसलिए हम सैन फ्रैंसिसको चले आये । यह विशाल खाडी ३७°५८ अक्षाँश में स्थित है और इसकी खोज सर फ्रैंसिस ड्रेक ने की थी । ड्रेक ने इसे एक ऐसी शानदार खाडी बताया था (और उसका यह कहना सही था) जिसमें कई अच्छे बन्दरगाह हैं, पानी बहुत गहरा है और चारो ओर का प्रदेश उपजाऊ और वनो से युक्त है ।

खाडी के मुहाने से दक्षिण-पूर्व दिशा में लगभग तीस मील दूर एक ऊंची जगह है जिस पर दुर्ग बना है । दुर्ग के पीछे बन्दरगाह है जहां यात्री जहाज लंगर डालते हैं और उसके पास ही सैन फ्रैंसिसको मिशन है । पास ही एक नयी बस्ती की शुरूआत हुई है जिसके अधिकाँश लोग याकी कैलिफोर्नियाई हैं और यबी

व्यूना के नाम से प्रसिद्ध है। इस बस्ती का भविष्य उज्वल दिखाई पडता है।

हमारे अलावा खाडी मे एक ही जहाज था जो लंगर डाले खडा था। दो मस्तूलों वाले इस जहाज पर रुसी झंडा लगा था। वह रशन अमरीका के एसित्का से यहा चरबी और अनाज लेने आया था। खाडी के मिशन में अनाज बहुत बडी मात्रा मे पैदा होता है।

यहा पहुचने के अगले दिन इतवार को हम सद्भावना के नाते इस जहाज पर गये। यद्यपि यह जहाज "पिलग्रिम" से बडा नही था लेकिन इस पर पाच-छः अफसर थे और मल्लाहो की संख्या बीस और तीस के बीच थी, और वाकई ऐसे बेहूदे और गन्दे मल्लाह मैंने इससे पहले कभी नही देखे थे।

यद्यपि अभी मौसम खुशगवार था और हमने तिनकों के टोप, सादा कमीजें और सूती पतलूनें पहन रखी थी और नंगे पांव थे लेकिन रूसी जहाज का हर मल्लाह घुटनों तक आने वाले डबल सोल के ग्रीज से चिकनाये हुए बूट डाटे हुए था। इसके अलावा उनके शरीर पर मोटी ऊनी पतलून; फ्राक, वास्कट, पी-जाकेट, ऊनी टोपी आदि चीजें थी और गरमी के मौसम में भी वे इसी पहनावे में रहते थे।

इस जहाज के एक मल्लाह की पोशाक वजन में हमारे जहाज के आधे मल्लाहो की पोशाको के बराबर होगी। उनके चेहरे असम्यों जैसे थे और उन्हें देख कर ऐसा लगता था जैसे वे मल्लाहो के ठीक विलोम हो और उनका सारा क्रिया-व्यापार ग्रीज़ पर केंद्रित हो। वे ग्रीज़ पर जीवित थे, ग्रीज ही खाते थे और उसी को पीते थे, उसी के बीच सोते थे और उनके कपड़े ग्रीज में सने रहते थे।

किसी रूसी के लिए ग्रीज बहुत बडी नेमत है। चरबी के थैले जहाज के अन्दर जा रहे थे और वे लोग उनकी ओर ललचायी नजरो से देख रहे थे और उनका अफ़सर निगरानी पर न खडा होता तो शायद वे एक पूरा थैला चरबी चट कर जाते। ऐसा लगता था जैसे उनके रोम-रोम से, उनके बालो और चेहरों से, ग्रीज़ निकल रहा हो। शायद ग्रीज़ के इस अतिशय प्रयोग के कारण ही वे सर्दी और बारिश का मुकाबला बड़े आराम से कर पाते थे। अगर उन्हे उष्ण जलवायु वाले प्रदेश में जाना पडता तो वे स्कर्वी रोग से मर ही जाते।

जहाज की हालत भी मल्लाहो से अच्छी न थी। हर चीज पुराने और

असुविधाजनक रूप में थी, यार्डो पर कैंचियाँ लगी हुई थी, तीनपान के तारों के गट्ठर सारे डेको पर इधर-उधर बिखरे पड थे ।

शिखर मस्तूल, टापगलेंट मस्तूल और दुपेचा पाल बूम सफाई न होने के कारण काले पड गये थ और डेको की हालत ऐसी थी कि युद्धपात के मल्लाह को भी उल्टी हो जाय ।

रस ई नीच अगवाड में थी; और वही खाना पकाते समय निकलने वाली भाप और ग्रीज़ के बीच मल्लाह लोग रहते थ । यह जगह भट्टी की तरह गर्म और सुअर-खड्डी की तरह गन्दी थी । अगवाड में पाँच मिनट रुकना हमारे लिए दुश्वार हो गया और खुली हवा में आने पर हमने चैन की सास ली ।

हमने उनसे कुछ खरीद-फरोख्त की । उनके पास इडियन आदिवासियो की बहुत सी अजीब चीजें थी, जैसे: मालाए, चिडियो के पर, फर के बने जूते वगैरह । मैने एक बडा-सारा कम्बल खरीदा जो जानवरो की खालो को सुखाने के बाद उन्हें बढिया तरीके से सीकर बनाया गया था और जिसके बाहर की तरफ विभिन्न चिडियो की छाती के कामल पर लगाये गये थे । ये पर अलग अलग रगो के थे और इन्हे इस करीने से लगाया गया था कि कपड़े की सुन्दरता बहुत बढ़ गयी थी ।

हमारे आने के कुछ ही दिन बाद वर्षा ऋतु शुरू हो गयी । और तीन हफ्तो तक बिलकुल बिना रुके लगातार बारिश होती रही । व्यापार की दृष्टि से यह हमारे लिए अशुभ था क्योंकि इस बन्दरगाह पर खालें इकट्ठा करने का तरीका तट के अन्य बन्दरगाहो से भिन्न था ।

लगरगाह के निकट स्थित सैन फ्रैंसिसको मिशन यह व्यापार बिलकुल नही करता । लेकिन खाडी में गिरने वाली विशाल नदियो के किनारे स्थित सैन जोस और सैंटा क्लारा, जो लगरगाह से पन्द्रह से लेकर चालीस मील तक की दूरी पर थे, खालो के व्यापार की दृष्टि से पूरे कैलिफोर्निया प्रदेश में चोटी पर आते थे । इन मिशनो के पास बडी-बडी नावें थी जिन्हे इन्डियन आदिवासी खेते थे । एक नाव में एक बार में लगभग एक हजार खालें आ सकती थी । इम नावो में खालें भर-भर कर लंगरगाह में खडे जहाजो को भेजी जाती थी और बदले में दूसरा सामान जहाजो से खरीद कर मिशनो मे मगवा लिया जाता था ।

खालो और सामान की देख-रेख के लिए जहाज से कुछ मल्लाहों को नावों

में जाना-आना पडता है। अच्छे मौसम में तो मल्लाहो को इस आवागमन में आनन्द आ जाता है लेकिन आजकल के मौसम में जाते हुए उनकी नानी मरती थी, क्योकि इस आने-जाने मे तीन-चार दिन लग जाते है, नावें एकदम खुली होती है, बारिश थमने का नाम नही लेती, बारिश से बचाव का कोई साधन नही होता और ठन्डा खाना खाना पडता है।

हममें से दो मल्लाह ऐसी ही एक नाव में बैठ कर सैंटा क्लारा गये थे। उन्हे इस यात्रा में तीन दिन लग गये। तीनो दिन लगातार बारिश पडती रही और वे पलक तक न झपका सके। तीन लम्बी रातें उन्होने नाव में एक सिरे से दूसरे सिरे तक घूम-घूम कर बिता दी। जब वे जहाज पर लौटे तो थकान से चूर हो गये थे और उन्होने बारह घन्टे के लिए अपना पहरा नीचे लगवा लिया।

नावो में भर कर जो खालें लायी गयी थी वे भी पानी में भीग गयी थी और उन्हे इसी सूरत में नीचे नही रखा जा सकता था। लिहाजा हमारे लिए यह जरूरी हो गया कि जहाज के सभी हिस्सो मे अलगनिया तानें और उन पर खालें बाध दें ताकि जब बारिश रुके और धूप निकले या हवा चले तो वे सूख सकें। हमने जिब बूम के सिरे से अगले यार्ड के प्रत्येक सिरे तक और वहा से प्रमुख और क्रासजेक बार्ड के सिरे तक अलगनिया तान दी।

टापो के बीच में भी और मस्तूल शिखरो और जहाज के पिछले हिस्से की सभी रस्सियो मे अलगनिया तान दी गयीं और उन पर खालें बाध दी गयी। पटरी, आगे-पीछे, बेन्नन चर्खी, कैपसटेन, जहाज के बाजू और डेक पर जो भी जगह खाली थी...सुखाने की जरा भी गुन्जाइश होते ही हर तरफ गीली खालें ही नजर आती थी। हमारा जहाज क्या था गोया सिर से पैर तक खालो का एक ढेर था।

एक बरसात की शाम को कोई आठ बजे होगे कि मुझे अगले दिन सुबह चार बजे चार दिन की यात्रा के लिए तैयार हो जाने का आदेश मिला। मुझे इडियन आदिवासियो की नाव मे बैठ कर सैन जोस जाना था। मैंने अपने आयलक्लाथ के कपडे, बरसाती टोप और भारी वाले जूते तैयार रखे और चूंकि नाव भोर से पहले आने वाली थी इसलिए पहले ही कुछ नीद ले लेने के इरादे से मै जल्दी ही अपनी जाली में घुस गया। सुबह को सब लोगो की डेक पर बुलाहट होने तक मैं सोता रहा क्योकि मेरी खुशकिस्मती मे इन्डियन लोग या तो इरादतन या किसी गलतफहमी की वजह से रात को अकेले ही लौट गये थे और अब दूर-दूर तक

उनका नामोनिशान तक नही था । इस प्रकार मैं तीन-चार दिन की तबालत से बच गया ।

कुछ दिन बाद हममें से चार मल्लाह एजेन्ट को नाव मे सैंटा क्लारा ले गये । वहा उन्हे रात भर उस छोटी नाव मे भीगते रहना पडा जिसमें करवट लेने के लिए भी जगह न थी । एजेन्ट उनके लिए जगह का इन्तजाम किये बिना ही, उन्हे अपनी तकदीर के सहारे छोड कर, खुद मिशन चला गया । उसने उनके खाने तक के लिए कुछ नही भेजा । इसके बाद उन्हे तीस मील नाव खेनी पडी और जब वे जहाज पर वापस आये तो उनके शरीर इतने अकड गये थे कि उनसे सीढी पर नही चढ़ा गया ।

इस घटना के बाद एजेन्ट मल्लाहो की आख का काटा बन गया और इसके बाद किसी भी मल्लाह ने उसका तिनका तक नही तोडा । मल्लाह उसके हर काम में देर कर देते थे, उसे तरह-तरह से तंग करते थे और भग्नोर्मि में गोते खिला कर उसकी करनी का फल चखाते थे ।

जब हमने उपलब्ध खालो में से अधिकाश इकट्ठा कर ली तो लकडी और पानी भरने की तैयारी शुरू की, क्योकि इन दोनों के लिए सपूर्ण तट पर सैन फ्रैंसिसको सर्वश्रेष्ठ स्थान समझा जाता है ।

लगरगाह से लगभग दो लीग दूर पर एक छोटा-सा द्वीप था जिसे हम लोग "काष्ठ द्वीप" और स्पेनी लोग "इस्ला डे लास एजेल्स" कहते थे । यह द्वीप किनारे तक पेडों से घिरा था । हममें से दो केनेबेक मल्लाहो को हर रोज सुबह के समय इस द्वीप पर लकडी काटने के लिए भेजा जाने लगा । ये मल्लाह कुल्हाडी से लकडी काटने में अत्यत निपुण थे । कटी हुई लकडी को इकट्ठा करने के लिए इनके साथ दो लडके भी भेजे जाते थे । एक हफ्ते मे उन्होने इतनी लकडी काट ली जो हमें साल भर के लिए काफी होती । अब तीसरे मालिम को, मुझे और तीन और मल्लाहो को एक खुली बडी लाच में द्वीप से लकडिया भर कर जहाज़ पर लाने के लिए भेजा गया । इस लाच मे स्कूनर जैसी रस्सिया और पाल थे और इसे मिशन से किराये पर लिया गया था ।

हम जहाज से दोपहर के समय चले । लेकिन चूंकि हवा सामने की थी और समुद्र में ज्वार आ रहा था इसलिए हम दिन ढले बन्दरगाह मे पहुँच सके । यह बन्दरगाह द्वीप के दो पाइन्टों से मिल कर बना था और आने वाली नावें यही

टिका करती थीं। जैसे ही हम वहां पहुंचे वैसे ही एक जोरदार दक्षिणी-पूर्वी झंझा आ गयी। हम दिन भर इसकी आशका से ग्रस्त रहे थे। झझा के साथ ही बारिश भी आयी और मौसम की सर्दी बढ गयी। हम बडी कठिन परिस्थिति में फंस गये थे; खुली नाव, भारी बारिश और लम्बी रात; क्योंकि इस अक्षांश में शीत ऋतु में दिन में पन्द्रह घन्टे अधेरा रहता है।

हम अपने साथ एक छोटी सी स्किफ लाये थे। उसमें बैठकर हम तीर पर गये लेकिन वहाँ कोई सायेदार जगह न थी, हर जगह खुली थी और बारिश से बचाव संभव नही था। लिहाजा कुछ पत्तिया हटाने पर हमें उनके नीचे से कुछ लकडिया मिलीं, इसके अलावा कुछ झाड-झखाड और कुछ मुसेल (सीपी) लेकर हम लाच पर वापस आ गये और रात बिताने की यथासंभव आरामदेह तैयारियों में जुट गये। हमने प्रमुख पाल को खोल लिया। उससे नाव के पिछले हिस्से में एक साया-सा बना लिया, लकडी के गीले कुन्दो को बिस्तर बनाया और छः बजे के करीब जाकेट पहने-पहने ही सोने का उपक्रम करने लगे।

जब हमने देखा कि बारिश का पानी हमारे ऊपर आ रहा है और हमारी जाकेटें भीग चली हैं, और खुरदरे गाठदार लकडी के कुन्दे कोचों का काम नहीं दे सकते तो हम उठ खडे हुए। हम अपने साथ लोहे का एक तसला लाये थे। उसकी मदद से हमने पानी बाहर उलीचा और चारों तरफ पत्थर का एक बाड़ा सा बना लिया। कुछ लकडियों से हमने गीली छेपटें उतारी और तसले में आग जला ली। कुछ लकडिया सूखने के लिए आग के पास धर दी और आग के चारों ओर तख्तों की एक छत सी बना दी और उस आग को बनाये रखा। इसके बाद हम आग पर मुसेल भून-भून कर खाने लगे—इसलिए नही कि हम बेहद भूखे थे बल्कि इसलिए कि हमने सोचा, खाली से बेगार भली।

लेकिन अभी दस भी नही बजे थे और हमारे सामने लम्बी रात पडी थी। तभी किसी मल्लाह ने अपनी मकी जाकेट की जेब में से स्पेनी ताशो की एक जोडी निकाली। इसे हमने खुदा की देन समझा। मद्धम रोशनी के सहारे हम एक या दो बजे रात तक ताश खेलने में मशगूल रहे। इसके बाद हम वाकई थक गये और बारी-बारी से आग की निगरानी करने का निश्चय करके अपने कुन्दो पर सो गये।

सुबह के समय बारिश रुक गयी और हवा की ठन्डक बर्दाश्त करने काबिल हो गयी। अब हमारे लिए सोये रहना असभव हो गया और हम जाग कर भोर

की प्रतीक्षा करने लगे। पौ फटते ही हम किनारे पर गये और लकडियां ढोने की तैयारी में लग गये। मौसम की सर्दी के बारे में हमारा अनुमान गलत नहीं था क्योंकि जमीन पर सफेद पाला मौजूद था। कैलिफोर्निया में यह पाला हमने पहली बार देखा था। इसके अलावा हमें मीठे पानी के एकाध छोटे पोखरो पर बर्फ की एक मोटी तह जमी मिली। इस तरह के मौसम में, जब कि सूरज भी न निकला हो और भोर हुआ ही हो, हमें दोनो हाथो में लकडिया उठा कर स्किफ में रखने के लिए कमर-कमर पानी में चलना पडा।

तीसरा मालिम लाच पर ही रह गया था और दो लोग स्किफ में लकडिया रखने और संभालने के लिए उसी में रह गये थे इसलिए हस्बमामूल पानी में चल-कर लकडियाँ लाने का सारा काम हम दो लोगों पर आ पडा जो सबसे छोटे थे। जमीन पर पाला पडा था और हम नंगे पाँव, पतलून चढाये, बाहो मे लकडियाँ उठाये किनारे से नाव तक और नाव से किनारे तक पानी में आते जाते रहे। जब स्किफ भर गयी और लकडी लाच में रखने चली गयी तब अपने पावो को ठिठुरने से बचाने के लिए हम तट की कठोर रेत पर पूरी तेजी से दौड लगाते रहे।

दिन-भर हम इस काम पर जुटे रहे। दिन ढले जब लाच पूरी तरह भर गयी तो हमने लगर उठा दिया और हवा के रुख के विपरीत दिशा में खाडी से जहाज की ओर चल दिये। जैसे ही हम बृहद खाडी मे प्रविष्ट हुए हमने देखा आगे बडा जोरदार ज्वार है जो हमें समुद्र की ओर धकेल रहा है, घने कुहरे के कारण हमें अपना जहाज नही दिखायी दे रहा है और समीर इतना हल्का है कि हम उसकी मदद से ज्वार पर काबू नही पा सकते।

एडी–चोटी का जोर लगा कर हम अपनी नाव को समुद्र की ओर जाने से रोक सके। द्वीप की अनुवात दिशा के अन्तिम कोने पर पहुचने को हमने बहुत गनीमत समझा। यहा रुक कर हमने एक और रात बिताने का निश्चय किया। यह रात पहले से भी बुरी बीती क्योंकि हमारी नाव डटाडट भरी हुई थी और हम कुन्दो पर या लकडियो पर ही आराम कर सकते थे। अगले दिन सुबह को ज्वार उतर गया था और हवा बह निकली थी इसलिए हम फिर चल पडे और ग्यारह बजे तक जहाज पर पहुँच गये। अब लाच पर से उतार कर लकडियो को जहाज में रखने के लिए सब मल्लाहो को काम पर लगा दिया गया। इस काम में रात हो गयी।

लकडी भर लेने के बाद अगले दिन सुबह एक टोली को पानी लाने के लिए भेजा गया। हम चूंकि लकडी लाने में काफी थक चुके थे इसलिए हमें इस टोली में नही भेजा गया। इस टोली को तीन दिन लगे। इस बीच एक बार वे समुद्र में जाते-जाते बचे और उन्हे एक दिन द्वीप पर बिताना पडा। वहा एक मल्लाह ने एक हिरन का शिकार किया। सैन फ्रैंसिसको खाडी के द्वीपों और पहाडियो पर हिरन बहुत बडी सख्या में पाये जाते हैं।

जब हम लकडी या पानी लेने के लिए या नदियों के किनारे स्थित मिशनों में न जा कर जहाज पर ही रहते थे तब बडी मौज की छनती थी। हमारा जहाज किनारे से एक केबिल की दूरी पर था। उसे दक्षिणी-पूर्वी झन्झा से कोई खतरा नहीं था और किनारे पर पहुँचने के लिए हमें नाव वहुत कम खेनी पडती थी। चूंकि प्रायः हर समय बारिश होती रहती थी इसलिए फलका-मुख पर पालों के सायेबान बना दिये गये थे और सब मल्लाहो को नीचे बैठ कर ओकम तैयार करने का आदेश दे दिया गया था। हम प्रति दिन वहां बैटे-बैठे ओकम बनाते रहते थे। अन्त में हमारे पास इतना ओकम तैयार हो गया कि जहाज की और पूरी यात्रा की सभी जरूरतें पूरी की जा सकें। तब हमने वापसी की यात्रा के लिए सारी गैस्केट रस्सिया बनायी, कच्ची खालो की कतरनो से एक जोडा पहिए की रस्सियां तैयार की, एक बडी मात्रा में बटा सन तैयार किया और डे जहाज पर जो और काम किये जा सकते थे वे किये।

अब शीत ऋतु आधी बीत चली थी और अक्षाश ऊचा होने के कारण रातें बहुत लम्बी होने लगी थी इसलिए हम सुबह सात बजे से पहले काम शुरू नही कर पाते थे और शाम के पाँच बजे हमें छुट्टी मिल जाती थी। तभी हमें सपर भी मिलता था। इस तरह हमें तीन घन्टों की फुर्सत मिल जाती थी। तीन घन्टे बाद आठ घन्टिया बजती थी और पहरा लगा दिया जाता था।

चू कि अब हमें समुद्र-तट पर यात्रा करते एक साल हो चला था इसलिए अब वापसी की यात्रा के बारे में भी सोचना था। हमें मालूम था कि अन्तिम दो-तीन महीनो में हमें बहुत व्यस्त रहना होगा और अपना काम करने के लिए आज कल जैसा सुअवसर हमें कभी नही मिलेगा। इसलिए हमने शाम के समय वापसी की यात्रा, खासतौर से केपहार्न की यात्रा, के लिए कपडे तैयार करने शुरू कर दिये।

जब सपर खतम हो जाता और भोजन के टब साफ हो जाते तब धूम्रपान

आदि से निबट कर हम सब लोग अपनी-अपनी पेटियो पर बैठ जाते और कडी से लटकते लैंप की रोशनी में अपना-अपना काम करने में मशगूल हो जाते थे। कोई टोप बनाता तो कोई पतलून, कोई जाकेट बनाता तो कोई कुछ और कपडा। गरज यह कि खाली कोई नही बैठता था। लडके अपने कपड़े खुद अच्छी तरह नही सी सकते थे इसलिए वे मल्लाहो का कुछ काम कर दिया करते थे और बदले में मल्लाह उनके कपडे सी देते थे।

हम कई मल्लाहो ने मिल कर ट्वील का एक बडा टुकडा खरीदा और उसकी पतलूनें और जाकेटें बनाई। फिर उन पर कई बार अलसी का तेल लगाया। और उन्हे केपहार्न की यात्रा के लिए उठा कर रख दिया। मैंने तिरपाल का एक मोटा व मजबूत टोप ऐसा बनाया जो बैठने पर भी न पिचके और खराब मौसम में नीचे पहनने के लिए फ्लैनेल के कपडे बनाये।

जिनके पास साउथवेस्टर टोपिया नही थी उन्होने बना ली। कई मल्लाहो ने अपने लिए तिरपाल की जाकेटें और पतलूने बनायी और उनमें फ्लैनेल का अस्तर लगाया। सब लोग कमेरे हो गये थे और हर एक ने अपने लिए कुछ न कुछ जरूर बनाया क्योकि हम समझते थे कि ज्यो-ज्यो दिन बीतते जायेंगे और हम दक्षिण की ओर बढ़ते जायेंगे हम शाम को काम नही कर पायेंगे।

शुक्रवार, पच्चीस दिसम्बर। आज बडा दिन था। चू कि दिन भर बारिश होती रही और खालें नही आयी और न कोई खास काम ही करने के लिए था इसलिए कप्तान ने हमें छुट्टी दे दी (बोस्टन से चलने के बाद हमें पहली बार छुट्टी मिली थी)। डिनर में हमें किशमिश पडा हलवा भी दिया गया। रूसी ब्रिग पर प्राचीन रिवाज के मुताबिक ग्यारह दिन पहले बडे दिन का उत्सव मनाया जा चुका था। तब रूसी मल्लाहो ने खूब तोपें दागी थी और (जैसा कि हमारे मल्लाहो का कहना था) अगवाड में एक ड्रम जिन पी थी, चरबी का एक थैला चट कर गये थे और खाल का शोरवा बनाया था।

रविवार, सत्ताईस दिसम्बर। अब हम इस बन्दरगाह पर अपना व्यापार खत्म कर चुके थे और आज रविवार के दिन हमने अपना लगर उठाया और चल दिये। चलते समय हमने तोप से रूसी ब्रिग और दुर्ग को सलामी दी और जवाब में उन दोनो ने भी अपनी-अपनी तोपें दागी। जब हम चल रहे थे तो दुर्ग का कमांडर हमारे जहाज पर आया था। उसका नाम डान ग्वाडालूप विलेगो था और वह

अभी नौजवान ही था। पूरे कैलिफोर्निया प्रदेश में यह कमांडर अमरीकियो और अग्रेजों में सब से अधिक लोकप्रिय था। वह अग्रेजी बडे आराम से बोलता था और विदेशियो की सुविधा का ध्यान रखता था।

जब हम इस शानदार खाडी से चले तो हल्का पवन चल रहा था। ज्वार का रुख बाहर की ओर था जिसके कारण हमारे जहाज की रफ्तार चार या पाच नाट थी। दिन बडा सुहावना था। आज एक महीने बाद हमें धूप के दर्शन हुए थे। हम उस ऊची चट्टान के नीचे से निकले जिस पर दुर्ग बना था और खाडी के मध्यवर्ती भाग की ओर बढे। अब हमें दोनो ओर दूर तक चली गयी छोटी खाडियां दिखायी दे रही थी, सुन्दर वनो से युक्त विशाल द्वीप और कई छोटी-मोटी नदियो के मुहाने दिखायी दे रहे थे।

अगर किसी दिन केलिफोर्निया समृद्ध देश बनेगा तो यह खाडी उसका केन्द्र होगी। लकडी और पानी की प्रचुरता, तट की अतिशय उर्वरता, जलवायु की उत्तमता, नौपरिवहन की सुविधाएँ, सपूर्ण पच्छिमी अमरीकी तट पर सर्वश्रेष्ठ लंगरगाहो से युक्त होना—ये सारी विशेषताएं इसे असाधारण महत्व का स्थान बना सकती हैं। और इस बात ने बहुतो का ध्यान आकृष्ट किया है क्योंकि जहाँ हमने लंगर डाला था वहा "यर्बा व्यूना" की बस्ती में अधिकाँश लोग अमरीकी और अग्रेज हैं। इस बात की काफी सम्भावना है कि यह बस्ती इस तट का सब से महत्वपूर्ण व्यापारिक केन्द्र बन जायगी। आजकल भी यह बस्ती व्यापारियो, रूसी जहाजो और ह्वेल जहाजो से गेहूँ और फ्रिजोल फलियो का व्यापार कर रही थी।

अब ज्वार उतर चला था और हमने खाडी के मुहाने के निकट एक ऊची और सुन्दर ढालो वाली पहाडी के नीचे लंगर डाल दिया। इस पहाडी के ऊपर हजारों की संख्या में बारहसिंघे घूम-फिर रहे थे। वे एक क्षण हमारी ओर ताकते और जब हम उनकी मनोहर अदाओ और चाल को देखने के इरादे से जोर की आवाज करते तो वे डर कर भाग जाते थे।

आधी रात के समय ज्वार आया। हमने अपना लगर उठाया और खाडी के बाहर चल दिये। हमारे सिर पर तारो-भरा आकाश था—हफ्तो बाद हम ऐसा आकाश देख रहे थे। हल्का उत्तरी पवन बह रहा था जो यहां व्यापारी हवाओ की तरह स्थायी रूप से बहता है। पवन के साथ-साथ हम धीरे-धीरे आगे बढते

रहे और सोमवार को तीसरे पहर हमने पाइन्ट एनो न्यूवो को पार किया जो मोटेरी की खाडी का उत्तरी पाइन्ट है ।

रास्ते में हमारी बात "डायना" नामक ब्रिग से हुई । यह जहाज उत्तरी-पूर्वी तट पर स्थित सैंडविच द्वीपसमूह का था और एसितका से आ रहा था । पाइन्ट पर यह जहाज हमारे साथ ही था । लेकिन लगरगाह में हम से दो-एक घन्टे बाद पहुचा ।

मंगलवार को सुबह दस बजे हमारे जहाज ने मोटेरी में लगर डाला । कस्बा बिल्कुल वैसा ही था जैसा मैंने ग्यारह महीने पहले देखा था । उन दिनों मैं "पिलग्रिम" पर काम कर रहा था । कस्बे का सुन्दर और हरा भरा लान, दक्षिण में चीड के जंगल, उत्तर में छोटी नदी, सफेद प्लास्टर की दीवारों और लाल टाइलो की छतों वाले हरियाली मे छिटके हुए मकान, नीचा सफेद दुर्ग और उस पर लहराता मटमैला तिरगा झन्डा, दोपहर की परेड में नक्कारों और बिगुल की तीखी आवाज—इन सब चीजो ने वह दृश्य फिर से ताजा कर दिया जो हमने एक साल पहले इतनी खुशी के साथ देखा था जब हम एक लम्बी यात्रा करके आ रहे थे और सैंटा बारबरा में हुए सत्कार से हताश हो चुके थे । आज इस कस्बे को देख कर ऐसा लगा जैसे हम अपने घर ही आ गये हो ।

* * *

अध्याय-२७

बन्दरगाह में हमारे अलावा सिर्फ एक जहाज और था । वह रूस सरकार का बार्क था और एसितका से आया था । जहाज पर आठ तोपें थी (बाद में हमें पता चला कि उनमें से चार नकली थी) । उस जहाज से भूतपूर्व गवर्नर मेंजतलान जा रहे थे जहा से उन्हे वेरा क्रूज जाना था । उन्होने कहा कि अगर हम अपने पत्र अमरीका भेजना चाहे तो उन्हे दे दें । वे उन पत्रो को वेरा क्रूज में अमरीकी कोन्सल को दे देंगे और वहा से वे पत्र आसानी से अमरीका पहुँच जायेंगे । लिहाजा हमने उन्हे पत्रो का एक पैकिट दे दिया । शायद हर आदमी ने एकाध खत जरूर लिखा था । पत्रों में पहली जनवरी, उन्नीस सौ छत्तीस की तारीख डाली गयी । गवर्नर ने अपना वायदा निभाया और सभी पत्र मध्य मार्च से पहले बोस्टन पहुँच गये । इतने कम समय में इससे पहले कभी पत्रादि बोस्टन नही पहुचे थे ।

मालिकों के आदेशानुसार "पिलग्रिम" नवंबर के उत्तरार्द्ध तक हमारी राह देखता हुआ मोंटेरी में लंगर डाले पडा था। कप्तान फाकन हमें देखने के लिए अक्सर पहाडी पर जाता था। अन्त में उसने यह सोच कर हमारे जल्दी पहुँचने की आशा छोड दी कि झंझा ने हमारे जहाज को बहुत पीछे खदेड दिया होगा। दर असल, पाइन्ट कमेप्शन के पास हमने जिस झंझा का सामना किया था उसने सारे तट पर भीषण उत्पात किया था और सबसे शांत बन्दरगाहो में भी कई जहाज झंझा के वेग से किनारे मे जा टकराये थे। कप्तान फाकन को यह सब मालूम था।

सैन फ्रैंसिस्को में एक अंग्रेजी ब्रिग जहाज़ था। झंझा में उसे अपने दोनों लंगरो से हाथ धोना पडा; "रोजा" नामक जहाज सैन डियागो में झंझा द्वारा पक-तट पर खदेड दिया गया। मोंटेरी में खुद "पिलग्रिम" आगे के तीन लंगरों की मदद से झंझा के वेग को बडी मुश्किल से झेल पाया। दिसबर के शुरू में वह सैन डियागो की ओर चला गया था।

चूंकि इतवार हमें यहीं बिताना था और सपूर्ण तट पर मोंटेरी सबसे अच्छी जगह थी, और पिछले तीन महीनो में हमें कोई भी छुट्टी नही मिली थी इसलिए हर आदमी पार जाने के लिए उतावला हो उठा। इतवार की सुबह को जैसे ही डेको की धुलाई खत्म हुई और हम नाश्ते से निपटे वैसे ही जिन लोगो को छुट्टी मिल गयी थी उन्होने पार जाने के लिए हाथ मुंह धोना शुरू कर दिया। एक-एक बाल्टी मीठा पानी, एक साबुन की टिकिया और एक बडी मोटी तौलिया ले कर हम रगड-रगड कर एक-दूसरे का मैल छुटाने के लिए जहाज के अगवाड में चले गये।

इसके बाद सब लोगो ने सिर धोये। हमने पतलून के अलावा सब कपडे उतार दिये और एक ने दूसरे के सिर पर बाल्टी से धार बाघ कर पानी गिराया। इसके बाद कपडे पहनने की बारी आयी। जैसा कि आम तौर पर होता है हमारी पोशाक कुछ इस तरह की थी—पप शू, सफेद मोजे, ढीली सफेद सूती पतलून, नीली जाकेट, चेक की उजली कमीज, सर पर काला रूमाल, अच्छी तरह वार्निश किया गया टोप, बायी आख के पास थोडा सा काला फीता और जाकेट की बाहरी जेब से झाकता हुआ रेशमी रूमाल। सज-धज कर हमने गरदन के रूमाल के एक कोने में चार-पाच डालर बाघे और पार जाने के लिए "तैयार" हो गये।

एक नाव में बैठ कर हम पार पहुचे और वहा से कस्बे में गये। मैने गिरजा-

घर का पता लगाने की कोशिश की ताकि मैं वहां प्रार्थना होती देख सकूं लेकिन पता चला कि सवेरे ही एक मास हो चुकी है और अब कोई सर्विस नही होगी। लिहाजा हम कस्बे में घूमते-फिरते रहे। हमने अमरीकियों, अंग्रेजों और उन देसी लोगो से मुलाकात की जिनसे हम पिछली बार मिल चुके थे।

दोपहर के समय हमने घोडे लिए और वहाँ से करीब एक लीग दूर स्थित कार्मेल मिशन गये। वहाँ मेयर ने हमें डिनर दिया जिसमें बीफ, अंडे, फ्रिजोल, टार्टिला और शराब वगैरह चीजें थी। मेयर ने पैसे लेने मे इन्कार कर दिया क्योंकि उसके शब्दो में ये सब चीजें खुदा की देन थी लेकिन जब हमने वह रकम इनाम के तौर पर दी तो उसने सिर हिलाकर और अपने टोप को हाथ लगा कर उसे स्वीकार कर लिया।

इसके बाद हमने तेजी से अपने घोडे दौडा दिये और सारे प्रदेश को खूंदते हुए सूरज छिपते-छिपते हम कस्बे में आ गये। यहाँ हम अपने उन साथियो से मिले जो हमारे साथ घुडसवारी के लिए नही गये थे। उनका कहना था कि मल्लाह और घोड़े का उतना ही सम्बन्ध है जितना मछली और गुब्बारे का। वे शराब की एक दूकान में घुसे हुए थे और इन्डियनो व दोगलो की एक भीड मे घिरे जोर-जोर से शोर मचा रहे थे, और इस बात की काफी उम्मीद थी कि या तो उनके कपड़े उतार लिये जायेंगे, या उनके छुरा घोंप दिया जायगा। अथवा उन्हे रात-भर हवालात में बन्द कर दिया जायगा।

बडी मुश्किल से हम उन्हे घेर घार कर नाव तक लाये यद्यपि हमें उन स्पेनियों की कोप-दृष्टि और हस्तक्षेप का सामना करना पडा जो उन मल्लाहो को अपना शिकार बनाने की ठान चुके थे।

"डायना" के नाविक—ये निकाले हुए निकम्मे लोग थे जिन्हे ह्वेल जहाजों ने द्वीपो पर छोड दिया था, जरूरत पडने पर वहाँ से उन्हे इस जहाज पर नौकर रख लिया गया था—नशे में बुरी तरह धुत्त थे। उनकी एक टुकडी तट पर थी जिसमें उनका कप्तान भी था जो खुद भी दूसरे मल्लाहो की तरह ही नशे में धुत्त था। तीर पर पहुँच कर उन्होने कसम खाई कि अब उन्हें जहाज पर नही लौटना है और वे कस्बे की ओर लौट गये। वहाँ उनके कपडे उतार लिये गये और उनकी पिटाई हुई। इसके बाद उन्हे रात भर के लिए हवालात में बन्द कर दिया गया, जहाँ से अगले दिन कप्तान ने उन्हे छुडाया।

जैसाकि छुट्टी वाले दिन अक्सर होता है, हमारे जहाज के आवाड में भो नशे में धुत्त मल्लाह सारी रात गुल-गपाडा मचाते रहे। सुबह के समय उनकी आँख लगी ही थी कि काम का समय हो गया। दिन भर वे पानी में खालें ढोने के काम पर लगे रहे और सरदर्द के मारे उनका खडा रहना मुहाल हो गया। मल्लाह की जिंदगी के यही तो मजे हैं।

हमारे यहाँ रहने के दौरान कोई खास बात नहा हुई। हाँ, मुक्केबाजी का एक मुकाबला जरूर ऐसा हुआ जिसकी चर्चा हम अक्सर करते रहे।

कैप कोड का एक चौडी पीठ वाला और बडे सिर वाला सोलहवर्षीय लडका बोस्टन के स्कूल में पढने वाले एक दूसरे पतले और नाजुक से दिखायी देने वाले छोकरे को पूरी यात्रा मे सताता आया था। केपकोड का लडका ताकत, उम्र, जहाज के काम करने के अनुभव—सभी दृष्टियो से बोस्टन के लडके मे इक्कीस पड़ता था, क्योंकि बोस्टन के लडके का जहाज पर नौकरी करने का यह पहला मौका था। फिर भी इस लडके ने हिम्मत से काम लिया था, वह अपना काम लगन से सीख रहा था और दिन–ब दिन उसकी शक्ति व विश्वास में बढोतरी होती जा रही थी। अब उसने अपने उत्पीडक के विरुद्ध अपने अधिकारो के लिए लडना भी शुरू कर दिया था। लेकिन केपकोड वाला लडका उससे बहुत तगडा था और हर बार उसे पटक कर उस पर काबू पा लेता था।

एक दिन तीसरे पहर के समय, हमारे काम शुरू करने के पहले, दोनों लडको में झगडा हो गया और ज्यार्ज (बोस्टन वाला लडका) बोला कि नैट अगर कायदे से लडना चाहे तो मैं एक बार उससे निपट लेना चाहता हूँ। मुख्य मालिम ने हो-हल्ला सुना तो वह नीचे गया और उन दोनो को ऊपर डेक पर ले आया। उसने कहा या तो तुम दोनो हाथ मिला कर वादा करो कि यात्रा में फिर कभी नही लडेंगे या फिर एक बार लडकर निपट लो ताकि हमेशा के लिए हार-जीत का फैसला हो जाय। जब उसने देखा कि समझौते के लिए कोई भी तैयार नहीं है तो उसने सब लोगो को ऊपर बुलाया (चूंकि कप्तान पार चला गया था इसलिए जहाज पर वही सर्वेसर्वा था), मल्लाहो को उसने जहाज की कटि मे खडा किया और डेक पर एक लकीर खींच दी। इसके बाद उसने दोनो लडकों को लकीर के इधर उधर एक-दूसरे के आमने-सामने खडा किया। अन्त मे उसने उनकी कटि के बराबर ऊंची एक रस्सी तान दी और उन्हें आदेश दिया कि रस्सी से नीचे के हिस्से

पर प्रहार न करें। आदेश मिलते ही दोनो लडके लड़ाकू मुर्गों की तरह एक-दूसरे पर पिल पडे। केप कोड वाले लडके नैट ने दोनो मुट्ठियो से प्रहार करते हुए दूसरे लडके के चेहरे और बाहो से खून बहा दिया और जगह जगह नील डाल दिये। हमें हर मिनट ऐसा लगता था कि दूसरा लडका अब हारा, अब हारा, लेकिन वह जितना घायल होता जा रहा था उतना ही संभल कर लड रहा था। कई बार वह नीचे गिरा लेकिन फिर शेर की तरह दहाडते हुए दुबारा आ डटा और फिर उस पर इतनी मार पडी कि दर्शको के दिलो में उसके लिए हमदर्दी पैदा हो गयी। जब वह अन्तिम बार लकीर पर आकर खडा हुआ तो उसने कसम खायी कि जब तक उन दोनो में से एक मर ही नही जाता तब तक वह वही खडा लडता रहेगा। उसकी कमीज फट गयी थी, चेहरा खून और खरोंचो से भरा हुआ था और आँखो से आग बरस रही थी। अपना निश्चय घोषित करने के बाद वह क्रुद्ध बाघ सा नैट पर टूट पडा। इस पर मल्लाहो ने तरह-तरह की आवाजो से उसका जोश बढ़ाया।

नैट ने उसे पकड कर गिराना चाहा लेकिन मालिम ने उसे यह कहकर रोक दिया कि कुश्ती कायदे से होगी, धांधली नही चलेगी। तब नैट लकीर पर आ गया लेकिन उसका चेहरा फक पड गया था और उसके मुक्को में अब पहले से आधी जान भी न रह गयी थी। जाहिर था कि वह डर गया था। वह हमेशा से जीतता आयाथा, इस बार भी जीत जाता तो कोई बडी बात न होती, लेकिन हारने पर उसकी किरकिरी हो जाती। इसके विपरीत दूसरा लडका अपनी स्वतंत्रता और अपने सम्मान के लिए लड रहा था। वह नैट द्वारा सताया गया था, और अब उसने इसका अन्त करने का फैसला कर लिया था।

मुकाबला जल्दी ही खत्म हो गया। नैट ने हार कबूल कर ली। उस पर इतनी मार नही पडी थी लेकिन वह बहुत अधिक डर गया था और विमूढ हो उठा था। इसके बाद उसने जहाज पर कोई बदमाशी नही की। हम ज्यार्ज को अगवाड में ले गये। डेक के टब में उसे नहलाया, उसके साहस की सराहना की और इस घटना के बाद से उसे भी जहाज पर कुछ समझा जाने लगा। लड कर उसने अपना लोहा मनवा लिया था। मि० ब्राउन की योजना सफल रही क्योकि यात्रा के बाकी दिनो में दोनो लडको में फिर कभी लडाई नही हुई।

बुधवार, छः जनवरी। यात्री के रूप में अनेक स्पेनियों को ले कर हम मौंटेरी

से चल दिये और सैंटा बारबरा की ओर रुख किया। "डायना" खाडी के बाहर तक तो हमारे साथ ही आया लेकिन पाइन्ट पाइनोज पर हमसे अलग हो गया क्योकि उसे सैंडविच द्वीपसमूह जाना था। कई घन्टो तक तेज समीर चलता रहा और हमारा जहाज बहुत तेजी से चलता रहा, लेकिन, हमेशा की तरह, रात के समय यह बन्द हो गया और स्थल-समीर बहने लगा।

हमारे यात्रियो में एक नवयुवक भी था। एक हासोन्मुख कुलीन का ऐसा उत्तम उदाहरण मैंने इससे पहले कभी नही देखा था। उसे देखकर मुझे "गिल ब्लास" के कई पात्रो की याद हो आयी। वह इस प्रदेश के अभिजात वर्ग का सदस्य था, उसका परिवार शुद्ध स्पेनी रुधिर वाला था और एक जमाने में मैक्सिको में उसका दर्जा बहुत ऊचा था। उसका पिता उस प्रात का गवर्नर रह चुका था और प्रचुर संपत्ति एकत्र करने के बाद वह सैन डियागो में जा बसा था। वहां उसने एक विशाल भवन बनवाया, सामने आगन छोड दिया, बहुत सारे इन्डियन नौकर-चाकर रखे और उसकी गिनती प्रदेश के चोटी के लोगों में होने लगी। उसने अपने पुत्र को मैक्सिको भेजा जहाँ उसने सर्वश्रेष्ठ शिक्षा प्राप्त की और राजधानी के उच्चतम वर्ग में उसकी उठ-बैठ रही।

बदकिस्मती, फिजूलखर्ची, पैसे की कमी और किसी भी दर पर रुपया ब्याज पर ले लेने की आदत—इन सबके कारण जल्दी ही उनका सारा वैभव नष्ट हो गया और जब डान जुआन बंदिनी नामक यह युवक मैक्सिको से लौटा तो वह सुसंस्कृत तो था लेकिन साथ ही गरीब, घमन्डी और पदहीन भी था। अब उसे भी कुलीन परिवारों के अधिकाश नवयुवकों की भाति ह जीवन बिताना था—जब पैसा होता था तो ये लोग ऐयाश और फिजूल खर्च हो जाते थे; ये मन से महदा-कांक्षी और कर्म से नपुंसक थे; अक्सर दाने-दाने को मोहताज रहते थे लेकिन बाहर सामनी ठाठ से निकलते थे, गो गली के अधनगे इन्डियन छोकरे को भी इनकी गरीबी के बारे में मालूम रहता था, और कर्जमन्द होने के कारण हर छोटे मोटे व्यापारी और दूकानदार का सामना करते हुए इनकी नानी मरती थी।

वह पतला-दुबला और भव्य आकृति का नवयुवक था। वह शानदार अन्दाज से चलता था और नृत्य में निपुण था। वह कैसिलियन भाषा बड़े शुद्ध स्वर और उच्चारण में बोलता था और हर तरह से उच्च बंश से सबद्ध कुलीन लगता था। लेकिन उसकी हालत यह थी कि उसके पास किराये के पैसे नहो थे (मैंने बाद में

सुना कि उसे किराये के लिए पैसे भी किसी और ने दिये थे) और वह पूरी तरह हमारे एजेन्ट की महरबानी पर पल रहा था।

वह हर एक के प्रति विनम्रता दिखाता था, मल्लाहो से भी बातचीत करता था और उसने अपनी खिदमत करने वाले स्टीवार्ड को चार रीयल—मुझे यकीन है कि यह उसकी अन्तिम पूंजी थी—दिये। मुझे उस आदमी से हमदर्दी थी। मेरी यह हमदर्दी तब और बढ जाती थी जब मै उसे उसके सहयात्री और उस कस्बे के रहने वाले एक मोटे, भोडे, वाहयात और नक्शेबाज आदमी के साथ देखता था। यह आदमी एक याकी व्यापारी था और इसने सैन डियागो में खूब चादी बनायी थी। दरअसल इसी आदमी ने दीमक की तरह बदिनो परिवार का वैभव चाट लिया था और अब उनकी फिजूलखर्ची का फायदा उठाते हुए उन्हे गरीबी की चक्की में पीस रहा था और खुद मुटा रहा था। उसने उनकी जमीन गिरवी रख ली थी, उनकी पशु-सपत्ति खरीद ली थी और अब वह उनकी अन्तिम संपत्ति—हीरे-जवाहरात—हडपने में लगा हुआ था।

डान जुआन के साथ उसका एक सेवक भी था जो खुद भी "गिल ब्लास" के पात्रों की तरह था। वह अपने आपको डान जुआन का प्राइवेट सेक्रेटरी कहता था यद्यपि वह लिखने-पढ़ने का काम नही करता था और स्टीअरेज में बढई और सिलमाकुर के साथ रहता था। वह वाकई एक कैरेक्टर था; वह बहुत अच्छी तरह पढ़-लिख लेता था, अच्छी स्पेनिश बोल लेता था, सारी स्पेनिश अमरीका घूम चुका था और हर पहलू मे जी चुका था। वह लगभग हर तरह की नौकरी कर चुका था। ज्यादातर बडे लोगों के विश्वासपात्र नौकर के रूप में ही उसने नौकरी की थी।

मैने इस आदमी से अपना परिचय बढाया और जिन पाच हफ्तो में वह हमारे साथ रहा—क्योकि वह सैन डियागो तक ही हमारे साथ रहा—उनमें मैने उससे मेक्सिको के राजनीतिक दलो की हालत, समाज के विभिन्न वर्गों की आदतो और गति-विधि आदि के बारे में इतना ज्ञान प्राप्त कर लिया जितना शायद मैं किसी और से नही प्राप्त कर सकता था।

उसने मेरी स्पेनिश सुधारने में बडे परिश्रम से काम लिया, वह मुझे बातचीत के मुहावरे सिखाता था। उसने सामान्य प्रचलित शब्दों व संबोधनो आदि से भी मुझे परिचित कराया और समाचारपत्रों की एक फाइल पढ़ने को दी जिसमें सैंटा एना

के शानदार स्वागत-समारोह की सूचनाएं थीं जो विजय के उपरान्त टैम्पिको से अभी-अभी लौटा था। समाचार पत्रों में टैक्सास के लोगो के विरुद्ध उसके अभियान की तैयारियों की खबरें भी थी। हर जगह "सैंटा एना चिरजीवी हो" की गूंज रही थी और यह गूंज कैलिफोर्निया तक आ पहुंची थी यद्यपि अभी इस प्रदेश में डान जुआन बन्दिनी जैसे अनेक लोग थे जो उसकी सरकार के विरुद्ध थे और बस्तामेंते को सत्तासीन करने का षड्यंत्र कर रहे थे। उनका कहना था कि सैंटा एना मिशनो को तोड देने के पक्ष में हैं। फिर भी मुझे इसमें कोई सदेह नही था कि अगर डान जुआन को सैन डियागो का प्रशासक बना दिया जाय तो वह किसी भी राजवन्श और चर्च को अगीकार कर सकता है। इन अखबारों में मुझे अमरीका और इंग्लैंड की छुटपुट खबरें भी दिखायी दी लेकिन वे सब इतनी असबद्ध थी और पिछले डेढ वर्ष में क्या-कुछ हो चुका है इससे मैं इस कदर अनजान था कि मुझे उनसे सतोष नही हुआ। एक खबर के मुताबिक टैने अमरीका के मुख्या-न्यायाधीश हो गये थे (मैंने सोचा मार्शल का क्या हुआ, वे मर गये या अपदस्थ हो गये?), इसी तरह एक और खबर थी कि सर राबर्ट पील के स्थान पर अर्ल विस्काउट मेलबोर्न प्रधानमन्त्री बन गये हैं (इसका मतलब यह हुआ कि राबर्ट पील प्रधानमंत्री थे? और अर्ल ग्रे और ड्यूक आफ विलिंगटन का क्या हुआ? मैंने सोचा) इन महान संसदीय परिवर्तनो को फुर्सत से ही समझा जा सकता था।

मोटेरी से चलने के अगले दिन सुबह के समय हम पाइन्ट कसेप्शन पार कर रहे थे। दिन साफ था, धूप निकली हुई थी और पवन स्वछन्द गति से बह रहा था। दो महीने पहले हम इसी स्थान पर उत्तरी-पच्छिमी झझा में फस गये थे और हमारे जहाज पर पालो के नाम पर दो स्पेंसर पाल भर रह गये थे। आज स्थिति उसके ठीक प्रतिकूल थी।

"जहाज हो!" एक मल्लाह जोर से चीखा, "किस ओर है?" "वैदर बीम के पास सर।" और कुछ ही मिनटो में एक संपूर्ण पालों का दो मस्तूलो वाला जहाज पाइन्ट कसेप्शन के पास दिखायी दिया। हम रुक कर उसका इन्तजार करने लगे। वह घूमा तो हमने देखा उसके डेको पर काफी आदमी थे, उस पर चार तोपें रखी हुई थी और उसकी हर चीज युद्ध पोत जैसी थी। अगर कोई फर्क था तो यह कि उसमें बोसुन की सीटी नही सुन पड रही थी और छतरी में खड़े लोगो ने वर्दी नही पहन रखी थी।

एक नाटा और तगडा आदमी एक मोटी काली सी जाकेट पहने जाली में खडा था। उसके हाथ मे भौपू था। "जहाज हो !" "हलो !" "जहाज का नाम क्या है, कृपया ?" "एलर्ट।" "कहा से आये है कृपया ?" आदि आदि।

पता चला कि उस ब्रिग का नाम "कनवाय" है और वह सैंडविच द्वीपसमूह से आया है। वह किनारे के द्वीपो में फर वाले ऊदबिलावो का शिकार करता था। उसके शस्त्रसज्जित होने का कारण यह था कि वह एक अवैध व्यापारी था। इन द्वीपो में फर वाले ऊदबिलाव बहुतायत से होते थे और उनके बेशकीमत होने के कारण सरकार उनके शिकार का लाइसेंस देने के लिए भारी रकम मागती थी और हर शिकार किये गये या बाहर जाने वाले ऊदबिलाव पर उसने भारी शुल्क लगा दिया था।

इस जहाज के पास न कोई लाइसेंस था और न यह शुल्क ही चुकाता था। इसके मालिक लोग ओआहू मे रहते थे। इस तट पर उनके और कई जहाज व्यापार करते थे और यह जहाज चोरी-छिपे उन तक माल पहुँचाता था। हमारे कप्तान ने उससे कहा कि मेक्सिको के अधिकारियो से सावधान रहे, लेकिन उसने जवाब दिया कि सपूर्ण प्रशात महासागर में उसके जहाज के आकार का कोई सशस्त्र जहाज नही है। नि सन्देह यह वही जहाज था जो हमे कुछ महीने पहले सैंटा बारबरा के पास दिखायी दिया था।

ये जहाज अक्सर बन्दरगाह में लगर डाले बिना बरसो समुद्र-तट पर घूमते रहते थे। जरूरत पडने पर वे टापुओ से लकडी और पानी ले लेते थे, और कभी नयी साज-सज्जा के लिए ओआहू चले जाते थे।

रविवार, दस जनवरी। सैंटा बारबरा पहुँचे। बुधवार को दक्षिणी—पूर्वी झंझा के कारण हमे अपना लगर उठा कर समुद्र की ओर जाना पडा। अगले दिन फिर लंगरगार मे पहुँच कर हमने लङ्गर डाल दिया। बन्दरगाह में एकमात्र जहाज हमारा ही था। मोटेरी से चलने के बाद "पिलग्रिम" को यहा मे गुजरे कोई छ सप्ताह हो गये थे। इस खाडी में कई सप्ताह पहले उसे सूचना मिली थी कि हम सैन फ्रासिसको में सकुशल पहुच गये हैं।

पार में हमारे एजेन्ट की शादी की तैयारिया बडी धूम से हो रही थीं। उसका विवाह डान एन्टोनियो एन—की सब से छोटी लडकी दोना अनीता से होने वाला था। लड़की का पिता कस्बे में चोटी का आदमी माना जाता था और

कैलिफोर्निया में पहले परिवार का प्रमुख था। जहाज से कुछ रसद वगैरह लेकर हमारा स्टोवार्ड तीर पर गया और वहा तीन दिन तक पेस्ट्री और केक बनाने में लगा रहा।

शादी वाले दिन हम कप्तान को नाव में किनारे पर पहुँचाने गये। उसने हमें रात में आने का आदेश दिया और इस बात की इजाजत दी कि हम शादी के घर में जाकर स्पेनी नृत्य फेंडेंगो देख सकते हैं। जहाज पर लौटे तो हमने देखा कि सलामी देने की तैयारिया की जा रही हैं, तोपो को बाहर निकाल लिया गया था, हर तोप पर आदमियो को तैनात कर दिया गया, गोले भर दिये गये और मशाल जला ली गयी। फहराने के लिए सभी झन्डो को तैयार कर लिया गया। मैं अपनी तोप के पास डट गया और हम सब इस बात का इन्तजार करने लगे कि पार से इशारा पाते ही तोपें दाग दें।

दस बजे दुलहन अपनी बहन के साथ कनफेशनल पर गयी। उसके कपडे गहरे काले रङ्ग के थे। लगभग एक घन्टे बाद मिशन चर्च का सिहद्वार खुला, घन्टियाँ घनघना उठी और किनारे पर से कप्तान ने हमें इशारा दे दिया। उसी समय श्वेतवसना दुलहन अपने पति के साथ बाहर निकली, साथ में एक लम्बा जुलूस था।

जैसे ही दुलहन ने गिरजा से बाहर पैर रखा हमारी तोपों से निकल कर धुंए का एक छोटा सफेद बादल आसमान में मन्डराने लगा। धमाके की आवाज चारो ओर की पहाडियों और खाडी के पार गूंज उठी और एक ही क्षण में जहाज एक कोने से दूसरे तक झन्डों और पताकाओ से सज गया। पन्द्रह-पन्द्रह मिनट के बाद पच्चीस तोपें दागी गयी और जहाज दिन भर झन्डो और पताकाओं से सजा रहा।

सूर्यास्त के समय पच्चीस तोपो की सलामी फिर दी गयी और झन्डे उतार लिये गये। हम लोगो का ख्याल था कि हर पन्द्रह मिनट के बाद एक तोप की सलामी देना चार तोपो और पन्द्रह-बीस आदमियो वाले व्यापारी जहाज के लिए प्रशसा की बात है।

सपर के समय नाव की नाविक-टोली को बुलाया गया और हम नाव को खे कर किनारे ले गये। हमने अपनी वर्दी पहन रखी थी। नाव को तीर पर बाध कर हम फेंडेंगो देखने चल दिये। लडकी के पिता का मकान उस कस्बे के सब से

आलीशान मकानों में से था। सामने एक विशाल प्रांगण था जिसमें एक तम्बू तना था जिसमें कई सौ आदमी आ सकते थे।

नजदीक जाने पर हमने वायलिन और गिटार की परिचित ध्वनिया सुनी और तम्बू के अन्दर अनेक आदमियो की चहल-पहल दिखायी दी। अन्दर जाने पर हमने पाया कि कस्बे के प्रायः सभी लोग—मर्द, औरतें और बच्चे—वहा जुटे थे। भीड इतनी थी कि नाचने वालो को जगह नही मिल रही थी। यहाँ इस प्रकार के अवसरों पर निमन्त्रण पत्र नही भेजे जाते बल्कि हर एक से यह आशा की जाती है कि वह शामिल होगा, यद्यपि खास लोगो के स्वागत-सत्कार का प्रबन्ध घर में अलग से होता है।

बूढी औरतें पक्तियो में बैठी संगीत की धुन पर तालिया बजा रही थी और युवाओ का उत्साह बढा रही थी। सगीत प्राणवान था और उसमें हमें अपनी परिचित धुनें भी सुनायी पडी जो हमने स्पेनिश सगीत से ली हैं।

नृत्य से मुझे निराशा हुई। महिलाएँ सीधी खडी होती थी, उनके हाथ दोनों तरफ नीचे लटके थे और नजर सामने वाली जमीन पर जमी थी, पाव चल तो रहे थे लेकिन उनमें गति नही जान पडती थी, क्योकि उनका पहनावा ऐसा था कि उसके निचले हिस्से ने उनके पावो को पूरी तरह ढक रखा था और वह जमीन को छू रहा था। वे इतनी गम्भीर थी जैसे किसी धार्मिक कृत्य में भाग ले रही हों और उनके चेहरे शरीर के अन्य भागो की तरह ही उत्तेजनाहीन थे। सब मिला कर मैं जिन जोशीले और मनमोहक स्पेनी नृत्यो की आशा कर के आया था उनके स्थान पर मुझे कैलिफोर्निया का यह फैंडैंगो एकदम निर्जीव लगा (कम से कम जहा तक महिलाओ का सम्बन्ध था)।

इससे पुरुष अच्छे थे। उनके नाचने में लालित्य और उत्साह था। वे अपनी प्रायः अचल साथिनो के चारो ओर नाच रहे थे और उनके मुकाबले कही अच्छे लग रहे थे।

नृत्य के मामले में हमारे मित्र डान जुआन बंदिनी की बडी शोहरत थी। और वाकई जब शाम के समय वह मन्च पर आया तो मुझे मानना पडा कि ऐसा मनोहर नृत्य मैंने इससे पहले कभी नही देखा था। उसने बढिया सिली सफेद पतलून और गहरे रङ्ग की रेशमी जाकेट पहन रखी थी, अपने बहुत ही छोटे पैरो में वह सफेद मोजे और मोरक्को के पतले चमड़े के स्लीपर पहने हुए थे।

उसकी सूक्ष्म और भव्य आकृति नृत्य के लिए विशेष उपयुक्त थी, और वह हरिण के छौने की शान और मस्ती से पद-संचालन करता था। ऐसा लगता था कि नाचते-नाचते वह कभी-कभी जमीन पर पैर लगा कर एक झोटा-सा ले लेता है और फिर देर तक हवा में नाचता रहता है। साथ ही वह ज्यादा उछल-कूद भी नहीं दिखाता था बल्कि ऐसा लगता था जैसे वह नृत्य को अधिक गतिशील होने से रोक रहा हो। उसकी बडी तारीफ हुई और शाम के समय वह अनेक बार नाचा।

सपर के बाद वाल्ज शुरू हुआ जो कुछ कुलीन व्यक्तियो तक ही सीमित था और एक बडी उपलब्धि तथा अमीरी की निशानी समझा जाता था।

इसमे भी डान जुआन चमक उठा। वह दुलहन की बहन (दोना अंगस्तीना, जो एक सुन्दर तथा लोकप्रिय महिला थी) के साथ नाच रहा था। इस नृत्य की भगिमाएं सुन्दर मानी जाती हैं लेकिन मुझे तो वे बुरी ही लगी। यह नृत्य आधे घन्टे में ही समाप्त हो गया क्योकि और कोई नाचने के लिए आया ही नहीं। उनकी बार-बार और जोर-जोर से प्रशसा की गयी। वृद्ध नर-नारी उनकी तारीफ करते-करते कुर्सियो में से उछले पडते थे और युवक-युवती अपने टोप और रूमाल हिला कर प्रशंसा कर रहे थे। मुझे ऐसा लगा कि वाकई वाल्ज को मैक्सिको के इन निवासियो जैसे प्रशसको की ही जरूरत थी।

शाम का एक और मनोरजन यह रहा कि कोलोन या दूसरे इत्रो से भरे हुए अन्डे लोगो के सिरो पर फोडे गये। अन्डे के एक कोने में छेद कर उसे खाली कर लिया जाता है। अब इस छिलके में थोडा सा कोलोन भर कर छेद को बन्द कर दिया जाता है।

औरतें ऐसे अनेक अन्डे लेकर चुपचाप मर्दों के पीछे आ खडी होती है और जब मर्द उनकी ओर पीठ किये खडा होता है तो औरत अन्डा उसके सिर पर मार कर फोड देती है, और मजा आ जाता है। अब मर्द की बहादुरी इस बात मे है कि वह उस औरत को ढूंढ निकाले और उसके सिर पर अन्डा फोड कर अपना बदला चुकाये। लेकिन अगर कोई मुड कर पीछे देख ले तो अन्डा नही फोडा जा सकता।

मेरे सामने एक लम्बा डान खडा था। उसके गलमुच्छे घूसर और घने थे और वह शक्ल से कोई बडा आदमी नजर आता था। अचानक किसी ने मेरे कन्धे पर हल्के से हाथ रखा। घूम कर देखा तो दोना अगस्तीना खडी थी (हम

सब उसे जानते थे क्योंकि वह "एलर्ट" में मोटेरी तक गयी और आयी थी)। उसने होठो पर उगली रख कर मुझे चुप रहने और एक ओर हट जाने का संकेत किया। मैं कुछ पीछे हट गया और वह डान के पीछे जा खडी हुई। अब एक हाथ से उसने डान का बड़ा-सा टोप उतार फेंका और दूसरे हाथ से उसके सिर पर अन्डा फोडकर मेरे पीछे से रेंगती हुई एक मिन में गायब हो गयी।

डान धीरे-धीरे मुडा। कोलोन उसके चेहरे और कपडो पर से होकर बह रहा था और हर कोने मे ठहाकों की आवाज आ रही थी। वह कुछ देर व्यर्थं इधर उधर नजरें दौडाता रहा लेकिन अन्त में लोगों की हसती हुई आखें जिस दिशा में गडी थी उसमें देखने पर उसे अपने सुन्दर अपराधी का पता चल गया। वह उसकी चहेती नीस थी इसलिए डान को भी ठहाको में शामिल होना पडा।

इस तरह की अनेक चाल पट्टिया खेली गयी, युवक-युवतियो ने एक-दूसरे को छकाने में कमर नही छोडी और जब भी किसी की चाल पूरी उतरती तब उपस्थित लोगो का एक जोरदार ठहाका सुनायी पडता था।

मैंने यहा एक और नयी चीज देखी जिसे कुछ देर तो मैं समझ ही न पाया। एक सुन्दर जवान लडकी नाच रही थी कि एक नवयुवक उसके पीछे जाकर खडा हो गया और उसने अपना टोप युवती के सिर पर रख दिया। टोप ने लडकी की आखें ढक ली। टोप रख कर नवयुवक भीड में जा मिला। युवती कुछ देर तो टोप सिर पर ही लिये नाचती रही लेकिन फिर उसने उसे फेंक दिया। इस पर सब लोगो ने जोरदार ठहाका लगाया और उस नवयुवक को वहां आकर अपना टोप उठाना पडा।

जिन औरतों के सिरों पर टोप रखे जाते थे उनमें से कुछ तो उन्हे उसी समय फेंक देती थी और कुछ पूरे नृत्य में सिर पर रखा रहने देती थी, और अन्त में सिर से उतार कर हाथ मे ले लेती थी। अब टोप का मालिक आगे आता था और झुक कर अपना टोप ले लेता था।

यह झमेला मेरी समझ से बाहर था। बाद में मुझे बताया गया कि टोप देने का अर्थ है कि वह आदमी उस औरत को सराहना की दृष्टि से देखता है और शाम तक के लिये उसका साथी बनने और अन्त में उसे घर तक छोड आने की इच्छा रखता है। टोप फेंक देने का अर्थ है लड़की को प्रस्ताव नामन्जूर है और

उस दशा में उस आदमी को सब लोगो के ठहाको के बीच अपना टोप उठाने पर मजबूर होना पडता था ।

कई पुरुष महिलाओं को देखने का मौका दिये बिना ही उनके सिर पर टोप रख देते थे । तब बडा मजा आता था । ऐसा होने पर महिलाएं या तो उसी समय टोप को फेंक देती थी या उसे रख लेती थी । रख लेने पर जब उन्हें टोप के मालिक का पता चलता तो अक्सर महिलाओ का मज़ाक उडाया जाता था ।

कप्तान ने कोई दस बजे हमें बुलाया और हम इस नये तमाशे का मजा लूटने के कारण बडे उत्साह से जहाज की ओर चले । अब मल्लाहो में हमारा मर्तबा कुछ बढ़ गया क्योंकि हम उन्हे बहुत कुछ बता सकते थे । इसके अलावा फैंडेंगो के खत्म होने तक हमें हर रोज रात को वहाँ जाने की इजाजत थी और आम तौर पर फैंडेंगो तीन दिन तक चलता है ।

अगले दिन हममें से दो मल्लाहों को कस्बे में भेजा गया । लौटते समय हमने एक नजर पंडाल में डाली । साजिंदे अपनी-अपनी जगह बैठे साज बजा रहे थे और नीचे दरजे के कुछ लोग नृत्य कर रहे थे । फैंडेंगो में नृत्य तो थोडी-थोडी देर रुक कर दिन भर होता रहता है लेकिन असली भीड, जोश और बुद्धिजीवी लोग रात को ही आते हैं ।

अगली और अंतिम रात्रि को हम पहले की तरह किनारे पर और वहां से उत्सव में गये । अन्त में हम साजो की एकरस आवाज और उसका साथ निभाती हुई औरतो की गुनगुनाहट से और कैसानेट की जगह सगीत के साथ बजती हुई तालियो की आवाज़ से ऊब से गये ।

हमने देखा सब लोग हमें ध्यान से देख रहे हैं । उन्हें हमारी मल्लाहों की पोशाकें—और उन्हे साफ और बढिया बनाने में हमने बडी मेहनत की थी—काफी पसन्द आयी और सब लोगों ने हमें अमरीकी मल्लाहो का नृत्य दिखाने के लिए आमन्त्रिन किया । लेकिन जब हमारे कुछ देशवासियो ने स्पेनियो के अनुकरण पर कुछ भद्दी भगिमाएं पेश की तो हमने नृत्य न करना ही उचित समझा ।

हमारे एजेन्ट ने बोस्टन से हाल हो में मंगवाया गया तग, काला, स्वैलो-टेल वाला कोट पहन रखा था, और ऊची कडी टाई लगा रखी थी । ऐसा लगता था जैसे उसे चारो ओर से बन्द कर दिया गया हो और केवल उसके हाथ और पैर

आजाद हो। बंदिनी के नृत्य खत्म करने के बाद उसने नृत्य किया और हमारी राय में उसमें याकी लालित्य की कमी नही थी।

अंतिम रात्रि को नृत्य पूरे यौवन पर था और वह चरम सीमा पर पहुँचने ही वाला था कि कप्तान ने हमे जहाज पर जाने का आदेश दिया क्योकि उन दिनों दक्षिणी–पूर्वी झन्झा का मौसम चल रहा था और वह अधिक देर तक तीर पर रहने से डरता था। और उसका डर बिल्कुल ठीक था क्योकि उसी रात दक्षिणी पूर्वी झन्झा से बचने के लिए हमें अपना लगर उठा कर समुद्र की ओर जाना पडा। झन्झा बारह घन्टे रही और हमने अगले दिन फिर से लगरगाह में पहुच कर लगर डाल दिया।

* * *

अध्याय–२८

सोमवार, एक फरवरी। इक्कीस दिन बन्दरगाह में रहने के बाद हम सैन पेड्रो के लिए रवाना हो गये। अगले दिन हम सैन पेड्रो आ पहुचे।

यहाँ हमने "आयाकुचो" और "पिलग्रिम" को देखा जो हमें ग्यारह सितम्बर के बाद से दिखायी नही पडा था, यानी इस बात को लगभग पाँच महीने हो चले थे। इस पुराने ब्रिग के प्रति मेरे मन में नेह उमड आया जिसे मैंने सबसे पहले अपना घर बनाया था, जिस पर मैंने एक साल बिताया था और जिसने समुद्री जीवन की हलचल से पहले-पहल मेरा परिचय कराया था। मेरे दिमाग में उसके साथ अनेक स्मृतियाँ जुडी हुई थी—बोस्टन, वह घाट जिससे हम रवाना हुए थे, धारा में लगर डालना, विदा होना और इसी तरह की अनेक यादें मुझे एक दूसरी दुनिया से बाँधने वाले सूत्रो की तरह थी जिसमें मैं था और अभी और भी रहना था।

पहली रात को सपर के बाद मैं "पिलग्रिम" पर गया। मैंने देखा रसोइया रसोई में था और वह बाँसुरी बजा रहा था जो मैंने उसे विदाई के समय उपहार में दी थी। वह मुझसे बडे जोश से मिला, और तब मैं जहाज़ के अगवाड में जा पहुचा जहाँ मेरे पुराने संगी-साथी बदस्तूर थे, वे मुझे देखकर बडे खुश हुए, क्योकि जब हम नियत समय पर सैंटा बारबरा नही पहुचे तो उन्होंने हमें मरा हुआ समझ लिया था।

वे इससे पहले सैन डियागो गये थे, लगभग एक महीने सैन पेड्रो में पड़े रहे

थे और प्यूब्लो से उन्हे तीन हजार खालें मिली थी। अगले दिन हमने उनसे ये खालें ले ली जिससे हमारा जहाज भर गया और हम दोनो साथ साथ रवाना हो गये। "पिलग्रिम" दुबारा सैन फ्रँसिसको जा रहा था और हम सैन डियागो, जहां हम छः फरवरी को पहुँचे।

सैन डियागो पहुँच कर हमें हमेशा खुशी होती थी। एक तो यहाँ डिपो था, दूसरे यह छोटी सी शांत खाडी थी और तीसरे मैं यहाँ एक बार गर्मियाँ बिता चुका था इसलिए मुझे तो यह अपने घर की तरह ही लगती थी। बन्दरगाह में एक भी जहाज नही था। लगभग एक महीना पहले "रोजा" वाल्परेजो और कडीज के लिए तथा "कैटेलिना" कैलाओ के लिए रवाना हो चुके थे। हमने अपनी खालें जमा करा दी और चार दिन में प्रतिवात दिशा में चलने की तैयारियाँ करने लगे। हम इस बात से खुश थे कि इस बार हम अंतिम बार खालें लेने जा रहे हैं।

तीस हजार से अधिक खालें इकट्ठी की जा चुकी थी और उन्हे साफ करके गोदाम में रखवा दिया गया था। अब जो खालें हम लेने जा रहे थे और जो खालें "पिलग्रिम" सैन फ्रँसिसको से लाता उन्हे और इन तीस हजार खालो को मिला कर हमारा नौभार पूरा हो जाना था। हम वाकई अंतिम बार खालें लेने जा रहे हैं और अब हम घर लौटते समय ही सैन डियागो से गुजरेंगे। इस विचार से हमें ऐसा लगा मानो हमने यात्रा पूरी कर ली है और घर पहुंच गये हैं, यद्यपि हमें मालूम था कि अभी बोस्टन पहुँचने में हमें आधे साल से अधिक समय लगेगा।

जैसी कि मेरी आदत थी एक शाम मैंने भट्ठी के पास सैंडविच द्वीपसमूह के लोगो के साथ बितायी। लेकिन पहले की तरह इस बार मेरा समय हँसी ठठ्ठे में नही गुजरा। कहा जाता है कि दक्षिणी समुद्र के प्रत्येक द्वीप के लिए सबसे बडा अभिशाप वह आदमी रहा है जिसने सबसे पहले उसे खोजा था, और कोई भी आदमी जो इन हिस्सो से हमारे व्यापार के इतिहास से थोडा भी परिचित है समझ सकता है कि इस कथन में कितनी अधिक सचाई है। वह यह भी जानता है कि गोरे आदमी अपने दुर्गुणो के कारण यहा ऐसी-ऐसी बीमारिया लाये जिनका इन द्वीपवासियो से पहले नाम भी न सुना था और अब वही बीमारिया हर साल द्वीपवासी जनता का $\frac{1}{40}$ हिस्सा चाट जाती हैं।

मुझे लगा कि इन लोगो का सार्वनाश निकट है। अपने को सभ्य कहने वाली जाति का अभिशाप हर जगह उनका पीछा कर रहा था; और यहां, इस सुदूर

प्रात में भी दो युवा द्वीपवासी एक ऐसी बीमारी से दम तोड रहे थे जो निश्चित रूप से उन्होने मेक्सिको और अमरीका के ईसाइयो के सहवास से पायी थी। इन्हीं दोनो द्वीपवासियो को मैं कुछ दिन पहले [illegible] सक्रिय और स्वस्थ छोड कर गया था।

उनमें से एक अभी इतना बीमार नही था। वह अपना पाइप पीता हुआ घूम-घूम कर बात कर रहा था और प्रकृत रहने का प्रयत्न कर रहा था। लेकिन दूसरा आदमी जिसका नाम होप था और जो मेरा मित्र था इतना अधिक बीमार था के उससे अधिक भयावह [illegible] मैंने पहले कभी नही देखा था। उसकी आँखें गढ़ो में घुस गयी थी और बुझ सी गयी थी, गाल एकदम पिचक गये थे और हाथ चिडिया के पजो की तरह हो गये थे। रह-रहकर उसे जोरदार खाँसी उठती थी जिसने उसके सारे शरीर का ढेर कर दिया था। उसकी आवाज खोखली और अस्पष्ट हो गयी थी और हिलने डुलने की ताकत जवाब दे गयी थी। वह वहाँ चूल्हे के पास जमीन पर बिछी एक चटाई पर पडा था, न उसे दवा मिल रही थी न आराम, न कोई उसकी देखभाल करने वाला था न इमदाद। चन्द कनाका लोग वहा मौजूद थे जो उसकी मदद करना चाहते थे लेकिन कुछ कर नही पाते थे। उसकी हालत देख कर मेरा जी खराब हो गया और मुझे चक्कर आ गया। वह अभागा आदमी ! जिन चार महीनों में मैं सागर-तट पर रहा था उनमें हम लोग साथ साथ काम करते थे और साथ-साथ जगलो में या समुद्र में आते—जाते थे।

मुझे वाकई उससे लगाव हो गया था और मैं उसे वहा मौजूद अपने किसी भी देशवासी से अधिक समझने लगा था और मेरा यकीन है कि वक्त पडने पर वह मेरे लिए कुछ भी कर सकता था। जब मैं भट्ठी वाले हिस्से के अन्दर आया तो उसने अपना हाथ उठा कर धीमी आवाज में और उल्लासपूर्ण मुस्कुराहट के साथ मेरा स्वागत किया।

मैंने उसे भरसक दिलासा दी, और वायदा किया कि मैं कप्तान से उसे दवा देने के लिए कहूँगा। मैंने उसे बताया कि मेरे कहने से कप्तान जरूर उसकी सहायता करेगा क्योंकि वह पिछले कई बरसो से हमारी कम्पनी के लिए किनारे पर रह कर और कम्पनी के जहाजो में काम कर रहा है। इसके बाद मैं जहाज पर पहुँच कर अपनी जाली में लेट गया लेकिन मुझे नींद नही आयी।

कनाका लोगो ने यह समझ कर कि यह आदमी पढा-लिखा है और इसे दवाओं की जानकारी जरूर होगी मुझ पर जोर दिया था कि मैं बीमार को सावधानी पूर्वक देख लू , और जो कुछ मैंने देखा वह अविस्मरणीय है । हमारे जहाज पर एक मल्लाह था जो एक युद्धपोत पर बीस साल तक मल्लाह रह चुका था और जो पाप और यातना के हर रूप से परिचित था । बाद में मैं उसे होप को दिखाने के लिए ले गया । उसे देख कर वह बोला कि ऐसा वीभत्स दृश्य उसने पहले कभी नही देखा था, न कभी कल्पना ही की थी । उसके चेहरे से साफ पता चलता था कि वह भय से अभिभूत हो गया था, यद्यपि वह हमारे नाविको के अस्पतालो में एक से एक भयानक केस देख चुका था । रात भर मेरे दिमाग से उस अभागे आदमी का खयाल नही निकल सका । मैं उसकी नारकीय यातना और स्पष्ट, अपरिहार्य, दुखद अन्त के बारे में सोचता रहा ।

अगले दिन मैं कप्तान के पास गया और होप की हालत बयान कर उससे चल कर उसे देख लेने की प्रार्थना की ।"

"क्या कहा ? एक कनाका ।"

"जी हाँ, सर", मैंने कहा, "लेकिन बरसो तक वह हमारे जहाजो पर काम करता रहा है, और किनारे पर भी, और जहाजो पर भी, हमारे मालिको की नौकरी में रहा है ।"

"अच्छा, रहा होगा ?" कह कर कप्तान वहा से चल दिया ।

यही आदमी बाद में चल कर सुमात्रा के तट पर बुखार से पीडित हो कर मर गया; लेकिन ईश्वर की कृपा से उसकी इतनी तीमारदारी हुई जितनी वह किसी और की न कर पाया था । कप्तान की ओर से निराश होकर मैंने एक बूढ़े मल्लाह से बात की जो इन मामलो में बडा अनुभवी था । उसने मुझे एक दवा दी जो वह हमेशा अपने साथ रखता था । उसे लेकर मैं मालिम के पास गया और उसे सारी बात बता दी ।

दवाओ की पेटी सामान्यतया मि० ब्राउन के अधिकार में रहती थी । वह वैसे तो बडा जोशीला, और पहरे के मामले में सख्त, आदमी था लेकिन उसमें सदभावनाओ की कमी न थी और बीमार आदमी के प्रति उसका व्यवहार दया-पूर्ण होता था । उसने कहा कि होप को ठीक-ठीक मल्लाह तो नही कहा जा सकता लेकिन चूंकि जब वह बीमार पडा तब हमारी कम्पनी में नौकर था इसलिए

उसे दवाएं दी जा सकती हैं। उसने दवाएं लाकर मुझे दे दीं और रात में तीर पर जाने की इजाजत भी दे दी।

जब मैं दवाएं लेकर पार पहुँचा तो कनाका लोगों को जैसे मुंह-मांगी मुराद मिल गयी। प्यार और कृतज्ञता-ज्ञापन के जितने शब्द हो सकते हैं वे सब उन्होंने मुझ पर बरसा दिये, कहना चाहिए गंवा दिये (क्योंकि मैं उनमें से आधे भी नहीं समझ पाया) लेकिन अपने तरीके से उन्होंने अपने मनोभाव मुझ पर प्रकट कर दिये।

अभागा होप इस विचार से ही पनपने लगा कि कोई उसके लिए कुछ कर रहा है। मैं जानता था कि वह बच नहीं सकता, दवाएं भी उसे मरने से नहीं रोक सकतीं लेकिन फिर भी मैंने सोचा कि इसे बचाने के लिए जितनी दौड़-धूप की जाये कम है।

विरेचक कैलोमल लेने के लिए भट्ठी उपयुक्त स्थान नहीं है क्योंकि वहां आदमी हवा और खराब मौसम से नहीं बच सकता; लेकिन इसके सिवा और कोई चारा न था और तेज दवाओं के बिना उसकी जान नहीं बचायी जा सकती थी। खाने वाली और लगाने वाली दोनों ही तरह की दवाएं तेज थीं। मैंने उसे सर्दी और वर्षा से बचे रहने की सख्त हिदायत दी। मैंने उसे बता दिया था कि इसी तरीके से वह बच सकता है।

इसके बाद मैं दो बार उससे मिलने गया, लेकिन दोनों बार भागमभाग में ही रहा। उसने प्रतिज्ञा की कि हमारे वापस आने तक दवा बराबर खाता रहेगा। उसने जोर देकर कहा कि वह पहले से अच्छा है।

हम दस तारीख को सैन पेड्रो के लिए रवाना हुए। निस्तब्धता और सामने की हवा के कारण हमारी गति बहुत मन्द रही। चौथे दिन हमें एक कड़ी दक्षिणी-पूर्वी झंझा के कारण अपने शिखर पाल लपेटने पड़े। थाड़ें पर से हमें एक जहाज दिखायी दिया और कोई आधे घन्टे में हम "आयाकुचो" के बराबर में से होते हुए आगे निकल गये। हमने अपने शिखरपाल दुहरे बांध रखे थे और प्रतिवात दिशा में सैन डियागो की ओर बढ़ रहे थे।

चौथे दिन हम सैन डियागो पहुँचे और तीर से लगभग एक लीग दूर पुरानी जगह पर लंगर डाल दिया। बन्दरगाह में कोई और जहाज नहीं था। हमें यहाँ तीन हफ्ते या इससे भी अधिक रुकना था और इस तरह के वाहियात काम करने

थे जैसे ढलवां पहाड़ी पर से सामान ढुलकाना, नोकीले पत्थरों पर चलते हुए सिर पर खालें ढोना और शायद दक्षिणी-पूर्वी झंझा से बचने के लिए लंगर उठा कर समुद्र की ओर जाना।

यहां एकमात्र घर में सिर्फ एक आदमी था और उसे मैं कैलिफोर्नियाई रेंजर के नमूने के तौर पर हमेशा याद रखूंगा। वह फ़िलाडेल्फ़िया में दर्जी का काम करता था। शराब और कर्ज के चक्कर में पड़ कर उसने अपना काम बन्द कर दिया और शिकारियों की एक टुकड़ी में शामिल होकर पहले कोलम्बिया नदी के किनारे और फिर वहां से मौंटेरी चला आया और यहां कौड़ी-कौड़ी खर्च कर डालने के बाद वह प्यूब्लो डी लास एंजेल्स में आ बसा और फिर से दर्जी का काम करने लगा।

यहां आकर उसे जुए का चस्का लग गया और अन्त में वह लालच से दूर रह कर नैतिक जीवन बिताने के इरादे से सैन पेड्रो चला आया। यहां घर में कई हफ्तों तक वह उन आर्डरों का काम पूरा करता रहा जो वह अपने साथ लाया था। वह अक्सर अपने संकल्प की बात करता रहता था और अपने विगत जीवन की बातें बिना किसी परदे-परहेज के सुनाता था।

हमें यहां आये कुछ दिन हो चुके थे। एक दिन सुबह के समय वह हंसी-खुशी बढ़िया कपड़े पहने प्यूब्लो के लिए रवाना हुआ। वह अपने सिले हुए कपड़े देने, उनकी सिलाई वसूल करने और नये आर्डर लेने के इरादे से वहां गया था। अगला दिन आया, और एक हफ्ता, और फिर एक पखवाड़ा बीत गया लेकिन वह न आया। एक दिन हम पार गये थे कि हमें एक लम्बा आदमी दिखायी दिया जो हमारे दोस्त दर्जी से मिलता-जुलता था। वह एक इन्डियन आदिवासी की गाड़ी के पीछे से बाहर निकल रहा था जो अभी प्यूब्लों से आकर खड़ी ही हुई थी।

वह घर की ओर चला लेकिन हम उसका पीछा करने लगे। जब उसने देखा कि हम उसे पकड़ने ही वाले हैं तब वह रुक कर हमसे बात करने लगा। ऐसा दृश्य मैंने पहले कभी नहीं देखा था। वह नंगे पांव था, तन पर कच्चे चमड़े की पेटी से बन्धी एक पुरानी पतलून और मैली सूती कमीज थी और एक फटा हुआ इन्डियनों जैसा टोप; उसके पास फूटी कौड़ी भी नहीं थी और वह पूरी तरह खोखला हो चुका था। उसने सारी बात कबूल कर ली; वह मान गया कि वह

चारो खाने चित्त हो गया है, और अब एक हफ्ते तक तो उसे भयानक दुर्दिन देखने ही पड़ेंगे और महीनो तक वह एक बेकार चीज की तरह पडा रहेगा ।

संपूर्ण कैलिफोर्निया-तट पर जो अमरीकी और अंग्रेज जा पहुँचे हैं उनमें से आधे लोगो का जीवन इसी तरह का है । इसी तरह का एक आदमी रसेल था । जिन दिनो मैं सैन डियागो में था उन दिनो वह खालो के घर का अध्यक्ष था लेकिन बाद में उसे अपने दुराचरण के कारण नौकरी से निकाल दिया गया । उसने अपना धन और गोदाम का लगभग सारा माल तीर पर रहने वाले दोगले लोगो पर खर्च कर दिया और जब उसे नौकरी से निकाल दिया गया तो वह दुर्ग में चला गया और वहाँ निराश "लोफर" की जिन्दगी बिताने लगा । अन्त में एक दिन अपनी किसी बदमाशी के कारण उसे पहाडियो पर बनी जेल में जाना पडा—उसके पीछे-पीछे घुडसवार, कुत्ते और हो-हुल्लड करते इन्डियन आदिवासी चल रहे थे ।

एक रात को वह खालो के उस घर में हमारे कमरे में घुस आया । उसका दम फूल रहा था, रंग एकदम पीला पड गया था, कपडे कीचड में सने थे और जगह-जगह फटे हुए थे, बल्कि उसे नग्नप्राय कहना ज्यादा ठीक होगा । उसने बताया कि तीन दिनो से न उसने कुछ खाया था और न सोया था, यह कह कर वह रोटी का एक टुकडा माँगने लगा । उस महान मिस्टर रसेल की यह हालत हो गयी थी जो एक महीना पहले "डान थामस", "कैप्टेन डी ला प्लाया", "मास्ट्रो डी ला कैसा", और न जाने क्या क्या था । आज वह कनाका लोगों से रोटी और शरण माग रहा था । कुछ दिन वह हमारे साथ रहा, किन्तु अन्त में उसने पुलिस को आत्म-समर्पण कर दिया और जेल चला गया ।

इसी तरह का एक और मजेदार नमूना हमने सैन फ्रैंसिसको में देखा । यह लडका पहले पहल "कैलिफार्निया" जहाज पर नौकर होकर आया था । तभी यह नौकरी छोड कर भाग गया और जुआ खेलने व घोडों की चोरी जैसे कामों में मशगूल हो गया । उसका कार्य-क्षेत्र सैन फ्रैंसिसको तक था और जिन दिनो हम बन्दरगाह में थे उन दिनो वह वहा से पास ही एक जगह रह रहा था ।

एक दिन सुबह के समय हम नाव में बैठ कर पार गये तो वह हमें घाट पर दिखायी पडा । उसने कैलिफोर्निया फैशन के कपडे—चौडा टोप, उडते हुए रंग वाली मखमली पतलून और कंधो पर लिपटा हुआ कंबल का लबादा—पहन रखे

थे। वह हमसे बोला—मुझे नाव में ले चलो मैं जरा तुम्हारे कप्तान से कुछ गप-सटाका करना चाहता हूँ।

हमें इस बात मे पूरा सदेह था कि उसका सत्कार किया जायगा, लेकिन वह समझता था कि वह किसी से भी दोस्ती गाठ सकता है। हम उसे नाव में ले गये, और उसे गली में छोड कर अपने-अपने काम पर जुट गये। हाँ हमारी आँख छतरी पर लगी रही जहाँ कप्तान चहलकदमी कर रहा था।

लडका बड़े ही इतमीनान से उसके पास गया और टोप उतार कर कप्तान को गुड आफ्टर नून किया। कप्तान टी—ने मुड कर उसे सिर से पैर तक देखा और फिर बडे ही उत्साहरहित स्वर मे कहा, "हलो! आप क्या चीज हैं?" यह कह-कर वह फिर चहलकदमी करने लगा। जाहिर था कि कप्तान उसे मुंह नही लगाना चाहता था, और जहाज के विभिन्न भागो पर काम करते हुए मल्लाहों तक यह मजाक आँखो ही आखो में पहुच गया।

कप्तान की ओर से निराश होकर उसने मालिम की ओर मुंह किया जो अग-वाड में किसी काम का पर्यवेक्षण कर रहा था। उसने मालिम से गप-सटाका शुरू किया, लेकिन उसकी दाल गली नही। मालिम देख चुका था कि कप्तान ने उसका किस प्रकार स्वागत किया था और वह परित्यक्त आदमी को मुंह नही लगाना चाहता था। दूसरा मालिम ऊपर था और तीसरा मालिम और मैं क्वार्टर बोट पर रोगन कर रहे थे, इसलिए वह हमारे पास ही आया। लेकिन हमने एक-दूसरे को देखा और अफसर काम में इस तरह मशगूल हो गया कि उससे एक लफ्ज भी नही बोला। हमसे निराश होकर वह एक-एक करके दूसरे मल्लाहों के पास गया लेकिन मजाक उसके आगे-आगे चल रहा था और उसने सभी लोगो को काम में लगा हुआ और चुप-चुप पाया।

कुछ मिनट बाद जब हमारी नजर पटरी की ओर उठी तो हमने उसे रसोई के दरवाजे पर रसोइए से बातें करते पाया। यह नीचे गिरने की हद थी। वह सबसे बड़े आदमी से मिलने के स्वप्न लेकर आया था और अब अश्वेत रसोइए से मिल रहा था। रात को सपर के समय उसे आशा थी कि शायद अफसरों के साथ उसे भी नीचे बुलाया, जाय इसलिए वह कुछ देर कटि में खडा रहा लेकिन वे एक-एक करके नीचे चले गये और उसे पूछा तक नही। अब उसने सोचा कि शायद बढ़ई और सिलमाकुर के साथ उसे बुलाया जाय और, जब तक अन्तिम मल्लाह उसे

बिना बुलाये यही चला गया, वह गलियारे में चहलकदमी करता रहा।

हमने सोचा अब इसका काफी मजा ले लिया है इसलिए उस पर तरस खा कर हमने उसे अगवाड में बुला कर चाय और गोश्त में हिस्सा दिया। वह भूखा था और अंधेरा घना होता जा रहा था इसलिए उसने सोचा अब चाल चलना बेकार है। यह सोचकर, वह अगवाड में आ गया और अपनी झूठी शान उतार कर आम मल्लाह की तरह हसी-मजाक में हिस्सा लेने लगा, क्योकि मल्लाहों में हंसी-मजाक झेलना परम आवश्यक है।

उसने हमें इस प्रदेश मे किये गये अपने कारनामे—बदमाशी के और इसी तरह के—सुनाये, और वाकई वह एक पुरमजाक आदमी था। वह एक तेज-तर्रार और सिद्धातहीन आदमी था और इस प्रदेश में होने वाली ज्यादातर बदमाशियों की जड वही था। उसने हमें इस प्रदेश के तौर-तरीको के बारे में बहुत-सी मजेदार बातें बतायी।

शनिवार, तेरह फरवरी। आधी रात के समय हमें एक प्रचंड उत्तरी–पूर्वी झन्झा से बचने के लिए लंगर उठा कर जहाज को समुद्र की ओर ले जाने का आदेश दिया गया। सैन पेड्रो की यह वाहियात खाडी दक्षिणी पश्चिमी झन्झा के अलावा अन्य सभी झन्झाओं की दृष्टि से खतरनाक है, और दक्षिणी–पश्चिमी झंझा तो पचासों साल में एकाध बार ही आती है। झंझा से बचने के लिए हमने कैटेलिना द्वीप की शरण ली जहाँ तीन दिन रुक कर हम फिर लंगरगाह में आ गये।

मंगलवार, तेईस फरवरी। आज तीसरे पहर हमें तीर से एक संकेत मिला। नाव में बैठ कर पार दूर से हमने देखा कि हमारे एजेंट का क्लर्क खडा है। वह प्यूब्लो गया था। वह घाट के पास खडा हमारा इन्तजार कर रहा था और उसकी बगल में एक पैकेट था जिस पर खाकी कागज चढा हुआ था और जिसे बडी सावधानी से बाधा गया था।

हमारे किनारे पर पहुँचते ही उसने बताया कि सैंटा बारबरा से एक शुभ समाचार प्राप्त हुआ है। हममें से एक मल्लाह बोल उठा—"क्या समाचार है? क्या उस बदमाश एजेन्ट का बेडा गर्क हो गया? क्या उसके प्राण–पखेरु उड गये?"

"नही इससे भी बडी खुशखबरी हे। "कैलिफोर्निया" आ पहुचा है। खत, अखबार, समाचार और शायद—दोस्तों! चलो जहाज पर!"

हम विस्मित हो गये, और फिर शरीफ लोगो की तरह उसे नाव में बिठा कर जहाज की ओर चले क्योकि उस पैकेट को कप्तान के अलावा कोई नही खोल सकता था। जब हम जहाज पर पहुँचे तो क्लर्क ने वह पैकेट हाथ मे लिया और तफरेल पर झुके मालिम को पुकार कर कहा "कैलिफोर्निया आ गया है और बोस्टन से खबरें आयी हैं।"

"हुर्रा!" मालिम ने कहा और जहाज के सभी लोगो को सुनाने की गरज से चिल्ला कर कहा, "कैलिफोर्निया आ गया है और बोस्टन से खबरें आयी हैं!"

पल भर में सारे जहाज मे खलबली सी मच गयी। जो आदमी इन हालात में रहा नही है वह इसे समझ ही नही सकता। एक क्षण के लिए अनुशासन में ढील पड गयी।

"क्या बात है मि० ब्राउन?" रसोइए ने रसोई से अपना सिर बाहर निकालते हुए पूछा—'क्या कैलिफोर्निया आ गया है?"

"हा, हाँ, अंधेरे के फरिश्ते! और तेरे लिए भी प्रेमनगर से एक पाती आयी है।"

पैकिट नीचे केबिन में भेज दिया गया और सब लोग नतीजे की राह देखने लगे। चूंकि नीचे से कोई जवाब नही आया इसलिए अब अफसरो को लगा कि उन्होने कुछ बचकाना-सी हरकत की है, और उन्होने मल्लाहो को अपने-अपने काम पर जाने का आदेश दिया। अब फिर वही कठोर अनुशासन कायम हो गया जो डेक पर काम करते हुए मल्लाहो को एक-दूसरे से बातचीत नही करने देता। लिहाजा जब स्टीवार्ड मल्लाहो के पत्र लेकर उनके पास आया तो हर आदमी ने अपने पत्र लिये, नीचे जाकर उन्हे अपनी पेटी में रख दिया और फिर फौरन ऊपर आ गया। जब तक हमने रात के लिए डेको को साफ नही कर दिया तब तक एक भी पत्र नही पढा गया।

मल्लाहो की, बल्कि कहना चाहिए जहाज के जीवन की, यह विशेषता है कि हर आदमी मर्दानगी के नशे में रहता है। अक्सर यह मर्दानगी भावना-शून्यता, और यहा तक कि क्रूरता भी, लगती है। इसी के कारण अगर किसी आदमी की गरदन टूटते-टूटते बच गयी है तो इस बात का जहाज पर मजाक उडाया जाता है, खरोंच या घाव की चिन्ता करना मर्दानगी की तौहीन मानी जाती है, दया और चिन्ता का भाव दर्शाना बहनापा दिखाना माना जाता है और उस मर्द की शान

के खिलाफ समझा जाता है जो ऐसी खतरनाक जिन्दगी झेलने के लिए निकल पडा है। इसी के कारण जहाज पर बीमारो की ठीक से तीमारदारी नही की जाती और किनारे पर आकर नाविक कैसा ही व्यवहार करे, यह सच है कि जहाज पर बीमार आदमी के प्रति न तो किसी की सहानुभूति होती है और न कोई उसकी चिन्ता ही करता है।

जहाज पर आदमी के लिए कोई भी चीज विशिष्ट या पवित्र नहीं होती, क्योकि वहा उस आदमी का उल्लेख गर्व से किया जाता है जिसमें किसी प्रकार की उदात्ततर भावनाए न हो। हयादार आदमी के लिए जहाज पर एक घन्टा जिन्दा रहना मुश्किल है। अगर उसकी खाल बैल की तरह मोटी नही है तो लोग उसे कच्चा ही खा जायेंगे। लिहाजा एक क्षण के लिए तो हमें घर-बार और बन्धु-बाधवो की याद आयी और तब समुद्री जीवन का वही औपचारिक क्रम प्रारम्भ हो गया। जो लोग किसी समाचार-विशेष की उत्कठा से प्रतीक्षा कर रहे थे उनका मजाक उडाया गया और लोगो की सर्वथा निजी और अंतरग बातो को फूहड मजाकों और निर्मम व्यंगो की बौछार के लिए सर्वजन सुलभ बना दिया गया था, और कोई भी किसी बात का बुरा नही मान सकता था।

खत पढने से पहले सपर लेना भी जरूरी था। अंत में जब लोगो ने अपने-अपने खत निकाले तो सब लोग चिट्ठी वाले आदमी के गिर्द जमा हो गये और उससे खत को जोर से पढने और न छिपाने का इसरार करने लगे। अगर कोई आदमी अपने-आप पढ़ता तो दूसरे कहते "बेईमानी मत करो, हमसे छिपाओ मत।" मैंने अपना खत निकाला और सिलमाकुर की बर्थ पर चला गया जहा मैं बिना किसी हस्तक्षेप के उसे पढ सकता था। इस पर अगस्त की तारीख पडी हुई थी, यानी यह मेरे घर से चलने के एक साल बाद लिखा गया था। घर पर सब सकुशल थे और कोई बडा परिवर्तन नही हुआ था।

इस तरह एक साल के बारे में तो मै निश्चित हुआ। लेकिन खत तो छः महीने पहले लिखा गया था, और अगला एक साल कैसे गुजरेगा—इसके बारे में क्या कहा जा सकता है—? मैंने सोचा। जो लोग घर से दूर होते हैं वे सोचते हैं घर पर जरूर कोई बडा परिवर्तन हुआ होगा, जबकि घर पर रहने वालो को अपना जीवन एकरस और घटनाशून्य लगता है।

घर के खयालो में खोया होने के बावजूद मै स्टीग्ररेज के दृश्य में रस लेने से

अपने को न रोक पाया। बढई की शादी बोस्टन छोडने के कुछ ही पहले हुई थी और वह यात्रा में बराबर अपनी बीवी की बातें करता रहता था, और जैसा कि जहाज पर शादीशुदा लोगों के साथ होता है उसे तरह-तरह की बातें चुपचाप सुननी पड़ती थी, लेकिन चूंकि उसे पहले ही जहाज से अपनी बीबी का पत्र मिलने का पूरा निश्चय था इसलिए वह निराश नही हुआ था।

"कैलिफोर्निया" आया, पैकेट जहाज पर लाया गया, सबसे अधिक उत्साह बढई में ही था, लेकिन जब स्टीवार्ड पत्र लेकर आया तब उसके नाम का कोई पत्र नही था। कप्तान ने एक बार फिर से देखा लेकिन कही कोई गलती नही हुई थी, गरीब "चिप्स" से सपर नही खाया गया। उसका कलेजा मुंह को आ रहा था। सिलमाकुर ने उसे तसल्ली देते हुए कहा कि तू तो बडा मूर्ख है जो किसी औरत की बेटी के लिए जी दिये डाल रहा है। मैंने तो तुझे पहले ही जता दिया था कि अब तेरी बीबी न कभी तुझे मिलेगी और न पत्र ही लिखेगी।

"आह", चिप्स ने कहा, "तुम क्या जानो बीबी किसे कहते हैं, और —"

"क्या ? मैं नही जानता ?" सिलमाकुर ने कहा, और इसके बाद उसने सैकडों बार सुनायी कहानी फिर से सुनानी शुरू कर दी—किस तरह चार वर्षो तक केप हार्न के आस-पास सैर-तफरीह करके वह "कस्टेलेशन" नामक बजरे से न्यूयार्क के तट पर उतरा—उस समय वेतन के रूप में मिले पाँच सौ से अधिक डालर उसके पास थे—अब उसने शादी की और एक चौमंजिला इमारत में दो कमरे लेकर रहने लगा—उसने कमरो को फर्नीचर से सुसज्जित किया (वह फर्नीचर का भी पूरा हिसाब बताया करता था जिसमें एक दर्जन कुर्सियाँ भी शामिल थी—फर्नीचर का यह ब्यौरा देते समय वह प्राय: अतिशयोक्ति से काम लेता था)—इसके बाद वह अपनी बीबी को आधा वेतन देने की मूर्खता करके फिर से अपने काम पर चला गया—लौट कर देखा तो बीबी कभी की "फुर्र" हो गयी थी और उस पर लोगो का कर्ज छोड गयी थी—उसे चुकाने में फर्नीचर गया, उसका आधा वेतन गया, बीवर की खाल का बढिया टोप और लिनन की कमीजें—सभी कुछ चला गया। उसके बाद उसने आज तक न तो अपनी बीबी को देखा, न उसके बारे में कोई खबर ही मिली और न उसे इसकी इच्छा ही है।

इसके बाद नारी-निन्दा का दौर शुरू हुआ—

"जाने भी दो चिप्स! मर्द की तरह हंस कर इसे झेलो और कुछ गरमागरम

माल उडाओ। पेटीकोट पहनने वाली औरत के हाथों उल्लू मत बनो। जहा तक तुम्हारी बीबी की बात है वह तुम्हें कभी नहीं मिलेगी, वह तो तुम्हारे केप काड पार करने के पहले ही चम्पत हो चुकी होगी। तुमने एक मूर्ख आदमी की तरह अपना पैसा बरबाद किया है लेकिन खैर मेरी तरह हर मर्द को ठोकर खाकर ही अक्ल आती है। इसलिए अक्लमंदी इसी में है कि तुम उसे भूल जाओ और खुश रहने की कोशिश करो।"

सिलमाकुर इससे सुन्दर शब्दों में सांत्वना नहीं दे सकता था, लेकिन ऐसा लगा कि बढ़ई को इससे दिलासा मिली नहीं, क्योंकि कई दिन तक वह मल्लाहों की हंसी—मजाक और उससे भी ज्यादा उनके सलाह-मशविरे और दम दिलासा से दुखी और बोर होता रहा। मल्लाहों का सांत्वना देने का भी ढग वही था जो सिलमा-कुर का था।

वृहस्पतिवार, पच्चीस फरवरी। आज हम सैंटा बारबरा के लिए चल दिये जहां हम रविवार अट्ठाईस फरवरी को पहुँचे। हम "कैलिफोर्निया" से नहीं मिल सके क्योंकि वह तीन दिन पहले अपना नौभार दर्ज कराने और लाइसेंस लेने के लिए मोंटेरी को रवाना हो चुका था जहा से उसे सैन फ्रैंसिसको जाना था।

कप्तान आर्थर बोस्टन के समाचार पत्रों की फाइल कप्तान टी—के लिए छोड गया था। जब केबिन में उनका उपयोग हो चुका तो मैंने अपने दोस्त तीसरे मालिम से उसे प्राप्त कर लिया।

एक फाइल बोस्टन मे निकलने वाले "ट्रांसक्रिप्ट" की थी जिसमें अगस्त, १८३५ के महीने भर के अखबार थे। दूसरी फाइलों में लगभग एक दर्जन "डेली एडवर्टाइजर्स" और "करियर्ज" थे जो विभिन्न तिथियों के थे।

भला एक अनजबी प्रदेश में घर से आये अखबार से बढ कर और क्या चीज हो सकती है? एक नजर से देखा जाय तो पत्र भी समाचार पत्र की तुलना नहीं कर सकता। समाचारपत्र तो आपको घटनास्थल पर ले जाकर खडा ही कर देता है। यह आपको दिव्य दृष्टि दे देता है। जब आप विज्ञापन में गालियों और चीजों के नाम पढ़ते हैं तो ऐसा लगता है जैसे वे आपके सामने ही हों, और "गुमशुदा लडके की तलाश" का स्तंभ पढते समय आपके कान में "बूढे विल्सन" की परि-चित घन्टी टुनटुनाने लगती है और उसके शब्द गूंज उठते हैं—लडका भटक गया है, चुरा लिया गया है या बहकाया गया है।"

अखबारों में था कि कैंब्रिज फिर से खुल गया है। उनमें मेरी कक्षा की सारी गतिविधियो की जानकारी दी गयी थी। मेरे सभी परिचित नामो की (एबट से शुरू होकर डब्ल्यू० तक) दी गयी थी जिसे पढते पढते मेरे मन में उनके चेहरे और कालिज जीवन के विविध क्षेत्रों में प्रकाशित हुए उनके चरित्र उभर आये।

तब मैं कल्पना करने लगा कि मच पर से भाषण आदि देते समय उनका लहजा और संकेत किस प्रकार के रहे होगे और किसने अपने विषय को किस प्रकार प्रस्तुत किया होगा,...सुन्दर, दिखावटी और पल्लवग्राही पांडित्य वाला है;...में दृढ निश्चय, स्पष्ट विचार और आत्मनियन्त्रण है;...विनम्र, प्रखर सवेदनाओं वाला और उपेक्षित है; डी...डिबेटिंग क्लब की शोभा है, वाचाल, गप्पी और डेमोक्रेटिक है; और इसी तरह दूसरे लोगो के बारे में मैं सोचता रहा।

तब मैं अपनी कल्पना की आखों से उन्हें गरिमाशाली, सामंत से लगने वाले राष्ट्रपति के हाथो से अपना डिप्लोमा लेकर मच से उतरते देखने लगा। मुझे याद आया उसी दिन उनका सहपाठी मै कैलिफोर्निया के तट पर सिर पर खालें ढो रहा था।

एक हफ्ते तक मैंने अपना पहरा बराबर नीचे रखवाया और इन अखबारो पर जुटा रहा। अन्त में मुझे यकीन हो गया कि इनमें एक भी खबर ऐसी नही थी जो मैंने पढ न ली हो; अब मुझे इन फाइलो को अपने पास रखने में शर्म आने लगी।

शनिवार, पाच मार्च। यह दिन हमारे लिए विशेष महत्वपूर्ण था क्योकि इस दिन हमें पहली बार पक्के तौर पर पता चला कि हमारी यात्रा वाकई पूरी होने वाली है। कप्तान ने हमें रवाना होने की तैयारी करने का आदेश दिया और देखा कि हमारे सैन पेड्रो पहुँचने में समीर हमारी सहायता करेगा। हमें प्रतिवात दिशा में नही जाना था, इतना तय था और जल्दी ही यह समाचार पूरे जहाज में फैल गया। जब हम नाव लेकर कप्तान को लेने किनारे पर गये तो हमने देखा कि उसने किनारे पर के लोगों से हाथ मिलाया और उन्हे बताया कि अब उसका इरादा सैंटा बारबरा आने का नही है।

अब सारी बात साफ हो गयी थी और नाव मे मौजूद सभी लोगो के दिलो में इससे खुशी की एक लहर दौड गयी। हम खुशी-खुशी जहाज की ओर चल पडे। चलते समय हम मन ही मन कह रहे थे (कम से कम मैं तो कह ही रहा था) "अलविदा, सैंटा बारबरा ! तुझ में हम अंतिम बार नाव खे रहे हैं ! अब हम तेरी

भग्नोर्मियो में गोते नही खायेंगे और न तेरी अभिशप्त दक्षिणी-पूर्वी झन्झाओ से जान बचाने की चिन्ता भी हमें सतायेगी !"

जल्दी ही यह खबर जहाज-भर में फैल गयी और इससे रवाना होने की तैयारियो में एक नयी जान-सी पड गयी। हर मल्लाह मिशन पर, कस्बे पर और किनारे की भग्नोर्मियो पर अंतिम बार दृष्टि-निपात कर रहा था और कसम खा रहा था कि चाहे कितना ही पैसा क्यो न मिले अब दुबारा जहाज पर नौकरी करके वह यहाँ नही आयेगा। और जब सब लोग लगर उठाने लगे तो पहली बार "विदा की घडी आ गयी है", वाला सहगान गाया गया और सभी ने उसमें खुल कर भाग लिया।

ऐसा लगता था जैसे हम सीधे घर के लिए रवाना हो गये हो यद्यपि अभी हमें तीन महीने तट पर और रहना था।

यहां हमे नौजवान अग्रेज मल्लाह ज्यार्ज मार्श से भी विदा लेनी पडी जिसका जिक्र मैं पहले कर चुका हूँ और जिसका जहाज द्वीपसमूह पर दुर्घटनाग्रस्त हो गया था। वह हमें छोडकर "आयाकुचो" के दूसरे मालिम के पद पर काम करने जा रहा था। "आयाकुचो" बन्दरगाह मे ही खडा था। वह इस पद के लिए सुयोग्य था और यह निश्चित था कि उसकी शिक्षा उसे जहाज पर उच्चतम पद दिलाने में समर्थ थी। उससे विदा होने पर मुझे दुःख हुआ। पता नही उसमें ऐसा क्या था कि उसके बारे में मेरी उत्सुकता बढ गयी थी। मुझे पक्का यकीन था कि वह सद्वंशजन्मा है और बचपन मे उसका लालन-पालन सुन्दर ढङ्ग से हुआ है। उसके मल्लाह के रूप के अन्दर उसका आभिजात्य छिपा हुआ था और एक अच्छे परिवार के नवयुवक के उपयुक्त गरिमा भी उसमें थी लेकिन गर्व उसे छू भी नही गया था।

हमारे रवाना होने के कुछ घन्टे पहले ही उसे इस पद पर आमन्त्रित किया गया था और यद्यपि इसे स्वीकार कर लेने का अर्थ अमरीका वापस चलने से विमुख होता था तथापि एक साधारण मल्लाह की कुत्ते-जैसी जिन्दगी छोड कर अफसर की जिन्दगी बिताने का आकर्षण इतना बडा था कि वह इसे अस्वीकार न कर सका, और मैं समझता हूँ यह ठीक ही था। हम उसे नाव में बैठा कर "आयाकुचो" पर छोडने गये, और नाव छोडने से पहले उसने मेरे अलावा अन्य सभी मल्लाहों को बख्शीश दी। मुझसे उसने हाथ मिलाया और सिर हिला कर मानों कहा हो,

"हम एक—दूसरे को समझते है", और अपने जहाज पर चढ़ गया।

अगर मुझे एक घन्टा पहले पता चल जाता कि वह हमको छोड जायगा तो मैं एक बार उससे उसके आरभिक जीवन का सच्चा इतिहास जानने का प्रयत्न अवश्य करता। वह जानता था कि उसने मल्लाहों को जो कहानी सुनायी थी उस पर मुझे विश्वास नही था, और शायद सदा के लिए विदा के उन क्षणों में वह मुझे सब-कुछ सच-सच बता देता।

भविष्य में उससे मेरी कभी मुलाकात होगी या नही और पैल्यू द्वीपसमूह पर के उसके साहिसिक कृत्यो का वृत्तांत कभी प्रकाश में आयेगा या नही (जो उसे यश और पाठको को रस देता) इसके बारे में मैं कुछ नही कह सकता। उसका जीवन उन लोगों से भिन्न था जो अपने घरों के अलावा कही आते-जाते नही और पालने से लेकर चिता तक एक बंधी लकीर पर चलते हैं।

अगर हम जीवन की विरोधी स्थितियो की तुलना से सत्यों को हृदयंगम करना चाहते हैं तो हमें अपनी उच्चता और बंधी-बंधाई लीक को छोड कर घुमावदार रास्तो और अभावमय जीवन अपनाना होगा और जहाज के अगवाडों में और विदेशों में पडे अपने परित्यक्त बांधवों की दशा देख कर इस बात का पता लगाना होगा कि दुर्घटनाओं, अत्याचारों और विकारो ने हमारे सजातीयों पर क्या जुल्म ढाये हैं।

दो दिन में हम सैन पेड्रो पहुच गये और इन दो दिनों ने (यह बात हमारे लिए बडी प्रसन्नता दायक थी) हमें इस स्थान की अतिम झाकी देखने का अवसर दिया जो दुनिया भर में कैलिफोर्निया के नरक के नाम से प्रसिद्ध है। हमें वाकई ऐसा लगा जैसे इसका निर्माण ही मल्लाहो की सब प्रकार की तबाही के लिए किया गया है।

इस स्थान पर अंतिम बार दृष्टिपात करने पर भी मन में विदा का अवसाद नही जनमा। रेतीले तटों को दूर छोडता हुआ मैं सोच रहा था सैन पेड्रो! तुम्हारे पत्थरों पर नगे पाव सिर पर खालें उठाये मैं जो घन्टो दौडता रहा हूँ, तुम्हारी खडी, कीचड भरी पहाडियो पर मैं जो बोझ लेकर चढता रहा हूँ, तुम्हारी भवनो-मियो में मैंने जो गोते खाये हैं, वीरान पहाडी पर खालों के ढेरो की रखवाली करते हुए मैंने जो लबे दिन-रात बिताये हैं, तुम्हारे जन्तुओ की जो तीखी आवाजें और उल्लुओं की उदास हूकें सुनी हैं उस सब के लिए मैं तुम्हे धन्यवाद नही दूँगा।

ज्यों-ज्यो मैं स्थानो को एक-एक करके छोडता चल रहा था मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मेरी गुलामी की जन्जीरें एक-एक करके टूट रही हो। स्थल समीर की प्राप्ति के लिए हम किनारे के पास ही चल रहे थे। उसी रात हमने सैन जुआन कैंपेस्ट्रनो को पार किया। उज्वल चादनी में हमें वह पहाडी साफ दिखायी दे रही थी जिस पर मै कुछ अटकी हुई खालो को छुडाने के लिए उतरा था। अंतिम बार मैंने उस स्थान को भी नजर भर कर देख लिया। अगले दिन सुबह हम सैन सियागो पहुँच गये।

चढ़ते ज्वार मे हम तेजी से अंदर अपने खालो के मकान के सामने पहुँच गये और हमने काफी दिन तक रुकने की सारी तैयारी कर ली। यह हमारा अंतिम बन्दरगाह था। यहाँ हमें जहाज का सारा सामान निकालना था, जहाज की सफाई करनी थी, उसमे धुंआ करना था, इसके बाद खालें, लकडी और पानी भर कर बोस्टन के लिए चल देना था।

यह सब होने में जितने दिन लगते उतने दिन हमें एक जगह लगर डाले खडा रहना था। यह बन्दरगाह सुरक्षित था और यहा दक्षिणी पूर्वी झंझाओं का डर नहीं था। अत धारा में एक अच्छे व स्वच्छ तट के सामने, अपने खाल के मकान से कोई दो केबिल दूर लंगर डालने का स्थान चुन कर हमने जहाज को बाँध दिया। इसके बाद उसके सब पाल उतार दिये, टापगैलेंट यार्ड और दुपेंचा पाल बूम नीचे कर दिये और टापगैलेंट मस्तूल भी नीचे कर दिये।

इसके बाद नावो पर लाद कर सारे पाल, फालतू डन्डे, भन्डार का सामान, रस्सियां वगैरह और रोजमर्रा काम न आने वाला सारा सामान किनारे पर मकान में पहुँचा दिया गया। इसके बाद खालो और सीगो की बारी आयी और नीरम के अलावा सारी चीजें पार भेज दी गयी। नीरम अगले दिन खाली होना था।

रात को काम से निबट कर हम अगवाड में बैठे धूम्रपान और गप-शप में मल्लाहो की जिंदगी का मजा लूट रहे थे। हमने उस स्थिति में पहुचने के लिए एक-दूसरे को बधाई दी जिसमें पहुँचने की कामना सैन डियागो पहुँच कर हम हर बार किया करते थे। हम अक्सर कहते थे "टापगैलेंट मस्तूलो को नीचा करके और पालों को बाध कर हम यहा अतिम बार आये होते!" और अब हमारी यह मनोकामना पूरी हो चुकी थी। अभी छः सप्ताहों या दो महीनों का कठोरतम श्रम हमें और करना था और तब..."कैलिफोर्निया को अलविदा" कह देना था।

अध्याय-२९

हमने सोचा शायद सवरे ही सवेरे हमें काम पर लगा दिया जाय इसलिए रात को हम जल्दी ही सो गये। असल में हुआ भी यही; अभी तारे पूरी तरह फीके पडे भी न थे कि "सब लोग काम पर जुटें ?" की आवाज गूंज उठी और हम नीरम खाली करने के काम पर जुट गये, कानूनन हम नीरम को समुद्र में नही फेंक सकते थे, लिहाजा दीर्घ नौका में टूटे-फूटे तख्त डाल कर उसे जहाज की गली के बराबर में लगा दिया गया, लेकिन सचाई यह है कि एक टब नीरम नौका में डाला जाता था तो बीस टब समुद्र में।

यह हरकत करीब-करीब हर जहाज ही करता है क्योंकि नीरम फेंकने से चैनल का तो कुछ बिगडता नही और लगभग एक सप्ताह का श्रम बच जाता है जिसे नावों को लादने, पाइन्ट तक उन्हें खेने या खाली करने के काम में लगाया जा सकता है।

जब दुर्ग से कोई कर्मचारी जहाज पर आ जाता था तब तो नाव लगा दी जाती थी और नीरम उसमें डाला जाता था लेकिन मौका मिलते ही नाव को पीछे बांध दिया जाता था और नीरम समुद्र में फेंकना शुरू कर दिया जाता था। यह चालबाजी उन कुछ छोटी-मोटी बातो में एक है जो विदेशो के कुछ साधारण से बन्दरगाहो पर प्राय: हर एक जहाज को करनी पडती है। दरअसल इससे कही बडी बदमाशिया आम तौर पर प्राय सभी जहाज करते हैं। इन छोटी-मोटी बातो पर तो कोई गौर तक नही किया जाता।

सौभाग्य से इसकी जिम्मेदारी मल्लाह पर नही है, क्योंकि यह माना जाता है कि जहाज पर नौकरी करते समय वह कोई भी काम अपनी मर्जी से नही कर सकता। लेकिन चूंकि उसे हर समय इस तरह के कामो में लगे रहना पडता है इसलिए वह दूसरो के अधिकारो की परवाह करना बन्द कर देता है।

शुक्रवार को सारे दिन, और शनिवार को कुछ देर, हम इसी काम में लगे रहे। अन्त में जहाज में सिर्फ उतना ही नीरम रह गया जितना वापसी के समय नौभार के नीचे रखना जरूरी समझा गया। चूंकि अगले दिन रविवार था, और जहाज में धुंआ करने का अच्छा मौका था, इसलिए हमने केबिन और अगवाड़ का सारा सामान बाहर निकाल लिया; इसके बाद फलके की तली में नीरम के ऊपर लकडी के कोयले, भोजपत्र की छाल, गन्धक और दूसरी चीजों की धूनी

जलायी गयी और फलकों और दूसरी खुली जगहो को बन्द कर दिया गया, साथ ही खिडकियो, मोखो और सीढियो की दराजो वगैरह को भी ल्हेस कर बद कर दिया गया। जहा से भी धुंआ निकलता दीखता था वही ओकम लगा कर ऊपर से ल्हेस दिया जाता था ताकि सारा धुआ जहाज के अन्दर ही रहे।

कप्तान और अफसर छतरी के आगे के सायबान मे सोये और हम लोग अगवाड के एक बाजू पर से एक पुराना दुर्पेचा पाल तान कर उसके साये मे सोये।

अगले दिन, इस डर से कि कही कुछ हो न जाय, सब लोगो को हुक्म दिया गया कि कोई जहाज छोडकर कहीं न जाय और चूंकि डेको पर सामान फैला पडा था इसलिए हम उन्हें धो नही सकते थे। इस तरह हमारे पास काम के नाम पर कुछ भी न था और हमें सारा दिन बिताना था।

दुर्भाग्य से हमारी किताबें ऐसी जगह थी कि उन्हें निकालना असंभव था और हम सोच ही रहे थे कि किया क्या जाय कि एक आदमी को याद आया कि उसकी एक किताब रसोई में है। वह उसकी खोज में गया और जब लौटा तो हमने देखा कि उसके हाथ में "वुडस्टाक" है। हमें मानो मुह माँगी मुराद मिली। लेकिन एक किताब को सब लोग एक साथ नही पढ सकते थे इसलिए यह तय किया गया कि, उस मंडली में विद्वान के रूप में प्रतिष्ठित होने के नाते, मैं उसे जोर से पढू और दूसरे सुनें। छ आठ मल्लाह मेरे चारो ओर बैठ गये और वास्तव में इतने दत्तचित श्रोता चिराग लेकर ढूंढने से भी नही मिल सकते।

कुछ लोग इस "विद्वन्मडली" पर हंस दिये और अगवाड के दूसरी ओर गप-सटाका करने चले गये, लेकिन उस दिन का विजेता मैं ही सिद्ध हुआ क्योकि श्रेष्ठ मल्लाह मेरे ही श्रोता थे। पढते समय मैंने अनेक चिन्तनप्रधान और राजनीतिक अश छोड दिये और श्रोताओ ने आख्यानो का, खास तौर पर प्यूरिटनो का और राउंड हेड सिपाहियो के सरमनों और भाषणो का, भरपूर रस लिया। चार्ल्स की बहादुरी, डा० रैंडक्लिफ के षड्यन्त्रो, "ट्रस्टी टापकिनो" की चातुरी—इन चीजों, ओर असल में किताब के हर अन्श—ने उन्हे जकड सा लिया। मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि पढ़ते समय मैं जिन चीजों को अपने श्रोताओ की क्षमता के परे समझ कर छोड गया था उनमें से अनेक बातों को वह बखूबी समझते थे।

साझ ढले तक मैं बराबर पढ़ता रहा। सपर खत्म होते ही वे रसोई से रोशनी

ले आये और कम दिलचस्प प्रसंगो के पन्ने पलटता हुआ आठ बजे से पहले ही मैं उन्हें एडवर्ड की शादी और चार्ल्स द्वितीय की पुन प्रतिष्ठा तक ले आया।

अगले दिन सुबह हमने जहाज को खोला। धुए से घुट कर कुछ चूहे मर गये थे, और खटमल, तिलचिट्टे, मक्खिया व दूसरे जो भी कीडे जहाज मे रहे होगे वे दुनिया से किनारा कर चुके थे।

अब जहाज तैयार हो चुका था। हमने फलके की पेंदी को सूखे झाड-झंखाड के निभार से पाट दिया और एकसार करके अपना नौभार जहाज में भरने की तैयारी करने लगे। "कैलिफोर्निया" जहाज के तट से विदा होने के समय (इस बात को दो साल से ज्यादा समय बीत चुका था) से अब तक कोई चालीस हजार खालें जमा की जा चुकी थी। उनको सुखा कर खालो के मकान में हिफाजत से रखवा दिया गया था और अब हमारा जहाज उन्हे बोस्टन पहुँचाने वाला था।

अब नौभार जहाज में भरने का काम शुरू हुआ। इसमें हमें छः सप्ताह तक अलस सवेरे से तारे निकलने तक कठिन परिश्रम करना पडा। हा इतवार को काम नही करना पडता था और खाना खाते समय काम से मुक्ति मिल जाती थी। काम को तेजी से निबटाने के लिए काम का बटवारा कर लिया गया था।

दो आदमियो का काम था खालो के ढेर पर चढ कर खालें नीचे फेंकना, दूसरे दो आदमी उन्हे वहाँ से उठा कर जमीन से कुछेक फुट ऊचे क्षैतिज बास पर डालते थे जहा गेहूँ गहाने की मूंगरी जैसे औजारो से उनकी पिटाई होती थी।

पिटाई के बाद दो और आदमी खालो को उठा कर तख्तो के एक चबूतरे पर रख आते थे, और अपनी पतलून चढाये दस बारह आदमी उन्हे चबूतरे से अपने सिर पर रख कर पानी में खडी नाव पर रख आते थे।

खालों को बांस पर डालना सबसे मुश्किल काम था और इसमें जो हस्तलाघव अपेक्षित था वह अनुभव से ही आता है। चूंकि मैं इसका विशेषज्ञ समझा जाता था इसलिए यह काम मुझे ही सौंपा गया। मैंने छ–आठ दिन यह काम किया और इस समय में कोई आठ–दस हजार खालें बाँस पर डाली होगी। अन्त में मेरी कलाइया जवाब दे गयी और मुझे इस काम से हटा कर खालो को चबूतरे से नाव तक पहुँचाने वाले दल में शामिल कर लिया गया। अन्त तक मैं इसी दल में रहा।

खालें गीली न हो जायं—इस डर से हम उन्हे सिर पर ढो रहे थे। हममें

मे हर मल्लाह ने अपने-अपने होश में बकरी की खाल का टुकडा रख लिया था और बालो के ऊपर ऊन रख ली थी, वर्ना हम गन्जे हो जाते और वे कठोर खालें हमारी चाद का कचूमर निकाल देती।

सब मिलाकर हमारा काम सबसे आसान था; क्योंकि यद्यपि अलस सबेरे और साँझ ढले पानी ठन्डा होने लगा था और उसमें बराबर पाव देने से सर्दी होने का डर था फिर भी हमें खालो को पीटने में उडती हुई धूल और गन्दगी से तो नजात मिल गयी थी और चूंकि हम सभी जवान और तगड़े थे इसलिए सर्दी की परवाह नहीं करते थे।

जो मल्लाह बूढे थे और जिनको पानी में रहना खतरनाक साबित हो सकता था वे मालिम के साथ जहाज पर ही रहे। उनका काम था नावो पर आयी खालों को जहाज में रखना।

काफी देर तक हम इसी तरह काम करते रहे। अन्त में निचला फलका कडियों से चार फुट नीचे तक भर गया। अब यह काम रोक दिया गया और सब लोगो को स्टीविंग के लिए बुला लिया गया। चूंकि यह एक अजीब सा काम है इसलिए इसे कुछ विस्तार से समझाना पडेगा।

जैसा कि मैं कह चुका हूँ खालें रखने के पहले सबर बिल्ली के ठीक ऊपर तक नीरम को एकसार कर दिया जाता है और उसके ऊपर खुला निभार बिखेर दिया जाता है जिसके ऊपर खालें रख दी जाती हैं। खालें रखने में अत्यधिक सावधानी बरती जाती है ताकि जहाज में अधिक से अधिक खालें आ सकें।

यह कोई मामूली कारीगरी नहीं है, और कैलिफोर्निया में उस आदमी को बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है जो इस काम मे निपुण हो। खालो को किस करीने से लगाया जाय—इस बात को लेकर इस बात के विशेषज्ञो में भयानक विवाद छिड जाता था, और मैं इसकी बाबत सुन चुका था। जब विवाद छिड जाता था तो समझौते की गुन्जाइश ही न रह जाती थी।

हमने खालों को लगाने में अलग–अलग समय पर सभी तरीके अपनाये। इस बात को लेकर अगवाड में खासी रस्साकशी रही। कुछ लोग "ओल्ड बिल" का समर्थन कर रहे थे जब कि दूसरे उसका मजाक उडा रहे थे और "आयाकुचो" के "इंग्लिश बाब" का पक्ष ले रहे थे जो आठ साल से कैलिफोर्निया प्रदेश में था

और अपने बताये तरीके की सफलता-असफलता पर अपनी जान और जिस्म की बाजी लगाने को तैयार था।

अन्त में समझौते का उपाय निकाला गया और बीच का रास्ता अपनाने का निश्चय किया गया। यह रास्ता ठीक रहा। दोनो प्रतिद्वन्द्वी इस बात पर राजी थे कि यह तरीका उनके अपने तरीके से तो अच्छा नही था लेकिन दूसरे के तरीके से कही अच्छा था।

इस तरीके से हमने जहाज को भर लिया। जब खालो और जहाज की कड़ियों के बीच कोई चार फुट की जगह रह गयी तब स्टीविंग का काम शुरू हुआ। यह ऐसा तरीका है जिससे उतनी जगह में सौ खालें आ जाती हैं जितनी में हाथ से एक खाल भी न आ सके, और इसमे खालें दब भी अधिक जाती हैं।

हर रोज सुबह के समय हम पार जाते थे और वहा से इतनी ही खालें लाते थे जिनका स्टीविंग हम दिन भर में कर सकें। नाश्ते के बाद हम नीचे फलके मे चले जाते थे और रात तक वही स्टीविंग में काम करते रहते थे। इस काम में हम सभी को लगना पडता था। इसमें लगभग २५ से ५० खालों की एक किताब सी बनाई जाती है और उसके बीच में मजबूत लकडी का धारदार डन्डा (जिसे स्टीव कहते हैं) लगाकर रस्सियो के सहारे इन किताबो को वांछित स्थान पर पहुँचा दिया जाता है। यह एक लम्बी और पेचीदी प्रक्रिया है लेकिन इसका लाभ यह है कि इस तरीके से उतनी जगह में १०० से लेकर १५० तक खालें आ जाती है जिसमें हाथ से ठूसने से एक खाल भी न आ पाये।

इस मौके पर गाये जाने वाले गीत खास तरह के होते हैं। उनकी प्रत्येक पंक्ति के अन्त में सब लोग मिल कर गाते हैं। अन्तरा एक ही आदमी गाता है और उसके खतम होते ही स्थायी गाते समय सब लोग शामिल हो जाते हैं और ज्यादा से ज्यादा ऊंची आवाज में गाने का प्रयत्न करते हैं। जब हम सब लोग मिल कर स्थायी गाते थे तो जहाज के डेकों को सिर पर उठा लेते थे और हमारी आवाज दूर तक सुनी जा सकती थी।

मल्लाहो के लिए गीत उतना ही जरूरी है जितना सिपाही के लिए नगाडा और बांसुरी। गीत के बिना वे ठीक समय से और पूरी लगन से काम कर ही नही सकते। कई बार कोई काम कठिन जान पडता है लेकिन जब कोई मल्लाह "हीव, टू द गर्ल्स!" "नैंसी हो", जैक क्रासट्री", जैसा कोई गीत छेड देता है

तो हर मल्लाह के बाजुओ में न जाने कहा से जान और ताकत आ जाती है। हमने खालों के स्टीविंग के काम में कई बार गौर किया कि अलग-अलग गीतो का असर अलग-अलग होता था। कई बार एक के बाद एक कई गीत गाये गये लेकिन काम टस से मस नही हुआ, लेकिन तभी किसी ने कोई नया गीत छेड दिया जो उस क्षरा के अनुकूल सिद्ध हुआ और उस गीत के जादू से वह मुश्किल काम सहल हो गया। हल्के फुल्के कामो के लिए "हीव राउन्ड हार्टी।" "कैप्टेन गान एशोर!" जैसे गीत ठीक रहते हैं लेकिन भारी कामो के लिए "टाइम फार अस टु गो!", "राउन्ड द कार्नर", या "हुर्रा! हुर्रा, माइ हार्टी बुलीज़!" जैसे गीतो का कोई जवाब नही है।

यह हमारे काम का सबसे दिलचस्प हिस्सा था। सुबह को हम नाव पर जाते थे और पार पहुच कर कुछ काम करते थे। इसके बाद हममें से बीस या तीस आदमी नीचे बन्द फलके में चले जाते थे और स्टीविंग के काम में लगे रहते थे और गीत गाते हुए दिन ब दिन जहाज को भरते जाना देखते थे। इसमें हमें अत्यन्त कठोर परिश्रम करना पडता था। सोमवार की सुबह से लेकर शनिवार की रात तक (जब कि हमने यह काम लगभग पूरा कर लिया था) हमें दम लेने की फुरसत नही मिली और जब शनिवार को हमें पूरी रात आराम करने के लिए मिली और नहाने-धोने व कपड़े बदलने और रविवार का दिन शातिपूर्वक बिताने का मौका मिला तो हम बडे खुश हुए।

इस बीच सब दिन हम ताजा बीफ खा कर ही रहे; दिन में तीन बार-सुबह, दोपहर, शाम—हमें बीफ की तली हुई स्लाइसें मिलती थी। सुबह को और रात को हर आदमी को एक पाव चाय और दिन के लिए फी आदमी लगभग आधा सेर हार्ड ब्रेड मिलती थी लेकिन हमारा असली भोजन बीफ ही था। छः आदमियो के लिए लकडी का एक टब आता था जिसमे बीफ के तले हुए और ग्रीज़ से तर्रमतर टुकडे भरे होते थे। हम अपने काटे उठा कर भूखे शेरो की तरह उस पर टूट पडते थे और कुछ देर बाद खाली टब रसोई में पहुँचा दिया जाता था। ऐसा दिन में तीन बार होता था।

मैं हिसाब लगा कर यह बताने की कोशिश नही करूंगा कि एक आदमी कितने पाउन्ड बीफ खाता था। हम एक बछडा (हम जिगर वगैरह सभी कुछ खा जाते थे) चार दिन में चट कर जाते थे। मानना पड़ेगा कि इतनी मात्रा में

और इस आतुरता से हम पहले मास कभी नहीं खाते थे। अगर कोई रूसी सुने कि उन दिनो हममें से एक मल्लाह एक दिन में कितना अधिक खाता था पता नही उस पर क्या गुजरे।

जितने समय हम तट पर रहे हमारा मुख्य भोजन ताजा बीफ ही रहा और हर आदमी इसे खाकर पूरी तरह स्वस्थ रहा। उन दिनो भूख भी कितनी अधिक लगती थी, मेरे लिए यह सोचना भी कठिन है कि मास न होता तो हमारा काम कैसे चल पाता। एकाध मौके पर हमारे बैल ठीक समय पर नही पहुचे और हमें सूखी रोटी और पानी पर निर्भर रहना पडा तब भोजन एकदम बेस्वाद लगा। न यह भोजन हमें परितोष ही दे पाता था और न हम भूख ही महसूस करते थे। अंत में जब हमें फिर से ताजे गोश्त के दर्शन हुए तभी हमारी जान में जान आयी।

बैठ कर काम करने वाले लोग चाहे जो कहे लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं है कि हमारे जहाज के मल्लाह जितना कठिन परिश्रम कर के और सोलह महीनों तक खुले मौसम को अपने शरीर पर झेल कर भी जितने स्वस्थ और नीरोग रहे उन हालात में और लोग वैसे स्वस्थ नही रह सकते थे चाहे स्वास्थ्य की देवी हाइजिया ही उनकी देख भाल क्यो न करती।

शुक्रवार, पन्द्रह अप्रैल। आज प्रतिवात दिशा से "पिलग्रिम" आ पहुँचा। हमें घर पर जाने की तैयारियो में लगा देख कर उसके मल्लाह उदास हो गये क्योकि कैलिफोर्निया-तट पर वे "एलर्ट" के मल्लाहों से पहले आये थे और अभी एक साल तक उन्हे यह कठोर श्रम करने के लिए और रोक लिया गया था।

एक शाम मैंने "पिलग्रिम" पर बितायी। मल्लाह इस कष्ट को हस-गा कर झेलने का प्रयत्न कर रहे थे और इस बात का निश्चय कर रहे थे कि अब जो भी होगा देखा जायगा। लेकिन, मेरा मित्र एस—घर लौटने पर तुला हुआ था और वह इसके लिए लोगो से कहने-सुनने और खर्च करने को भी तैयार था।

बडी जोड-तोड और दौड-धूप के बाद वह मेरे अग्रेज दोस्त टाम हैरिस को राजी कर पाया। उसने हैरिस को इसके बदले में ३० डालर और कुछ कपड़े दिये। इसके अलावा उसने बताया कि जब "पिलग्रिम" प्रतिवात दिशा में रवाना होगा तो कप्तान फाकन को उसकी जगह एक दूसरे मालिम की जरूरत पडेगी और वह पद हैरिस को मिल जायगा।

कप्तान फाकन से अपनी पहली मुलाकात में ही मैंने उससे भट्ठी तक जाकर होप को देखने के लिए कहा। होप उसके जहाज पर काम कर चुका था और कप्तान उसे बखूबी जानता था। वह उसे देखने गया, लेकिन उसने कहा कि उसके पास दवाए बहुत कम है और उसके जहाज को अभी काफी दिन तट पर रहना है इसलिए वह होप के लिए कुछ कर नहीं सकता। उसने यह भी बताया कि कप्तान आर्थर उसकी देखभाल करेगा। आर्थर "कैलिफोर्निया" जहाज का कप्तान था जो हफ्ते-दस दिन में पहुचने वाला था।

जब हमारे जहाज ने अतिम बार सैन डियागो में लगर डाला था तब पहली रात को मैं होप को देखने गया था। जब उसे छोडकर मैं अपने जहाज पर प्रतिवात दिशा मे गया था तब मैंने सोचा था कि लौटने पर होप शायद ही जीवित मिले। मेरे जाने से पहले वह बेहद कमजोर हो चुका था और मैं यह सोच भी नही सकता था कि मैंने उसे जो दवाए दी थी उनका उस पर क्या असर होगा। फिर भी इतना मै समझता था कि दवाओं के बिना तो यह मर ही जायेगा।

इसलिए सैन डियागो लौटने पर जब मैंने उसकी हालत में सुधार देखा तो मेरी खुशी का ठिकाना न रहा और मैंने राहत की सास ली। दवाएँ बहुत तेज थी और उन्होंने उसके शरीर को नष्ट करती हुई बीमारी का बढ़ना रोक दिया था, और उसे मिटाना भी शुरू कर दिया था। उसके कृतज्ञता–प्रकाशन को मैं कभी नही भुला पाऊंगा।

सभी कनाका लोग उसकी जीवन-रक्षा का श्रेय मेरे ज्ञान को देने लगे। वे यह बात मानने के लिए तैयार नही थे कि मैं स्वास्थ्य-विज्ञान के सभी रहस्यो का जानकार नही हूँ। हा, मैंने जो दवाएं उसे दी थी वे खत्म हो चुकी थी और जहाज से और दवाएं प्राप्त करना असंभव था इसलिए उसके जीवन को "कैलिफोर्निया" के आगमन पर छोड दिया गया।

रविवार, चौबीस अप्रैल। अब सैन डियागो में हमें लगभग सात सप्ताह हो गये थे। हम अपना अधिकाँश नौभार भर चुके थे और अब प्रति दिन "कैलिफोर्निया" के आगमन की राह देख रहे थे जिस पर हमारा एजेंट आ रहा था। आज तीसरे पहर कुछ कनाका लोग, जो खरगोश वगैरह पकडने और सापो को मारने पहाडी पर गये हुए थे भागते हुए पार आये। वे पूरा जोर लगा कर "कैल हो ?" गा रहे थे।

हमारा तीसरा मालिम मि० एच० पार गया और उनके जहाज के आकार-प्रकार आदि के बारे में पूछा। जब उन्होने बताया कि जहाज का नाम "मोकू नुई मोकू" है तो उसने हमें लक्ष्य कर के घोषणा की कि "कैलिफोर्निया" पाइन्ट के दरले सिरे पर आ पहुँचा है। उसी क्षण सब लोग काम पर जुट गये और मोरो पर तोपें रख कर उनमें गोले भर दिये गये। ध्वजा-पताका आदि फहरा दी गयी और जहाज को चुस्त-दुरुस्त कर दिया गया। जैसे ही पाइन्ट पर 'कैलिफोर्निया' का अग्र भाग दिखायी दिया वैसे ही हमने तोपों की सलामी देनी शुरू कर दी। अब वह जहाज धीरे-धीरे चलता, पाल लपेटता हुआ हमारे जहाज के पास ही आ खडा हुआ।

आज रविवार था और काम खत्म हो चुका था इसलिए सब मल्लाह अगवाड में ही थे और नवागंतुक जहाज की आलोचना कर रहे थे। वह एक बडा सारा जहाज था। लम्बाई में वह "एलर्ट" से छोटा था। उसके बाजुओ पर दीवारें खिची थी और वह दक्षिणी तट पर चलने वाले रुई और चीनी ढोने वाले जहाजों के फैशन पर केतली जैसी पेंदो वाला था। वह मजबूत, कसीला और सामान्यतया अच्छा जहाज था लेकिन उसे सुन्दर नही कहा जा सकता था।

सब मिलाकर हम इस बात से संतुष्ट ही हुए कि "एलर्ट" उससे दुगुने चुस्त जहाज से होड ले सकता था।

रात के समय हममें से कुछ लोगो ने नाव ली और जहाज पर गये। जहाज का अगवाड बडा और कुशादा था (क्योकि "एलर्ट" की तुलना में उसका अगवाड ज्यादा चौकोर था)। मल्लाहों की सख्या छोकरो सहित बारह या पन्द्रह थी और वे अपने सन्दूको के आस-पास बैठे धूम्रपान और गप-शप कर रहे थे। उन्होने हमारे जहाज के लोगो का सत्कार किया। बोस्टन से चले उन्हे सात महीने हो गये थे लेकिन हमें ऐसा लगा जैसे वे कल ही बोस्टन से चले हो। इस-लिए उनसे पूछने के लिए हमारे पास बहुत-कुछ था क्योकि यद्यपि हम "कैलिफो-र्निया" द्वारा लाये गये अखबारो से बोस्टन के बारे में काफी कुछ जान चुके थे फिर भी ये मल्लाह तो स्वय बोस्टन से आये थे और सब—कुछ अपनी आँखो से देख कर आ रहे थे।

एक नौसिखुआ मल्लाह बोस्टन का लडका था। वहा वह एक पब्लिक स्कूल में पढता था और हमारी अनेक जिज्ञासाओ को शान्त कर सकता था। जब हमने उससे बोस्टन के अपने दो लडको के बारे में मालूम किया तो पता चला कि वे

उसके स्कूल के साथी थे। हम लोगो के पास एन स्ट्रीट, बोर्डिंग हाउसों, बन्दरगाहों में खडे जहाजो, वेतन की दरो और दूसरी चीजो से सबद्ध अनेक प्रश्न थे जो हमने उनसे पूछे।

मल्लाहो मे दो ऐसे थे जो इगलिश युद्धपोत में काम कर चुके थे इसलिए जल्दी ही हमें संगीत भी सुनने को मिला। वे मल्लाहो के असली लहजे मे गा रहे थे और सहगान मे बाकी मल्लाह भी जो कि सगीत से विशेष लगाव रखते थे, हिस्सा ले रहे थे। उन्हे बहुत से नये-नये नाविक गीत याद थे जो अभी हमारे व्यापारी पोतों तक नही पहुँचे थे और वे गीत बहुत सुन्दर थे।

हमारे जहाज पर आने के कुछ देर बाद ही उन्होने गाना शुरू किया था और दो घन्टियो के बजने तक वे गाते ही रहे। दो घन्टियो के बजते ही दूसरा मालिम अगवाड में आया और उसने आज्ञा दी "एलर्ट, वे लोग वापस चलें।" उनके गीतो में युद्ध गीत, मद्य गीन, नाव-गीत, प्रेम-गीत आदि सभी तरह के गीत थे और मैं यह देख कर खुश हुआ समुद्र के क्लासिकल गीतो—"आल इन द डाउस", "पूअर टाम बोलिन", "द बे आफ बिस्के", और "लिस्ट यो लैंड्समैन!"—का उन गीतो में अब भी अपना विशिष्ट स्थान था।

इन गीतों के अलावा उन्होने थियेटरो और दूसरी जगहो से कुछ आभिजात्य गीत भी सीख लिये थे, जिन पर उन्हे गर्व था। और मैं उस बूढे मल्लाह का गाना कभी नही भूल सकता जिसकी आवाज शराब पीने और सैंकडो उत्तरी-पश्चिमी झन्झाओ में चिल्लाते रहने के कारण उखड चुकी थी। उखडी हुई आवाज में वह एक निपुण सगीतज्ञ की भाँति गा रहा था। आरोह में उसकी आवाज ऐसी लगती थी जैसे वह किसी पर बिगड रहा हो और अवरोह में ऐसा लगता था मानों वह सब मल्लाहो को काम पर बुलाने वाली गुहार हो—

"परहैप्स, लाइक मी, ही स्ट्रगल्स विद
ईच फीलिंग आफ रिग्रेट;
बट इफ ही'ज लव्ड एज आइ हैव लव्ड,
ही नेवर कैन फोरगेट!"

अन्तिम पक्ति को, गीत का निचोड होने के कारण, वह पूरे जोर से गाता था और इस प्रयास में एक-एक शब्द छ:-छः अक्षरो में टूट जाता था। लोगों को यह बहुत पसन्द आया और उस मल्लाह को अपना "भावनापूर्ण गीत" गाने के

लिए बार-बार बुलावा गया । इन बुलाने वालों में सबसे ऊंची आवाज मेरी ही थी क्योंकि उसका गाने का पूरा ढग ??ना बेढब था और मल्लाहों को उसमें इतना मजा आ रहा था कि उस पर हंसे बिना रहा ही नही जा सकता था ।

अगले दिन "कैलिफोर्निया" ने अपना नौभार उतारना शुरू किया, नावो पर आते-जाते उसके मल्लाह चप्पुओ की ताल पर नावो के गीत गाते थे । कई दिनो तक वे दिन भर इस काम में लगे रहे । अन्त में उनकी सब खालें किनारे पर पहुँचा दी गयी और उनमें से कुछ मल्लाहो की एक टुकडी स्टीविंग में हमारी मदद करने के लिए हमारे जहाज "एलर्ट" पर भेज दी गयी । हमारे लिए तो यह ईश्वरीय वरदान था क्योंकि उन्हे इस काम से संबद्ध अनेक नये गीत याद थे जबकि हम छ: हफ्तो से निरंतर गाते-गाते अपने गीतो से ऊब चुके थे । मैं नि:सदेह कह सकता हूँ कि गीतो की इस नयी कुमुक के कारण हमारा काम कई दिन पहले खत्म हो गया ।

अब हम अपना नौभार प्राय: पूरा कर चुके थे: और मेरा पुराना दोस्त "पिलग्रिम" अगले दिन सुबह प्रतिवात दिशा में अपनी लम्बी यात्रा की तैयारी कर रहा था । मैं उसके मल्लाहो के दुर्भाग्य पर सोच ही रहा था और उससे बच निकलने के लिए अपने आपको बधाई दे ही रहा था कि केबिन से बुलावा आ गया । मैं पीछे केबिन में गया तो देखा कि मेरे जहाज का कप्तान, "पिलग्रिम" का कप्तान फाकन और एजेंट मि० आर—ये लोग बैठे हैं । कप्तान टी—मेरी ओर मुखातिब हुआ और अचानक पूछ बैठा—

"क्या तुम इस जहाज में घर वापस जाना चाहते हो ?"

"निश्चय ही, सर !" मैंने कहा, "मैं इस जहाज में घर लौट चलना चाहता हूँ !"

"तब", वह बोला, "तुम्हे किसी आदमी को अपने बदले "पिलग्रिम" पर जाने के लिए राजी करना होगा ।"

इस आकस्मिक सूचना से मै इतना हतबुद्धि हो गया कि मैं कोई जवाब न दे पाया । मैं जानता था कि मैं कितनी ही कोशिश करूँ "एलर्ट" का कोई भी मल्लाह बारह महीने तक कैलिफोर्निया-तट पर और रहने के लिए राजी नहीं होगा ।

मुझे यह भी मालूम था कि कप्तान टी—को आदेश दिया गया था कि मुझे

"एलर्ट" में वापस ले आये, और जब मैं खालो के मकान में था तब उसने मुझे बताया भी था कि मुझे "एलर्ट" मे घर वापस चलना है। और अगर यह बात न भी होती तो भी मुझे उनके फैसले की खबर पहले से मिलनी चाहिए थी न कि जहाज के छूटने से चन्द घन्टे पहले।

जैसे ही मेरे होश-हवास दुरुस्त हुए मैंने कड़ा रुख अपनाया और उसे साफ साफ बता दिया कि मेरे सन्दूक में बोस्टन से मालिकों की तरफ से आया वह खत मौजूद है जिसमें उसे आदेश दिया गया है कि मुझे अपने जहाज में घर लेता आये, और इसके अलावा वह मुझसे कह भी चुका है कि मुझे उसके जहाज में चलना है।

मेरे सर्वशक्तिमान प्रभु को इस तरह की बातें सुनने और विरोध सुनने की आदत नही थी। वह मुझ पर बरस बड़ा और अपनी बात वापस लेने को कहा। लेकिन जब उसने देखा कि मुझे दबाना इतना आसान नही और मैं अपना बचाव इस तरीके से कर रहा हूँ कि बाकी दोनो व्यक्तियो के सामने खुद उसकी गलती साबित होने वाली है तो उसने अपना रुख बदल लिया और "पिलग्रिम" के कागजात की तरफ इशारा करके मुझसे कहा—इन पर से तुम्हारा नाम कटा नही है और तुम पर "पिलग्रिम" का अधिकार है—और मैं अपनी मर्जी का मालिक हूँ—डेढ़ बात यह है कि कल सुबह या तो तुम अपना बोरिया–बिस्तर लेकर "पिलग्रिम" पर पहुच जाओ या अपनी एवज में किसी और को राजी कर लो, बस मैं कुछ और सुनना नही चाहता।

स्टार चैंबर की अदालत भी अपराधियो को इतनी जल्दी सजा नही सुनाती थी जितनी जिल्दी यह त्रिमूर्ति मेरे भाग्य का फैसला किये दे रही थी। मुझे जो सजा दी जा रही थी वह कालापानी से भी बुरी थी क्योंकि कैलिफोर्निया के तट पर दो वर्ष और रहने का मतलब था कि मैं सारी जिंदगी मल्लाह ही बना रहता और मेरे भावी जीवन का रूप ही कुछ और हो जाता। मै यह महसूस कर रहा था और सोच रहा था कि इस समय अपनी बात पर डटे रहना बहुत जरूरी है। मैंने अपनी बात फिर से दुहराई और कहा कि इस जहाज मे घर लौट चलना मेरा अधिकार है।

आइ रेज्ड माई आर्म, एन्ड टाल्ड माई क्रैक,
बिफोर देम ए'।

अगर इस निरंकुश और स्वेच्छाचारी अदालत के सामने "सीधा-सादा दुर्बल

व्यक्ति'' साबित होता तो मेरा लोहा लेना बेकार रहता। लेकिन उन्होंने देखा कि मैं संघर्ष किये बिना नही मानूंगा और वे यह भी जानते थे कि घर पर मेरे अनेक मित्र और परिचित हैं जिनकी सहायता से मैं अपने प्रति किये गये अन्याय का प्रतिशोध ले सकता हूँ।

शायद यही कारण था कि सारी बात ने एक नया ही रंग ले लिया और कप्तान का लहजा एकदम बदल गया। उसने मुझसे पूछा कि अगर कोई और आदमी मेरी जगह ''पिलग्रिम'' पर जाने को तैयार हो जाय तो क्या मैं उसे उतनी ही रकम दे दूँगा जितनी एस—ने हैरिस को अपनी एवज में जाने के लिए दी है? मैंने कहा कि जो आदमी उस जहाज पर भेजा जायगा उस पर तरस खा कर मैं उसे कोई भी रकम दे सकता हूँ लेकिन मैं इसे एवज में जाने की रकम मानने के लिए तैयार नही हूँ।

''अच्छा ठीक है'', उसने कहा। ''तुम अगवाड में जाकर अपना काम करो और इंग्लिश बेन को यहां मेरे पास भेज दो!''

मैं हल्के मन से अगवाड में गया लेकिन क्रोध और अपमान से मेरा मन भर उठा था। इंग्लिश बेन पीछे भेजा गया और कुछ मिनट बाद जब वह लौटा तो ऐसा महसूस होता था जैसे उसे फांसी की सजा सुना दी गयी हो!

कप्तान ने उससे अपना सामान तैयार कर लेने को कहा था, और उसे बताया था कि अगले दिन सुबह उसे ''पिलग्रिम'' से जाना है। उसने बेन को यह भी बताया था कि मैं उसे ३० डालर और कुछ कपडे दूँगा। तब तक मल्लाहों की डिनर की छुट्टी हो गई थी और वे अगवाड में यहां—वहाँ खडे थे। बेन ने वहाँ आकर अपनी कहानी सुनाई। मुझे यह समझने मे कठिनाई न हुई कि यह बात सुन कर मल्लाह भडक उठे है, और अगर मैंने अपनी सफाई नही दी ता वे मेरे खिलाफ हो जाएगे।

बेन एक गरीब अंग्रेज लडका था। वह बोस्टन मे अजनबी था, न उसका कोई दोस्त था न उसके पास पैसा ही था। वह एक चुस्त और आगे बढ़कर काम करने वाला लडका था। अपनी उम्र को देखते हुए वह काफी अच्छा मल्लाह था। अपने इन गुणों के कारण वह सभी का चहीता था। ''हा, हाँ!'' मल्लाहों ने कहा, ''कप्तान ने तुम्हे छोड दिया क्योकि तुम कुलीन बाप के बेटे हो, और तुम्हारे हिमायती हैं, और तुम मालिकों को जानते हो, और उसने तुम्हारी जगह बेन को

घर लिया है क्योकि वह गरीब है और उसका कोई हिमायती नही है।''

मैं जानता था कि उनकी बात मे सचाई है और मेरे पास इसका कोई जवाब नही है, फिर भी मैंने कहा कि इसका दोष मेरे सिर पर नही है और हर हालत में घर वापिस लौटने का मुझे अधिकार है। इसमे वे कुछ ढीले पडे लेकिन उनकी यह धारणा बनी रही कि एक गरीब लडके के साथ ज्यादती की जा रही है। यद्यपि मै जानता था कि इसमें मेरा कोई दोष नही है, बल्कि मै भारी अन्याय से बाल-बाल बच गया हूँ, फिर भी मुझे लगता था कि मल्लाह मुझे ही दोषी समझेंगे।

मैं कठोर परिश्रम करने और कठिनाइया झेलने में बराबर उनके साथ रहा था और मेरे प्रति कोई पक्षपात नहीं किया गया था, इसलिए उनकी यह भावना सो गई थी कि मैं ''उनमें से एक'' नही हूँ। लेकिन अब यह भावना नये सिरे से जाग रही थी। लेकिन मैं अपने बारे में अधिक नही सोच रहा था। उस अभागे लडके के प्रति मेरे मन में असीम करुणा थी। कितनी उमग से वह इस जहाज से बोस्टन जाने की सोच रहा था, जहा से वह अपने मित्रों से मिलने लिवरपूल जाने वाला था।

इसके अलावा यात्रा के आरंभ में उसके पास बहुत कम कपडे थे इसलिए वह अपने वेतन का अधिकांश लेकर कपडों आदि पर खर्च कर चुका था। आर्थिक दृष्टि से उसकी यात्रा अब जितनी लम्बी होती वह उतने ही घाटे में रहता। अन्य सभी मल्लाहो की भाति कैलिफोर्निया से उसे भी बेहद नफरत हो गयी थी और जब उसने देखा कि अभी डेढ-दो साल उसे यही पापड और बेलने हैं तो वह मुरझा गया। मैं अपने बारे में तो फैसला कर चुका था कि चाहे जो हो मैं घर अवश्य जाऊँगा और मैं यह भी जानता था कि कप्तान मुझे जबरदस्ती ''पिलग्रिम'' पर भेजने की हिम्मत नही कर सकता। मुझे यह भी मालूम था कि दोनो कप्तान इस बात पर राजी हो गये हैं कि मेरी जगह किसी और आदमी को जाना होगा इसलिए गरीब बेन को बचाने का एकमात्र उपाय यह था कि मैं अपनी ही कोशिशों से किसी और आदमी को अपनी एवज में जाने के लिए तैयार कर लूं।

यद्यपि मैं कह चुका था कि मैं किसी को अपनी एवज में भेजने को तैयार नही हूं, लेकिन बेन की मदद करने के ख्याल से मैंने किसी ऐसे आदमी की तलाश करनी शुरू की जो मेरी एवज में ''पिलग्रिम'' पर चला जाय। इसके लिए मैं उसे बोस्टन में मालिको के नाम छ महीने के वेतन का आर्डर और वापसी के लिए

जरूरी कपड़े, किताबें और कुछ दूसरी चीजें रखकर बाकी अपना सब-कुछ दे देने के लिए तैयार हो गया।

जब यह प्रस्ताव जहाज मे प्रकाशित किया गया और गरीब बेन की सहायता के लिए लोगो को आमन्त्रित किया गया तो कई मल्लाह जो स्वय स्वप्न में भी इसे स्वीकार करने की नही सोच सकते थे, दूसरो से यह सोचकर इसकी चर्चा करने लगे कि शायद वे इसे स्वीकार कर लें। अन्त मे एक आवारा सा लडका, जिसे हम हैरी ग्लफ कहते थे, अगवाड मे आया और मेरी एवज में "पिलग्रिम" पर जाने को तैयार हो गया। उसे इस बात की चिन्ता नही थी कि वह किस देश में या किस जहाज में है, बशर्ते कि उसके पास काफी कपडे और पैसे हों। कुछ तो वह बेन पर तरस खाकर आगे आया और कुछ इसलिए चूंकि यह प्रस्ताव स्वीकार कर लेने पर उसे सैर-तफरीह के लिए पैसा मिल सकता था।

कही इसका जोश ठन्डा न पड जाय—यह सोचकर मैंने बोस्टन में मालिकों के नाम छः महीने के वेतन के आर्डर पर दस्तखत कर दिये और जिन कपडो के बिना मेरा काम चल सकता था वे सब उसे दे दिये। इसके बाद मैंने उसे कप्तान के पास सारी बात बताने के लिए भेज दिया।

कप्तान ने इस एवजी को मंजूर कर लिया, और सच तो यह है कि वह यह सोच कर खुश ही हुआ कि यह बला इतनी आसानी से टल गयी। उसने उसी समय उस आर्डर की रकम ग्लफ को दे दी जो कप्तान के नाम इंडोर्स कर दिया गया था। अगले दिन सुबह को वह लडका "पिलग्रिम" पर चला गया। जाहिरा तौर पर तो वह काफी खुश नजर आ रहा था। उसने हममें से हर एक से हाथ मिलाया और घर की ओर निर्विघ्न यात्रा करने की शुभ कामना प्रकट की। अपनी जेब में पडे पैसे को उसने ठनठनाया और बिदा लेते हुए कहा, "जब तक पास पैसा है चिन्ता को पास मत फटकने दो।" उसी नाव में मेरा पुराना साथी हैरिस भी गया जिसने पहले ही मेरे दोस्त एस—की एवज में जाना मजूर कर लिया था।

हैरिस से बिछुडने में मुझे दु:ख हुआ। जब सभी मल्लाह नीचे जहाज मे होते थे उस समय लगर के पहरे पर तैनात हम दोनों लगभग दो सौ घन्टो तक साथ-साथ रहे थे। उन घन्टो में हम दुनिया भर के विषयो पर बातचीत करते रहते थे। उसने हाथ मिलाते समय मेरा हाथ कस कर दबाया और मैंने उससे कहा कि

बोस्टन जाने पर मुझे ढूंढ कर मुझसे मिलना न भूले और मुझे अपने पुराने पहरे के साथी से मिलने के सुयोग से वंचित न करे।

उसी नाव से मेरा दोस्त एस—हमारे जहाज पर आ गया। एस—ने बोस्टन से मेरे साथ ही यात्रा शुरू की थी और अब हम दोनों ही अपने उस परिवार और समाज में वापस लौट रहे थे जिसमे हम जनमे और पले थे। हम दोनो ने एक-दूसरे को वह सुयोग पाने के लिए बधाई दी जिसके लिए हम न जाने कबसे तरस रहे थे। जब हमने देखा कि "पिलग्रिम" पाइन्ट के पास अपने पूरे पाल ताने रवाना होने के लिए तैयार खडा है तो जहाज पर जितनी खुशी हम दोनों को हुई उतनी किसी को नही हुई।

जब वह हमारे पास से गुजरा तो हम सब कटि में जमा हो गये और हवा में अपने टोप हिला कर तीन बार जोर की आवाज में हमने "पिलग्रिम" को विदाई दी। "पिलग्रिम" के मल्लाह उछल कर रस्सियो और जजीरो पर चढ गये थे और उन्होंने भी उतने ही जोर से तीन बार हमारा अभिवादन किया, जिसके जवाब में नाविकों की प्रथा के अनुसार हमने एक बार उनका अभिवादन किया।

अब वे लोग पटरी पर चढ गये थे। मैंने अपने उन परिचित चेहरो पर आखिरी बार नजर डाली। मैंने देखा बूढा काला रसोइया रसोई से अपना सिर बाहर निकाल कर अपनी टोपी सिर के ऊपर हिला रहा है। मल्लाह टापगैलेंट पालो को ढीला करने के लिए ऊपर चढ गये थे। दोनो कप्तानो ने हाथ हिला कर एक-दूसरे का अभिवादन किया। कोई दस मिनट में वह पाइन्ट का चक्कर लगा कर अपनी यात्रा पर चल दिया और हमारी आखो से उसके सफेद पाल ओझल हो गये।

उसके चले जाने से मुझे राहत ही मिली (मुझे ऐसा लगा जैसे मैं अभी अभी लोहे के उस शिकजे से बच निकला हूँ जो मेरे ऊपर कसने ही वाला था) फिर भी उस पुराने जहाज को आखिरी बार देखते हुए मुझे अफसोस भी हो रहा था। मैंने उस पर एक साल और अपने नाविक जीवन का सबसे पहला साल बिताया था। मैं जिस नयी दुनिया में निकल आया था उसमें मेरा सबसे पहला घर वही था। उससे मेरी अनेक स्मृतिया जुडी थी—घर से पहली बार निकलना, पहली बार भूमध्य रेखा को पार करना, केपहार्न और जुआन फर्नेंडीज की यादें, समुद्र पर मृत्यु और दूसरी अनेक महत्वपूर्ण और सामान्य बातें।

लेकिन इस सबके बाद भी, और अपने पुराने साथी मल्लाहों के प्रति, जो कैलिफोर्निया प्रदेश में साल-डेढ साल और रहने के लिए विवश थे, समवेदना के बावजूद हम इस विचार से सन्तुष्ट थे कि हम बच गये हैं और अब एक हफ्ते के अन्दर बोस्टन के लिए रवाना हो जायेंगे।

शुक्रवार, छ मई। आज हमने अपना नौभार भरना बन्द कर दिया। आज का दिन हमारे लिए चिरस्मरणीय था। सोलह महीनों से हम इस क्षण की आतुरता से प्रतीक्षा कर रहे थे कि जहाज में आखिरी खाल कब भरी जाये। अब वह क्षण आ पहुँचा था। जब अन्तिम खाल रख ली गयी और फलके बन्द कर दिये गये और उन पर तिरपाल लगा दिये गये, दीर्घ नौका ऊपर चढा कर यथास्थान रख दी गयी और रात के लिए डेक साफ कर दिये गये तब मुख्य मालिम दीर्घ नौका के ऊपर चढ गया और सब मल्लाहो को कटि में बुला लिया। इसके बाद उसने अपनी टोपी को सिर पर हिला कर इशारा किया और हमने जोर से तीन बार हर्ष ध्वनि की। ये हर्षध्वनिया हार्दिक थी और इनकी अनुगूंज पहाडियों और घाटियो में सुनायी दी। अगले ही क्षण हमें "कैलिफोर्निया" के मल्लाहो द्वारा की गयी तीन हर्षध्वनिया सुनायी दी। उन्होने हमें दीर्घनौका चढाते हुए देख लिया था, और हमारी हर्षध्वनि सुनकर वे समझ गये थे कि इसका मतलब क्या है ?

आखिरी हफ्ता हमने वापसी के लिए लकडी और पानी लेने तथा फालतू डडो और पालो आदि को यथास्थान रखने में लगाया था। इंडियन आदिवासियों की एक टोलो के साथ मुझे एक झरने से पानी के पीपे भरने के लिए भेजा गया था। यह झरना लगरगाह से कोई तीन मील और कस्बे से पास था। तीन दिन मैं जहाज से गायब रहा। इन दिनो मै कस्बे में रहता था। दिन भर में पीपे भरने और बैलगाडियो पर उन्हे लाद कर घाट पर भेजने में लगा रहता था जहां से मल्लाह नावो द्वारा उन्हे जहाज पर ले जाते थे।

यह कर चुकने के बाद एक दिन हमने पालो को बाधने में लगाया। रात तक सब पाल बाध कर तैयार कर दिये गये।

हमारे रवाना होने के पहले "कैलिफोर्निया" के एक मल्लाह ने हमारे एक मल्लाह से नौकरी की अदला-बदली की असफल चेष्टा की। यह मल्लाह पन्द्रह-सोलह साल का एक लडका था और ईस्ट इन्डिया कम्पनी के एक जहाज में मिडशिपमैन रह चुकने के कारण "रीफर" के नाम से प्रसिद्ध था।

उसके अजीबोगरीब चरित्र और कहानी के कारण हम उसमें उस दिन से दिलचस्पी लेने लगे थे जिस दिन से वह जहाज आया था। वह एक नाजुक, पतला दुबला, छोटा सा लडका था। उसका रग नाशपाती जैसा था और नैन-नक्श सुन्दर थे। उसका माथा संगमरमर की तरह सफेद था और काले व घुंघराले बालो से घिरा रहता था, उंगलिया पतली और नाजुक और पाव छोटे थे। उसकी आवाज मीठी और व्यवहार सुन्दर था। उसकी हर बात से ऐसा लगता था जैसे वह किसी अच्छे घर में जनमा और पला है।

साथ ही उसे देख कर कुछ ऐसा आभास होता था कि उसमें सूझ-बूझ की कुछ कमी है। यह कमी कितनी थी या क्यो थी, । इसके बारे मे मैं कुछ नही कह सकता। हो सकता है यह कमी जन्मजात रही हो या किसी बीमारी अथवा दुर्घटना के परिणामस्वरूप आयी हो अथवा, जैसा कि कुछ लोगो का विचार था, इस यात्रा का उसके मन पर जो दुष्प्रभाव पडा था उसके कारण यह कमी आ गयी हो।

उसने खुद अपने बारे में जो कुछ बताया था और उसकी कहानी से सम्बद्ध अनेक बातो के आधार पर वह जरूर किसी अमीर बाप का बेटा रहा होगा। उसकी मां इटालियन थी। शायद वह अनौरस पुत्र था क्योंकि उसके आरभिक जीवन की घटनाए इसी ओर सकेत करती थी। उसका कहना था कि उसके मा बाप साथ-साथ नही रहते थे और ऐसा लगता था कि उसका बाप उसके प्रति दुर्व्यवहार करता था।

यद्यपि उसका लालन-पालन लाड-चाव से हुआ था (उस समय भी उसके पास घर से मिले कुछ आभूषण थे) फिर भी उसकी शिक्षा सुचारु रूप से न हो सकी और केवल बारह वर्ष की उम्र में उसे ईस्ट इडिया कम्पनी में मिडशिप मैन के रूप में नौकर रख दिया गया। उसका अपना बयान यह था कि बाद में चलकर उसका अपने बाप से झगडा हो गया और वह घर से भाग कर लिवरपूल चला गया जहा से वह कप्तान होम्स के जहाज "रायलटो" पर बोस्टन आ गया। कप्तान होम्स ने उसे घर वापस भेजने की कोशिश की लेकिन जब कुछ समय तक ऐसा कोई जहाज नही मिला तो वह कप्तान से अलग होकर एन स्ट्रीट पर स्थित सामान्य मल्लाहों के बोर्डिंग हाउस में चला गया जहाँ अपनी कीमती चीजें बेच-बेच कर उसने कुछ सप्ताह बिताये।

उसका कहना था कि अंततः उसके मन में घर लौट चलने की इच्छा हुई

और वह एक जहाज कम्पनी के दफ्तर में गया जहां कि "कैलिफोर्निया" जहाज में मल्लाहों की भरती की जा रही थी। यह पूछने पर कि जहाज कहां जा रहा है, शिपिंग मास्टर ने उसे जवाब दिया—कैलिफोर्निया। उसे पता ही न था कि कैलिफोर्निया कहाँ है। उसने शिपिंग मास्टर से कहा कि वह यूरोप जाना चाहता है, क्या कैलिफोर्निया यूरोप में है? इसका जवाब शिपिंग मास्टर ने कुछ इस तरह दिया कि लड़के की समझ में कुछ न आया। उसने लड़के को भरती हो जाने की सलाह दी। लड़के ने कागजों पर दस्तखत कर दिये, पेशगी पैसा ले लिया, उसका एक हिस्सा कपड़े बनवाने में लगा दिया और बाकी खर्च कर दिया और जहाज पर जाने को तैयार हो गया। जिस दिन जहाज रवाना होने वाला था उस दिन सुबह को उसे पता चला कि जहाज दो-तीन साल की यात्रा पर उत्तरी-पश्चिमी तट पर जा रहा है, यूरोप नहीं।

यह सुनकर उसके देवता कूच कर गये। जब मल्लाह लोग जहाज पर जा रहे थे तब वह चुपके से खिसक गया। पहले वह कस्बे के दूसरे भाग में भटकता रहा। दोपहर तक का समय उसने आस-पास की आम सड़कों पर घूम कर काटा। उसके पास पैसे नहीं थे और उसके कपड़े तथा दूसरी सभी चीजें जहाज पर उसकी पेट में थे। बोस्टन के लिए वह अजनबी था। अन्त में थकान और भूख से बेहाल होकर वह यह देखने घाट पर आया कि जहाज चला गया या नहीं। एक गली के मोड़ पर वह मुड़ ही रहा था कि उसकी तलाश में निकला शिपिंग मास्टर उस पर झपट पड़ा और उसे पकड़ कर जहाज पर ले आया।

उसने चीख-पुकार की और छुटकारा पाने के लिए संघर्ष किया और कहा कि वह जहाज पर नहीं जाना चाहता लेकिन जहाज चलने ही वाला था और जहाज छूटने के समय की ऐसी हबड़-तबड़ और हड़बोंग मची हुई थी कि लोगों का ध्यान नक्कारखाने में तूती की उस आवाज पर गया ही नहीं। जिन लोगों ने पूछा भी कि माजरा क्या है, उन्हें यही जवाब दिया गया कि यह लड़का पेशगी रकम लेकर उसे खर्च कर चुका है और अब भागना चाहता था। अगर इस मामले की सूचना जहाज के मालिकों को मिलती तो वे तुरन्त हस्तक्षेप करते; लेकिन या तो उन्हें इसका पता ही नहीं चला या दूसरे लोगों की तरह वे भी यही समझे कि यह कोई सरकश लड़का है जो काम से भागना चाहता है।

जब लड़के ने वास्तविक समुद्री यात्रा 'का अनुभव किया, और उसे पता चला

कि यह यात्रा दो-तीन वर्ष तक चलेगी तो उसका मन मर गया । उसने काम करने से इनकार कर दिया और उसकी अवस्था इतनी दयनीय हो गयी कि कप्तान आर्थर उसे केबिन में ले गया जहा वह स्टीवार्ड की मदद करता था और कभी-कभी डेक पर भी कुछ काम कर देता था ।

जब हमने उसे देखा तो वह यही काम करता था । उसकी जिन्दगी अगवाड से कही अच्छी थी । अगवाड में उसे कठोर परिश्रम करना पडता, पहरा देना होता और मौसम के अत्याचार झेलने पडते जिसे उसका नाजुक शरीर सहन न कर पाता । लेकिन चूंकि केबिन में उस अश्वेत स्टीवार्ड के साथ एक ऐसे आदमी के नीचे काम करना पडता था जिसे शिक्षा और अदब-कायदे के लिहाज से वह अपने बाप के नौकरो से ज्यादा नही समझता था, इसलिए वह हरदम बुझा-सा रहता था । अगर उसने अपनी मरजी से इस स्थिति को स्वीकार किया होता तो शायद वह इसे झेल लेता लेकिन एक तो उसे धोखा दिया गया था, दूसरे उसे मजबूर किया गया था इसलिए यह सब-कुछ उसे असह्य हो उठा था । हमारे जहाज में घर लौटने का उसने पूरा प्रयत्न किया लेकिन उसके कप्तान ने एवजी में कोई दूसरा आदमी लिए बिना उसे छुट्टी देने से इनकार कर दिया और एवजी का कोई इन्तजाम वह कर नही पाया ।

अगर लडके द्वारा दिया गया यह सारा हवाला सच है, और सभी मल्लाह इसे सच ही बताते थे, तो मुझे यह सोच कर हैरानी होती है कि कप्तान आर्थर ने उसे छुट्टी क्यो नही दी ? मैं इसलिए और अधिक हैरान होता हूँ कि कप्तान आर्थर अपनी असाधारण उदारता के लिए सर्वत्र प्रसिद्ध था । वह मल्लाहो के प्रति ही नही अपने संपर्क में आने वाले सभी लोगो के प्रति उदार था ।

सत्य यह है कि अपरिचित तटो पर लम्बी यात्रा पर निकले व्यापारी जहाजों के कप्तानों के अधिकार इतने असीमित होते हैं कि सामान्यत: उत्तम प्रकृति वाले लोगों में भी अनुत्तरदायित्व की भावना आ जाती है और इसके परिणामस्वरूप वे दूसरों के अधिकारो या भावनाओ की अवहेलना करना प्रारंभ कर देते हैं । अंतत: लडके को खाल के घर में काम करने वाली टुकडी के साथ काम करने पार भेज दिया गया जहां से वह भाग कर एक छोटे स्पेनी जहाज में बैठकर कैलाओ पहुँचा और वहां से शायद इग्लैंड चला गया । जब मुझे यह खबर मिली तो मैं बहुत खुश हुआ ।

"कैलिफोर्निया" के आगमन के तुरन्त बाद ही मैंने कप्तान आर्थर से होप के बारे में बात की। वह उसे जानता था और पसन्द करता था इसलिए वह तुरन्त ही उसे देखने गया और उसे उचित दवाए दी, और इस प्रकार उचित इलाज और देख-रेख के कारण उसकी दशा तेजी से सुधरने लगी।

रवाना होने के पहले शनिवार की रात को मैं एक घन्टे तक भट्ठी पर रहा और अपने कनाका मित्रो से विदा ली। और सच तो यह है कि कैलिफोर्निया से विदा लेते समय यही एक ऐसी बात थी जिसे दुखदायी कहा जा सकता है। इन सीधे-सच्चे लोगों से मुझे मोह हो गया था। इससे पहले मुझे ऐसा मोह अपने निकट सम्बंधियो के अलावा कभी किसी से नही हुआ था।

होप ने मुझसे हाथ मिलाया और कहा—जल्दी ही मैं ठीक हो जाऊगा और जब तुम अगली यात्रा पर जहाज के अफसर बनकर आओगे तब मैं तुम्हारी सेवा करने योग्य हो जाऊगा। उसने कहा कि कप्तान बनने के बाद तुम बीमार आदमी के प्रति उदारता का व्यवहार करना भूल मत जाना। बूढा "मि० बिघम" और "किंग मैनिनी" नाव तक मुझे छोडने आये। उन्होने प्रेम से मुझसे हाथ मिलाया, यात्रा के लिए शुभ कामनाए प्रकट की और एकरस गीत गाते हुए भट्ठी की ओर चले गये। मुझे लौटते समय उनके उस एकरस गीत का भार अपने पर और अपनी यात्रा पर बराबर महसूस होता रहा।

रविवार, आठ मई। आज कैलिफोर्निया प्रदेश में हमारा अन्तिम दिन था। चालीस हजार खालें, तीस हजार सीग, ऊदबिलाव और बीवर की खालो के कई ड्र—[illegible] इतना नौभार नीचे जहाज में रख दिया गया था और फलके बन्द कर दिये गये थे। सभी फालतू डन्डे जहाज पर लाये जा चुके थे और उन्हें रस्सियों से बाध दिया गया था। पानी के पीपे संभाल कर रख दिये गये थे। जानवर अपनी-अपनी जगह पहुँचा दिये गये थे। हमारे पास चार बैल, एक दर्जन भेड़ें, एक दर्जन या उससे कुछ ज्यादा सूअर और तीन-चार दर्जन मुर्गियाँ वगैरह थी। बैलों को दीर्घनौका मे रखा गया था, भेडों को अगले फलके में रखा गया था और सूअरों को दीर्घनौका के मोरो में एक कठघरे में रखा गया था। मुर्गियों को उनकी कन्डी में रखा गया था और जाली बोट में भेडो और बैलों के लिए घास-चारा वगैरह भरा हुआ था।

एक तो हमारा नौभार असाधारण रूप से अधिक था, दूसरे उसमें पाच महीने

की यात्रा की रसद भी थी इस कारण जहाज की चैनल पानी मे डूब गयी थी। इसके अलावा उसमें खालो को इस तरह स्टीव किया गया था और उसके अपने नौभार का दबाव इतना अधिक था कि उसकी हालत तंग जाकेट पहने आदमी की तरह थी और इस हालत मे उसका तेज चलना बहुत कठिन था।

"कैलिफोर्निया" ने भी अपना नौभार उतारने का काम पूरा कर लिया था और हमारे साथ ही वह भी रवाना होने वाला था। हम अपने डेक धो चुके थे और नाश्ता कर चुके थे। दोनो जहाज एक दूसरे के सामने खडे थे और रवाना होने के लिए पूरी तरह तैयार थे। जहाज की चोटी पर हमारा ध्वज फहरा रहा था और नदी के दर्पण जैसे पानी का प्रतिबिंब हमारे लबे डडो पर पड रहा था। सूर्योदय के बाद से नदी का यह दर्पण जैसा तल किसी लहर ने भी नही तोडा था, अन्त में पानी मे हवा से कुछ लहरें उठी और ११ बजे के आस-पास धीरे-धीरे स्थायी उत्तरी-पश्चिमी पवन बहने लगा। सब लोगो को हांक लगाने की जरूरत ही नहीं पडी क्योंकि हम सब लोग सुबह से अगवाड के आस-पास ही घूम रहे थे और समीर के चलते ही रवाना होने के लिए तैयार थे।

सबकी आखें कप्तान पर लगी थी, जो डेक पर टहलता हुआ कभी-कभी प्रति-वात दिशा में देख लेता था। उसने मालिम को इशारा दिया और मालिम अगवाड में आकर जान बूझ कर सबदरा कोहनी के बीच में बैठ गया। एक बार उसने ऊपर की तरफ देखा, और फिर पुकारा,

"सब लोग ऊपर चढ कर पालों को ढीला करो।"

हुक्म होने के पहले ही हम काम शुरू कर चुके थे, और बोस्टन से चलने के बाद यह काम पहले कभी इतने कम समय में नही हुआ था जितना कम समय इस बार लगा।

"आगे सब तैयारी हो गयी सर!"

"प्रमुख भाग में सब तैयारी हो गयी!"

"कास जैक यार्ड सब तैयार हैं, सर!"

"हर यार्ड पर एक आदमी रहे। बाकी नीचे उतर आओ!"

यार्डों के कोने और गैस्केट रस्सियां खोल दी गयी। हर एक पाल जिगर पर अटका हुआ था और गांठ के पास एक-एक आदमी खडा था ताकि हुक्म मिलते ही पाल तान दे। हमारे साथ ही "कैलिफोर्निया" के एक दर्जन मल्लाहों ने भी यह

काम शुरू कर दिया था और अब वे भी इस स्थिति में थे कि हुक्म मिलते ही पाल तान दें।

इस बीच हमारी ओरो वाली तोप भर कर दागी जा चुकी थी। तोप के छूटने का मतलब था पाल तान दिये जायें। हमारे ओरों से धुएं का एक बादल उमडा और तोप की गूंज ने हमारी विदाई की सूचना कैलिफोर्निया की पहाडियों में प्रसारित कर दी। अगले ही क्षण दोनो जहाज सिर से पैर तक सफेद पालों से लदे खडे थे।

कुछ क्षणो तक शोर-शराबे और गडबड झाला का माहौल रहा। मल्लाह रस्सियो पर बन्दरो की तरह उछल रहे थे; रस्सियो और कुन्दे उड रहे थे और रस्सियां थामे गाते हुए मल्लाहों की आवाजें एक-दूसरी में घुल रही थी। "चीअ-रिली मेन!" वाले गीत के साथ मस्तूलो के सिरो पर शिखर पाल तान दिये गये, और कुछ ही क्षणों में सारे पाल तान दिये गये क्योंकि हवा हल्की चल रही थी। शीर्ष पाल पीछे कर दिये गये थे। मल्लाहो की आवाजो के साथ बेलन चरखी "क्लिप-क्लैप" की आवाज के साथ घूमने लगी।

"लंगर उठने लगा है, सर", मालिम ने कहा।

"उसे ऊपर खीच लो!"

"जो हुकुम, सर।"

चरखी पर कुछ जोरदार लंबे हाथ मारे गये और लगर का सिर दिखायी देने लगा।

"आखिरी बार कहो, हुर्रा!" मालिम ने कहा और "टाइम फार अस टु गो" के सहगान के साथ लंगर कुन्दे से बांध दिया गया। हर काम बहुत तेजी से हो रहा था जैसे अब फिर यह काम नही करना होगा। शीर्ष यार्डो को भर दिया गया और हमारा जहाज घर के लिए समुद्र पर चल पडा।

उसी समय "कैलिफोर्निया" भी रवाना हुआ, और हमने उस तंग खाडी को साथ ही साथ पार किया। हम मुहाने से निकल चुके थे और उससे आगे निकल आने के कारण बिदा की तीन आवाजें करने ही वाले थे कि हमारा जहाज थमता सा नजर आया और "कैलिफोर्निया" सर से हमसे आगे निकल गया। दरअसल बन्दरगाह के मुहाने के आर-पार एक धारा बहती है जिसे सामान्य जहाज तो पार कर लेते हैं लेकिन एक तो भारी होने की वजह से हमारे जहाज का बडा हिस्सा

पानी में था, दूसरे दक्षिण की ओर जाने के कारण हम अनुवात दिशा में चल रहे थे इसलिए हमारा जहाज धारा में भटक गया था जबकि कैलिफोर्निया हल्का होने के कारण उसे पार कर गया था।

हमने इस आशा से कि शायद हवा के दबाव से हमारा जहाज पार हो जाय सारे पाल तान दिये लेकिन हमें सफलता नही मिली। हार कर हम रुक गये और इस बात का इन्तजार करने लगे कि ज्वार आये और हमारे जहाज को वापस चैनल में पहुँचा दे। यह स्थिति चिंताजनक थी और कप्तान भयभीत और चिंतित हो उठा।

"यह वही जगह है जहा "रोज़ा" किनारे से टकरा कर चूर-चूर हो गया था," हमारे लाल बालो वाले दूसरे मालिम ने वक्त की नजाकत को न समझते हुए कहा।

जवाब में उसे और "रोज़ा" को बददुआएं दी जाने लगी और वह अनुवात की तरफ खिसक गया। कुछ क्षणो बाद हवा के प्रवाह और ज्वार की उठान नें जहाज़ को धारा में पीछे की ओर धकेलना शुरू किया और उसे हमारे पुराने लंगरगाह में पहुचा दिया। इसके बाद ज्वार उतर गया और हवा इतनी कम हो गयी कि जहाज का चलना मुश्किल हो गया।

अन्तः हम खालों के मकान के सामने अपनी पुरानी जगह पर आ गये। उस मकान के लोग हमें वापस आया देख कर आश्चर्य करने लगे। हमें ऐसा लगा जैसे हमें कैलिफोर्निया से बाँध दिया गया हो। कुछ मल्लाहो ने तो कसम खा कर कहा कि यह खूनी तट उन्हे कभी सकुशल नही जाने देगा।

करीब आधे घन्टे बाद फिर से बेलन चरखी घुमाने का हुक्म दिया गया और लंगर उठा कर बांध दिया गया। लेकिन इस बार अन्तिम विदा लेने का समारोह-पूर्ण कोलाहल नही सुना गया। हमें लौटते देख कर "कैलिफोर्निया" भी लौट आया था और पाइन्ट के पार हमारा इन्तजार कर रहा था।

इस बार हमने धारा को सकुशल पार कर लिया और जल्दी ही "कैलिफोर्निया" के पास पहुच गये। उसने भी पालो में हवा भरी और हमारे साथ चल दिया। उसकी मर्जी हमसे दौड करने की थी और हमारे कप्तान ने यह चुनौती स्वीकार कर ली, यद्यपि हमारा जहाज इस बुरी तरह ठूँस-ठूँस कर भरा गया था कि दौड के

दृष्टिकोण से वह उतना ही अयोग्य था जितना जन्जीरों से बन्धा आदमी, जब कि हमारा प्रतिद्वन्द्वी श्रेष्ठतम साज-सज्जा में था।

पाइन्ट से निकलने के बाद हवा बहुत तेज हो गयी और पालो के बोझ से रायल मस्तूल मुडने को हो गये, लेकिन जब तक हमने यह नही देख लिया कि "कैलिफोर्निया" के तीन मल्लाहो ने ऊपर चढ कर अपने पालो को लपेट लिया ह तब तक हमने अपने पाल नही लपेटे। पाल लपेटने के बाद वे लोग टापगैलेंट मस्तूलो के सिरो पर ही रुके रहे ताकि आदेश मिलते ही पालो को तानने के लिए उनकी रस्सी ढीली छोड दें।

आगे के रायल पाल को लपेटना मेरा काम था। उसे ढीला छोडने के लिए वही खडे रह कर मैंने उस दृश्य का अवलोकन किया। जहा मैं खडा था वहा से दोनो जहाज डन्डो और पालो के पुन्ज मात्र से दिखायी दे रहे थे। उनके नीचे उनके तग डेक ऊपर की हवा के दबाव के कारण टेढ़े हुए जा रहे थे और ऐसा लगता था कि रस्सियो और पालो का बोझ उनसे संभल नही पायेगा।

"कैलिफोर्निया" हमारे मुकाबले प्रतिवात दिशा में था और हर तरह से फायदे में था; फिर भी जब तक हवा तेज रही हम उससे पिछड़े नही। जैसे ही हवा मंद पडी वह हमसे आगे निकल गया और रायल पालों को छोड़ देने का हुक्म जारी कर दिया गया।

इससे हम फिर आगे निकल गये, लेकिन हवा के मद पडने के कारण "कैलि-फोर्निया" ने भी अपने रायल पाल तान लिये और जल्दी ही साबित हो गया कि वह हमें पीछे छोडता जा रहा है।

तब हमारे कप्तान ने उसे सलामी दी और कहा कि उसे अपने रास्ते पर चलना चाहिए। उसने यह भी कहा, "अब यह पहले वाला "एलर्ट" नही है, अगर इसकी साज सज्जा तुम्हारे जहाज जैसी होती तो अब तक यह तुम्हारी आखो से कभी का ओझल हो गया होता।"

"कैलिफोर्निया" की ओर से इसका प्रीतिकर उत्तर आया। वह जल्दी ही कैलिफोर्निया तट की ओर चला गया और हम हवा के रुख में दक्षिण-दक्षिण पश्चिम दिशा में चल दिये। "कैलिफोर्निया" के मल्लाहो ने हवा में अपने टोप हिलाते हुए तीन बार विदासूचक ध्वनिया की जिसका हमने सहर्ष जवाब दिया और उसके जवाब में प्रथा के अनुसार उधर से एक ध्वनि हमें सुनाई दी।

उस जहाज के मल्लाह कैलिफोर्निया के उस घृणास्पद तट पर डेढ़-दो साल का कठिन परिश्रम करने जा रहे थे जब कि हम घर की ओर लौट रहे थे। प्रत्येक घन्टा और प्रत्येक मील हमें अपने घर के नजदीक पहुचा रहा था।

जैसे ही हम "कैलिफोर्निया" से जुदा हुए वैसे ही सब मल्लाहो को दुपैचा पाल लगाने के लिए ऊपर भेजा गया। जहाज में जितने भी पाल थे वे सब उस पर लाद दिये गये ताकि हवा का छोटे से छोटा अंश भी व्यर्थ न जा सके।

अब हमारे सामने स्पष्ट हुआ कि जहाज का नौभार कितना अधिक है क्योंकि उस समय काफी तेज हवा चल रही थी और पालो से वह पूरी तरह लदा हुआ था फिर भी हम उसे छ नौट से अधिक रफ्तार से नही चला पा रहे थे।

हम उसकी इस रफ्तार से अन्सतुष्ट थे लेकिन अधिक अनुभवी मल्लाहों का कहना था—"देखते तो रहो, एकाध हफ्ते में यह कुछ ढीला हो जायगा और तब केपहार्न तक यह घुडदौड के घोड़े की रफ्तार से जायगा।"

जब सारे पाल तान दिये गये और डेक साफ कर दिये गये तब हमने देखा "कैलिफोर्निया" क्षितिज पर एक धब्बे की तरह लग रहा था और उत्तर-पूर्व में कैलिफोर्निया का तट एक नीचे बादल जैसा दिखायी दे रहा था। सूर्यास्त के साथ ही वे दोनो भी ओझल हो गये और हमने अपने को एक बार फिर महासागर मे पाया जहाँ आकाश और जल एक-दूसरे का आलिगन कर रहे थे।

* * *

अध्याय—३०

आठ बजे सब मल्लाहो को पिछवाडे बुलाया गया और यात्रा के पहरे सौप दिये गये। कुछ फेर-बदल भी की गयी लेकिन मै इस बात पर खुश था कि मुझे पहले की तरह डाबा बाजू पर पहरा देने वाली टुकडी में रखा गया था। हमारा नाविक-दल पहले से छोटा हो गया था क्योंकि एक आदमी और एक छोकरा तो "पिलग्रिम" में चले गये थे और एक मल्लाह "आयाकुचो" पर दूसरा मालिम बन कर चला गया था। एक तीसरा मल्लाह, जो हमारे नाविक-दल का सब से अनुभवी सदस्य था, कठोर परिश्रम और तट पर लगातार सर्दी झेलने से टूट चुका था और उसे लकवा मार गया था इसलिए उसे कप्तान आर्थर की देख-रेख में खालो के घर में ही छोड़ दिया गया था।

वह अभागा इसी जहाज से घर वापस आना चाहता था, और वह आता भी। लेकिन, मरे शेर से जिन्दा कुत्ता ज्यादा काम आता है और बीमार मल्लाह का कोई साथी नही होता इसलिए काठ-कबाड के साथ-साथ उसे भी पार भेज दिया गया।

इस कमी की वजह से हम लोगो की सख्या ऐसी यात्रा के लिए नाकाफी थी जो कडाके की सर्दियो मे की जाये और जिसके बीच में केपहार्न पडे। एस—के और मेरे अलावा अगवाड में केवल पाच मल्लाह और थे। इनके अलावा स्टीअरेज में चार छोकरे, सिलमाकुर और बढई—नाविक-दल में कुल इतने ही लोग थे। इसके अलावा अभी हमें चले तीन या चार दिन ही हुए थे कि हमारे सिलमाकुर को, जो कि जहाज का सब से अच्छा मल्लाह था, लकवा मार गया और वह बाकी यात्रा के लिए बेकार हो गया। सभी मौसमो में लगातार पानी में चलना, खालें ढोना और दूसरे मेहनत के काम—यह सब बूढे और दुर्बल लोगो की सहन-शक्ति के बाहर की चीज है।

हमारे इन दो मल्लाहो के अलावा "कैलिफोर्निया" का दूसरा मालिम और "पिलग्रिम" का बढई भी काम का बोझ न सम्भाल सके और दूसरा तो सैंटा बारबरा में चल ही बसा। "पिलग्रिम" में हमारे साथ बोस्टन से जो नौजवान चला था वह जैसे ही तट पर पहुचा वैसे ही गठिया से पीडित हो गया और उसे मल्लाही के काम से हटा कर क्लर्क का काम सौप दिया गया था।

सिलमाकुर के पडने से हमारे पहरे मे केवल पाच लोग रह गये जिनमें से दो तो छोकरे थे जो अच्छे मौसम में ही स्टीअर पर खड़े हो सकते थे, बाकी बचे तीन (मैं और दो दूसरे मल्लाह) तो हम तीनो को चौबीस घन्टों में चार-चार घन्टे पहिये पर बैठना पडता था; और दूसरी पहरा-टुकडी में तो कुल चार ही कर्णधार थे।

हर चीज का एक ही जवाब था—"परवाह मत करो—आखिर हम घर ही तो जा रहे हैं", और हमें वाकई कोई चिन्ता न होती अगर हमारे दिमाग में यह बात न होती कि हमें भीषण सर्दी में हमें केपहार्न से गुजरना पडेगा। इन दिन में मई का पहला पक्ष चल रहा था और कोई दो महीने में हमें केपहार्न पहुँच जाने की आशा थी। इसका मतलब यह कि हम जुलाई में वहा पहुंचेंगे जो वर्ष भर का सब से खराब महीना होता हैं। इस महीने में सूरज नौ बजे निकलता है और सात

बजे छिप जाता है, रात अट्ठारह घन्टो की होती है और बर्फ व बारिश, झन्झा-झक्कड़ और उत्ताल तरंगों की बहुलता होती है।

हमारे जहाज मे मल्लाहो की संख्या आधी थी और वह भारी बोझ के कारण पानी में इतना नीचा था कि समुद्र की हर उत्ताल तरंग उसे एक सिरे से दूसरे तक बुहार देती थी। ऐसे जहाज में पूर्वोक्त मौसम का सामना करने की संभावना प्रिय नही थी। आते समय "एलर्ट" ने फरवरी में केपहार्न को पार किया था जब कि गर्मियो के दिन थे और हम "पिलग्रिम" में अक्टूबर के अंतिम दिनो में केपहार्न से गुजरे थे फिर भी हमें यात्रा का यह अंश विशेष असुविधाजनक लगा था।

हमारे नाविक दल में केवल एक मल्लाह ऐसा था जिसने जाडो में केपहार्न को पार किया था और वह भी एक ह्वेल जहाज में था जो हमारे जहाज से कई गुना हल्का और कही अधिक ऊचा था। फिर भी उसका कहना था कि बीस दिन तक लगातार उन्हे नरघाती मौसम का सामना करना पडा, समुद्र की तरगो ने दो बार उनके डेको पर बाढ का दृश्य उपस्थित कर दिया और जब उन्होने केप का पार कर लिया तब उनकी जान में जान आयी।

"ब्रैंडीवाइन" युद्धपोत को केपहार्न पार करने में साठ दिन लगे थे और उत्ताल तरंगो के कारण उसकी कई नावें बह गयी थी। यह सब सुन कर हम बेचैन हो रहे थे लेकिन केप हार्न को पार करने के अलावा कोई चारा नही था इसलिए सब मल्लाहो ने फैसला किया कि जो होगा देखा जायेगा।

जब हमें नीचे का पहरा दिया गया तो हमने अपने कपड़े ठीक-ठाक किये और बुरे मौसम के लिए नये कपडे बनाये और पुरानो की मरम्मत की। पहले हर एक मल्लाह ने अपने लिए तिरपाल का एक-एक सूट बनाया था। अब हमने उन्हे बाहर निकाला और उन पर तेल या कोलतार का एक एक हाथ मार कर उन्हें सूखने डाल दिया। हमने अपने भारी जूतो पर भी ग्रीज़ और कोलतार को पिघला कर पालिश किया और सूखने के लिए टाँग दिया।

इस तरह हमने प्रशातमहासागर की उस गर्म धूप और बढ़िया मौसम का फायदा उठाया और विपरीत मौसम का सामना करने के लिए तैयार हो गये। नीचे के पहरे के समय दोपहर से पहले हमारा अगवाड अनेक चीजो का कारखाना जैसा लगता था—मल्लाह को थोडा-थोडा सभी कुछ जानना होता है। हमने मोटी जुर्राबो और ड्राअरो को रफू किया और उनमें थेगड़ी वगैरह लगायी; पेटी की तली

में से मिटेनों को निकाल कर उनकी मरम्मत की गयी, गरदन और कानो को ढकने के लिए मफलर बनाये गये, फ्लेनैल की पुरानी कमीजो को काट कर मकी जाकेट की शक्ल दे दी गयी, साउथ वेस्टर टोपो के नीचे फ्लेनेल का अस्तर लगाया गया। हम रोगन का एक डब्बा उडा कर अगवाड में ले आये ताकि टोपों के ऊपर की तरफ रोगन किया जा सके। इस तरह हर चीज ठीक-ठाक कर ली गयी। दो साल की यात्रा में हमारे ज्यादातर कपडे फट-फटा चुके थे लेकिन जरूरत मल्लाह को कम खर्च और नये-नये तरीके खोज निकालने में माहिर बना देती है इसलिए जल्दी ही हममें से प्रत्येक मल्लाह के पास खराब मौसम के लिये काफी कपडे हो गये यद्यपि अभी अच्छा मौसम ही चल रहा था।

फिर भी एक कठिनाई ऐसी थी जिसका हम कोई इलाज नही कर सके। हमारा अगवाड चूने लगा था और इससे खराब मौसम में हमें बहुत कष्ट होता था। ऐसे में आधी बेंचें तो खाली ही पडी रहती थी।

लम्बी यात्रा में जहाज के सबदरे पर लगातार दबाव पडता रहता है और मजबूत से मजबूत जहाज के सबदरे के पहिए तथा अगवाड तक आ पहुचने वाली खूटियो के आस-पास चूने लगते हैं। लेकिन हमारा जहाज दायें मोरे की तरफ से लंगर कुन्दे के पास बहुत चू रहा था इसलिए उसके पास की अगली बेंचों पर हम नही बैठ सकते थे और जब हवा जहाज के दायें पहलू पर चलती थी तब तो हमें आगे की सभी बेंचें खाली कर देनी पडती थीं। जब मौसम बहुत खराब होता था तो एक अगली बेंच के ऊपर भी पानी चूने लगता था। इस प्रकार यद्यपि हमारा जहाज बन्द बोतल की तरह कसा हुआ था जो नौभार को तनिक भी भिगोये बिना बोस्टन तक ले आया फिर भी उसके अगवाड़ में हम सात नाविकों के लिए केवल तीन बेंचें सूखी बचती थी यद्यपि हमने जहाज का टपकना रोकने की पूरी-पूरी कोशिश की थी।

लेकिन चूंकि एक बार में "पारी बदल बदल कर" नीचे एक ही पहरा-टोली रहती है इसलिए हमारा काम मजे में चलता रहा, और चूकि अपनी पहरा-टोली में अगवाड में रहने वाले हम तीन ही थे (दोनो छोकरे स्टीअरेज में रहते थे) इसलिए प्राय: हमें अपनी-अपनी बेंच सूखी मिल ही जाती थी।

लेकिन यह सब पूर्वानुमान भर था। अभी हम उत्तरी प्रशांत महासागर में अच्छे मौसम में ही सफर कर रहे थे। सैन डियागो से रवाना होने के अगले दिन

से ही उत्तरी-पूर्वी व्यापारी हवाएं चल निकली थी और हम उनमें अपने मार्ग पर सानन्द बढ रहे थे।

रविवार, पन्द्रह मई। आज हमें चले हुए एक सप्ताह हो गया था और हम १४° ५६ अक्षांश उ० और ११६° १४' प० देशांतर मे चल रहे थे। इन सात दिनो मे हमने कोई तेरह सौ मील से अधिक का फासला तय कर लिया था। जब से हम चले थे तब से बराबर बडी सुन्दर हवा चल रही थी।

सात दिन तक हमारे निचले और शिखरमस्तूल के दुपेंचा पाल बराबर तने रहे और जब मौका मिलता तब रायल और टापगैलेंट पाल भी तान दिये जाते थे। कप्तान का इरादा शुरू में ही जाहिर हो गया था कि वह जहाज पर अधिक से अधिक पाल तान देना चाहता है ताकि जहाज तेज चल सके। इस प्रकार चौबीस घन्टे में हम प्रायः तीन डिग्री अक्षाँश पार कर जाते थे, और साथ ही कुछ देशांतर भी तय कर लेते थे।

दिन के समय हम प्राय. जहाज के सामान्य काम में लगे रहते थे। बन्दरगाह, में बहुत दिन रहने से रस्सियां वगैरह ढीली हो गयी थी, उन्हे ठीक करना था। उन्हे ठीक करने के साथ ही हमने केप हार्न से गुजरने के वक्त के लिए नयी रस्सियाँ भी बाधी और पाल बनाये। कायदा यह कहता है कि जब मौसम अच्छा हो तो मल्लाह को चाहिए कि खराब मौसम से अपनी और जहाज की रक्षा करने की तैयारी करे।

जैसा कि पहले भी कह चुका हूँ नीचे पहरा देते समय सुबह के वक्त तो हम अपना काम करते थे और रातें हमेशा की तरह बीतती थी---कुछ देर पहिए पर बैठना, एक निगाह अगवाड पर डालना, कोई रस्सी पकड कर एक झपकी लेना, एक गप हांकना या फिर, जैसा कि आम तौर पर मैं करता था, अगवाड से पिछवाड तक चहलकदमी करना। हमारे जहाज द्वारा फेंकी गयी हर लहर हमें घर के नजदीक पहुचा रही थी और दोपहर को जब हम दिन भर की प्रगति का निरीक्षण करते थे तो यह आशा बधती थी कि अगर यही रफ्तार रही तो हम चार महीने से पहले ही बोस्टन की खाडी में पहुच जायेंगे।

यह समुद्री जीवन का स्वर्ग है—प्रति दिन सुन्दर मौसम—सुन्दर और प्रचुर पवन—और घर की ओर यात्रा। हर आदमी खुश था, हर बात ठीक थी और सब लोग मन लगा कर काम करते थे। अधपहरे के समय सब मल्लाह डेक पर

जमा हो जाते थे और अगवाड के खुले बाजू पर खड़े हो जाते थे या बेलन चरखी पर बैठ जाते थे और समुद्री गीत और समुद्री दस्युओ और डाकुओ के वीर गीत, जो मल्लाहों को विशेष पसन्द आते हैं, गाते थे । घर की चर्चा भी अक्सर होती थी— वहां पहुंच कर हम क्या करेंगे, वहा कब और कैसे पहुंचेंगे । हर रात जब खाने का टब और बरतन हटा लिए जाते थे और हम रसोई से अपने पाइप और सिगार जला कर बेलन चरखी के पास जमा हो जाते थे तब पहला सवाल यह होता था ।

"क्यो टाम ? आज अक्षाश क्या था ?"

"क्यो, चौदह उत्तर, और तब से जहाज सात नाट की रफ्तार से चल रहा है ।"

"अच्छा, तब तो हम पाँच दिन में विषुवत रेखा पर पहुँच जायेंगे ।"

"हा, लेकिन ये व्यापारी हवाएं चौबीस घन्टो से ज्यादा नही रहेगी", एक अनुभवी मल्लाह कहता, इसके बाद वह अनुवात दिशा में अंगुली दिखा कर कहता, "मैं बादलो की ओर देख कर यह बता रहा हूँ ।"

इस पर तरह तरह से हिसाब-किताब शुरू हो जाता और हवा के जारी रहने, विषुवत रेखा के मौसम, दक्षिणी-पूर्वी व्यापारी हवाओं और केप हार्न पर जहाज के पहुँचने के समय के बारे में तरह-तरह की अटकलें लगायी जाती थी । कुछ साहसी लोग इस बात पर शर्त लगाने के लिए तैयार हो जाते कि इस तारीख से पहले ही जहाज बोस्टन पहुँच जायगा ।

"अभी केप हार्न आने दो, तब तुम्हे पता चलेगा !" एक अनुभवी मल्लाह कहता ।

"हा", दूसरा मल्लाह कहता, "हो सकता है तुम्हारे भाग्य में बोस्टन के दर्शन करना लिखा हो लेकिन उस शुभ दिन के पहले तुम्हे नरक के भोग भोगने पडेंगे ।"

हमेशा की तरह इस बारे में भी अफवाहे उड रही थी कि केबिन में क्या-कुछ कहा-सुना जाता है । स्टीवार्ड ने कप्तान को किसी से मैगैलन जलसधि के बारे में बात करते सुना था और पहिए पर बैठे मल्लाह ने कप्तान को एक "यात्री" से यह कहते सुना था कि अगर केपहार्न के पास हवा सामने की हुई और मौसम बहुत खराब हुआ तो वह जहाज को न्यू हालैंड ले जायेगा और केप आफ गुडहोप होता हुआ बोस्टन पहुँचेगा ।

हमारे जहाज पर एक ही यात्री था। कैलिफोर्निया तट पर एक बन्दरगाह से दूसरे पर जाने के अलावा हम यात्रियो को नही बैठाते थे। मैं इस यात्री को तब से जानता था जब मेरे दिन अच्छे थे और मुझे इस बात की कोई आशा न थी कि मैं इसे कैलिफोर्निया तट पर देखूंगा। यह यात्री कैंब्रिज के प्रोफेसर एन—थे। जब मै आया था तो वे हारवर्ड विश्वविद्यालय में वनस्पति-विज्ञान और आर्निथोलाजी विभाग मे प्रोफेसर थे और जब उसके बाद मैंने उन्हे देखा तो वे मल्लाहो की जाकेट और तिनको का चौडा टोप लगाये नंगे पाँव सैन डियागो के रेतीले तट पर चहलकदमी कर रहे थे। उन्होने अपनी पतलून घुटनो तक ऊपर चढा रखी थी और वे पत्थर व घोंघें बीन रहे थे।

वे उत्तरी-पश्चिमी तट की यात्रा करते हुए एक छोटे से जहाज से मोटेरी पहुंचे थे। वहां उन्होने सुना कि एक जहाज बोस्टन जाने वाला है। "पिलग्रिम" उन दिनों मोटेरी में ही था, इसलिए वे उसमे बैठ कर रास्ते में पडने वाले बन्दरगाहों को देखते हुए और वहा पाये जाने वाले पेड-पौधों, मिट्टी और चिडियों का अध्ययन करते हुए हमारे रवाना होने के कुछ ही पहले सैन डियागो पहुंच गये।

"पिलग्रिम" के दूसरे मालिम ने मुझे बताया था कि उनके जहाज पर एक बूढे यात्री हैं जो मुझे जानते हैं और उसी कालिज से आये हैं जिसमें मैं पढ़ता था। उसे उनका नाम याद नही आ सका लेकिन उसने बताया वे "बुजुर्ग किस्म के आदमी" हैं जिनके बाल सफेद हो चुके हैं और उनका अधिकांश समय झाडियो में और समुद्र-तट पर फूल और घोंघें जैसी चीजो को चुनने में बीतता है। उनके पास बारह सन्दूक और पीपे हैं जिनमें ऐसी ही चीजें भरी हुई हैं।

मैंने एक-एक कर के सभी लोगो पर सोचा कि ये कौन साहब हो सकते हैं, लेकिन मैं कोई पक्का अनुमान नही लगा पाया। अगले दिन हम तट से जहाज की ओर चलने ही वाले थे कि वे अपनी पूर्वोक्त वेष-भूषा में हमारी नाव की ओर आते दिखाई दिये। उन्होंने जूते उतार कर हाथ में ले लिये थे और उनकी जेबें इकट्ठे किये गये नमूनो से भरी हुई थी। मैं उन्हे देखते ही पहचान गया लेकिन उन्हें देख कर मुझे जितना आश्चर्य हुआ उतना शायद और किसी भी बात से नहीं हो सकता था। मुझे पहचानने में शायद उन्हे कठिनाई हुई। हम लोग घर से करीब-करीब एक ही समय में चले थे इसलिए हमारे पास एक-दूसरे को बताने के लिए कुछ नही था; और जहाज पर हम दोनों की स्थितियो में इतना अन्तर था कि

वापसी के समय उनसे मेरी मुलाकात कम ही होती थी। जब मैं पहिए पर होता, रात शात होती और स्टीअर का विशेष ध्यान रखना जरूरी नही होता, पहरे का अफसर आगे होता तब वे कभी-कभी पीछे आकर मुझसे कुछ गप-शप कर जाते थे गो यह भी जहाज के नियमो के विरूद्ध था क्योंकि यात्रियो और नाविकों को आपस में किसी भी तरह का कोई सपर्क रखने की मनाही है।

जब नाविक लोग इस बात को लेकर परेशान होते थे कि यह यात्री आखिर हो कौन सकता है और उनके तथा उनके काम के बारे में तरह-तरह की अटकलें लगाते थे तब मुझे बडा मजा आता था। जिस तरह हमारा बूढा सिलमाकुर कप्तान की केबिन में लगे यन्त्रों को नही समझ पाता था उसी तरह ये मल्लाह अपने यात्री के बारे में कुछ नही समझ पाते थे। सिलमकुर क्रोनोमीटर, बैरोमीटर और थर्मामीटर—इन तीनो यन्त्रों को क्रमश. क्रो—नोमीटर, क्रे—नोमीटर और दे—नोमीटर कहता था। "पिलग्रिम" के नाविकों ने अद्‌भुत चीजो के प्रति अपने यात्री का लगाव देख कर मि० एन— का नाम "ओल्ड क्यूरियोज" रख दिया था। उनमें से कुछ लोगो का खयाल था कि बूढा सनकी है और उसके दोस्तो ने उसका मजा लेने के लिए यहा इस तरह भटकने भेज दिया है। ऐसा न होता तो भला कोई अमीर आदमी (जो लोग हाथ से मजदूरी नही करते और लम्बा कोट पहनते हैं और टाई बाँधते हैं उन सभी को नाविक अमीर कहते हैं) सभ्य देश को छोड कर घोंघें और पत्थर बीनने कैलिफोर्निया जैसे प्रदेश में क्यों आता ?

हा, उनमे से एक अनुभवी मल्लाह, जिसे किनारे की दुनिया के बारे में कुछ जानकारी थी, उनके बारे में काफी-कुछ ठीक सोचता था। वह कहता, "अरे मै सब देख चुका हूँ!—तुम्हे इनके बारे में क्या मालूम। मैंने उनके कालिज देखे है और सब समझता हूँ। वहाँ लोग इन अद्‌भुत चीजो को सग्रहालयो में रखते हैं और उनका अध्ययन करते हैं। इन चीजो को जमा करने के लिए वे बडे-बड़े आदमियो को बाहर भेजते हैं। यह बूढ़ा जानता है कि इसे किन चीजों की तलाश है। वह ऐसा बच्चा नही है जैसा तुम समझते हो। वह इन सब चीजो को कालिज ले जायगा और अगर ये पहले की चीजो से श्रेष्ठ सिद्ध हुई तो यह कालिज का हेड बन जायगा। इसके बाद कोई और आदमी नयी चीजो की तलाश में जायगा और उसकी लायी चीजें इससे श्रेष्ठ सिद्ध हो गयी तो इसे फिर जाना पडेगा या अपना-पद उसे दे देना होगा। कालिजों का यही तरीका है। यह बूढ़ा सब-कुछ

समझना है । इसने अपने प्रतिद्वन्द्वियों को अपनी चाल से छका दिया है और एक ऐसे प्रदेश में आ निकला है जहा न तो पहले कोई आया है और न कभी वे आने की सोचेंगे ।

इस कैफियत से मल्लाहों की तसल्ली हो गयी और चूं कि एक तो इससे मि० एन—की प्रतिष्ठा बहुत अधिक बढ़ गयी और दूसरे यह कथन काफी हद तक सच था इसलिए मैंने इसका खन्डन नही किया ।

मि० एन—के अलावा हमारे जहाजपर कोई और यात्री नही था; जहाज के कर्मचारी थे और जानवर । जानवर भी तेजी से खत्म हो रहे थे । हम चार दिन के बाद एक बैल को मारते थे इसलिए विषुवत रेखा तक पहुँचने से पहले ही वे सब खत्म हो गये । इसके बाद हमने बकरों और मुर्गों वगैरह पर हाथ साफ करना शुरू किया, बल्कि कहना यह चाहिए कि यह हाथ साफ करना अफसरों ने शुरू किया क्योंकि मल्लाहों को ये चीजें नसीब नही होती । बाकी यात्रा के लिए बचे सुअर—जो मल्लाहों की तरह सभी मौसम झेल लेते हैं ।

हमारे जहाज पर एक सुअरिया थी जो अनेक बच्चो को जन्म दे चुकी थी और दो बार केप आफ गुडहोप और एक बार केप हार्न का चक्कर लगा चुकी थी । आखिरी चक्कर में वह मरते-मरते बची । एक अंधेरी रात में हमने उसकी दर्दभरी चीख-पुकार सुनी । उस दिन पिछले कई घन्टो से बरफ और ओले पड रहे थे । जब हम सुअरो के बाडे में गये तो हमने देखा कि वह ठिठुर कर मरने—मरने को हो आयी है । हम कुछ घास फूस, एक पुराना पाल और कुछ और चीजें लाये और उसे लपेट कर बाडे के एक कोने में रख दिया । जब तक अच्छा मौसम शुरू नही हुआ तब तक वह वही रही ।

बुधवार, अट्ठारह मई । अक्षाँश ६०° ५४' उ०, देशातर ११३° १७' प० । अब उत्तरी-पूर्वी व्यापारी हवाएँ चलनी बन्द हो गयी थी और हम विषुवत रेखा पर सामान्यत चलने वाली बदलती हुई हवाओ और थोडी-बहुत बारिश का सामना कर रहे थे । जब तक हम इन अक्षांशो में रहे तब तक रात के समय डेक पर पहरा देते हुए हम आराम नही कर सके क्योंकि हवा हल्की और परिवर्तनशील थी इसलिए हम सभी को अपनी-अपनी बेंचों पर डटे रहना पडता था ।

रविवार, बाईस मई । अक्षांश ५०° १४' उ० देशाँतर १६६° ४५' प० । हमें चले हुए पन्द्रह दिन हो चुके थे । अब विषुवत रेखा लगभग पाँच डिग्री दूर

रह गयी थी और आशा थी कि अगर हवा अच्छी रही तो हम दो दिन में वहा पहुच जायेंगे। लेकिन दिन के अधिकाश भाग में हमें ऊपर नीचे चढना-उतरना पडता था जिसे "आयरिश मेन्स हरीकेन" कहा जाता है।

आज लगभग पूरे दिन बारिश होती रही और इतवार होने की वजह से हमें कोई काम नही था। इसलिए हमने डेक के पतनाले बन्द करके उनमें बारिश का पानी भर लिया और अपने सारे कपडे लाकर धुलाई शुरू कर दी। इसके साथ ही हमने ऊपर के कपडे उतार दिये और साबुन की टिकियें व तौलियो के स्थान पर पालो के पुराने टुकडे लाकर एक-दूसरे को मल-मल कर स्नान कराया। इस तरह हमने अपने बदन पर चढी कैलिफोर्निया की धूल उतारी। आम मल्लाह को ताजा पानी तो एक खास मिकदार में ही मिलता है और समुद्र के खारे पानी में नहाने से मैल वगैरह नही छुटता, इस तरह उसकी उपयोगिता बहुत कम है।

कप्तान तीसरे पहर बराबर नीचे ही रहा और हम लोगो ने स्वच्छन्द होकर गुलछर्रे उड़ाये। कुछ देर बाद मालिम दो छोकरो को अपना बदन रगडने के लिए लेकर आया और वे एक-दूसरे पर पानी उलीचने की बहस में उलझ गये। हमने डेको के पतनाले खोल कर साबुन के झागो वाला पानी निकाल दिया और उन्हे फिर रोक दिया। कुछ देर बाद हमारे लिए पानी फिर इकठ्ठा हो गया। अब हमने इसमें साबुन घोल कर खूब झाग उठाये और नहाये। हमें यह देख कर ताज्जुब हुआ कि साबुन और ताजे पानी ने हममें से अनेक लोगो का रग ही बदल दिया है। हम लोग समझते थे धूप और समुद्र में घूमने के कारण हमारा रग धूमिल और काला पड गया है लेकिन नहाने के बाद हमारा रग पहले जैसा ही निकल आया था।

अगले दिन धूप छिटकी हुई थी और जहाज में आगे से पीछे तक हर तरह के कपडे सूखने के लिए डाल दिये गये थे। हमारे विषुवत रेखा के पास पहुँचने के साथ-साथ हवा कुछ पूरब के रूख की होती जा रही थी और मौसम साफ होता जा रहा था। हमें सैन डियागो से चले बीस दिन हो गये थे कि—

शनिवार, अठ्ठाईस मई। आज दोपहर के तीन बजे के लगभग हमने विषुवत रेखा पार की। उस समय हवा दक्षिण-पूर्व से चल रही थी। एक बात बडी असामान्य देखने में आयी कि विषुवत रेखा पार करने के चौबीस घन्टे बाद ही स्थायी दक्षिणी पूर्वी हवाए चलने लगी। ये हवाए दक्षिण-पूर्व दिशा से कुछ पूरब की

तरफ से सीधी आ रही थी और हमारे लिए यह अच्छा ही था क्योंकि हमें दक्षिण-पश्चिम की ओर जाना था और इन हवाओं में हम बेफिक्री से जा सकते थे। जहाज में थार्ड बाध दिये गये थे ताकि स्पैंकर से लेकर फलान जीब तक सभी पालों में हवा भर सके और ऊपर के यार्डो पर अगले और प्रमुख टापगैलेंट दुपेंचा पाल तान दिये गये थे और उनमें हवा खूब भर रही थी।

बारह दिन तक समीर इसी प्रकार बहता रहा और इसमें तनिक भी परिवर्तन नही हुआ। हवा इतनी बढिया थी कि हमने रायल पाल तान दिये थे और हमें बन्धनी लगाने की जरूरत ही नही पडी, हमारी प्रगति इतनी अच्छी रही कि समीर के चलने के सात दिन बाद—

रविवार, पाँच जून को हम अक्षाश १९° २९' द० और देशातर ११८° ०१' प० में थे। इसका मतलब यह हुआ कि हमारा जहाज सात दिन मे बारह सौ मील तय कर चुका था। अब हमारा जहाज अपनी असली रफ्तार पकड रहा था और सैन डियागो से चलने के बाद अपनी गति में एक तिहाई बढ़ौतरी कर चुका था। मल्लाहो को अब उसमे कोई शिकायत नही थी और अफसरों को उसकी प्रगति से संतोष था।

यात्रा का यह अश अत्यन्त आनन्ददायक था। हमारे ऊपर व्यापारी हवाओं के झीने बादल मंडराते रहते थें; प्रशात महासागर का अतुलमीय तापमान—न गर्म न सर्द—; रोज दिन में उजली धूप और रात में जगमग चाँद-सितारे; दक्षिण में उदित होते नये और उत्तर में डूबते पूर्व परिचित तारा-मन्डल—और हम अपने मार्ग पर निर्विघ्न बढ रहे थे।

ध्रुव तारे और सप्तर्षि को हम उत्तरी क्षितिजों में डुबा आये थे और सब मल्लाह अब दक्षिण की दिशा में मैगेलन बादलो की तलाश करते थे जिनके जल्दी ही दिखायी देने की आशा थी।

एक मल्लाह ने कहा "जब ध्रुव तारा हमें दुबारा दिखाई देगा तब हम केप हार्न के दूसरे यानी उत्तरी किनारे पर होगे।"

यह बात सच थी और इसे देख कर हम निश्चय ही प्रसन्न होते क्योंकि केप हार्न और केप गुड होप का चक्कर लगा कर आने वाले मल्लाह जब पहली बार जमीन के दर्शन करते हैं तभी उन्हें ध्रुवतारा दिखायी देता है।

ये व्यापारी हवाएं वही थीं जो इधर से "पिलग्रिम" में आते हुए मिली थी।

जुग्रान फर्नैंडीज से विषुवत रेखा तक ये हवाएं बराबर चलती रही थीं। तीन सप्ताह तक हमारे जमना क्वार्टर पर ये हवाएं चलती रही और हमें न बंधनी लगाने की जरूरत पडी और न आकाशपालों में ब्रेज लगाने की।

यद्यपि हवाएं वही थी और हम उन्ही अक्षांशो से गुजर रहे थे जिनसे उधर से आते समय "पिलग्रिम" में गुजरे थे फिर भी हम उसके मार्ग से लगभग बारह सौ मील पश्चिम की तरफ थे। इसका कारण यह था कि कप्तान ऊंचे दक्षिणी अक्षांशो में जाडों भर चलने वाली तेज दक्षिणी-पूर्वी हवाओ का सहारा लेकर पश्चिम की ओर चलना चाहता था, यहा तक कि हम ब्यूसी द्वीप से दो सौ मील दूर के प्रदेश से होकर गुजरे।

सर्दियो के इस मौसम और इस यात्रा को देखकर मुझे जाते समय "पिलग्रिम" पर घटित एक घटना याद आ गयी। उन दिनो भी हम इसी अक्षांश में चल रहे थे।

हमारा जहाज बहुत तेज रफ्तार से चल रहा था और दुपैंवा पाल दोनो ओर तने हुए थे। वह एक अंधेरी रात थी। रात आधी बीत चुकी थी और हर चीज पर कब्रिस्तान जैसी खामोशी छायी हुई थी, केवल लहरो के जहाज से टकराने की आवाज आ रही थी। चूंकि हम हवा के सामने थे और समुद्र शात था इसलिए पालो से लदा हमारा जहाज बहुत कम शोर मचाते हुए बहुत तेज रफ्तार से चल रहा था। दूसरी पहरा-टोली नीचे थी। मैं और एक दूसरा मल्लाह पहिये पर थे और हमारी टुकडी के बाकी मल्लाह नाव के अनुवात भाग में सो रहे थे।

दूसरा मालिम अगवाड में आया था और चूंकि वह मुझसे दोस्ताना ताल्लुकात रखता था इसलिए मुझसे गप-सटाका करके छतरी पर अपनी जगह वापस चला गया था। अकेला रहने पर मैंने हमेशा की तरह बेलन-चरखी के आस-पास चहलकदमी शुरू कर दी थी कि अचानक मौरो के नीचे से एक जोरदार चीख सुनायी दी।

अंधेरा, रात की अखंड निस्तब्धता, महासागर का एकांत...इस सबने उस आवाज को भयानक, और किसी हद तक अतिप्राकृतिक रूप से प्रभावशाली बना दिया। मैं सन्नाटे में आकर खडा रह गया और मेरा दिल जोर से धडकने लगा। आवाज से पहरे के दूसरे मल्लाह जाग गये और वे चकित भाव से एक दूसरे को देखते खडे रहे।

"खुदा खैर करे, यह क्या बला है ?" अगवाड की तरफ आते हुए दूसरा मालिम बोला ।

मेरे दिमाग में पहला ख्याल यह आया कि शायद किसी भग्न पोत या किसी ह्वेल जहाज के कुछ मल्लाह रात में अपनी नाव में जा रहे हो और हमने अंधेरे में अपना जहाज उनकी नाव से टकरा दिया हो । एक और चीख ! लेकिन यह पहली से कम जोरदार थी । इसे सुन कर हम अगवाड की ओर दौडे और मोरो में वह अनुवात भाग मे देखा-भाला लेकिन हमें कुछ भी दिखायी या सुनायी नही दिया । अब क्या हो ? क्या कप्तान को बुलाया जाय और जहाज को ठहराया जाय ?

इसी समय अगवाड को पार करते समय एक मल्लाह की नजर नीचे हो रहे प्रकाश पर पडी । जब उसने मोखे से झांका तो देखा कि नीचे की पहरा टुकडी के लोग जाग गये हैं और एक मल्लाह को झकझोर कर जगा रहे हैं । यह मल्लाह कोई दु:स्वप्न देख रहा था और सोते-सोते चीख उठा था । चीख सुन कर उनकी नींद खुल गयी थी और वे हमारी ही तरह घबरा गये थे । वे सोच ही रहे थे कि डेक पर जायें या नहीं कि इतने में ही उनकी ही एक बेंच से दूसरी चीख सुनायी दी और वे समझ गये कि माजरा क्या है ।

उस मल्लाह को सबको तग करने के लिए काफी परेशान किया गया । हमने उसका बडा मजाक उडाया और अब हम हंस भी सकते थे क्योकि इस बात के इस तरह खत्म होने से हमें बडी राहत मिली थी ।

अब हम दक्षिणी उष्ण कटिबंधीय रेखा के निकट थे । हवा बडी शानदार थी । प्रतिदिन सूरज पीछे छूटता जा रहा था और केपहार्न, जिसके लिए हमने इतनी तैयारियाँ की थी, निकट आता जा रहा था ।

जहाज की साज-सज्जा की पूरी तरह जाँच की गयी । जहा जरूरी समझा गया वहाँ मरम्मत की गयी और पुरानी सामग्री हटा कर नयी सामग्री लगायी गयी । पुराने और कमजोर पालों की जगह नये मजबूत पाल लगाये गये । स्प्रिट पाल याडं, मार्टिंगेल गाई और बैक रस्सियाँ कस दी गयी । टापगैलेंट शीट और कच्ची खालो से बनी पहिये की रस्सियाँ फिट कर दी गयी । नये अगले शिखर मस्तूल के बैकस्टे फिट कर दिये गये । ये तथा दूसरी तैयारिया अच्छे मौसम में ही कर ली गयी थी ताकि सर्द मौसम में कोई परेशानी न हो ।

रविवार, बारह जून। अक्षांश २६° ०४' द० देशांतर ११६° ३१' प०। अब स्थायी व्यापारी हवाएं पीछे छूट गयी थी। अब हवाएं प्राय. पश्चिम से चलती थीं और वे परिवर्तनशील हो चली थी। हमारा जहाज याम्योत्तर पर चलता हुआ दक्षिण दिशा में बढ़ रहा था और सप्ताह के अन्त में...

रविवार, उन्नीस जून को हम अक्षांस ३४° १५' द० और देशांतर ११६° ३८' प० में थे।

* * *

अध्याय ३१

अब सारी बातो में एक निश्चित परिवर्तन नजर आने लगा। दिन छोटे होते गए; सूरज प्रतिदिन अंतरिक्ष के अधिकाधिक निकट होता गया और उसकी गर्मी फीकी पडती गई; और रातें इतनी ठन्डी हो गईं कि डेक पर हमारा सोना मुश्किल हो गया; उजली रात में मैगलन बादल नज़र आते; आसमान ठन्डा और अशात नजर आता, और कभी-कभी दक्षिण की ओर दूर-दूर तक फैला गहरा और कुरूप समुद्र हमें बताता कि अभी हमें आगे क्या-क्या देखना है।

इस पर भी, अभी तेज समीर चल रहा था, और हमने जहाज़ पर जितने भी वह बर्दाश्त कर सकता था, उतने पाल तान दिए और सफर करते रहे। सप्ताह के मध्य में हवा दक्षिण की ओर बहने लगी जिससे हमारा जहाज कसी हुई बोलिन पर आ गया, और जिस ढङ्ग से जहाज ने उस ओर से आने वाले लहरों के प्रचण्ड समूह का आमना-सामना किया, उसे देख कर निरुत्साहित हो जाना बिल्कुल स्वाभाविक था।

क्योंकि जहाज़ भारी व गहरा था, इसलिए उसमें ऐसी उत्प्लावकता नहीं थी जिसके सहारे वह तरंगो को पार कर पाता; और वह उन प्रचण्ड तरगों में उठने गिरने लगा। पानी डेकों पर तैरने लगा; अक्सर जब कोई असामान्य रूप से विशाल तरंग उसके अगवाड पर चोट करती, तो जहाज़ उसका उत्तर ऐसी निष्प्राण किन्तु भारी आवाज़ के साथ देता था जिस तरह की आवाज़ किसी भारी हथौडे के तख्ते पर गिरने से पैदा होती है, और वह उसका सम्पूर्ण आघात अगवाड पर सह लेता, और फिर पीछे के हिस्से को उठा कर पानी को मोरियों की ओर बहा देता : इससे सारा सामान...रस्से, मस्तूल, बल्लियाँ, आदि...पानी में नहा उठता, और साथ ही डेक पर जो सामान खुला पडा होता, बह जाता था।

नीचे के हिस्से में सुबह के हमारे पहरे के दौरान जहाज़ लगातार इसी तरह संघर्ष करता रहा। इस बात को हम मोरो के ठीक सामने लगी हुई बर्थों पर लेटे हुए और अपने सिरो के ऊपर लगे हुए तख्तो की मोटाई के परे, अपने सिरो के ऊपर पानी के बहाव, और मोरो पर लहरो के भारी आघात (जिसकी आवाज़ ऐसी थी जैसे जहाज किसी चट्टान से टकरा रहा हो) के कारण समझ सके। आठ घन्टियां बजने पर पहरे की पुकार हुई और हम डेक पर पहुँचे; एक नाविक पीछे की ओर पहिए पर चला गया और दूसरा डिनर के लिए रसोई से खाना लाने के लिए चला गया।

मैं लहरों की ओर देखते हुए अगवाड में खडा रहा। जहां तक आँख जाती थी ऊँची-ऊची तरगें उठती दिखायी दे रही थी। उनकी शिखा झाग के कारण सफेद थी, और घड गहरे नील जैसा नीला था जिससे सूरज की उज्ज्वल किरणें प्रतिबिम्बित हो रही थी।

हमारा जहाज धीरे-धीरे ऐसी कुछ उत्ताल तरंगो के ऊपर से आगे बढ रहा था। फिर एक उत्ताल तरग उसको लपेट लेने को ललकार देते हुए आगे बढी, और अब अपने "पैरो के नीचे" अपने जहाज का अस्तित्व महसूस करके मैं इतना समझदार मल्लाह हो गया था कि हमारा जहाज इस तरंग को पार नही कर पायेगा। मैं सबदरा कोहनी के ऊपर चढ गया, और हाथो से अगले तान को पकड कर मैं उस पर उतर गया। मेरे पैर अभी खम्भे से अलग ही हुए थे, कि जहाज ने तरग के बीच में प्रहार किया। इससे उसके अगले और पिछले भाग में पानी चढ आया और वह पानी में डूब गया। ज्यों ही वह ऊपर उठा, मैंने पीछे की ओर देखा। दीर्घ नौका को छोड कर जो बंधी हुई थी और काबलो से दुहरी जंजीरों से जकडी हुई थी, मुख्य मस्तूल के आगे की हर चीज जैसे झाड-पोंछ कर बिल्कुल साफ कर दी गई थी।

पलक झपकते ही रसोई, सुअरों का बाडा, मुर्गियो का दरबा और भेड़ो का बडा हाता जो अगले फलके पर बनाया गया था—सब जा चुके थे। डेक इतना सूना और साफ हो गया था जैसे हजामत बनाने के तुरन्त बाद ठुड्डी नजर आती है; और वहाँ एक छडी तक बाकी नही बची थी जिससे पता लगता कि रसोई, मुर्गियों का दरबा, सुअरो का बाडा या भेडो का हाता किधर बने हुए थे। रसोई मोरियों में उलटी पड़ी थी और भेडो के हाते के कुछ तख्ते इधर-उधर तैर रहे

थे। उनके बीच में आधी दर्जन अभागी भेड़ें, बिल्कुल भीगी हुई, तैर रही थीं और वे इस आकस्मिक परिवर्तन से, जो उन पर आ पडा था, बुरी तरह भयभीत हो गयी थीं।

ज्यों ही तरग शात हुई, सारे मल्लाह अगवाड से निकल कर यह देखने आ पहुँचे कि जहाज की क्या हालत हो गई है। कुछ ही क्षणों में रसोइया और ओल्ड बिल रसोई के नीचे से सरक कर बाहर आ गए जहाँ वे पानी के नीचे, लगभग साँस रोके, पडे हुए थे और रसोई उनके ऊपर थी। सौभाग्य से रसोई जहाज की दीवार के ऊपर ही टिका रहा, नही तो उनकी कुछ हड्डियो का कचूमर जरूर निकल जाता। जब पानी बह गया तो हम भेडो को ऊपर ले आए और उनको दीर्घनौका में रख दिया, रसोई को उसकी जगह लगाया, और चीजो को कुछ हद तक व्यवस्थित किया। अगर हमारे जहाज की दीवारें और बाडा असाधारण रूप से ऊंचे होते, तो जहाज की सारी चीजें बह जाती, और ओल्ड बिल व बावर्ची भी न बचते। बिल अगवाड के सहभोज के लिए रसोई के दरवाज़े पर बीफ का टब लिए खडा था, कि यकायक टब, बीफ, वह, और सब कुछ बह गया।

वह आखिर तक भलेमानुस की तरह टब को पकडे रहा मगर बीफ तो निकल चुका था। जब पानी बह गया तो हमने उसे सूखे में पडा पाया, जैसे ज्वार के उतरते वक्त चट्टान नजर आती है—उसको कोई हानि नही पहुँची थी। हमने अपने बीफ का नुक्सान सहज ही बर्दाश्त कर लिया क्योंकि इस ख्याल से हमें सतोष था कि केबिन को हमारी बनिस्बत कही ज्यादा नुक्सान पहुँचा होगा। चिकनपाई और पैनकेक के बचे-खुचे टुकडों को मोरियों में तैरता देख कर हम मन ही मन बड़े खुश हुए।

"इस तरह कैसे चलेगा!" यही बात कुछ ने कही और सबने महसूस की।

अभी तो हम केप हार्न के अक्षाश के एक हज़ार मील की सीमा में भी नही पहुँचे थे, और हमारे डेको को एक ऐसी लहर ने तबाह कर दिया था जो ऊचाई में उन लहरो की आधी भी न थी जिनका सामना करने की हमें आशा थी। कुछ नाविकों ने जहाज़ पर इतना ज्यादा माल लाद लेने के लिए कप्तान की निन्दा की; दूसरो का मत था कि केप के परे, जाडो में हवा का रुख हमेशा दक्षिण पश्चिम की ओर होता है, और हवा के रुख में सफर करते हुए हमें इन लहरो की इतनी चिन्ता नही करनी चाहिए।

जब हम नीचे अगवाड में पहुचे तो ओल्ड बिल ने जो कुछ अपशकुनिया था—समुद्र पर अनगिनत दुर्घटनाओ का सामना कर चुका था—कहा कि अगर जहाज की यही हालत रही तो अच्छा यह होगा कि हम अभी से अपनी-अपनी वसीयतें बना लें, हिसाब-किताब दुरुस्त कर लें, और साफ़ कमीजें पहन लें।

"चुप रहो। तुम अत्यत मूर्ख और बूढे उल्लू हो। तुम हमेशा बेअक्ली की बात करते हो। मोरियो में खाई एक डुबकी से तुम घबरा गए हो। एक मज़ाक भी बर्दाश्त नही कर सकते! हमेशा डेवी जोन्स की तलाश करते रहने का क्या फ़ायदा है?"

"भरोसा रखो।" दूसरा बोला, "यही हालत रही तो हमें दोपहर के पहरे की ड्यूटी नीचे मिलेगी।"

लेकिन इसमें उनको निराशा ही मिली, क्योकि दो घन्टियाँ बजने पर सबको बुलाया गया और काम पर लगा दिया गया; डेक की हर चीज को बाध दिया गया। कप्तान ने लम्बे टापगैलेन्ट मस्तूलो को नीचा करने की बात चलायी, मगर चूकि रात होते-होते समुद्र शात हो गया और हवा रुख बदल कर सामने की ओर बहने लगी, इसलिए हमने उनको न उतारा और दुपेंचा पाल तान दिए।

अगले दिन सारे मल्लाहो को पुराने पाल उतारने तथा नए पाल चढ़ाने के काम पर लगा दिया गया; क्योंकि जमीन पर रहने वाले लोगो के ठीक विपरीत जहाज़ खराब मौसम में अपने सबसे अच्छे कपड़े पहनता है। पुराने पालों को नीचे उतार दिया गया, और तीन नए शिखरपाल तथा नए अगले पिछले पाल, जिब तथा अगले शिखर मस्तूल के स्थायी पाल, जो किनारे पर बनाए गए थे और अभी तक इस्तेमाल में न आए थे, तान दिए गए, और उनमें बादवान की नई रस्सियों, पाल की नई रस्सिओ, एव पाल की पट्टियो को बाँधने वाली नई रस्सियों का इस्तेमाल हुआ। पूर्वोक्त रस्सियों, नई बधनियों और छल्ला-रस्सियों के कारण अब हमारी चल रस्सियाँ नयी हो गयीं।

हवा पश्चिम की ओर बहती रही, और जिस दिन हमने उस उत्ताल तरंग का सामना किया था, उस दिन के मुकाबले मौसम और समुद्र, दोनों अपेक्षाकृत कम अशांत रहे। हम दुपेंचा पालो और हलके पालों को ताने हुए, द्रुत गति से, दक्षिण दिशा में तनिक पूर्व की ओर सफर कर रहे थे; क्योंकि कप्तान ने केप के परे पश्चिमी हवाओं पर निर्भर करके अब तक जहाज का रुख किसी कदर पश्चिम की

ओर ही रखा था। हालांकि अब हम केप हार्न के अक्षांश की पाच सौ मील की सीमा में थे, फिर भी हम उसके पश्चिम में लगभग सत्रह सौ मील दूर थे। ज्यो ही हम दक्षिण की ओर जहाज का रुख पूर्व की ओर करके आगे बढ़े, हमें शेष सप्ताह हवा अनुकूल मिलती रही, और हवा बराबर डाबा बाजू पर रही, जब तक कि—

रविवार, छब्बीस जून को चू कि दिन अच्छा और साफ था, कप्तान ने चन्द्रमा का पर्यवेक्षण किया, साथ ही याम्योत्तर का अक्षाँश भी देखा, जिसने हमारा ४७° अक्षाँश ५०' रेखाँश ११३° ४९' पश्चिम में होना सिद्ध किया। अब मेरे हिसाब से केप हार्न पूर्व-दक्षिण-पूर्व ½ पूर्व, दिशा में अठारह सौ मील दूर था।

सोमवार, सत्ताईस जून। आज दिन के पहले भाग में मन्द हवा चलती रही। जिस तरह हम पहले सफर कर रहे थे, उसी तरह अब भी हमें ज्यादा ठड न लगी, और हम साधारण कपडों में तथा गोल जैकेट में डेक पर काम करते रहे। दोपहर के पहरे की हमारी ड्यूटी नीचे थी। जब से हम सैन डियागो से चले थे, हम पहली बार तीसरे मालिम से दोपहर का अक्षाश पूछ कर, और अपनी सामान्य अटकलें लगाने के बाद कि जब जहाज़ हार्न के निकट होगा, तब क्या समय होगा, एक झपकी लेने चले गए।

हम गहरी नीद में सो रहे थे कि यकायक मोखे पर तीन चोट पडी और "सब के सब, आओ" की आवाज़ ने हमें चौंक दिया। बात क्या हो सकती है? हवा बहुत तेजी से बहती हुई मालूम नही हो रही थी, और मोखे से झाँकी लेने पर हमने देख लिया था कि आसमान बिल्कुल साफ है। फिर भी पहरे की पुकार हुई थी। हमने सोचा, जरूर कोई जहाज़ दिखाई दिया है, और कि हमें उससे बातें करने का मौका मिलेगा; और हम इसके लिए स्वय को बधाई दे ही रहे थे—क्योंकि जब से हमने बन्दरगाह छोडा था, न तो हमें कोई जहाज ही दिखाई दिया था और न ही जमीन—कि हमने डेक से जाती हुई मालिम की आवाज सुनी (उसने कहा, "सब खडे हो जाओ" और वह स्वयं हमेशा, जब पुकार होती, उसी क्षण डेक पर पहुँच जाता); जो कुछ नाविक दुपँचा पालों को उतार रहे थे, और वह गा रहा था, और पूछ रहा था कि मेरी टोली के लोग कहां रह गये?

हमने दूसरी पुकार के लिए प्रतीक्षा नही की और सीढी पर झपटे। अब हमने देखा कि जमना बाजू के मोरे पर कुहरे का एक बादल, समुद्र और आकाश दोनों को ढके हुए, सीधे हमारी तरफ बढा आ रहा था। मैं ऐसा बादल पहले "पिल-

ग्रिम" पर भी देख चुका था और मुझे मालूम था कि इसका मतलब क्या है। मैं जानता था कि अब एक क्षण भी नष्ट नही करना चाहिए। हमारे शरीरों पर केवल पतले कपडे थे, फिर भी बर्बाद करने के लिए हमारे पास एक क्षण भी न था; अत: हम तुरन्त काम पर लग गए।

दूसरी टोली के मल्लाह ऊपर चढे हुए थे और टापगैलेंट दुर्पेचा पालो को उतार रहे थे, निचले और शिखर मस्तूल के दुर्पेचा पाल तेजी से नीचे आ रहे थे। धीरे-धीरे सारे दुर्पेचा पाल उतार लिये गये, और रायल पाल, फ्लान जिब और पिछले टापगैलेंट पाल लपेट दिये गये। और जहाज उस तूफान का सामना करने के लिए तैयार हो गया। जहाज के ऊपर अगले और प्रमुख टापगैलेंट पाल अभी भी लगे हुए थे क्योकि यह "तजुर्बेकार जहाज" दिन दहाडे तूफान से डर नही सकता था, और यह निश्चित था कि वह आखिरी क्षण तक पाल ताने रहेगा।

हम सब खडे तूफान के हमले का इन्तज़ार करते रहे। पहले झोके ने ही हमें बता दिया कि इसको आसानी से बर्दाश्त करना मुश्किल है। वर्षा, ओले, बर्फ और हवा—इस सबने मजबूत से मजबूत आदमी को पीठ दिखाने पर मजबूर कर दिया; जहाज़ एक ओर को झुक गया था; मस्तूल के डन्डे और रस्सिया-रस्से चटाख से टूट रहे थे, टापगैलेंट मस्तूल बेंत की तरह झुक गये थे।

"अगले, और प्रमुख टापगैलेंट पालो को कसकर बाधो"—कप्तान ने चिल्लाकर कहा और सब उस तरफ दौड पड़े।

डेक उस वक्त लगभग पैंतालीस डिगरी के कोण में झुके हुए थे, और जहाज़ पानी में पागल घोडे की तरह भागा जा रहा था, उसका पूरा अगला हिस्सा फेन से ढंका हुआ था। पाल की रस्सिया खोल दी गयी, और यार्डों को नीचा कर दिया गया। कुछ ही क्षणो में पाल छल्ला रस्सियो और बंट लाइनो पर झुक गये।

"क्या इनको लपेट दें, श्रीमान ?" मेट ने पूछा।

कप्तान ने भरसक जोर लगाकर जवाब दिया—"अगले और पिछले शिखरपालो की रस्सियाँ खोल दो!"

शिखरपालों के यार्ड नीचे आ गए। अब हम पवन के बहाव के वपरीत दिशा में खुले बाजू की रस्सियाँ वगैरह ठीक करने ऊपर चढे। हवा, बर्फ, और ओलों की तेज़ी हमें रस्सियों से चिपकाये दे रही थी। इनके सामने खडा होना बडा मुश्किल था। एक-एक करके हम यार्डों के ऊपर आ गए। यहा का काम बड़ा

कठिन था, क्योंकि हमारे नए पाल जो अभी इस कदर खोले भी नही गए थे कि उनका कलफ निकल जाए, अब तख्ते के समान सख्त हो गए थे, और नए ईयरिंग तथा रीफ डोरिया जो ओलो के कारण कठोर हो गयी थी, अब लोहे के तारो के समान चोट पहुचा रहे थे। गोल जैकेट और तिनको का टोप पहने, हम जल्दी ही बिल्कुल भीग गए। मौसम हर क्षण अधिक ठन्डा होता जा रहा था। हमारे हाथ शीघ्र ही अकड कर सुन्न पड गए। हर वस्तु की कठोरता के अलावा, इस बात के कारण हमें यार्ड पर काफी देर लगी।

यह काम करने के बाद हम घुटनो तक पानी में डूबे हुए डेक पर उतर आए, अब हमने पाल की रस्सियों को अनुवात की ओर किया और शिखरपाल तान दिया, और तब हम प्रमुख शिखर पाल यार्ड पर गये और उस पाल को उसी रंग से छोटा किया। जैसा मैंने पहले भी कहा है, हमारी संख्या काफी कम हो गई थी; और सबसे खराब बात यह थी कि हमारे बढ़ई ने, सिर्फ दो दिन पहले, अपने पैर में कुल्हाड़ी मार ली थी, इसलिए वह ऊपर चढ नही सकता था। इससे हमारी शक्ति इतनी कम हो गई कि हम ऐसे मौसम में एक समय में एक से अधिक शिखरपाल को नही संभाल पा रहे थे; और हमें दुगुनी मेहनत करनी पड रही थी। प्रमुख शिखरपाल यार्ड से हम प्रमुख यार्ड पर पहुँचे और हमने प्रमुख पाल में एक लपेट दे दिया। अभी हम डेक पर पहुचे ही थे कि आज्ञा मिली—

"पिछले शिखरपाल वाले नाविको! ऊपर पहुँचो और पिछले शिखरपाल को छोटा कर दो!"

यह आज्ञा मेरे लिए थी। सबसे नज़दीक होने के कारण मैं सबसे पहले ईयरिंग पर जा पहुंचा। अग्रेज़ बेन मेरे तुरन्त बाद यार्ड पर पहुँचा और उसने अनुवात की ईयरिंग को सभाला। हमारी टोली के शेष मल्लाह भी फौरन यार्ड पर पहुच गए और पाल को संभालने लगे। तभी मालिम ने दया करके रसोइए और स्टीवार्ड को भी हमारी सहायता करने के लिए भेज दिया। मैं कह नहीं सकता कि दूसरों को अपना काम करने में कितना समय लगा लेकिन पाल कोनों पर एक शक्तिशाली मल्लाह की सहायता पा कर भी, अपनी शक्ति भर प्रयत्न करने के बावजूद, मैं रस्सी की सहायता से पाल को यार्ड से तब तक नही बांध सका जब तक कि बंट में स्थित मल्लाह देरी के लिए मेरी आलोचना न करने लगे।

पाल को छोटा करने के बाद हम नीचे उतर आए और पाल की रस्सियो पर काम करने लगे।

इस बीच जिब को लपेट दिया गया था, और स्थायी पाल को लगा दिया गया था और जहाज के पाल अब चूकि कम कर दिए गए थे, इसलिए वह सीधा हो गया था और नियन्त्रित किया जा सकता था। लेकिन बंट लाइन में दो टापगैलेंट पाल अभी लटके रह गये थे और वे फडफड करते उसे इस तरह झकझोर रहे थे जैसे वे मस्तूल को ही उखाड फेंकेंगे। हमने मस्तूल के शिखर की ओर देखा और हम समझ गए कि हमारा काम अभी भी पूरा नही हुआ है, और ज्यो ही मालिम ने हमें डेक पर मौजूद देखा कि "चार आदमी ऊपर चढ़ो और टापगैलेंट पालो को लपेट कर बाध दो।"

यह हुक्म फिर मुझे दिया गया था। हम में से दो आगे की रस्सियों की ओर गए, और दो नाविक प्रमुख टापगैलेंट याडं की ओर लपके। बरांडलो के ऊपर अब बर्फ़ जम गया था, स्थिर रस्सियो के चारो ओर तथा मस्तूलो और यार्डों के खुले बाजू पर ओले परत या केक के रूप में जम गए थे। जब हम यार्ड पर पहुँचे तो मेरे हाथ इतने सुन्न पड गए थे कि जान जाने का खतरा होता तो भी में गैस्केट डोरी की गाँठ न खोल पाता।

कुछ देर तक हम दोनो अपने हाथो को पाल पर पटकते हुए यार्ड पर पड़े रहे। फिर हमारी अंगुलियो में खून दौडना शुरू हो गया और अगले ही क्षण हमारे हाथ खून की अच्छी रफ्तार के कारण काफी गर्म हो गए।

यार्ड पर इस समय जो छोकरा मेरे साथ था, वह बोस्टन के एक स्कूल में पढा हुआ एकदम कमजोर व नातजुर्बेकार लड़का था। वह "स्प्रिट पाल की रस्सो की गांठ से ज्यादा बडा" नही था, "न ही वह इतना ताकतवर था कि छोटी सी मछली को बरतन में से निकाल सके।" लेकिन यही छोकरा अब "शिखर मस्तूल सा लम्बा, बैल को लडाई में हरा देने और खा जाने लायक बलवान हो गया था।"

हमने मिलकर पाल को सम्भाला। छह या आठ मिनटो तक घसीटने, खीचने और ढकेलने के कठिन श्रम के बाद हम पाल को बांधने में सफल हो सके। पाल इस वक्त लोहे की चादर जैसा सख्त हो गया। हमने उसको बहुत अच्छी तरह लपेटा क्योकि हम जानते थे कि अगर यह पाल किसी जगह से भी खुल गया तो

मालिम हमको रात में किसी वक्त भी, जब हम नीचे के हिस्से में पहरा दे रहे होगे, बुला लेगा और उसको फिर से बाधने के लिए ऊपर भेज देगा।

मैं एक मिनट की मोहलत चाहता था ताकि मैं जल्दी से कूद कर नीचे पहुच जाऊं और मोटी जैकिट तथा बरसाती टोप झटपट उठा लाऊ। किन्तु जब हम डेक पर पहुँचे तो हमें पता लगा कि आठ घन्टिया बज चुकी हैं, और कि दूसरा दल पहरे के लिए नीचे जा चुका है। इसका अर्थ यह था कि अभी हमें दो घन्टो का अधपहरा देना है, और करने के लिए अभी बहुत-सा काम पडा है। अब दक्षिण-पश्चिम से तेज झन्झा चलने लगी थी लेकिन अभी हमारा जहाज दक्षिण में इतना नही गया था कि हम उसका लाभ उठा सकें। डेको पर बर्फ जमी हुई थी। ओले लगातार बरस रहे थे। वास्तव में केपहार्न का मौसम पूरी गम्भीरता से शुरू हो गया था। इन सारी कठिनाइयो के बावजूद अन्धेरा होने से पहले हमें सारे दुर्ऊंचा पालों को उतारना और सम्भाल कर रखना था। फिर मस्तूल के शिखर पर चढ कर हमें आगे और पीछे की नल्लियो को दुरुस्त करना था, और पालो की रस्सियो और डोरियों की तह कर के रखना था।

चार या पाँच मल्लाहों के लिए इतना सब कुछ कर लेना बहुत मुश्किल था जब कि तेज तूफान हमें उडाये दे रहा था और रस्सिया बर्फ के कारण इतनी सख्त हो गई थी कि उनको मोडना लगभग असम्भव था। अगले यार्ड पर अपना काम निबटाने में मुझे लगभग आधा घन्टा लग गया।

अन्धेरा हो जाने के बाद हम इस काम से निबटे। जब हमने चार घन्टिया सुनी तो हम बडे प्रसन्न हुए। इस सकेत ने हमें दो घन्टे के लिए नीचे भेज दिया। हममें से प्रत्येक को रोटी और बीफ के साथ चाय मिली। लेकिन इससे भी अच्छी बात यह हुई कि हमें मौसम के मुताबिक मोटे व सूखे कपड़े पहनने का मौका मिला। हमारे पतले कपडे तो बिल्कुल भीग गए थे और ठन्ड से जम चुके थे।

मौसम का यह आकस्मिक परिवर्तन अन्य सभी नाविको की भाँति मुझे भी अप्रीतिकर लगा। हम इसके लिए तैयार नही थे। कई दिनो से मेरे दात में दर्द हो रहा था। यह ठन्डा मौसम तथा भीगना, व बर्फ में ठिठुरना मेरे दांत के दर्द के लिए कोई अच्छी बात न थी। मुझे शीघ्र ही महसूस हुआ कि दर्द जोर पकडता जा रहा है और चेहरे के सारे हिस्सो में फैलता जा रहा है। पहरा खत्म होने से पहले ही मैं जहाज के पिछले हिस्से में मालिम से दवा लाने गया। दवाओ की

पेटी का अध्यक्ष मालिम ही था। लेकिन पेटी को देख कर ऐसा लग जैसे हमारा सफ़र खत्म हो गया हो । लौडनम की कुछ बून्दो को छोड कर उसमें कुछ न बचा था और इसको सकट काल के लिए बचा रखना आवश्यक था। इसलिए मुझे बिना दवा के दर्द को बर्दाश्त करना पडा।

आठ घन्टिया बजने पर जब हम डेक पर पहुँचे तो हमने देखा कि बर्फ गिरनी खत्म हो गई है, और आसमान में कुछ तारे चमक रहे हैं। मगर बादल काले थे, और झन्झा लगातार चल रही थी। आधी रात से थोडा पहले मैं ऊपर चढा और पिछले रायल यार्ड को नीचा कर दिया। सौभाग्य से यह काम मालिम को संतोष-जनक लगा। उसने कहा कि यह मैंने "बडे ढङ्ग से" किया है। नीचे के हिस्से में अगले चार घन्टे मैं चैन से न बिता सका। सारे वक्त मैं अपनी बर्थ पर आखें खोले लेटा रहा। मेरे चेहरे में दर्द हो रहा था । मैंने हर घन्टी की आवाज़ साफ़ साफ सुनी। चार बजे मैं ड्यूटी देने के लिए बाहर आया । उस वक्त मुझ में दिन की कष्टपूर्ण ड्यूटी को निबाहने के लिए बहुत कम उत्साह था।

समुद्र पर यात्रा करते हुए कोई मनुष्य खराब मौसम और कठिन श्रम को झेल सकता है, बशर्ते उसमें उत्साह हो और वह स्वस्थ हो। शरीर में पीडा व नींद की प्रबल इच्छा किसी को भी पस्त कर दे सकती है। मगर काम इतना बाकी पडा था कि सोचने के लिए जरा भी वक्त न था। कल के तूफ़ान ने और कुछ दिनो पहले की प्रचन्ड तरगो ने कप्तान को विश्वास दिला दिया था (और हमें दस डिग्री दक्षिण की ओर जाना था) कि अभी हमारे सामने कोई अन्य कठिनाई आने वाली है जिसकी ओर से हम निश्चित नही हो सकते। अत उसने लम्बे टापगैलेंट मस्तूलो को नीचा करने की आज्ञा दी।

आज्ञानुसार हम टापगैलेंट और रायल यार्डों पर चढे और फ्लाइंग जिब को लपेट कर टापगैलेंट मस्तूल उतार लिये गये और दीर्घ नौका की बाहरी दीवार के साथ उन्हे डेक पर बाँध दिया गया। फिर रस्सियो को नीचे उतारा गया लपेट कर रख दिया गया तथा डेक के ऊपर शाति छा गयी । जहाज मे ऐसा कोई मल्लाह न था जो इन बल्लियो को उतरता देख कर खुश न हुआ हो। क्योकि जब तक यार्ड ऊपर थे तब तक तूफान के उतार के हलके से सकेत पर ही हमें टापगैलेन्ट पालों को ढीला छोडना पडता था, और बर्फानी तूफान के वक्त हमें उनको फिर लपेटना पड़ता था। हमें उनको बर्फ जमी पतली रस्सियों पर उतरना-चढ़ना पडता

था, तथादक्षिणी ध्रुव से सीधे आते हुए तूफान के दौरान रायल यार्डों को नीचा करना पडता था ।

इसके अलावा हमारा शानदार जहाज अपने सारे लवे स्तूपाकार मस्तूलो व यार्डों तथा नुकीली बूम (जो बन्दरगाह में उसको अलंकृत करती थी), और सारे पालों को, जिन्होने कुछ दिन पहले एक बादल की तरह उसे ढक रखा था, उतार कर कुश्ती के लिए अखाड़े में उतरने वाले पहलवान की तरह अब बडा भला लग रहा था । यह उसकी एकाकी स्थिति के अनुकूल भी था—उसे इस सुदूर ध्रुव मे, जहाँ हर समय रात छायी रहती थी, तूफान, हवा, और बर्फ़ का अकेला रह कर सामना करना था ।

शुक्रवार, एक जुलाई । अब हम लगभग केप हार्न के अक्षाश के पास पहुँच गये थे । किन्तु अभी हमें पूर्व की ओर चालीस डिग्री सफर और करना था । तेज पश्चिमी झन्झा चल रही थी । हमने यार्डों को पवनानुकूल किया और अगले शिखर-पालो का एक लपेट खोल दिया । अब हम दक्षिण के मार्ग से पूर्व की ओर यह आशा लिए बढे कि हफ्ते-दस दिन में हम केपहार्न पहुँच जाएगे ।

जहां तक मेरा सबंध है, मैं पिछले अडतालीस घन्टो में बिल्कुल नही सोया था । आराम न करने, लगातार भीगते रहने व ठन्ड खाने के कारण सूजन बहुत बढ गया था । मेरा चेहरा सूज कर दुगुना हो गया था । भोजन करने के लिए भी मुंह खोलना मेरे लिए असम्भव था । ऐसी हालत देख कर स्टीवार्ड ने कप्तान से मेरे लिए कुछ चावल उबाल देने की आज्ञा माँगी । लेकिन उसे यह जवाब मिला—

"नही, बिल्कुल नही । उससे कहो कि वह नमकीन बीफ़ के साथ मोटी रोटी खाए, जैसे और सब खा रहें हैं ।"

इसके लिए मैं वाकई उसका आभारी हुआ क्योकि सच्चाई यह है कि कप्तान से मैंने बिल्कुल इसी उत्तर की आशा की थी । फिर भी मुझे भूखा नही रहना पडा । मालिम मल्लाह होने के साथ-साथ इन्सान भी था और हमेशा मुझसे मित्रवत व्यवहार करता था । उसने चोरी से चावल से भरा एक तसला रसोई में भेज दिया और रसोइए से कह दिया कि वह मेरे लिए चावल उबाल दे और "बुड्ढे" को इसका पता न लगने दे ।

अगर मौसम अच्छा होता या हम बन्दरगाह में लंगर डाले पड़े होते तो मैं

डेक से नीचे चला जाता और जब तक मेरा चेहरा बिल्कुल ठीक न हो जाता, तब तक वहीं पडा रहता। लेकिन ऐसे खराब मौसम, और मल्लाहों की कमी के कारण मेरे लिए यह मुमकिन न था कि मैं अपनी जगह छोडकर अलग हो जाऊँ। इसलिए मैं डेक पर मौजूद रहा और अपनी ड्यूटी को जहा तक हो सका, पूरी तरह निभाता रहा।

शनिवार, दो जुलाई। आज सूरज निकता तो सही मगर वह आकाश पर इतना नीचा रहा कि उससे गर्मी नही मिल सकी, और हमारे पालो तथा रस्सियों से बर्फ नही पिघली। फिर भी उसको चमकता हुआ देख कर हमें सुख मिला। पश्चिम की ओर से समीर निरतर बह रहा था। वातावरण पहले साफ और ठन्डा था, किन्तु अब कुछ घन्टो से नम हो गया था और उसमें एक अरुचिकर गीली ठन्डक आ गई थी। पहिये पर से आये मल्लाह ने बताया कि उसने कप्तान को यात्री से यह कहते सुना है कि सुबह से अब तक थर्मामीटर में पारा कई डिग्री नीचे गिर गया है। कप्तान इसका कोई कारण न बता सका था। वैसे उसका अनुमान था कि जहाज के आस पास जरूर कोई हिमखण्ड है। उसने यह भी कहा कि इस अक्षांश में इस मौसम में आज तक कोई हिमखण्ड नही देखा गया।

बारह बजे हम डेक से नीचे गए और हमने डिनर खतम ही किया था कि रसोइए ने मोग्वे से झाक कर नीचे देखा और हमें अपने जोवन का सुंदरतम दृश्य देखने के लिए डेक पर बुलाया।

सबसे पहले ऊपर पहुचने वाले ने कहा—"अरे, रसोइए किधर देखूं?"

"डाबा मोरे पर" और उस तरफ, महासमुद्र में कई मील दूर, एक बहुत बडा, टेढा-मेढा, महापिंड तैर रहा था। उसकी चोटिया बर्फ से ढंकी हुई थी और बीच का हिस्सा गहरे नीले रंग का था। एक नाविक ने जो इससे पहले उत्तरी महासमुद्र में यात्रा कर चुका था, बताया कि यही हिमशैल है और यह सबसे बडे आकार वाला है। जितनी दूर तक दीख पडता था, दूर-दूर तक सब तरफ, गहरे नीले रंग का समुद्र दिखाई दे रहा था। तरगें काफी ऊचाई तक उमड रही थी और सूरज की रोशनी में चमक रही थी। तरगों के बोचोंबीच यह विशाल पर्वत-द्वीप पडा था। उसके खोखले हिस्से व घाटिया गहरे रङ्ग की दिखाई दे रही थी और नोकें व चोटिया सूरज को रोशनी में जगमग कर रही थी।

तुरन्त ही सारे मल्लाह डेक पर इकट्ठे हो गए और नाना प्रकार से उसके

सौन्दर्य व उसकी सुषमा की प्रशसा करने लगे। किन्तु शब्द उस दृश्य की विचित्रता, श्रेष्ठता, भव्यता, व उत्कृष्टता का यथारूप वर्णन करने में समर्थ ही नही है। उसका विशाल आकार क्योकि उसकी परिधि दो से तीन मील तक की जरूर रही होगी और ऊचाई कई सौ फुट—उसकी मथर गति,—पानी के ऊपर उठती गिरती तलहटी, और बादलो को छूती चोटिया, लहरों का उसने लगातार टकराना, जो झाग से भरी हुई, ऊची दौडती हुई, उसके तल पर सफेद परत की कतार बना देती थीं; उस विशाल पिन्ड में भयानक गर्जन करते हुए दरारें पडना, और बडे-बडे टुकडों का अलग-अलग होकर पानी में गिर जाना; साथ ही उसका सामीप्य तथा आसन्नता, जिसके कारण थोडा डर भी लगता था,—इन सबने मिल कर उसे एक विचित्र भव्यता प्रदान कर दी थी।

जैसा मैं कह चुका हूँ—उस पिण्ड का शरीर नीले रङ्ग का था और उसके तल पर जमे हुए झाग की परत पडी हुई थी। ज्यो ही वह कोरो व चोटी पर से कुछ पारदर्शी हुआ, उसका नीला रङ्ग बर्फ की सफेदी में बदल गया। ऐसा लगता था जैसे वह धीरे धीरे बहते हुए उत्तर की ओर जा रहा है। इसलिए हम उससे दूर रहे और उससे बच कर यात्रा करते रहे। दोपहर भर वह हमारी आखो के सामने रहा। जब हम उसकी अनुवात दिशा में पहुचे, तो हवा वहनी बन्द हो गई। इसलिए हम रात के अधिकाश में उसके पास रहे। दुख की बात यह थी कि आकाश में चाँद नही था। लेकिन आकाश साफ था और हम लोग तारो की ओर धीरे-धीरे बढती उसकी कोरो को देख कर उस अतिविशाल पिण्ड को निरतर सरकते हुए देखते रहे।

हमारी ड्यूटी के दौरान कई बार जोर से तडकने की आवाज आई। ऐसा लगा जैसे ये आवाजें उस विशाल पिण्ड के लम्बाई में एक सिरे से दूसरे सिरे तक टूटने की आवाजें हैं। कई टुकडे गर्जन करते हुए उस पिण्ड से अलग हुए और समुद्र में गहरे पैठ गए। सुबह के वक्त तेज हवा बहनी शुरू हो गई और हम उसको पीछे छोडकर आगे बढ गए। दिन की रोशनी के उगते वक्त वह हमारी आँखो से ओझल हो गया। अगले दिन, यानी

रविवार, तीन जुलाई, को लगातार बहुत तेज हवा बहती रही। हवा अत्यधिक ठन्डी थी। थर्मामीटर में पारा बहुत नीचे पहुँच गया था। इस दिन हमने कई हिमशैल देखे जो विभिन्न आकार के थे। मगर इनमें से कोई भी इतने निकट

नही था। चूंकि हमने उनको बहुत दूर से देखा, इसलिए हो सकता है कि उनमें से कुछ कल वाले हिमशैल से बड़े या उसके बराबर रहे हो। दोपहर के वक्त हम ५५° १२' दक्षिण के अक्षाश में थे, और हमारा अनुमान था कि देशाँतर ८९° ५' पश्चिम है। रात होते-होते हवा दक्षिण की ओर बहने लगी, और हमे हमारे रास्ते से कुछ अलग हटा ले गई। एक तेज़, बहुत तेज झझा चल निकली। लेकिन हमने उसकी तरफ़ ज्यादा ध्यान न दिया। वजह यह थी कि न तो वर्षा हो रही थी, और न बर्फ ही गिर रही थी, और हमने अपने जहाज के पाल पहले ही छोटे कर लिये थे।

सोमवार, चार जुलाई। बोस्टन में "स्वाधीनता दिवस" के समारोह हो रहे होगे। कितनी तोपें दागी गई होगी, कितनी घन्टिया बजी होगी, और हमारे देश के प्रत्येक भाग में सब प्रकार के कितने ही आन्दोत्सव हुए होगे। छतरियाँ ताने औरतें (जो टन्डी हवा और महासमुद्र के दर्शन का आनन्द लेने के लिए नैहट नही गई होगी) और सफेद पैंट व सिल्क के बडे-बडे मोजे चढाए छैल-छबीले लोग सडकों पर सैर कर रहे होगे! लोग कितनी आइसक्रीम खा गए होगे, और दूर से लाया हुआ कितना ही बर्फ बिक गया होगा! आज हमने जो हिमशैल देखे हैं, उनमें से अगर सबसे छोटा शैल भी गरीब मल्लाह को बोस्टन में मिल जाय तो उसकी किस्मत खुल जाय। और मैं दावे से कह सकता हूँ कि उसे इस बात मे जरा भी आपत्ति न होती। किन्तु इतना निश्चित है कि चार जुलाई का पवित्र दिन इस जगह नहीं बीतना चाहिए था।

खैर, स्वयं को गर्म रखना, और जहाज को बर्फ से अलग बचाए रखना—हम इन्हीं कामो मे लगे रहे। फिर भी हम में से कोई भी उस दिन के महत्व को भूल न पाया। सारे मल्लाह सोत्साह एक-दूसरे के प्रति शुभ कामनाएं प्रकट करते रहे, अटकलें लगाते और तुलना करते रहे। ये सब हास्यास्पद भी थी, और गभीर भी। सूरज चमकीला तो था मगर कुछ काले बादल उसके आस पास दौडते हुए उसे फौरन ढंक लेते थे।

दोपहर के वक्त हम ५४° २७' दक्षिण अक्षांश में थे और देशातर था ८५° ५' पश्चिम। हम पश्चिम की ओर बहुत फुर्ती से बढे थे मगर हवा के कारण हम अपने अक्षाश से थोडा हट गए थे। दिन और रात के बीच में, अर्थात् नौ और दोन बजे के बीच में हमने विभिन्न आकार के चौंतीस हिमद्वीप देखे। उनमें से कुछ

तो हमारे जहाज के आकार से ज्यादा बडे न थें, और कुछ उतने बडे थे, जितना बडा द्वीप हमने पहले देखा था । ज्यो-ज्यो हम आगे बढते गए, मार्ग में मिलने वाले हिम द्वीपो की सख्या बढती गई किन्तु उनका आकार छोटा होता गया । इस दिन सूर्यास्त के समय मस्तूल शिखर से एक आदमी ने बर्फ का बहता हुआ एक विशाल क्षेत्र देखा । इसको दक्षिण-पूर्व में "हिमक्षेत्र" कहा जाता है ।

इस किस्म का बर्फ विशाल हिमशैलों की तुलना में बहुत ज्यादा खतरनाक होता है, क्योंकि हिमशैलो को दूर से देखा जा सकता है, और उनसे बचाव किया जा सकता है । मगर ऐसे बर्फ से, जो विशाल मात्रा में पानी पर तैर रहा हो, और महासमुद्र को मीलो तक ढके हुए हो, और जिसका आकार सब तरह का हो—लम्बा, चपटा, और टूटे हुए डले जैसा, और बीच में पानी के ऊपर बीस बीस फुट ऊंचा उठा हुआ द्वीप हो जो जहाज के ढांचे के बराबर बडा हो; साफ बच कर आगे बढ जाना बहुत मुश्किल है ।

इस पर बराबर नजर रखना बहुत जरूरी था । वजह यह थी कि समुद्र के उभार के साथ यह बर्फ हमारे जहाज की तरफ आ रहा था और इसका एक, अकेला टुकडा भी हमारे जहाज में छेद कर सकता था, और यह छेद हमारे विनाश का कारण होता । अगर हम नाव पानी में उतार भी लेते, तो हमारा यह प्रयत्न भी बेकार रहता क्योंकि ऐसे समुद्र में कोई नाव नहीं टिक सकती । और ऐसे मौसम में कोई आदमी नाव में बैठ कर ज्यादा देर तक जिन्दा नही रह सकता । बात यही खत्म नही हुई । हमारी उलझन और बढी । सांझ होते ही हवा सीधी, पूर्व की ओर से आने लगी, और हमारे एकदम सामने तेज झन्झा चलने लगी जिसमें बर्फ और ओले भी थे । कुहरा इतना घना हो गया कि जहाज की आधी लम्बाई से ज्यादा दूर तक देखना मुमकिन न रहा ।

हमने पश्चिमी झन्झाओ पर अपनी समस्त आशाए केंद्रित की थीं, लेकिन अब झन्झा पूर्व से आ रही थी और हमारा प्रमुख सहारा टूट चुका था । अब हम केप से पश्चिम दिशा में लगभग सात सौ मील दूर थे । हमारे सामने पूर्व की ओर से आती हुई भयकर झन्झा थी । मौसम इतना खराब था कि जब तक बर्फ हमारे मोरो के ठीक नीचे न आ जाता, हम अपने चारो ओर बिखरे बर्फ को भी न देख पाते थे ।

चार बजे (तब बिल्कुल अधेरा था) सारे मल्लाहो को बुलाया गया और

सबको ओले और वर्षा के भयकर तूफान को झेलते हुए पाल लपेटने के लिए ऊपर भेजा गया। हम सब केप हार्न की पोशाक पहने हुए थे – भारी जूते, बरसाती कंटोप, मोटे कपडे की पतलून और जैकट, और हम में से कुछ ने उन सबके ऊपर मोम जामे के सूट पहन रखे थे। हम डेक पर बिना अंगुलियो वाले दस्ताने भी पहने हुए थे लेकिन उनको पहनकर ऊपर जाना बेकार था, क्योंकि उनको पहन कर काम नही किया जा सकता। हम चूंकि पहले ही भीग चुके थे और थकान के कारण चूर-चूर हो रहे थे, इसलिए बहुत मुमकिन था कि उन दस्तानो के कारण कोई मनुष्य फिसल कर बोर्ड पर गिर पडता। वजह यह है कि वह उगलियो से रस्सी पकड कर ही ऊपर काम कर सकता था। इसलिए हमने बिना दस्तानो के ही, नंगे हाथो काम करने का निश्चय किया। हमारे चेहरे भी खुले थे। इसलिए भारी वज़न वाले बडे ओलो के लगने से हमारे हाथ और चेहरे घायल हो गये।

अब हमारा जहाज़—उसका ढांचा, डन्डे और स्थायी रस्सियाँ—बर्फ से बिल्कुल घिर गया था। चल रस्सियाँ इतनी सख्त हो चुकी थीं कि उनको मोडना या उनमें गाँठ बाँधना बडा मुश्किल था। सारे पाल लोहे की चादर के माफिक सख्त हो गए थे। क्योकि हमने एक एक करके (चूकि इस काम में ज्यादा वक्त और ज्यादा आदमियो की जरूरत थी) कोर्मो, पिछले शिखरपाल और अगले शिखर मस्तूल न तान के पालों को लपेट दिया, और अगले व प्रमुख शिखरपालो को छोटा कर दिया। इसके बाद हमने अगले शिखरपाल को तना रहने देकर जहाज आगे बढ़ाया, और प्रमुख शिखरपाल भी बंटलाइन में तैयार रखा ताकि किसी हिमशैल से बचने के लिए प्रतिवात दिशा में जाने के लिए उसका प्रयोग आवश्यकतानुसार किया जा सके। फिर पहरा लगा दिया गया जो लगातार सुबह तक चलता रहा।

यह रात बहुत उबाने वाली और बेचैन करने वाली साबित हुई। सारी रात बहुत तेज हवा चलती रही। इसके साथ वर्षा, बर्फ, या ओलों की झडी बराबर लगी रही। यही नही, हमारे चारों तरफ बर्फ ही बर्फ थी, और पानी "कीचड की तरह" गाढ़ा हो गया था।

रात भर कप्तान डेक पर मौजूद रहा। उसने रसोइए को रसोई में बराबर ड्यूटी पर रखा। चूल्हे में लगातार तेज आग जलती रही ताकि कप्तान को बराबर काफी मिलती रहे। एक या दो बार उसने अपने अफसरों को भी काफी दी। मगर मल्लाहों को काफी की एक बूंद भी न दी गई। कप्तान सारे दिन सोता

रहता है, और रात में या दिन में, जब चाहे, आ-जा सकता है। उसको तो केबिन में भी काफी या ब्राडी मिल सकती है, रसोई में काफी मिल सकती है। मगर मल्लाह को, जिसकी ड्यूटी है कि हर मुसीबत का मुकाबला करे और बारिश व ठन्ड में काम करे, अपने सूखे होंठ गीले करने, या पेट को गर्म करने के लिए कुछ भी नही मिल सकता।

हमारा जहाज़ "मदिरा-निषेध वाला जहाज़" था। ऐसे दूसरे जहाज़ों की तरह ही यहाँ भी सारा निषेध मल्लाहो के लिए ही था। अगर मल्लाह शराब का एक गिलास भी पी ले तो यह डर रहता है कि वह नशे में धुत न हो जाए, मगर कप्तान पर, जिसके अधिकार में ही सब कुछ रहता है, जो जितनी चाहे, पी सकता है, और जिसके आत्मसयम और विवेक पर ही बाकी सब लोगो का जीवन निर्भर रहता है, इतना यकीन किया जाता है कि उसके पीने पर किसी किस्म की पाबंदी नही लगायी जाती। मल्लाह यह कभी मानने के लिए तैयार न होंगे कि रम उनके लिए खतरनाक चीज़ है। अगर ऐसा है तो उनकी रम उनसे छीन कर अफसरों को क्यो दी जाती है? न ही वे यह स्वीकार करेंगे कि मदिरा-निषेध उनके लिए कल्याणकारी है। यह निषेध उनसे वह चीज छीन लेता है जो उनके पास हमेशा रहती है, और उसके बदले में कुछ नही देता। अपनी शराब अफसरों को दी जाते देख कर वे यह कभी नही मान सकते कि यह सब उनके भले के लिए ही किया जा रहा है। उसके बदले में कुछ न पाकर वे यह कभी यकीन नही कर सकते कि ऐसा उदारतावश किया गया है।

बात इससे बिलकुल उलटी है। अनेक मल्लाह इसको जुल्म का एक नया तरीका मानते हैं। इसकी वजह यह नही है कि रम उन्हे अच्छी लगती है। मेरा ऐसे एक भी मल्लाह से परिचय नही हुआ जो ठन्डी रातो में रम की बनिस्बत गर्म काफी या चाकलेट के मग्गे को ज्यादा पसन्द न करता हो। उन सबकी यही धारणा है कि रम सिर्फ कुछ देर के लिए ही गर्म करती है। फिर भी अगर रम से अच्छी कोई अन्य चीज़ उन्हे नही मिल सकती तो उन्हे कम से कम वह तो मिलनी ही चाहिए। उसको पी लेने से थोडी देर के लिए जो गर्मी व जोश मिलता है, सारे मल्लाहों को पिछले भाग में बुलाने और रम देने से उन्हे थोडी देर के लिए सारी रात के उबाने वाले पहरे से जो छूट व तब्दीली मिलती है, और उस मौके का वह किस तरह इन्तज़ार करते हुए उसके बारे में बातचीत करते हैं—ये सारी बातें

मिल कर रम को ऐसा महत्व दे देती हैं और उसको इतना उपयोगी बना देती हैं जिन्हें ऐसा कोई आदमी समझ ही नहीं सकता जिसने मस्तूल के पास खड़े होकर पहरा नहीं दिया है।

उधर से आते समय में "पिलग्रिम" में केप हार्न से गुजरा था। वह मदिरा निषेध वाला जहाज़ नहीं था। उसमें बीच वाले और सुबह वाले पहरे के वक्त तथा शिखरपालों को छोटा करने के बाद ग्राग (पानी मिली हुई शराब) दी जाती थी। हालांकि मैंने इससे पहले रम कभी न पी थी, और आगे भी रम पीने का मेरा कोई इरादा न था, फिर भी मैं ह्वीत के पास जाकर सबके साथ, रम इस-लिए पी लेता था क्योंकि इससे थोड़ी देर के लिए गर्मी मिलती थी और अपने पहरे के कर्त्तव्यों के प्रति हमारी भावनाओं में कुछ भला परिवर्तन आता था। इसके अलावा जैसा मैंने पहले कहा है, जहाज पर ऐसा एक मल्लाह भी न था जो काफी या चाकलेट के एक मग्गे के लिए या हमारे रोजमर्रा के पेय के लिए— "अभिमंत्रित पानी और ईर्ष्या के योग्य चाय[1]—सारी रम कुत्तों के आगे न डाल दे। मैंने उनको इस तरह की बातें कहते हुए दसियों बार सुना है। मदिरा निषेध का यह सुधार मल्लाहों के लिए सब से अधिक कल्याणकारी था, मगर जब उनको ग्राग भी न दिया जाए, तो उसकी एवज में उन्हें कुछ तो दिया ही जाना चाहिए। आजकल इस सुधार का जिस रूप में अधिकांश जहाजों में प्रयोग होता है, उससे जहाज के मालिकों की बहुत बचत होती है। यही कारण है कि मदिरा-निषेध वाले जहाजों की संख्या यकायक बहुत बढ़ गई है। उनकी संख्या में इस वृद्धि से मदिरा-निषेध के समर्थकों को भी आश्चर्य हुआ है। अगर प्रत्येक व्यापारी जहाज के खर्चों में से ग्राग को काट कर इस तरह की व्यवस्था कर दी जाए कि

---

१. हमारे लिए जो चाय बनाई जाती थी, उसमें खास-खास चीजें इस अनु-पात में मिलाई जाती थीं (और जैसा मैंने पहले कहा है—हमारा जहाज अमरीका के व्यापारी जहाजों का आदर्श प्रतिनिधि था) : एक पिंट (एक गैलन का आठवां हिस्सा, अर्थात् लगभग ११ छटांक) चाय, डेढ़ पिंट सीरा, और लगभग तीन गैलन पानी। इन तीनों को मिलाकर तांबे के बर्त्तनों में उबाला जाता, और बांटने से पहले एक छड़ी से घोला जाता ताकि हर एक के हिस्से में बराबर-बराबर मिठास और चाय आए। मगर कैबिनों में चाय आम ढंग से अर्थात् चायदानी में दी जाती थी और अलग से चीनी मिलाकर पी जाती थी।

तूफानी रात मे शिखरपाल यार्ड से नीचे उतरते ही हर मल्लाह को आग की एवज में उतनी ही काफी या चाकलेट मिलेगी तो मेरा खयाल है कि मल्लाह पुराने तरीके को छोडने के लिए फौरन तैयार हो जाएंगे ।[1]

मगर, अब मैं अपने विषय पर आऊ । रात में आठ घन्टे तक हमारा पहरा डेक पर रहा । इन आठो घन्ठो के दौरान हम कमर कस कर पहरा देते रहे । प्रत्येक मोरे पर एक आदमी अगले यार्ड के बन्टे पर एक आदमी, मोरवे पर तीसरा मालिम, प्रत्येक क्वार्टर पर एक आदमी, और पहिए पर हमेशा एक आदमी खडा पहरा देता रहा । मुख्य मालिम लगभग हर जगह मौजूद पाया जाता था और कप्तान के नीचे होने के कारण मल्लाहों को आवश्यकतानुसार आज्ञाए देता रहा । एक बार बर्फ का एक बडा टुकडा हमारे रास्ते में पडा दिखाई दिया या हमारी ओर सरकता हुआ नजर आया तो सब को आज्ञा दी गई और यथानुसार जहाज का मु ह घुमा दिया गया । कभी-कभी यार्ड को तिरछा कर के या पवनानुकूल बना कर जहाज को बर्फ से बचाया गया । इस बीच सिर्फ चारो तरफ पहरा देने का काम ही ज्यादा हुआ । अगवाड में हम लोगो की आँखें सब से ज्यादा तेजी से दौड रही थी । इस दौरान आगे के पहरे से आने वाली ये बातें ही वातावरण की नीरसता को थोडा धुलाती—"अहा, एक टापू और !", "आगे बर्फ है ?", "अनुवात मोरे पर बर्फ दीख रहा है ?", "थोडा बचाओ ?", "जरा संभल के ?"

---

१. मैं यहाँ ये टिप्पणिया देना नही चाहता हूँ । क्योंकि जहाँ तक साज सामान में बचत कर लेने की बात का ताल्लुक है, मैं कह दूँ कि हमारे जहाज के मालिको ने मल्लाहो के लिए दिया जाने वाला सब मे अच्छी किस्म का सब सामान विपुल मात्रा में दिया था । इस सामान को बाटने का सम्पूर्ण अधिकार कप्तान को ही होता है । सच तो यह है कि मल्लाहो और अफसरो के बीच 'मालिको' की ख्याति, उनके जहाजो की किस्म व साज–सामान के लिए तथा यात्रा में उदारता के संबंध में इतनी ज्यादा थी कि जब कभी यह मालुम होता कि उनका कोई जहाज लम्बी यात्रा के लिए तैयार हो रहा है और कि इस निश्चित समय मल्लाहो को जहाज पर रखा जाएगा—(एक ने मुझे बताया है) तो उस समय से आधा घन्टा पहले ही बहुत से मल्लाह भेडो के झुन्ड की तरह पीपो पर नाचते-कूदते, घाट पर धका-पेल करने लगते थे ।

इस बीच पानी और ठन्ड के कारण मेरा चेहरा इतना दर्द करने लगा था कि न तो मैं खा सकता था और न ही सो सकता था। हालांकि रात भर मैंने बाहर खड़े होकर डेक पर पहरा दिया था, फिर भी दिन निकलते-निकलते मेरी हालत ऐसी हो गई कि सारे मल्लाहों ने मुझे नीचे जाकर एक या दो दिन के लिए बिस्तर पर पड़ जाने की सलाह दी। उन्होने मुझे बताया कि अगर मैंने उनकी बात न मानी तो मेरी तबियत ठीक होने में ज्यादा वक्त लगेगा, और यह भी मुमकिन है कि मुझे हनुस्तम्भ (एक बीमारी) हो जाए। जब पहरा बदला तो मैं स्टोअरेज में चला गया। वहाँ मैंने अपना टोप और मफ़लर उतार दिया और मालिम को अपना चेहरा दिखाया। मालिम ने मुझे फ़ौरन नीचे चले जाने की आज्ञा दी और जब तक सूजन न उतर जाए तब तक आराम करने को कहा। उसने रसोइये को आज्ञा दी कि वह मेरे लिए पुल्टिस बना दे। उसने यह भी कहा कि वह मेरे बारे में कप्तान से बात करेगा।

मैं नीचे चला गया और बदन को कम्बल तथा जैकिट से ढंक कर अपनी बर्थ पर लेट गया। करीब चौबीस घन्टों तक भीषण दर्द से निकम्मा बना हुआ मैं पड़ा रहा और इस बीच न तो मैं सो पाया और न जाग ही पाया। मैंने पहरे की पुकार सुनी, लोगों के नीचे–ऊपर जाने की आवाजें सुनीं, और कभी-कभी डेक पर शोर तथा "बर्फ़" की आवाजें सुनीं, मगर मैंने किसी ओर भी ज्यादा ध्यान न दिया। चौबीस घन्टे बीतते–बीतते दर्द कम होने लगा, और मैं देर तक सोता रहा, इससे मेरी तबियत फिर पहली जैसी हो गई। इस पर भी मेरा चेहरा इतना सूजा हुआ व कमजोर हो रहा था कि दो या तीन दिनों तक और मुझे अपनी बर्थ पर लेटे रहना पड़ा।

इन दो दिनों के दौरान (जब मैं नीचे पड़ा था) मौसम काफ़ी–कुछ पहले जैसा ही था—सामने से बहने वाली हवाएं, और बर्फ़ तथा वर्षा; या अगर हवा कुछ धीमी हुई तो कुहरा इतना गहरा होता और समुद्र पर बिछी हुई बर्फ़ की तह इतनी मोटी होती कि जहाज का चलना दूभर होता। तीसरे दिन की शाम को बर्फ़ की एक बहुत मोटी तह जम गयी थी और कुहरा इतना घना हो गया कि जहाज़ उससे पूरी तरह ढंक गया। पूर्व की दिशा से बहुत तेज़ हवा बह रही थी। ओले और बर्फ़ लगातार गिर रहे थे। यह बिल्कुल निश्चित था कि रात बहुत खतरनाक व थकाने वाली साबित होगी। अंधेरा होते ही कप्तान ने सारे

मल्लाहों को जहाज के पिछले भाग में बुलाया और कहा कि कोई मल्लाह इस रात को डेक से हट कर कहीं न जाए, कि जहाज के लिये सब से बड़ा खतरा आ पहुँचा है, बर्फ का कोई एक टुकड़ा भी उसमें छेद कर सकता है, या जहाज किसी टापू से टकरा कर चूर-चूर हो सकता है। यह नहीं कहा जा सकता कि हमारा जहाज का कल सुबह तक क्या हाल होगा। इसके बाद पहरे निश्चित कर दिए गए और हर एक आदमी को उसकी जगह पर खड़ा कर दिया गया।

जब मुझे इस स्थिति का पता लगा तो मैंने सब के साथ उस खतरे का मुकाबला करने के लिए कपड़े पहनने शुरू किए। इसी समय मालिम नीचे आ पहुंचा। मेरा चेहरा देख कर उसने तुरन्त बर्थ पर लेट जाने की आज्ञा दी। उसने कहा कि अगर हम पानी में डूबेंगे तो सब साथ-साथ डूबेंगे, लेकिन अगर मैं डेक पर चला गया तो हो सकता है कि मुझे अकेले ही जिन्दगी भर लेटे रहना पड़े। जहाज के पिछले भाग से अपने लिए मैंने यह पहला आदेश ही सुना था, क्योंकि जब से मैं डेक से उतर कर नीचे आया था, न तो कप्तान ने मेरे लिए कुछ किया ही था और न ही उसने मेरे बारे में कोई पूछताछ की थी।

मालिम की आज्ञानुसार मैं फिर अपनी बर्थ पर लेट गया लेकिन उस जैसी कम्बख्त रात मैं इस जिन्दगी में कभी नहीं बिताना चाहता। मैंने उस रात बीमारी को एक अभिशाप के रूप में जितनी तीव्रता से महसूस किया, वैसा मैंने अपनी सारी जिन्दगी में कभी नहीं किया है। काश मैं सब के साथ डेक पर मौजूद हो सकता जहाँ करने, देखने और सुनने के लिए कुछ था, जहां ड्यूटी और खतरे में हाथ बंटाने के लिए साथी थे—मगर एक अन्धेरी कोठरी में अकेले ऐसे वक्त बन्द पड़े रहना जहां खतरा डेक पर लड़ने वालों के बराबर हो और उस खतरे का मुकाबला कर सकने के लिए जरा-सी ताकत भी न बची हो—यह सबसे बड़ी यन्त्रणा थी।

रात को मैं कई बार डेक पर जाने का निश्चय करके उठा, मगर मैं इसलिए ऊपर नहीं गया क्योंकि डेक पर खामोशी छाई हुई थी जिसका अर्थ यह था कि वहां कोई विशेष काम नहीं हो रहा है, और साथ ही मैंने यह भी सोचा कि ऊपर जाने से कहीं मैं ज्यादा बीमार न पड़ जाऊं। मगर फिर भी नीचे पड़े रह कर सो लेना कोई आसान बात न थी क्योंकि मेरा सिर मोरी के ठीक सामने टिका हुआ था, और ये मोरे समुद्र की लहरों में छिपे बर्फ के किसी टापू से टकरा कर किसी क्षण भी टूट सकते थे। बोस्टन से सफ़र शुरू करने के बाद मैं सिर्फ इसी बार

बीमार पडा था। बीमारी ने मुझ पर काबू पाने का सब से खराब मौका चुना था। अगर मैं सिर्फ उस रात के लिए पूरी तरह भला-चंगा और हमेशा की तरह ताकतवर हो जाता तो मैं बाकी सफर के दौरान अपने लिए बुरी से बुरी बीमारी को खुशी-खुशी चुन लेता।

जो लोग डेक पर मौजूद थे, उनके लिए यह रात वाकई बडी भीषण थी। अठारह घन्टो तक पहरा देने के बाद सुबह को नौ बजे जब वे नाश्ते के लिए नीचे आए, तो वे ठन्ड से भीगते रहने और लगातार चिन्ता करते रहने के कारण इतने निढाल हो चुके थे कि बैठते-बैठते ही अपनी गर्दनें लटका कर सो गए; और कुछ तो इतने अकड चुके थे कि बैठ भी मुश्किल से पाए। इन अठारह घन्टों के दौरान उन्हें खाने-पीने के लिए कुछ नही दिया गया था हालाकि कप्तान हर चार घन्टे में एक बार काफी पी रहा था। इस बीच सिर्फ इतना हुआ था कि मालिम ने काफी से भरा एक बर्तन चुरा लिया था। इसके बाद वह यह देखता रहा था कि कहीं कप्तान न आ जागे और दो मल्लाहो ने रसोई के पीछे छुप कर काफी पी ली थी।

हर मल्लाह अपनी जगह पर खडा था।। किसी को भी अपनी जगह मे हटने की इजाजत न थी। सारी रात वे ऐसे ही पहरा देते रहे। उन्हे सिर्फ एक बार जहाज को एक बडे टापू से टकराने से बचाने को प्रतिवात दिशा में जाने के लिए प्रमुख शिखरपाल को तानना पडा था। कुछ मल्लाह तो नीद से इतने अभिभूत हो गए थे कि अपनी जगह पर ही सो गए। तीसरे युवा मालिम की ड्यूटी अगले मोखे पर खुली जगह में खडे होने की थी। उसका बदन इतना अकड गया कि जब उसको ड्यूटी से छुट्टी मिली तो वह बैठने के लिए अपने घुटनो को मोड तक न पाया। लगातार पहरे के कारण, और ज्यो ही टापू या बर्फ के टुकडे दिखाई देते तो सुकान को तुरन्त बदला देने के कारण जहाज ने रात भर भली प्रकार सफर किया था। सिर्फ कुछ छोटे टुकडे हमारे जहाज के रास्ते में आए थे। जब पौ फटी तो सारा महासागर मीलो तक बर्फ से ढका दिखाई दिया।

पौ फटने के वक्त अचानक सन्नाटा छा गया। जैसे-जैसे सूरज आकाश में चढता गया, कुहरा कम होता गया। पश्चिम की ओर से समीर बह निकला जो शीघ्र ही झन्झा में परिणत हो गया। अब हवा ठीक थी, दिन की रोशनी थी, और हालांकि मौसम पहले की बनिस्बत अच्छा था, फिर भी अचरज की बात यह थी कि जहाज रेंग सा रहा था। यह दौडता क्यो नही? कप्तान क्या सोच रहा

है ?—ये प्रश्न हर एक के दिमाग में खलबली मचा रहे थे; और ये सवाल जल्दी ही शिकायतो और कानाफूसी में बदल गए । खास तौर से, जब दिन की रोशनी इतने कम वक्त के लिए हो और हवा भी अनुकूल दिशा में बह रही हो जिसके लिए सब लोग न जाने कब से प्रार्थनाएँ कर रहे थे—तब ऐसे मौके को हाथ से निकलने देना बहुत खराब बात थी ।

घन्टे बीतते गए । जब कप्तान ने पाल खोलने की आज्ञा देने का कोई संकेत न दिया तो मल्लाह धीरज खोने लगे; और अगवाड में इस सम्बन्ध में ज़ोर-शोर से बातचीत व सलाह-मशविरे होने लगे । सारे मल्लाह ठन्ड व अन्य मुसीबतो से बहुत तग आ चुके थे और जल्दी-जल्दी सफ़र करने के लिए बहुत बेसब्र हो उठे थे । इस अकारण विलम्ब को वे उस उत्तेजनापूर्ण व व्याकुल स्थिति में शांति पूर्वक नही सह सकते थे । कुछ ने कहा कि कप्तान डर गया है,—वह चारो ओर से आने वाली कठिनाइयो और खतरो से बिल्कुल पस्त हिम्मत हो गया है, और इसलिए उसमें पाल खोलने का साहस नही रह गया है । दूसरो ने कहा कि उत्तेजना और असमन्जस की स्थिति मे उसने ब्राडी और अफीम का इतना प्रयोग किया है कि अब वह ड्यूटी देने की स्थिति में नही है ।

बढ़ई बहुत बुद्धिमान और पक्का नाविक था । उसका मल्लाहो पर बहुत असर भी था । उसने नीचे अगवाड में आकर मल्लाहो को कप्तान के पास जाकर यह पूछने के लिए उकसाया कि वह जहाज को भगाने की आज्ञा क्यो नही देता, या वे उससे सब मल्लाहो की ओर से यह विनती करें कि वह पाल खोलने की आज्ञा दे दे । यह प्रार्थना सब को युक्तियुक्त लगी और इसलिए सारे मल्लाह इस बात पर राजी हो गए कि अगर दोपहर तक पाल न खुले तो वे कप्तान के पास जाएगे । दोपहर हो गई और पाल न खुले ।

एक बार फिर सलाह हुई और यह प्रस्ताव रखा गया कि जहाज की कमान कप्तान से छीन कर मालिम को दे दी जाए । मालिम को यह कहते सुना गया था कि अगर उसको अपने ढङ्ग से जहाज चलाने की छूट होती तो रास्ते में चाहे बर्फ होता या न होता, जहाज रात होने से पहले केप का आधा रास्ता जरूर तय कर लेता । मल्लाह इतना तग आ चुके थे, वे इतना बेसब्र हो चुके थे कि इस प्रस्ताव पर भी विचार हुआ जो खुला विद्रोह था और जिसके लिए कैद की सजा थी । बढ़ई यह कहता हुआ अपनी बर्थ पर जाकर बैठ गया कि यह साफ़-साफ़ समझ लो

कि जो हालत पिछले कुछ घन्टो से चल रही है, अगर यही हालत थोडी भी देर और रही तो कोई न कोई बडा कदम उठाना ही पडेगा ।

बढई के जाने के बाद हम आपस में इसी विषय पर बातें करते रहे, और मैंने दृढतापूर्वक अपनी राय इसके विरोध में दी । एक और मल्लाह मुझसे सहमत था । इस मल्लाह को एक ऐसे जहाज के बारे में मालूम था जिसमें मल्लाहो ने कप्तान से असन्तुष्ट होकर कुछ इसी तरह का प्रयत्न किया था और अन्त में उसके गम्भीर परिणाम हुए थे । एस——भी डेक से नीचे आने पर हमें मिल गया और हमने इस कार्यकलाप में कोई भाग न लेने का निश्चय कर लिया । इससे वे इतने निरुत्साहित हुए कि उन्हे अपना यह विचार फिलहाल त्याग देना पडा । फिर भी उन्होने कहा कि वे ज्यादा देर तक बिना पर्याप्त कारण जाने हुए निष्क्रिय नही पड़े रह सकते ।

यह स्थिति चार बजे तक चलती रही । तब सारे मल्लाहो को, जहाज के पृष्ठ भाग में छतरी पर उपस्थित होने की आज्ञा मिली । लगभग दस मिनट में सब मल्लाह अगवाड में लौट भी आए, और सारा मामला ही खत्म हो गया । बात यह हुई थी कि बढ़ई ने असमय ही और मल्लाहो से अनुमति लिए बिना ही मालिम से पूछा था कि क्या वह जहाज की कमान सम्भालने के लिए तैयार है । उसने मालिम को यह भी बता दिया था कि मल्लाह कप्तान को हटाने का इरादा कर रहे हैं । मालिम ने अपना कर्तव्य समझ कर सारी बात कप्तान को बता दी, और कप्तान ने उसी समय सब को पृष्ठभाग में बुला भेजा ।

बजाय इसके कि वह हिंसात्मक उपाय अपनाता, या कम से कम छतरी पर खडे होकर डीगें मारता, धमकिया या गालिया देता, ऐसा प्रतीत हुआ कि सब के समान सकट और दुख की अनुभूति ने उसका आवेश कम कर दिया है और उसमें अधिक मानवोचित बन्धुत्व की भावना भर दी है । उसने मल्लाहों का स्वागत शान्त, यहा तक कि उदार, ढङ्ग से किया । उसने उनको बताया कि उसे क्या खबर मिली है लेकिन उसने कहा कि मैंने इस बात पर विश्वास नही किया कि जो कुछ मुझे बताया गया है, उस पर अमल करने की कोशिश की जाएगी, कि वे हमेशा अच्छे लोग, आज्ञाकारी लोग सिद्ध हुए हैं और अपनी ड्यूटी को भली-भाति समझते हैं । उसने उनसे उनकी शिकायत पूछी और कहा कि कोई भी यह नही कह सकता कि वह जहाज को चलाने में ढील कर रहा है । (हालाँकि यह काफी हद तक सच था) और उचित और उपयुक्त अवसर पाते ही वह, पाल

खुलवा देगा। उसने वर्त्तमान स्थिति में मल्लाहों के कर्त्तव्यों के सम्बन्ध में भी कुछ कहा और उनको यह कहते हुए अगवाड में भेज दिया कि वह इस बात को भूल जाएगा। किन्तु लगे हाथ उसने बढ़ई को यह हमेशा याद रखने के लिए कह दिया कि उसको यह नही भूलना चाहिए कि जहाज का कप्तान कौन है, और अगर कभी उसके मुंह से इस किस्म की कोई और बात निकली तो कप्तान उसे ऐसी सजा देगा कि वह उसे जिंदगी भर याद रखे।

कप्तान के इन शब्दों का मल्लाहो पर बड़ा अच्छा असर हुआ और वे सब शातिपूर्वक अपनी-अपनी ड्यूटी पर लग गए।

अगले दो दिनों तक हवा दक्षिण और पूर्व की ओर बहती रही। जब कभी थोडी बहुत देर के लिए हवा तेज होती तो हम इसलिए तेजी से सफर न कर पाते क्योंकि पानी पर पड़े हुए बर्फ की परत बहुत मोटी थी। फिर भी मौसम पहले जैसा खराब न हुआ और मलाह हमेशा पहरे पर तैनात रहे। मैं अभी भी बर्थ पर पडा हुआ था। हालाकि मैं बहुत तेजी से ठीक हो रहा था, फिर भी अभी मेरे लिए डेक पर मौजूद होना खतरे से खाली नही था। और अगर मैं डेक पर पहुँच भी जाता तो भी मैं बिल्कुल बेकार साबित होता क्योंकि मैंने एक हफ्ते से कुछ भी न खाया था। पिछले एक या दो दिन से मैंने जबरदस्ती अपने मुह में चावल के कुछ कौर डाले थे। लेकिन मेरे शरीर में उससे ज्यादा ताकत नही थी जितनी किसी बच्चे के शरीर में होती है।

अगवाड में बीमार पडना वाकई बदकिस्मती की बात है। मल्लाह की जिन्दगी का यह सबसे खराब हिस्सा है; खास तौर से तब जबकि मौसम ठीक न हो। अगवाड को कस कर बन्द कर दिया गया था ताकि पानी और ठन्डी हवा अन्दर न आने पाए। मल्लाह या तो डेक पर पहरा देते थे, या अपनी बर्थों पर आकर गहरी नीद में सो जाते थे : इसलिए किसी से बातचीत करने की कतई गुन्जाइश न थी। एक लैम्प वहा जलता रहता था जिसकी लौ इधर-उधर डोलती रहती थी; और उसकी पीली रोशनी इतनी धुंधली होती थी कि देख पाना ही मुश्किल होता था : पढ़ने का तो सवाल ही पैदा नही होता। शहतीरो और कारल दोनों से पानी टपकता रहता था और मेरी बर्थ के दाए-बाएं बहता रहता था। अगवाड इतना भीगा रहता था, उसमें इतना अंधेरा रहता था, और उसकी जगह सन्दूको

तथा गीले कपडों से इतनी ज्यादा घिरी रहती थी कि वहाँ बैठना बर्थ पर लेटने से भी बुरा होता है।

अगवाड की ये कुछ खराबिया हैं। सौभाग्य की बात यह थी कि मुझे किसी की सहायता या दवा की जरूरत न थी। यदि वाकई मुझे ऐसी सहायता अपेक्षित होती तो मैं कह नही सकता कि वह मुझे मिल पाती या नही। यह सच है कि मल्लाह लोग सहायता देने के इच्छुक रहते हैं, मगर यह कहावत भी सच है...कोई मल्लाह किसी की तीमारदारी करने के लिए जहाज पर सवार नही होता। हमारे व्यापारी जहाजों में आदमियों की हमेशा कमी ही होती है, और अगर कोई बीमार पड जाए तो दूसरे को उसकी देखभाल करने के लिए नही छोडा जा सकता। हर मल्लाह के बारे में यह मान लिया जाता है कि वह स्वस्थ है। यदि वह बीमार पड जाता है तो वह अभागा होता है। एक को चर्खी थामनी होती है, दूसरा पहरा देता है : मल्लाह जितनी जल्दी फिर से डेक पर पहुँच सके, उतना ही अच्छा है।

ज्यो ही मेरी तबीयत इतनी ठीक हुई कि मैं अपनी ड्यूटी पर लौट सकूं, मैंने तुरन्त अपने मोटे कपडे पहने, जूते कसे और बरसाती टोप ओढ कर डेक पर जा पहुँचा। हालाकि मैं सिर्फ कुछ ही दिन नीचे पडा रहा था, फिर भी हर चीज मुझे बिल्कुल बदली हुई नजर आ रही थी। डेक, पहलू, मस्तूल, यार्ड और रस्सिया...जहाज पर सब कही बर्फ जमी हुई थी। इस वक्त उस पर सिर्फ दो छोटे करके बांधे गये शिखर पाल खुले हुए थे। सारे पाल व रस्सियाँ ठन्ड से जम कर इतने अकड चुके थे कि उनको फिर से इस्तेमाल करना बिल्कुल असम्भव लग रहा था।

यही नही, सिर्फ शिखर मस्तूलो के नजर आने से जहाज बिल्कुल अनाथ और लुन्जा दिखाई दे रहा था। सूरज तेजी से चमक रहा था, डेको से बर्फ पिघल गई थी और ऊपर राख डाल दी गई थी; इसलिए अब हम उन पर चल-फिर सकते थे। इससे पहले बर्फ होने के कारण इतनी फिसलन हो गई थी कि चलना मुश्किल था। ठन्ड इतनी ज्यादा थी कि जहाज का कोई काम नही हो सकता था। इसलिए हमें डेक पर घूमते रहना था और अपने को गर्म रखना था। हवा अभी भी सामने की ओर थी और पूर्व की दिशा में सारा महासागर हिमद्वीपों और हिमक्षेत्रो से पटा पडा था।

चार घन्टियाँ बजने पर यार्डों को तिरछा करने का हुक्म दिया गया।

सुकान से नीचे उतर कर नीचे आने वाले एक नाविक ने बताया कि कप्तान ने जहाज का रुख उ०–उ०–पू० से बदल लिया है। इसका क्या मतलब है ? कुछ नाविको ने कहा कि शायद कप्तान का इरादा वालपरेज़ो जाने का है, और वह जाडे वही बिताना चाहता है। दूसरे कुछ मल्लाहो का खयाल था कि उसका इरादा बर्फ़ का रास्ता छोडकर, प्रशान्त महासागर को पार करके, केप आफ़ गुड होप का चक्कर लगाते हुए घर की तरफ़ लौटने का है। किन्तु शीघ्र ही यह पता लगा कि हम मैगलन जलडमरू मध्य की तरफ़ बढ रहे हैं। यह खबर जल्दी ही जहाज में एक सिरे से दूसरे सिरे तक फैल गई और हर कोई इसी के बारे में बातें करने लगा। जहाज पर जितने लोग मौजूद थे, उनमें से किसी ने भी कभी जल-डमरूमध्य से होकर सफ़र न किया था मगर मेरे सन्दूक में, कुछ साल पहले न्यूयार्क के जहाज...ए० जे० डोनेलसन...द्वारा उस रास्ते से की गयी यात्रा का वृत्तान्त रखा था। इस यात्रा-वृत्तान्त को कप्तान ने लिखा था और उसने इस यात्रा को अत्यन्त सुखद बताया था। शीघ्र ही सारे मल्लाहो ने इस वृत्तान्त को पढ लिया और तरह-तरह के मत देने लगे।

कप्तान के इस निश्चय से कम से कम यह फ़ायदा तो हुआ कि हर एक को सोचने और बात करने के लिए एक विषय मिल गया, और हमारी ऊब में कुछ कमी हुई। इससे पहले हम अपनी भावी एकरस यात्रा से उकताए हुए थे; अब इस निश्चय ने हमारे दिमाग को फिर से झकझोरा। हवा अनुकूल थी और इसलिए हम बर्फ़ की मोटी तहो को पीछे छोडते हुए फुर्ती से आगे बढे जा रहे थे। यह बात कुछ उत्साह जनक तो थी ही।

काफी दिनो तक नीचे रहने के कारण मेरे हाथ गरम और मुलायम हो गये थे, इसलिए पहली बार रस्सों को सभालने में मुझे काफी कठिनाई हुई। लेकिन कुछ ही दिनों में वे फिर पहले की तरह कड़े और मजबूत हो गये और जब मैं नम-कीन बीफ और कडी रोटी खाने के लिए अपना मु ह खोलने के काबिल हो गया तो मैं फिर पहले जैसा तन्दुरुस्त हो गया।

रविवार, दस जुलाई। अक्षांश ५४° १०', देशातर ७९° ०७'—दोपहर को हमारी यह स्थिति थी। सूरज तेज़ी से आकाश में चमक रहा था, सारी बर्फ़ पीछे छूट गई थी, और वातावरण में हर्षोल्लास था। हमने अपनी पी जैकेटें और पेंटें डेक पर ले आये इस उम्मीद से उनको रस्सियो पर डाल दिया कि शायद कुछ घटों

की धूप और हवा से वे सूख जायें। मालिम से अनुमति लेकर मल्लाहों ने बिना अंगुलियों वाले दस्ताने और बड़े मोजे रसोई में सूखने के लिए डाल दिए। इससे रसोई बिल्कुल भर गयी। हम अपने बूट भी ऊपर ले आए और हमने उन पर ग्रीज़ और कोलतार की एक मोटी पर्त चढ़ा दी।

डिनर के बाद सारे मल्लाह लंगरों को मोरों पर चढ़ाने, अनेक प्रकार के पटों को जंजीरों पर चढ़ाने, इत्यादि के पुराने काम में लग गए। दो-तीन घन्टों के कठिन श्रम के पश्चात दोनों लंगर कभी भी इस्तेमाल किए जाने लायक हो गए। दो छोटे लंगर ठीक किए गए, एक मोटा रस्सा अगले फलके पर लपेट दिया गया, गहन समुद्र लोड-लाइन को मरम्मत करके पूरी तरह तैयार किया गया। सामने काम देख कर हमारा उत्साह लौट आया। उस स्थान की निर्जनता को हम भूल गए और चर्खी के जरिये लंगर खींचते हुए हमने "चीयरिली हो!" वाला सहगान पूरी मस्ती में गाया।

इससे मालिम खुश हो गया और हाथ मसलते हुए बोला-"ठीक, छोकरो! कभी मौत की बातें न करो। यह तो बूढ़े मल्लाहों के मतलब की बात है।" हमारे गाने की आवाज सुनकर कप्तान भी आ पहुँचा और यात्री से कहने लगा (उसकी बात पहिए पर खड़े आदमी ने भी सुनी)-"ये हैं मेरे जोशीले मल्लाह। ये लोग मिटते-मिटते भी गाते रहेंगे।"

तार और लंगरों की यह तैयारी जलडमरूमध्य से गुजरने के लिए की गई थी। कारण यह है कि जलडमरूमध्य बहुत टेढ़ा-मेढ़ा होता है और उसमें तरह-तरह की धाराएं बहती हैं: इसलिए बार-बार लंगर डालने की आवश्यकता होती है। इस सारे काम से कोई अच्छी आशा अंकुरित नहीं होती क्योंकि मल्लाहों को ठन्डे मौसम में जितने काम करने पड़ते हैं, उनमें यह काम सबसे बुरा है। जंजीर के भारी तारों को खींचना और नंगे हाथों से उसको डेक पर घसीटना; भीगे हुए रस्सों और रस्सियों को जहाज पर ढोना जिनसे पानी चू-चू कर आपकी बाँहों पर गिर रहा हो और आपकी बाँहें ठन्ड से जमी जा रही हों, मोरों के नीचे लंगर-छेदों को साफ़ करना; रात दिन लंगर उठाना और लंगर डालना, और चट्टानों व रेत तथा ज्वार के रुख को देखने के लिए लगातार पहरा देना :—ये कुछ ऐसे काम हैं जो ऐसी समुद्री यात्रा में हर मल्लाह को भारी मालूम पड़ते हैं। चाहे उसे ठीक कहिए या गलत, कोई मल्लाह दो बन्दरगाह के बीच की यात्रा के दौरान ये काम करना

पसन्द नही करता। हममें से एक दूसरे मल्लाह ने भी एक पुराने अखबार में बोस्टन के एक जहाज की इस जलडमरूमध्य में यात्रा का वर्णन पढ़ा था। मेरा ख्याल है कि इस जहाज का नाम "पेरूवियन" था। विवरण के अनुसार इस यात्रा के दौरान इस जहाज के सारे तार और लंगर नष्ट हो गए थे, दो बार यह उथले पानी में जमीन से टकराया था, और बड़ी ही खस्ता हालत वल्परेजो पहुँचा था। इस वृत्तान्त ने "ए० जे० डोनेलसन" के वृत्तान्त को उलटा सिद्ध कर दिया था और अब आगे की यात्रा के बारे में हमारा आत्मविश्वास डिगने लगा था। इसकी खास वजह यह थी कि एक तो हममें से किसी ने इससे पहले किसी नाविक ने जलडमरूमध्य से होकर यात्रा न की थी और दूसरे कप्तान के पास अच्छे चार्ट भी नही थे।

लेकिन हमारे इस प्रकार के अनुभव करने की नौबत ही नहीं आयी। अगले दिन, हम केप आफ पिलर्स के निकट थे जो मैगलन जलडमरूमध्य का दक्षिणी—पश्चिमी पाइन्ट है; कि पूर्व की ओर से तेज झन्झा चलने लगी। साथ ही कुहरा भी इतना घना हो गया कि हम जहाज की आधी लम्बाई तक भी न देख पा रहे थे।

ऐसा मौसम मिलने के कारण हमें जलडमरूमध्य से होकर यात्रा करने का विचार फिलहाल त्याग देना पडा, क्योंकि घने कुहरे और प्रचन्ड झन्झा में जलडमरूमध्य की दुर्गम और आपदापूर्ण यात्रा करने में कोई बुद्धिमानी नही थी। अनुमान यह था कि मौसम को ठीक होने में देर लगेगी, और हम एकाध हफ्ते से पहले जलडमरूमध्य के मुहारे पर नही पहुँच सकेंगे। लिहाजा, हमने जहाज का मुंह दक्षिण की ओर घुमाया, और एक बार फिर केप हान के मार्ग पर चल पडे।

* * *

अध्याय—३२

पहली बार केप पर पहुचने का प्रयत्न करते हुए जब हम उसके अक्षाश में पहुँचे थे तो केप से हमारा फासला पश्चिम की दिशा में लगभग सत्रह सौ मील था। मगर चूंकि हमने मैगलन जलडमरूमध्य की ओर जाने के प्रयत्न में हम पूर्व में इतनी दूर पहुँच गये थे कि जब हमने दुबारा केप की ओर चलने का निश्चय किया तो हम उससे केवल चार-पांच सौ मील दूर थे। हमें बडी-बडी आशाए थी कि इस तरह सफ़र करने से रास्ते में बर्फ नही मिलेगी। हमने सोचा कि काफी देर से चल

रही पूर्वी झञ्झाओं ने बर्फ को अब तक पश्चिम की ओर खदेड दिया होगा। अब हवा लगभग दो पाइन्ट तेज चल रही थी, हमने यार्डों को वातानुकूल कर लिया तथा दो छोटे किये गये शिखरपालों और एक छोटे किये गये अगले पाल को जहाज पर तान कर हमने तेजी से दक्षिण की ओर प्रयाण किया और ड्यूटी बदलने पर हर बार हमें यह महसूस होने लगा कि हवा ज्यादा ठन्डी होती जा रही है और लहरों की ऊंचाई बढ़ती जा रही है।

फिर भी रास्ते में हमें बर्फ नहीं मिला, और हमें उम्मीद होने लगी कि रास्ता बराबर साफ मिलेगा। मगर एक दिन दोपहर को जब हमारी पहरा टोली अगवाड में थी, और हम झपकी ले रहे थे, हमें यकायक जोर से आती हुई, डरी हुई सी आवाज़ सुनाई दी—"सब के सब आओ!—जल्दी दौडो!—जल्दी-जल्दी दौडो!—अपने कपडो के लिए देर मत लगाओ!—कही जहाज़ टकरा न जाए!"

हम अपनी बर्थों से उछल कर तुरन्त डेक पर पहुँचे। कप्तान की जोर-जोर से, आज्ञाएं देती हुई आवाजे हमें सुनाई दी जैसे यह जिन्दगी-मौत का सवाल हो; और हम बिना आगे की ओर देखे फौरन पीछे बधनियों की तरफ लपके, क्योकि एक क्षण भी बर्बाद नहीं किया जा सकता था। सुकान को कस दिया गया था, और पिछले यार्डों को हिलाकर जहाज को घुमाया जा रहा था। हमने अकडे हुए रस्सों और बर्फ से ढंकी हुई रस्सियो का सहारा लेकर यार्डों को धीरे धीरे गोलाई में घुमाया। उस वक्त हर एक चीज सख्त महसूस हो रही थी और चटखने-फटने की आवाजें इस तरह आ रही थी जैसे बर्फ में जमे हुए किसी तख्ते को खीचने के वक्त आती हैं। जहाज पूरा चक्कर लगा कर घूम गया, यार्डों को साध दिया गया और हमारा जहाज दूसरे रास्ते पर चल पडा। जहाज के पीछे, डाबा बाजू के क्वार्टर के ठीक सामने, हम एक विशाल कुहरे के अन्दर से झाक रहे हिम-द्वीप को छोड आये थे। उसकी ऊंचाई हमारे जहाज की ऊंचाई से भी ज्यादा थी। इस द्वीप के दोनों ओर बहते हुए विस्तृत हिम क्षेत्र धुन्धले-धुन्धले दिखाई दे रहे थे।

अब खतरा टल चुका था। लेकिन अगर पहरेदार की तेज निगाहों ने कुछ मिनट पहले यह खतरा ऐन वक्त पर न देख लिया होता तो अब तक हमारा जहाज हिम-द्वीप से टकरा चुका होता और उसके छोटे-छोटे टुकडे दक्षिणी महासागर में इधर-उधर तैर रहे होते। कुछ घन्टों तक उत्तर की ओर सफर करने के बाद हमने

जहाज की दिशा बदली । तभी हवा का रुख भी बदला और हम दक्षिण तथा पूर्व की ओर बढ़ चले ।

डेक के हर हिस्से मे रात भर लगातार जबर्दस्त पहरा लगा रहा । जब कभी इस या उस मोरे पर बर्फ दिखाई देता, मुकान को बदल दिया जाता और यार्डो को पवनानुकूल कर दिया जाता था । फौरन उपयुक्त इन्तजाम कर लेने की वजह से जहाज निर्विघ्न आगे बढता रहा । "आगे बर्फ है !"—"अनुवात मोरे पर बर्फ है !"—"एक द्वीप और !"—जैसी जानी पहचानी आवाजो ने फिर एक हफ्ता पहले की बातें दुहरा दी ।

डेक पर हमारा पहरा बारह बजे से चार बजे तक था । इस दौरान पवन हमारे सम्मुख बहने लगा और ओलों तथा बर्फ की भारी बौछार होने लगी । इस पहरे के दौरान हम लगातार छोटे किये गये शिख पाल ताने आगे बढते रहे।

अगले पहरे के दौरान सन्नाटा छा गया । सुबह होने तक लगातार भारी बारिश होती रही । जब सुबह हुई तो हवा पश्चिम की ओर चलने लगी, मौसम बिल्कुल साफ हो गया, और महासागर साफ-साफ दिखाई देने लगा । इस मौके का फायदा उठाकर हम जहाज को तेजी से चला सकते थे लेकिन हवा हमारे ठीक सामने थी और हमारा रास्ता बर्फ के कारण बन्द हो गया था ।

लिहाजा, हमारी प्रगति यही रुक गयी । अब हमने जहाज का रुख बदला और एक बार फिर उत्तर और पूर्व की ओर मुंह किया । इस बार हमारा इरादा मैगलन जलडमरूमध्य की ओर जाने का नही था । हमारा इरादा तुरन्त केप पर पहुँचने के लिए एक और प्रयत्न करने का था । केप अभी पूर्व की दिशा में काफ़ी दूर था । वजह यह थी कि कप्तान ने निश्चय कर लिया था कि अगर हम निरन्तर उद्योग करते रहे तो केप पर जरूर पहुँच जाएगे । उसने कहा कि यह हमारी तीसरी कोशिश है और तीसरी कोशिश कभी बेकार नही जाती ।

हवा तेज चल रही थी; इस लिए हम हिम क्षेत्रों को जल्दी ही पार कर गए । दोपहर को हमें महासमुद्र में एकाध भूला-भटका हिमद्वीप ही नजर आया । सूरज तेजी से चमक रहा था । समुद्र नीला था । लहरों के सिरों के सफेद झाग प्रबल दक्षिणी-पश्चिमी झन्झा की दिशा में ऊंचे-ऊंचे उठ रहे थे; समुद्र में हमारा एकाकी जहाज पानी को चीरता हुआ इस तरह बढ़ा जा रहा था जैसे किसी कैद से छूट कर भाग रहा हो । महासागर में विभिन्न आकार प्रकार के हिमद्वीप इधर-

उधर बिखरे पडे थे। इन द्वीपों से सूरज की रोशनी प्रतिबिम्बित हो रही थी और ये झन्झा के साथ धीरे-धीरे उत्तर की ओर सरक रहे थे। अब तक हमने जितने दृश्य देखे थे, यह दृश्य उनसे बहुत भिन्न था। इस दृश्य में जीवन के अलावा सभी कुछ था। थोडी सी कल्पना से ही सोचा जा सकता था कि ये विशाल हिम-खंड, जो "बर्फ के विराट स्पन्दनशील प्रदेश" से टूट कर अलग हो गये हैं, सजीव पिंड हैं, और हवा या पानी को धारा के सहयोग से, कुछ अकेले अकेले, कुछ अन्यो के साथ, किसी अनुकूल प्रदेशो तक पहुँचने के लिए अपना मार्ग स्वयं बना रहे हैं।

आज तक कोई ऐसी पेन्सिल नहीं बनी जिसने हिमशैल का वास्तविक रूप चित्रित किया हो। चित्र में इनको समुद्र के पानी से चिपके हुए विशाल व अत्यन्त फीके खन्ड के रूप मे प्रस्तुत किया जाता है। उनका वास्तविक सौन्दर्य और उनकी गरिमा:—इनकी मन्द-मन्थर गति; उनके शिखरों के आस-पास थिरकता बर्फ; और उनके टुकडो का भयानक रूप से कराहना व चटखना—ये बातें ऐसी हैं जो किसी चित्र में प्रस्तुत की ही नहीं जा सकती। यह विशाल हिमखन्ड का रूप है। समुद्र के शान्त तल पर छोटे-छोटे और दूरवर्ती हिमद्वीप दिन की तेज़ रोशनी में नीलम के सुन्दर पटी द्वीपो की भांति दिखाई देते हैं।

उत्तर-पूर्व के मार्ग से हट कर हम धीरे-धीरे पूर्व की ओर मुडे। करीब दो सौ मील सफर कर लेने के बाद हमने जहाज का मुंह दक्षिण की ओर मोडकर केप के मार्ग पर सफ़र करने का तीसरा प्रयत्न किया, इस वक्त हम टेरा डेल फ्यूगो के पश्चिमी तट के समीप आ गये थे। अब रास्ते में बर्फ दिखाई देना बन्द हो गया था। मौसम लगातार साफ और ठन्डा रहा तथा पश्चिम की ओर से तेज झन्झा चलती रही। हम तेज़ी से केप के अक्षाश में पहुँचने के लिए बराबर कोशिश करते रहे। उम्मीद यह थी कि हम शीघ्र ही वहां पहुँच जाएगे।

एक दिन दोपहर को एक आदमी अगले शिखर पर चढ़ा था कि अचानक वह प्रसन्नता भरी आवाज़ में पूरा ज़ोर लगा कर चिल्ला उठा—"जहाज़ हो!" जब से हम सैन डियागो से चले थे, न तो हमें जमीन दिखाई दी थी और न कोई अन्य जहाज ही। जिस व्यक्ति ने कभी किसी महासागर पर बिल्कुल अकेले सफर किया है, वह इस आवाज़ से हम में उत्पन्न होने वाली उत्तेजना का अनुमान लगा सकता है। रसोई से छलाग लगा कर निकलते हुए रसोइया चिल्लाया—"जहाज़ हो!" नीचे वाले मल्लाह तुरन्त अपनी बर्थों से कूद कर डैक पर पहुँच

गये। कप्तान ने कम्पेनियनवे में से केबिन में बैठे यात्री से कहा—"जहाज़ हो!"

किसी दूसरे जहाज और दूसरे मनुष्यों को देखने से हमें आनन्द तो मिलता ही, इसके साथ ही यह बात इसलिए भी महत्वपूर्ण थी कि हम उनसे मिल कर यह जान सकते थे कि पूर्व की ओर बर्फ है या नहीं; हम उनसे अक्षाश भी मालूम कर सकते थे क्योकि हमारे पास क्रोनोमीटर नही था और हम पिछले कई दिनों से इतना ज्यादा भटक चुके थे कि हमारा हिसाब-किताब बिलकुल गडबड हो चुका था। इसके अलावा केप हार्न ऐसी जगह है जहा चाद को देख कर अपनी स्थिति का सही-सही अनुमान हमेशा नही लगाया जा सकता। इन बातो के कारण हमारे छोटे-से समूह में बहुत उत्साह फैल गया था और तरह-तरह के अनुमान लगाए जा रहे थे। साथ ही हम सबने वे सारी बातें सोच डाली जिनको सुनकर हमारा अनुमान था कि कप्तान खुश हो उठेगा। इसी समय ऊपर वाला आदमी चीख उठा—"खुले मोरे पर भी एक बडा जहाज, हो!" यह कुछ अजीब-सी बात थी, फिर भी बहुत अच्छी थी, और इस बात ने हमारे इस विश्वास को तनिक भी विचलित नहीं किया कि हमें दो जहाजों से बात करने का मौका मिलेगा।

आखिर ऊपर वाले नाविक ने कहा कि मेरा खयाल यह है कि यह जमीन है, जहाज नही। मालिम ने कहा—"ज़मीन तो तुम्हारी आँखो मे घुस गयी!" मालिम उस वक्त दूरबीन से देख रहा था—"अगर मुझे ठीक-ठीक दिखाई देता है तो मैं कह सकता हूँ कि वे हिमद्वीप हैं।" कुछ मिनटो के बाद ही मेट की बात सच साबित हो गई। हमारी सारी आशाएं धूल में मिल गईं। जिस चीज को देखने की हमारी उत्कट इच्छा थी, उसके स्थान पर हमें वह चीज मिली जिससे हम सब से ज्यादा डरते थे, और जिसे हम कभी नही देखना चाहते थे। फिर भी हम जल्दी ही इन द्वीपों को पीछे छोड गए। करीब दो मील तक हमें उनके साथ-साथ सफ़र करना पडा। सूर्यास्त तक क्षितिज चारों ओर से बिल्कुल साफ़ हो गया था।

हवा तेज होने के कारण हम शीघ्र ही केप के अक्षाश को पार कर गए। उससे बच कर निकलने के लिए काफी देर से ही हमने जहाज को पूर्व दिशा में मोड दिया। अब हमें आशा थी कि कुछ ही दिनो में हम उत्तर की ओर निकल चलेंगे।

मगर दुर्भाग्य हमारा पीछा करता हुआ सा प्रतीत हुआ। अभी हमें इस रास्ते

पर चलते हुए चार घन्टे भी पूरे न हुए थे कि हवा बहनी बिल्कुल बन्द हो गई और आधे घंटे में ही आसमान में बादल छा गए। पूर्व की ओर से कई बार बर्फ़ और ओले बरसाने वाली झन्झाए उठी। एक घन्टे के बाद ही हम छोटे किये गये प्रमुख शिखरपाल का जहाज पर ताने अनुवात दिशा में घिसटते नजर आये। पूर्व की दिशा से हमारे ठीक सामने दौड़ता हुआ यह तूफान अब तक के तूफानो में सब से भयंकर था। ऐसा लगा कि उस स्थान की भयंकरता हमें चुपके से अपने पन्जे से निकलते देख कर सावधान हो गई है और अब वह दसगुने क्रोध के साथ हमें लील जाने पर आमादा हो गई है। जब आधी का हर एक झोका बरांडलो को कंपकंपाता और रस्सियो के ऊपर से सीटी बजाता हुआ निकलता तो मल्लाह कहने लगते कि आधी हमारे बूढे जहाज से कह रही है—"नही, तुम जा नहीं सकते! "तुम जा नही सकते!"

आठ दिनो तक हम इसी तरह इधर-उधर भटकते रहे। कभी-कभी,—आम तौर से दोपहर को—आधी रुक जाती; एकाध बार हमें सूरज वाले स्थान पर तांबे की एक गेंद दिखाई दे जाती थी; पश्चिम की ओर से एक या दो झोके हमें यह उम्मीद बंधा जाते थे कि अनुकूल हवा चलने ही वाली है। पहले दो दिनो तक हमने इन झोको का फायदा उठाने के लिए शिखरपालो को खोला और कोर्स पालो को भी तान दिया, लेकिन फिर से झन्झा आयी और हमारे लिये इन्हें लपेटने का काम बढ़ गया तो ऐसा करना छोड दिया गया, और हम छोटे किये गये पालो को तान कर ही सफर करने लगे। जब हम पच्छिम की ओर काफ़ी दूर थे तब की बनिस्बत बर्फ और ओले तो अब कम हो गए थे लेकिन अब भारी मात्रा में मूसलाधार बारिश हो रही थी जो ठन्ड के मौसम में मल्लाह के लिए सब से खराब है।

जब बर्फ पड रही होती है तो आदमी कुछ देख नही पाता और जब जहाज किनारे के निकट पहुँच रहा हो तो उस समय यह सबसे खराब चीज है, लेकिन बहुत ठडे मौसम मे बारिश इससे भी कही अधिक कष्टदायक है। बर्फ के तूफान में मजा आता है और कपड़े नही भीगते (मल्लाह के लिए यह बात बहुत महत्त्व रखती है) किन्तु अगर लगातार बारिश हो रही हो तो इससे कोई बचाव नही हो सकता। बारिश तो खाल तक को भिगो देती है और रक्षा के सारे उपाय बेकार सिद्ध होते हैं। हमारे सूखे कपडे पहले ही खत्म हो चुके थे और चूंकि मल्लाह के

पास अपने कपडो को सुखाने के लिए धूप के अलावा अन्य कोई साधन नही होता इसलिए अब हम इसके अलावा और कुछ नही कर सकते थे कि उन कपडों को पहनें जो सबसे कम गीले हो।

पहरा खत्म करने के बाद जब हम नीचे पहुँचते थे तो हर बार अपने कपड़े उतारते और निचोडते; दो आदमी पतलून को पकडते,—एक आदमी पायचे पकडता और दूसरा आदमी ऊपर वाला [illegible]—[illegible] को भी हम इसी प्रकार पकड कर निचोडा करते थे। बडे मौजो, बिना अगुलियो वाले दस्तानो, तथा अन्य कपडो को भी निचोडा जाता था, और पोतभीतो पर सूखने के लिए फैला दिया जाता था। इसके बाद हर कपडे को छू-छूकर हम यह तय करते कि कौन-सा कपडा सब से कम गीला है और उसी को पहन लेते ताकि बुलावे के लिए हम हर-दम तैयार रहे। काम खत्म करने के बाद हम अपने शरीर को कम्बलो से ढंक कर तब तक सोते रहते जब तक मोखे पर तीन बार खट-खट की आवाज न होती थी या डेक से ये मनहूस आवाज़ें न आती—"ओ, जमना बाजू के पहरेदारो! आठ घन्टिया, सुन रहे हो या नही?", और नीचे से दिया हुआ खिन्न उत्तर—"आये, आये!"—हमें तुरन्त दुबारा ऊपर भेज देता।

डेक पर घटाटोप अधकार रहता। वहा या तो एकदम सन्नाटा छाया रहता जिसके साथ लगातार भारी वर्षा चलती रहती, या अक्सर यह होता कि ठीक सामने से झन्झा आती रहती जिसके साथ घनघोर बारिश होती, और कभी-कभी उसके सब ओले और बर्फ गिरते। डेक पर पानी तैरता रहता था जो एक ओर से दूसरी ओर तक हमेशा छप-छप करता, और हमारे पैर हमेशा भीगे रहते, क्योकि जूतो को जाघिए की भाति निचोडा नही जा सकता था।—और उस लगातार भीगते रहने से कैसा भी चमड़ा हो गल जाता है। सचाई तो यह है कि ऐसे मौसम में भीगना और पैरों का ठन्डा होना तो अनिवार्य सा है, उन कुछ चीजो में जो ठन्डे मौसम में मल्लाहो की केप-यात्रा को अत्यत कष्टदायक बना देती हैं, इन दोनों का विशेष महत्व है।

जब पहरे बदलते तो मल्लाह आपस में बहुत कम बातचीत करते। पहिये पर से एक नाविक हटता और दूसरा बैठ आता; मालिम छतरी पर अपनी जगह संभाल लेता, पहरा देने वाले मोरो पर चले जाते। हर एक आदमी के पास जहाज के अगले भाग से पिछले भाग तक चलने के लिए बहुत कम जगह होती थी। वजह

यह थी कि बर्फ और पानी से डेक पर बहुत फिसलन हो गई थी और इसलिए ज्यादा चला-फिरा नही जा सकता था ।

चूंकि वक्त काटने के लिए चलना जरूरी था इसलिए हम में से एक को डेक पर रेत डालने की तरकीब सूझी । बाद में जब कभी मूसलाधार वर्षा नही हो रही होती थी तो छतरी के खुले बाजू पर, कटि के एक भाग में, और अगवाड पर रेत बिखरा दिया जाता था (डेक को रगड कर चिकना करने के काम के लिए जहाज पर रेत रखा हुआ था) और तब हम खूब चहलकदमी करते । हम दो-दो के झुन्ड में उबाने वाले पहरे के हर घन्टे को इसी तरह घूमते हुए काट देते थे ।

हालाँकि घन्टी हर आधे घन्टे बाद बजती थी मगर ऐसा लगता था जैसे वह एक-एक और दो दो घन्टो के बाद बजाई जा रही है, और आठ घन्टियों की मधुर ध्वनि की प्रतीक्षा में तो जैसे पूरा एक युग बिताना पडता था । हमारा एकमात्र ध्येय यह था कि किसी तरह वक्त गुजारा जाए । वक्त की ऊब को दूर करने के लिए हम कुछ भी करने के लिए तैयार रहते । यहाँ तक हुआ कि हममें से हर नाविक को हर तीसरे पहरे में पहिए को सभालने की जो ड्यूटी मिलती थी, अब उसे भी ऊब से छुटकारा पाने का उपाय माना जाने लगा ।

लम्बी-लम्बी कहानियाँ, जो कई कई पहरो तक चलती रहती थी; भी समय काटने में अब हमारा साथ नही दे पाती थी, क्योकि हम लोग एक-दूसरे के साथ इतने लम्बे अर्से से रह रहे थे कि हम में से सभी आदमी एक दूसरे की सभी कहानियाँ सुन चुके थे, और अब तो हमें वे सारी कहानियाँ वगैरह जबानी याद हो गयी थी । हम एक-दूसरे के बारे में भी सब-कुछ जान चुके थे और अब हमारे पास बातें करने के लिए वाकई कोई विषय न बचा था । गाना गाने या मजाक करने का तो सवाल ही पैदा नही होता क्योकि हम हँसी-मजाक की मनस्थिति में कतई नही थे । सच तो यह है कि खुशी की कोई भी आवाज हमें अजीब सी लगती थी और बर्दाश्त नही होती थी ।

अब हमारा अन्तिम उपाय—भविष्य के बारे में तरह-तरह की अटकलबाजी—भी बेकार साबित होने लगा था क्योकि हम जिस अवसादपूर्ण तथा संकटपूर्ण स्थिति में थे (हमें रोज यह आशका रहती कि पीछे खिसकते-खिसकते हम किसी भी क्षण बर्फ से घिर सकते हैं) उससे इस अटकलबाजी पर जैसे "डाट लग गई थी ।" "जब हम घर पहुचेंगे"—की बात छोडकर अब हम कहने लगे थे—

"अगर हम घर पहुँचे"—और अन्त में सब की अव्यक्त सलाह से इस विषय पर बातचीत होनी ही बन्द हो गई थी।

इस स्थिति में, पहरो में हुए परिवर्तन के कारण, एक नई रोशनी प्रकट हुई और एक नया क्षेत्र खुल गया। मेरे साथ पहरे के लिए जिन मल्लाहो की ड्यूटी लगनी थी, उनमें से एक हाथ खराब होने के कारण दो या तीन दिन तक बिस्तर पर पडा रहा। ठन्डे मौसम में तो छोटी सी खुरेंच या जख्म भी शीघ्र घाव बन जाता है। इस बीमार मल्लाह की ड्यूटी बढ़ई को दी गई। यह एक अप्रत्याशित लाभ था और मल्लाहो में खासी प्रतियोगिता इसी बात के लिए हो गई कि बढ़ई के साथ कौन रहे।

"चिप्स" कुछ पढा-लिखा था, और उस से मेरी पहले से भी बातचीत थी, इसलिए उसने मेरी ही संगति चुनी। वह फिनलैण्ड का रहने वाला था, फिर भी अंग्रेजी बहुत अच्छी बोलता था। उसने मुझे अपने देश के बारे में विस्तार से बताया—वहा की प्रथाएं, व्यवसाय, नगरों, सरकार के बारे में वह थोडा बहुत जो कुछ जानता था वह, (मुझे पता लगा कि वह रूस का मित्र नही है), उसकी यात्राएं, पहली बार उसका अमरीका में पहुँचना, उसकी शादी तथा प्रेमचर्या। उसने अपने गाव की दर्जी की लडकी से शादी कर ली थी जिससे उसकी मुलाकात बोस्टन में हुई थी। मेरे पास अपने घर की शात व घटनाहीन जीवन के बारे में सुनाने के लिए अधिक सामग्री न थी, और हालाँकि हम दोनों ने इन बातो में काफी समय काट देने की पूरी-पूरी कोशिश की मगर पाच या छह ड्यूटियो में ही हमने एक-दूसरे की सारी बातें सुन ली। फिर मैंने उसको अपने पहरे के एक अन्य व्यक्ति के हवाले कर दिया और वक्त काटने के लिए फिर से अपने निजी साधनों का आश्रय लेने लगा।

अब मैंने वक्त काटने के लिए एक नया तरीका निकाला। इससे बोझिल घन्टों को खुशी-खुशी काट देने के साथ-साथ कुछ लाभ भी हुआ। ज्यों ही मैं डेक पर पहुँचता और अपना पहरा सभाल कर डेक पर चहलकदमी शुरू करता, मैं उन सारी बातों को क्रमानुसार मन ही मन दुहराने लगता जो मुझे मुँह-जबानी याद थी—पहले, गुणनसारणी (पहाडा) और नाप-तोल की तालिका, फिर संघ के राज्य व उनकी राजधानियां, इंग्लैण्ड की काउंटिया, और उनके शायर नगर; क्रमानुसार इंग्लैण्ड के सम्राट, अधिकांश लार्डों का इतिहास, मुझे इसका अधिकतर रिकार्ड

जहाज़ में सुलभ एक तिथि–पत्र से मिला था, फिर कनाका भाषा के अंक।

इससे मुझे पुरानी बातें फिर से याद हो आई। मैं काफी अर्से के बाद इनको बार–बार दुहराता और अक्सर पहली दो घन्टियाँ शीघ्र ही बज जाती। फिर मैं इनको दुहराता—दस धर्माज्ञाए, जौब का उनतालीसवां अध्याय, धर्मग्रथ के कुछ अन्य उद्धरण। इसके बाद जिसका नम्बर आता था और जिसे मैं कभी न चूकता था तथा जो मुझे सबसे ज्यादा पसन्द था, वह था काउपर का "कास्टअवे", जिसके गम्भीर छन्द और जिसकी उदास प्रकृति, तथा जिसकी आधारभूत घटना समुद्र के पानी पर अकेले पहरा देने की स्थिति से काफी मिलती-जुलती है। इसके बाद मेरी से कही गई उसकी पक्तियां, कौए को सबोधित किए हुए उसके वचन, और टेबिल–टाक का एक छोटा उद्धरण, (मैं काउपर से बहुत प्रभावित था, उसकी कविताओ का सकलन मेरे सन्दूक में रखा था), होरेस का "इले एट नेफस्टो" और गेटे का "अर्ल किग"।

जब मैं इन सब को पूरा कर चुकता था तो मुझे गद्य और पद्य में जो कुछ भी याद था, उसे दुहराना शुरू कर देता था। कभी–कभी पहिये या लाग को देख लेता, या पानी पीने के लिए भोखे की टकी तक जाता और इस तरह बडे से बडा पहरा बीत जाता था। मैं इस मौन पाठन में इतना नियमित हो गया था कि अगर जहाज के कामो के कारण विघ्न न पडते होते तो मैं अपने पाठन की प्रगति से ही बता सकता था कि समय क्या है, और कितनी घन्टियां बज चुकी हैं।

नीचे भी हमारी पहरा टोली की वही हालत थी जो ऊपर थी। कपड़े धोने, सीने-पिरोने, और पढ़ने के सारे काम बन्द कर दिए गए थे, और हम सिर्फ खाने, सोने, और पहरा देने का ही काम करते थे। यह पूरी तरह केप हार्न का जीवन था। अगवाड इतना बेआरामदेह था कि उसमें बैठा नही जा सकता था, इसलिए जब कभी हम नीचे होते, अपनी बर्थों पर लेटे रहते थे। बारिश और समुद्र के पानी को नीचे आने से रोकने के लिए (जो मोरों पर हमेशा बहता रहता था) मोखा बन्द ही रखा जाता था। परिणामत: अगवाड़ में घुटन हो जाती थी। इस छोटी, गीली व इधर-उधर से चूने वाली उस कोठरी में ही हम सब रहते थे। वातावरण इतना खराब था कि हमारे लैम्प से, जो शहतीरो से नीचे लटका हुआ इधर-उधर डोलता रहता था, कभी-कभी दूषित वायु से घिर जाने के कारण बिल्कुल नीली रोशनी निकलती थी।

फिर भी मेरा जितना अच्छा स्वास्थ्य इन तीन हफ्तों में रहा, उतना अच्छा स्वास्थ्य पूरी जिन्दगी में कभी नहीं हुआ। मेरे बदन पर काफी मांस चढ़ गया था, और हमारी खूराकें घोडो की माफिक ज्यादा हो गई थीं। ड्यूटी समाप्त करने के बाद जब हम नीचे पहुँचते तो बर्थ पर लेटने से पहले रोटी भरी ट्रे और बीफ भरा टब साफ कर जाते। सुबह और शाम को हर एक मल्लाह गर्म चाय का क्वार्ट (चौथाई गैलन) पीता, और हम बहुत खुश थे कि हमें चाय बराबर मिल रही है। वजह यह है कि डेक पर पहरा देने के बाद हम लोगो के लिए एक पाट चाय, एक सूखा बिस्कुट, और ठन्डे नमकीन बीफ का एक टुकडा जितना मीठा था, आलसी देवताओं के लिए सुधा या अमृत भी वैसा मीठा न रहा होगा।

यह यकीन के साथ कहा जा सकता है कि हम पूरी तरह जानवर बन गए थे और अगर इस किस्म की हमारी जिन्दगी एक महीने के बजाय एक साल तक चलती रहती तो हम जहाज के रस्सो से भी कुछ तगड़े हो जाते। इस दौरान हमने उस्तरे, ब्रुश या एक बूंद पानी का भी इस्तेमाल नही किया था, और हम तक बारिश और बौछार ही पहुँची थी। हमें साफ पानी निश्चित मात्रा में मिलता था। और बर्फ व ओलो के मौसम में उस वक्त पर डेक पर खडा होकर नहाने की मूर्खता भला कोई क्यो करेगा जब तापमान शून्य हो ?

लगातार आठ दिनो तक पूर्वी झन्झाओं का सामना करने के बाद, पवन कभी कभी दक्षिण की ओर बहने लगता, और तेजी से बहने लगता था, तब हम जितने पाल सम्भव होते, उतने तान कर सफर करते। ऐसे परिवर्तन सिर्फ कुछ देर के लिए ही आते थे, और शीघ्र ही पुरानी दिशा से झंझाएँ चलनी शुरू हो जाती थी। फिर भी हर बार हम कुछ दूर सफर कर ही लेते थे और धीरे-धीरे पूर्व की ओर बढ़ रहे थे।

एक रात ऐसा हुआ कि हवा थोडी देर के लिए अनुकूल हुई। सारे मल्लाहो को काफी देर पहले से ही ऊपर बुला लिया गया था। बंटलाइन में मुख्य पाल तैयार लटक रहा था ताकि ज्यो ही जरूरत पडे, उसका इस्तेमाल हो सके। हवा तेज और तेज होती गई। साथ ही ओले और बर्फ इस तरह जहाज पर गिरते रहे जैसे प्रकृति हम पर कुपित हो उठी हो। रात इतनी गहरी और काली हो गई थी जितनी अधिक से अधिक हो सकती है। प्रमुख पाल इस तरह फडफडा रहा था और उसकी फड़फड़ाहट की ध्वनि ऐसी थी जैसे वज्रध्वनि हो रही हो। जब कप्तान

डेक पर आया तो उसने प्रमुख पाल को लपेट देने की आज्ञा दी ।

मालिम सारे मल्लाहो को आवाज़ देने ही वाला था कि कप्तान ने उसको रोक दिया । उसने कहा कि अगर मल्लाहो को इतनी जल्दी-जल्दी ऊपर बुलाया गया तो वे शीघ्र ही थक कर चूर हो जाएगे, चूंकि हमारी ड्यूटी डेक पर मौजूद रहने की है, इसलिए हमको ही यह काम पूरा करना चाहिए । इसलिए हम यार्ड के ऊपर चढ़ गए । मैं जिन्दगी भर इस काम को नही भूल पाऊगा ।

हमारे पहरे के लोगो की सख्या कुछ तो बीमारी के कारण कम हो गई थी और कुछ इसलिए कम हो गई थी कि कुछ लोग कैलिफोर्निया में पीछे छूट गए थे । इसलिए एक आदमी को पहिए पर नियुक्त कर देने के बाद ऊपर जाने के लिए मेरे और तीसरे मालिम के अलावा सिर्फ तीन लोग ही और थे । इसलिए एक वक्त में हम ज्यादा से ज्यादा एक यार्ड भुजा को ही संभाल सकते थे । पहले हम खुले बाजू की यार्ड-भुजा पर चढे और उसको लपेटने का काम शुरू कर दिया । हमारा निचला मस्तूल छोटा था और यार्ड बहुत चौकोर थे । पाल की बंट ऐसी लग रही थी जैसे वह पिछले रायल यार्ड की बंट हो ।

इस कठिनाई के अलावा एक बात यह भी थी कि जिस यार्ड पर हम चढ़े हुए थे, वह पूरी तरह बर्फ से ढंका हुआ था; पाल के फुट की रस्सी तथा गैस्केट रस्सिया चूषण होज़ की तरह अकडी हुई तथा सख्त हो गयी थी । पाल इतना लचीला हो गया था जैसे ताबे की चादर से बना हुआ हो । एक भयंकर हरीकेन तूफान चलने लगा; तथा बर्फ, ओले, और वर्षा के झोके एक के बाद एक हम पर प्रहार करने लगे । हमें पाल को नंगे हाथो से ही लपेटना था ।

बिना अगुलियों वाले दस्तानो पर भरोसा नही किया जा सकता था क्योंकि अगर उसको पहन कर काम करते समय हाथ फिसल जाता तो खात्मा निश्चित था । सारी नावो को डेक पर चढ़ा लिया गया था । इसलिए अगर कोई आदमी ऊपर से पानी में गिर जाता तो उसको बचाने के लिए कोई नाव पानी में नहीं उतारी जा सकती थी । ईश्वर ने हमें जितनी अंगुलियां दी थी, हमें इस काम के लिए उन सब की आवश्यकता थी । कई बार हम पाल को यार्ड पर खींचने में कामयाब हुए, मगर इससे पहले कि हम उसको बाँध पाते, वह हर बार हमारी पकड से निकल कर उड जाता । यार्ड पर रहकर पाल पर गैस्केट रस्सियां लपेटने के लिए कुछ आदमियों की जरूरत थी, और जब हमने इन रस्सियों को लपेट

दिया तब उनमें ऐसी गाठ लगाना एकदम असम्भव हो गया जो पाल को रोके रहे। बार-बार हमें इस काम को अपूर्ण ही छोडना पडा, और अपने हाथो में खून को जमने से रोकने के लिए पाल पर हमें अपने हाथ पटकने पड़े।

कुछ समय बाद—जो एक युग के बराबर महसूस हुआ—हमें खुले बाजू के पाल लपेट देने में सफलता मिल सकी। इसके बाद हम अनुवात बाजू पर अपनी किस्मत आजमाने चले। यह काम उससे भी ज्यादा खराब था क्योकि पाल का मुख्य भाग उड कर अनुवात की ओर चला गया था और यार्ड तिरछा हो गया था, इसलिए पहले हमें इसको प्रतिवात की तरफ लाना था। जब हम सारी यार्ड-भुजाओं को लपेट चुके तो बंट फिर खुल गयी। इससे हमारा काम और बढ़ गया। अन्त में हम सबको बाध देने में सफल हुए। हमें यार्ड पर लगभग डेढ़ घन्टा हो गया था और ऐसा लगता था जैसे एक पूरा युग बीत गया हो।

जब हम ऊपर की ओर रवाना हुए थे तो पांच घन्टियां बजी थी और हमारे नीचे उतरने के तुरन्त बाद आठ घन्टिया बजी। इस वर्णन से शायद ऐसा लगे कि यह काम बहुत धीरे-धीरे हुआ मगर यदि उस स्थिति को ध्यान में रखा जाए और इस तथ्य को भी ध्यान में रखा जाए कि एक पाल को लपेटने के लिए हमारे पास सिर्फ पाच ही आदमी थे, जबकि हमारा पाल "इंडिपेंडेस" जहाज (साठ तोपो वाला जहाज जिसके क्वार्टरो पर सात सौ मल्लाह काम करते थे) के प्रमुख पाल से आधा था, तो वाकई यह अचरज की बात समझी जाएगी कि हमने इस काम को इतनी जल्दी पूरा कर दिया। डेक पर वापिस पहुचने से हमें खुशी हुई और जब हम नीचे पहुँचे तो हम खुशी से फूले न समाए।

पहरा टोली के सबसे पुराने मल्लाह ने नीचे पहुँचते ही कहा—"मैं उस मुख्य यार्ड को कभी न भूलू गा:—इसने तो मेरी अक्ल ही दुरुस्त कर दी। मज़ाक को मज़ाक की तरह ही लेना चाहिए, मगर केप हार्न से गुजरते समय पाल लिपटवाना उस मल्लाह को मारने जैसा ही है।"

अगले दो दिनो तक पवन अधिक वेग पूर्वक दक्षिण की ओर से चलता रहा। हमने काफी रास्ता तय कर लिया था, और अगर हम अभी तक केप पर नही पहुँचे थे तो अब हमें शीघ्र ही वहा पहुच जाने की आशा थी। हमें अपने स्थिति-ज्ञान पर अब भरोसा नही रहा था क्योकि हमें स्थिति को देखने और जांच-पड-ताल करने के लिए उपयुक्त अवसर ही नहीं मिला था, और हम अपने रास्ते से

इतना अलग हो गए थे कि अब हमारा हिसाब-किताब "करीब-करीब" की दृष्टि से भी ठीक नही पडता था। अगर मौसम इतना साफ हो जाता कि हम नक्षत्रों को देख पाते, या अगर हम जमीन पर पहुँच जाते तो हमें अपनी स्थिति का ठीक-ठीक ज्ञान हो सकता था। अब हम पूर्णतया इन्ही बातो पर निर्भर थे। हमें यह भी आशा थी कि शायद पूर्व की ओर से आता हुआ कोई जहाज हमें मिल जाये।

शुक्रवार, बाईस जुलाई। आज दक्षिण की ओर से झन्झा चली और हमने थार्डों को कुछ ढीला करके पाल छोटे किये और आगे बढे। बादल कुछ छटे और ऐसा लगा कि आसमान जल्दी ही साफ हो जाएगा।

तीसरे पहर तीसरा मालिम मि० एच—और दो अन्यो के साथ मैं स्टीयरेज में रोटियो को पीपों से निकाल कर लाकर मैं भर रहा था कि गलियारे से नीचे धूप की तेज चमक दिखायी दी और नीचे की हर एक चीज धूप में चमकने लगी। हर एक के दिल मे खुशी की एक गर्म लहर दौड गई। ऐसा दृश्य हमने हफ्तों से नही देखा था,—हमारे लिए यह तो ईश्वर द्वारा भेजी हुई शुभ-सूचना थी। अत्यन्त कड़े और कठोर चेहरों पर भी इसकी खुशी झलकने लगी।

इसी क्षण हमने डेक के सारे भागो से एक जोर की चिल्लाहट सुनी और मालिम ने गलियारे में जाकर कप्तान को पुकारा। उसने क्या कहा—यह तो हम सुन न सके लेकिन वह तुरन्त कुर्सी से उछल पडा और कूद कर डेक पर पहुँच गया। हमें इस सब का कारण ज्ञात न था और हम उसको जानने के लिए आतुर भी थे, मगर जहाज का अनुशासन ऐसा था कि हम अपनी जगह को छोड कर हट नही सकते थे। चूंकि हमें नही बुलाया गया था इसलिए हमने यह निष्कर्ष निकाला कि खतरे की कोई बात नही हैं। हम जल्दी-जल्दी अपना काम खत्म करने लगे। तभी स्टीवार्ड का काला चेहरा रसोई से झांकता हुआ नजर आया और एन—ने उसका अभिवादन करके इस सब हलचल का कारण पूछ लिया। "ज़मीन, हो ज़मीन! क्या तुम उनको यह कहते हुए नही सुन रहे— "ज़मीन हैं।" कप्तान कहता है कि हम केपहार्न पर पहुँच गए।"

यह सुन कर हम फिर चौंक पड़े और काम पूरा करके हम जल्दी ही डेक पर पहुँच गए। वहां से जमीन दिखाई दे रही थी, डाबा बाजू की शहतीर के ऊपर से, और धीरे-धीरे क्वार्टर की ओर उसका किनारा समीप आता जा रहा था। सारे मल्लाह बहुत ध्यान से उसको देख रहे थे—छतरी पर कप्तान और मालिम थे,

रसोई में रसोइया था, और अगवाड में मल्लाह, और हमारे यात्री मि० एन—भी, जो पिछले एक महीने से अपनी कोठरी से बाहर न निकले थे और शायद इतने अर्से से उन्हे किसी ने न देखा था, और जिनके बारे में हम कतई भूल गए थे कि यह भी जहाज पर सवार हैं,—तितली की फुर्ती से बाहर निकल कर आया और चिडिया की तरह खुश होकर इधर-उधर फुदकने लगे।

यह स्टेटेन लैण्ड के टापू की जमीन थी जो केपहार्न के कुछ ही पूर्व में स्थित है। यह जमीन इतनी वीरान दिखाई दे रही थी कि ऐसी वीरान ज़मीन को मैं फिर कभी न देखना चाहूँगा,—बंजर, टूटी-फूटी और इधर-उधर चट्टानों और बर्फ से ढकी हुई, चट्टानो और ऊबड खाबड पहाडियो के बीच में वनस्पति की कुछ झाडिया थी जिनका विकास बीच में ही रुक गया था। मानवीय सभ्यता की पहुच से दूर, जो महासमुद्रो के सगम पर खडे हो कर बारह महीनो की सर्द जलवायु में झन्झाओं और बर्फ का सामना करने के लिए ऐसी ही जगह की दरकार थी। हालाकि यह भूमि हमें निराश करने वाली थी, फिर भी हमें यह दृश्य बडा सुखकर लगा। इसकी वजह केवल यही नहीं थी कि हमने पहली बार ज़मीन देखी थी, बल्कि यह वजह भी थी कि हमें इससे यह पता चलता था कि केप अब निकट है, कि हम प्रशात महासागर में हैं—, और अगर ऐसा समीर चौबीस घन्टे और चलता रहे तो हम दक्षिणी महासागर की उपेक्षा करके अपने रास्ते पर आगे बढ़ सकेंगे। इस ज़मीन ने हमको हमारी स्थिति का अक्षाश और देशातर किसी भी अन्य पर्यवेक्षण की बनिस्बत बहुत अच्छी तरह बता दिया। कप्तान को अब मालूम हो गया कि हम कहा हैं, उसे यह भी मालूम हो गया कि हम लोग वार्फ के सिरे से आगे निकल आये या नही।

उस खुशी के मौके पर मि० एन—ने कहा कि मेरी इच्छा है कि मैं इस टापू के तीर पर पहुँच कर इस स्थल को ध्यान से देखूं, जहां शायद आज तक कोई मनुष्य नही गया है, लेकिन कप्तान ने उसको सूचना दी कि उसको किसी अन्य मौके पर इस टापू को देखने का अवसर मिलेगा, और इस समय हमें बिना एक क्षण भी नष्ट किए चल पडना चाहिए।

धीरे-धीरे हमने यह ज़मीन पीछे छोड दी, और दिन ढलने के वक्त हमें अपने सामने अटलाटिक महासागर दिखायी दे रहा था।

*   *   *

प्रशात महासागर से केप की ओर यात्रा करते हुए आमतौर पर जहाज फाकलैंड द्वीपो के पूर्व की ओर से होकर गुजरते हैं । लेकिन चूंकि अब दक्षिण-पश्चिमी पवन वेग से बहना शुरू हो गया था और यह सम्भावना थी कि यह पवन देर तक बहेगा, और हम ऊचे अक्षाशो पर बहुत समय तक सफर कर चुके थे, इसलिए कप्तान ने तुरन्त उत्तर दिशा में फाकलैंड द्वीपो से होकर यात्रा करने का निश्चय किया । तदनुसार जब आठ बजे पहिये पर पहरा बदला गया तो कप्तान ने जहाज को उत्तर की ओर चलने का आदेश दे दिया । और सारे मल्लाहों को यार्डों को पवनानुकूल करने और पाल लगाने के काम पर लगा दिया गया ।

एक ही क्षण में यह खबर सारे जहाज में फैल गई कि कप्तान जहाज का मुंह सीधे बोस्टन की ओर कर के और तफरेल को केपहार्न की ओर करके जहाज चला रहा है । यह सुनते ही सब नाविको में उत्साह जाग उठा । हर एक आदमी सावधान हो गया । यहाँ तक कि दो बीमार आदमी भी पाल रस्सियो के काम में हाथ बंटाने के लिए ऊपर आ गए । पवन अब सीधा दक्षिण-पश्चिम की ओर से बह रहा था, और झन्झा ऐसी चल रही थी जिसमें सामान्यत: जहाज पर एक छोटे किये गये पाल से ज्यादा पाल नही ताने जाते; मगर चूंकि हम पवन के बहाव के साथ जा रहे थे इसलिए हमारा जहाज ज्यादा पाल भी ले चल सकता था । इसलिए मल्लाहों को ऊपर भेज दिया गया, शिखरपालो से एक लपेट खोल दिया गया, और छोटे किये गये अग्र पाल तान दिये गये । जब हमने शिखरपाल यार्डों को मस्तूल शिखरों पर चढाना शुरू किया तब सारे मल्लाह पाल रस्सियो पर मौजूद थे, और हम "चीयरिली मेन" वाला सहगान इतनी जोर से गा उठे कि आवाज स्टेटेन द्वीप के आधे रास्ते तक जरूर पहुँची होगी ।

पाल ज्यादा लग जाने से जहाज पानी पर भागा जा रहा था । फिर भी अभी उसमें और पालो की गुन्जाइश थी । कप्तान ने छतरी पर से पुकार कर आदेश दिया—"उस अगले शिखरपाल का एक और लपेट खोल कर उसे तान दो !" आज्ञानुसार दो मल्लाह फुर्ती से ऊपर की तरफ लपके ! ठन्ड से जमी हुई रस्सियों को उतार लिया गया, और पाल रस्सियो की सहायता से पाल खोल दिया गया । अब झझा को खुल कर खेलने के लिए और अधिक पाल मिल गये । इस परिवर्तन का नतीजा देखने के लिए सारे मल्लाहो को डेक पर रोक लिया ।

जहाज पर इतने पाल लग चुके थे जितने वह बर्दाश्त कर सकता था, चूंकि पीछे समुद्र वेग से थपेडे मार रहा था इसलिए पहिए को सम्भालने के लिए दो आदमियों की जरूरत पडी। हमारा जहाज अपने मोरों से झाग फेंकता हुआ बढ़ रहा था और इसकी बौछार पीछे गली तक आ रही थी। जहाज अपूर्व रफ्तार से बढ रहा था। फिर भी जहाज सब पालों को ठीक से सम्भाल रहा था। रोक बंधनियों के छेदो मे रस्सी डाल कर कस कर बाँध दिया गया; काफियो को पिछले तानों पर चढा दिया गया; और प्रत्येक पाल को सुरक्षित व दृढ बनाने के लिए जो कुछ करना चाहिए था, वह सब कर दिया गया।

कप्तान कभी पालो की तरफ़ ऊपर और कभी प्रतिवात दिशा में देखते हुए डेक पर लम्बे-लम्बे डग भरता रहा। मालिम गली में खडे हुए, अपने हाथ मसलते हुए जोर-जोर से जहाज से बातें करने लगा—"हुर्रा, बूढे डोल। तेरी बाग रस्सी बोस्टन की कन्याओ के हाथ में है।" हम लोग अगवाड में खड़े देख रहे थे कि क्या डन्डे इतने पालो को किस प्रकार सह रहे हैं, और जहाज की रफ्तार कितने मील फी घन्टा होगी। कप्तान ने पुकार कर कहा—"मिस्टर ब्राउन, शिखर मस्तूल के दुपेंचा पाल को भी ऊपर लगवा दो। जहाज जो सम्भाल नही सकेगा, उसे घसीटेगा।"

मालिम ने एक क्षण के लिए कप्तान की तरफ़ देखा मगर वह किसी को भी अपने सामने बोलने ही नही देता था। इसके बाद वह उछल कर आगे आया।

"ऐ, सुनो ! शिखर मस्तूल का दुपेंचा पाल लगा दो ! तुम ऊपर चढ जाओ, में नीचे से रस्सिया भिजवाता हूँ।"

हम तेजी से शिखर पर पहुँचे। वहाँ से हमने एक गन्ट लाइन को नीचे झुकाया और इसके सहारे रस्सियो को ऊपर खीच लिया; टेको और पाल रस्सियो का सिरो कर बूम को लगाया और फुर्ती से उसे बाध दिया और रोक थाम के लिए निचली पाल रस्सी को नीचे लटका दिया। रात में तारे साफ चमक रहे थे, ठन्ड थी और हवा तेज चल रही थी; मगर हर एक नाविक मन लगाकर काम करता रहा। नाविकों के चेहरो से ऐसा पता लगता था जैसे वे यह सोच रहे हो कि "बूढ़ा" पागल तो नही हो गया है, लेकिन किसी ने कहा कुछ नही। हमने शिखर मस्तूल का एक नयी तरह का दुपेंचा पाल तैयार कर लिया था जिसमें एक लपट था—वह एक ऐसी बात थी जिसके बारे में शायद ही पहले कभी सुना गया हो, और जिसकी मल्लाहों ने यह कहकर मजाक उडाई थी कि दुपेंचा पाल में लपेट लगाने के वक्त

उसे उतार लिया जाता है। मगर अब हमें उसकी उपयोगिता मालूम होने लगी क्योकि शिखरपाल में लपेट होने के कारण दुपेंचा पाल में भी लपेट लगाये बिना नही लगाया जा सकता था। यह तो जरूर है कि छोटे किये गये शिखरपालो के साथ लपेट वाले दुपेंचा पालों का होना नई बात तो थी मगर इसका भी एक कारण था—अगर वह टूट भी जाता तो हमे ज्यादा से ज्यादा एक पाल और एक बूम का ही नुक्सान उठाना पडता; लेकिन अगर संपूर्ण शिखरपाल उड जाता तो उसके साथ ही मस्तूल और सारी चीजों से भी हमें हाथ धोना पडता।

जब हम ऊपर थे तो पाल को बाहर निकाल लिया गया और यार्ड पर झुका कर तानने के लिए बिल्कुल तैयार कर लिया गया। उपयुक्त अवसर आते ही पाल रस्सियो की मदद से यार्ड को ब्लाक तक पहुचा दिया गया; किन्तु जब मालिम पाल उतार रस्सी से बिल्ली फादा निकालने के लिए आया तो जहाज बिल्कुल, बीचोबीच तक काप गया। बूम चाबुक के हत्थे की तरह मुड गया और हमें हर क्षण यह आशंका होने लगी कि कुछ न कुछ नुक्सान होगा; मगर चूंकि यह बूम पहाडी सनोबर की लकडी का था, और छोटा होने पर भी मजबूत था, इसलिए यह किसी बहुत लचीली चीज की तरह झुक गया, और टूटा नही। बढ़ई का कहना था कि इससे बढ़िया लकडी उसने आज तक नही देखी थी।

सारे मल्लाहो ने मिल कर ताकत लगाई और टैक को जल्दी ही बूम के कोने पर ले आए, शीट रस्सियो को कस दिया गया, और रोक तथा खुले बाजू की बधनी को इस तरह कसकर बाध दिया गया कि उन्ही पर इसका बोझ पड़े। पाल के नाम पर हर धागा और सारा वरासन जहाज पर लाद दिया गया था और यह नया पाल लगाने से जहाज पानी के ऊपर इस तरह दौड रहा था जैसे उस पर भूत सवार हो। सारे पाल लगभग आगे की ओर थे, वे इसको पानी से ऊपर उठाते थे और जहाज एक लहर से कूद कर जैसे दूसरे लहर पर चढ़ कर दौडा जा रहा था। जिस वक्त से उसका निर्माण हुआ था तब से आज तक यह कभी इस रफ्तार से नही दौडा था; और चाहे हम सब मर जाते तब भी अब उस पर पाल का एक छोटा टुकडा भी चढ़ा सकना सम्भव नही था।

यह देख लेने के बाद कि जहाज पाल संभाल लेगा, मल्लाहो की दूसरी टोली को नीचे भेज दिया गया और हमारा पहरा डेक पर रहा। पहिए पर लगे हुए दो आदमी जहाज के मार्ग को तीन पाइन्टो के अन्दर ही रखने के लिए जितना

कुछ कर सकते थे, कर रहे थे; क्योंकि जहाज जवान घोड़े की तरह बेतहाशा भाग रहा था।

मालिम कभी पालों की तरफ देखते हुए और कभी झाग को इधर-उधर उड़ता देखते हुए डेक पर घूमता रहा और अपनी जांघों पर हाथ मारते हुए जहाज से कहने लगा—"हुर्रा, टट्टू, तुझे शायद सूंघ आ गई है!—तुझे मालूम हो गया है कि तू घर की तरफ चल रहा है!" और जब लहरों पर वह उछलता और कभी-कभी पानी के ऊपर आ जाता, और उसका पठाण, डन्डे और मस्तूल तड़कने चटखने लगते तो मेट कहता—"भाग, बेटे! भागे जा! क्या बढ़िया चाल है! जब तक यह चटखता रहेगा तब तक सब ठीक है!" हम इस बीच लगातार रस्सियों को संभाले खड़े रहे ताकि अगर जरूरते पड़े तो पाल उतार दें।

चार घन्टियां बजने पर हमने लाग लगाया तो पता चला कि जहाज की रफ्तार ग्यारह समुद्री मील (एक समुद्री मील—६०८० फुट) थी जो बहुत बढ़िया थी। और अगर समुद्र ऐसा न होता जो बार-बार जहाज को उसके रास्ते से हटा देता था, तो यकीनन जहाज की रफ्तार इससे कहीं ज्यादा साबित होती। मैं एक अन्य नवयुवक के साथ पहिए पर पहुँचा। यह केन्नेबैंक का रहने वाला था और कुशल कर्णधार था। दो घन्टों तक हम वहां उठ कर काम करते रहे।

कुछ मिनटों के बाद ही यह पता चल गया कि यहां काम करने के लिए हमें जैकिटें उतारनी पड़ेगीं। हालांकि ठन्ड काफी थी, फिर भी हम कमीज पहने हुए काम करते रहे और पसीने से तर हो गए। जब आठ घन्टियां बजीं तो पहिए से छुट्टी मिलने को हमें काफी ़खुशी हुई। हम अपनी बर्थों पर जाकर लेट गए और जब तक सो सके, सोते रहे। मोरों के नीचे समुद्र लगातार गरजता रहा, और अगवाड़ के ऊपर छोटे झरने की भांति बराबर गिरता रहा।

चार बजे हमें फिर बुलाया गया। पोत के ऊपर वही पाल अब भी लगा हुआ था और झन्झा में अगर कोई परिवर्तन हुआ था तो यह कि उसका जोर कुछ बढ़ गया था। अभी तक दुपंचा पाल को लपेटने का कोई प्रयत्न नहीं किया गया था और इस काम के लिए अब काफी देर हो चुकी थी। अगर अब हम उसको उतारने का प्रयत्न करते तो यह इसके टुकड़े-टुकड़े हो जाते और इसके झपेटे में कुछ और भी जा सकता था। इसलिए अब सिर्फ़ यही उपाय था कि पाल आदि अभी जैसे हैं, जहाज पर वैसे ही लगे रहें। अगर इस बीच झन्झा के झोंकों में कमी हो

गई तो ठीक है और अगर उसमें कमी न हुई तो कोई कमजोर बल्ली या रस्सा टूट कर पानी में गिर पडेगा और उसके बाद हम पाल को बाँध देंगे ।

एक घन्टे से ज्यादा देर तक जहाज इस रफ्तार से दौडता रहा । जैसे वह अपने सामने समुद्र की इकट्ठी तरगो का ढेर लगाता चल रहा हो । स्प्रिट पाल यार्ड के ऊपर पानी इस रफ्तार से गिरता रहा जैसे बाध के ऊपर से गिरता है । पौ फटने के वक्त झन्झा के वेग में थोड़ी कमी हुई, और हमारा जहाज उसके दबाव से मुक्ति पाकर अभी आसानी से चलना शुरू ही किया था कि मिस्टर ब्राउन ने उसको आराम न करने देने का निश्चय करके, और सूरज के निकलने पर पवन के कुछ हलका हो जाने की आशा पर निर्भर करके हमें निचले दुर्पेचा को भी तान देने का हुक्म दिया ।

यह पाल बहुत विशाल था और इसमें इतनी हवा आ सकती थी कि कोई डच जहाज् एक हफ्ते तक उसी हवा के सहारे चलता रहे । शीघ्र ही उसको तैयार कर लिया गया, बूम को लगा दिया गया, रोकगाई पिरो दिये गये, और आलसियो को भी पाल रस्सियों को थामने के लिए बुला लिया गया । लेकिन झन्झा का वेग इस वक्त भी इतना तीव्र था कि हमें पाल को तानने में लगभग एक घन्टा लग गया; इसे तानने में हमें पाल की बाहरी रस्सी से हाथ धोना पडा और चार बूम टूटते-टूटते बची ।

ज्यो ही यह व्यवस्था पूरी हुई, जहाज फिर पानी को इस तरह चीरने लगा जैसे पागल हो गया हो, और इस तरह चलने लगा जैसे बाज पक्षी हो । पहिए पर ड्यूटी देने वाले आदमी बेदम हो गए थे और उनकी सांस धौकनी की तरह चलने लगी थी । सुकान बहुत भारी चल रहा था । यही नहीं जैसी आशा थी, झन्झा में कोई कमी नही हुई और सूरज बादलो के पीछे छिपा रहा । एकायक एक झटका लगा, और खुले बाजू पर पहिए वाला आदमी दूसरी तरफ जा गिरा । मालिम भाग कर पहिया को सभालने पहुच गया । उस आदमी ने भी तुरन्त उठकर पहिए के अटो को संभाला, और उन दोनों ने ऐन वक्त पर जहाज को मुडने से बचा लिया, हालांकि लगभग आधा दुर्पेचा पाल पानी में डूब गया था और जब जहाज ऊपर उठा तो बूम पैंतालीस डिग्री के कोण में झुक गयी ।

अब यह बात साफ् हो गई थी कि जहाज पर पाल उसकी बर्दाश्त से बाहर थे । मगर अब उसको हलका करने की कोशिश करना बेकार था क्योंकि छल्ला

रस्सियां ज्यादा मज़बूत नहीं थी। वे पाल की रस्सियों को काटने की सोच ही रहे थे कि फिर से जोर का एक धक्का लगा और चर बूम जोर से आवाज़ करते हुए निचली रस्सियो पर आ गिरी। बाहर की रस्सी का ब्लाक टूट गया, शिखर मस्तूल के दुपेंचा पाल की बूम इतनी झुक गयी कि इससे पहले मैंने कभी कल्पना भी न की थी कि लकडो इतनी मुड सकती है।

मेरे देखते-देखते गाई अलग हुए बूम एक ही झटके में अर्ध चन्द्राकार स्थिति में आयी, और तत्क्षण फिर उसकी शक्ल पहले जैसी हो गई। पहले ही झटके में छल्ला रस्सियां टूट गई; जिस खूंटे से पाल रस्सियाँ बँधी हुई थी, वह बाहर निकल आया, और पाल स्प्रिट पाल यार्ड और शीर्ष गाई के चारों ओर इस तरह लिपट गया कि हमारे लिए उसे अलग करना कठिन हो गया। आध घन्टे में हम इस सब बखेडे को सुलझा सके। जहाज पर अब शिखर मस्तूल के दुपेंचा पाल ही लगे हुए थे और इससे अधिक पाल वह सभाल भी नही सकता था।

सारे दिन और अगली रात हम लगातार इसी पाल के नीचे सफ़र करते रहे और झन्झा का वेग तनिक भी कम न हुआ। दो आदमी हमेशा पहिए पर रहे; और हर समय पहरा देते रहे; और सिवाय इसके कोई और इधर-उधर देखते रहे, और थक कर चूर हो जाए,—अगले दिन की दोपहर को—

रविवार, चौबीस जुलाई, को हम अक्षाश ५०° २७' दक्षिण, देशांतर ६०° १३ पश्चिम में थे और पिछले चौबीस घन्टों में अक्षाश की चार डिग्री पार कर चुके थे। चूंकि अब हम फाकलैंड द्वीपों के उत्तर की ओर थे इसलिए जहाज को भूमध्य रेखा की ओर ले जाने के लिये उसका मुंह उत्तर-पूर्व की ओर किया गया। भूमध्यरेखा की ओर मुंह किये और केप हार्न की ओर पिछला हिस्सा किये हमारा जहाज शान से बढ़ा चला जा रहा था, लहर की हर उछाल केप को पीछे छोडती जा रही थी, और हर घन्टे हम अपने घर, और गर्म मौसम के नज़दीक पहुंच रहे थे।

जब हम बर्फ से घिर गये थे और हमारी सारी परिस्थितियाँ निराशा-जनक व हतोत्साहित करने वाली हो गई थीं तो हमने कई बार यह प्रार्थना की थी कि अगर हम जरा आगे बढ कर थोडा उत्तर की ओर बढ़ जाते तो हमें फिर और किसी बात की ज़रूरत न रह जाती। अब हम ऐसी स्थिति में थे, सामने साफ़ समुद्र था, और हवा इतनी अधिक अनुकूल थी जिसके लिए मल्लाह प्रार्थनाएं किया करते हैं।

अगर यह सच मान लिया जाए कि यात्रा का सबसे अच्छा अंश अन्तिम अंश होता है, तो अब हमें वह सब–कुछ हासिल हो गया था जिसकी इच्छा हम कर सकते थे। हर एक मल्लाह बहुत अधिक उत्साह में था, और जहाज भी अपनी कैद से बाहर निकल कर हमारी तरह खुश नज़र आ रहा था। जब-जब पहरे बदलते, तो ऊपर आने वाले मल्लाह नीचे जाने वाले मल्लाहो से पूछते—"जहाज कैसे चल रहा है ?", और उन्हे उत्तर में उसकी रफ्तार तो बतायी ही जाती, साथ ही ये शब्द भी प्राय: जोड दिये जाते थे—"ओह ! और आखिर बोस्टन की लडकियो ने इसकी रस्सिया थाम ली हैं और इसे भगाये लिए जा रही है ।"

सूरज प्रति दिन अंतरिक्ष से ऊपर चढ़ता गया और रातें छोटी होती गईं; और हर सुबह डेक पर पहुँचने पर तापमान में काफी परिवर्तन महसूस होने लगा। रस्सियों और डन्डो पर से बर्फ भी पिघलने लगी, और शिखरो पर व निचले मस्तूलो की टेको को छोड कर बाकी सब जगह से खत्म हो गई।

चूंकि अब झन्झाए पीछे छूट गई थी, इसलिए शिखरपालों को खोल दिया गया, और जहाज़ पर अधिक से अधिक पाल तान दिये गये। जब भी मल्लाहों को पालरस्सियो पर लगाया जाता, तो वे सहगान गा उठते और मन लगा कर पाल तानते थे।

जैसे-जैसे मौसम अच्छा होता गया, हम पालों की संख्या बढाते गए और केप हार्न छोडने के एक हफ्ते बाद लम्बे टापगैलेंट मस्तूलों को लगाया गया, टापगैलेंट और रायल यार्डो को क्रास किया गया, और जहाज को उसकी पुरानी आकृति लौटा दी गई।

पहली रात के बाद हमने फिर सदर्न क्रास नहीं देखा; अन्तरिक्ष में मैगलन बादल सिकुड कर छोटे–छोटे होते गए, और हर अगली रात को अक्षांश का परिवर्तन इतना ज्यादा होता कि दक्षिण दिशा में कुछ तारा समूहों का दीखना बिल्कुल बंद हो गया और उत्तरी अन्तरिक्ष में अन्य तारा समूह उभर आए।

रविवार, इकतीस जुलाई। दोपहर को हम अक्षांश ३६° ४१' दक्षिण में और देशान्तर ३८° ०८' पश्चिम में थे और हमने नौ दिन में कुछ रास्तो को बदल कर दो हजार मील का फासला तय कर लिया था। साढे चार दिन में एक हज़ार मील !...यह रफ्तार तो भाप के जहाज के बराबर थी।

आठ बजने के कुछ देर बाद ही जहाज का आलम देख कर यह महसूस होने

लगा कि अच्छे मौसम में अभी तक यह हमारा पहला रविवार है। आकाश में बादल न थे और सूरज चमकने लगा था। इससे यह आशा हुई कि दिन सुन्दर और गर्म रहेगा। जिस तरह आम तौर पर रविवार के दिन होता है, आज कोई काम हो नहीं रहा था, इसलिए हम अगवाड़ को साफ़ करने के काम में लग गए।

पिछले महीने जितने भीगे और गन्दे कपड़े इकट्ठे हो गए थे, उनको डेक पर लाया गया; सन्दूकों की जगह बदली गई; झाड़ू, पानी की बाल्टियों, पुचारे, रगड़ने के ब्रुश, और खुरचनी नीचे ले जाई गई, और उनका तब तक इस्तेमाल हुआ जब तक अगवाड़ का फ़र्श चाक की तरह सफ़ेद न हो गया, और हर एक चीज़ साफ़ और व्यवस्थित न हो गई। इसके बाद बर्थों से उठा कर बिस्तरों को डेक पर फैलाया और सुखाया गया तथा हवा लगायी गयी; डेक के टब को पानी से भरा गया, और ऊपर लाए हुए सारे कपड़ों की सफ़ाई शुरू हो गई।

हर नाप और रंग की, भीगी और गन्दी कमीजें, ऊनी जर्सियां, पायजामे, जैकिटें, बड़े मोजे—इनमें से बहुत से कपड़ों में तो गन्दे कोने में काफ़ी देर से पड़े रहने के कारण फफूंद लग गई थी—इन सब को धो कर फैला दिया गया। अन्त में इन सब को सूखने के लिए रस्सियों से कस कर बाँध दिया गया। डेक पर जहां-जहां धूप थी, वहां भीगे बूट और जूते सूखने के लिए डाल दिये गये, और पूरे जहाज पर एक अजीब सा दृश्य उपस्थित हो गया।

कपड़ों की सफ़ाई समाप्त करने के बाद हम अपने शरीरों की सफ़ाई करने लगे। निश्चित मात्रा में दिए जाने वाले साफ़ पानी में से हमने जो कुछ बचाया था, वह बाल्टियों में डाला गया, और साबुन और तौलिये की मदद से हमने स्नान किया—इसको मल्लाह अपनी बोली में साफ़ पानी का स्नान कहते हैं। एक ही बाल्टी का इस्तेमाल कई मल्लाहों को करना था इसलिये एक दूसरे से लोग बराबर बाल्टी की माँग कर रहे थे, लेकिन चूंकि हम महासागर के शुद्ध खारे पानी में काफी नहा चुके थे, इसलिये साफ़ पानी का स्तेमाल पिछले पांच हफ्तों से इकट्ठी मैल और कालिख को छुटाने के लिए ही किया गया, और सब का काम चल गया।

हमने एक-दूसरे के साबुन मला, और तौलिए तथा पालों के टुकड़ों की मदद से बदन पोंछा, और और फिर एक-दूसरे के ऊपर पानी की बाल्टियां उलट दीं।

इसके बाद दाढ़ी बनाने, बालों में कंघी करने और ब्रुश करने का नम्बर आया। दिन का पहला आधा भाग इस तरह गुज़ार देने के बाद हम तीसरे पहर को अगवाड में साफ़ पतलूनें और कमीजें पहने हुए, नहाए-धोए, दाढ़ी बनाए हुए और बालों में कंघी किये हुये, और हलका महसूस करते हुए बैठ कर आराम से पढ़ने, कपडे सीते या बातें करते रहे। आकाश निर्मल था, और ऊपर तेज़ सूरज चमक रहा था। अनुवात क्वार्टर पर समीर बह रहा था, निचले और ऊपरी भाग में दुपेंचा पाल लगे हुए थे, और छूटे पाल सब दिशाओं में उड़ रहे थे। हमें महसूस हुआ कि हमारे नाविक-जीवन का सुखदायक भाग शुरू हो गया है।

शाम को सारे कपडे रस्सियों से उतार लिए गए। वे अब तक साफ़ हो चुके थे और सूख गए थे। फिर उनको तह करके सन्दूकों में रख दिया गया। हमने अपने बरसाती टोप, भारी बूट, गर्नसे फ्राक, तथा बहुत ठन्डे मौसम के लिए उपयुक्त सामान अलग रख दिया, हमें आशा थी कि बाकी सफर में इनकी जरूरत नहीं पडेगी और हम पतझड के मौसम में किनारे पर पहुंच जाएंगे।

संपूर्ण पाल तानने के बाद जहाज जितना सुन्दर लगता है, इसका वर्णन अनेक बार किया गया मगर ऐसे लोग बहुत कम हैं जिन्होने कभी जहाज में सारे पाल लगे हुए देखे हैं। जब जहाज अपने आम पालों को लगा कर बन्दरगाह पर पहुँचता है या वहाँ से रवाना होता है, और जब शायद उसमें दो या तीन दुपेंचा पाल लगे हुए होते हैं, तो कहा जाता है कि उसमें सारे पाल लगे हुए हैं। मगर सच यह है कि जहाज पर सारे पाल तभी लगाये जाते हैं जब हलका और लगा-तार एक-सा समीर बह रहा हो और वह इतना नियमित हो कि यह विश्वास किया जा सके कि वह इसी तरह काफी देर तक चलता रहेगा, तब उसमें इधर-उधर, तथा आगे-पीछे भारी और हलके, और दुपेंचा पाल लगा दिये जाते हैं, और इस तरह संपूर्ण पालो से सज्जित होने के बाद जहाज इस दुनिया का सब से सुन्दर गतिशील पदार्थ होता है। जो लोग समुद्र पर बहुत यात्रा कर चुके हैं, ऐसा दृश्य उन्होने भी शायद ही देखा हो, क्योंकि आप अपने पोत के डेक से इस दृश्य को उस तरह नही देख सकते जिस तरह आप अपने सामने किसी भिन्न वस्तु को देख सकते हैं।

जब हम इन उष्णकटिबन्धो में ही सफ़र कर रहे थे तब एक रात को मैं किसी काम से फ्लान जिब बूम के सिरे पर गया और काम समाप्त करने के बाद

में उडा, और सामने के दृश्य के सौन्दर्य की मन ही मन प्रशन्सा करता हुआ बूम पर काफी देर तक बैठा रहा। मैं डेक से बहुत दूर था, इसलिये जहाज को एक अन्य पोत के रूप में देख सकता था। मैंने सामने पानी के अन्दर से ऊपर उठा हुआ जहाज का छोटा-काला ढाचा था, उस पर टिका हुआ पालो का एक विशाल पिरैमिड था जो ढाचे तक फैला हुआ था और उस वक्त रात की अस्पष्टता में मुझे ऐसा नजर आया जैसे उस पिरैमिड का शिखर बादलों को छू रहा हो।

समुद्र इतना शान्त था जैसे कोई झील हो, हलका व्यापारी-पवन धीरे-धीरे और एक ही रफ्तार से पीछे से बहता चला आ रहा था; गहरे नील आकाश में चमकीले उष्णकटिबन्धीय तारे जडे हुए थे, कही कोई आवाज न थी—सिर्फ जहाज के पिछवाड के नीचे से पानी की हिलोरों की ध्वनि आ रही थी; पालों को चौडाई और ऊंचाई में फैला दिया गया था,—दो निचले दुपेंचा पाल दोनो ओर डेक से आगे तक फैले हुए थे, शिखर मस्तूल के दुपेंचा पाल, शिखरपालों के पंखों की भाति, फैले हुए थे; उनके ऊपर टापगैलेंट दुपेंला पाल जैसे निडर होकर फैल रहे थे, और उनसे भी ऊपर दो रायल दुपेंचा पाल जैसे उसी डोर से बंधे पतगों की भाति उडते नजर आ रहे थे; और सबसे ऊपर नन्हा आकाश पाल, इस पिरैमिड के शिखर जैसा, सितारो को छूता सा दिखायी दे रहा था, जैसे वह मनुष्य की पहुच से बाहर हो। समुद्र इतना शात था और समीर इतना स्थिर था कि अगर इन पालों की संगमरमर की मूर्ति भी बना दी जाती तो भी वे इससे ज्यादा निश्चल न हो पाती। समीर ने उनको इतनी अच्छी तरह से फुलाया था कि पालों के ऊपर जरा सी सिकुडन तक नही पड रही थी, पाल का कोई दूर का कोना तक नही हिल रहा था।

मैं इस दृश्य को देखने में इतना खो गया था कि मुझे अपने पास ही एक मल्लाह की मौजूदगी का कतई पता नही लगा जो मेरे साथ ही आया था। यह आदमी लडाकू जहाज में काफी दिन रह चुका था और इस दृश्य को मेरे साथ ही प्रशंसापूर्ण दृष्टि से देख रहा था। जब उसने मरमरी पालो को देखते हुए स्वय से यह कहा तो मुझे उसकी उपस्थिति का भान हुआ...ये कितनी शांतिपूर्वक अपना काम करते हैं!"

अच्छे मौसम के साथ ही हमारा काम बढ़ा क्योकि जहाज को बन्दरगाह में पहुचने के लिए तैयार करना था। शायद इस विवरण से जमीन पर रहने वालों

को कुछ पता लग सके कि ऐसे मौके पर जहाज में क्या-क्या काम होता है...यात्रा के पहले हिस्से में जहाज को लगातार समुद्र के लिए तैयार किया जाता है, और दूसरे हिस्से में बन्दरगाह के लिए। मल्लाह कहा करते हैं कि जहाज किसी औरत की घड़ी की तरह है जिसकी मरम्मत बराबर करानी पडती है।

जो नए और मजबूत पाल हमने केपहार्न के पास लगाए थे, उनको उतारना था, और उनकी जगह पुराने पाल चढाने थे जो अभी भी अच्छे मौसम में काम में लगाये जा सकते थे; सारी रस्सियो को जहाज के अगले और पिछले भाग में फिर से व्यवस्थित करना था; मस्तूलों को रस्सो का सहारा देना था; स्थिर रस्सियों पर तारकोल करना था; निचले और शिखर मस्तूल की, अगले और पिछले भागो की रस्सियों को, नीचे गिराना था; सारे जहाज की अन्दर और बाहर से सफाई करके रङ्ग करना था, डेकों पर वार्निश करनी थी, और हर चीज़ को इतना अच्छा बना देना था कि जहाज जब बोस्टन पहुँचे तो मालिक देखकर खुश हो जाएं।

इस काम में बहुत देर लगनी थी, और इसलिए बाकी सफ़र के दौरान सारे मल्लाहो से डेक पर दिन भर ये काम कराये गये। मल्लाह-लोग इसे जान लेवा काम बताते हैं मगर जहाज को सजा-संवार कर रखना ही था, और हर सवाल का यही जवाब दिया जाता था..."आखिर हम घर लौट रहे हैं।"

कई दिनो तक हम इसी तरह काम करते हुए सफर करते रहे और वर्णन योग्य कोई घटना नही घटी। सप्ताह के उत्तरार्द्ध में हमारा जहाज दक्षिण पूर्वी व्यापारी हवाओं में पड गया जो पूर्व-दक्षिण-पूर्व की दिशा में बहती रही। ये हवाएं इतनी तेज और नियमित चलती हैं कि जब तक हम उनके अक्षांशो में रहे हमें रस्सी को हाथ लगाने की जरूरत ही न पडी।

इस बीच एक ऐसी घटना हुई जिसका अपने आप मे तो कोई महत्व नही है मगर जहाज के मल्लाहो के लिए इसका विशेष महत्व है क्योकि यह यात्रा की ऊब को दूर करती है, और मल्लाहो को कई दिनो तक बातचीत का विषय मिल जाता है। ऐसी छोटी बातें भी अक्सर दिलचस्प लगती हैं क्योकि ये जहाज के रिवाजों और उन पर काम करने वालो की मानसिक स्थिति का परिचय देती हैं।

व्यापारी पोतो में होता यह है कि जहाज के कामो के सम्बन्ध में आम तौर पर कप्तान अपने आदेश मालिम को दे देता है और उनका पालन पूरी तरह मालिम

पर ही छोड दिया जाता है। यह प्रथा इतनी मान्य हो चुकी है कि कानून जैसी बन गई है। इस प्रथा का अतिलंघन कोई भी चतुर कप्तान नही किया करता। किन्तु अगर मालिम अच्छा नाविक न हो तो अक्सर कप्तान को स्वयं ही अपने आदेशो का पालन भी कराना पडता है। मगर हमारे मालिम के बारे मे यह बात नही कही जा सकती। वह चतुर नाविक था, और अपने अधिकार की सीमाओं पर किसी का दावा सहन नही कर सकता था।

सोमवार की सुबह को कप्तान ने मालिम को अगले शिखर मस्तूल को सीधा कराने का आदेश दिया। आज्ञानुसार मालिम आगे आया, और सारे मल्लाहों को काम पर लगा दिया, तानों और पिछली तानों पर कप्पिया लगाना, यहा खीचना, वहा ढीलना, और इसी तरह के अनेक कामों में मल्लाह लगे हुए थे और मालिम वहां खडा काम करा रहा था। तभी कप्तान स्वय वहा आ गया और वह स्वयं भी आदेश देने लगा। इससे गडबडी हो गई और मालिम असमन्जस में पडकर अपनी जगह से हटा और कप्तान से यह कहते हुए जहाज के पिछले भाग में चला गया—

"सर! यदि आप अगवाड में आएंगे तो मैं पीछे चला जाऊगा। अगवाड पर हममें से एक ही काफी है।"

कप्तान ने इसका जवाब दिया, मालिम ने चिढ कर इसका कडा जवाब कप्तान को दिया। बात बढ़ गयी, मुट्ठिया तन गई, और ऐसा लगा कि कोई मुसीबत आने वाली है।

"मैं इस जहाज का मालिक हूं।"

"यह ठीक है, सर। और मैं जहाज का मालिम हूँ और अपनी ड्यूटी समझता हूँ। मेरी जगह आगे है और आपका आसन पीछे है!"

"मेरी जगह वह है, जो मैं चाहूँ। मैं सारे जहाज का मालिक हूँ और तुम तभी तक मालिम हो जब तक मेरी इच्छा है।"

"कप्तान टी—आप एक शब्द से मुझे हटा सकते हैं। मैं मल्लाह का काम करने के लिए तैयार हूँ! मैं केबिन की खिडकियों से नही आया हूँ! अगर मैं मालिम न रहूँगा तो भी मल्लाह तो बना रहूँगा।" इत्यादि, इत्यादि।

हम लोगों के लिए यह मजेदार बात थी। हम इन शक्तिसम्पन्न लोगों के बीच होती हुई इस प्रतियोगिता का मज़ा एक-दूसरे की तरफ़ इशारे करते हुए लेते रहे।

कप्तान मालिम को जहाज के पिछले भाग में ले गया और उनमें देर तक बातें होती रहीं। अन्त में मालिम फिर अपनी ड्यूटी पर लौट आया। कप्तान ने धाँधली करके जहाज की एक प्रथा तोड़ी थी जो जहाज के सामान्य कानून का एक अंग थी। कप्तान जानता था कि मालिम अच्छा नाविक है और उसको ड्यूटी पूरी करने के लिए किसी की सहायता की ज़रूरत नहीं है। मालिम का नाराज़ होना ठीक था। फिर भी गलती मालिम की ही मानी जायगी, कप्तान की नहीं।

कप्तान जो करे, वही ठीक है क्योंकि वह कप्तान है; और जहाज पर उसका विरोध ही गलत है। जहाज के कागजात पर दस्तखत करते समय यह बात हर मल्लाह और हर अफ़सर को समझा दी जाती है। यह समझौते का एक अंश है। फिर भी व्यापारी पोतों में बहुत सी प्रथाएं पनप चुकी हैं जो सर्वविदित प्रणाली बन गई हैं और उनको परम्परा-सिद्ध कानून की भाँति प्रयोग में लाया जा सकता है।

यह सच है कि कप्तान में ही सारी शक्ति निहित होती है और अफ़सरों के पास उनके प्राधिकार तभी तक रहते हैं जब तक कप्तान चाहे; और मल्लाहों को किसी भी किस्म के काम पर लगाया जा सकता है, लेकिन इन चिरप्रचलित रूढ़ियों को तोड़ने से कई जहाजों पर संकट उत्पन्न हुआ है, और यहाँ तक कि उनके आधार पर अदालतों में मुकदमे भी चले हैं। ये बातें उस आदमी की समझ में बिल्कुल नहीं आ सकतीं जो इन प्रथाओं की सार्वदेशिक प्रकृति और उपयोगिता से परिचित नहीं है। अनेक बार इन प्रथाओं को तोड़ने के लिए कप्तानों को उत्साहित किया गया है, और मल्लाहों पर अत्याचार किए गए हैं। अजनबी लोगों की समझ में इन बातों का महत्व और अर्थ नहीं आयेगा और जमीन पर रहने वाली जूरियों और न्यायाधीशों ने भी इन्हें तोड़ने वालों को दन्ड देना उचित नहीं समझा है।

अगवाड़ में हुई एक लड़ाई को भी सामान्य घटनाओं से भिन्न माना जा सकता है। सारे सफ़र के दौरान मालिम और स्टीवार्ड में अनबन रही थी और लगता था कि किसी दिन इनमें ठन न जाय। लड़ाई तब हुई जब मालिम ने स्टीवार्ड से पीने के लिए पानी मांगा और उसने यह कहते हुए उसके लिए पानी लाने से इन्कार कर दिया कि वह कप्तान के अलावा और किसी का नौकर नहीं है। यहां प्रथा स्टीवार्ड के पक्ष में थी। लेकिन जवाब देते हुए वह मालिम के नाम के साथ "मिस्टर" का पुंछल्ला लगाना भूल गया। इससे मालिम नाराज़ हो गया और उसने उसको

"काला आलसी" कह दिया । इस पर उनमें धींगामुश्ती हो गई और वे एक-दूसरे को मारने और धकियाने लगे । हम एक तरफ़ खड़े मजा लेते रहे । अश्वेत स्टीवार्ड ने उसको धक्का देना चाहा मगर मालिम ने उसको गिरा लिया और धर दबोचा । अब स्टीवार्ड चिल्लाने लगा—"मुझे छोड दो, मि० ब्राउन, नही तो खून-खच्चर हो जाएगा !" इसी बीच कप्तान डेक पर आ गया । उसने दोनो को अलग-अलग किया, और स्टीवार्ड को पीछे ले जाकर रस्सी के छः कोडे लगाये । स्टीवार्ड ने अपनी बात ठीक साबित करने की कोशिश की, मगर कप्तान ने उसकी "खून-खच्चर" की बात खुद सुनी थी, और उसके कोडे खाने के लिए यही बात थी, कप्तान ने उसकी कोई बात सुनने से इनकार कर दिया ।

* * *

अध्याय—३४

उसी दिन मैं एक बार बाल-बाल बचा । ऐसी घटनाएं मल्लाह के जीवन में अक्सर होती रहती हैं । मैं तीसरे पहर बराबर ऊपर ही चढ़ा रहा था और काम करता रहा था । करीब एक घन्टे से मैं अगले टापगैलेंट यार्ड पर खडा हुआ था जो टाई के सहारे फहरा रहा था । काम खत्म होने के बाद मैंने डोरियों को लपेटा, अपना बोर्ड हाथ में लिया, टापगैलेंट रस्सियो को संभाल कर पकडा और यार्ड से एक पाव उठाया । अभी मैं दूसरा पांव उठा ही रहा था कि टाई अलग हो गई और यार्ड नीचे गिर गया । चूं कि मैंने रस्सियो को पकड लिया था इसलिए मैं बच तो गया मगर मेरा दिल तेज़ी से धडकने लगा ।

अगर टाई एक क्षण पहले अलग हो गई होती, या अगर मैं यार्ड पर एक क्षण भी और ठहरता तो मैं बहुत जोरो से नब्बे या सौ फुट की ऊंचाई से समुद्र में गिर पडता, या डेक पर गिर पडता जो उससे भी बुरा होता । फिर भी, "जान बची तो लाखों पाये"—यह एक ऐसी कहावत है जिसका प्रयोग मल्लाह अक्सर किया करते हैं । चलते हुए जहाज में खतरे से बच जाना मजाक से ज्यादा कुछ नही है । अगर कोई ऐसी बात को बहुत गम्भीर समझे तो उसकी मजाक उड़ती है । मल्लाह हमेशा इस बात को जानता है कि उसकी जिन्दगी एक धागे के सहारे लटकती रहती है, इसलिए बार-बार उसे इसकी याद दिलाना बेकार है । इसलिए, यदि कोई आदमी मरने से बच जाता है तो या तो वह उसकी चर्चा ही नही करता, या उस घटना का मजाक उडाता है ।

मैंने अक्सर देखा कि किसी नाविक की जान एक क्षण के अंतर से, या बाल बाल बची और उसकी ओर किसी ने ध्यान तक नही दिया। केप हार्न से आते समय हमी में से एक छोकरा, एक अंधेरी रात में शिखरपाल को छोटा कर रहा था। वह समय ऐसा था कि उसको बचाने के लिए कोई नाव तक पानी में नही उतारी जा सकती थी और वहा से अगर वह नीचे गिर जाता तो उसे वही छोड़-कर हमें आगे बढ जाना पड़ता। अचानक इस छोकरे का पैर रस्सी पर से फिसल गया और अगले ही क्षण वह पानी में गिर पडता, कि यार्ड पर उसके साथी नाविक ने उसकी जैकिट का कालर पकड लिया और उसको यार्ड पर खीच लिया। उसने कहा—"अबकी कस कर पकड, बन्दर के बच्चे, होश में आकर काम किया कर।" इसके बाद इस घटना की कभी चर्चा ही नही हुई।

रविवार, सात अगस्त। अक्षाश २५° ५९ दक्षिण, देशातर २७°००' पश्चिम। आज इंग्लैण्ड के बजरे "मेर-कैथरीन" से बात की जो बाहिया से आ रहा था और कलकत्ता जा रहा था। यह पहला मौका था जब हमने लगभग सौ दिनों के बाद कोई जहाज देखा था और अपने जहाज के लोगों को छोडकर किसी अन्य मनुष्य की आवाज सुनी थी। मल्लाहों का रस्सों के ऊपर से आता हुआ यो-हो स्वर हमारे कानों को सुखदायक लगा।

यह जहाज काफी पुराना, और खस्ताहाल था। जहाज पर ऊपर और नीचे दुपेंचा पाल तने हुए थे। उस वक्त हलका मगर समान वेग से चलने वाला समीर बह रहा था। उसके कप्तान ने कहा कि वह उसे चार नाट से अधिक तेज रफ्तार से नही चला सकता। उसका ख्याल था कि उनका सफर बहुत लबा खिचेगा। उस समय हमारा जहाज छः नाट की रफ्तार से चल रहा था।

अगले दिन दोपहर को करीब तीन बजे एक बड़ा कारविट जहाज इग्लैंड का झन्डा लगाए हुए गुजरा। इस जहाज के अगले और पिछले भाग में रायल और आकाश पाल तने थे। वह पवन के साथ बहता जा रहा था। इसका रुख दक्षिण की ओर पूर्व से होकर था और शायद यह केप हार्न की ओर जा रहा था। उसके शिखरों और काले मस्तूल शिखरों पर नाविक चढे हुए थे, बडी-बडी बल्लिया लगी हुई थी, पाल अंग्रेजी के टी अक्षर के आकार के कटे हुए थे, और उसमें लडाकू जहाज के सारे चिन्ह दिखाई पड रहे थे। यह जहाज बहुत तेज चल रहा था और देखने में बहुत अच्छा लग रहा था, इसके पिछले भाग में गर्वयुक्त, आलीशान

दीखने वाला, सेंट जार्ज का झन्डा फहरा रहा था जिसमें गहरे लाल रंग के ऊपर क्रास चमक रहा था।

हमारा जहाज भी शायद इस जहाज के समान ही शानदार दिखाई पड रहा था—जहाज के अगल-बगल चौडाई तक फैले हुए दुपेंचा पाल, उनके ऊपर स्तूप के आकार में लगे हुए रायल दुपेंचा पाल और आकाश पाल, जहाज का ढाँचा पूरी तरह पालों से ढका हुआ था और शायद हमारा जहाज कुछ इस तरह का दिखाई दे रहा होगा जिसे ह्वेल के शिकारी जहाजों के नाविक ठूंठ टापगैलेंट मस्तूलों वाले अपने जहाज को "पाल के बादलो के नीचे केप हार्न जाने वाला जहाज" बताते हैं।

शुक्रवार, बारह अगस्त। सुबह के वक्त हम ट्रिनिडाड के टापू से गुजरे तो अक्षाश २०° २८ दक्षिण, देशांतर २६° ०८ पश्चिम में अवस्थित है। दोपहर को बारह बजे स्थिति थी उत्तर-पश्चिम ½ उत्तर, फासला सत्ताइस मील। दिन बहुत सुन्दर था, हलकी व्यापारी हवाओं के बहने के कारण शान्त था, और टापू दूर से घास के मैदान से ऊपर उठा हुआ एक छोटा-सा नीला टीला-जैसा लग रहा था। इस सुन्दर और शान्त स्थल के बारे में, कहा जाता है कि, उष्ण कटिबंधीय समुद्रों की शान्ति छीनने वाले समुद्री डाकुओ ने बहुत दिनो तक यहा डेरा डाला था।

बृहस्पतिवार, अट्ठारह अगस्त। दोपहर को तीन बजे हम फरनेन्डो नारोन्हा के टापू से गुजरे जो अक्षाश ३° ५५ दक्षिण, देशातर ३२° ३५ पश्चिम में अवस्थित है। हमने बोस्टन से सफर शुरू करने के बाद शुक्रवार की रात को बारह बजे से शनिवार को दोपहर के एक बजे के बीच में चौथी बार देशातर ३५° पश्चिम में भूमध्यरेखा को पार किया। स्टेटनलैंड से चले हमे सत्ताईस दिन हो गए थे और जिन रास्तों से हमने सफर किया था, उन रास्तो से यहां से वहा तक का फासला चार हजार मील से ज्यादा था।

अब हम भूमध्यरेखा की उत्तर की दिशा में थे और प्रतिदिन हमारा अक्षाश बढता जा रहा था। दक्षिणी अक्षाश के अंतिम चिन्ह, अर्थात् मैंगलन बादल अंतरिक्ष में डूब गए थे; और उत्तरी अक्षाश के परिचित चिन्ह—ध्रुव तारा, सप्तर्षि और अन्य परिचित चिन्ह अंतरिक्ष में उभरने लगे। जमीन के बाद इन नक्षत्रो को रात में अपने सिर पर चमकता हुआ देखने से (जिनकी छाया में वह उत्पन्न हुआ

है) आदमी इस बात को सबसे ज्यादा महसूस करता है कि वह अपने घर के निकट पहुच रहा है।

मौसम बहुत गर्म होता जा रहा था और जैसा उष्णकटिबन्धों में आमतौर पर होता है, कभी चिलचिलाती धूप निकल आती थी तो कभी तूफान आ जाता था। मगर हममें से किसी ने भी गर्मी की शिकायत नही की क्योंकि हम इसी मौसम के लिए अपना सर्वस्व त्याग सकते थे। हमारे पास अब पानी भी काफी था क्योंकि हमने एक बड़ा सा चदोवा तान कर उसमें बीच में पत्थर डाल कर बारिश का पानी इकट्ठा कर लिया था। उष्णकटिबन्धों में गर्म मौसम के बीच-बीच में ये वर्षा के तूफान आते ही रहते हैं।

साफ़ आसमान; सिर के ठीक ऊपर आग उगलता हुआ सूरज, धीरे-धीरे होता हुआ काम, और मोटे सूती कपडे की पतलूनें, चेक की कमीजें, और तिनकों से बने टोप पहने हुए डेक पर इधर-उधर घूमते लोग; पानी पर धीरे-धीरे रेंगता हुआ जहाज; पहिए पर सुकान टिकाये आंखो को टोप से ढक कर बैठा नाविक; नीचे तीसरे पहर की झपकी लेता हुआ कप्तान; जहाज के साथ चलती डालफिन मछली को तफरेल पर झुक कर निहारता हुआ यात्री, छतरी के अनुवात बाजू पर एक पुराने शिखरपाल की मरम्मत करता हुआ सिलमाकुर; कटि में बेंच पर बैठ कर काम करता हुआ बढई, रस्से बटते हुए छोकरे, चरखे पर तैयार होने वाला बटा-, सन; और गप्पे लडाते हुए जहाज के अगले भाग से पिछले भाग तक चहलकदमी करते हुए मनुष्य।

प्रतिवात दिशा में कुछ काले रंग का एक बादल उमडता है, आकाशपालों पर ब्रेल लगा दिया जाता है, कप्तान डेक सीढी के बाहर सिर निकालता है, बादल की तरफ़ देखता है, ऊपर आता है, और डेक पर चहलकदमी करने लगता है।—बादल फैलता हुआ जहाज के ऊपर आ पहुचता है;—सन का टब, पाल, और अन्य वस्तुओ को नीचे पहुँचा दिया जाता है, और रोशनदान तथा फलका खिडकी को बन्द कर दिया जाता है; अगवाड को ढक दिया जाता है। "रायल की पाल रस्सियों के पास खडे रहो"—पहिए पर बैठा नाविक सुकान को संभाल लेता है ताकि तूफान उसे गफलत में न दबा ले।

तूफान जहाज पर हमला करता है; अगर तूफान का वेग कम होता है तो रायल यार्डों को मस्तूल से बांध दिया जाता है और जहाज अपने रास्ते पर चलता

रहता है, लेकिन अगर उसका वेग तीव्र है तो आगे और पीछे के रायल पालो को लपेट दिया जाता है; कुछ मल्लाह ऊपर चढ़ कर उन्हें बाध देते हैं, टापगैलैंट यार्डों को बाध दिया जाता है, फ्लान जिब को नीचे उतार लिया जाता है, और जहाज को तूफान के सामने से थोडा हटा दिया जाता है,—मुकान पर काम करने वाला नाविक जहाज को प्रतिवात दिशा में ले चलने के लिए अपनी पूरी ताकत लगा देता है। उसी समय इतनी तेज बारिश होती है कि नाविक सिर से पैर तक एक क्षण में ही सराबोर हो जाता है। इस पर भी कोई मल्लाह जैकिट नही पहनता या टोपी नही ओढता क्योंकि गर्मी के मौसम में नाविक भीगने की परवाह नहीं करता, वह यह भी जानता है कि धूप भी जल्दी ही निकल आएगी।

ज्यो ही तूफान का वेग कम होता हुआ प्रतीत होगा, हालांकि अजनबी उस वक्त भी जहाज को तूफान से घिरा हुआ समझेगा, ये आवाजें आनी शुरू हो जाएगी—"जहाज को फिर उसके रास्ते पर लाओ।"—"रास्ते पर लाते हैं, सर।", मल्लाह उत्तर देते हैं। "टापगैलैंट यार्डो को फहरा दो।"—"फ्लान जिब को जल्दी से ऊपर चढ़ाओ।"—"अरे, छोकरो। तुम जल्दी से ऊपर पहुंच कर रायल पालों को ढीला छोड दो।"—और तूफान से पूरी तरह बाहर निकलने के पहले ही जहाज पर सारे पाल चढ़ा दिये जाते हैं, और वह फिर अपने रास्ते आ लगता है।

सूरज फिर आसमान में चमकने लगता है, इस बार वह पहले से बनिस्बत ज्यादा गर्म है, और डेक को और मल्लाहो के कपडो को सुखा देता है, फलों को खोल दिया जाता है, पाल को छतरी पर फैला दिया जाता है, बटा सन तैयार करने वाले नाविक फिर से चरखा चलाने लगते हैं; रस्सियों को लपेट लिया जाता है; कप्तान नीचे की ओर चला जाता है; और शान्तिपूर्वक यात्रा करने में आए विघ्न के सारे चिन्ह मिटा दिए जाते है।

ये दृश्य, जिनमें कभी-कभी घन्टो, और कई बार तो दिनों तक, पूर्ण निस्तब्धता छायी रहती है, अटलांटिक के उष्णकटिबंधीय प्रदेश के उत्तम उदाहरण हैं। रातें सुहावनी थी। चूंकि दिन भर सभी मल्लाह काम करते थे इसलिए पहिए पर ड्यूटी देने वाले और अगवाड पर पहरा देने वाले एक-एक नाविक को छोड कर बाकी सब नाविको को डेक पर सोने की इजाजत दे दी गई थी। यह इजाजत शब्दों में तो इतनी स्पष्टता से न दी गई थी मगर इशारों में समझा दी गई थी।

आँगने पर हमें सोने की अनुमति नही मिल सकती थी। अगर पहरा देने वाले को झपकी लेते हुए पकड लिया जाता तो सारी पहरा-टोली को जागना पडता था।

लेकिन अधिकतर हम इस अनुमति का लाभ ही उठाते और अगर हमारी ड्यूटी पहिए या अगवाड पर न होती तो रस्सियो के ऊपर, खुले बाजू की पटरी के नीचे, डन्डो पर, बेलन चरखी के नीचे या किसी और शात स्थान में अपनी जगह बना कर हम पहरे के घन्टे सोकर गुजार देते थे। इस आराम को पाकर हम बहुत खुश थे, क्योकि जब "सारे मल्लाहो, यहाँ आओ" की परिपाटी चल रही थी तो हर छत्तीस घन्टे बाद नीचे गुजारने के लिए केवल चार घन्टे मिल पाते थे, और अगर हमें सोने के लिए एक घन्टा भी मिल जाता था तो हम उस मौके को हाथ से न जाने देते थे। अगर कोई भारी वर्षा में हमारी पहरा टोली को सोते देखता तो उसे इस सचाई का पूरा अहसास हो पाता। अक्सर ऐसा हुआ कि जब हम डेक पर पहुँचे तो चारों ओर पूर्ण निस्तब्धता छायी हुई और बारिश लगातार हो रही थी। हमने तय किया कि नीद खराब करना बेकार है। यह सोच कर हमने जहाज की रस्सियो को कुछ नीचे खीच कर उनका एक झूला सा बनाया ताकि डेक पर तैरता हुआ पानी हमसे दूर रहे, और जैकिट अपने ऊपर डाल कर इतनी गहरी नीद में सोते रहे जैसे कोई डच परो के लिहाफ-गद्दो में चैन की नीद ले रहा हो।

भूमध्यरेखा को पार करने के बाद हफ्ते-दस दिन तक हमें निस्तब्धता, तूफानो, सम्मुख पवन और तेज पवन के मौसमो की विविधता प्राय: मिलती रही। एक बार हमने बोलिन के सहारे पवन का सामना करने की तैयारी की, और एक घन्टे के बाद, किसी विशेष अडचन का सामना किए बिना पवन की बगल मे गुजर कर हमने तफरेल पर मन्द समीर के साथ, दुपेंचा पालों को दोनो ओर फैला कर यात्रा की,—ऐसा तब तक चलता रहा जब तक कि हमारा जहाज उत्तर-पूर्वी व्यापारी हवाओ में नही पड गया, और उस दिन—

रविवार, अट्ठाईस अगस्त था और अक्षाश था १२° उत्तर। पिछले एक या दो दिन से व्यापारी पवन के बादल हमें दिखाई दे रहे थे, और हमें उम्मीद थी कि किसी भी क्षण हमारा जहाज इन हवाओ में पड सकता है। दिन के पहले भाग में जो हलका दक्षिणी समीर बह रहा था, वह दोपहर को बन्द हो गया और उसके स्थान पर उत्तर-पूर्व से कुछ झोके आए। इसलिए हमने दुपेंचा पालो

को लपेट दिया, और जहाज को हवा के रुख में कर दिया। लगभग दो घन्टे बाद, हम आगे की ओर शान से बढ रहे थे और लहरो के झागों को आगे की ओर तथा अनुवात में छोडते जा रहे थे। उत्तर-पूर्वी व्यापारी पवन बराबर चल रहा था जिसमें ठन्डक थी, जो समुद्र में तरंगें पैदा कर रहा था, और जो हमें यह मौका दे रहा था कि हम रायल पालों को ताने हुए आगे बढ सकें। ये हवाएं लगातार चल रही थी और तेज़ थी इसलिए हम आम तौर पर बोलिन पर चल रहे थे क्योंकि हमारा रास्ता करीब-करीब उत्तर-पश्चिम की दिशा में था, और कभी-कभी ज्यों ही उनका रुख पूर्व की ओर होता तो हमें प्रमुख टापगेलेंट दुपेंचा पाल को तानने का मौका मिल जाता और हम फिर आसानी से उत्तर की ओर मुड जाते थे। कुछ दिनों तक ऐसा ही चलता रहा, जब कि—

रविवार, चार सितम्बर को इन हवाओं ने अक्षांश २२° उत्तर, देशांतर ५१° पश्चिम में, कर्क रेखा के ठीक नीचे, हमारा साथ छोड दिया।

कई दिनों से हम निस्तब्धता के अक्षांशों में खराब मौसम को "झांसा देते हुए इधर-उधर' सफ़र करते रहे। इस बीच हमें सब प्रकार के मौसम और पवन का सामना करना पडा था, और जब हम वेस्ट इन्डीज के अक्षांश में पहुँचे तो हमें एक तूफान (वातोत्पात) का भी सामना करना पडा। यह महीना ऐसा था जिसमें वहाँ हरीकेन तूफानो का डर था, और हम १८३० के उस अति भयंकर हरीकेन तूफान के रास्ते से गुजर रहे थे, जिसने अपने रास्ते में आने वाली हर चीज को नेस्तनाबूद कर दिया।

जब व्यापारी पवन हमें छोड गया था, तब पहली रात को हमें उष्णकटि-बन्धीय वातोत्पात (तूफान) का एक उत्कृष्ट उदाहरण देखने को मिला। तब हम क्यूबा द्वीप के अक्षाँश में थे। रात के पहले भाग में जहाज के ठीक पीछे से हलका समीर बहता रहा जो धीरे-धीरे शात हो गया। आधी रात से पहले पूर्ण निस्तब्धता छा गई, और एक गहरे काले बादल ने आसमान को पूरी तरह ढक लिया।

जब बारह बजे डेक पर हमारी ड्यूटी शुरू हुई तो रसातल जैसा घटाटोप अंधकार छाया हुआ था। दुपेंचा पालो को बाध दिया गया था और रायल पालो को लपेट दिया गया था। कही जरा भी हरकत न हो रही थी, यार्डों के सहारे पाल निश्चल और उदास—से लटक रहे थे, और पूर्ण निस्तब्धता तथा अन्धकार इतना मूर्त्त था कि हम सब आतंकित हो उठे थे। कोई बोला कुछ नहीं, मगर

सब इस तरह खडे रहे जैसे उन्हे किसी घटना के घटित होने का इन्तजार हो। कुछ मिनटो के बाद मालिम हमारे पास आया और उसने फुसफुसाहट जैसी धीमी आवाज में जिब को नीचे उतार लेने का आदेश दिया। उसी तरह बिना बोले अगले और पिछले टापगैलेन्ट पालो को उतार लिया गया; और हमारा जहाज पानी के ऊपर निश्चल पडा रहा। अब हमें एक चिन्ताजनक और अप्रिय घटना की संभावना थी और उसके घटित होने में जो विलम्ब हो रहा था वह हमारे लिए कष्टदायक ही था।

कप्तान के डेक पर चहलकदमी करने की आवाज हमें सुनाई दे रही थी मगर अंधेरा इतना ज्यादा था कि अगर कोई अपना हाथ भी देखना चाहता तो आंखो के ठीक सामने लाकर ही देख सकता था। शीघ्र ही मालिम एक बार फिर आगे आया और उसने धीमी आवाज में प्रमुख टापगैलेन्ट पाल को मस्तूल से बांध देने की आज्ञा दी। वातावरण की धाक व खामोशी इतना असर कर गई थी कि जैसे आमतौर पर मल्लाह रस्मों पर चढकर गीत गाने लगते हैं, वैसा कोई प्रयत्न किए बिना शान्तिपूर्वक छल्ला रस्सियों और बंटलाइन को खीच लिया गया।

इंग्लैन्ड का एक युवक और मैं उसको लपेटने के लिए ऊपर गए; और अभी हमने, बन्ट को ऊपर खीचा ही था कि मालिम ने हमें कोई और आज्ञा दी, जिसे हम सुन न सके। मगर, हमने यह अनुमान लगाया कि उसने हमें जल्दी से काम निबटाने की आज्ञा दी है, इसलिए हमने जल्दी-जल्दी उसको लपेटा और रस्सियो के सहारे फुर्ती से नीचे उतर आये। नीचे पहुँच कर हमने सारे मल्लाहो को ऊपर की ओर, जहाँ से हम अभी–अभी नीचे उतरे थे, देखते हुए पाया। जहां हम थे, उसके ठीक ऊपर, यानी प्रमुख टापगैलेन्ट मस्तूल के शिखर के ऊपर एक प्रकाश–पिन्ड, जिसे नाविक कोरपोसेन्ट के नाम से पुकारते हैं, चमक रहा था। जब हम ऊपर थे तो मालिम ने हमसे इसी को देखने के लिए कहा था। सारे मल्लाह इसको बहुत ध्यान से देख रहे थे। मल्लाहों में यह धारणा प्रचलित है कि अगर यह पिन्ड रस्सियो में दिखाई दे तो उसका अर्थ है कि आगे मौसम अच्छा मिलेगा, लेकिन अगर यह नीचे की ओर दिखाई पडता है तो वह तूफान के आने की सूचना देता है।

दुर्भाग्य से, हमारे लिए वह अपशकुन बन कर ही आया था, वह नीचे टाप-गैलेन्ट याडँ की भुजा पर चमकता दिखाई दिया। हम भली घडी में याडँ से चल

दिये थे क्योंकि इस पिन्ड की पीली रोशनी का किसी व्यक्ति के चेहरे पर पडना उसके लिए नितात अशुभ और अमंगलकारी माना जाता है। वह अंग्रेज नाविक इस पिन्ड को अपने बिल्कुल पास और सिर के ठीक ऊपर पाकर अत्यन्त व्यग्र हो उठा। कुछ मिनटों के बाद ही यह प्रभापिन्ड अदृश्य हो गया। एक बार फिर वह अगले टापगैलेन्ट यार्ड के ऊपर चमकता नजर आया। कुछ देर चमकने के बाद वह फिर अदृश्य हो गया। इसके बाद अगवाड पर मौजूद एक मल्लाह ने उसे फ्लान जिब बूम के सिरे पर देखकर हमें उधर देखने का इशारा किया।

मगर वर्षा की कुछ बून्दों के गिरने से और अंधेरे के तेजी से घने होने के कारण हमारा ध्यान बन्ट गया, ऐसा महसूस हुआ जैसे इससे रात का अंधेरा एकदम बहुत बढ गया है। कुछ मिनटों के बाद बिजली की धीमी कडक सुनाई दी और दक्षिण-पश्चिम दिशा में कुछ रूक-रूक कर बिजली चमकी। शिखरपालों के अलावा सभी पालो को बाँध दिया गया। फिर भी तूफान आता नही दिखाई दिया। कुछ झोके ज़रूर आए जिनसे शिखरपाल थोडा फडफडाये, मगर फिर वे पहले की तरह मस-तूल से सट गये और शात हो गये। एक क्षण के बाद अकस्मात हमारे जहाज के ठीक ऊपर बिजली चमचमायी और भयानक वज्रघोष हुआ, और हमारे सिरों के ठीक ऊपर बादल इस तरह पानी बरसाने लगा जैसे महासमुद्र नीचे गिराया जा रहा हो। हम निश्चल और स्तम्भित-से खड़े रह गये; लेकिन बिजली गिरी नही।

वज्रघोष रह-रह कर होता रहा, उसकी आवाज़ इतने जोर की थी कि साँस अवरुद्ध होने लगा, तथा "बार–बार होने वाली बिजली की चमक" से सम्पूर्ण महासागर आलोकित हो उठा। भारी वर्षा केवल कुछ मिनटो तक ही चली। उसके बाद कभी–कभी बून्दा–बांदी या बौछार पडती रही। लेकिन आसमान में कई घन्टों तक बिजली चमकती रही जिसमे रात का घना अंधकार कभी–कभी चुंधिया देने वाली रोशनी से छंट जाता था। इस दौरान हमारा जहाज निश्चल पड़ा था, और ऐसा लगता था जैसे वह निशाना लगाने का अचल टार्गेट हो। हम अपने पहरे के वक्त भी बराबर इसी तरह खडे रहे। चार बजे हमें छुट्टी मिली।

इस दौरान शायद ही कोई किसी से बोला हो, घन्टियां भी नहीं बजीं, और पहिए पर पहरा चुपचाप बदल दिया गया। थोडी-थोडी देर के बाद भारी बौछार हो जाती। हम सिर से लेकर पैर तक बिल्कुल भीग जाते थे और हमारी आंखें बिजली की चमक से चुंधिया जाती थी जो घोर अंधकार को भी दूर कर सकती

थीं और उसमें इतनी रोशनी थी कि अशुभ लगती थी। गडगडाहट के साथ बादल गरजते थे जिनके धक्को से महासागर कांपता हुआ लगता था।

जहाज को आमतौर पर बिजली से क्षति नहीं पहुँचती, क्योंकि उसमें बहुत से पाइन्ट होते हैं और उसके विभिन्न भागों में लोहा काफी मात्रा में लगा रहता है। बिजली का प्रवाह हमारे लगरों, शिखर पाल की रस्सियों और टाई पर दौडता रहा, फिर भी हमें कोई नुकसान नही पहुँचा।

चार बजे जब हम नीचे की ओर चले तो वातावरण ऐसा ही था और उसमें कोई परिवर्तन नही आया था। जब स्थित ऐसी भयंकर हो कि बिजली की एक ही चमक जहाज के दो टुकडे कर सकती हो, या उसमें आग लगा सकती हो, या जब हरीकेन तूफान के झोकों, से मृत्यु जैसी निस्तब्धता टूट रही हो, और तूफान के झोके जहाजसे मस्तूल उखाड कर ले जाने की धमकी दे रहे हों, तो सोना आसान नही है। और वह आदमी मल्लाह नही है जो ड्यूटी समाप्त करने के बाद सो नही सकता और बुलावे पर फौरन डेक पर नही पहुंच सकता। और जब सात घन्टिया बजने पर "अनुवात पहरे के मल्लाहों, आओ" की परिचित आवाज़ सुन कर हम डेक पर पहुँचे तो हमने देखा कि सुबह साफ़, और सुन्दर थी तथा सूरज चमक रहा था; जहाज आराम से आगे बढ रहा था; मंद समीर बह रहा था; और जहाज पर सारे पाल चढ़ा दिये गये थे।

* * *

अध्याय—३२

वेस्ट इंडीज़ के अक्षाश से बरमूडा तक हमें प्रत्येक प्रकार का मौसम मिला। बरमूडा पहुच कर हमें दक्षिणी-पश्चिमी पवन मिला जो पतझड के शुरू के मौसम में आमतौर पर सयुक्त राज्य के तट पर एक रफ्तार से बहता है। यहा दो-तीन साधारण झन्झाएं भी आयी जो सामान्य ढङ्ग से ही आईं और एक ही उदाहरण से उनके बारे में समझा जा सकता है।

एक दिन अच्छे मौसम में तीसरे पहर के समय सारे मल्लाह काम पर लगे हुए है, कुछ रस्सियो पर हैं और अन्य डेक पर, तेज़ समीर चल रहा है जहाज पवन के रुख में बढ़ रहा है, आकाशपालो पर ब्रैल लगा दिये गये हैं। तीसरे पहर के अन्तिम भाग में समीर का वेग बढ जाता है, जहाज उसके रुख में बढता है, और बादल तूफानी नजर आते है। अगवाड पर बौछार शुरू हो जाती है और छोकरे

जिस सन को बट रहे थे वह भीग जाता है। वे उसे लपेट कर नीचे पहुँचा आते हैं। मालिम काम बन्द करा देता है और रोजाना की बनिस्बत कुछ पहले ही डेकों को खाली करा देता है, और नीचे उतरते हुए उस आदमी को जो मस्तूल के ऊपर काम कर रहा था पान रस्सियो को प्रतिवात दिशा में कर देने की आज्ञा देता है। एक छोकरा पिछले रायल पाल को लपेटता है। रसोइया सोचता है कि अब शायद "बहुत काम" करना होगा; इसलिए वह सपर जल्दी ही तैयार कर लेता है।... रोजाना की तरह मेट सारे मल्लाहों को सपर लाने की आज्ञा नही देता बल्कि पहरा टोलियो को बारी-बारी से इसके लिए भेजता है।...सपर खाते वक्त हमें ऊपर के लोगो द्वारा रायल पालो को उतारने को आवाज सुनाई पडती है।

डेक पर पहुँच कर, देखते हैं कि समीर पहले की बनिस्बत तेज हैं, और सामने समुद्र में उत्ताल तरंगें उठ रही हैं।

रोज की तरह सारे मल्लाहो को अधपहरों में बाँट कर अगवाड में रह कर सिगरट पीने, गाना गाने और कहानियाँ सुनाने का मौका नही दिया जाता। एक पहरा-टोली के नाविक नीचे जाते हैं और यह कह कर सो जाते हैं कि आज की रात खराब साबित होगी और इसलिए दो घन्टे की नीद छोडनी नही चाहिए। बादल काले और गहरे दिखाई देते हैं; पवन का वेग बढता है, और सम्मुख क्षुब्ध समुद्र में जहाज गिरता-पडता चलता है। समुद्र उसके अगवाड पर आघात करता है, और उसका पानी पूरे जहाज को भिगोता हुआ पीछे मोरियो से निकल जाता है।

फिर भी और पालों को नही उतारा जाता क्योकि कप्तान श्रेष्ठ चालक हैं और दूसरे चालकों की तरह वह अपने टापगैलेंट पालों को नही उतारना चाहता। टापगैलेंट पाल से समीर और झन्झा का पता चल जाता है। जब किसी जहाज पर टापगैलेंट पाल तने होते हैं तो समझ लीजिए समीर बह रहा है, हालाकि मैंने अपने जहाज में ऐसे मौसम में भी छोटे किये गये शिखरपालो पर टापगैलेंट पालों को तना देखा है जब कि आधा सबदरा पानी में डूबा हुआ था और अनुवात की मोरियों में घुटनों-घुटनो पानी था। आठ घन्टियाँ बजने पर शिखरपालों को छोटा करने की बात ही नही चलती और पहरा-टोली को "हुक्म सुनते ही ऊपर आने के लिए तैयार रहने" की आज्ञा देकर नीचे भेज दिया जाता है।

शिखरपालों को पहरा-बदली के समय छोटा न कराने के लिए "बुड्ढे" को

शिकायत करते हुए हम नीचे जाकर बिस्तर में पड जाते हैं। अब अगर पाल छोटे करने के लिए सारे मल्लाहो को बुलाने की नौबत आयी तो नीचे के मल्लाहो की नीद व्यर्थ ही खराब होगी। यह सोच कर हम जागते ही रहते हैं कि अगर थोडी देर के बाद जागना ही है तो सोने से क्या फायदा।...डेक पर पवन शोर करता है, और जहाज सम्मुख विक्षुब्ध महासागर में चलते हुए कराहता तथा डोलता है और ऊब-डूब करता है। मोरी के ऊपर समुद्र इतने जोर से आघात कर रहा है जैसे किसी चट्टान पर आघात कर रहा हो।...अगवाड में जलता हुआ धुन्धला लैम्प इधर-उधर झोके लेने लगता है और चोर्जें खिसक-खिसक कर अनुवात की ओर जाने लगती हैं।

"क्या यह दूसरे मालिम का बच्चा कभी भी टापगैलेंट पालों को नही उतारेगा? ऐसा रहा तो डन्डे पालों को फाड कर निकल जायेंगे।" बूढा बिल कहता है। वह अक्सर शिकवा-शिकायत करता रहता था, और अधिकाँश पुराने जमाने के नाविको की भाति जहाज को लापरवाही से चलाने के खिलाफ था। आखिर एक आज्ञा दी जाती है;..."अच्छा, अच्छा, सर।"...अगवाड से उत्तर दिया जाता है; रस्सियो को खीच कर डेक पर डाल दिया जाता है;...ऊपर से एक पाल के फडफडाने की आवाज और साथ ही एक छोटी तेज पुकार सुनाई पडती है जो मल्लाहों के मुंह से अक्सर छल्ला रस्सियो पर काम करते समय निकलती है।... "अब अगले टापगैलेंट पाल को लपेटा जा रहा है।"

हम पूरी तरह जाग रहे हैं और सब कुछ इतनी स्पष्टता से होता हुआ समझ रहे हैं जैसे हम स्वयं डेक पर मौजूद हों। मस्तूल के शिखर से पहरे के अफसर के लिए एक जानी-पहचानी आवाज सुनाई देती है कि क्या खुले बाजू की कमानी को कस दिया जाए?... "ओह। पाल लपेटने के लिए ऊपर एस...गया है।" अब हमारे सिरो के ठीक ऊपर रस्सियो को घसीटा जा रहा है, और देर तक होने वाली जोर की आवाज और हंसलियों की खड-खड से हमें मालूम हो जाता है कि फ्लान जिब को उतार लिया गया है। दूसरा मालिम प्रमुख टापगैलेंट पाल को तना ही रहने देता है, लेकिन जब एक उत्ताल तरंग जहाज पर चढ आती है और अगवाड को इस तरह पानी में डूबा देती है जैसे पूरा महासागर ही जहाज में घुस आया हो, तब पीछे से आती हुई आवाज से हमें पता लग जाता है कि उस पाल को भी उतार लिया गया है।

इसके बाद कुछ देर तक जहाज आराम से चलने लगता है; दो घन्टियाँ बजती हैं, और हम कुछ देर के लिए सोने की कोशिश करते हैं। कुछ देर बाद ही मोखे पर बहुत जोर की खटखटाहट होती है—"सारे मल...ला...हों, ऊ...प...र।" हम अपनी बर्थों से फ़ौरन उछलते हैं, झट से जैकिट और बरसाती टोप पहनते हैं, और सीढ़ियाँ फाँद कर ऊपर पहुँचते हैं। मालिम हमसे पहले ही ऊपर पहुँच चुका है, और अगवाड़ पर खड़ा होकर कुपित सांड़ की तरह चरित-चीख कर आज्ञाएं दे रहा है; छतरी पर कप्तान चिल्ला-चिल्लाकर आज्ञाएं दे रहा है, और दूसरा मालिम कटि में खड़े होकर लकड़बग्घे की तरह चीख रहा है। जहाज समुद्र पर ऊब-डूब कर रहा है; अनुवात की मोरियाँ पानी में डूब गयी हैं, और अगवाड़ पूरी तरह झागों से ढक गया है। रस्सियों को खोल दिया गया है और वे पानी के साथ डेकों पर बह रही हैं। शिखर पालों के याडं नीचे कर दिये गये हैं, और पाल मस्तूलों पर बुरी तरह फड़फड़ा रहे हैं, और जमना पहरे के लोग प्रमुख शिखर पाल को छोटा करने में लगे हैं।

हमारे पहरे के मल्लाह अगले शिखरपाल को खींचने में सफल हो जाते हैं, और ऊपर चढ़ कर उसमें दो लपेट लगा देते हैं। अगले पाल को छोटा करने के बाद जमना पहरे के लोगों के साथ उनमें बहस हो जाती है कि देखें पहले कौन अपने शिखरपाल को मस्तूल (के शिखर) से बांधे। सारे मल्लाह प्रमुख टैंक पर काम में लग जाते हैं, कुछ मल्लाह जिब को बांध रहे हैं और तान पाल को ऊंचा कर रहे हैं, हम पिछले शिखरपाल के मल्लाह पिछले शिखरपाल में दो लपेट लगाकर उसे ऊंचा कर देते हैं। सारा काम शीघ्र निबट जाने के कारण "पहरा टोली नीचे जाए" की आवाज़ आती है और हम नीचे जाकर बाकी वक्त को, जो शायद डेढ घन्टा है, सो कर गुज़ारने के लिए लेट जाते हैं।

सुबह के पहरे के दो-तिहाई वक्त तक हवा बहुत ज्यादा तेज़ बहती है, किन्तु अंतिम भाग में उसकी तेज़ी काफी कम पड़ जाती है और हम प्रत्येक शिखरपाल का एक लपेट खोल देते हैं और उनके ऊपर टापगैलेंट पालों को लगा देते हैं; सात घन्टियाँ बजने पर जब नाश्ते के लिए लोग ऊपर आते हैं तो एक लपेट और खोल देते हैं, और फिर सारे मल्लाह पाल रस्सियों पर लग जाते हैं, टापगैलेंट की रस्सियों व पाल रस्सियों पर कुप्पियाँ लगाते हैं, फ्लान जिब को तानते हैं, तथा जहाज को फिर तेज रफ्तार से ले चलते हैं।

बोस्टन से रवाना होने से कुछ हफ्ते पहले ही हमारे कप्तान ने शादी की थी, और दो साल तक घर से बिछुडे रहने के बाद उससे आशा की जा सकती थी कि वह जहाज पर अधिक पाल चढ़ाने में ढील नहीं डालेगा। मालिम भी घबराने वाला आदमी नहीं था; और दूसरा मालिम, हालांकि वह अधिक पाल तानने से डरता था मगर साथ ही कप्तान से इस तरह घबराता था जैसे मौत से, इसलिए कभी-कभी तो वह कप्तान और मालिम से भी ज्यादा पाल तनवा देता था। हमने चौबीस घन्टे में तीन फ्लान जिब बूमों को चढ़ाया, स्प्रिट पाल यार्डों को लगाया; और दुर्पचा पालो की बूमों को यथापूर्व ही रहने दिया।

घर पहुंचने की स्वाभाविक जल्दी के अलावा जहाज को तेज़ी से चलाने का एक कारण और भी था। जहाज में पर स्कर्वी रोग की शुरुआत हो गयी थी। और एक मल्लाह तो इससे इतना पीडित हो गया था कि वह ड्यूटी देने लायक भी न रहा, और अंग्रेज युवक; बेन, की हालत भी खराब हो गई थी और बराबर बिगडती ही जा रही थी। उसके पैरों में इतनी सूजन चढ़ गई थी और इतना दर्द होता था कि वह चल नहीं सकता था; उसके माँस की लोच इस कदर खत्म हो गई थी कि अगर उसे कहीं से दबाया जाता तो वह अपनी असली हालत में नहीं आता था; उसके मसूढ़ों में सूजन बढ़ती गई और आखिर उसके लिए मुंह खोलना असभव हो गया। उसके मुंह से सास लेते समय बदबू आने लगी, सारी शक्ति और उत्साह समाप्त हो गया, वह कुछ खा-पी नहीं सकता था, हालत दिन-पर-दिन बिगडती गई, जिस तरह उसकी तबियत गिर रही थी. अगर उसी तरह गिरती रहती और उसके लिए कुछ न किया जाता तो एक हफ्ते में वह चल बसता। करीब करीब सारी दवाईयां खत्म हो चुकी थीं और अगर हमारे पास सन्दूक-भर दवाईयां भी रही होती तो भी कुछ न हो पाता क्योंकि इस बीमारी में सिर्फ ताजा खाने और खुश्क जमीन से ही लाभ होता है।

यह बीमारी आजकल इतनी ज्यादा नहीं होती जितनी पहले होती थी; आम तौर पर इस बीमारी के कारण ये बताए जाते हैं—लवणयुक्त भोज्य पदार्थ, गन्दगी, ग्रीज़ और चर्बी के पदार्थों का अत्यधिक प्रयोग (इसी कारण ह्वेल का शिकार करने वाले नाविकों में यह बीमारी आम तौर पर पाई जाती है), और आलस्य। हमारे जहाज पर इस बीमारी के मौजूद होने का कारण अंतिम, अर्थात् आलस्य तो हो नहीं सकता, और न दूसरा, अर्थात् गन्दगी, कारण ही हो सकता है क्योंकि हम

जहाज को बिल्कुल साफ़ रखते थे, हम अगवाड को बिल्कुल साफ रखने के आदी थे, और कपड़े धोने और बार-बार धुले कपड़े पहनने के बारे में हम इतने सावधान थे जितने शायद बहुत से जमीन पर रहने वाले भी न रहते हों। इस बीमारी का कारण शायद यह रहा हो कि हमें लवणयुक्त पदार्थों के अलावा खाने को और कुछ नही मिलता था, और शायद इसका कारण यह भी रहा हो कि हम एकदम ठडे इलाके से निकल कर जल्दी ही काफी गर्म इलाके में आ गए थे।

पश्चिमी हवाओ पर निर्भर करके (जो पतझड के मौसम में किनारे के आस-पास बहा करती हैं) कप्तान ने जहाज का रुख पश्चिम की ओर रखा ताकि बरमूडा में से होकर सफ़र किया जा सके। साथ ही यह उम्मीद भी थी कि शायद वेस्ट इंडीज़ या दक्षिणी राज्यों की ओर जाने वाले किसी पोत से मुलाकात हो जाए। अभी हमारे जहाज के दूसरे मल्लाहों में स्कर्वी नही फैली थी किन्तु खतरा मौजूद था कि वह कभी भी फैल सकती है, और यह बीमारी खतरनाक होती है।

रविवार, ग्यारह सितम्बर। अक्षाश ३०°०४' उत्तर, देशातर ६३° २३' पश्चिम; बरमूडा द्वीपसमूह उत्तर-उत्तर-पश्चिम की ओर डेढ सौ मील दूर थे। अगले दिन करीब दस बजे "जहाज़ हो।" की आवाज़ डेक से आई; और सारे मल्लाह नवागंतुक को देखने के लिए डेक पर आ गए। ज्यो ही वह पोत हमारे नज़दीक आया, हमने देखा कि वह साधारण-सा दो मस्तूलो वाला हरमाफ्रोडाइट जहाज है जो दक्षिण-दक्षिण-पूर्व में यात्रा कर रहा है और शायद उत्तरी राज्यों से वेस्टइडीज की ओर जा रहा है। हम ऐसे ही पोत को देखना भी चाहते थे।

हमें बात करने के लिए उत्सुक देख कर वह हमारी तरफ बढा और हम उसकी तरफ़ दौड़े। पास आने पर हम उससे बोले—"हल्लो।"—उन्होने कहा। "आप किधर से आ रहे हैं, कृपया!"—"न्यूयार्क से, कराकुआ जा रहे हैं।"—"क्या आपके पास कुछ ताजी खाद्य सामग्री फालतू है ?"–हाँ, हाँ, जितनी आप चाहे!"

हमने फौरन एक नाव नीचे उतारी, कप्तान तथा चार मल्लाह उसमें कूद गए, और जल्दी ही उस जहाज के पास दिखाई दिए। लगभग आध घन्टे बाद हमारे नाविक आधी नाव आलू और प्याज लेकर लौटे। इसके बाद दोनों जहाजों ने हवा भरी और अपने-अपने रास्ते पर चल दिये। इस जहाज का नाम "सोलन" था, जो प्लाइमाउथ से रवाना होकर कनेक्टीकट नदी के मार्ग से न्यूयार्क पहुंचा था और अब स्पेनिश मेन (कैरिबियन सागर के पास) की ओर जा रहा था। वह ताजी

खाद्य सामग्री, खच्चर, टीन के तवे और दूसरे बरतन ले जा रहा था।

प्याज बहुत उम्दा और ताजा था। उस जहाज़ के मालिम ने नौका पर सवार हमारे मल्लाहों को सामान देते हुए कहा था कि जिस दिन वे सफर के लिए चले थे, उस दिन लडकियो ने शायद इसीलिए उनके साथ इतना अतिरिक्त सामान रख दिया था।

हम लोगो का खयाल था कि पिछले जाडो में नए राष्ट्रपति का चुनाव हो गया होगा, और इसलिए ज्यो ही हम हवा भर कर चलने को हुए, तभी कप्तान ने जोर से पूछा कि संयुक्त राज्य राष्ट्रपति कौन हुआ। उन्होने जवाब दिया, ऐन्ड्रयू जैक्सन मगर तभी हमने यह सोचा कि यह पुराना जनरल तीसरी बार कदापि न चुना गया होगा, इसलिए हमने अपना सवाल दुहराया। इस बार उन्होने जवाब दिया—जैक डाउनिंग; वे हमको फुरसत से अपनी गलती सुधारने के लिए छोड कर चल दिये।

जब हम आगे बढे तो डिनर का समय हो चला था। केबिन वालों के लिए कुछ प्याज अलग रख कर बाकी सारी प्याज और सिरके की एक बोतल स्टीवार्ड ने हमें दे दी। हम उन्हे लेकर आगे की ओर चले और अगवाड में सभाल कर रख दिया। हमने प्याज पकाया नही बल्कि बीफ और रोटी के साथ कच्चा ही खाया। क्या शानदार स्वाद था उसका।

कच्चे प्याज की ताजगी व कुरकुरेपन और बरतो में पैदा होने वाली चीज के विशिष्ट स्वाद को ऐसा आदमी कहो ज्यादा पसन्द कर सकता है जो एक लम्बे अरसे से नमकीन भोजन पर ही जिन्दा हो। हम तो इसके दीवाने थे। हमारे लिए इसकी सुगन्ध ऐसी ही थी जैसी शिकारी कुत्ते के लिए खून की गध। हम हर बार खाने के साथ दर्जनों प्याज खा जाते। हम हमेशा अपनी जेबों को प्याज से भरे रहते ताकि डेक पर पहरा देते समय भी प्याज खा सकें. और इस तरह छोटे से लेकर बडे से बडे प्याज तक तेजी से खत्म होने लगे।

ताजे सामान से सबसे ज्यादा फायदा स्कर्वी के रोगियो को पहुचा। उनमें से एक रोगी कुछ खा सकने की स्थिति में था और कच्चे आलू चबाने से वह शीघ्र ही स्वस्थ हो गया। दूसरे व्यक्ति की हालत इस वक्त इतनी बिगड गई थी कि उसके लिए मुंह खोलना भी कठिन था। रसोइए ने कच्चे आलुओ को कूंडी में रखकर खूब कूटा और उसका अर्क उसे पीने को दिया। उसने चम्मच के सहारे

थोडा-थोडा करके यह अर्क पिया और अपने मसूढ़ों पर व गले में उसे बिलोया।

कच्चे आलुओं के इस अर्क के स्वाद व गंध से पहले तो उसके शरीर में कंपकंपी छूट गई। उसको पीने के बाद उसके सारे शरीर में भयंकर पीडा हुई। मगर यह जानकर कि इससे उसको लाभ होगा, उसने वह कष्ट सह लिया और हर घन्टे बाद एक चम्मच अर्क लेता रहा। अर्क को वह काफी देर तक बिना निगले ही मुंह में रखता। अन्त में इसको पीने का, और उसकी आशावादिता का (क्योंकि पहले उसने ठीक होने की आशा त्याग दी थी) नतीजा यह हुआ कि वह थोडा बहुत चलने फिरने लगा और उसका मुंह इतना खुलने लगा कि कुटे हुए आलू और प्याज खा सके। इस तरीके को अपनाने से उसकी भूख और ताकत लौटने लगी, उसकी तबियत इतनी जल्दी ठीक हुई कि बर्थ पर निराश और असहाय स्थिति में पड़े रहने के बजाय "सोलन" से हमारी मुलाकात के दस दिन बाद वह मस्तूल के ऊपर चढ़ कर रायल पाल को लपेट रहा था।

अनुकूल दक्षिणी-पश्चिमी हवा में हम बरमूडा द्वीपसमूह के अन्दर से होकर गुजरे। उसकी पुरानी उक्ति के बावजूद जिसको उन लोगो ने बार-बार दुहराया जिनका यह ख्याल था कि हमें अपनी यात्रा समाप्त करने से पहले एक और तूफान का सामना करना पड सकता है—

अगर बरमूडा द्वीपसमूह से तुम सकुशल निकल जाओ
तो हैटर द्वीपसमूह से सावधान रहना।

हम हैटर द्वीपो के उत्तर की ओर पहुँच गए। मौसम सुहावना था। अब हम दिनों में नही बल्कि घन्टो में बोस्टन पहुँच कर लगर डालने वाले थे, और इसी बारे में अटकलें लगा रहे थे।

हमारे जहाज की दशा बहुत अच्छी थी। जब से हमें केप के इस पार गर्म मौसम मिला था, सारे मल्लाह रविवार को छोड कर सुबह से शाम तक इसे ठीक रखने के लिए कठिन परिश्रम कर रहे थे।

भूमि पर रहने वाले लोगों की यह आम धारणा है कि जब जहाज यात्रा पर रवाना होने के लिए बन्दरगाह से चलता है, तो उसकी हालत सबसे अच्छी होती है, और जब वह काफी लंबी यात्रा के बाद वापिस लौटता है तो उसकी ऐसी होती है।

पसलियां निकल आयी हैं, और पाल चिथड़े हो गये हैं
वात-वेश्या ने दुर्बल, फटेहाल और भिखारी बना दिया है।

किन्तु सचाई यह है कि अगर कोई दुर्घटना हो जाए या जहाज भीषरण ठन्ड के मौसम में किनारे पर आये जब ठन्ड के कारण मल्लाह रस्सियो पर काम न कर पायें, तो दूसरी बात है वर्ना यात्रा के अन्त में जहाज की दशा सबसे अच्छी रहती है। जब जहाज बन्दरगाह से चलता है तो आमतौर पर उसकी रस्सिया ढीली-ढाली होती हैं, मस्तूलो को रस्सो आदि का सहारा देने की आवश्यकता होती है; सामान को चढ़ाने के कारण डेक और जहाज के बाजू काले और गन्दे हो जाते हैं, कोई काम पक्के नाविक जैसी बारीकी से नही किया जाता बल्कि अनगढ और बेढंगा होता है; और मल्लाह को उस वक्त हर चीज अस्तव्यस्त दिखाई देती है। लेकिन लौटती बार उष्णकटिबन्धो के बीच का सारा वक्त जहाज को अच्छी तरह सजाने में लगाया जाता है।

लम्बी यात्रा के बाद इन्डियामैन या केपहार्न की यात्रा करने वाले पोत से ज्यादा उम्दा हालत में और कोई जहाज नही देखा जा सकता अनेक कप्तान और मालिम नाविक के रूप में अपनी ख्याति इसी बात पर निर्भर समझते हैं कि जब यात्रा से वापस आकर उनका जहाज गोदी में घुसता है तो उसकी सजा कैसी रहती है। हमारे जहाज में अगले और पिछले भाग की सारी अचल रस्सियो को ठीक करके उन पर तारकोल कर दिया गया था, मस्तूलो कोरस्सों से भली भाँति जमा दिया गया था, निचले और शिखर मस्तूल की रस्सियो को नीचे उतार दिया गया था, (या चढा दिया गया था, जैसा आज कल रिवाज है) और हमारे अफ़सर पेंट रस्सियों को सीधा और तनी हालत में रखने के लिए इतने सावधान थे कि हमें उन रस्सों और उठान बल्लियों के ऊपर चढ़ना पडा जिनसे रस्सियो को लपेटा जाता है, और किनारे पर पहुँचने तक इनका कामचलाऊ पेंट रस्सियो की तरह इस्तेमाल किया गया।

इसके बाद हमने अन्दर और बाहर से जहाज को, डेकों को, मस्तूलों को, बूमों को, तथा अन्य सारी चीजों को खुरचा, हमने बाहर की तरफ रस्सियो का एक झूला-सा बनाया, इस पर बैठ कर हमने नीचे तक जहाज को खुरचा। जहाज की जन्जीरों, बोल्टों और कुंडियों की जग उतारी गयी। फिर हमने जहाज पर बाहर की ओर रंग किया, और जहाज के पृष्ठभाग को, जहां समुद्री-घोडो के रथ पर सवार हाथ में त्रिशूल थामे देव वरुण को बैठा हुआ था, चमकाया। इसके बाद ऊपर से लेकर नीचे तक जहाज के अन्दर के हिस्सों की रंगाई हुई—यार्डों को काला;

मस्तूल शिखरों और ऊपरी सिरों को सफेद, मंकी पटरी को काला, सफेद तथा पीला; अडवालो को हरा; मुरेठा तख्तों को सफ़ेद, नालियो को सिन्दूरी रंग में रंगा गया।

लंगरो, छल्ला-बोल्टो तथा लोहे की दूसरी चीजों को कालतौर चढ़ा कर चमकदार काला किया गया, स्टीवार्ड पहिये के पीतल के हिस्सों, घन्टी, ह्वील आदि पर पालिश करता रहा। केबिन को भी खुरचा गया, उस पर वार्निश व रंग किया गया; अगवाड को खुरचा गया और ब्रुश से साफ़ कर दिया गया, क्योंकि अदना मल्लाहो के रहने की जगह को रग और वार्निश से चमकाने की कोई जरूरत नही समझी जाती। इसके बाद डेको को खुरचा गया और उन पर वार्निश की गई। बेकार चीजो को समुद्र में फेंक दिया गया। कोलतार के खाली ड्रामो को एक अंधियारी रात में आग लगा कर पानी में फ़ेंक दिया गया; इससे इतनी तेज रोशनी हुई कि महासागर मीलों तक रोशन हो उठा।

इस मेहनत के बाद रस्सियो को ठीक करने का काम शुरू हुआ, इनसे ही जहाज उत्कृष्ट दशा में दिखाई पडता है। आखिरी तैयारी जो बन्दरगाह में तुरन्त पहुँच कर लंगर डालने जैसी लगी—वह थी लंगरो को मोरो के ऊपर चढाना, तारों को मोडना, डेकों की मियानी से तीन पानों को ऊपर पहुँचाना, और गहरे समुद्र की प्र ूम रस्सी की पूरी तरह जाँच-परख करना।

बृहस्पतिवार, पन्द्रह सितम्बर। आज सुबह पानी के तापमान से तथा उसकी विचित्र रगत से, पानी में इधर-उधर बहते हुए मोथे से, और हमारे सामने छाए हुए बादलो के झुन्ड से हमें यह पता लग गया कि अब हम गल्फ स्ट्रीम के बिल्कुल करीब पहुच गए हैं। यह विचित्र धारा जो उत्तर-पूर्व में लगभग सारे महासागर के आर-पार बहती है, करीब-करीब हमेशा ही बादलों से ढकी रहती है, और यह धारा तूफानो और विक्षुब्ध समुद्र के लिए प्रसिद्ध है। आम तौर पर देखा जाता है कि आसमान साफ़ है और हवा अनुकूल है, इसलिए पोतों पर सारे पाल चढ़ा दिए जाते हैं, किन्तु अकस्मात सामने के समुद्र में भयानक उत्ताल तरंगें उठने लगती हैं, और आसमान बादलो से ढंक जाता है और तभी पोतों को शिखरपालो में दो लपेट लगाकर उन्हे छोटा करके चलना पडता है।

एक मल्लाह ने मुझे बताया कि एक बार वह जिब्राल्टर से बोस्टन के लिए चला। जब उसका पोत गल्फ़ स्ट्रीम के पास पहुंचा तो समीर हलका-हलका बह

रहा था, आसमान साफ़ था और उसके पोत पर ऊपर और नीचे दुपेंचा पाल तने हुए थे, इस पोत के सामने गहरे काले बादलों की एक बड़ी कतार थी जो पानी के किनारे की तरह लग रही थी। इन बादलों के पीछे से एक अन्य पोत निकल कर बाहर आ रहा था जिस पर दो लपेटों से छोटे किये गये शिखर पाल तने थे और रायल यार्ड नीचे कर दिये गए थे। जब वे भी उन बादलों के निकट पहुँचे तो उन्हें भी एक के बाद एक करके सारे पाल उतार देने पड़े और उनके पोत की हालत भी उस पोत जैसी हो हो गई; और भयंकर तरंगों और तेज झन्झा के विरुद्ध चौदह या पन्द्रह घन्टों के बाद वे फिर इसके दूसरी ओर पहुँचे जहा मौसम साफ था; इसलिए रायल और आकाश पाल फिर से तान दिये गए।

जब हम उसके पास पहुँचे तो आसमान बादलों से ढंका हुआ था, समुद्र विक्षुब्ध था और वहा के वातावरण से ऐसा लगता था कि या तो कोई तूफान शात हो चुका है या आने वाला है। हवा का बहाव ऐसा ही था जैसा तेज समीर का होता है, किन्तु चूंकि हवा का रुख उत्तर–पूर्व था जो धारा के बहाव के ठीक उल्टी दिशा में हैं; इसलिए समुद्र में इतनी ऊची-ऊंची तरगें उठने लगी कि हमारा पोत इधर उधर बुरी तरह डगमगाने लगा और हमें रायल यार्डों को नीचे करना पडा तथा हलके पालो को उतार लेना पडा। थर्मामीटर को बार-बार पानी में डाल कर तापमान देखा जा रहा था। दोपहर को तापमान सत्तर हो गया जो हवा के तापमान से ज्यादा था। स्ट्रीम के बीच में हमेशा तापमान ऐसा ही होता है।

रायल मस्तूल शिखर के ऊपर जो छोकरा काम कर रहा था वह नीचे डेक पर आया और दीर्घ नौका का एक चक्कर लगा कर हमारे पास आया। उसका चेहरा पीला पड गया था। वह बोला कि उसकी तबियत इतनी ख़राब है कि अब वह ज्यादा देर तक ऊपर नही रह सका; साथ ही अफ़सरो से यह कहने में उसे शर्म महसूस हुई। वह फिर ऊपर चढ़ा किन्तु शीघ्र ही नीचे उतर आया और 'महिला यात्री के समान मतली से पीडित' होकर वह रेलिंग पर झुककर खडा हो गया।

वह समुद्र पर कई वर्षों से सफ़र कर रहा था लेकिन इससे पहले कभी बीमार नही पडा था। उसकी तबियत इसलिए ख़राब हो गई थी क्योकि हमारा पोत लगा-तार इतना डगमगा रहा था, और चूंकि वह जहाज के ढाचे से बहुत ऊपर (जो

लीवर के आलम्ब के समान है) था इसलिए इतनी ज्यादा ऊंचाई पर उन झटकों का प्रभाव बढ़ जाता था ।

एक अनुभवी, पुराना मल्लाह टापगेलेन्ट पर काम कर रहा था । उसने बताया कि वहाँ उसकी तबीयत गडबड़ा गयी थी और अपना काम खत्म करने के बाद जब वह कुछ नीचे और अततः डेक पर आया तब उसकी जान में जान आयी । रायल मस्तूल शिखर पर एक दूसरे मल्लाह को भेजा गया । वह वहां करीब एक घन्टे तक रहा मगर फिर लौट आया । लेकिन यह काम भी होना बहुत जरूरी था, इसलिए मालिम ने मुझे भेजा ।

कुछ देर तो मैं ठीक–ठाक रहा मगर फिर मैं वहां बहुत बेचैनी महसूस करने लगा हालांकि बोस्टन छोडने के बाद के पहले दो दिनों के अलावा मुझे एक बार भी मतली न आई थी और मैं सब प्रकार के मौसमों व स्थितियों में होकर गुजरा था । फिर भी, मैं बराबर काम करता रहा और काम पूरा किये बिना नीचे नहो उतरा, इस काम को करने में मुझे लगभग दो घन्टे लगे ।

जहाज पहले कभी इतनी बुरी तरह पेश नही आया था । वह बुरी तरह इधर–उधर हिचकोले और गोते खा रहा था; पालों का बोझ उसे सुस्थिर बनाये रखने में असफल हो रहा था । मस्तूलो की शुन्डकार नोकों से आकाश में कई वक्र व कोण बन रहे थे, और कभी–कभी तो चाप एक क्षण में ही पैंतालीस डिग्री का बनता हुआ दिखाई देता जिससे अकस्मात ऐसा झटका लगता कि दोनों हाथो से किसी चीज को पकडे बिना रुकना असंभव हो जाता, और दूसरे ही क्षण यकायक एक दूसरा लम्बा और टेढ़ा-मेढा वक्र बन जाता था ।

मुझे कोई खास मतली नहीं आयी, और मैं कुछ तटस्थ भाव से नीचे आया: फिर भी डेक पर पहुँच कर मुझे राहत ही मिली । कुछ घन्टो तक हम इसी तरह रहे । जब हमें अपने अनुवात की शहतीर पर उत्तरी अमरीका महाद्वीप की दिशा में सूर्य अस्त होता दिखाई दिया तो हम गोधूलि वेला में गहरे तूफानी बादलो के झुन्डों को पीछे छोड चुके थे ।

* * *

अध्याय—३६

शुक्रवार, सोलह सितम्बर। अक्षांश ३८° उत्तर, देशांतर ६६° ००' पश्चिम। दक्षिण-पश्चिम का अनुकूल पवन बह रहा था; प्रत्येक घन्टा हमें भूमि के अधिक समीप ला रहा था। अधपहरे के समय सारे मल्लाह डेक पर थे, बन्दरगाह पर कब वापिस पहुंचेंगे, लंगर कहां डालेंगे, क्या हम रविवार से पहले पहुंच जाएंगे, गिरजे जा सकेंगे, बोस्टन कैसा लगेगा, मित्र कैसे होंगे, तनख्वाह कब मिलेगी—और ऐसी बातों के सिवा आपस में अन्य कोई बात नहीं हुई।

हममें से हर एक आदमी बहुत उत्साह में था। चूंकि यात्रा अब समाप्त होने को थी, इसलिए अनुशासन में थोड़ी ढील दे दी गई थी; क्योंकि जिस काम को हर एक खुशी खुशी कर देने के लिए तैयार हो उसके लिए चिड़चिड़े स्वर में आज्ञा देना अनावश्यक ही था। लम्बी यात्रा में जो छोटे-छोटे मतभेद आ जाते हैं या झगड़े हो जाते हैं, उन्हें भुला दिया गया और हर एक मित्रवत व्यवहार करने लगा। जो दो आदमी सफ़र के आधे वक्त तक लगातार झगड़ते रहे थे, अब वे मिल कर किनारे के पास नाव में थोड़ी देर सैर करने की योजना बनाने लगे।

मालिम अगवाड़ में आया और मल्लाहों को बताया कि हम कल दोपहर से पहले जार्ज बैंक पर पहुंच जाएंगे। उसने छोकरों के साथ हंसी-ठट्ठा किया और उन्हें ख्वारी में बिठा कर मार्बिलहेड तक छोड़ आने का वायदा किया।

शनिवार, सत्रह सितम्बर। आज सारे दिन लगातार हल्की हवा चलती रही इसलिए हम तेजी से सफ़र कर सके। मगर रात होते ही अनुकूल समीर बहने लगा और हम स्थल की ओर तीव्र गति से चलने लगे। छह बजे के करीब ज्यों ही गहरा कुहरा दीखना शुरू हुआ हमें यह उम्मीद हुई कि पानी की गहराई नापने के लिए जहाज को समुद्र के किनारे के पास ले जाने की आज्ञा दी जाएगी; मगर आज्ञा नहीं दी गई और हम अपने मार्ग पर बढ़ते गए। आठ बजे, और पहरे के लोग नीचे चले गए। पहले एक घन्टे तक लगातार, नीचे और ऊपर की तरफ़ दुपेंचा पालों को फैलाए हुए जहाज पानी पर सरपट दौड़ता रहा। रात बेहद काली थी।

दो घन्टियां बजने पर कप्तान डेक पर आया, उसने मालिम को कोई आज्ञा दी। तभी दुपेंचा पालों को मस्तूलों के शिखरों से बांध दिया गया, पिछले यार्डों को पीछे की ओर हटा दिया गया, गंभीर समुद्र के प्रूम को आगे लाया गया, और पानी की गहराई नापने के लिए सारी तैयारियां पूरी कर ली गईं। स्प्रिट पाल

याडं पर एक आदमी, दूसरा अगली जंजीरो पर, एक दूसरा मल्लाह कढ़ि पर गया, दूसरा मुख्य जजीरों पर खडाकर दिया गया और हर के पास रस्सी की पिंडियां थीं।

"आगे, सब तैयार ?"—"हाँ-हाँ, सर !" "फेंक...को. .!",—स्प्रिट पाल पर मौजूद आदमी चिल्ला उठता है—"दखो ! हो ! देखो !" और भारी रस्सी पानी में गिरा दी जाती है। ज्यो ही लंगर-कुन्दे पर मौजूद आदमी के हाथ की पूरी रस्सी पानी में जाती है, वह चिल्ला उठता है—"देखो ! हो ! देखो !" इसी तरह से रस्सी लिए हुए हर आदमी पुकार लगाता है ! अन्त में मालिम का नंबर आता है जो छतरी पर ग्रूम को देखता है। अस्सी फैदम (छह फुट की एक नाप) और फिर भी गहराई का अन्त नही ! यह गहराई, सेंट पीटर्स की ऊंचाई के बराबर थी।

रस्सी को ब्लाक पर लपेट लिया जाता है, और तीन-चार मल्लाह उसकी पिंडी बना लेते हैं। पिछले यार्डों को पूरी तरह हवा के अनुकूल कर लिया जाता है, दुपेंचा पालो को फिर से तान दिया जाता है, और कुछ ही मिनटो में जहाज फिर से अपने रास्ते पर चल पडता है। चार घन्टिया बजने पर फिर एकबार जहाज को रोक कर पानी की गहराई नापी जाती है। साठ फैदम ! याकी भूमि—हुर्रा !

एक के बाद एक मल्लाह रस्सी को खीचता है, और कप्तान रस्सी को रोशनी में ले जाकर देखता है। रस्सी के अन्त में उसको काली मिट्टी चिपकी हुई मिलती है। दुपेंचा पालो को उतार लिया जाता है, पिछले यार्डों को तान दिया जाता है, और जहाज को हलके पालों के सहारे सारी रात आराम से सफर करने के लिए छोड दिया जाता है, हवा का बहाव बहुत कम होता जा रहा है।

अमरीका के किनारो के आस-पास पानी की गहराई इतने नियमित रूप से नापी जाती है, कि हर एक नाविक पानी की गहराई जान लेने से ही अपनी स्थिति का ज्ञान उसी तरह प्राप्त कर लेता है जिस तरह वह भूमि मे साक्षात देखने से जान सकता है। काली मिट्टी ब्लाक आइलैंड के आस पास मिलती है। ज्यों-ज्यों आप नानटकट की ओर बढते जाएगे, वह काले रेत के रूप में बदलती जाएगी। फिर रेत और सफेद सीप मिलते हैं; और जार्ज बैंक के पास सफेद रेत मिलती है, आदि। ब्लाक आइलैंड से चलकर हमारा रास्ता पूर्व की ओर नानटकट शाआल्स, और साउथ चैनल की ओर था। किन्तु पवन बहना बन्द हो गया और हम घने कुहरे से घिरे हुए सारे रविवार को स्थिर-से पडे रहे।

रविवार, अट्ठारह सितम्बर की दोपहर को। गणना के हिसाब-किताब से ब्लाक

आइलैंड की स्थिति है—उत्तर-पश्चिम ½ पश्चिम-पन्द्रह मील। किन्तु दिन भर कुहरा इतना घना रहा कि हम कुछ न देख सके।

जहाज की ड्यूटी से, नहाने-धोने और हजामत के काम से निबट कर हम नीचे गए। हम उस वक्त बड़े आनन्द के साथ अपने सन्दूकों को खोल कर चीजें संभालते रहे कि हम कौन-से कपड़े पहन कर किनारे पर जाएंगे, और, हमने जितनी चीजें बेकार थीं और इस्तेमाल की जा चुकी थीं—सब को समुद्र में फेंक दिया। हमने उन टोपियों को फेंक दिया जिनको हमने कैलिफोर्निया के किनारे पर सोलह महीनों तक पहन कर अपने सिरों की रक्षा की थी, रस्सियों पर कोलतार करने से फ्राक बेकार हो गए थे; फटे हुए और रफू किये गये बिना अंगुलियों वाले दस्ताने और पैबन्द लगे ऊनी पायजामे (जिन्हें पहन कर केप हार्न पर हमने भारी से भारी काम किए थे) —सब दूर बहा दिये गये।

हमने शुभाशंसा के साथ उन्हें समुद्र में फेंका क्योंकि दुर्भाग्य के अंतिम उपकरणों तथा शेषांशों से छुटकारा पाने जैसा सुख और किसी बात में निहित नहीं है। हमने किनारे पर जाने के लिए अपने सन्दूकों को पूरी तरह तैयार कर लिया, और हलवा खाया जिसके बारे में हमें उम्मीद थी कि "एलर्ट" जहाज पर हमें अंतिम बार हलवा मिल रहा है, और हम सारी बातों पर इतने विश्वास के साथ बातें करते रहे जैसे हमारा जहाज गोदी में लंगर डाल चुका हो।

"आज से एक हफ़्ते बाद मेरे साथ गिरजे कौन चलेगा?"

"मैं"—जैक जवाब देता है, जो किसी बात का उत्तर न में नहीं देता।

"दूर हट, खारे पानी!" टाम कहता है—"ज्यों ही मेरे ये दोनों पैर किनारे पर पहुँचेंगे, मैं जूते पहनूंगा और पीछे की किसी आवाज़ को भी नहीं सुनूंगा और सीधा रास्ता पकड़कर तब तक भागता ही रहूँगा जब तक यह खारा पानी मेरी आंखों से ओझल न हो जाए!"

"बस, बस! रहने भी दे! यह बात उसे सुनाना जो तुझे जानता न हो! अगर एक बार तू उस बुड्ढे बी—की शराब की दूकान में जम गया और कोयले की आग तापने लगा और बगल में शराब रख ली तो तीन हफ्तों तक तो तुझे सूरज का मुंह भी दिखाई न देगा!"

"नहीं!" टाम कहता है—"अब मैं शराब छोड़ दूँगा; अब मैं घर पर ही रहूँगा। अब देखूंगा कि वे मुझे डीकन कैसे नहीं बनाते हैं!"

बिल कहता है—"और मैं—मैं एक क्वाड्रैंट खरीदूँगा और हिगम के किसी जहाज पर दिक् चालन निर्देशक बनूंगा।"

हमें समीर का इन्तजार था ताकि कुहरा छट जाए और हम अपने रास्ते पर आगे बढ़ चलें। इन्तजार की घड़ियों को हम इसी तरह की हंसी-दिल्लगी में काटते रहे। रात होने के वक्त हलका समीर बहने लगा। फिर भी कुहरा पहले की तरह ही घना रहा, और हम पूर्व की ओर बढते रहे। पहले पहरे के बीच के समय में अगवाड से एक मनुष्य चिल्ला उठा—"सुकान को कडा करो!" उसकी ध्वनि से ही समझ गए कि एक क्षण भी नहीं खोना चाहिए। कुहरे से अकस्मात एक बड़ा जहाज बाहर निकल कर हमसे टकराता दिखाई दिया। वह जहाज भी ऐन वक्त पर मुड गया और हम एक-दूसरे से सट कर गुजरे। हमारे स्पैंकर पाल की बूम उसके क्वार्टर से रगड खाते हुए गुजरे डेक के अफसर को अभिवादन करने का समय ही मिला। उसने उत्तर दिया और फिर घने कुहरे में छिप गया। जवाब ब्रिस्टल के बारे में था। शायद वह जहाज ब्रिस्टल रोड्स आईलैंड, का ह्वेल जहाज था और अपनी यात्रा पर जा रहा था। कुहरा रात भर उसी तरह घना बना रहा, हलका समीर बहता रहा, और उसके सामने हम पूर्व की ओर बढ़ते रहे। अब हम अपने रास्ते को महसूस कर सकते थे। रस्सी को हर दो घन्टो के बाद पानी में डाला जाता। काली मिट्टी की जगह अब रेत मिलने लगी थी इसलिए हमने यह समझा कि हम धीरे-धीरे नानटकट साउथ शोअल्स के निकट पहुँच गये हैं।

सोमवार की सुबह को पानी की बढ़ती हुई गहराई और गहरे नीले रङ्ग से, तथा गहराई नापने से मिला सीपी और सफेद रेत के मिश्रण से हमें पता लगा कि हम चैनल में हैं और जार्ज के निकट पहुँच रहे हैं। इसलिए जहाज का मुंह सीधे उधर की ओर कर दिया गया और हम पानी की नपाई पर पूरा विश्वास करके चलते ही रहे; हालांकि हमने पिछले दो दिनों मे न तो पर्यवेक्षण किया था और न ही भूमि देखी थी; और एक फर्लांग गलत चलने से भी जहाज का किनारे से टकराने का डर था।

सारे दिन हलकी हलकी प्रेरणादायक हवा चलती रही। आठ बजे हमें मछली पकड़ने वाला दो मस्तूलों वाला छोटा-सा जहाज मिला। उससे हमें मालूम हुआ कि हम चैथम लाइट्स के निकट पहुँच चुके हैं। आधी रात से कुछ ही पहले भूमि

की ओर से आने वाला हलका समीर चलने लगा और हम इसके सहारे आराम से बढ़ते गए। चार बजे हमने सोचा कि हम रेस पाइन्ट के उत्तर में हैं, इसलिए हमने हवा की ओर जहाज का रुख किया और बोस्टन दीप-स्तभ के उत्तर-उत्तर-पश्चिम में, खाडी में पहुँच गए, और पाइलट को बुलाने के लिए तोपें छोडने लगे।

हमारे पहरे के लोग नीचे चले गए मगर सो न सके क्योंकि ऊपर के पहरे के लोग हर बार कुछ मिनटो के बाद दनादन गोले छोड रहे थे। और सच यह है कि हमे अपनी नीद में इस विघ्न से जरा भी दुख न हुआ क्योंकि हम बोस्टन की खाडी में पहुँच चुके थे, और हमें विश्वास था कि अगर भाग्य साथ दे गया तो अगली रात हम इस तरह चैन से सोयेंगे कि हमें हर चार घन्टे के बाद पहरे के लिए बुलाने वाला कोई न होगा।

दिन निकलने पर हम स्वय ही जमीन को देखने के लिए ऊपर आ गए। पौ फटने की हलकी रोशनी में हमें धु धलके के पीछे से झाकती हुई एक या दो मछली मारने वाली एक मस्तूल वाली नौकाए दिखाई दी। जब दिन की रोशनी फैल गयी तो हमारे अनुवात क्वार्टर पर केप काड की नीची रेतीली पहाडियाँ दिखाई दी, और हमारे सामने मैसाचुसेट्स की खाडी फैली हुई थी जिसके शान्त पानी पर इधर-उधर कुछ जहाज तैर रहे थे।

जब हम बन्दरगाह के मुहाने के निकट पहुचे, जैसे कोई केन्द्रस्थान के निकट पहुचता है, तो हमने देखा कि पोतों की संख्या बराबर बढ़ती जा रही है, अन्त में हमें खाडी में सब कही और प्रत्येक दिशा मे जहाज ही जहाज नजर आने लगे। कुछ पवन के प्रतिकूल सरक रहे थे और कुछ उसके रुख में बढ रहे थे— ये जहाज या तो वाणिज्य केन्द्र और खाडी के बीच से आ रहे थे या वहा जा रहे थे। हम लोगो के लिए यह अत्यन्त उत्तेजनापूर्ण दृश्य था क्योंकि महासागर पर यात्रा करते हुए हमने महीनों तक दो एकाकी जहाजों के अलावा अन्य कुछ न देखा था, और एक वीरान जगह में तीन या चार व्यापारी जहाजों को देखने के अलावा हमें बडी संख्या में जहाजों को देखे दो वर्ष से अधिक हो चुके थे।

खाडी के घुमावदार स्थानो में दक्षिणी तट के साथ-साथ और पूर्व की ओर छोटे-छोटे तटपोत दिखाई पड रहे थे जो भिन्न नगरों से यहां आए थे या वहा जा रहे थे। इधर उधर कुछ खेवाह वर्दी वाले पोत समुद्र की ओर मु ह किए खडे थे। बहुत दूर, केप ऐन्न के पार एक स्टीमर का धुंआ दिखाई दे रहा था जो पानी के

ऊपर छोटे काले बादल के रूप में छाता जा रहा था। प्रत्येक दृश्य सुन्दर और मनोरंजक था। हम अब अपने घरो की ओर वापस लौट रहे थे, और हमारे चारों ओर सभ्यता, समृद्धि, तथा प्रसन्नता (जिनसे हम इतनी देर तक बहिष्कृत रहे थे), ये चिन्ह लगातार बढते जा रहे थे। केप ऐन्न की ऊंची भूमि, तथा कोहासेट की चट्टानें और किनारा हमें दिखाई दे रहे थे; बन्दरगाह के सामने प्रकाश-स्तम्भ प्रहरियों की भाति खडे थे, और हमें हिंगम के मैदानो को चिमनियो से निकलता हुआ धुआ तक नजर आ रहा था। हममे से एक मल्लाह टोकरी बनाने वाले का बेटा था। जब उसने अपने घर के आस-पास की पहाडियों को देखा तो उसकी आँखें चमक उठी। करीब दस बजे एक छोटी नाव पानी के ऊपर उछलती-कूदती हुई हमारी तरफ आई और उसने हमारे जहाज पर एक पाइलट चढ़ा दिया तथा बन्दरगाह के अन्दर जाने वाले अन्य पोतो की तलाश में चली गई। अब हम टेली-ग्राफ के क्षेत्र में थे, इसलिए हमारे सकेत तट की ओर भेजे गए। करीब आधे घन्टे में व्यापारियो के एक्सचेंज के दफ्तर में, जहाज के स्वामी को मालूम हो गया कि उसका जहाज आ पहुँचा है, भूस्वामियों, दलालो और ऐन्न स्ट्रीट के घाघों को पता लग गया कि खाडी में उनके लिए भारी शिकार आ पहुँचा है : एक जहाज हार्न का चक्कर लगा कर लौटा है, जिसके नाविको को दो साल की तनख्वाह मिलेगी।

हवा लगातार हलके-हलके बहती रही। सारे मल्लाहो को चैंफिग गियर उतारने के लिए ऊपर भेज दिया गया, और पट्टिया, पालो के पटे, लपेट रस्सियाँ, लच्छिया, चटाइयां और चमडे—ये सब नीचे उतार लिये गये और इस तरह जहाज पर से वे सारी चीजें उतार ली गयी जो उस पर समुद्र-यात्रा पर रवाना होते समय लादी गयी थी।

आकाशपाल के खभो पर रङ्ग करने द्वारा पोत को अन्तिम रूप से तैयार किया गया। मुझे एक बाल्टी सफेदा और ब्रुश देकर आगे की ओर भेज दिया गया, और मैने उस पर सफेद रङ्ग कर दिया। दोपहर को हम निचले प्रकाश-स्तंभ के पास स्थिर पड़े थे। क्योंकि पानी नाकाफी था, इसलिए हमारी प्रगति विशेष नहीं हुई। हिंगम की दिशा से एक गोली छूटने की आवाज आई और पाइ-लट ने बताया कि वहा सैन्य-प्रदर्शन हो रहा है। यह सुनकर हिंगम का मल्लाह जोश मे आ गया, और उसने कहा कि अगर जहाज सिर्फ बारह घन्टे पहले वहां

पहुँच जाता तो इस वक्त वह सैनिकों के साथ और खेमे में बैठा हुआ मजे से वक्त गुजार रहा होता। मौजूदा हालात देखते हुए रात से पहले वहां पहुँचने की आशा नहीं थी।

करीब दो बजे पश्चिम की ओर से समीर बहने लगा और हमने उससे मोर्चा लेना शुरू कर दिया। उसी समय सम्पूर्ण पालों का एक दो मस्तूलों वाला जहाज भी हमारी तरह समीर से मोर्चा ले रहा था और इसलिए हम अपनी-अपनी दिशा में एक-दूसरे से प्रतिबात दिशा में जाने की कोशिश में निकलते-पिछड़ते आगे बढ़ते रहे। यह बहुत कुछ पवन और ज्वार के साथ देने या प्रतिकूल होने पर निर्भर था।

दो से चार बजे तक पहिये को संभालने की ड्यूटी मेरी थी, और मैं अपने दोनों पोतों के सुकान पर गुजारे हुए लगभग हजार-नौ सौ घन्टों में अपनी अंतिम ड्यूटी को भली प्रकार पूरा करने का प्रयत्न करता रहा। ज्वार ने हमारे प्रतिकूल आना शुरू किया, और हमारे जहाज की प्रगति धीमी हो गयी। जब हम अन्दर के प्रकाशस्तंभ के निकट पहुँचे तब तक तीसरा पहर लगभग बीत चुका था। इस बीच बाहर की ओर जाने वाले अनेक पोत गुजरे। इनमें से एक पोत घुड़दौड़ के घोड़े की तरह दौड़ता हुआ हमारे पास से गुजरा जो बहुत बड़ा तथा सुन्दर था, उसके यार्ड चौकोर लगे हुए थे, इस पोत के लिए हवा और ज्वार अत्यंत अनुकूल थे। इस पोत के नाविक दुर्पेचा पालों की बूमों को उतारने में लगे हुए थे।

सूर्यास्त के समय हवा के झोंके रह-रहकर आने लगे। कभी-कभी हवा बहुत तेज हो जाती थी इसलिए पाइलट ने रायल पालों को उतरवा लिया, लेकिन फिर तुरन्त ही यह शांत हो गई। ज्वार की गति तीव्र होने से पहले तट पर पहुंचने के लिए हमें रायल पालों को फिर से खोलना पड़ा। चूंकि इस दौरान हम लोगों को रस्सियों के ऊपर और नीचे आना-जाना पड़ता था, इसलिए प्रत्येक शिखर मस्तूल पर एक आदमी लगा दिया गया ताकि हुक्म के मिलते ही वह पालों को खोल या बाँध सके। मुझे अगले पाल पर भेजा गया। रेन्सफ़ोर्ड आइलैण्ड और फैसिज के बीच के रास्ते में मुझे पांच बार रायल पालों को खोलना और बांधना पड़ा।

एक बार तो हम रेन्सफोर्ड आइलैन्ड के इतना नजदीक पहुँच गए कि रायल यार्ड से देखने पर वहां की हस्पताल की इमारतें, साफ-सुथरी कंकरीट की राहें, और हरे-भरे मैदान मुझे यार्ड भुजा के ठीक नीचे दिखाई दिए। इन कुछ द्वीपों के आस-पास चैनल इतना संकरा है कि एक बार जार्ज आईलैण्ड में हमारी

फ्लान जिब बूम वहाँ के दुर्ग की प्राचीर से टकरा गया । इस तरह निकट से गुज-रने के कारण हम यह भी देख सके कि इस स्थान के प्राचीरों से घिरा होने का क्या लाभ है । चैनल से होकर यात्रा करते हुए हमने जहाज के अग्र व पृष्ठ भाग से तीन या चार बार तोपें दागी थीं जिनमें से एक तोप तो शायद हमारे जहाज की धज्जियां ही उड़ा देती ।

हम सबों की यह दिली इच्छा थी कि हम किनारे पर शीघ्र पहुँच कर रात होने से पहले शहर में पहुँच जाएं लेकिन प्रतिकूल दिशा से ज्वार का वेग बढ़ना शुरू हो गया था और पवन उलटा बह रहा था; इसलिए हम ज्वार का सामना करते हुए बहुत कम प्रगति कर सके । पाइलट ने लंगर को तैयार रखने और जंजीर को देखभाल लेने की आज्ञा दी । दो बार लम्बे फ़ासले तय करने के बाद जिससे हम अपने मार्ग पर आ लगे, कैसिल की अनुवात दिशा में, उसने शिखरपालों को बंधवाया और लंगर डाल दिया । सैन डियागो छोड़ने से एक सौ पैंतीस दिन बाद हमने पहली बार लंगर डाला था।

आधे घन्टे के बाद हम सारे पालों को लपेट कर बोस्टन बन्दरगाह में सुरक्षित खड़े थे । हमारी लम्बी यात्रा समाप्त हो गई थी । वह चिरपरिचित दृश्य अब हमारे सामने था । आकाश की पश्चिम दिशा में राज भवन का गुम्बद धुंधला पड़ता जा रहा था; अंधेरा होने पर शहर की रोशनियां दिखाई पड़ने लगी थीं । नौ बजने पर घन्टियों की जानी-पहचानी टन-टन ध्वनि शुरू हुई । बोस्टन के मल्लाह यह पहचानने का प्रयत्न करने लगे कि इनमें से ओल्ड साउथ की घन्टियों की ध्वनि कौन सी है ।

अभी हमने पालों को पूरी तरह लपेटा ही था कि एक छोटी-सी सुन्दर नाव कूदती हुई हमारे क्वार्टर के नीचे पवन के बहाव के साथ आई और कम्पनी का छोटा साझीदार जो हमारे जहाज का मालिक था, कूद कर जहाज पर चढ़ आया। मैंने उसको पिछले शिखरपाल यार्ड से देखा और पहचान लिया । उसने कप्तान से हाथ मिलाया और केबिन में चला गया । कुछ क्षणों के बाद वह बाहर आया और उसने मालिम से मेरे बारे में पूछा । आखिरी बार जब उसने मुझे देखा था तो मैं हारवार्ड कालिज के अंडर ग्रेजुएट की ड्रेस पहने हुए था, और उसे यह देखकर बहुत अचरज हुआ कि उस विद्यार्थी की जगह मोटा सूती पायजामा और लाल कमीज पहने हुए, लम्बे बालों वाला, और आदिवासी की तरह काले चेहरे वाला ओहदा

सा दिखायी देने वाला एक आदमी ऊपर से उतर कर उसके सामने आ खड़ा हुआ है। उसने मुझसे हाथ मिलाया, मेरे वापिस लौटने और स्वस्थ तथा शक्तिशाली दिखाई देने पर बधाई दी, और कहा कि मेरे सारे दोस्त प्रसन्न हैं। मैंने इस सूचना पर उसको धन्यवाद दिया जिसे उससे पूछने का साहस मैं खुद नहीं कर सकता था, और—

अशुभ सूचना के प्रथम वाहक के लिए
दुआ नहीं निकलती, और उसकी ध्वनि
शोक सूचक घन्टियो की तरह हमेशा याद रहती है।

और निश्चय ही मैं इस व्यक्ति को और उसके शब्दो को सदैव प्रसन्नतापूर्वक याद रखूगा।

मि० एच—के साथ कप्तान नाव पर बैठ कर शहर के लिए रवाना हो गया, और हमें एक रात और जहाज पर बिताने के लिए तथा सुबह को ज्वार के साथ आने के लिए पाइलट की देख रेख में छोड गया।

इस वक्त हम अपने घर पहुँचने के लिए इतने उतावले हो रहे थे कि हमने सूखी रोटी और नमकीन बीफ के भोजन को शायद ही हाथ लगाया हो। बहुत से लोग तो जिनकी यह पहली यात्रा थी, रात को सो भी न सके। जहा तक मेरा व्यक्तिगत प्रश्न है, मै अनुभूति के उन विरोधमूलक परिवर्तनो से (जिनके अधीन हम सब हैं) इतना अभिभूत हो गया था कि मैं पूर्णतया तटस्थता की स्थिति को पहुच गया था। हालाँकि मैं इसका कारण नहीं बता सकता। एक साल पहले जब मैं खालें लेकर किनारे पर पहुँचा था तो यह आश्वासन सुनकर मैं खुशी से पागल हो उठा था कि मैं बारह महीनो के अन्दर ही बॉस्टन वापस पहुँच जाऊंगा। लेकिन अब, जब मैं वाकई वापस आ पहुचा था, घर मेरे सामने था, तब मेरे वे मनोभाव जाग्रत नहीं हुए जिनके लिए मैं इतने अर्से से अनुभव कर रहा था, बल्कि उनके स्थान पर मैं स्वयं को बहुत-कुछ निरपेक्षता की स्थिति में पा रहा था।

कुछ इसी तरह की स्थिति की बात मुझे एक मल्लाह ने सुनाई। वह पहली बार उत्तरी पश्चिमी किनारे पर पाँच साल की यात्रा करके लौटा था। उसने छोटी उम्र में ही घर छोड दिया था और कई साल तक कठिन श्रम करने और कटु अनुभवों को उठाने के बाद वह घर की ओर चला था। उसकी अनुभूतियो की उत्तेजना इस हद तक थी कि सारे सफर के दौरान वह सिर्फ अपनी वापिसी के

बारे में बातें करता और सोचता रहा था कि जब पोत बन्दरगाह पर पहुचेगा तो वह उसी क्षण उससे कूदकर सीधा घर की तरफ चल देगा। मगर जब जहाज को घाट से बाधा गया और सारे मल्लाहो को छुट्टी दी गई तो उसे यकायक ऐसा लगा कि उसमें उस तरह का कोई मनोवेग शेष नही रह गया है। उसने मुझे बताया कि तब वह नीचे गया, कपडे बदले, मौखे की टंकी से थोडा पानी लिया और आराम से हाथ-मु ह धोया, सन्दूक खोला और कपडे संभाल कर रखे, पाइप उठाकर भरा और अपने सन्दूक पर बैठकर आराम से आखिरी बार पिया। अब उसने उस अग-वाड को बहुत ध्यान से देखा जहा उसने इतने साल काटे थे, और यह देख कर कि वह अकेला है और जहाज के सारे सगी-साथी चले गए है, वह वाकई दुखी महसूस करने लगा। घर अब उसके लिए एक सपना-सा हो गया था, और वह वहा देर तक बैठा रहा। अन्त मे उसका भाई (जिसने जहाज के लौट आने की खबर सुन ली थी) अगवाड में आया और उसको घर की सारी बातें सुनाई, कि घर पर कौन-कौन बैठा उसकी राह देख रहा हैं, तभी वह समझ सका कि उसकी वास्तविक स्थिति क्या है, और उस जगह को जाने के लिए उठ सका जहाँ जाने के लिए कई बरस पहले से ही उसका दिल तडपा था और उसने स्वप्न देखे थे।

शायद बहुत देर से बधी हुई आशा में इतनी उत्तेजना निहित होती है कि जब विशेष परिवर्तन के बिना उसकी सिद्धि होने का समय आता है तो मनुष्य की अनुभूति में और उसके प्रयत्न दोनों में ही कुछ क्षणों के लिए निश्चलता आ जाती है। काफी हद तक ऐसी ही बात मेरे साथ भी थी। तैयारी के प्रयत्नो ने, जहाज की तेज रफ्तार ने, पहली बार जमीन पर पहुँचने की बात ने, बन्दरगाह पर आ जाने की बात ने, और दृष्टि के सामने पुराने दृश्य आ जाने से मेरे मन और शरीर की ऐसी सक्रियता को जन्म दे दिया था जिसके कारण, आशा और श्रम की आवश्य-कता—इन दोनों चीजों के अभाव में कर्म से पूर्ण विरति की इस नयी स्थिति से, मैं सहम कर शांत हो गया था; और इससे जागने के लिए मुझे किसी नई उत्तेजना की आवश्यकता थी। अगले दिन सुबह को जब सारे मल्लाहों को डेक पर बुकारा गया और हम फिर काम में, डेकों को साफ करने, और घाटों पर पहुँचने के लिए सारी चीजों को तैयार करने में व्यस्त हो गए,—सलामी के लिए तोपों में गोले भरने, पालो को खोलने, और बेलन-चरखी पर काम करने लगे तो मुझे अपना मस्तिष्क और शरीर दोनों साथ-साथ जागते हुए महसूस हुए।

दस बजे के आस-पास समुद्री समीर बहने लगा । पाइलट ने लगर उठाने की आज्ञा दी । सारे मल्लाह बेलन चरखी पर जुट गये और "यो, हीव हो !" की वह आवाज गूंजी जिसको हमने आखिरी बार सैन डियागो की वीरान पहाड़ियों पर डूबते हुए सुना था । शीघ्र ही लंगर मोरो पर चढा लिया गया । हवा और ज्वार अनुकूल थे, सुबह का तेज सूरज चमक रहा था, रायल और आकाश पालों को लगाया गया, झन्डा, लम्बी त्रिभुजाकार ध्वजा, चिन्ह, तथा पताका फहराए हुए, और तोपें दागते हुए हम तेजी से तथा शानदार ढङ्ग से शहर की ओर आए ।

घाट के एक सिरे पर हमने जहाज घुमाया और लगर डाल दिया । और अभी लगर जमीन से लगा भी न था कि डेकों पर तटकर अधिकारियो; खबरें लेने के लिए टापलिफ के एजेन्टों; जहाज पर सवार लोगो की पूछताछ करने के लिए हुए लोगों की भीड लग गयी । ग्रोज् के व्यापारी रसोई बावर्चीखाने में पहुच कर रसोइए ने उसकी बेकार चीजों का मोल-भाव करने लगे; "लोफर" और होटलों के दलाल जो अपने असामियों की तलाश में आए थे ।

इन दलालों के व्यवहार की उदारता का कोई मुकाबला नही कर सकता । वे बडी दिलचस्पी के साथ लम्बी यात्राओं से लौटे हुए मल्लाहों को साँटने की कोशिश करते हैं क्योकि उनकी जेबें भरी होती हैं । उनमें दो तीन ने एक साथ मेरा हाथ पकड़ कर खीचातानी की, उन्होने मुझ से ऐसा अभिनय किया जैसे वे मुझे अच्छी तरह जानते हैं; उन्हें पूरा यकीन था कि जहाज पर सवार होने से पहले मैं उन्ही के होटल में ठहरा था; मुझे वापिस लौटा हुआ देख कर वे बहुत खुश थे; उन्होंने मुझे अपने-अपने कार्ड दिए; मुझे बताया गया कि मेरा सामान ले चलने के लिए ठेला घाट पर खडा है; मेरा सन्दूक किनारे तक पहुँचाने में वे मेरी मदद करेंगे; अगर हम तुरन्त ही वहाँ के लिए न चल सकें तो वे हमारे लिए जहाज पर ही आग की एक बोतल ला दें... और इस तरह की बातें । सच तो यह है कि पाल लपेटने के लिए ऊपर जाने के लिए उनसे पिंड छुडाना मुश्किल हो गया ।

एक के बाद दूसरा पाल, अच्छे और बुरे मौसम दोनो में, हमने सौंवी बार और आखिरी बार पालो को लपेटा, नीचे उतरे और गून को किनारे की ओर ले चले, हवीत पर आदमी लगाए, इतनी जोर से सहगान गाया कि वह उत्तरी सिरे की आधी दूरी तक, और गोदी में बनी इमारतो में गूंजता रहा, तब हमने जहाज को घाट से लगा दिया । यहाँ भी मकान मालिक और दलाल बडे जोशीले और

मदद देने के लिए तैयार थे। वे हंसते, बातें करते व खबरें सुनाते हुए मल्लाहो के काम में हाथ बटा रहे थे।

जब शहर की घन्टिया एक बजने की सूचना दे रही थी तब आखिरी फंदा डाल कर जहाज को घाट से कसा गया और नाविकों को छुट्टी दे दी गई। पाच मिनट के बाद इस भले जहाज "एलर्ट" पर एक आदमी भी नज़र न आया सिवाय बुड्ढे रखवाले के जो कांर्डटिग दफ्तर से जहाज की देख-रेख के लिए उस पर भेजा गया था।

* * *

उपसंहार

मुझे विश्वास है कि जिन महानुभावो ने मेरे वृत्तात को अंत तक पढ़ा है, वे थोडा ध्यान आगे भी देंगे और इन मन्तव्यों को पढे ंगे जो मैं निष्कर्ष रूप में यहा प्रस्तुत कर रहा हूँ।

यात्रा समाप्त करने के बहुत दिनों बाद यह अध्याय लिखा गया है। सफर से लौटने के बाद मैं अपने पुराने प्रयत्न में नये सिरे से जुट गया। इस अध्याय में मैं ऐसे विचारों को निरूपित करने का प्रयत्न करू ंगा कि मल्लाहों की दशा आजकल कैसी है और उनकी दशा सुधारने के लिए क्या-क्या किया जा सकता है। ये सब मैंने अपने निजी अनुभवो और सफर के बाद इस ओर ध्यान देने से ही सीखा है।

अनेक लोग समुद्र के प्रति रूमानी दृष्टिकोण रखते हैं, और समुद्र पर रहने वाले लोगों के जीवन में दिलचस्पी रखते हैं। शायद ऐसे लोगो को मेरी ये बातें काम की लगें; हालाकि मेरा पक्का मत है कि जिन्होने मेरे वृत्तात को अन्त तक पढ़ा है, वे यह निश्चित रूप मे समझ गए होगे कि मल्लाह के नित्यप्रति के जीवन में रोमांस नाम की कोई चीज नही होती, और समुद्र के ऊपर भी मल्लाहों को उसी नीरस, यथार्थ में गुलामी और संकटों का ही सामना करता है जिसका सामना किनारे के लोग करते हैं। अगर यह धारणा मैं पाठको में जगाने में असफल रहा हूँ तो मैं मानता हूँ कि मेरे निजी तजुर्बों ने मुझ पर जो गहरी छाप छोडी है, उसे दूसरों तक प्रेषित करने में मैं असफल हुआ हूँ।

समुद्र में, उसके गीतों और उसकी कहानियों में, जहाज की झलक में, मल्लाहो के वस्त्रो में एक सम्मोहिनी है जो खास तौर से किशोरो को आकर्षित करती है, और इसीलिए नौसेना व्यापारी जहाजों को मल्लाह इतनी आसानी से मिल जाते

हैं जितने सारे यूरोप में अनिवार्य भर्ती पर देने पर भी न मिल पाते। मैं एक ऐसे किशोर को जानता हूँ जिसमें समुद्र के लिए इतना आवेश था कि केवल ब्लाक के चरमराने से ही उसकी कल्पना इतनी उद्वेलित हो जाती थी कि जमीन पर पैर रखना उसके लिए मुश्किल हो जाता था। हर एक बन्दरगाह में ऐसे बहुत से लडके मौजूद हैं जो अपना काम-काज और स्कूल छोड कर एक अदम्य आकर्षण से प्रेरित होकर बन्दरगाह पर पहुँचते हैं, और पोतो के डेको और यार्डो के आस-पास डोलते रहते हैं। उनकी यह साध एक न एक दिन अवश्य पूरी होती है।

हाँ अपना नया जीवन शुरू करते ही इस किशोर मल्लाह के सारे स्वप्न चूर हो जाते हैं, और वह जान जाता है कि आखिर इस जीवन में कठोर श्रम और कठिनाई के सिवा अन्य कुछ नही है। यही वह यथार्थ दृष्टिकोण है जिससे मल्लाह की जिन्दगी को देखना चाहिये। यदि हम अपनी पुस्तको और वार्षिक भाषणों में "नीला पानी", "नीली जैकिट", "खुले हौसले", "गहरे समुद्र पर ईश्वरीय सहायता देखना", और ऐसे अन्य शब्दो को छोड कर इस विषय को अन्य विषयों की तरह व्यावहारिक स्वर पर ले तो मुझे यकीन है कि उन लोगो का हित-साधन अवश्य कर सकेंगे जिनके हम हितैषी हैं।

प्रश्न यह है कि मल्लाहो के हित के लिए क्या किया जा सकता है क्योंकि मल्लाह भी मनुष्य हैं, जिन्हे खाना खिलाना है, कपड़े पहनाने हैं, ठहरने के लिए जगह देनी है, जिनके लिए कानून बनाने है और उनका पालन करवाना है, और उन्हें हितकारी शिक्षा प्रदान करनी है, और इन सब से बडी बात यह है कि उन्हें धार्मिक प्रभाव और अनुशासन की सीमा में लाना है। इन्ही विषयो पर मैं अपने विचार देना चाहता हूँ।

पहले यह बता दूँ कि मेरी ऐसी कोई अभिरुचि नही है कि जहाज पर मौजूद सारे लोगो को बराबर-बराबर ही माना जाए। यह बात प्रश्न के बाहर है और मानव-समाज की विद्यमान परिस्थितियो को दृष्टि में रखते हुए युक्तियुक्त भी नहीं लगती। मेरा ऐसे एक मल्लाह से भी परिचय नही है जो आज्ञाओ और नौकरी के तबको को दोषपूर्ण बताता हो। अगर मुझे सारी जिन्दगी मल्लाह बन कर ही काटनी पडती तो भी मैं कप्तान की शक्ति को रत्ती भर कम करने का समर्थन नही कर पाता। यह बिल्कुल अनिवार्य है कि सारी वस्तुओ पर नियन्त्रण करने के लिए, और सबका उत्तरदायित्व संभालने के लिए एक ही व्यक्ति और एक ही आवाज

हो। कई आपत्कालीन संकट ऐसे भी आते हैं जब प्रतिवादी शक्ति का तुरन्त प्रयोग आवश्यक हो जाता है। ऐसे संकटो में आपसी सलाह-मशविरे के लिए अवसर नही मिलता; और इस बात का भय भी रहता है कि कप्तान को जिन लोगो से सलाह-मशविरा करने के लिए कहा जाए, हो सकता है कप्तान उन्ही लोगो पर अपना अधिकार जताने की आवश्यकता महसूस करे।

प्रत्येक सरकार में, चाहे वह कितनी ही लोकतन्त्रीय क्यो न हो, कुछ असाधारण तथा पहली नजर में खतरनाक दिखायी देने वाली शक्तियां, निहित कर देना आवश्यक माना गया है; और लोक-मत में विश्वास रखते हुए धीरे धीरे उन शक्तियों के प्रयोग में यथानुसार परिवर्तन किया जा सकता है। संकट काल का सफलतापूर्वक सामना करने के लिए इनकी व्यवस्था की जाती है हालांकि हर कोई यही चाहता है कि संकट की स्थिति कभी पैदा न हो किन्तु उसके पैदा होने की सभावना हर दम बनी रहती है; और यदि संकट की कोई स्थिति पैदा हो गई और उसका तुरन्त सामना करने लायक शक्ति न हुई तो उसी क्षण उस सरकार का अन्त हो जाएगा। जहाज के स्वामी अर्थात् कप्तान में निहित अधिकार के साथ भी यही बात है। यह कहने से काम नही चलेगा कि वह यह या वह काम कभी नहीं करेगा, क्योंकि यह स्पष्ट करने की न तो कोई आवश्यकता है, और न यह उचित ही है। उसकी चिन्ताएं और दायित्व असख्य होते हैं, सारी बातों के लिए उसे जवाबदेह होना पडता है; और शायद कभी भी ऐसे संकटों से घिरने की उसके लिए संभावना बनी रहती है जिन सकटो का सामना सभ्य मनुष्यों पर प्राधिकार का उपयोग करते हुए शायद कोई मनुष्य कभी नही करता। इसलिए ऐसी स्थितियो के अनुरूप शक्तियां उसमें निहित होनी चाहिए; हा, उसको यह जता देना चाहिए कि इन शक्तियों के प्रयोग के सम्बन्ध में वह पूरी तरह उत्तरदायी है। कोई भी अन्य रास्ता अन्याय और अनीति का रास्ता साबित होगा।

अपने प्राधिकार के अधीन व्यक्तियों से व्यवहार करते हुए कप्तान अन्य किसी भी व्यक्ति की भाति देश-विधि के अधीन होता है। कप्तान हत्या, आक्रमण, प्रहार और अन्य अपराधो के लिए देशविधि के प्रति जिम्मेदार है। इसके अलावा सयुक्त राज्य में एक विशेष अधिनियम है जिसके अनुसार क्रूर दन्ड देने, खाना न देने, या किसी किसी मल्लाह के साथ किसी और तरह का दुर्व्यवहार करने पर कप्तान या उसके अफसर को पांच साल की अवधि तक की सज़ा और एक हज़ार डालर

तक का अर्थदण्ड दिया जा सकता है। इस विषय पर कानून की स्थिति तो यह है; और कप्तान तथा उसके अफ़सर, और मल्लाहों का सम्बन्ध, उस सम्बन्ध से घटित होने वाली असामान्य आवश्यकताएं, दोषयुक्तियां, और उत्तेजनाएं प्रत्येक मामले में भिन्न-भिन्न परिस्थितियां मात्र बनती हैं। जहां तक कप्तान द्वारा शक्ति के प्रयोग पर प्रतिबंध लगाने का सम्बन्ध है, कुल मिलाकर कानून इसके लिए पर्याप्त मालूम होता है। मैं नहीं समझता कि इस समय इस विषय पर हमें अन्य किसी कानून की अपेक्षा है। मुख्य कठिनाई तो कानून को लागू करने के सम्बन्ध में पैदा होती है, और यही ऐसा मामला है जिसमें काफ़ी उलझन पैदा होती है और जिस पर अत्यधिक ध्यान देना चाहिए।

पहली बात तो यह है कि न्यायालयों ने यह मत दिया है कि लोकनीति को दृष्टि में रखते हुए यह आवश्यक है कि कप्तान और उसके अफ़सरों की शक्ति को बर-करार रखा जाए। अनेक लोगों का जीवन और विपुल सम्पत्ति बराबर उनकी निगरानी में होती है जिनके लिए वे पूरी तरह जिम्मेदार हैं। इनको बनाए रखने के लिए, कप्तान के साथ न्यायसंगत व्यवहार करने के लिए, और उसके हाथ बांध कर उस पर भयानक जिम्मेदारी न डालने के लिए यह आवश्यक है कि अनु-शासन बनाये रखने का समर्थन किया जाए।

दूसरी बात यह है कि मल्लाह लोग आपस में अफ़सरों के खिलाफ़ सांठ-गांठ करके झूठी कसमें खा सकते हैं और बातें बढ़ा-चढ़ा कर बता सकते हैं, इसके लिए अफसरों को थोड़ी रियायत देना जरूरी है। साथ ही यह भी याद रखना है कि अक्सर अफ़सरों को अपनी ओर से खड़ा होने के लिए गवाह ही नहीं मिलते। ये बातें बड़ी वज़नदार और सच्ची हैं, और मल्लाहों के मित्रों को इन्हें अपनी आंखों से ओझल नहीं करना चाहिए। दूसरी ओर यह भी सच है कि मल्लाह की ऐसी अनेक शिकायतें हैं जो उचित हैं।

जहां तक गवाही-सबूत का सम्बन्ध है, मल्लाहों की कठिनाइयां भी कप्तान जितनी ही हैं। यह सर्वविदित तथ्य है कि जब जहाज पर कुछ यात्री भी होते हैं तो मल्लाहों के साथ अपेक्षाकृत बहुत अच्छा व्यवहार किया जाता है। यात्रियों की उपस्थिति से कप्तान पर नियन्त्रण रहता है। वह सिर्फ़ इसीलिए ही मल्लाहों के साथ अच्छा व्यवहार नहीं करता कि यात्री उसके प्रति अच्छी भावनाएं रखेंगे और उसकी इज्जत करेंगे बल्कि उसे यह भी डर रहता है कि अगर मुकदमे के दौरान

उन्हे बुलाया गया तो उनकी गवाहिया बहुत प्रभावपूर्ण सिद्ध होंगी ।

हालाकि यात्रियो के सामने भी अफसर अपनी अफसरी तो दिखा देते हैं मगर क्रूरतापूर्ण अपराध करने का साहस उनमें नही होता । आमतौर पर लम्बो और दूर की यात्राओ में ही ऐसा होता है कि कप्तान के ऊपर कोई नियन्त्रण नही होता, और मल्लाहो के अलावा उसके विरुद्ध अन्य साक्षिया नही जुटायी जा सकती—तभी मल्लाहो को कानून की सुरक्षा की सबसे अधिक आवश्यकता होती है ।

ऐसी यात्राओं के रिकार्ड मे बहुत से क्रूरतापूर्ण कृत्यो का विवरण मिलता है जिसे पढ-सुन कर किसी भी व्यक्ति का मन खराब हो सकता है और वह मनुष्य को देखते ही भयभीत हो जाता है, और बहुत-से; असख्य क्रूर कर्म अभी प्रकाश में नही आए हैं और न कभी दुनिया को उनका पता चलेगा । हाँ, अगर समुद्र ही अपने गर्भ में मृत लोगो की लाशें निकाल कर किनारे पर डाल दे तो बात दूसरी है । इन क्रूर कर्मो की परिणति कई बार विद्रोह और समुद्रीदस्युता में हुई है—कोडे का वदला कोडे, और खून का बदला खून से लिया गया है, मगर ऐसी यात्राओं में अगर एक मल्लाह के पक्ष में दूसरे मल्लाह की गवाही सच न समझी जाय, या यह सोचकर, कि मल्लाह तो मल्लाह का पक्ष लेगा ही उनकी गवाहियो का महत्व कम समझा जाय तो मल्लाहो के मर्ज को लाइलाज ही, समझना चाहिये । और इस वस्तुस्थिति से उत्साहित होकर कप्तान मल्लाहों पर और भी सितम ढाने पर आमादा हो जायेगा क्योकि वहां उसके अधिकार पर न मित्रो का अंकुश होगा, और न लोक-मत का ।

यह भी ध्यान रखना चाहिए कि जब मल्लाह न्यायालय का दरवाजा खटखटाता है तो उसकी परिस्थितिया कप्तान की परिस्थितियो से बहुत भिन्न होती हैं । उसको भूस्वामियों और छुटे हुए घावो के बीच रहना पडता है, अक्सर उसे दिल खोल कर शराब पिलाई जाती है, और वह पूर्वाग्रह भाव से अदालत के सामने पेश होता है । उसके चरित्र व सत्यनिष्ठा को अक्सर सन्देह की दृष्टि से देखा जाता है । दूसरी ओर कप्तान को स्वामियो और बीमे वालो की सहायता प्राप्त होती है और वह प्रतिष्ठित व्यक्ति की भाँति दिखाई पडता है, चाहे मल्लाह की बनिस्बत उसने कुछ ही ज्यादा शिक्षा पाई हो, और चाहे उसका अन्त करण अत्यन्त सामान्य कोटि का हो (यह बात ऐसी कई यात्राओ के कप्तानो के बारे मे सच है जिनमें से कुछ का वर्णन मैं खुद कर सकता हूँ) ।

मल्लाह की गवाही के विषय में ये बातें आम तौर पर सामने रखी जाती हैं और मेरा विचार है कि इस स्थिति को सुधारने में औपचारिक कानून किसी रुप में लाभकर सिद्ध नही होगा। मल्लाहो की गवाहियो को कितना सच समझा जाये—इसका निश्चय करने के लिए कोई कानून नही बनाया जा सकता। यह बात न्यायाधीश और जूरी के सोचने पर निर्भर है; और कोई एक्ट या न्यायालय का कोई औपचारिक नियम ऐसे किसी मुकदमे के फैसले में बाल बराबर फर्क भी पैदा नहीं कर सकता। मुकदमे का फैसला करने में मल्लाह की गवाही की सत्यता केवल इन बातो से जाननी चाहिए: वह किस वर्ग का है और उस वर्ग की कैसी ख्याति है, अपने आचरण से वह न्यायालय पर क्या प्रभाव डालता है, और बयान के दौरान प्रकट होने वाली उसकी चारित्रिक विशेषताओ का जूरी पर क्या प्रभाव पडता है।

अतीत में हालात सुधारने के लिए जो सत्प्रयत्न किये गये हैं उनसे हम इस प्राचीन मान्यता में विश्वास करने में प्रवृत्त होते हैं कि मल्लाहो के संरक्षण के लिए बनाये गये कानूनो का उचित पालन तभी हो सकता है जब नाविकों के बौद्धिक और धार्मिक आचरण में धीरे-धीरे सुधार लाया जाय। यही एक ऐसा तरीका है जिससे वांछित परिवर्तन संभव हो सकता है। आचरण में सुधार होने पर एक तो नाविक को एक व्यक्ति के रूप में, और नाविकों के वर्ग के प्रतिनिधि के रूप में अफसरो से सम्मान मिलेगा, और फिर अगर कोई झमेला उठ खडा होता है तो जूरी के सामने वह उसी सम्मानित रूप में पेश होगा जिस रूप म निम्न वर्ग का कोई भी चतुर और प्रतिष्ठित आदमी पेश होता है। मैं ऐसे कई व्यक्तियो को जानता हूँ जो घोर यत्रणा की घटनाओ के प्रकाश में आते ही यह तो स्पष्ट ही है कि कही न कही कोई न कोई दोष है, यह सोचने लगते हैं कि इसे रोकने के लिए तुरत ही कोई व्यवस्था होनी चाहिए, कोई कानून बनना चाहिए, या कोई सघ बनना चाहिए। मेरे विचार मे नाविको के विषय को लेकर कोई आन्दोलन चलाने की आवश्यकता नही है। इसके प्रतिकूल में तो यह सोचता हूँ कि किसी भी सार्वजनिक और कठोर कार्यवाहो से हानि ही होगो। हमें उत्तरोत्तर उन्नति के मध्यम मार्ग से ही सतुष्ट रहना चाहिए।

अगर जहाज की अर्थ-व्यवस्था में हस्तक्षेप करना भी अन्यायपूर्ण होगा। निवास, भोजन, सोने के घन्टो, इत्यादि ऐसे मामले हैं जो स्वय उन्ही पर छोड दिए जाने

चाहिए, हालांकि इनमें अनेक सुधार किए जा सकते हैं। मुझे इस बात का पूरा भरोसा है कि सारी बातों में धीरे-धीरे सुधार होगा और ऐसा सुधार हो भी रहा है। हमारे अधिकांश जहाजों में अगवाड छोटा, काला और चूने वाला होता है। जमीन पर रहने वाले लोग जहाज के अगवाड़ को देखकर यह सोच ही नही सकते कि महीनो तक या सालो तक चलने वाली यात्रा के दौरान इसमें दस या बारह आदमी रहते हैं। अक्सर खाद्य सामग्री इतनी कम और इतनी खराब होती है कि भोजन भी ड्यूटी समझ कर ही खाना पडता है।[1] नीद के विषय में मेरा यह

---

१. मुझे याद नही कि अपनी इस कहानी में मैंने यह बताया है या नही कि जहाज पर मल्लाह खाते किस तरीके से हैं। अगवाड में मेजें, छुरिएं, कांटे और प्लेटें आदि चीजें नही होतीं। काठ का एक टब भर कर उनके सामने फर्श पर रख दिया जाता है, और नाविक उसके चारो ओर बैठ जाते हैं, और अपने-अपने चाकू से काट कर खाने लगते हैं। चाय वे अपने मग्गो से पीते हैं। एक मग्गे में एक क्वार्ट चाय आती है।

इन बातो को कठोरता नही माना जाता, और सच तो यह है कि इस व्यवस्था को ज्यादा अच्छा समझना चाहिए। व्यापारी जहाजों में बरतन नाविकों के अपने निजी होते हैं, चाकू, सुइयां, सूए और रबड आदि चीजें भी उन्हें अपने पास से ही जुटानी पडती हैं। अगर उनके जीवन के अन्य पक्षों को देखा जाय, इस बात पर गौर किया जाय कि मेज़ को सजाने और भोजन के अन्त में उसे साफ करने में कितना समय लगेगा, और अगवाड में कितनी बडी जगह की जरूरत होगी, इस बात को भी ध्यान में रखा जाय कि उनका भोजन कितना सादा...आमतौर पर उन्हे गोश्त का एक टुकडा ही तो दिया जाता है...होता है यह तरीका निश्चय ही आरामदेह सिद्ध होगा, और चूंकि टब और कढाई आदि को बहुत अच्छी तरह साफ रखा जाता है इसलिए इस तरीके को साफ और आसान भी कहा जा सकता है। मैं सोचता था कि आमतौर पर सभी लोगो को इन बातो का पता होगा, लेकिन कुछ ही महीने पहले की बात है कि मैंने नाविको के बहुत से मुकदमे हाथ में लेने वाले एक लब्धप्रतिष्ठित वकील को एक नाविक से यह पूछते सुना कि जब अमुक घटना हुई थी तो क्या "नाविक भोजन की मेज पर से उठ चुके थे ?" इसलिए मैंने यहा ये बातें बता देना उचित समझा।

विश्वास है कि व्यापारी पोतों के मल्लाह कम उम्र में ही मर जाते हैं क्योंकि वे पूरी नींद ले नहीं पाते।

मैं ऐसे अवसरों की बात नहीं करता जब नींद को छोड़ देना जरूरी हो। मगर जब मौसम अच्छा भी हो तब भी व्यापारी-पोत के मल्लाहों से महीनों तक दिन भर काम लिया जाता है और इसके बाद हर रात को प्रत्येक पहरे के लोगों की रात के आठ घन्टों में बारी-बारी से ड्यूटी लगती है। इस तरह आमतौर पर यह होता है कि यात्रा के अन्त में जब कोई दुर्घटना नहीं घटती और मौसम साफ़ रहता है तो भी मल्लाहों के चेहरों पर थकान और सुस्ती झलकती है। उन्हें कभी एक बार में चार घन्टे से ज्यादा सोने का समय नहीं मिलता, और ऐसा मौका शायद ही कभी आता हो कि उन्हें बुलाया जाय और उन्हें और आराम की सख्त जरूरत न हो। मल्लाह लोग सारी नींद के लिए जमीन की जिन्दगी को सब से अधिक ईर्ष्या की दृष्टि से देखते हैं।

फिर भी परिस्थितियों के अनुसार इन चीजों में रद्दोबदल करने की गुन्जाइश रखनी चाहिए। जब कभी कठिनाइयां उत्पन्न हों, तो उनको प्रकाश में लाना चाहिए, और अफ़सरों को तथा मालिकों से इसके लिए जवाब-तलब करना चाहिए, और इसमें सन्देह नहीं कि कुछ समय बाद जनता की नजरों में मल्लाहों की बढ़ती इज्जत के कारण उनकी व्यवस्था तथा अनुशासन में अवश्य ही अनुकूल परिवर्तन आयगा। यह बिल्कुल उचित ही है कि मल्लाह अफ़सरों से अलग जहाज़ के भिन्न भाग में रहें; और अगर अगवाड़ को बड़ा और आरामदेह बना दिया जाए तो कोई कारण नहीं कि मल्लाह वहां रहने में जरा भी आना-कानी करें। सच तो यह है कि मल्लाह अगवाड़ ही पसन्द करते हैं। अगवाड़ उनकी पुरानी जगह है और उसमें वे अफ़सरों की निगाहों तथा पहुँच से दूर रहते हैं।

जहाँ तक उनके भोजन और नींद का सम्बन्ध है; कानून के अनुसार कुछ निश्चित मात्रा में भोज्य सामग्री जहाज पर रखना, और व्यवस्थित ढङ्ग से रखना, अनिवार्य है। मल्लाहों को अनावश्यक रूप से नींद और भोजन से वंचित न करने के लिए कप्तान देशविधि और उपर्युक्त अधिनियम से बाध्य है। इससे आगे जाना ठीक न होगा। कप्तान को ही इस बात का निर्णायक होना चाहिए कि वह अपने मल्लाहों को नींद से कब उठाये; कभी-कभी, आवश्यक चीजों में तो नहीं, किन्तु मल्लाहों के भोजन के कुछ स्वादिष्ट पदार्थों में, कटौती करने का भी उसे अधिकार

होना चाहिए, जैसे उदाहरण के तौर पर दन्ड स्वरूप रविवार को हलवे की कटौती की जा सकती है, हालाकि मैं आमतौर पर इसको अन्याय मानता हूँ।

जहाज के अनुशासन के एक भाग-विशेष की ओर ध्यान न देने से इस विषय के साथ अन्याय होगा, जिसके बारे में पिछले कुछ दिनो से काफी बातचीत चल रही है और जिसके विरोध में अनेक लोगो ने तरह-तरह के प्रतिवादी विचार अभिव्यक्त किए हैं। मेरा मतलब शारीरिक दन्ड से है।

जिन लोगों ने मेरा वृत्तान्त पढ़ा है, उन्हें याद होगा कि मैंने खुद अपनी आखों से अपने साथियों पर यह अत्यत क्रूर कर्म होते देखा, और मैं सच कहता हूँ कि सिर्फ कोड़े मारने का शब्द सुनने पर ही मुझ में ऐसी भावनाए आ जाती हैं जिन के ऊपर काबू पाना मेरे लिए मुश्किल हो जाता है। किन्तु जब इसको एकदम पूरी तरह हमेशा के लिए खत्म कर देने का; किसी स्थिति में भी कप्तान को शारीरिक दण्ड देने के अधिकार से वचित कर देने का प्रस्ताव मेरे सामने आता है तो मैं चुप हो जाता हूँ, और मैं यह कहता हूँ कि ऐसे किसी औपचारिक कानून की सफलता पर मुझे पूरा-पूरा सन्देह है।

यदि इस विषय पर लिखने वाले लोगो का अभिप्राय लोगों का ध्यान इस ओर आकर्षित करना और कोडे मारने की प्रथा को निरुत्साहित करना और उसको बदनाम बनाना है—तब तो यह बात अच्छी है, और वास्तव में चाहे उनका लक्ष्य कुछ भी क्यों न हो, इस प्रश्न की चर्चा का परिणाम यही होगा और इससे लाभ ही होगा। फिर भी अगर कल को मुझ से किसी जहाज की कमान अपने हाथ में लेने को कहा जाय, और मुझे तथा मेरे सभी मल्लाहों को बता दिया जाय कि चाहे कुछ भी हो जाय मैं किसी मल्लाह को साधारण शारीरिक दन्ड भी नही दे सकता तो मैं उस जहाज का कप्तान बनना शायद ही पसन्द करूं। मुझे यकीन है कि मुझे इस उपाय को अपनाने की जरूरत कभी नही पडेगी, और मैं खुद बड़े से बड़ा खतरा और मुसीबत उठाकर भी किसी मल्लाह को शारीरिक दन्ड देने का मौका नही आने दूँगा। लेकिन अगर भीषण संकट के समय मुझे खुद अपनी या अपने आश्रियो की रक्षा करने के लिए कोई शक्ति ही न दी जाय तो मैं इस स्थिति में अपने को रखने के लिए तैयार नही हो सकूंगा, और न किसी अन्य को ही इस स्थिति में रखने की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेना चाहूँगा।

सच तो यह है कि इस शक्ति के क्रूरतापूर्ण दुरुपयोग की कहानियों को सुन-

कर, जो बार बार घटित हुई हैं, जिन लोगो की सहानुभूति मल्लाहो के साथ हो जाती है, उनमें से बहुत से लोग कप्तान और अफसरो को कठिनाइयो पर ध्यान नही देते । यह नही भूलना चाहिए कि हमारे व्यापारी-पोतो में मल्लाहो की तीन चौथाई से अधिक संख्या विदेशियो की है । ये विदेशी विश्व के हर कोने से आए हैं । इनमें से अधिकाश यूरोप् के उत्तर के है । इनके अलावा, फ्रास, स्पेन, इटली, पुर्तगाल, सभी मेडिटरेनियन देशो के लोग, लास्कर के लोग और नीग्रो, हैं । इनमें सबसे गए बीते है ब्रिटेन के नौकरी से निकाले हुए सैनिक, और हमारे देश के लोग जो भूमि पर रहने की आज्ञा न मिलने के कारण समुद्र पर रहते हैं ।

आजकल ऐसा होता है कि जब तक जहाज बन्दरगाह से चलकर समुद्र में नही पहुँच जाता तब तक कप्तान को अपने मल्लाहो के बारे में कुछ मालूम ही नहीं होता । उनके बीच में समुद्री डाकू, या बागी भी हो सकते हैं, और अक्सर एक गंदी मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है । यह भी निश्चित सा है कि उनमें से बहुत से अजनबी विदेशी होते हैं जो हमारी भाषा का एक शब्द भी नही समझते । हो सकता है उन्होने अपने जीवन में शक्ति के अलावा अन्य किसी प्रकार के प्रभाव को न जाना हो और वे सूए और चाकू का समान रूप से प्रयोग करते हों ।

कोई भी चतुर कप्तान चाहे वह कितना भी शांतिवादी क्यो न हो, बिना पिस्तौलें और हथकड़िया लिए समुद्र की ओर रवाना न होगा । हालांकि मेरा विचार है कि मल्लाहों के साथ किसी भी विवेकयुक्त मनुष्य के लिए उदारता ही सबसे अच्छा कर्त्तव्य और नीति होगी; और शारीरिक दन्ड देना खतरनाक और निरर्थक भी हो सकता है । लेकिन सवाल यह नही है कि कप्तान को सामान्यतया क्या करना चाहिए । सवाल यह है कि क्या किसी भी स्थिति में हलका सा शारीरिक दन्ड देने की शक्ति भी कप्तानो से छीन ली जाय ? कानून यह है कि पिता अपने बच्चे को सुधारने के लिए, मास्टर अपने छात्र को सुधारने के लिए हलका दन्ड दे सकता है, जहाज के कप्तान को इसी सिद्धान्त के अनुसार यह शक्ति दी गयी है ।

अधिनियम, न्यायालयो के निर्णयो द्वारा प्रस्तुत देश-विधि, व्याख्याकारों की पुस्तकें—सभी इस विषय पर एकमत हैं कि कप्तान किसी युक्तियुक्त कारण पर हलका शारीरिक दन्ड दे सकता है । अगर दन्ड अधिक है, या उसका कारण पर्याप्त नही है, तो वह इसके लिए उत्तरदायी है, और ऐसे सारे मामलो में जूरियों

ही यह निश्चित करेंगी कि दन्ड अधिक तो नही दिया गया था और उसके लिए न्यायसगत कारण था या नही ?

यह बात मुझे बहुत अच्छी लगती है और इस बिन्दु पर इस सारे विषय को समाप्त किया जा सकता है। इससे अच्छा विचार इस विषय पर अन्य हो भी नही सकता। मेरा मतलब सिर्फ इतना है कि आजकल की परिस्थितियो में औपचारिक कानून का लाभ न तो कप्तान या अफसरो को होगा, न ही मल्लाहों को। यह एक और ऐसा मामला है जो इसी तरह छोड दिया जाना चाहिए—धीरे-धीरे यह अपना हल ढूंढ लेगा।

ज्यों-ज्यो मल्लाह अच्छे होते जाएंगे, दण्ड देने की आवश्यकता में कमी होती जाएगी, ज्यो-ज्यो अफसरों का चरित्र ऊचा उठेगा, वे खुद दण्ड देने के लिए कम तैयार होगे, पढे-लिखे और सम्मानपूर्ण मनुष्यों को अगर दण्ड दिया गया तो लोक-मत, और जूरिया (जो राष्ट्र की नाडी हैं) इसको बर्दाश्त नही करेंगी।

मेरे बराबर शारीरिक दण्ड देने से ज्यादा नफरत शायद ही किसी को हो। साथ ही मेरा यह भी दृढ मत है कि मल्लाहो के साथ बुरा व्यवहार बहुत बुरी नीति है, फिर भी मैं हर विवेकशील मनुष्य से यह प्रश्न पूछूंगा कि क्या एक दम सारे मामलों में सब प्रकार के शारीरिक दण्डों का औपचारिक कानून के माध्यम से निषेध करने की बनिस्बत यह ज्यादा अच्छा नही है कि वह इस बात में विश्वास करे कि क्रमश. यह प्रथा अनावश्यक और कुख्यात बन जायेगी, क्यो न हम किसी उचित कारण के होने पर मामूली शारीरिक दण्ड को ठीक मानें; और यह स्वी-कार करें कि चूंकि शारीरिक दण्ड देना खतरे से खाली नही है इसलिए थोड़े दिनो के बाद ही लोगो में इसको दकियानूसिक बर्बरता कह कर याद किया जाएगा।

मल्लाहों को न्याय दिलवाने के सबध में एक बात और है जिसकी ओर मैं उनके समर्थकों का, और हो सके तो प्रशासको का भी, ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। जब कप्तान या किसी अफ़सर के विरुद्ध जूरी अपना अधिमत दे देती है तो आम तौर पर यह होता है कि हारा हुआ पक्ष जूरी या न्यायाधीश से इस बात की अपील करता है कि इस बात को ध्यान में रख कर, कि उनका पिछला चरित्र अच्छा है, वे गरीब हैं, और उन्हें मित्रो और परिवार के लोगों का भरण-पोषण करना पडता है, उन्हें हल्की सजा दी जाए और हरजाने का धन माफ़ कर दिया जाए।

इन अपीलों की इतनी सुनवाई होती है कि उस पर विश्वास करना कठिन है। मैं यह सोचता हूँ कि कानूनों और उनके पालन करने में यह एक ऐसी बात है जिससे मल्लाह को सबसे अधिक कठिनाई उठानी पड़ती है। हालांकि मल्लाह की बनिस्बत कप्तान को कई सुविधाएं प्राप्त होती हैं—गवाही पाने की, मित्रों की, धन की, और सुयोग्य वकील की—फिर भी यह स्पष्ट है कि वह अपना बचाव करने में कामयाब नहीं हो पाता। अगर मुकदमा दीवानी का होता है तो फिर जूरी के सामने अपील पेश की जाती है, या अगर फौजदारी का मामला हो तो सज़ा में कमी करवाने के लिए न्यायाधीश से अपील की जाती है। अपील पेश रने के आधार दो ही हैं जिनके बारे में पहले लिख चुका हूँ।

प्राय: मुकदमे में इसी तरह अपीलें की जाती हैं। पहले, पक्ष के पिछले अच्छे चरित्र की बात देखें। जिस शहर में वह रहता है, उस शहर से उसके चरित्र की, और स्थल पर रहते समय उसके असामान्य रूप से अच्छे आचरण की साक्षी देने के लिए गवाहों को बुलाया जाता है। गवाह बताते हैं कि वह एक अच्छा पिता, या पति, या पुत्र, या पड़ोसी है, और उन्होंने उसमें ऐसी कोई बात कभी नहीं देखी जिससे क्रूर मनोवृत्ति वाला शासक सिद्ध होता हो। मुझे एकाध ऐसी गवाही की याद आती है जिसमें यह बताया गया था कि अभियुक्त का स्कूली जीवन कैसा था। इसके बाद पोत के मालिकों, अन्य व्यापारियों, और कभी-कभी बीमा कम्पनी के अध्यक्ष को बुलाया जाता है, वे उसके आचरण के बारे में साक्षी देते हैं, उसकी ईमानदारी में अपना विश्वास प्रकट करते हैं, और कहते हैं कि उन्होंने उसमें कभी ऐसा कुछ नहीं देखा कि वे यह सोचने को प्रवृत्त हों कि वह क्रूरता या अत्याचार का आचरण कर सकता है।

यह साक्षी रिकार्ड कर ली जाती है और इस बात पर विशेष बल दिया जाता है कि ये गवाह कितने प्रतिष्ठित हैं। कहा जाता है कि ये लोग कप्तान के साथी और पड़ोसी हैं,...ये ऐसे आदमी हैं जो उसको व्यापारिक व पारिवारिक सम्बन्धों के नाते समीप से जानते हैं, और जो उसको किशोरावस्था से जानते हैं। कहा जाता है कि ये लोग समाज के शीर्ष पर विराजमान हैं, और कप्तान के मालिकान होने के नाते उनसे आशा की जाती है कि वे उसके चरित्र के बारे में सच्ची गवाही दे सकते हैं।

इस साक्षी की अब उन आधा दर्जन अज्ञात मल्लाहों की साक्षी से तुलना की जाती है जिनके बारे में विपक्ष का वकील यह कहना नही भूलता कि ये लोग कप्तान से चिढ़ गए हैं क्योंकि उसने इनको मामूली सा दण्ड देना आवश्यक समझा था, कि ये लोग उसके खिलाफ मिल गए हैं, और अगर इन्होंने पूरी तरह से कहानी नही गढ़ी है तो कम से कम उसमें इतनी अतिशयोक्ति से काम लिया है कि उसकी सत्यता पर ज्यादा विश्वास नहीं किया जा सकता।

इसके बाद न्यायालय और जूरी को इस बात से प्रभावित किया जाता है कि कप्तान गरीब, बाल-बच्चोदार आदमी है, उसके ऐसे मित्र हैं जो भरण-पोषण के लिए इसी पर निर्भर हैं; उसे अर्थदण्ड देना निर्दोष और असहाय लोगों के मुंह से रोटी छीन लेना होगा, और उन पर ऐसा बड़ा बोझ पड जाएगा जिसको वे जीवन भर न चुका पाएँगे; यदि उसको सज़ा दे दी गई तो वह बन्द तो हो जाएगा मगर उसका नतीजा यह होगा कि वह मेहनत न कर सकेगा, तनख्वाह न पा सकेगा, तब उसके बीबी बच्चे या दुर्बल माता-पिता पर दुख का पहाड टूट पडेगा। ये दो कारण इस ढङ्ग से पेश किए जाते हैं कि कभी भी प्रभावहीन सिद्ध नहीं होते।

इस ढङ्ग की कार्रवाई को रोकने के लिए और उन लोगों की ओर से (जिनके बारे में मेरा विश्वास है कि दिन प्रति दिन इस गलत ढग के शिकार हो रहे हैं) मैं कुछ बातें पेश करूंगा जो मुझे स्वत सिद्ध दिखाई पडती हैं।

पहले, भूमि पर रहने के वक्त कप्तान के अच्छे चरित्र के सम्बन्ध में दी हुई साक्षी पर विचार करें। यह याद रखना जरूरी है कि आम तौर पर अगवाड़ में रहने वाले नाविको में से ही जहाज के कप्तान बनाये जाते हैं। सारे आदमियों में खास तौर पर निचले तबके के लोगो में, निरंकुश शक्ति होने से भारी परिवर्तन आ जाते हैं। मैं ऐसे कई कप्तानों को जानता हूँ जो समुद्र पर यात्रा के समय क्रूर व अत्याचारी होते हैं किन्तु जब वे अपने मित्रों तथा परिवार के बीच में होते हैं तो बचपन की अपनी ख्याति के अनुसार व्यवहार करते हैं। वास्तव में जहाज का कप्तान घर पर बहुत कम जाता है और जब जाता है तो बहुत कम समय तक रुकता है; इस बीच वह हमेशा मित्रों से घिरा रहता है जो उसके साथ सहृदय व्यवहार करते हैं, वहा हर चीज़ उसको खुश रखती है और उस पर नियंत्रण किये रहती है। अगर कस्बे का कोई आदमी या अडोसी-पडोसी, महीनो और सालों की अनुपस्थिति के बाद लौटे, अफसर के शुद्ध और शातिपूर्ण आचरण के विरुद्ध गवाही

दे तो लोग उस गवाह को ही पशु मानेंगे। कारण यह वह तो वहां बहुत ही कम समय के लिये आया है, इतने कम समय के लिए कि उसके उस अल्प विराम की नवीनता और उत्तेजना खत्म नही हो पाती और न लोग उसे मेहमान और अजनबी के रूप में देखना बन्द करते हैं।

पोत के मालिकान के साथ, जिनसे वह सम्बन्धित है, और अन्य व्यापारियों तथा बीमे वालो के प्रति उसका व्यवहार समुद्र से बिल्कुल अलग होता है जहां वह अपना, हर एक मनुष्य का और हर एक वस्तु का स्वामी होता है। मालिकान के बारे में तो उसे मालूम ही रहता है कि इन्ही लोगो पर, अपने प्रति उनक धारणा पर ही उसकी रोटी चलती है। जहा तक इन लोगों की साक्षी के आधारी पर उसका समुद्र के ऊपर आचरण निश्चित करने का सम्बन्ध है, यह कहा जा सकता है कि कोई भी यह समझ सकता है कि एक व्यक्ति जो अपने अधीन व्यक्तियों पर अपनी शक्ति का दुरुपयोग करता है या दण्ड देता है, वह घर पहुँचने पर अपने मालिको के प्रति आज्ञाकारी व नम्र सेवक भी सिद्ध हो सकता है।

जहाँ तक कप्तान की ओर से इस आधार पर अपील करने का सम्बन्ध है कि वह ग़रीब है और उसके श्रम पर कुछ लोग भरण-पोषण के लिए निर्भर करते हैं, तो इस पर यह आपत्ति की जा सकती है कि यह बात तो हर एक मुकदमे पर लागू होगी और हर तरह सभी कप्तान और अफ़सर उन दण्डो से बच जाएगे जिन्हें कानूनो ने उनके लिए निर्धारित किया है।

हमारे देश में व्यापारी-पोतो के ऐसे कप्तानों की सख्या बहुत कम, या नही के बराबर, है जो गरीब हो और जिनके माता-पिता, पत्नियाँ, बच्चे या अन्य सम्बन्धी अपने भरण-पोषण के लिए आंशिक या पूर्ण रूप से उन्ही के परिश्रम पर निर्भर करते हों। रोटी कमाने के लिए बहुत कम लोग समुद्र पर जाते हैं। अब अगर दण्ड में कमी करने की यह अपील न्यायालयों में स्वीकार कर ली जाए तो क्या एक समूचे वर्ग को ऐसा विशेषाधिकार प्राप्त नहीं हो जाता जो एक हद तक इनकी गलतियो पर पर्दा डाल देगा? यह बात यदा-कदा नही प्राय. होती है। जब वकील की सारी दलीलें नाकामयाब हो जाती हैं तो अनिवार्य रूप से आखिरी हथियार की तरह इस अपील को काम में लाया जाता है। मुझे कुछ अत्यन्त स्पष्ट मुक़दमो का पता चला है जिनमें जब कप्तान को बचाने के लिए सारे प्रयत्न किए जा चुके और उसके विरुद्ध जूरी ने अपनी राय दे दी तथा सारी आशाएं

मिट्टी हो गई तो यह अपील की गई और इसमें इतनी सफलता मिली कि सजा नाम-मात्र की रह गई. शायद अदालत ने इस बात पर ध्यान नही दिया कि ऐसी अपील तो अदालत के सामने आए हुए ऐसे हर मामले में की जा सकती है।

यह बात कुछ विचित्र सी लगती है कि यह अपील केवल कप्तानों और अफसरों के मामलो में ही की जाती है। आज तक किसी व्यक्ति ने ऐसा कोई मुकदमा न सुना होगा जो स्थल पर किये गये किसी अपराध के लिए चला हो और उसमें किसी अपराधी की सज़ा सिर्फ इसलिए कम कर दी गई हो क्योकि वह गरीब है और उस पर अन्य व्यक्तियो की जिम्मेदारी है। इसके प्रतिकूल यह विचार किया जाता है कि अपराधी को सजा मिलने से स्वय उसको और अन्यो को जो दुख मिलता है या उनकी जो बदनामी होती, इससे अपराधों पर नियत्रण लगता है। साथ ही इस अपील की बात से मल्लाह को एक और विपत्ति का सामना करना पडता है। यदि गरीबी पर ही सोचा जाए तो दोनों पक्षो में मल्लाह ज्यादा गरीब होता है, और यदि इस दुनिया में कोई ऐसा आदमी है जो जीवन-निर्वाह के लिए अपने हाथ-पैरो और दृढ उत्साह पर ही निर्भर करता है तो वह मल्लाह है। उसके भी कुछ मित्र होते हैं जिन्हें उसके परिश्रम की कमाई से कुछ राहत मिलती है, और अगर उन्हे उसके सताये जाने या अपमानित किये जाने की खबर मिलती है तो उनके हृदय टूक-टूक हो जाते हैं।

फिर भी जब कभी न्यायालय से मल्लाह पर रहम करने की प्रार्थना की जाती है, जिस का आजकल बहुत चलन है, तो इन बातो को जिरह में शामिल नही किया जाता। जब किसी मल्लाह पर विद्रोह करने या किसी अफसर को चोट पहुचाने के लिए मुकदमा चलाया जाता है तो इन बातों पर एक पल के लिए भी गौर नही किया जाता। इस पर भी मल्लाहों को अदालतों में इन्साफ पाने के लिए जिन कठिनाइयो का सामना करना पडता है, उनके होते हुए भी, यह सोच कर सब्र किया जा सकता है कि कुछ समय बाद ये कठिनाइयाँ दूर हो जाएगी — अगर इन दो अपीलों का सिलसिला न होता।

इस बात की शिकायत नही की जा सकती कि अफ़सरों के विरुद्ध मल्लाहो की गवाही को सन्देह की दृष्टि से क्यो देखा जाता है और यह क्यों मान लिया जाता है कि साठ–गांठ तथा अतिशयोक्ति से काम लेते ही हैं। इसके विपरीत, न्यायाधीश का यह कर्त्तव्य है कि वह जूरी के सामने इन दोनो बातों का स्पष्ट

उल्लेख कर दे। लेकिन जब गवाहो से जिरह हो चुकी हो, वकील अपनी दलीलें पेश कर चुका हो, न्यायाधीश ने जूरी को मुकदमा सौंप दिया हो, और जूरी ने कप्तान के खिलाफ़ अपना मत व्यक्त कर दिया हो तब न्यायालय को क्या की अपील नहीं सुननी चाहिए। इस अपील में स्थल पर रहते हुए कप्तान के आचरण के बारे में बताया जाता है (जबकि जिस अपराध के लिए उस पर मुकदमा चल रहा है उसकी साक्षी उस जहाज के मल्लाह ही दे सकते हैं), और इसके बाद इस आधार पर तथा कप्तान की बीबी और परिवार को ध्यान में रखते हुए अदालत को उस अधिनियम के अंतर्गत दिये गए जुरमाने को घटाना नही चाहिए जो व्यापारी पोतो के कप्तानो और अफसरों को दन्डित करने के लिए ही बनाया गया है।

पोतों पर आदमियो को लगाने, मल्लाहो के लिये दी हुई खाद्य–सामग्री, और समुद्र पर उनके प्रति व्यवहार के सम्बन्ध में ऐसी कई बातें हैं जिनके बारे में बहुत कुछ कहा जा सकता है। मगर मेरे वृत्तान्त में इन बातों का जहा-जहा ज़िक्र आया है वहाँ मैं अपने विचार भी व्यक्त करता चला हूँ। उनके अलावा इस सिलसिले में मैं और कुछ नही कहूँगा। हा, मुझे नाविकों की भरती के संबंध में ज़रूर कुछ कहना है। यह तो सब जानते हैं कि मल्लाहों की भरती का काम पूरी तरह कप्तानों पर ही छोड दिया जाता है और इसकी वजह से अनेक कठिनाइयां सामने आती हैं। अगर कप्तान या मालिक को मल्लाहो के बारे में कुछ भी ज्ञान हो और वे स्वयं इस ओर प्रयत्न करें तो इन कठिनाइयों को दूर किया जा सकता है।

कम्पनी के एक साझीदार का नाम मिस्टर एस...था। वह खुद एक जहाज का कप्तान भी रह चुका था और आम तौर से भरती के दफ्तर द्वारा भेजे गये मल्लाहों में से चुनाव खुद ही करता था। इस तरह उसको हमेशा स्वस्थ, सेवा-योग्य और सम्मानित व्यक्ति ही मिलते थे; क्योकि जो आदमी मल्लाहों के बीच में कुछ अर्से तक रह चुका है, वह उनके कपडे और चेहरे देख कर व बातचीत कर के यह समझ सकता है कि इन लोगों का जहाज पर बर्त्ताव कैसा होगा।

इस आदमी की यह आदत भी थी कि वह सारे मल्लाहो को इकट्ठा करके उनसे मिलता था और सफर शुरू करने से पहले उनसे बातचीत करता था। हमारे जहाज के रवाना होने से एक दिन पहले, जब मल्लाह-लोग अपने सन्दूक

श्रौर कपडे जहाज पर ला रहे थे, वह अगवाड में नीचे आया और उनको यात्रा के बारे में बताने लगा कि उन्हे किन-किन कपडो की जरूरत होगी, उसने उनके लिए क्या-क्या व्यवस्थाएं की है, और उसने उन्हे एक लैम्प और कुछ अन्य सुविधाजनक वस्तुएं दिलवा दी ।

अगर जहाज के मालिक या कप्तान सामान्यतया यह सब शुरू कर दें, तो उनके मल्लाहो को काफी असुविधाओ से छुट्टी तो मिल ही जाएगी, साथ ही उन्हे संतोष और कृतज्ञता का बोध होगा जिसमे यात्रा शुभ ढग से शुरू होगी और सारी यात्रा के दौरान आपस में सद्भावना बनी रहेगी ।

अब मैं मल्लाहों के हित की दृष्टि से किये गये सार्वजनिक प्रयत्नो के बारे में दो शब्द कहूँगा । जहा दोष हैं भी, उनको तलाश करने की बनिस्बत यह काम मेरी रुचि के कही अनुकूल है, सामान्य सगठन (अमरीकन सीमेन्स फ्रेंड सोसायटी) तथा अमरीकी सघ के अन्य अनेक संगठनो के प्रयत्न मल्लाहो के लिए वरदान सिद्ध हुए हैं, और यह आशा की जाती है कि कुछ समय के बाद इन मल्लाहों की परिस्थितिया बहुत हद तक सुधर जाएगी, और उन्हें नया सम्मान व चरित्र प्राप्त होगा ।

इन सगठनों ने सही दिशा में काम किया है। इनका उद्देश्य मल्लाह के जीवन को सह्य और सम्मानित बनाना है तथा उसको आध्यात्मिक उन्नति करने का अवसर प्रदान करना है । इन प्रयत्नो के साथ ही मल्लाहो में मद्यनिषेध का प्रसार (जो ऐसे सगठनो के प्रयत्नो का सुफल है जिन्हे मल्लाह अपनी भाषा में "प्रतिवात लंगर सोसायटी" कहते हैं), पुस्तको का वितरण, मल्लाहो के लिए नाविक-गृहो की स्थापना जहाँ वे आराम से तथा कम खर्चे में वह शान्ति पूर्वक तथा धार्मिक ढग से रह सकते हैं और पढ़ लिख सकते हैं तथा आपस में बातचीत कर सकते हैं, मल्लाहो के लिए बचत बैंको का समारम्भ, पुस्तिकाओ तथा बाईबिल का वितरण—ये सब ऐसे काम हैं जो इस वर्ग के लोगो के लिए शान्तिपूर्वक बडा काम कर रहे हैं। इन संगठनो का प्रमुख उद्देश्य मल्लाहो को धार्मिक शिक्षा देना है ।

यदि इस उद्देश्य की सिद्धि हो जाती है तो केवल यही करना है कि उससे सम्बन्धित बातें भी इसके साथ ही मिला दी जाएं । मल्लाह को धर्म में तब तक दिलचस्पी पैदा नही होती जब तक, अगर वह पहले से ही पढ़ा-लिखा नही है, वह

लिखना-पढ़ना न सीख ले, और इसकी नियमित आदत न डाल ले। सांसारिक मामलो में चतुरता (यदि मैं इस शब्द का प्रयोग कर सकता हूँ), प्राप्त न कर ले और आलस्य और व्यसनो से बचाए हुए समय का इस तरह उपयोग न करे जिससे यह सिद्ध हो सके कि वह अपने लिए आवश्यक ज्ञान और अन्य उपयुक्त बातों में स्वय को शिक्षित कर लेगा। मल्लाहो को धार्मिक बनाना एक महान उद्देश्य है। यदि यह उद्देश्य प्राप्त हो जाए तो केवल एक डर बचेगा कि सांसारिक बातों का ज्ञान उसमें रोड़े अटका सकता है। अन्य सारे मनुष्यो की तरह मल्लाहों के बारे में भी यह सच है कि अगर धार्मिक शिक्षा न दी जाए तो बुद्धि का सम्वर्धन, और उपयोगी ज्ञान का प्रसार, अज्ञान और पापी को बुद्धिमान, और शक्तिशाली बना देता है। वह मल्लाह, जिस पर क्रास का सब से कम असर पडने की आशा की जाती है, ऐसा होता है जिसमें कल्पनाशक्ति का सम्वर्धन तो हो चुका है मगर हृदय अपना काम आप करने के लिए उन्मुक्त छोड दिया गया है।

मेरा अटल विश्वास है कि वे सारे प्रयत्न जिनका उद्देश्य मल्लाह में केवल बुद्धि का सम्वर्धन करता है; उसे वैज्ञानिक ज्ञान प्रदान करना है, उसे ऐसा हृदय दिए बिना जो उसे सही निर्णय लेने के योग्य बनाये, उसे पढने-लिखने के योग्य बनाना है; उसे राजनैतिक सूचनाए देना तथा अखबारो में उसकी दिलचस्पी पैदा करना है,—एक ऐसा उद्देश्य जिसकी पूर्ति के लिए उसको महिलाओं के मेलो और सार्वजनिक मीटिंगो में पेश किया जाता है, तथा उसकी वीरता व उदारता की प्रशंसा की जाती है,—ये सारी बातें इतना बडा नुक्सान पहुँचा रही हैं जिसको बहुत से धार्मिक लोग मिल कर भी पूरा नही कर पाएगे।

हमारे देश के बहुत से बन्दरगाहो पर और जहा—जहा हमारे पोत जाते हैं, उन विदेशी बन्दरगाहो पर बेथेल (समुद्र तट पर मल्लाहो का गिरजा) बन जाने से, जहा नियमित रूप से बाइबिल के उपदेश दिए जाते हैं, और नाविक गृह खुल जाने से, (जिनका जिक्र मैं पहले कर चुका हूँ) जहा अक्सर उपासना और धर्म-कर्म का वातावरण रहता है, इस दिशा में काफी प्रगति हुई है।

इस सिलसिले में यह याद रखना जरूरी है कि मल्लाह का घर समुद्र पर होता है। उसके जीवन का अधिकांश भाग जहाज पर गुजरता है और उस स्थान पर धार्मिक वातावरण पैदा करना बहुत बडा काम है। अगर अग्रवाड और केबिनो में पुस्तिकाएं तथा बाइबिलें बांटी जाए तो यह काम काफी हद तक पूरा हो सकता है।

पुस्तिकाओं में यदि कोई कहानी उल्लिखित हो, तो इसके मुकाबले अन्य कोई भी वस्तु मल्लाह को ज्यादा आकर्षित नहो कर सकती। उसका ध्यान शुद्ध तर्कों 'और निबधों की ओर आकर्षित करना मुश्किल है लेकिन अगर कोई कहानी ऐसा हो जिसमें घर की, अभिन्न मित्रो, ईश्वर से प्रार्थना करती हुई माँ या बहन, या अकस्मात मौत की, या ऐसी ही कोई अन्य चर्चा हो तो वह तुरन्त उनका हृदय छू लेती है।

मल्लाह बाइबिल को अत्यन्त पवित्र मानते हैं। चाहे यह उसके सन्दूक में बन्द ही पडी रहे और वह इस बीच कई सफर कर डाले, मगर वह कभी उसके लिए असम्मान प्रदर्शित नहो करता। मुझे आज तक सिर्फ एक ऐसा मल्लाह मिला है जिसने बाईबिल को ईश्वर द्वारा प्रेरित होने पर सन्देह किया है, और वह ऐसा व्यक्ति था जो असामान्य रूप से ज्यादा शिक्षित था, और बचपन में उस पर धर्म का प्रभाव नहीं पड सका था। एक दिन रविवार को सुबह के समय एक अत्यन्त व्यसनी मल्लाह ने एक छोकरे से बाइबिल की प्रति मागी। छोकरे ने पुस्तक देने की "हा" तो कर ली, मगर मन में बहुत घबराया कि वह किताब से खेलने न लगे। मल्लाह ने कहा—"नही, मैं सर्वशक्तिमान ईश्वर से खेल नहीं सकता।" साधारणतया मल्लाहों में यही भावना होती है, और इस भावना के आधार पर उन पर धार्मिक रङ्ग चढ़ाया जा सकता है।

इससे भी बडा लाभ तब हो सकता है अगर कप्तान अपने मातहत मल्लाहो के अविनाश हित के लिए जहाज पर नियमित रूप से धार्मिक पूजा-पाठ शुरू करवा दे, और शुभ या अशुभ के लिए उसे जो शक्ति प्राप्त होती है, उस शक्ति का उपयोग धर्म के लिए करे।

समुद्र पर अनेकानेक घटनाएं होती हैं,—अकस्मात मृत्यु, आसन्न खतरा, या उससे बचाव, और इसी प्रकार की,...इनका वर्णन वह एक धर्मप्राण व्यक्ति के शब्दो में कर सकता है, और ईश्वर के प्रति कृतज्ञता तथा आस्था प्रदर्शित कर सकता है। अगर यह बात हो जाए तो इससे मल्लाहों और कप्तान के बीच की भावनाए बिल्कुल बदल जाएगी। तब उसके प्राधिकार का रूप पिता-तुल्य हो जाएगा और सद्भावनाएँ जन्म लेंगी।

हालांकि गाडविन नास्तिक था, फिर भी एक उपन्यास में उसने एक शिक्षक और शिष्य के सम्बन्धो का वर्णन किया है। शिक्षक की धारणा यह थी कि वह

ग्रौर उसका शिष्य दोनो समान रूप से शाश्वत सुख या दुख की प्रतीक्षा कर रहे हैं, ग्रौर उनको एक ही न्यायाधीश के सामने उपस्थित होना है, ग्रौर यह धारणा उसकी कटु प्रकृति पर इतना प्रभाव जमा गई कि वह अपने शिष्य के प्रति इतनी उदार व कोमल भावनाग्रो से पूरित हो गया। किसी ग्रौर बात का प्रभाव इतना अधिक नही पड सकता था। कप्तान ग्रौर साधारण मल्लाहो का सम्बन्ध भी कुछ इसी तरह का होना चाहिए।

ग्राजकल ऐसे नेतृत्व में ग्रनेक पोत चलाए जा रहे हैं जिससे लोगो की भलाई हुई है। मगर मुझे ऐसा कोई जहाज नही मिला। सवा दो साल तक मैंने एक भी प्रार्थना होती हुई नही देखी, सभा मे किसी को अध्याय पढ़ते नही सुना; ग्रौर न धार्मिक उपासना जैसी कोई चीज ही देखी। यात्रा के दौरान ऐसी कई घटनाएं घटी जिन्होने हम लोगो के मस्तिष्को पर गहरा प्रभाव डाला। इन घटनाग्रों का प्रभाव हमारे लिए कल्याणकारी बनाया जा सकता था। मगर ग्रवसर का लाभ उठाने के लिए कोई न था, ग्रौर कोई प्रार्थना न की गई, नियमित रूप से प्रार्थना होने पर शायद उन घटनाग्रो का प्रभाव हमारे मन पर सदा सर्वदा बना रहता। इसके ग्रभाव में कई लोग तो उन घटनाग्रो से जरा भी लाभ नही उठा पाये।

कोई एक धार्मिक प्रकृति का कप्तान लोगो की कितनी भलाई कर सकता है, इसका हिसाब लगाना मुश्किल है। पहली बात, जो मैं कह चुका हूँ, यह है कि जहाज पर एक-दूसरे के प्रति सब के मन में पवित्र भावनाए रहती हैं। जहालत दूर हो जाती है, मल्लाहो को तिरस्कारसूचक नामो से नही बुलाया जाता, जो उनके लिए बहुत बडी बात है। सैबाथ की छुट्टी होती है। इस दिन मल्लाह ग्रगर धर्म-कृत्य न भी करें तो कम से कम उन्हे एक दिन का ग्राराम तो मिलता है।

इस तरह का कप्तान जहाज पर किसी मल्लाह को इतना ग्रपढ़ न रहने देगा कि वह बाइबिल भी न पढ सके। उसको किताबें दी जाएंगी। कप्तान के पास हमेशा बहुत-सा खाली वक्त रहता है, उसको वह उन मल्लाहो को (जिन्हे जरूरत है) लिखाई, हिसाब किताब, ग्रौर नौकानयन की शिक्षा देने में लगा सकता है। वह अपने जहाज पर नियमित रूप से धार्मिक उपासना भी करवाएगा, ग्रौर इसी शक्ति के द्वारा तथा जहा उचित हो तो अपने अधिकार के द्वारा वह जहाज ग्रौर जहाज पर उपस्थित प्रत्येक नाविक को एक विशिष्ट चरित्र प्रदान करेगा।

विदेशी बन्दरगाहो में जहाज को उसके कप्तान के माध्यम से जाना जाता है.

चूंकि व्यापारी-पोतो में पूजा आदि का कोई सामान्य नियम नही होता इसलिए प्रत्येक कप्तान अपने पसन्द की योजना कार्यान्वित कर सकता है। यह भी याद रखना चाहिए कि अधिकाश जहाजों पर कुछ कम उम्र के लडके काम करते हैं जिनका चरित्र विकासोन्मुख होता है, और कुछ वृद्ध होते हैं जिनके जीवन का अन्त समीप होता है।

अधिकतर मल्लाह समुद्र पर ही मरते हैं। जब मल्लाहो को बिना पूर्व सूचना दिए (यही अक्सर होता है) अपना अन्त समीप आता हुआ दीखता है तो वे भूमि के लोगो की भाति किसी पादरी या अन्य धार्मिक प्रकृति के मित्र को नही बुला सकते जो उन्हे उस महान ईसामसीह की कृपा पर भरोसा रखने के लिए बताए जिसका उन्होने जीवन भर अगर तिरस्कार नही किया है तो कम से कम, ध्यान भी नही रखा है; और अगर पूरे जहाज में ऐसा कोई व्यक्ति नही है तो उन्हे जिन्दगी के सबसे जरूरी क्षणो में मानवीय सहायता प्राप्त किए बिना ही जाना होगा।

जब इस किस्म के कमाडर और जहाजो की संख्या अधिक हो जाएगी तो मल्लाहो के मित्रो की आशाएं बलवती हो जाएंगी। यह याद रखना उत्साहजनक है कि साधारण मल्लाहो के बीच में ऐसे प्रयत्नो को करने से एक पूरा वर्ग उन्नति करेगा; और इस तरह के वातावरण में जो लोग विकसित होगे, वे ही कालांतर में आस्था और प्राधिकार के पदों पर आसीन होगे। अगर इस पृथ्वी पर इस बात का कोई उदाहरण मिल सकता है कि एक हलका-सा परिवर्त्तनकारी प्रभाव सारे ढेर का रूप—परिवर्तन कर दे तो वह धार्मिक प्रकृति के जहाज के कप्तान का उदाहरण है।

मल्लाहो के बीच में इस काम को प्रगति के लिए हमें पूर्ण विश्वास के साथ उन असख्य व छोटी-छोटी बुराइयो व दोषो के परिहार की ओर देखना चाहिए जिनके बारे में हम अक्सर सुनते रहते हैं। इससे मल्लाहो का, व्यक्ति और वर्ग दोनो रूपो में, चरित्र उन्नत होगा। इससे न्यायालयों में उनकी गवाही का प्रभाव बढ़ेगा, जहाज पर उन्हें अच्छा व्यवहार मिलेगा, और भूमि पर तथा समुद्र पर उनके जीवन में सुख-सुविधा की वृद्धि होगी।

मल्लाहो के रास्ते के कुछ प्रलोभनो को हटाने तथा उनकी प्रगति में सहायता के लिए, निचली अदालतो के न्यायक्षेत्रो को बदलने के लिए,—विलम्ब को दूर करने

के लिए, कुछ कानून बनाए जा सकते हैं और वे बनाए जाएंगे। लेकिन जहा तक जहाज पर अनुशासन की समस्या का प्रश्न है उसे कानूनो की अपेक्षा इस उदात्त तरीके से ज्यादा आसानी से सुलझाया जा सकता है। नये कानूनो और इकतरफा नियम-विनियम बनाने के सुझाव पर विचार करते समय हमें बहुत सावधानी बर-तनी होगी क्योकि इनके निर्माताओ में से अधिकाश लोग इन्हे लागू करते समय उठने वाली समस्याओं का सही अनुमान लगाने के अयोग्य हैं।

मैंने यह वृत्तात औपचारिक रूप से मनुष्यो के उस वर्ग को समर्पित तो नही किया है जिसके साधारण जीवन का यह वृत्तात है, फिर भी इस वृत्तात को तैयार करते वक्त उनके चित्र मेरे मस्तिष्क में लगातार उभरे हैं। मुझे विश्वास है कि यह वृत्तात उनमें से जिस किसी के हाथो में पहुचेगा, वह इसमें ये तत्व अवश्य पा लेगा, और इसलिए अपनी ओर से सहानुभूति या शुभ कामना प्रकट करना मैं अनावश्यक समझता हूँ। हा, मैं अपने उस पाठक से, जिसने हमारे साथ महासागर की यात्रा की है, बिछुडते हुए इतना कहने की स्वतन्त्रता अवश्य लू गा कि वह अपनी सद्भा-वनाएं और अपने सद्प्रयत्नो से मनुष्यो के उस वर्ग को अवश्य यथाशक्य लाभा-न्वित करे जिसके साथ कुछ समय के लिए मेरा भाग्य जुड गया था। वस्तुत: मैं भी यही करना चाहता हूँ, क्योकि मैं यह महसूस करता हूँ कि इस पुस्तक को जो भी महत्व और अनुग्रह प्राप्त होगा, उसक श्रेय पूरी तरह से समुद्र के प्रति हमारे मन में सुप्त उस उत्साह को है जो बडी जल्दी जाग पडता है, साथ ही ऐसे उत्साही यात्रियो को भी इसका श्रेय प्राप्त है।

समाप्त